



उपकार

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास

संघ एवं राज्य लोक सेवा तथा अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उपयोगी



डॉ. के. के शर्मा



सामान्य अध्ययन
प्राचीन भारत का इतिहास

संघ एवं राज्य लोक सेवा तथा
अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उपयोगी

लेखक
डॉ. के. के. शर्मा

उपकार प्रकाशन, आगरा-2

प्रकाशक

उपकार प्रकाशन
(An ISO 9001 : 2000 Company)
2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर (शाह सिनेमा के सामने), **आगरा**–282 002
फोन : 4053333, 2530966, 2531101; **फैक्स** : (0562) 4053330, 4031570
E-mail : care@upkar.in, **Website :** www.upkar.in

ब्रांच ऑफिस :

4845, अन्सारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली–110 002
फोन : 011–23251844/66

पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ,
पटना–800 003
फोन : 0612–2673340

1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स (सुन्दरैया पार्क के पास, मनसा एन्क्लेव गेट के बगल में),
बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद–500 044 (आ. प्र.)
फोन : 040–66753330

28, चौधरी लेन, श्याम बाजार,
मेट्रो स्टेशन के निकट, गेट नं. 4
कोलकाता–700004 (W.B.)
फोन : 033–25551510

B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर
टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवइंया,
लखनऊ–226 004 (U.P.)
फोन : 0522–4109080

ISBN : 978-93-5013-616-4

मूल्य : ₹ 250·00 मात्र
(Rs. Two Hundred Fifty Only)

Code No. 2342

मुद्रक : उपकार प्रकाशन (प्रिंटिंग यूनिट) बाई-पास, आगरा

विषय-सूची

1. भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ 3–22
2. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत........ 23–65
3. सिन्धु सभ्यता तथा उसका उद्‌गम; परिपक्व चरण : विस्तार, समाज, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति; अन्य संस्कृतियों से सम्पर्क; ह्रास की समस्याएँ........ 66–91
4. वैदिक समाज, वैदिक ग्रन्थ, ऋग्वैदिक से उत्तर-वैदिक चरणों तक परिवर्तन, धर्म, उपनिषद् से सम्बन्धित विचारधारा, राजनैतिक एवं सामाजिक संगठन : राजतन्त्र तथा वर्ण व्यवस्था का विकास........ 92–120
5. महाजनपदों से नन्द तक राज्य निर्माण एवं नगरीकरण 121–145
6. जैन एवं बौद्धधर्म, जैनधर्म एवं बौद्धधर्म के प्रसार के कारक, शैव सम्प्रदाय, भगवद् सम्प्रदाय, बौद्धधर्म-हीनयान एवं महायान, जैनधर्म एवं संस्कृति, कला........ 146–186
7. मौर्य साम्राज्य : चन्द्रगुप्त मौर्य, मेगस्थनीज, अशोक एवं उसके शिलालेख, उसका धम्म, प्रशासन, तत्कालीन संस्कृति एवं कला, अर्थशास्त्र........ 187–223
8. मौर्योत्तर भारत : 200 ई.पू.–300 ई. तक समाज, जातियों का विकास, सातवाहनों का काल एवं प्रायद्वीप में राज्य निर्माण, भारत-यूनानी (इण्डो-ग्रीक) शक, पार्थियन, कुषाण, कनिष्क........ 224–280
9. संगम साहित्य सम्बन्धित ग्रन्थ एवं तत्कालीन समाज........ 281–295
10. इतिहास के चुने हुए उद्धरण/प्रसंग........ 296–306
11. मानचित्र अध्ययन........ 307–323

- **प्रश्नकोश**........ 324–348
- **परिशिष्ट**........ 349–400

प्राचीन भारत का इतिहास
(Ancient Indian History)

1
भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ
(Prehistoric Cultures in India)

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन में जितनी रोचकता है उतनी अन्य किसी में नहीं. मानव सभ्यता की उत्पत्ति, विकास, संस्कृति, सभ्यता, विभिन्न साम्राज्यों का उत्थान-पतन, प्राचीन भारत की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था, धर्म का स्वरूप एवं भारत की साहित्यिक, वैज्ञानिक तथा कलात्मक उपलब्धियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की दिशा में प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करना ही एकमात्र सर्वश्रेष्ठ उपाय है. भारतीय इतिहास-लेखन की परम्परा भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के पश्चात् 18वीं शताब्दी में प्रारम्भ हुई. भारत के इतिहास को पुनर्जीवित करने में **'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल'** की भूमिका उल्लेखनीय रही, जिसकी स्थापना सन् 1784 ई. में कलकत्ता में वारेन हेस्टिंग्स एवं 'सर विलियम जोन्स' के द्वारा हुई. इसके बाद यूरोपवासियों में भारत के प्राचीन इतिहास को पढ़ने की इच्छा जाग्रत हुई और उन्होंने एवं अंग्रेजों ने यूरोप में प्रचलित इतिहास अध्ययन परम्परा के अनुरूप भारतीय इतिहास का अध्ययन किया. स्वातन्त्र्य प्रेम एवं राष्ट्रीय प्रादुर्भाव के साथ ही 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारतीय इतिहासकारों ने इतिहास की विधिवत् रचना की शुरूआत की.

नामकरण

प्राचीन भारत का ऐतिहासिक नाम भारतवर्ष था. इस देश का नामकरण कैसे हुआ, इस सम्बन्ध में प्राचीन भारतीय इतिहासकार, विचारक, विद्वान्, साहित्यकारों का मत एक नहीं हैं.

महाभारत के रचयिता वेदव्यास के अनुसार महाराज दुष्यन्त के पुत्र सम्राट् भरत के नाम पर 'भरत का देश' इस आशय से 'भारतवर्ष' नाम पड़ा. ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार–"भरत एक चक्रवर्ती राजा थे, जिन्होंने चार दिशाओं तक भूमि को जीतकर एक विशाल साम्राज्य का वरण किया एवं अश्वमेध यज्ञों से यजन किया था, जिससे उनके नाम पर **'भारतवर्ष'** का नामकरण हुआ. मत्स्य पुराण की एक अनुश्रुति में आदि प्रजापति एवं न्याय के व्यवस्थापक महाराज मनु को प्रजा का भरण-पोषण करने एवं जन्म देने के कारण **'भरत'** तथा जिस भू-भाग पर मनु की शासन व्यवस्था प्रचलित थी, उसे **'भारतवर्ष'** कहा गया है.

नामकरण के सम्बन्ध में जैनियों एवं भागवतों की परम्परा के अनुसार भगवान् ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र का नाम भरत था, जो श्रेष्ठ गुणयुक्त एवं महायोगी था; उस भरत के नाम पर ही **'भारतवर्ष'** नामकरण हुआ.

नामकरण के सम्बन्ध में उपर्युक्त तथ्य तर्कसंगत नहीं कहे जा सकते, क्योंकि किसी व्यक्ति के नाम पर छोटे प्रान्तों एवं नगरों के नाम ही रखते हुए देखे गये हैं. बड़े देशों के नाम वहाँ के निवासियों एवं जातियों के ऊपर रखे जाते हैं. इसी सन्दर्भ में वैदिक आर्यों की 'भरत जाति' के नाम पर इस देश का **'भारतवर्ष'** नाम माना जा सकता है, क्योंकि यह जाति तत्कालीन परिवेश में राजनीतिक शक्ति, वैदिक साहित्य एवं सभ्यता के विकास में अग्रणी थी, इसी के फलस्वरूप इस जाति के द्वारा प्रस्फुटित संस्कृति से प्रभावित सारे राष्ट्र का नाम भारतवर्ष पड़ा. इस तथ्य को सिद्ध करते हुए 'वायुपुराण' में अभिव्यक्त किया है–

"समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण का देश (वर्ष) 'भारत' कहलाता है, क्योंकि यहाँ भारतीय सन्तति निवास करती है."[1]

भारत देश को आक्रान्ताओं ने विभिन्न नाम दिये. **'हिन्दुस्तान'** नाम इसे ईरानियों ने दिया. ये लोग 'स' को 'ह' उच्चारित करते थे, इसी के चलते 'सिन्धु नदी' के आसपास

---

1 उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् । वर्षं तद् भारतं नाम भारतीः यत्र सन्ततिः ॥

–वायुपुराणम्

रहने वालों को 'हिन्दु' एवं उस भू-भाग को **'हिन्दुस्तान'** नाम दिया गया. इस नाम का प्रयोग ईरान से प्रभावित मुस्लिम राष्ट्र करते थे. भारत के निवासी **'भारतवर्ष या भारतखण्ड'** को अंगीकृत कर सके, अन्य नामों का प्रवेश भारतीयता में नहीं हो सका. यूनानियों ने भारत को 'इण्डिया' नाम दिया. वे सिन्ध नदी को **'इण्डस'** (Indus) पुकारते थे, इसी के फलस्वरूप उस क्षेत्र को **इण्डिया** (India) एवं वहाँ पर निवास करने वालों को **इण्डियन** (Indian) कहा गया.

प्राचीन भारत की प्राकृतिक अवस्थाएँ

विस्तार–भारतवर्ष का फैलाव अत्यधिक विस्तृत माना गया है जिसके कारण इस देश को **'वृहत्तर भारत'** भी कहा जाता रहा है. वृहत्तर भारत के विस्तार के 'मत्स्यपुराण' में नौ भेद किये गए हैं, जो समुद्र के बीच में आ जाने के कारण एक-दूसरे से अलग एवं कठिन है. प्राचीन भारत के वृहत्तर स्वरूप के नौ भेद निम्नांकित हैं–

(1) इन्द्रद्वीप, (2) कसेरू, (3) ताम्रपर्णी, (4) गभस्तिमान, (5) नागद्वीप, (6) सौम्य, (7) गन्धर्व, (8) वारूण एवं (9) सागर से घिरा भारत.

वास्तविक अर्थों में इसे भारत की औपनिवेशिक एवं सांस्कृतिक सीमा माना जाना ही उपयुक्त होगा, क्योंकि अक्सर भारतवर्ष का फैलाव हिमालय और समुद्र का मध्य भाग ही माना जाता रहा है.

भौगोलिक स्थिति–एशिया महाद्वीप के दक्षिण में हिन्द महासागर के अन्तर्गत आने वाले प्रायद्वीपों में मध्य में त्रिभुज के आकार में अवस्थित 'भारतवर्ष' है. भारतवर्ष उत्तरी गोलार्द्ध में 7° और 37° अक्षांश एवं 62° तथा 98° देशान्तर के मध्य स्थित है.

कलकत्ता के ऊपरी क्षेत्र से रन-कच्छ तक कर्क रेखा गुजरती है. दक्षिणी भाग उष्ण कटिवन्ध एवं उत्तरी भाग शीतोष्ण कटिवन्ध में आता है. भारतवर्ष का क्षेत्रफल यूरोप से रूस को अलग करने पर शेष के बराबर है. भारतवर्ष की लम्बाई कश्मीर से लंका तक 2000 मील एवं चौड़ाई भी काठियावाड़ से असम तक लगभग इतनी ही है.

सीमाएँ–भारतवर्ष की उत्तरी सीमा ऊँचा और दुर्गम महागिरि हिमालय है, जो भारत को एशिया के अन्य देशों से अलग करता है. भारतवर्ष की पश्चिमोत्तर शृंखलाएँ सफेद कोह, सुलेमान, किरथर दक्षिण-पश्चिम दिशा में जाकर अफगानिस्तान और बलूचिस्तान से सिन्धु घाटी को अलग करती है. इसे पक्की सीमा नहीं कहा जाता. **हिन्दुकुश** और **पामीर** की शृंखलाएँ भारतवर्ष की दृढ़ पश्चिमोत्तर सीमा है. भारतवर्ष के पूर्वोत्तर में हिमालय की शृंखलाएँ दक्षिण की ओर झुकती हैं जिन्हें पटकोई, नागा, जयन्तिया खासी, गारो, लुसाई एवं आराकानयोमा के नाम से सम्बोधित की जाती है, जो चीन, हिन्दचीन और श्याम से भारतवर्ष को अलग करती हैं. नीचे के क्षेत्र को हिन्द महासागर की अथाह जलराशि में तीन तरफ से घेरकर भारतवर्ष की सीमा रेखा निश्चित की गई है.

भारतवर्ष के प्राकृतिक विभाग

सम्पूर्ण भारतवर्ष को निम्नलिखित प्राकृतिक विभागों में बाँटा गया है–

(अ) **हिमालय शृंखला**–भारतवर्ष का पहला प्राकृतिक विभाग हिमालय शृंखला पश्चिम से पूर्व की ओर 1600 मील लम्बी दूरी तक फैली हुई है जिसमें नेपाल, भूटान, सिक्किम, उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिले, कश्मीर एवं शिमला के पास का प्रदेश आता है. यह प्राकृतिक विभाग उत्तरी स्थल सीमा बनाने से लेकर जलवायु, उपज, धार्मिक, राजनीतिक एवं मानवीय जीवन को भी प्रभावित करता है.

(ब) **उत्तर भारत के मैदान**–यह प्राकृतिक विभाग हिमालय और विन्ध्य मेखला के मध्य स्थित है. हिमालय से निकलने वाली नदियों के द्वारा ही इस विभाग का निर्माण हुआ है. उत्तर भारत के मैदानों को तीन भागों में बाँटा गया है–(i) गंगा घाटी के मैदान, (ii) सिन्धु घाटी के मैदान, (iii) ब्रह्मपुत्र घाटी के मैदान.

गंगा घाटी के मैदान–गंगा घाटी उत्तर भारत के मध्य में अवस्थित है, जिसे पहले बंगाल क्षेत्र को छोड़कर मध्यदेश के नाम से पुकारा जाता था. माना जाता है कि सबसे पहले आर्य राज्यों का उदय इसी प्रदेश में हुआ था और इसी प्रदेश से भारतीय सभ्यता का प्रसार सिन्धु घाटी ब्रह्मपुत्र घाटी और दक्षिणी प्रदेशों में हुआ था.

सिन्धु घाटी के मैदान–गंगा घाटी के पश्चिम क्षेत्र में सिन्धु घाटी है, जो सिन्धु एवं उसकी सहायक नदियों के द्वारा सिंचित होती है. इनके मध्य एक जलविभाजक है जो दक्षिण में अरावली और उत्तर में शिवालिक की भुजाओं के मिलने के कारण बना है. इनके बीच में 'दिल्ली' अवस्थित है जिन्हें दोनों के बीच का द्वार कहते हैं. इस द्वार को पार करने के बाद खैबर दर्रा आता है.

ब्रह्मपुत्र घाटी के मैदान–गंगा घाटी के पूर्व में ब्रह्मपुत्र घाटी अवस्थित है. यह क्षेत्र पर्वतीय प्रदेश है. मध्यदेश से आर्य गांधार तक पहुँच गये, लेकिन उस क्षेत्र में उनका प्रसार मन्द गति से हुआ. यह दुर्गम क्षेत्र था जिस पर आक्रमण होना मुश्किल था.

इनके अतिरिक्त उत्तरी भारत के मैदानों में दक्षिण की ओर पश्चिम से पूर्व सिन्धु, राजस्थान और मालवा का प्रदेश आता है.

(स) **विन्ध्य मेखला**–बंगाल की खाड़ी से लेकर अरब सागर तक विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणियाँ फैली हुई हैं. भारतवर्ष के निचले प्रदेश में लटकने के कारण इसे मेखला (करधनी) कहा जाता है. यह पहाड़ी प्रदेश दक्षिण भारत को उत्तर भारत से अलग करता है.

(द) **दक्षिणी प्रायद्वीप**–यह प्राकृतिक विभाग समुद्र के तीनों भागों से घिरा हुआ एवम् विन्ध्यमेखला से उत्तर में अवस्थित है. इसके अन्तर्गत पूर्वी एवं पश्चिमी घाट के प्रान्त तथा मध्य के पठार समाहित हैं. इसके दक्षिण में श्रीलंका है. सह्याद्रि से लेकर दक्षिण में नीलगिरि तक पश्चिमी घाट मिला हुआ है. दक्षिणी त्रिभुजाकार प्रायद्वीप एवं समुद्र के मध्य संकरा समुद्र तट है जिसे उत्तर में कोंकण और दक्षिण में केरल कहा जाता है. इस समुद्र तट के पूर्व भाग में पश्चिमी घाट का पर्वतीय प्रदेश है जिसके उत्तर में महाराष्ट्र एवं दक्षिण में कर्नाटक है. पश्चिमी और पूर्वी घाट के मध्य दक्षिण का पठार अवस्थित है.

दक्षिण प्रायद्वीप के पूर्वी समुद्र तट से परे पूर्वी घाट की शृंखला उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है. दक्षिण क्षेत्र की सभी नदियाँ पश्चिम घाट से निकलकर दक्षिण के पठार से पूर्वी घाट को काटकर 'बंगाल की खाड़ी' में गिरती हैं. पूर्वी घाट पश्चिमी घाट से नीचा एवं पूर्व का समुद्र तट पश्चिमी समुद्र तट से चौड़ा है, जिसका उत्तरी भाग कलिंग एवं दक्षिण भाग चोलमण्डलम् कहलाता है.

(य) **सुदूर दक्षिण**–कृष्णा के दक्षिण समुद्र एवं तुंगभद्रा से घिरा प्रान्त सुदूर दक्षिण या द्रविड़ प्रदेश के नाम से जाना जाता है. इस सुदूर दक्षिण प्रदेश के पूर्वी एवं पश्चिमी घाट नीलगिरि पर मिलते हैं जिनके मध्य का पठार पुराना कर्नाटक है जो आजकल मैसूर है. इसके पूर्व में एवं समुद्र के पीछे तमिल प्रदेश अवस्थित है. केरल और तमिल प्रान्त के मध्य में मलय पर्वत है. सर्वाधिक जातिगत भेदभाव इसी प्रदेश में पाया जाता है.

प्राचीन भारत के निवासी

भारतवर्ष के विस्तृत परिवेश के फलस्वरूप उसमें प्राकृतिक क्षेत्रगत एवं जलवायवीय विभिन्नताएँ व्याप्त हैं, जिसके कारण प्राचीनकाल से ही भारत में विभिन्न प्रकार के लोग निवास करते आये हैं. मानव जीवन एवं सभ्यता के विकास के साथ व्यापार, उपनिवेश, युद्ध, विवाह, यात्रा एवं अन्य सामाजिक कृत्यों को सम्पादित करने के लिए लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना प्रारम्भ हुआ. जिसके परिणामस्वरूप भारतवर्ष में अनेक जातियों के मिश्रण से एवं अन्य तरीके से भारतीय जातियों का प्रादुर्भाव हुआ. प्राचीन भारत में निम्नलिखित जातियाँ विद्यमान थीं–

(अ) आर्य, (ब) द्रविड़, (स) शबर पुलिन्द, (द) किरात.

(1) **आर्य**–यह जाति विन्ध्याचल पर्वत एवं हिमालय के मध्य में निवास करती थी. यद्यपि अभी तक आर्यों के आदिनिवास से सम्बन्धित गुत्थी को नहीं सुलझाया जा सका है, फिर भी माना जाता है कि–इसके केन्द्र मध्यदेश में आर्यों का उदय हुआ एवं इसी स्थान से आर्य दक्षिणापथ तथा सम्पूर्ण आर्यावर्त में फैले. इसके अतिरिक्त भी आर्य सम्पूर्ण भारतवर्ष में देखे गये. पश्चिमी क्षेत्र में आर्य **तूरानी** एवं **ईरानी** जाति से मिलते हुए थे. मध्यदेश जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश एवं बिहार है, में आर्य और द्रविड़ों का मिश्रण हुआ तथा पूर्व में किरात या मंगोल जाति के साथ आर्यों का मिश्रण हुआ. आर्य जाति की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(1) गेहुआ रंग, (2) उन्नत एवं विस्तृत मस्तक, (3) उठी हुई नाक, (4) लम्बा आकार, (5) लम्बा सिर.

(2) **द्रविड़**–सुदूर दक्षिण भाग में सबसे पहले तमिलनाडु में द्रविड़ों का आविर्भाव हुआ. यहीं से इनका प्रसार हुआ. ये दक्षिण और उत्तर भारत में आर्यों से मिल गये. द्रविड़ जाति के लोगों की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(1) रंग काला, (2) नाक चपटी, (3) लम्बा सिर, (4) मुँह बालयुक्त, (5) नाटा कद.

(3) **शबर पुलिन्द**–इस जाति का निवास स्थल विन्ध्य मेखला के जंगली एवं पहाड़ी क्षेत्र था. मध्य में गोंड एवं कोल, पश्चिम में भील, पूर्व में संथाल एवं मुण्डा इनकी शाखाएँ मानी जाती हैं. यूरोपीय विद्वान् इन्हें **आस्ट्रिक** या **आग्नेय** कहते हैं. एशिया के आग्नेय द्वीपों (दक्षिण-पूर्व) में इस जाति से मिलते हुए लोग निवास करते हैं जिसके फलस्वरूप ही यूरोपीय विद्वानों ने इन्हें आग्नेय कहा है. शबर पुलिन्द जाति चारों तरफ से आर्यों से मिली हुई थी. इस जाति की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(1) रोम युक्त चेहरा, (2) बौना कद, (3) लम्बा सिर, (4) श्याम वर्ण, (5) चपटी नाक.

(4) **किरात**– इस जाति को मंगोल या पीली जाति भी कहा जाता है. हिमालय शृंखला के उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी प्रदेशों में इस जाति का निवास स्थान है. किरात मूलतः चीन, तिब्बत एवं हिन्द चीन से आकर हिमालय प्रदेश में आर्य, द्रविड़ तथा शबर पुलिन्द से रक्त मिश्रित हो जाने से किरात या मंगोल जाति में परिणित हो गए. इस जाति की विशेषताएँ पूर्व जातियों से मिलती-जुलती थीं.

इनके अलावा भी अन्य जातियाँ भारतवर्ष में आक्रान्ता बनकर आयीं, जिनमें प्रमुख रूप से ईरानी, यूनानी, शक, पह्लव, कुषाण और हूण आये जो आर्यों से मिलते-जुलते थे. ये जातियाँ पूरी तरह भारतीय जातियों में कालान्तर में समाहित हो गईं.

प्राचीन भारत की भाषाएँ

भारतवर्ष के निवासियों में जिस तरह जातिगत विविधताएँ थीं, ठीक उसी प्रकार आदिनिवास के अनुसार भाषाजन्य विविधताएँ भी विद्यमान थीं. प्राचीन भारत की भाषाओं को निम्नलिखित चार भाषा परिवारों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

(क) आर्य भाषा परिवार, (ख) द्रविड़ भाषा परिवार, (ग) शवर पुलिन्द भाषा परिवार, (घ) किरात भाषा परिवार.

आर्य भाषा परिवार–दक्षिण भारत के पश्चिम भाग की भाषाएँ एवं उत्तर भारत की प्रान्तीय भाषाएँ आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है. आर्य भाषा परिवार में निम्न भाषाएँ समाहित हैं—(i) असमी, (ii) उत्कल (उड़ीसा), (iii) बंगाली, (iv) हिन्दी, (v) पर्वती, (vi) पंजावी, (vii) पश्तो, (viii) कश्मीरी, (ix) कोहिस्तानी, (x) लहँदा, (xi) सिन्धी, (xii) गुजराती, (xiii) मराठी, (xiv) सिंहली.

उपर्युक्त भाषाओं में से पश्तो और सिन्धी भाषा मुस्लिम प्रभाव से अरबी लिपि और वर्णमाला को अंगीकृत कर चुकी थी. इसके अतिरिक्त अन्य भाषाओं की लिपि ब्राह्मी एवं वर्णमाला संस्कृत थी. संस्कृत, हिन्दी, मराठी, पर्वती को देवनागरी लिपि में लिखा जाता था. हिन्दी की विभाषा उर्दू स्वतन्त्र भाषा नहीं रही, उसमें अरबी लिपि एवं फारसी तथा अरबी शब्दों का समन्वित रूप प्रस्फुटित हो गया.

द्रविड़ भाषा परिवार–इस भाषा परिवार में तेलुगू, तमिल, कन्नड़ तथा मलयालम भाषाएँ सम्मिलित हैं. यह दक्षिण के पूर्वी भाग, सुदूर दक्षिण एवं श्रीलंका के क्षेत्रों में बोली जाती रही है इस परिवार की भाषाओं में द्रविड़ शब्दों की प्रधानता है. द्रविड़ भाषा परिवार की रचना पद्धति उत्तरी भाषाओं से भिन्न, लेकिन वर्णमाला संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि से युक्त है. यह भाषा परिवार आर्य संस्कृति से प्रभावित रहा, जिसके फलस्वरूप इसकी भाषाओं में संस्कृत शब्दों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है.

शवर पुलिन्द भाषा परिवार–विन्ध्य मेखला के पर्वतीय एवं जंगली प्रदेशों में इस भाषा परिवार की बोलियों को बोला जाता रहा है. शवर पुलिन्द भाषा परिवार के अन्तर्गत मुण्ड एवं मानमेखर भाषा प्रमुख रूप से है.

किरात भाषा परिवार–इस भाषा परिवार की भाषाएँ मूलतः तिब्बत एवं वर्मा के क्षेत्रों में बोली जाती हैं. देवनागरी एवं संस्कृत वर्णमाला से युक्त इस परिवार की भाषाएँ भारत में नहीं के बराबर है.

भारत की मौलिक एकता

भारतवर्ष भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विभिन्नताओं से युक्त राष्ट्र है. इन सबके फलस्वरूप भारतवर्ष की मौलिक एकता उसकी विविधताओं में निहित है. प्राचीन-काल से ही सारा भारत जिसमें आधुनिक पाकिस्तान एवं बांग्लादेश भी है, एक राष्ट्र के रूप में स्वीकारा गया है. आर्यावर्त, पुण्यभूमि, भारतवर्ष, हिन्द, हिन्दुस्तान, भारत, इण्डिया जैसे अनेक नामों से पुकारे जाने के बाद भी इस राष्ट्र की राजनीतिक एकता हमेशा से कायम रही है. रंग-रूप, वेश-भूषा, जाति-धर्म की विभिन्नताओं के रहते हुए भी परम्परा, रीति-रिवाज, खान-पान, त्यौहार-उत्सवों में पर्याप्त एकता भारतवर्ष में देखी जा सकती है. धार्मिक जीवन के बतौर भी सभी सम्प्रदाय वेदों, आगमों से लेकर ईश्वर, आत्मा, अवतार, पुनर्जन्म, मोक्ष, योग, भक्ति, कर्म, यम, नियम, शील, तप एवं सदाचार पर सभी भारतीयों का समान रूप से विश्वास है. साहित्यिक ग्रन्थ एवं कला के प्रति भी सम्पूर्ण भारतवासी समान धारणा रखते हैं. भारत की विविधता में एकता उसकी सर्वोत्कृष्ट विशेषता है.

प्रागैतिहासिक समाज : मानव का उद्भव एवं विकास

मानव के विकास, उसके संघर्ष, उत्थान पतन एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों की जानकारी जो लिखित में प्राप्त होती है उसे 'इतिहास' कहा जाता है. उससे पूर्व की सभ्यता के आरम्भ, मानव के उद्भव एवं प्रारम्भिक विकास की प्रक्रिया को जानने का स्रोत 'प्रागैतिहास या प्राक् इतिहास (Pre-History) है. प्रागैतिहास काल के अध्ययन के लिए पुरातत्व (Archaeology), मानव विज्ञान (Anthropology), भू-गर्भशास्त्र (Geology), प्राणिशास्त्र (Zoology), जीवाश्म विज्ञान (Paleontology), भूगोल (Geography) इत्यादि विज्ञान की शाखाओं की सहायता लेना आवश्यक होता है.

प्रागैतिहास : पद्धतियाँ एवं महत्त्व

मानव के उद्भव, विकास, संघर्ष एवं परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र साधन प्रागैतिहास (Pre History) है. जब मानव लेखन कला से अपरिचित था तब से मानव के समस्त दृष्टिकोणों का अध्ययन प्रागैतिहास के अन्तर्गत किया जाता है. प्रागैतिहास के द्वारा 30 लाख वर्ष पूर्व से 3000 ई. पू. के पहले का अध्ययन किया जाता है.

अध्ययन की विधियाँ–साधारण रूप में इतिहास के अध्ययन के लिए दो पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं–ऐतिहासिक पद्धति एवं पुरातात्त्विक पद्धति. ऐतिहासिक पद्धति में तत्कालीन इतिहासकारों के तिथिक्रम से व्यक्ति एवं राज्य के सम्बन्ध में आलेख प्राप्त होते हैं, जबकि दूसरी विधि के

आधार पर पुरातात्विक उत्खननों एवं साक्ष्यों के अनुसार मानवीय क्रियाकलापों एवं तत्कालीन सभ्यता, संस्कृति की रूपरेखा तैयार की जाती है. इन पुरातात्त्विक अवशेषों से पूरी जानकारी प्राप्त नहीं होती है इसलिए प्रागैतिहासिक अवशेषों का अध्ययन करते समय सांस्कृतिक सूचक का निर्माण एवं कालमापक की संरचना तैयार की जाती है जिससे प्रागैतिहास का अध्ययन सरल हो जाता है. प्रागैतिहास के लिए दो विधियाँ प्रचलित हैं–

(i) उपकरण प्ररूप (Tool types), (ii) स्तरक्रम विज्ञान (Stratigraphy)

(i) **उपकरण प्ररूप** (Tool types)–प्रागैतिहासिक काल के मानव के तकनीकी विकास का अध्ययन उपकरण प्ररूप (Tool types) पद्धति के द्वारा किया जाता है.

पाषाण काल का मानव पत्थर के टुकड़ों का वाटिकाश्म (Pebbles) के द्वारा कोड (Core) एवं शल्क (Flakes) नामक उपकरणों का निर्माण करता था. इन हथियारों की सहायता से तत्कालीन मानव शिकार एवं अन्य कार्य सम्पादित करते थे. कोड एवं शल्क तैयार करने की विधि के अलावा उपकरण या हथियार बनाने की दो पद्धतियाँ और थी—(i) क्लैक्टोनी (Clactonian) एवं लवाल्वाई (Levalloisean). क्लैक्टोनी तकनीक के द्वारा प्रागैतिहासिक मानव कोड से बड़ा शल्क उतारकर पहले शल्क के आधार पर दूसरे शल्क को उतारा जाता है. इस प्रक्रिया का कई बार दुहरान होता है–इस प्रक्रिया से बने हथियार बड़े एवं मोटे होते हैं.

लवाल्वाई तकनीक के द्वारा पहले कोड के एक तल से अनेक केन्द्रोन्मुख शल्कों को उतार कर कोड तैयार किया जाता है और इसके बाद तैयार हुए तल के ऊपरी हिस्से पर प्रहार कर उसके पृष्ठीय तल से शल्क उतारे जाते हैं. इस लवाल्वाई तकनीक को निर्मित कोड़ तकनीक (Prepared core technique) भी कहते हैं. प्रागैतिहासिक काल में मानव के निम्नलिखित उपकरण एवं हथियार होते थे–

(i) गंड़ासा और खण्डक उपकरण (Chooper & chooping tools), (ii) हस्तकुठार (Handaxe), (iii) विदारणी (Clever), (iv) खुरचनी (Scraper), (v) बेधनी (Point), (vi) बेधक (Borer), (vii) तक्षणी (Burin).

उपर्युक्त उपकरणों, हथियारों के आधार पर ही प्रागैतिहासिककालीन मानव के क्रियाकलापों का अध्ययन किया जाता है.

आद्य इतिहास का अध्ययन तिथि निर्धारण एवं स्तरीकरण के माध्यम से किया जाता है.

समन्वेषण एवं खुदाई के द्वारा स्तरीकरण अध्ययन किया जाता है.

तिथि निर्धारण के लिए निम्न विधियों का सहारा लिया जाता है–

(i) सापेक्ष तिथि विधि (Relating dating)

(ii) निरपेक्ष तिथि विधि (Absolute dating)

(iii) स्तरीकरण के आधार पर (On the basis of stratifications)

(iv) भू-आकृति विज्ञान विधि (Geomorphological method)

(v) अन्योन्याश्रय कालानुक्रम विधि (Cross dating)

(vi) वृक्षवलय विश्लेषण विधि (Dendro chronology)

(vii) अनुवर्ष स्तर विश्लेषण (Varve analysis)

(viii) पराग विश्लेषण विधि (Palynology)

(ix) परा चुम्बकत्व (Paleomagnetism)

(x) रेडियो कार्बन विधि या C-14 (Radio-Carbon method)

तिथि निर्धारण पद्धतियों में सर्वाधिक प्रचलित विधि रेडियो कार्बन विधि (Radio-Carbon Method) है. जिनमें कार्बन की मात्रा विद्यमान हो, उनमें इस विधि का प्रयोग किया जाता है. प्रामाणिकता के लिए अशंकित तिथि (caliberated date) का उपयोग होता है–जिसमें असंशोधित तिथियों के आगे bc और संशोधित तिथियों के सामने BC का प्रयोग किया जाता है.

स्तरक्रम विज्ञान (Stratigraphy)–प्रागैतिहास के अध्ययन की दूसरी विधि स्तरक्रम विज्ञान (Stratigraphy) है. धरती, गुफाओं, नदियों एवं अन्दर के भागों में दबे साक्ष्यों को आधार मानकर उत्खनन एवं समन्वेषण के द्वारा प्रागैतिहास का अध्ययन स्तर क्रम विज्ञान से सम्पादित होता है.

स्तरीकरण के नियमानुसार स्तरीकृत निक्षेप की सबसे नीचे की परत सबसे पुरानी एवं उसके बाद की परत क्रमशः नई होती जाती है. नदी का निक्षेपण इसके विपरीत होता है.

प्रागैतिहास के अध्ययन का महत्व

मानव के उद्भव, विकास, प्रकृति से संघर्ष एवं उस पर विजय प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति की जानकारी प्रागैतिहास के अध्ययन से ही प्राप्त होती है. पुरापाषाणकाल मध्यपाषाणकाल एवं नवपाषाणकाल की संस्कृतियों का अध्ययन भी प्रागैतिहास के द्वारा ही सम्भव है. संस्कृति की व्याख्या का प्रामाणिक आधार प्रागैतिहासिक के अध्ययन के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है.

मानव की उत्पत्ति

मानव की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक मत एवं अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं, जो अग्रलिखित हैं–

(i) ओल्ड टेस्टामेन्ट (Old Testamenta) के अनुसार नोआ ने भयंकर जलप्लावन से रक्षा कर विश्व की रचना की थी.

(ii) भारतीय धार्मिक (हिन्दू) ग्रन्थों के अनुसार सारे विश्व की रचना प्रजापिता ब्रह्मा ने की. सबसे पहले उन्होंने मनु को पैदा किया और हम सब मनु की सन्तान है. मनु की सन्तान होने के कारण ही 'मनुष्य = मनुस्य' (मनु का) एवं **'मानव'** कहा जाता है.

(iii) इस्लाम धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार सारा संसार आदम की सन्तान है और उसी की सन्तान होने के कारण मानव 'आदमी' कहा जाता है.

(iv) आधुनिक विज्ञान के अनुसार जीवों के क्रमिक विकास मछली → मेढक → सरीसृप → मानव के रूप में मानव का विकास हुआ.

प्रागैतिहास पंचांग के अनुसार भू-वैज्ञानिक 48 अरब वर्ष पुरानी अवधि पृथ्वी की मानते हैं. पृथ्वी की भू-वैज्ञानिक समय सारणी को महाकल्प (Eras) में विभक्त किया है.

भू-वैज्ञानिकों के अनुसार निम्न पाँच महाकल्प हैं—

(1) प्राचीन महाकल्प (Archaeozoic)

(2) प्रारम्भिक महाकल्प (Proterozoic)

(3) प्राचीन जीव युग (Polyozoic)

(4) मध्य महाकल्प (Mesozoic)

(5) नूतन जीव महाकल्प (Cenozoic)

उपर्युक्त महाकल्पों में से नूतन जीव महाकल्प दो कल्पों में विभाजित है–(i) तृतीयक कल्प (Tertiary) एवं (ii) चतुर्थ कल्प (Quaternary).

तृतीयक कल्प चार युगों में विभक्त है–

(1) पुरानूतन युग (Paleocene)

(2) आदिनूतन युग (Eocene)

(3) अल्पनूतन युग (Oligocene)

(4) मध्यनूतन युग (Miocene)

चतुर्थ कल्प तीन युगों में विभक्त है–

(1) न्यूनतम युग (Holocene)

(2) अत्यन्त नूतन युग (Pleistocene)

(3) अतिनूतन युग (Pliocene)

अकेले नूतन जीव महाकल्प की अवधि 8 करोड़ वर्ष पूर्व से 10,000 वर्ष पूर्व तक मानी जाती है.

मानव विकास के चरण के क्रम में निम्नलिखित मानव प्रजाति समूहों का आविर्भाव हुआ–

(1) प्राईमेट (2) रामापिथेकस

(3) आस्ट्रेलोपिथेकस–अफ्रीकेनस (4) होमोइरेक्टस

(5) नियण्डरथल (6) होमो सेपियन

मानव समप्राणी (होमोनिड) की शाखा का उद्‌भव 1 करोड़ 20 लाख वर्ष से 90 लाख वर्ष तक पुराना माना जाता है. इस श्रृंखला की अन्तिम प्रजाति होमोसेपियन जिसे ज्ञानी मानव कहा जाता है, वर्तमान प्रजाति के मानव से मिलता है. इस प्रजाति के मानव का आविर्भाव 50 हजार वर्ष पूर्व हुआ.

मानव वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में मानव की पाँच प्रजातियाँ उपलब्ध थीं–

(1) निग्रीटो (Negrito)

(2) आद्य-आस्ट्रेलियाई (Proto-Australoid)

(3) काकेशसी (Caucassoids)

(4) मंगोलाभ (Mangoloids)

(5) भूमध्यसागरीय प्रजाति (Mediterranean)

भारत में निम्न स्थानों पर पाषाणकालीन मानव के समान नरकंकाल प्राप्त हुए हैं—

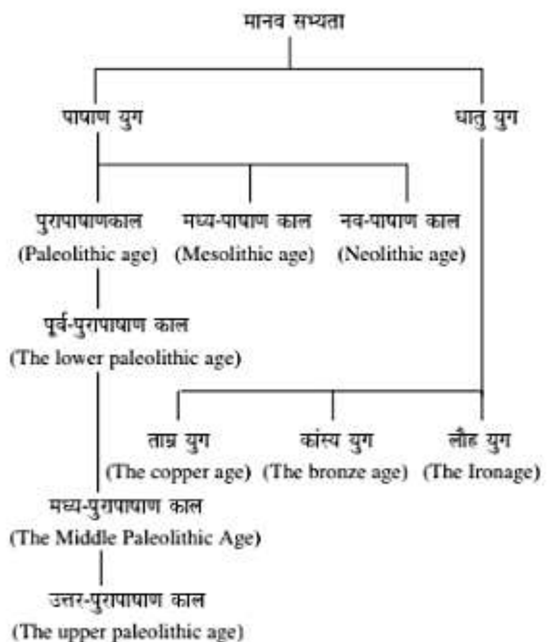
(1) सराय नाहर राय (इलाहाबाद, उ. प्र.)

(2) बागाइखोर एवं लेखानिया (मिर्जापुर, उ. प्र.)

(3) बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान)

मानव सभ्यता के विभिन्न चरण

मनुष्य के क्रमिक विकास को आधारभूत मानते हुए मानव सभ्यता को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है–



मानव सभ्यता को दो भागों में विभक्त किया है–

(i) पाषाण युग, (ii) धातु युग.

पाषाण युग तीन भागों में विभाजित हो जाता है–

(1) पुरापाषाण काल (Paleolithic Age)

(2) मध्य-पाषाण काल (Mesolithic Age)

(3) नव-पाषाण युग (Neolithic Age)

उपर्युक्त कालों में से पुरा पाषाण काल को निम्नलिखित तीन भागों में वर्गीकृत किया है–

(1) पूर्व-पुरापाषाण काल (The Lower Paleolithic Age)

(2) मध्य-पुरापाषाण काल (The Middle Paleolithic Age)

(3) उत्तर-पुरापाषाण काल (The Upper Paleolithic Age)

मानव सभ्यता के द्वितीय भाग धातु युग को तीन भागों में वर्गीकृत किया है–

(1) ताम्र युग (The Copper Age)

(2) कांस्य युग (The Bronze Age)

(3) लौह युग (The Iron Age)

पुरापाषाण काल
(The Paleolithic Age)

पूर्व-पुरापापाण काल
(The Lower Paleolithic Age)

पूर्व-पुरापाषाण काल में निम्नलिखित हथियार, उपकरण प्रचलित थे–

(1) खण्डक उपकरण (Chopping tools)

(2) हाथ की कुल्हाड़ी (Hand axe)

(3) विदारणियाँ (Clevers)

(4) फलक (Flake)

(5) कोड़ (Core)

इस काल का मानव आवास, भोजन, वस्त्र एवं अन्य सभी प्रकार से अस्थिर था. इस काल के सारे हथियार बेडौल एवं भौंडी आकृति के थे. इस काल का अधिकांश समय हिमयुग (Ice Age) के अन्तर्गत व्यतीत हुआ.

इस काल की संस्कृति के दो प्रमुख केन्द्र थे–

(1) उत्तर पश्चिम में सोहन (पाकिस्तान में सोहन नदी के किनारे)

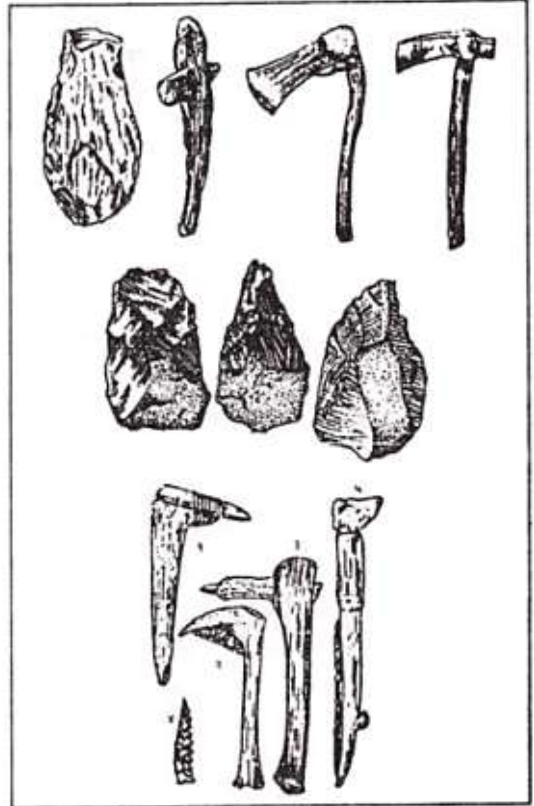
या

पेबुल चॉपर चॉपिंग संस्कृति

(2) दक्षिण भारत की मद्रासियन संस्कृति

या

हेण्ड एक्स क्लीवर परम्परा



प्रागैतिहासिक काल के औजार और हथियार

पूर्व-पुरापाषाणकाल की संस्कृति के अवशेष उपकरण, हथियार आदि निम्न स्थलों पर प्राप्त हुए–

(1) नर्मदा घाटी

(2) महाराष्ट्र की प्रवरा नदी

(3) मध्य प्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा एवं असम की घाटियों में.

इस काल का मानव मूलतः नेग्रिटो जाति का था.

पूर्व-पुरापाषाणकालीन संस्कृति के अस्तित्व के स्वरूप में प्रागैतिहासिक कलाकृतियाँ गुफाएँ, चित्रित शैलाश्रय भीम बेटका (रायसीन, म. प्र.) एवं उत्तर प्रदेश के बेलनघाटी (मिर्जापुर) क्षेत्र से साक्ष्य के रूप में प्राप्त हुए हैं.

इस काल में मानव भोजन का उत्पादक नहीं, संग्राहक था.

मध्य-पुरापाषाण काल
(The Middle Paleolithic Age)

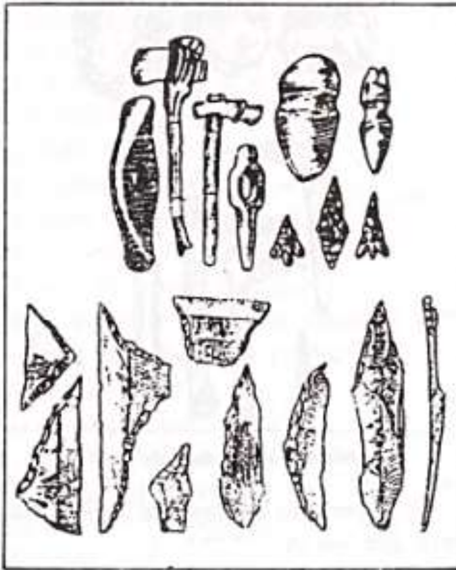
प्रसिद्ध भारतीय पुरातत्ववेत्ता डॉ. एच. डी. साँकलियाँ ने मध्य-पुरापाषाणकाल को फलक संस्कृति (Flake Culture) नाम दिया. इस काल में हथियार एवं उपकरण, क्वार्टजाईट की जगह जैस्पर एवं चर्ट पत्थरों से सुन्दर, उपयोगी एवं चमकीले बनाये जाते थे. मध्य-पुरापाषाणकाल (The Middle Paleolithic Age) में निम्नलिखित हथियार एवं उपकरण प्रचलित थे–

(1) वेधक (Borers)

(2) खुरचनी (Scraper)

(3) बेधनियाँ (Points)

(4) हाथ की कुल्हाड़ी (Hand Axe)



प्रागैतिहासिक काल के औजार और हथियार

मध्य-पुरापाषाण काल में मृतक संस्कार की परम्परा एवं अग्नि का प्रयोग किया जाने लगा था.

इस काल की मानव संस्कृति के स्थल निम्नलिखित स्थानों पर खोजे गए–

(1) बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश)

(2) उड़ीसा

(3) आन्ध्र प्रदेश

(4) कृष्णा घाटी (कर्नाटक)

(5) धसान तथा वेतवा घाटी (मध्य प्रदेश)

(6) सोन घाटी (म. प्र.)

(7) नेवासा (महाराष्ट्र)

(8) सिन्ध, राजस्थान, गुजरात के क्षेत्र.

उत्तर-पुरापाषाण काल
(The Upper Paleolithic Age)

इस काल की संस्कृति का आविर्भाव हिमयुग (Ice Age) के अन्त में हुआ.

इस काल के मानव की प्रजाति होमोसेपियन्स थी.

उत्तर-पुरापाषाणकाल में हड्डी, हाथीदाँत एवं पत्थर की ब्लेड से उपकरण एवं हथियार बनाये जाते थे.

उत्तर-पुरापाषाणकाल में निम्नलिखित हथियार, उपकरण प्रचलित थे–

(1) चाकू (Knife)

(2) ब्यूरिन (Burin)

(3) स्क्रेपर (Scraper)

(4) छिद्रक (Borer)

(5) शर (Points)

(6) अस्थि की अलंकृत छड़ (Decorated bone stics)

(7) सुइयाँ (Needles)

(8) भाले की नोंक



प्रागैतिहासिक काल के मृद्भाण्ड

उत्तर-पुरापाषाणकालीन संस्कृति के भारत में प्रमुख स्थल निम्न थे–

(1) बेलन घाटी (उ. प्र.)

(2) रेनीगुटा, येर्रगोंडपलेम, मुच्छलता, चिंतामनुगावी, बेटमचेर्ला (सभी स्थल आन्ध्र प्रदेश में)

(3) शोरापुर, दोआब, बीजापुर (कर्नाटक)

(4) पटने, इनामगाँव (महाराष्ट्र)

(5) सोन घाटी (मध्य प्रदेश)

(6) विसादी (गुजरात)

(7) सिंहभूमि (झारखण्ड)

इस काल की संस्कृति के साक्ष्य के रूप में उत्तर प्रदेश की वेलन घाटी में उत्खनन से हड्डी की मातृदेवी प्राप्त हुई है.

पुरा-पाषाणकालीन अवधि 4 लाख वर्ष पूर्व से 10,000 वर्ष तक मानी जाती है.

उत्तर-पुरापाषाणकाल में चित्रकारी, नक्काशी, मूर्ति बनाने, आभूषण बनाने एवं सिलाई कला का आविष्कार हो चुका था.

मध्य पाषाण काल
(The Mesolithic Age)

हिमयुग के अन्त में एवं नूतन काल के प्रारम्भ में लगभग 8000 वर्ष पूर्व मध्यपाषाणकालीन संस्कृति का उदय हुआ.

मध्य पाषाण काल के अस्तित्व की पुष्टि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फ्रांस के **'माँस द अजिल'** (Mas d'Azil) नामक स्थान पर प्राप्त अवशेषों, साक्ष्यों से हुई. इन साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि पुरापाषाण एवं नवपाषाण काल के समय में पर्याप्त विभेद था.

इस काल में खरगोश, हिरण, बकरी आदि जानवर पैदा हुए. छोटे जानवरों के शिकार के लिए इस काल में छोटे पाषाणोपकरण बनाये गये जिन्हें माइक्रोलिथ (Microliths) कहा गया.

मध्यपाषाण काल के हथियारों को व्यवहार में लाने के लिए हड्डी एवं लकड़ी के हत्थों का प्रयोग किया जाता था. ये हथियार दो प्रकार के होते थे—(i) अज्यॉमितिक लघु पाषाणोपकरण एवं (ii) ज्यॉमितिक लघु पाषाणोपकरण.

मध्य पाषाण काल के प्रमुख हथियार निम्नलिखित थे–

(1) इकधार फलक (Backed blade)

(2) वेधनी (Points)

(3) अर्द्धचन्द्राकार (Lunate)

(4) समलम्ब (Trapeze)

मध्य पाषाणकालीन संस्कृति के प्रमुख स्थल निम्नलिखित हैं–

(1) वीरभानपुर (पश्चिम बंगाल)

(2) लंघनाज (गुजरात)

(3) टेरी समूह (तमिलनाडु)

(4) आदमगढ़ (मध्य प्रदेश)

(5) बागोर (राजस्थान)

(6) मोरहना पहाड़, सराय नाहर राय, महादाहा (उत्तर प्रदेश)

उपर्युक्त स्थलों में सराय नाहर राय एवं महादाहा से पहला मानव अस्थि-पिंजर, झोंपड़ियाँ तथा लंघनाज (गुजरात) से मिट्टी के बर्तन विंध्याचल की गुफाओं और शैलाश्रयों से युद्ध, शिकार नृत्य के चित्र प्राप्त हुए हैं.

मध्य पाषाणकाल में स्थायी निवास, कृषि, पशुपालन एवं शव दफनाने की कला विकसित हो चुकी थी.

आदमगढ़ एवं बागोर पुरापाषाणकालिक स्थलों का समय 5000 ई. पू. निर्धारित किया है.

नवपाषाण काल
(The Neolithic Age)

विश्व स्तर पर नवपाषाणकालीन संस्कृति का आरम्भ 7000 ई. पू. हुआ. गॉर्डन चाइल्ड नामक पुरातत्त्ववेत्ता के अनुसार इस संस्कृति का उद्‌भव पश्चिमी एशिया के धन्वाकर क्षेत्र (Fertile crescent) में हुआ एवं यहीं से विश्व भर में प्रसार हुआ.

भारत में नवपाषाणकालिक संस्कृति की बस्तियों के एवं कृषि सम्बन्धी प्रमाण सर्वप्रथम मेहरगढ़ (सिन्ध और बलूचिस्तान-पाकिस्तान में प्राप्त हुए है.

नवपाषाणकालीन प्रस्तर उपकरण सबसे पहले उत्तर प्रदेश की टोंस नदी घाटी में सन् 1860 ई. में लेन्मेसुरियर ने प्राप्त किए.

नवपाषाणकाल का मानव पॉलिशदार, हत्थेयुक्त हथियार, मिट्टी के बर्तन, मूर्तियाँ, आभूषण, खिलौने एवं भोजन उत्पादन के ज्ञान से परिचित था. इस काल में वर्ण व्यवस्था, कबीली प्रथा, दफनाने की प्रथा, पुनर्जन्म पूजा इत्यादि की प्रथाएँ प्रचलित हो गई थी.

नवपाषाणकाल के प्रमुख प्रचलित हथियार एवं उपकरण निम्नलिखित हैं–

(1) हत्थेदार कुल्हाड़ी	(8) बरमा
(2) हँसिया	(9) सूई
(3) ओखली	(10) दाँतों वाले कंधे
(4) मूसल	(11) मछली का जाल
(5) छेनी	(12) काँटेदार बर्छी
(6) छुरी	(13) बुनने का सुआ
(7) रुखानी	

नवपाषाणकालीन संस्कृति के स्थल निम्नलिखित हैं–

क्र. सं.	स्थल	वर्तमान प्रान्त	अवशेष के रूप में प्राप्त साक्ष्य
1.	बुर्जहोम, गुफ्फकराल	कश्मीर	दफनाने के साक्ष्य, गर्तघर, मृद्भाण्ड, हथियार, अस्थि उपकरण
2.	किली गुल मोहम्मद	(क्वेटा घाटी पाकिस्तान)	पशुपालन एवं कृषि के साक्ष्य प्राप्त हुए.
3.	चिरोंद	बिहार	हड्डी के उपकरण (हिरण के सींग)
4.	मास्की, ब्रह्मगिरि	कर्नाटक	पशुपालन एवं कृषि
5.	हलुर, कोडिकल	कर्नाटक	आखेट हथियार, कृषि
6.	संगनकल्लू	कर्नाटक	पशुपालन, कृषि, मिट्टी के बर्तन, प्रस्तर उपकरण
7.	पिकलीहल, उटनूर	आन्ध्र प्रदेश	शंख के ढेर, निवास स्थल
8.	पैयामपल्ली	तमिलनाडु	निवास स्थल
9.	कालीबंगा	राजस्थान	उपकरण, कृषि, आवास
10.	कोलडीहवा	उत्तर प्रदेश	चावल के प्राचीनतम साक्ष्य
11.	असम	असम	सरकण्डे एवं मिट्टी के घर
12.	मेघालय	मेघालय	सरकण्डे एवं मिट्टी के घर
13.	मेहरगढ़	पाकिस्तान के बलूचिस्तान में	कृषि एवं बस्तियों के

नव पाषाणकालीन संस्कृति की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(1) इस काल में मृतकों को सम्मान प्रदान करने की दृष्टि से कब्रगाहों में बड़े-बड़े पत्थर लगाये जाते थे, जिन्हें महापाषाण (Megalithis) कहा जाता था.

(2) इस काल में चावल, गेहूँ, जौ, मूँग, मसूर इत्यादि की खेती करने, भोजन पकाने का कार्य मानव करने लगा था.

(3) इस काल में पूजा-अर्चना, जादुगरी, कबीली प्रथा, वर्गीय प्रणाली का विकास हो चुका था.

(4) स्थिर ग्राम्य जीवन, बस्तियाँ, पशुपालन नवपाषाण काल में पूरी तरह अपनाया जा चुका था.

(5) मछली पकड़ने, शिकार करने, आभूषण बनाने एवं व्यवसाय करना मानव ने प्रारम्भ कर दिया था.

(6) कुम्भकारी, चूल्हे, रंगने, मूर्तियाँ, खिलौने बनाने इत्यादि का कार्य होने लगा था.

धातु युग
(The Metal Age)

धातु युग को तीन भागों में वर्गीकृत किया है–

1. ताम्र युग (The Copper Age)
2. कांस्य युग (The Bronze Age)
3. लौह युग (The Iron Age)

पत्थर के पुराने हथियारों के साथ ताँबे के नये उपकरणों, हथियारों का प्रयोग होने के कारण ताम्र युग को ताम्र पाषाण काल (The chalcolithic Age) कहा गया.

ताम्र पाषाण काल (Chalcolithic Age)

इस काल के मानव ने ताँबे, हल-बैल, जुए, पहिए, नाव एवं मुहर के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जिससे व्यक्तिगत स्वामित्व का विकास एवं विनिमय का प्रसार हुआ.

ताम्रपाषाण काल के प्रमुख सांस्कृतिक स्थल निम्नलिखित हैं–

क्र.	स्थल	राज्य	अवशेष
1.	आहड़, गिलुंद	राजस्थान बनास घाटी में	बड़ी बस्तियाँ, पकी ईंटें, तंदूर, मृद्भाण्ड, ताम्र उपकरण, आभूषण मनके, मुहर, मृण्मूर्तियाँ
2.	कायथ	मध्यप्रदेश	ताँबे की कुल्हाड़ियाँ, मिट्टी के बर्तन, चूड़ियाँ, मनके सूक्ष्म हथियार
3.	नवदाटोली	मध्यप्रदेश	सुनियोजित बस्ती, लाल-काले रंग के मृद्भाण्ड, ताँबे के उपकरण, गेहूँ, मसूर, चना, मटर, खेसारी और चावल की कृषि के प्रमाण
4.	नेवासा	महाराष्ट्र	गाय, भेड़, बकरी, सुअर, भैंस, घोड़ापालन, चावल, जौ, मसूर, मटर, बेर बाजरा, चना, गेहूँ, पटसन की खेती के प्रमाण, कच्ची ईंट और फूस, मातृदेवी, आभूषण
5.	पांडुराजार ढिब्बी	पश्चिमी बंगाल	गले का हार, चूड़ियाँ, दफनाये शव
6.	जोर्वे, दयमाबाद, चंदोली, सोनगाँव, इनामगाँव	महाराष्ट्र	चाकनिर्मित टोंटीदार मृद्भाण्ड, ताम्र उपकरण, सूक्ष्मपाषाणोपकरण, कृषि एवं पशुपालन, काँसा
7.	चिरोंद	बिहार	पशुपालन, कृषि
8.	ब्रह्मगिरि, मास्की	कर्नाटक	लाल काले, मृद्भाण्ड, आभूषण
9.	मालवा, कायथ, एरण	मध्य प्रदेश	ताम्र उपकरण, ईंटे, पशुपालन
10.	गुंगेरिया	मध्य प्रदेश	424 ताम्र उपकरण एवं 102 चाँदी के पतले पत्तर

ताँबे का सबसे पहले उपयोग पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार 5000 ई. पू. किया गया.

ताम्रपाषाणकालीन उत्खनन विस्तृत पैमाने पर पश्चिमी महाराष्ट्र में हुए. उस संस्कृति को जोर्वे संस्कृति स्थल के नाम से पहचाना गया. पश्चिमी महाराष्ट्र के ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के स्थलों में अहमदनगर के जोर्वे, नेवासा, दयमाबाद पुणे के सोनगाँव, इनामगाँव, चन्दोली प्रमुख थे. जोर्वे संस्कृति का सबसे बड़ा स्थल दयमाबाद है.



ताम्रपाषाणकालीन स्थल

1200 ई. पू. ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति अनावृष्टि के कारण लुप्त हुई. इनमें केवल जोर्वे संस्कृति 700 ई. पू. तक अवशिष्ट रही. कायथ नामक स्थल पर उत्खनन के दौरान प्राप्त लाल काले मृद्भाण्डों पर प्राक्हड़प्पन, हड़प्पन एवं हड़प्पोत्तर संस्कृति के प्रभाव दृष्टिगत होते हैं.

यह विकसित संस्कृति थी जो ग्राम्य संस्कृति के साथ निरन्तर नगरीय संस्कृति की दिशा में अग्रसर थी.

ताम्र युग (The Copper Age)

ऊपरी गंगा घाटी एवं गंगा-यमुना दोआब में ताम्र पाषाणिक संस्कृति के अलावा ताँबे के उपकरण प्राप्त हुए, जिन्हें किसी भी ज्ञात संस्कृति से नहीं जोड़ा जा सकता.

गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र में निम्नलिखित उपकरण प्राप्त हुए–

1. हाथ की कुल्हाड़ी (Hand axe)
2. मत्स्य भाले (Harpoons)
3. शृंगिका युक्त तलवारें (Swords with antennae)
4. मानवतारोपी मूर्तियाँ (Anthropomorphic figures)

उपर्युक्त उपकरणों को गंगाघाटी ताम्रनिधि के नाम से पुकारा जाता था.

ताम्रकाल में गेरुवर्णी मृद्भाण्ड, मिट्टी के आवास स्थल भी प्राप्त हुए.

गंगा घाटी ताम्रनिधि का विकास अनुमानतः 2000 से 1800 ई. पू. के मध्य हुआ.

अनेक विद्वान् इस संस्कृति को हड़प्पा संस्कृति से सम्बद्ध करते हैं.

कांस्य युग (The Bronze Age)

3000 ई. पू. के लगभग कांस्य युग का आरम्भिक काल माना जाता है.

इस काल में ताँबे के स्थान पर काँसे का प्रयोग होने लगा. इसी के फलस्वरूप उस काल को कांस्य युग (The Bronze Age) कहा गया.

इस काल का मानव धर्म, कला, लिपि, व्यवसाय से पूरी तरह सम्बद्ध हो चुका था.

कांस्य युग में ताँबे, काँसे के अतिरिक्त टिन, सोना, चाँदी का प्रयोग भी होने लगा था.

इस काल के दौरान 2000-1700 ई. पू. के मध्य सिन्धु घाटी एवं राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक शहरी सभ्यता का विकास हुआ.

कांस्य युग की अवधि में शिल्प, व्यवसाय एवं व्यापारिक केन्द्र के रूप में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा, बनवाली जैसे शहरों का उदय हुआ.

इस युग की संस्कृति के मानव का व्यावसायिक सम्बन्ध पश्चिमी एशिया एवं मध्य एशिया के मध्य स्थापित हो चुका था. इस काल में राज्य एवं केन्द्रीय शक्ति विकसित हो चुकी थी.

लौह युग (The Iron Age)

लगभग 1400 ई. पू. ताम्र एवं कांस्य के बाद लोहे का प्रयोग करना प्रारम्भ किया.

लौहयुगीन सभ्यता नदी-घाटियों से दूर विकसित हुई. सिक्के का प्रचलन एवं साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का विकास लौह युग में ही हुआ था.

इसी अवधि में आर्यों का आगमन हुआ और उन्होंने लोहे का प्रयोग करना प्रारम्भ किया.

साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार उत्तर वैदिक काल (1000 से 600 ई. पू.) में लोहे का प्रयोग हुआ.

लगभग 1000 ई. पू. में गांधार, बलूचिस्तान, पूर्वी पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान क्षेत्रों में लोहे के प्रयोग होने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं.

छठीं शताब्दी ई. पू. के बाद लोहे के उपकरणों में काँटे, कुल्हाड़ियों, कुदाल, जखेड़ा, दरातियाँ चाकू इत्यादि प्राप्त हुए हैं.

लौह युग में चाक से बने विभिन्न रंगों के बर्तन प्राप्त हुए. इसी कारण से इस संस्कृति को 'चित्रित धूसर मृद्‌भाण्ड संस्कृति' कहते हैं.

लोहा एवं चित्रित धूसरभाण्ड अहिच्छत्र, आलमगीरपुर अंतरजीखेड़ा, हस्तिनापुर, मथुरा, रोपड़, नोह, जखेड़ा, नागदा एरण, पाण्डुराजारढीबी, महिसदल, चिरौंद, सोनपुर इत्यादि स्थलों पर मिले हैं.

1000 ई. पू. दक्षिण भारत के महापाषाणों में लौह प्राप्त होने के आधार पर उसी दौरान से लौह युग का प्रारम्भ माना है. स्थायी निवास, विस्तृत कृषि, शिल्प एवं व्यवसाय तथा शहरी सभ्यता के विकास के स्पष्ट साक्ष्य इस दौरान प्राप्त हुए.

इस काल की संस्कृति सर्वाधिक विकसित संस्कृति थी.

निष्कर्ष–उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मानव की उत्पत्ति एवं सभ्यता का उद्‌भव दैवीय प्रभाव या आकस्मिक शक्ति के प्रभाववश नहीं अपितु जलवायवीय एवं भौगोलिक परिवर्तनों के क्रमिक विकास से यह सम्भव हो सका है. विभिन्न चरणों में प्रगति के कदमों से अग्रसर होता हुआ मानव सभ्यता के मुकाम तक पहुँचने में सफल रहा है.

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- भारतीय इतिहास के लेखन की परम्परा आधुनिक भारत में 18वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुई.
- सन् 1784 ई. में वारेन हेस्टिंग्स एवं सर विलियम जोन्स ने कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की स्थापना कर भारतीय इतिहास को पुनर्जीवित किया.
- भारतीय इतिहासकारों ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय इतिहास की रचना की.
- भारत को ईरानियों ने हिन्दुस्तान, यूनानियों ने इण्डिया नाम दिया.
- मत्स्यपुराण के अनुसार वृहत्तर भारतवर्ष के नौ भेद हैं–इन्द्रद्वीप, कसेरू, ताम्रपर्णी, गभस्तिमान, नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्व, वारूण एवं सागर से घिरा भारत.
- प्राचीन भारत उत्तरी गोलार्द्ध में 7° और 37° अक्षांश एवं 62° तथा 98° देशान्तर के मध्य अवस्थित था.
- भारतवर्ष की उत्तरी सीमा हिमालय, पश्चिमोत्तर सीमा सुलेमान, सफेद कोह एवं किरथर, दृढ़ पश्चिमोत्तर सीमा के रूप में हिन्दुकुश और पामीर, पूर्वोत्तर की सीमा दक्षिण की ओर झुकने वाली हिमालय की शृंखलाएँ पटकोई, जयन्तिया, नागा खासी, गोरा, लुसाई एवं आराकानयोमा तथा नीचे के क्षेत्र के तीनों तरफ की सीमा का निर्माण हिन्द महासागर द्वारा होता है.
- सम्पूर्ण प्राचीन भारतवर्ष को पाँच प्राकृतिक विभागों में वर्गीकृत किया है–हिमालय शृंखला, उत्तर भारत के मैदान विन्ध्यमेखला, दक्षिणी प्रायद्वीप एवं सुदूर दक्षिण.
- प्राचीन भारत के निवासियों में प्रमुख रूप से चार जातियाँ विद्यमान थीं–आर्य, द्रविड़, शबर-पुलिन्द, किरात या मंगोल.
- आर्य जाति विन्ध्याचल एवं हिमालय पर्वत के मध्य, द्रविड़ सुदूर दक्षिण में, शबर-पुलिन्द विन्ध्यमेखला के जंगली एवं पहाड़ी क्षेत्रों में तथा किरात जाति हिमालय के उत्तरी-पूर्वी भाग में निवास करती थी.
- प्राचीन भारत में चार भाषा परिवार विद्यमान थे–आर्य भाषा परिवार, द्रविड़ भाषा परिवार, शबर-पुलिन्द भाषा परिवार, किरात भाषा परिवार.
- सभ्यता के आरम्भ, मानव के उद्‌भव एवं प्रारम्भिक विकास की प्रक्रिया को जानने का स्रोत 'प्रागैतिहास' है.
- प्रागैतिहास के द्वारा 30 लाख वर्ष पूर्व से 3000 ई. पू. के पहले का अध्ययन किया जाता है.
- इतिहास के अध्ययन की दो पद्धतियाँ–ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक पद्धति है.
- प्रागैतिहास के लिए दो विधियाँ प्रचलित हैं–उपकरण प्ररूप एवं स्तर क्रम विज्ञान.
- प्रागैतिहासिक काल में निम्नलिखित उपकरण एवं हथियार थे–
  1. गंडासा और खण्डक उपकरण (Chooper & chooping tools)
  2. हस्तकुठार (Hand axe)
  3. विदारणी (Clever)
  4. खुरचनी (Scraper)
  5. वेधनी (Point)
  6. वेधक (Borer)
  7. तक्षणी (Burin)
- तिथि निर्धारण विधियों में सर्वाधिक प्रचलित विधि रेडियो कार्बन विधि (Radio carbon method) या C-14 है.
- हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार ब्रह्मा ने सम्पूर्ण संसार की रचना की एवं मनु को सबसे पहले बनाया.

- आधुनिक विज्ञान के अनुसार जीवों के क्रमिक विकास मछली → मेढक → सरीसृप → मानव के रूप में मानव का विकास हुआ.
- मानव समप्राणी (होमोनिड) का उद्‌भव 1 करोड़ 20 लाख वर्ष से 90 लाख वर्ष तक पुराना माना जाता है.
- होमोसेपियन्स अर्थात् ज्ञानी मानव वर्तमान प्रजाति के मानव से साम्यता रखता है जिसका आविर्भाव 50,000 वर्ष पूर्व हुआ.
- मानव वैज्ञानिकों के अनुसार प्राचीन भारत में निम्न पाँच प्रजातियाँ थीं–
  1. निग्रीटो (Negrito)
  2. आद्य-आस्ट्रेलियाई (Proto-Australoid)
  3. काकेशसी (Caucassoids)
  4. मंगोलाम (Mangoloids)
  5. भूमध्यसागरीय प्रजाति (Mediterranean)
- पाषाणकालीन मानव के नरकंकालों से मिलते हुए नरकंकाल निम्न स्थानों पर प्राप्त हुए हैं–

  सराय नाहरराय (इलाहबाद, उ. प्र.)

  बागाईखोर एवं लेखानिया (मिर्जापुर, उ. प्र.)

  बागोर (भीलवाड़ा, राजस्थान)
- मानव सभ्यता के काल को दो प्रमुख भागों में विभक्त किया गया है–

  (1) पाषाण युग

  (2) धातु युग
- पूर्व-पुरापाषाणकाल का अधिकांश समय हिमयुग के अन्तर्गत व्यतीत हुआ.
- पूर्व-पुरापाषाणकालीन साक्ष्यों में गुफाएँ, प्रागैतिहासिक कला-कृतियाँ एवं चित्रित शैलाश्रय मध्य प्रदेश के भीमबेटका एवं उत्तर प्रदेश के बेलन घाटी क्षेत्र से उत्खनन के दौरान प्राप्त हुए.
- प्रसिद्ध भारतीय पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. एच. डी. साँकलिया ने मध्य-पुरापाषाणयुग को फलक संस्कृति (Flake-culture) कहा.
- मध्यपुरापाषाणकाल के हथियार एवं उपकरण जैस्पर एवं चर्ट पत्थरों से बनाये जाते थे.
- अग्नि एवं मृतक संस्कार की परम्परा का आविर्भाव मध्य-पुरापाषाणकाल में हुआ.
- वेधक (Borer), खुरचनी (Scrapper), वेधनियाँ (Points) एवं हाथ की कुल्हाड़ी (Hand axe) मध्य पुरापाषाण काल के प्रमुख हथियार थे.
- पुरापाषाणकाल की अवधि 4 लाख वर्ष पूर्व से 10,000 वर्ष तक मानी जाती है.
- हिमयुग (Ice Age) के अन्त में उत्तर-पुरापाषाणकाल का उदय हुआ.
- उत्तर-पाषाणकाल के मानव की प्रजाति होमोसेपियन्स थी.
- हड्डी की मातृदेवी उत्तर-पुरापाषाणकालीन साक्ष्य के उत्खनन में बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुई.
- उत्तर-पुरापाषाणकाल में चित्रकारी, नक्काशी, मूर्तिकला एवं सिलाई कला का आविष्कार हो चुका था.
- मध्य-पाषाणकाल के अस्तित्व की पुष्टि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फ्रांस के मॉस द अजिल (Mas d' Azil) नामक स्थान पर प्राप्त अवशेषों, साक्ष्यों से हुई.
- मध्य-पाषाणकाल के उपकरण, हथियारों को छोटे होने के कारण माइक्रोलिथ (Microlith) कहा जाता था.
- मध्य-पाषाणकालीन संस्कृति का उदय 8000 वर्ष पूर्व हुआ था.
- मध्य-पाषाणकाल की संस्कृति का पहला मानव कंकाल एवं झोंपड़ियाँ उत्तर प्रदेश के सराय नाहर राय एवं महादाहा में प्राप्त हुई.
- मध्य-पाषाणकाल में हथियार हड्डी एवं पत्थर के हत्थे से युक्त होते थे.
- पुरापाषाणकालीन संस्कृति स्थल आदमगढ़ एवं बागोर का समय 5,000 ई. पू. निर्धारित किया है.
- विन्ध्याचल की गुफाओं में मध्यपाषाणकाल के साक्ष्य के रूप में युद्ध एवं नृत्य के चित्र प्राप्त हुए हैं.
- नवपाषाणकालीन संस्कृति का उद्‌भव एवं प्रसार गॉर्डन चाइल्ड के अनुसार पश्चिमी एशिया के धन्वाकर क्षेत्र (Fertile Crescent) में हुआ.
- नवपाषाणकाल की संस्कृति का आविर्भाव विश्व स्तर पर 7000 ई. पू. हुआ.
- नवपाषाणकालीन संस्कृति के प्रस्तर उपकरण सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश की टोंस नदी घाटी में सन् 1860 ई. में लेन्मेसुरियर ने प्राप्त किए.
- नवपाषाणकालीन बस्तियों एवं कृषि के स्पष्ट और सबसे पहले साक्ष्य मेहरगढ़ (पाकिस्तान) में प्राप्त हुए.
- नवपाषाणकालीन संस्कृति में कबीली प्रथा, वर्ण व्यवस्था, पुनर्जन्म एवं पूजा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ था.
- बुर्जहोम एवं गुफ्फकराल (कश्मीर) में नवपाषाणकालीन संस्कृति के साक्ष्य बतौर गर्तघर, मृद्‌भाण्ड, दफने हुए शव एवं उपकरण प्राप्त हुए हैं.
- बुनने का सुआ एवं मछली पकड़ने का जाल नवपाषाण-कालीन संस्कृति के प्रमुख आविष्कार थे.
- नवपाषाणकालीन संस्कृति स्थलों में अवशेष के रूप में चिराँद (बिहार) से हड्डी के बने उपकरण, हरिण के सींगों से बने हथियार एवं पिकलीहल, उटनूर (आन्ध्र प्रदेश) से शंख के ढेर, निवास स्थान तथा कोलडीहवा (उ.प्र.) से चावल उत्पादन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं.
- कुम्भकारी, भोजन उत्पादन, जादूगरी, वर्गीय व्यवस्था को नवपाषाणकालीन संस्कृति में अपनाया जा चुका था.

- नवपाषाणकाल में मृतकों को सम्मान प्रदान करने की दृष्टि से कब्रगाहों पर बड़े पत्थर लगाये जाते थे जिन्हें महापाषाण (Megalithis) कहा जाता था.
- ताम्र युग में ताँबे के साथ-साथ पत्थर के उपकरण एवं हथियारों का प्रयोग भी किया जाता था. अतः ताम्र युग को 'ताम्रपाषाणकाल' (Chalcolithic Age) कहा जाता था.
- ताम्रपाषाणकाल के मानव को जुए, हल-बैल, पहिए, नाव एवं मुहर का ज्ञान था.
- ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति स्थलों में मध्य प्रदेश के गुंगेरिया नामक स्थल से साक्ष्य स्वरूप 424 ताम्र उपकरण एवं 102 चाँदी के पतले पत्तर पाये गये जो सर्वाधिक ताम्र निधि का उदाहरण है.
- ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति ग्राम्य संस्कृति थी, लेकिन शहरी सभ्यता को स्थापित करने की दिशा में अग्रसर थी.
- पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार 5000 ई. पू. ताँबे का सबसे पहले उपयोग किया.
- ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के सर्वाधिक अवशेष पश्चिमी महाराष्ट्र से प्राप्त हुए जिनमें अहमदनगर के जोर्वे, नेवासा, दयमाबाद, पुणे के सोनगाँव, इनामगाँव, चन्दोली प्रमुख रूप से थे. इस संस्कृति को **जोर्वे संस्कृति** भी कहा जाता था.
- 1200 ई. पू. अनावृष्टि के कारण ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति लुप्त हो गई.
- ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के अवशेषों में कायथ नामक स्थल पर लाल-काले मृद्‌भाण्ड प्राप्त हुए जिनमें प्राक् हड़प्पन एवं हड़प्पोत्तर संस्कृति के प्रभाव दृष्टिगत होते हैं.
- ताम्रकालीन संस्कृति को पुरातत्त्ववेत्ता हड़प्पा संस्कृति से सम्बद्ध मानते हैं.
- गंगा घाटी ताम्र निधि का विकास अनुमानतः 2000 से 1800 ई. पू. के मध्य हुआ.
- ताम्र युग के साक्ष्य गंगा घाटी एवं गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में प्राप्त हुए जिनमें हाथ की कुल्हाड़ी, मत्स्य भाले, शृंगिका युक्त तलवार, मानवतारोपी मूर्तियाँ प्राप्त हुईं.
- कांस्य युग (The Bronze Age) का आविर्भाव 3000 ई. पू. हुआ था.
- कांस्य युग की संस्कृति के मानव के व्यावसायिक सम्बन्ध पश्चिमी एशिया एवं मध्य एशिया के साथ थे.
- कांस्य युग में 2000-1700 ई. पू. के मध्य सिन्धु घाटी एवं राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शहरी सभ्यता का विकास हुआ.
- कांस्य युग में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा एवं बनवाली जैसे शहरों का उदय हुआ.
- राज्य एवं केन्द्रीय शक्ति का विकास कांस्य युग में हुआ.
- लोहे के प्रयोग लगभग 1400 ई. पू. होना प्रारम्भ हुए.
- लौह युग में साम्राज्यवादी प्रगति का विकास, सिक्कों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ.
- आर्यों का आगमन लौह युग में हुआ था.
- लौह युग को रंग-बिरंगे चाक से बने बर्तन अवशेष में प्राप्त होने के कारण 'चित्रित धूसर मृद्‌भाण्ड संस्कृति' कहते हैं.
- लौह युग की संस्कृति के निम्नलिखित स्थल प्रमुख थे–

1. अहिच्छत्र	9. नागदा
2. आलमगीरपुर	10. एरण
3. अंतरजीखेड़ा	11. पाण्डु
4. हस्तिनापुर	12. पांडुराजार ढिब्बी
5. मथुरा	13. महिसदल
6. रोपड़	14. चिरांद
7. नोह	15. सोनपुर
8. जखेड़ा	

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

प्रागैतिहास के अध्ययन स्रोत

(अ) पुरातत्व (Archecology)

(ब) मानव विज्ञान (Anthropology)

(स) भूगर्भशास्त्र (Geology)

(द) प्राणिशास्त्र (Zoology)

(य) जीवाश्म विज्ञान (Paleontology)

(र) भूगोल (Geography)

प्रागैतिहास के तिथि निर्धारण के लिए प्रचलित विधियाँ

(क) सापेक्ष तिथि (Relating dating)

(ख) निरपेक्ष तिथि विधि (Absolute dating)

(ग) स्तरीकरण के आधार पर (On the basis of Stratification)

(घ) भूआकृति विज्ञान विधि (Geomorphological Method)

(ङ) अन्योन्याश्रय कालानुक्रम तिथि (Cross dating)

(च) वृक्षवलय विश्लेषण विधि (Dendro Chronology)

(छ) अनुवर्ष स्तर विश्लेषण (Varve analysis)

(ज) पराग विश्लेषण विधि (Palynology)

(झ) पुराचुम्बकत्व (Paleomagnetism)

(ञ) रेडियो कार्बन विधि या C-14 (Radio-Carbon Method)

प्रमुख मानव प्रजातियाँ

(i) प्राइमेट (ii) रामापिथेकस
(iii) आस्ट्रेलोपिथेकस (iv) अफ्रीकेनस
(v) होमोइरेक्टस (vi) नियंडरथल
(vii) होमोसेपियन

भारत में उपलब्ध मानव की 5 प्रजातियाँ

(अ) निग्रीटो (Negrito)
(ब) आद्य-आस्ट्रेलियाई (Proto-Australoid)
(स) कॉकेशसी (Caucassoids)
(द) मंगोलाभ (Mongoloids)
(य) भूमध्यसागरीय प्रजाति (Mediterranean)

मानव सभ्यता के विभिन्न चरण

(अ) **मुख्य दो चरण–**
(i) पाषाण युग, (ii) धातु युग

(ब) **पाषाण युग के तीन भाग–**
(i) पुरापाषाण काल (Paleolithic Age)
(ii) मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age)
(iii) नवपाषाण युग (Neolithic Age)

(स) **पुरापाषाण युग के तीन भाग–**
(i) पूर्व पुरापाषाण काल (The lower Paleolithic Age)
(ii) मध्य पुरापाषाण काल (The Middle Paleolithic Age)
(iii) उत्तरपाषाण काल (The upper paleolithic Age)

(द) **धातु युग के तीन भाग–**
(i) ताम्र युग (The Copper Age)
(ii) कांस्य युग (The Bronze Age)
(iii) लौह युग (The Iron Age)

पूर्व-पुरापाषाण काल के हथियार / उपकरण

(1) खण्डक उपकरण (Chopping tools)
(3) हाथ की कुल्हाड़ी (Hand-Axe)
(3) विदारणियाँ (Clevers)
(4) फलक (Flake)
(5) कोड़ (Core)

मध्य-पुरापाषाणकाल के हथियार / उपकरण

(1) वेधक (Borers)
(2) खुरचनी (Scrapper)
(3) वेधनियाँ (Points)
(4) हाथ की कुल्हाड़ी (Hand-Axe)

उत्तर-पुरापाषाणकाल के हथियार / उपकरण

(1) चाकू (Knife)
(2) ब्यूरिन (Burin)
(3) स्क्रेपर (Scraper)
(4) छिद्रक (Borer)
(5) शर (Points)
(6) अस्थि की अलंकृत छड़ (Decorated bones stic)
(7) सुइयाँ (Neddles)
(8) भाले की नोंक

मध्य-पाषाणकाल के प्रमुख हथियार / उपकरण

(1) इकधार फलक (Backed blade)
(2) वेधनी (Points)
(3) अर्द्धचन्द्राकार (Lunate)
(4) समलम्ब (Trapeze)

नवपाषाणकाल के प्रमुख हथियार / उपकरण

(1) हत्थेदार कुल्हाड़ी (2) हँसिया
(3) ओखली (4) मूसल
(5) छेनी (6) छुरी
(7) रुखानी (8) बरमा
(9) सुई (10) दाँतों वाले कंघे
(11) मछली का नीस (12) काँटेदार बर्छी
(13) बुनने का सुआ

लौहयुगीन संस्कृति के प्रमुख स्थल

(उत्खनन से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड एवं लोहा प्राप्त हुआ है)

(1) अहिच्छत्र (2) आलमगीरपुर
(3) अंतरजीखेड़ा (4) हस्तिनापुर
(5) मथुरा (6) रोपड़
(7) नोह (8) जखेड़ा
(9) नागदा (10) एरण
(11) पाण्डु (12) रजारढीवी
(13) महिसदल (14) चिरौंद
(15) सोनपुर

पाषाणकाल का कालक्रम

(अ) पुरापाषाणकाल (20 लाख ई. पू.–9000 ई. पू.)
(ब) मध्यपाषाणकाल (9000 ई. पू.–4000 ई. पू.)
(स) नवपाषाणकाल (4000 ई. पू.–2000 ई. पू.)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतीय इतिहासकारों ने इतिहास की रचना की—
   (A) 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में
   (B) 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में
   (C) 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में
   (D) 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में

2. सन् 1784 ई. में 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की स्थापना वारेन हेस्टिंग्स एवं सर विलियम जोन्स ने की. इस संस्था का उद्देश्य था—
   (A) भारतीय इतिहास को पुनर्जीवित करने का
   (B) अंग्रेजों से युद्ध करने का
   (C) प्रशासनिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने का
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3. प्राचीन भारत का ऐतिहासिक नाम था—
   (A) हिन्दुस्तान (B) इण्डिया
   (C) मध्यदेश (D) भारतवर्ष

4. महाराजा दुष्यन्त के पुत्र सम्राट् भरत के नाम पर 'भारतवर्ष' भारत देश का नाम पड़ा. यह किस पौराणिक धर्म ग्रन्थ में अभिव्यक्त हुआ है ?
   (A) ऐतरेय ब्राह्मण में (B) वाल्मीकि रामायण
   (C) विष्णु पुराण में (D) महाभारत में

5. "समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण का देश 'भारत' कहलाता है, क्योंकि यहाँ भारती सन्तति निवास करती है." यह उद्धृत किया है—
   (A) गरुड़पुराण से (B) ब्रह्मवैवर्त से
   (C) मुण्डकोपनिषद् से (D) वायुपुराण से

6. भारत देश को आक्रान्ताओं ने विभिन्न नाम दिये. ईरानियों ने उसे किस नाम से सम्बोधित किया ?
   (A) भारतवर्ष (B) आर्यावर्त
   (C) मध्यदेश (D) हिन्दुस्तान

7. प्राचीन भारत के सन्दर्भ में 'गन्धर्व' शब्द का सम्बन्ध है—
   (A) स्वर्ग में विचरण करने वाले दूत से
   (B) देवता से
   (C) बृहत्तर भारत के एक भेद से
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

टिप्पणी—मत्स्यपुराण के अनुसार बृहत्तर भारत के नौ भेद हैं—(1) इन्द्रद्वीप, (2) कसेरू, (3) ताम्रपर्णी, (4) गभस्तिमान, (5) नागद्वीप, (6) सौम्य, (7) गन्धर्व, (8) वारुण, (9) सागर से घिरा भारत.

8. भारतवर्ष स्थित था—
   (A) उत्तरी गोलार्द्ध में 7° और 37° अक्षांश एवं 62° तथा 98° देशान्तर के मध्य
   (B) दक्षिणी गोलार्द्ध में 7°/37° अक्षांश एवं 62°/98° देशान्तर के मध्य
   (C) पूर्वी गोलार्द्ध में 7°/37° अक्षांश एवं 62°/98° देशान्तर के मध्य
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

9. भारतवर्ष की कश्मीर से श्रीलंका तक की लम्बाई है—
   (A) 10,000 मील
   (B) 2,000 किलोमीटर
   (C) 2,000 मील
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

10. हिमालय की कौनसी शृंखलाएँ भारतवर्ष को चीन, हिन्द चीन एवं थाईलैण्ड (श्याम) से अलग करती हैं—
    (A) सफेद कोह, सुलेमान, किरथर
    (B) हिन्दुकुश, पामीर
    (C) पटकोई, नागा, जयन्तिया, खासी, गोरा, लुसाई, आराकानयोमा
    (D) हिन्द महासागर के निचले हिस्से

11. निम्नलिखित में से कौनसा भिन्न है ?
    (A) गंगा घाटी (B) सिन्धु घाटी
    (C) ब्रह्मपुत्र घाटी (D) विन्ध्यमेखला

टिप्पणी—भारतवर्ष के प्राकृतिक विभाग 'उत्तरी भारत के मैदान' के अन्तर्गत गंगा घाटी, सिन्धु घाटी एवं ब्रह्मपुत्र घाटी आती है.

12. कौनसा हिमालय शृंखला के अन्तर्गत नहीं आता ?
    (A) कश्मीर एवं शिमला के पास का क्षेत्र
    (B) उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिले
    (C) नेपाल, भूटान, सिक्किम
    (D) इलाहाबाद, कानपुर के क्षेत्र

13. यूरोपीय विद्वान् जिस प्राचीन भारतीय जाति को आस्ट्रिक या आग्नेय कहते थे—
(A) आर्यों को (B) द्रविड़ों को
(C) शबर पुलिन्दों को (D) किरातों को

14. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—
(a) मध्यदेश (1) किरात
(b) तमिलनाडु (2) आर्य
(c) विन्ध्यमेखला (3) शबर पुलिन्द
(d) उत्तरी-पूर्वी हिमालय शृंखला (4) द्रविड़

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	3	1
(B)	1	2	3	4
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	2	1

15. निम्नलिखित में से कौनसी विशेषता आर्य जाति की नहीं थी ?
(A) काला रंग
(B) उठी हुई नाक
(C) उन्नत एवं विस्तृत मस्तक
(D) लम्बा आकार एवं लम्बा सिर
(E) उपर्युक्त सभी

16. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—
(a) तेलुगू, तमिल, कन्नड (1) आर्य भाषा परिवार
(b) कोहिस्तानी, लहँदा, पस्तो (2) द्रविड़ भाषा परिवार
(c) मुण्ड एवं मान मेखर (3) शबर पुलिन्द भाषा परिवार
(d) तिब्वती (4) किरात भाषा परिवार

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	1	3	4
(B)	3	2	1	4
(C)	4	3	2	1
(D)	1	2	3	4

17. निर्मित कोड तकनीक जिसे कहा जाता है—
(A) क्लैक्टोनी तकनीक (B) लवाल्वाई तकनीक
(C) स्तरक्रम तकनीक (D) उपकरण प्ररूप तकनीक

18. स्तरीकरण तकनीक के अनुसार स्तरीकृत निक्षेप की सबसे नीचे की परत सबसे पुरानी एवं उसके वाद की परत क्रमशः नई होती जाती है. स्तरीकरण के अनुसार नदी का निक्षेपण होगा—
(A) इसके समान (B) इसके विपरीत
(C) इससे अलग (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. प्रागैतिहासकालीन मानव के सम्बन्ध में सर्वाधिक उपयुक्त तथ्य है—
(A) वह अग्नि का आविष्कारक था
(B) वह प्रस्तर उपकरण बनाता था
(C) वह लेखन विधा से अपरिचित था
(D) वह भोजन संग्राहक था

20. भू-वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी का इतिहास जितना पुराना है—
(A) 48 अरब वर्ष (B) 52 अरब वर्ष
(C) 40 अरब वर्ष (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

21. "नोआ ने भीषण जलप्लावन से रक्षा कर विश्व की रचना की." उक्त कथन उद्धृत है—
(A) ऐतरेय ब्राह्मण से (B) महाभारत से
(C) ओल्ड टेस्टामेंट से (D) मनुस्मृति से

22. नूतन जीव महाकल्प की अवधि मानी जाती है—
(A) 8 करोड़ वर्ष पूर्व से 10,000 वर्ष पूर्व तक
(B) 10 करोड़ वर्ष पूर्व से 11,000 वर्ष पूर्व तक
(C) 9 करोड़ वर्ष पूर्व से 12,000 वर्ष पूर्व तक
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

23. मानव समप्राणी (होमोनिड) का उद्भव हुआ—
(A) 2 करोड़ 40 लाख से 90 लाख वर्ष पूर्व
(B) 1 करोड़ 20 लाख से 90 लाख वर्ष पूर्व
(C) 3 करोड़ 30 लाख से 90 लाख वर्ष पूर्व
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

24. वर्तमान प्रजाति के मानव के समकक्ष प्रजाति कौनसी है, जिसका उद्भव 50,000 वर्ष पूर्व हुआ ?
(A) होमो इरेक्टस (B) मंगोलाभ
(C) होमोसेपियन (D) कॉकेशशी

25. निम्नलिखित में से किस स्थान पर पाषाणकालीन मानव के नर-कंकाल प्राप्त हुए हैं ?
(A) पिकली हल (आ.प्र.)
(B) चिरौंद (विहार)
(C) सराय नाहर राय, महादाहा (उ.प्र.)
(D) गुंगेरिया (म.प्र.)

26. पूर्व पुरापाषाण काल के मानव की प्रजाति थी—
(A) मंगोलाभ (B) नेग्रिटो
(C) कॉकेशशी (D) भूमध्य सागरीय प्रजाति

27. मध्य प्रदेश के भीमवेटका एवं उत्तर प्रदेश के बेलन घाटी क्षेत्र में पूर्व-पुरापाषाणकाल के अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं—
(A) गुफाएँ, चित्रित शैलाश्रय एवं प्रागैतिहासिक कला-कृतियाँ

(B) मृत शरीर, मिट्टी के बर्तन
(C) बस्तियाँ एवं कृषि के साक्ष्य
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

28. पूर्व-पुरापाषाणकाल के हथियारों के सम्बन्ध में सही तथ्य है—
(A) इस काल के हथियार बेडौल एवं भौंडी आकृति के थे
(B) इस काल के हथियार बड़े एवं हत्थेदार थे
(C) इस काल के हथियार छोटे एवं चिकने थे
(D) उपर्युक्त सभी

29. पूर्व-पाषाणकालीन संस्कृति से सम्बन्धित संस्कृति कौनसी है ?
(A) पेबुल चॉपर चॉपिंग संस्कृति
(B) हड़प्पा संस्कृति
(C) जोर्वे संस्कृति
(D) फलक संस्कृति

30. निम्नलिखित में से जिसे 'ज्ञानी मानव' कहा जाता है—
(A) प्राइमेट (B) होमोइरेक्टस
(C) होमोसेपियन (D) अफ्रिकेनस

31. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य है ?
(A) पूर्व-पुरापाषाणकाल का अधिकांश समय हिमयुग के अन्तर्गत व्यतीत हुआ
(B) पूर्व-पाषाणकाल का मानव आवास, भोजन, वस्त्र एवं अन्य प्रकार से अस्थिर था
(C) पूर्व-पाषाणकाल का मानव भोजन का उत्पादक नहीं, संग्राहक था
(D) उपर्युक्त सभी

32. मध्यपुरापाषाण-काल को जिस पुरातत्त्ववेत्ता ने 'फलक संस्कृति' नाम दिया—
(A) दयाराम साहनी
(B) सर जॉन मार्शल
(C) डॉ. एच. डी. साकलिया
(D) एन. जी. मजूमदार

33. मध्यपुरापाषाणकाल के हथियार एवं उपकरण जिन पत्थरों से बनाये जाते थे—
(A) क्वार्टजाइट (B) जैस्पर एवं चर्ट
(C) माइक्रोलिथ (D) मेगालिथ

34. मध्यपुरापाषाणकाल के सम्बन्ध में कौनसे तथ्य सही हैं ?
(A) इस काल में हथियार उपयोगी, चमकीले एवं सुन्दर होते थे
(B) मृतक संस्कार की परम्परा प्रारम्भ हो चुकी थी
(C) अग्नि का प्रयोग होने लगा था
(D) उपर्युक्त सभी

35. मध्यपुरापाषाणकालीन संस्कृति के स्थलों को सम्बन्धित राज्य से सुमेलित कीजिए—
(a) बेलन घाटी (1) महाराष्ट्र
(b) कृष्णा घाटी (2) मध्य प्रदेश
(c) धसान तथा बेतवा घाटी (3) कर्नाटक
(d) नेवासा (4) उत्तर प्रदेश

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	2	3	4	1
(D)	3	4	2	1

36. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

उपकरण	काल
(a) खण्डक उपकरण	(1) मध्यपुरापाषाणकाल
(b) खुरचनी	(2) पूर्व-पुरापाषाणकाल
(c) ब्यूरिन	(3) मध्य पाषाणकाल
(d) इकधार फलक	(4) उत्तर-पुरापाषाणकाल

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	2	1
(D)	3	2	4	1

37. उत्तर-पुरापाषाणकाल के सम्बन्ध में कौनसा कथन असत्य है ?
(A) इस संस्कृति के साक्ष्य में बेलन घाटी (उ.प्र.) से 'हड्डी की मातृदेवी' प्राप्त हुई है
(B) इस काल के मानव की संस्कृति का आविर्भाव हिमयुग के अन्त में हुआ
(C) इस काल में हड्डी, हाथीदाँत एवं पत्थर की ब्लेड से उपकरण एवं हथियार बनाये जाते थे
(D) इस काल के मानव की प्रजाति नियण्डरथल थी

38. पुरा-पाषाणकालीन संस्कृति की अवधि है—
(A) 4 लाख वर्ष पूर्व से 10,000 वर्ष पूर्व तक
(B) 6 लाख वर्ष पूर्व से 15,000 वर्ष पूर्व तक
(C) 10,00,000 वर्ष पूर्व से 2,000 वर्ष पूर्व तक
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

39. उत्तर-पुरापाषाणकाल संस्कृति के मानव की प्रजाति थी—
(A) होमोसेपियन (B) आस्ट्रेलोपिथेकस
(C) नियण्डरथल (D) होमोइरेक्टस

40. उत्तर-पुरापाषाणकालीन संस्कृति के स्थलों को सम्बन्धित राज्य से सुमेलित कीजिए—

(a) विसादी (1) आन्ध्र प्रदेश
(b) इनामगाँव (2) बिहार
(c) सिंहभूमि (3) महाराष्ट्र
(d) वेटम चेर्ला (4) गुजरात

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	2	1	3	4
(C)	3	2	1	4
(D)	1	2	3	4

41. मध्यपाषाणकालीन संस्कृति का आर्विभाव हुआ—
(A) 7,000 वर्ष पूर्व (B) 8,000 वर्ष पूर्व
(C) 9,000 वर्ष पूर्व (D) 6,000 वर्ष पूर्व

42. मध्य-पाषाणकाल के अस्तित्व की पुष्टि 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में किस स्थान के साक्ष्यों के आधार पर हुई ?
(A) संयुक्त राज्य अमरीका के कैलिफोर्निया स्थल से
(B) फ्रांस के 'मास द अजिल' स्थल से
(C) इटली के विन्ची नामक स्थल से
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

43. कौनसा उपकरण मध्य-पाषाणकाल का नहीं है ?
(A) समलम्ब (B) अर्द्धचन्द्राकार
(C) इकधार फलक (D) कोड

44. मध्यपाषाणकालीन संस्कृति के छोटे पाषाणोपकरणों को कहा जाता है—
(A) मेगालिथ (B) माइक्रोलिथ
(C) क्वार्टजाइट (D) चर्ट

45. मध्यपाषाणकालीन संस्कृति के स्थलों को सम्बन्धित राज्य से सुमेलित कीजिए—

(a) वीरभानपुर (1) पश्चिम बंगाल
(b) टेरी समूह (2) तमिलनाडु
(c) लंघनाज (3) गुजरात
(d) मोरहना पहाड़ (4) उत्तर प्रदेश

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	2	1

46. मध्यपाषाणकाल के सम्बन्ध में कौनसा कथन असत्य है ?
(A) इस काल का मानव पूरी तरह से स्थायी हो गया था
(B) इस काल में हरिण, बकरी, खरगोश आदि जानवर पैदा हो चुके थे
(C) इस काल में लघुपाषाणोपकरण (माइक्रोलिथ) प्रयोग में लिए जाते थे
(D) इस संस्कृति का उद्भव पश्चिमी एशिया के धन्वाकर क्षेत्र में हुआ

47. निम्नलिखित में से किसके अनुसार एशिया के धन्वाकर क्षेत्र से नव-पाषाणकालीन संस्कृति का प्रसार हुआ ?
(A) सर जॉन मार्शल (B) दयाराम साहनी
(C) गॉर्डन चाईल्ड (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

48. नव-पाषाणकालीन संस्कृति के प्रस्तर उपकरण सन् 1860 ई. में लेन्मेसुरियर को जहाँ प्राप्त हुए—
(A) उत्तर प्रदेश की टोंस नदी घाटी में
(B) उत्तर प्रदेश की बेलन घाटी में
(C) उत्तर प्रदेश के मोरहना पहाड़ में
(D) टेरी समूह तमिलनाडु में

49. नवपाषाण काल में 'महापाषाण' लगाये जाते थे—
(A) मृतकों को सम्मान देने के लिए
(B) अभिलेख एवं शिलालेखों के लिए
(C) तत्कालीन संस्कृति की जानकारी के लिए
(D) उपर्युक्त सभी

50. हल-बैल, जुए, मुहर एवं नाव से परिचित था—
(A) नवपाषाणकालीन मानव
(B) पूर्व-पुरापाषाणकालीन मानव
(C) उत्तर-पुरापाषाणकालीन मानव
(D) ताम्रपाषाणकालीन मानव

51. ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति के अवशेषों में 424 ताम्र उपकरण एवं 102 चाँदी के पतले पत्तर मध्य प्रदेश के जिस स्थल पर प्राप्त हुए—
(A) नवदाटोली (B) कायथ
(C) गुंगेरिया (D) एरण

52. जोर्वे संस्कृति का सबसे बड़ा स्थल था—
(A) दयमाबाद (B) चन्दोली
(C) इनामगाँव (D) सोनगाँव

53. जो संस्कृति हड़प्पा संस्कृति से सम्बद्ध थी—
(A) ताम्रकालीन संस्कृति
(B) ताम्र पाषाणकालीन संस्कृति
(C) लौहयुगीन संस्कृति
(D) कांस्ययुगीन संस्कृति

54. निम्नलिखित में से किस काल में राज्य एवं केन्द्रीय शक्ति का विकास हो चुका था ?
(A) ताम्र युग में (B) कांस्य युग में
(C) ताम्रपाषाण काल में (D) नवपाषाण काल में

55. निम्नलिखित में से 'चित्रित धूसर मृद्भाण्ड' संस्कृति है—
(A) लौहयुगीन संस्कृति
(B) कांस्ययुगीन संस्कृति
(C) ताम्रकालीन संस्कृति
(D) ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति

56. आर्यों का आगमन किस काल में हुआ ?
(A) ताम्रकाल में (B) ताम्रपाषाणकाल में
(C) लौह युग में (D) पूर्व-पुरापाषाणकाल में

57. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—
(a) मानवतारोपी मूर्तियाँ (1) नवपाषाणकाल
(b) बरमा (2) ताम्र युग
(c) कुदाल (3) मध्यपाषाणकाल
(d) अर्द्धचन्द्राकार (4) लौह युग

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	4	3	2	4
(D)	3	2	1	4

58. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—
(a) पांडुराजार ढिब्बी (1) पश्चिमी बंगाल
(b) आहड़ (2) राजस्थान
(c) मास्की (3) कर्नाटक
(d) एरण (4) मध्य प्रदेश

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	3	1
(B)	3	4	2	1
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

उत्तरमाला

1. (C)	2. (A)	3. (D)	4. (D)	5. (D)
6. (D)	7. (C)	8. (A)	9. (C)	10. (C)
11. (D)	12. (D)	13. (C)	14. (A)	15. (A)
16. (A)	17. (B)	18. (B)	19. (C)	20. (A)
21. (C)	22. (A)	23. (B)	24. (C)	25. (C)
26. (B)	27. (A)	28. (A)	29. (A)	30. (C)
31. (D)	32. (C)	33. (B)	34. (D)	35. (A)
36. (B)	37. (D)	38. (A)	39. (A)	40. (A)
41. (B)	42. (B)	43. (D)	44. (B)	45. (A)
46. (D)	47. (C)	48. (A)	49. (A)	50. (D)
51. (C)	52. (A)	53. (A)	54. (B)	55. (A)
56. (C)	57. (B)	58. (C)		

विगत वर्ष में पूछे गये प्रश्न

1. किस स्थान पर प्रथम भारतीय पुरापाषाण कलाकृति (Paleolithic artefact) की खोज हुई थी ?
(A) दायमावाद (B) मिर्जापुर
(C) पल्लावरम (D) सोहन घाटी

2. निम्नलिखित में से कौनसा एक कथन सही नहीं है ?
(A) भारत में पुरापाषाणकालीन मानव अग्नि के प्रयोग से परिचित था
(B) दक्षिण भारत में गुंटूर एवं कुरनूल जिलों में पुरापाषाणकालीन कब्रें (Paleolithic graves) मिली हैं
(C) कैमूर श्रेणी एवं मिर्जापुर जिले में पुरापाषाणकालीन चित्रकला मिली है
(D) उत्तर भारत में ताम्रयुग तथा आरम्भिक लौहयुग की एक पहचान की जा सकती है, हालांकि दक्षिण भारत में लौहयुग पाषाणयुग के तुरन्त बाद आरम्भ होता है

3. निम्न में से कौनसा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) बुद्धचरित–अश्वघोष (B) मृच्छकटिक–शूद्रक
(C) मुद्राराक्षस–विशाखदत्त (D) वृहत्संहिता–आर्यभट्ट

निर्देश—आगामी प्रश्न में दो वक्तव्य हैं. एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है. इन दोनों वक्तव्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कर दिए गए प्रश्नों का उत्तर नीचे दिए हुए कूट की सहायता से चुनिए–

कूट :
(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है
(C) A सही है, परन्तु R गलत है
(D) A गलत है, परन्तु R सही है

4. **कथन (A)** : दक्षिण भारत के महापाषाणकालीन मृद्भाण्डों का अन्दर का रंग काला है तथा बाहर का रंग लाल है.

कारण (R) : इन रंगों की मृद्भाण्डों पर अलग से पुताई हुई है.

उत्तरमाला

1. (D) 2. (A) 3. (D) 4. (A)

संकेत

3. सुमेल है–
वृहत्संहिता : वराहमिहिर

2

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

(The Sources of Ancient Indian History)

प्राचीन भारत के इतिहास को निर्धारित करने एवं इतिहास के अस्तित्व को स्थापित करने के लिए निम्नलिखित साधन उपलब्ध हैं–

(i) साहित्यिक ग्रन्थ

(ii) ऐतिहासिक ग्रन्थ

(iii) पुरातत्त्व

(iv) विदेशी लेखक एवं यात्रियों का विवरण

(i) **साहित्यिक ग्रन्थ**

सम्प्रदाय भेद से साहित्यिक ग्रन्थों को निम्नलिखित तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. ब्राह्मण ग्रन्थ
2. बौद्ध ग्रन्थ
3. जैन ग्रन्थ

ब्राह्मण धर्मग्रन्थों को निम्नलिखित भागों में वर्गीकृत किया गया है–

(अ) वैदिक साहित्य	(ब) ब्राह्मण ग्रन्थ
(स) आरण्यक	(द) उपनिषद्
(य) वेदाङ्ग	(र) स्मृति
(ल) पुराण	(व) षड्दर्शन एवं उपवेद
(श) महाकाव्य	

वैदिक साहित्य

सृष्टि के सबसे प्राचीनतम एवं सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण धर्मग्रन्थों का अपरूप वैदिक सम्पत्ति है.

वेदों की संख्या 4 है–

(1) ऋग्वेद	(2) सामवेद
(3) यजुर्वेद	(4) अथर्ववेद

ऋग्वेद–ऋग्वेद की रचना सप्त सैन्धव प्रदेश में 1500 से 1000 ई. पू. हुई. ऋग्वेद आर्यों का प्राचीनतम ग्रन्थ है. इसमें 10 मण्डल एवं 1028 सूक्त है. ऋग्वेद के 2 से 9 मण्डल के सूक्त प्राचीनतम एवं पहला एवं दसवाँ मण्डल बाद में जोड़े गये हैं. ऐतरेय एवं कौषीतकी ब्राह्मण ऋग्वेद से सम्बन्धित हैं.

इरानी ग्रन्थ जेंद अवेस्ता से ऋग्वेद पर्याप्त साम्यता रखता है. आर्यों का भारत में प्रसार, उनकी राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था, जीवन शैली, आर्यों की सभ्यता एवं संस्कृति तथा संघर्ष के बारे में सम्पूर्ण जानकारी का स्रोत ऋग्वेद है.

सामवेद–ऋचाओं के संग्रह युक्त गायन प्रधान वेद है, जो यज्ञादि के लिए उपयोगी है. उल्लेखनीय है कि सामवेद की ऋचाएँ गेय हैं और इसी के परिणामस्वरूप सामवेद को 'भारतीय संगीत का मूल' भी माना जाता है.

सामवेद में 1550 मन्त्र हैं, जिनमें 75 को छोड़कर ऋग्वेद में भी वर्णित है. मूलतः सामवेद में अधिकतर मन्त्र सूर्य की स्तुति के सन्दर्भ में हैं.

यजुर्वेद–यजुर्वेद यज्ञ विधियों एवं नियमों का संग्रह है. इस वेद से उत्तर-वैदिककालीन सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है.

यजुर्वेद के दो प्रमुख भाग हैं–

(1) कृष्ण यजुर्वेद

(2) शुक्ल यजुर्वेद

कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ हैं–

काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी, तैत्तिरीय.

शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा है–

वाजसनेयी.

कृष्ण यजुर्वेद में यज्ञ विधियों के मन्त्रों की व्याख्या है एवं शुक्ल यजुर्वेद में मात्र मन्त्र ही है. यजुर्वेद के मन्त्रों का उच्चारण करने वाले आचार्य को 'अर्ध्वयु' कहा जाता है.

अथर्ववेद–अथर्ववेद में 20 मण्डल एवं 731 गद्य एवं पद्य सूक्त तथा 6000 मन्त्र समाहित हैं. अथर्ववेद में चिकित्सा, धनुर्विद्या, जादू-मंत्र, टोना, तावीज से सम्बन्धित तथ्य है. अथर्ववेद आर्यों की सांस्कृतिक गतिविधियों को अभिव्यक्त करने का सर्वोत्तम स्रोत है.

विशेष–वेद एवं वैदिक साहित्य आर्यों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक धार्मिक एवं सभ्यता-संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत हैं. ऋग्वेद के अतिरिक्त अन्य वेदों एवं वैदिक साहित्य की रचना कुरु-पांचाल क्षेत्र में 1000-500 ई. पू. में हुई.

ब्राह्मण ग्रन्थ

ब्राह्मण ग्रन्थ 'वेदों की टीका' कहे जाते हैं. ब्राह्मण ग्रन्थों से उत्तर वैदिककालीन आर्यों की सभ्यता की जानकारी प्राप्त होती है. वेदों के पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना हुई थी.

ब्राह्मण ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–

(1) ऐतरेय ब्राह्मण

(2) कौषीतकी ब्राह्मण

(3) शतपथ ब्राह्मण

(4) पंचविंश ब्राह्मण या ताण्ड्य ब्राह्मण

(5) गोपथ ब्राह्मण

ऋग्वेद से ऐतरेय एवं कौषीतकी ब्राह्मण, यजुर्वेद से शतपथ ब्राह्मण, सामवेद से पंचविंश ब्राह्मण, अथर्ववेद से गोपथ ब्राह्मण सम्बन्धित है.

आरण्यक

दार्शनिक विचारधारा का सूत्रपात आरण्यकों से हुआ. ब्राह्मण ग्रन्थों के अन्तिम भाग को आरण्यक कहा जाता है. इनकी रचना वनों (अरण्यों) में होने के कारण इन्हें आरण्यक कहा गया.

प्रमुख रूप से आरण्यक तीन हैं–

(1) ऐतरेय

(2) तैत्तिरीय

(3) मैत्रायणी

उपनिषद्

उपनिषदों की संख्या लगभग 108 है, लेकिन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रमुख उपनिषद् निम्नलिखित हैं–

(1) ईशोपनिषद्	(6) तैत्तिरीयोपनिषद्
(2) ऐतरेयोपनिषद्	(7) वृहदारण्यकोपनिषद्
(3) कठोपनिषद्	(8) मुण्डकोपनिषद्
(4) केनोपनिषद्	(9) श्वेताश्वतरोपनिषद्
(5) छान्दोग्योपनिषद्	(10) प्रश्नोपनिषद्

108 उपनिषदों में से 10 उपनिषद् ऋग्वेद से, 19 शुक्ल यजुर्वेद से, 32 कृष्ण यजुर्वेद से, 16 सामवेद एवं 31 उपनिषद् अथर्ववेद से सम्बन्धित हैं.

उपनिषदों में निष्काम कर्म मार्ग एवं भक्तिमार्ग, ब्रह्म तथा सृष्टि के सम्बन्ध में वर्णित है. उपनिषदों की रचना 800-500 ई. पू. के मध्य हुई.

प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास एवं दर्शन की जानकारी उपनिषदों से प्राप्त होती है. उपनिषदों के निष्काम कर्म की अवधारणा का विकास 'श्रीमद्भागवद्गीता' में होता है.

वेदाङ्ग

वेदों के विधिवत् अध्ययन के लिए निर्मित सूत्र वेदाङ्ग है. 'मुण्डकोपनिषद' के अनुसार वेदाङ्ग 6 हैं–

(i) शिक्षा	(ii) कल्प
(iii) व्याकरण	(iv) निरुक्त
(v) छन्द	(vi) ज्योतिष

वैदिक मंत्रों के सही उच्चारण का नाम 'शिक्षा' है. कल्प में विभिन्न विधानों का संग्रह है, जो कल्प सूत्र कहलाते हैं.

कल्प सूत्रों के चार भाग हैं–

(1) श्रौत सूत्र (यज्ञ सम्बन्धी नियम)

(2) गृह सूत्र (मानव संस्कारों से सम्बन्धी नियम)

(3) धर्म सूत्र (सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक नियम)

(4) शुल्व सूत्र (यज्ञ एवं हवन कांड से सम्बन्धित नियम)

शुल्वसूत्र का कोई उप-विभाग या विभाजन नहीं हुआ है.

प्रमुख सूत्र साहित्य निम्नलिखित हैं–

श्रौतसूत्र के उपविभाग	गृहसूत्र के उपविभाग	धर्मसूत्र के उपविभाग
1. आपस्तम्ब	1. कौशिक	1. गौतम
2. अश्वलायन	2. खादिर	2. वशिष्ठ
3. कात्यायन	3. गोमिल	3. विष्णु
4. जैमिनी	4. द्राह्यायण	4. हरित
5. द्राह्यायण	5. पास्कर (पास्कल)	
6. बौधायन	6. भारद्वाज	
7. मानव	7. मानव	
8. लाट्यायन	8. सांख्यायन	
9. वैतान		
10. सांख्यायन		
11. हिरण्यकेशी		

भाषा के विकसित स्वरूप के ज्ञान के लिए व्याकरण का उद्भव हुआ. व्याकरण के क्षेत्र में पाणिनी की अष्टाध्यायी एवं पतञ्जलि का महाभाष्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं.

व्याकरण से प्राचीन भारतीय इतिहास की कला, संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं. शब्दों की उत्पत्ति, अर्थ एवं निर्माण की जानकारी के लिए यास्क ने निरुक्त की रचना की.

पद्यीय रचना को निश्चित आकार प्रदान करने के उद्देश्य से छन्दशास्त्र का आविर्भाव हुआ.

ब्रह्माण्ड, सौरमण्डल, नक्षत्रों के वर्णन से पूर्ण 'वृहत्संहिता' वराहमिहिर ने लिखी. यह ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ है.

उपवेद

उपवेद वैदिक साहित्य के अन्तर्गत आते हैं. ये निम्नलिखित हैं–

1. आयुर्वेद (चिकित्सा सम्बन्धी)
2. धनुर्वेद (युद्ध कला सम्बन्धी)
3. गंधर्ववेद (संगीत, कला)
4. शिल्पवेद (भवन निर्माण कला)

आयुर्वेद के जन्मदाता प्रजापति ब्रह्मा को माना गया है. धनुर्वेद के जन्मदाता विश्वामित्र, गंधर्ववेद के जन्मदाता नारद एवं शिल्पवेद के जन्मदाता विश्वकर्मा को माना है.

आयुर्वेद निम्नलिखित भागों में वर्गीकृत किया है–

1. शल्य	2. शालाक्य
3. काय-चिकित्सा	4. भूतविद्या
5. कुमारभृत्य	6. अगदतंत्र
7. रसायन	8. वाजीकरण

आयुर्वेद में रोग, रोग के लक्षण, जड़ी-बूटियों से उपचार, जड़ी-बूटियाँ प्राप्त करने के स्थान, महत्व एवं तरीकों का विस्तृत वर्णन है. उपवेद प्राचीनकालीन भारत की सभ्यता, संस्कृति एवं विविध विधाओं के बारे में जानकारी देते हैं.

दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र की छः शाखाओं के कारण षड्दर्शन कहा जाता है. दर्शनशास्त्र की छः शाखाएँ निम्नलिखित हैं–

1. न्याय दर्शन	2. वैशेषिक दर्शन
3. सांख्य दर्शन	4. योग दर्शन
5. पूर्व मीमांसा	6. उत्तर मीमांसा

दर्शनशास्त्र की रचना छठी शताब्दी ई. पू. से तीसरी शताब्दी ई. पू. हुई.

न्याय दर्शन के प्रवर्त्तक गौत्तम ऋषि, वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक कणद ऋषि (कणाद) सांख्य दर्शन के कपिल मुनि एवं योग दर्शन के प्रतिपादक पतञ्जलि थे. पूर्व मीमांसा के प्रतिपादक जैमिनी एवं बादरायण उत्तर मीमांसा के प्रतिपादक थे.

षड्दर्शन निम्नलिखित तत्त्वों पर आधारित है–

1. न्याय दर्शन – तर्क
2. वैशेषिक – पदार्थ
3. सांख्य दर्शन – नास्तिकता
4. योग दर्शन – योग, प्राणायाम
5. पूर्व मीमांसा – ब्रह्म एवं व्यावहारिक धर्म
6. उत्तर मीमांसा – व्यावहारिक धर्म एवं ब्रह्म

महाकाव्य

सूत्रों के पश्चात् निम्नलिखित दो महाकाव्यों का आविर्भाव हुआ–

1. रामायण
2. महाभारत

रामायण एवं महाभारत तत्कालीन भारतीय समाज, राष्ट्र, राज्य की सभ्यता संस्कृति, राजनैतिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं. अतः इन्हें अर्द्ध ऐतिहासिक धर्मग्रन्थ कहा जाता है.

महाभारत

ऐतिहासिक स्रोत के रूप में महाभारत का नाम सर्वोपरि है. इसके मूल लेखक 'वेदव्यास' हैं, जिन्होंने 950 ई. पू. में हुए **भरत युद्ध** को विस्तृत रूप में वर्णित किया है.

महाभारत के प्रारम्भिक रचना काल में इसमें 8,800 पद्य थे, जिसे 'जय' के नाम से सम्बोधित किया जाता था.

महाभारत का दूसरा संस्करण 'भरत' था, जिसमें पद्यों की संख्या लगभग 24,000 थी. महाभारत जय का अंतिम संस्करण था. जिसमें 1,00,000 पद्य थे जिसे **'शतसहस्त्री' संहिता** या **महाभारत** कहा गया.

विशेष–महाभारत का अंतिम संस्करण गुप्तकाल में तैयार हुआ. अतः प्राचीन भारत के आदिम काल से लेकर, गुप्तकाल तक की सम्पूर्ण जानकारी, विदेह, मगध आदि राज्यों की स्थिति, प्राचीन भारत की विदेशी जातियाँ राजा और राज्य के सिद्धान्त, मंत्रिपरिषद् की क्रियाविधि, तत्कालीन भारत की सभ्यताएँ एवं विकास के बारे में विस्तृत ऐतिहासिक तथ्य बिना तिथिक्रम के प्राप्त होते हैं.

रामायण

राजनैतिक दृष्टिकोण से अधिक रामायण का सांस्कृतिक महत्व है. रामायण को पाँच चरणों में सम्पादित किया गया है एवं इसके सम्पादन में पाँचवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य का समय लगा. प्रारम्भ में रामायण में 6,000 पद्य थे जो अन्तिम संकलन तक 24,000 हो गए. रामायण की रचना आदिकवि वाल्मीकि ने की थी. रामायण में राजा राम को लेकर तत्कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का चित्रण किया गया है.

पुराण

वराह पुराण के अनुसार प्रमुख रूप से 18 पुराण निम्नलिखित हैं–

1. अग्नि पुराण	10. मत्स्य पुराण
2. कूर्म पुराण	11. मार्कण्डेय पुराण
3. गरुड़ पुराण	12. लिंग पुराण
4. नारद पुराण	13. वराह पुराण
5. पद्म पुराण	14. ब्रह्म पुराण
6. ब्रह्माण्ड पुराण	15. वामन पुराण
7. ब्रह्मवैवर्त पुराण	16. विष्णु पुराण
8. भविष्य पुराण	17. वायु पुराण
9. भागवत पुराण	18. स्कन्द पुराण

इन पुराणों के अतिरिक्त 29 उपपुराण भी हैं. नीचे लिखे हुए 18 उपपुराण मध्ययुगीन सभ्यता को स्पष्ट करते हैं–

1. सनत्कुमार	10. ब्रह्माण्ड
2. नारसिंह	11. वारुण
3. स्कान्द	12. कालिका
4. शिवधर्म	13. माहेश्वर
5. आश्चर्य	14. साम्ब
6. नारदीय	15. सौर
7. कापिल	16. पाराशर
8. वामन	17. मारीच
9. औशनस	18. भार्गव

पुराणों की रचना गुप्तकाल में हुई थी. पुराणों को **'प्राचीन भारत का विश्व कोष'** भी कहा जाता है. पुराणों में नंदवंश, शिशुनागवंश, मौर्यवंश, शुंगवंश, कण्ववंश, आंध्र-सातवाहन वंश एवं गुप्तवंश के शासकों का वर्णन मिलता है. वायुपुराण, मत्स्यपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, विष्णुपुराण, भविष्य-पुराण, अग्निपुराण एवं भागवत्पुराण का महत्त्व ऐतिहासिक स्रोतों की दृष्टि से सर्वाधिक है.

पुराणों में निम्नलिखित पाँच तत्व समाहित किए गए हैं–

1. सृष्टि	2. प्रतिसर्ग
3. दैववंश	4. मन्वन्तर

5. राजवंशों का क्रमिक इतिहास

'वंशानुचरित' नामक पुराण प्रकरण भारतीय इतिहास का सर्वश्रेष्ठ स्रोत है.

धर्मशास्त्र

धर्मशास्त्र को स्मृति भी कहा जाता है. इतिहास की दृष्टि से मनुस्मृति सबसे महत्वपूर्ण स्मृति है. अन्य निम्न प्रमुख स्मृतियाँ हैं–

1. याज्ञवल्क्य स्मृति	6. पाराशर स्मृति
2. विष्णु स्मृति	7. व्यास स्मृति
3. नारद स्मृति	8. देवल स्मृति
4. वृहस्पति स्मृति	9. शातातय स्मृति

5. कात्यायन स्मृति

मनुस्मृति की रचना 200 ई. पू. से 200 ई. के मध्य हुई. अन्य स्मृतियों की रचना गुप्त और गुप्तोत्तर काल में हुई. इन स्मृतियों में राजधर्म एवं सामाजिक नियमों का उल्लेख है. प्राचीन भारत में इन नियमों को राजकार्य में लागू किया जाता था. नियमों को भंग करने वालों को स्मृति के अनुसार दण्ड दिया जाता था. वर्तमान भारत की दण्डसंहिता का मौलिक आधार स्मृतियाँ ही हैं.

बौद्ध धर्मग्रन्थ

जातक–बौद्ध धर्मग्रन्थों में सबसे पहले लिखा गया साहित्य **जातक** है. जातक में बुद्ध के पूर्व जन्मों को प्रस्तुत किया गया है.

जातक कथाओं में तीसरी-चौथी शताब्दी ई. तक के भारतीयों के प्राचीनतम जीवन, प्रशासनिक व्यवस्था, अस्पृश्यता, व्यापारिक कार्य क्षेत्र एवं प्रसार, दास प्रथा एवं इतिहास पर अनेक उपयोगी तथ्य प्राप्त होते हैं.

जातकों से कोशल, अंग, मगध एवं काशी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है. खुद्दक निकाय भी जातकों का एक अंग है.

त्रिपिटक–पालि भाषा में बुद्ध के निर्वाण के पश्चात लिखे गये तीन बौद्ध धर्म ग्रन्थ 'त्रिपिटक' कहलाते हैं.

त्रिपिटिक निम्नलिखित से सम्बन्धित हैं–

1. सुत्त पिटक–बुद्ध के धार्मिक विचार एवं प्रवचनों का संग्रह
2. अभिधम्म पिटक–दार्शनिक सिद्धान्तों का संकलन
3. विनय पिटक–संघ से सम्बद्ध नियम

अन्य बौद्ध धर्म ग्रन्थ निम्नलिखित हैं–

अंगुत्तरनिकाय, आर्यमंजूश्रीमूलकल्प, चुल्लवग्ग, दिव्यावदान, दीपवंश, धम्मपद, महावंश, महावग्ग, महावस्तु, मज्झिम निकाय, मिलिन्दपञ्हो, ललित विस्तर, संयुक्त निकाय, सुत्त निपात, बुद्धचरित, सौदरानन्द, अशोकावदान, अवदान-शतक इत्यादि.

बौद्धकालीन सभ्यता एवं संस्कृति के ऐतिहासिक स्रोत के रूप में बौद्ध धर्म ग्रन्थ सर्वोत्कृष्ट रचनाएं हैं.

जैन धर्मग्रन्थ

प्राकृत भाषा में लिखे गये जैन धर्मग्रन्थों में अन्य साहित्यिक ग्रन्थों की अपेक्षा प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध है. जैन ग्रन्थों का संकलन गुजरात (वल्लभी) में ईसा की छठी शताब्दी में हुआ.

जैन ग्रन्थों में विहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है. आचार्य हेमचन्द्र द्वारा लिखित परिशिष्टपर्व एवं भद्रबाहुचरित इतिहास का सबसे प्रबल स्रोत है.

पूर्व मध्यकाल में निम्नलिखित जैन ग्रन्थों की रचना हुई–

	लेखक	ग्रन्थ
1.	हरिभद्र	समरईच कथा, धूर्ताख्यान
2.	उद्योतन सूरी	कुवलयमाला
3.	जिनसेन	आदिपुराण
4.	गुणभद्र	उत्तर पुराण

अन्य प्रमुख जैनग्रन्थ निम्नलिखित हैं–

1. आचरांग सुत्त	9. भाष्य
2. उत्तराध्ययन सुत्त	10. आवश्यक चूर्णि
3. कल्प सुत्त	11. उवासगदसाओ सुत्त
4. जैन हरिवंश	12. ज्ञाताधर्म कथा
5. प्रभावक चरित	13. कथाकोप
6. भगवतीसुत्त	14. पुण्याश्रव कथाकोश
7. वसुदेव हिण्डी	15. त्रिसोर प्रज्ञप्ति
8. वृहत्कल्प सुत्त	16. पुरुप रित

जैन धर्मग्रन्थों में महावीरकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है.

ऐतिहासिक साहित्य
(Historical Literature)

ऐतिहासिक साहित्य में प्रमुख रूप से निम्नलिखित ऐतिहासिक ग्रन्थों, काव्यों, नाटकों का नाम सर्वोपरि है–

1. राजतरंगिणी	12. कुमारपालचरित
2. अर्थशास्त्र	13. कम्पारामचरितम्
3. हर्षचरितम्	14. प्रभावकचरित
4. विक्रमांकदेवचरितम्	15. मण्डलीक महाकाव्य
5. गौडवहो	16. हम्मीर महाकाव्य
6. नवसाहसाङ्कचरितम्	17. मूषकवंशम्
7. रामचरित	18. राजाभ्युदयकाल
8. रामपालचरित	19. नन्दिकलम्वकम्
9. पृथ्वीराज विजय	20. रासमाला
10. वल्लालचरितम्	21. चचनामा
11. चतुर्विंशति प्रबन्ध	22. प्रबन्धकोप

ऐतिहासिक साहित्य में प्रमुख रूप से राजतरंगिणी एवं अर्थशास्त्र का सर्वोपरि महत्त्व है. दोनों ग्रन्थों की भाषा संस्कृत है. कल्हण ने राजतरंगिणी 12वीं शताब्दी में लिखा गया. जिसमें प्रारम्भ से 12वीं शताब्दी के सभी ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध है. इसमें कश्मीर के सम्बन्ध में वृहद वर्णन है. अर्थशास्त्र के रचयिता कौटिल्य या चाणक्य है. अर्थशास्त्र 15 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में विभक्त है. इसमें मौर्यकालीन प्रशासन, चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था, राज्य की उत्पत्ति, राज्य का संगठन, सुरक्षा के उपाय, राजा के अधिकार एवं कर्त्तव्य तथा मंत्रियों, अधिकारियों की नियुक्ति के नियम, अर्थव्यवस्था नीतिगत सिद्धान्तों को विवेचनात्मक रूप में समाहित किया है.

संगम साहित्य

ऐतिहासिक स्रोत के रूप में तमिल साहित्य की भी प्रमुख भूमिका रही है. इसे संगम साहित्य कहा जाता है. संगम साहित्य का कालक्रम ईसा की प्रथम चार शताब्दियों का माना गया है.

संगम साहित्य धर्मनिरपेक्ष साहित्य है. जिसमें पांड्य, चोल और चेर इन तीन प्रमुख राजवंशों के प्रारम्भिक इतिहास, सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक प्रगति, राजनीतिक इतिहास एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण का विस्तृत वर्णन किया गया है.

संगम साहित्य में प्रमुख निम्नलिखित हैं–

1. एतुतोकई	5. कलिंगतुपरणि
2. पुरननुरू	6. कुलोत्तुंगगण
3. पत्तु-पत्तु (पदु-पदु)	7. पिलैत्तमिल
4. शिलप्पदिकारम्	8. चोल-चरितम्

पुरातत्त्व (Archaeology)

पुरातत्त्व या खनन से मिली ऐतिहासिक सामग्रियों को चार भागों में वर्गीकृत किया है–

1. उत्खनन से प्राप्त सामग्री
2. उत्कीर्ण लेख/अभिलेख
3. मुद्राएँ एवं सिक्के
4. स्मारक

विशेष–उत्खननों से प्राप्त सामग्री के आधार पर पाषाण काल के विभिन्न चरणों, ताम्रपाषाणिककालीन विभिन्न संस्कृतियों का ज्ञान हुआ है. हड़प्पा-मोहनजोदड़ो सभ्यता का ज्ञान भी उत्खननों से हुआ है. चिराँद, पाटलिपुत्र, वैशाली चम्पा, विक्रमशिला, नालंदा, मथुरा, कौशाम्बी, हस्तिनापुर की सभ्यता-संस्कृति की जानकारी का आधार स्रोत भी उत्खनन ही रहा है.

जिस काल का लिखित इतिहास नहीं होता है, उसे उत्खनन से प्राप्त सामग्री के आधार पर लिखा जाता है. खंडहरों, प्राचीन अवशेष एवं खुदाई से प्राप्त वस्तुओं जैसे–ईंट, पत्थर, उपकरण, औजार, बरतन इत्यादि से तत्कालीन इतिहास को ज्ञात कर C-14 के द्वारा कालक्रम ज्ञात किया जाता है.

उत्कीर्ण लेख

उत्कीर्ण लेखों को अभिलेख भी कहा जाता है. अभिलेखों को चार भागों में वर्गीकृत किया गया है–

1. स्तम्भ लेख
2. ताम्रपत्र
3. शिलालेख
4. गुहालेख

अभिलेखों से राजाओं, उनके वंश का नाम, कालक्रम एवं देश की तत्कालीन परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है. अभिलेख पहले प्राकृत भाषा में एवं इसके बाद क्रमशः संस्कृत, तमिल, तेलुगू में लिखे गये. अभिलेख लेखन की लिपियों में सर्वाधिक ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि, अरेमिक लिपि का प्रयोग किया गया.

प्रमुख अभिलेख निम्नलिखित हैं–

1. खारवेल अभिलेख
2. समुद्रगुप्त का प्रयोग-प्रशस्ति लेख
3. अशोक अभिलेख
4. खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
5. रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
6. मिलिन्द का रेह अभिलेख
7. समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति
8. स्कन्दगुप्त का भिटारी अभिलेख
9. राजा चन्द्र का मेहरौली अभिलेख
10. हर्षवर्द्धन का बाँसखेड़ा अभिलेख
11. मधुवन अभिलेख

निम्नलिखित विदेशी अभिलेख भी भारतीय इतिहास के सर्वोत्कृष्ट स्रोत हैं–

1. एशिया माइनर का बोगजक्काई अभिलेख
2. नक्स-ए-रुस्तम

मुद्राएँ

मुद्राओं एवं सिक्कों से प्राचीन भारतीय इतिहास की अर्थव्यवस्था, राज्य की शासन प्रणाली, कालक्रम, सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है.

विशेष–भारत के प्राचीनतम सिक्के **आहत** सिक्के थे. इन्हें पंच मार्कड सिक्के (Panchmarked Coins) भी कहा जाता था. आहत सिक्के छठी शताब्दी ई. पू. चलते थे, जो चाँदी एवं ताँबे के बने होते थे.

सोने के सिक्के सर्वाधिक गुप्तकाल में प्रारम्भ किये गये. मौर्यकाल के बाद से सिक्कों में शासकों का नाम, उपाधियाँ, उनका चित्र एवं काल लिखा जाने लगा.

पल्लव, शक, कुषाण, निगम, सातवाहन, नाग वंश, गुप्त वंश के काल में सिक्कों का सर्वाधिक प्रचलन हुआ.

स्मारक

स्मारकों से इतिहास का पुनर्निर्माण सरल एवं सम्भव हो जाता है. प्राचीनकालीन मन्दिर, भवन, मूर्तियों, गुफाओं के अवशेष से उस युग की सभ्यता एवं संस्कृति का अनुमान लगाया जा सकता है.

पाटलिपुत्र, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, मथुरा, तक्षशिला, कौशाम्बी के भवन, तक्षशिला और मथुरा से प्राप्त मूर्ति अवशेषों तथा अजन्ता एलोरा, एलिफेन्टा, सांची भरहुत के स्तूप एवं गुफाओं से वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान हुआ.

विदेशी लेखकों और यात्रियों का विवरण

विदेशी लेखकों और यात्रियों का लिखित साहित्य भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें पूर्ण विवरण तिथिक्रम सहित है. भारत के सम्बन्ध में ईरानी, यूनानी, रोमन, चीनी, तिब्बती, अरब एवं मुसलमान यात्रियों और लेखकों का विवरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है.

यूनानी लेखकों में हेरोडोट्स (424 ई. पू. से 432 ई. पू.) का नाम सर्वोपरि है. हेरोडोट्स ने एक विशाल ग्रन्थ–'हिस्टोरिका' लिखा है, जिसके तीसरे, चौथे और सातवें खण्ड में प्राचीन भारत के उत्तरापथ एवं हखमी साम्राज्य के राजनैतिक, आर्थिक सम्बन्धों को अभिव्यक्त किया गया है. सिकन्दर से पूर्व आने वाला लेखक टेसियस था, जिसने भारत की तत्कालीन आर्थिक परिस्थितियों पर विचार अभिव्यक्त किए हैं.

सिकन्दर के काल के विदेशी लेखक निम्न हैं–

1. अरिस्टोकुलस
2. निआर्कस
3. चारस
4. यूमेनीस
5. ओनेसिक्रिटस

अरिस्टोकुलस की **'हिस्ट्री ऑफ द वार'** (History of the War) एवं ओनेसिक्रिटस की **'सिकन्दर की जीवनी'** प्रमुख साहित्यिक ग्रन्थ है. सिकन्दर के परवर्ती लेखकों में सेल्युकस निकेटर का राजदूत 'मेगस्थनीज' चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में पाटलिपुत्र आया. मेगस्थनीज ने 'इण्डिका' नामक पुस्तक लिखी जिसमें पाटलिपुत्र नगर, प्रशासनिक व्यवस्था एवं राजनैतिक व्यवस्था का उल्लेख मिलता है.

यूनानी एवं रोमन लेखक

परवर्ती यूनानी और रोमन अन्य लेखक निम्नलिखित हैं–

1. डॉयमेकस	7. कर्टियस
2. टिसनी	8. जस्टिन
3. टॉलेमी	9. स्ट्रेबो
4. डायोडोरस	10. डायोनीसियस
5. एरियन	11. सिकुलस
6. प्लूटार्क	12. पोलिविअस

प्लिनी का **'प्राकृतिक इतिहास'** (Natural History), टॉलेमी का भूगोल (Geography), **इण्डकोप्लुस्टस का 'क्रिश्चियन ऑफ द यूनिवर्स'** में भारत के भौगोलिक विस्तार एवं सांस्कृतिक इतिहास का विस्तृत वर्णन मिलता है.

चीनी लेखक

प्रमुख चीनी यात्री एवं लेखक निम्नलिखित हैं–

फाह्यान (399 ई.)

ह्वेनसांग (629 ई.)

सुंगयुन (518 ई.)

इत्सिंग (सातवीं शताब्दी)

फाह्यान 15 वर्षों तक भारत में रहा और चीन जाकर उसने 'द ट्रेवल्स ऑफ फाह्यान' (The travels of Fa-hien) नामक पुस्तक लिखी. द ट्रेवल्स ऑफ फाह्यान में गुप्तकालीन इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति का वर्णन है.

ह्वेनसांग ने बौद्ध केन्द्रों का भ्रमण किया एवं 'पाश्चात्य संसार के लेख' (Records of the Westeren World) नामक पुस्तक लिखी जिसमें हर्षवर्द्धन की जीवनी एवं तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक व्यवस्था का वर्णन किया गया है. हुईली नामक चीनी लेखक ने 'युवानच्वांग की जीवनी' (The life of Hsuan-Tsiang) लिखी, जिसमें सातवीं शताब्दी का इतिहास वर्णित है.

तिब्बती लेखक

'लामा तारानाथ' सवसे महत्वपूर्ण तिब्बती लेखक था जिसने 'बौद्ध धर्म का इतिहास' (History of Buddhism) लिखा जिसमें पूर्व मध्यकालीन इतिहास का विस्तृत वर्णन मिलता है.

अरबी एवं मुसलमान लेखक

अरबी एवं मुस्लिम लेखकों में सर्वोपरि अलबेरूनी की 'तहकीक-ए-हिन्द' नामक रचना है. जिसमें ग्यारहवीं शताब्दी के भारत का वर्णन है.

प्रमुख अरबी एवं मुसलमान लेखकों की ऐतिहासिक कृतियाँ निम्न हैं–

लेखक	रचना
आल बिलादुरी	किताब-फुतूह-अल-बुल्दान
सुलेमान	सिलिसिला-तुल तवारीख
हसन निजामी	ताजुल मासिर
मीर खोन्द	रोजा तुस्सफा
फरिश्ता	तारीख-ए-फरिश्ता
मिनहाजुद्दीन	तवकात-ए-नासिरी

निष्कर्ष–प्राचीन भारतीय इतिहास को बखूबी जानने के लिए साहित्यिक ग्रन्थ, ऐतिहासिक ग्रन्थ, पुरातत्त्व एवं विदेशी लेखकों और यात्रियों की पुस्तकों, विवरणों की भूमिका निश्चित रूप से सर्वोत्कृष्ट रही है. इन सभी स्रोतों का अपना अलग-अलग महत्व है. एक तरफ साहित्यिक स्रोतों में तिथिक्रम का अभाव है, तो दूसरी तरफ पुरातात्त्विक स्रोत अपूर्ण जानकारी के स्रोत है. अतः निष्कर्ष रूप में समवायत्व स्वरूप में इनका समन्वय ही भारतीय इतिहास को प्रकट करने का एकमात्र उपाय है.

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- भारतीय इतिहास के साधनों को चार भागों में वर्गीकृत किया है–
  1. साहित्यिक ग्रन्थ 2. ऐतिहासिक ग्रन्थ
  3. पुरातत्त्व
  4. विदेशी लेखक एवं यात्रियों का विवरण
- सम्प्रदाय भेद से साहित्यिक ग्रन्थों को तीन भागों में वर्गीकृत किया है–
  1. ब्राह्मण ग्रन्थ 2. बौद्ध धर्म ग्रन्थ
  3. जैन धर्म ग्रन्थ
- सृष्टि के प्राचीनतम एवं ब्राह्मणों का सर्वश्रेष्ठ अपरूप वैदिक साहित्य है. वेदों की संख्या चार है–
  1. ऋग्वेद 2. सामवेद
  3. यजुर्वेद 4. अथर्ववेद
- धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत ब्राह्मण ग्रन्थों के निम्न प्रकार हैं :
  1. वैदिक साहित्य 2. ब्राह्मण धर्मग्रन्थ
  3. आरण्यक 4. उपनिषद्
  5. वेदाङ्ग 6. स्मृति या धर्मशास्त्र

7. षड्दर्शन 8. उपवेद
9. महाकाव्य

- विद्वान् ऋग्वेद की रचना सप्त सैन्धव प्रदेश में 1500 से 1000 ई. पू. के मध्य हुई मानते हैं.
- ऋग्वेद 10 मण्डलों एवं 1028 सूक्तों में विभक्त है. 2 से 9 मण्डल के सारे सूक्त पुराने हैं.
- ऋग्वेद ईरानी ग्रन्थ 'जेंद अवेस्ता' से पूरी तरह मिलता है.
- सामवेद का प्रयोग यज्ञादि कार्यों को गायन परम्परा से सम्पन्न कराने के लिए किया जाता है.
- सामवेद में 1550 मन्त्र हैं, जिसमें से ऋग्वेद में 75 को छोड़कर शेष मिल जाते हैं.
- यजुर्वेद उत्तरवैदिक काल के सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है.
- यजुर्वेद के दो भेद हैं–

1. कृष्ण यजुर्वेद 2. शुक्ल यजुर्वेद

- कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ हैं–

1. काठक 2. कपिष्ठल
3. मैत्रायणी 4. तैत्तिरीय

- शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा 'वाजसनेयी' है.
- कृष्ण यजुर्वेद में यज्ञ विधियों के मंत्रों की व्याख्या है, जबकि शुक्ल यजुर्वेद में सिर्फ मन्त्र ही हैं.
- अथर्ववेद 20 मण्डलों में विभक्त है. इसमें 731 गद्य एवं पद्य ऋचाएँ हैं. अथर्ववेद में जादू-टोना, चित्रकला, धनुर्विद्या से सम्बन्धित विवरण है.
- ऐतरेय, शतपथ, गोपथ, पञ्चविंश आदि ब्राह्मणग्रन्थ इतिहास के लिए सर्वोपयोगी धर्मग्रन्थ हैं.
- ब्राह्मणों के अन्तिम भाग को आरण्यक कहते हैं. प्रमुख रूप से तैत्तिरीय, ऐतरेय, मैत्रायणी तीन आरण्यक हैं. दार्शनिक विचारधारा का सूत्रपात आरण्यकों द्वारा हुआ.
- उपनिषदों की संख्या लगभग 108 है. प्रमुख उपनिषद् निम्नलिखित हैं–

1. ईश 6. तैत्तिरीय
2. ऐतरेय 7. वृहदारण्यक
3. कठ 8. मुण्डक
4. केन 9. श्वेताश्वतरोपनिषद्
5. छान्दोग्य 10. प्रश्नोपनिषद्

- वेदों के विधिवत् अध्ययन के लिए सूत्रों का निर्माण हुआ, जो कई शाखाओं में विभक्त थे, उन्हें वेदाङ्ग कहा गया.

'मुण्डकोपनिषद्' के अनुसार वेदाङ्ग 6 हैं–

1. शिक्षा 2. कल्प
3. व्याकरण 4. निरुक्त
5. छन्द 6. ज्योतिष

- कल्पसूत्र चार भागों में वर्गीकृत है–

1. श्रौतसूत्र 2. गृहसूत्र
3. धर्मसूत्र 4. शुल्वसूत्र

- श्रौतसूत्र के निम्नलिखित उपविभाग हैं–

1. आपस्तम्ब 7. मानव
2. अश्वलायन 8. लाट्यायन
3. कात्यायन 9. वैतान
4. जैमिनी 10. सांख्यायन
5. द्राह्मायन 11. हिरण्यकेशी
6. बौधायन

- गृहसूत्र के उपविभाग निम्नलिखित हैं–

1. कौशिक 5. पास्कर
2. खादिर 6. भारद्वाज
3. गोमिल 7. मानव
4. द्राह्मायन 8. सांख्यायन

- धर्मसूत्र के उपविभाग निम्न हैं–

1. गौत्तम 2. वशिष्ठ
3. विष्णु 4. हरित

- व्याकरण में पाणिनी की अष्टाध्यायी एवं पतञ्जलि का महाभाष्य उल्लेखनीय है.
- यास्क द्वारा निरुक्त की रचना की गई.
- वराहमिहिर द्वारा लिखित 'वृहत् संहिता' ज्योतिषशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ है.
- उपवेद में सर्वाधिक मान्य वेद आयुर्वेद है.
- आयुर्वेद के निम्नलिखित आठ भाग हैं–

1. शल्य 5. कुमारभृत्य
2. शालाक्य 6. अगदतन्त्र
3. काय चिकित्सा 7. रसायन
4. भूतविद्या 8. वाजीकरण

- अन्य उपवेदों में युद्धकला के लिए 'धनुर्वेद', संगीत कला के लिए 'गन्धर्व वेद', भवन निर्माण के लिए 'शिल्प वेद' प्राचीन भारत में विद्यमान थे.
- दर्शनों की संख्या 6 है. अतः इन्हें षड्दर्शन कहा जाता है. दर्शन की निम्नलिखित शाखाएँ हैं–

1. न्याय 2. वैशेषिक
3. सांख्य 4. योग
5. पूर्वमीमांसा 6. उत्तरमीमांसा

- गौत्तम ऋषि ने न्याय दर्शन, कणद (कणाद) ऋषि ने वैशेषिक दर्शन, कपिल ऋषि ने सांख्य दर्शन, पतञ्जलि ने योग दर्शन एवं जैमिनी ने पूर्वमीमांसा तथा बादरायण ने उत्तरमीमांसा का प्रतिपादन किया.
- रामायण एवं महाभारत दोनों महाकाव्य तत्कालीन समाज, राष्ट्र, राज्य की सभ्यता, संस्कृति, राजनैतिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था पर प्रकाश डालते हैं. इसलिए इन्हें 'अर्द्ध ऐतिहासिक धर्म ग्रन्थ' कहा जाता है.

- महाभारत को वेदव्यास ने लिखा. महाभारत का प्राचीन नाम जय था. इसके बाद भरत तथा अन्त में शतसहस्त्री संहिता या महाभारत नामकरण किया गया.
- महाभारत के प्राचीन स्वरूप जय में 8,800 पद्य, भारत में 24,000 हो गये एवं महाभारत अंतिम संकलन में 1,00,000 पद्य हो गये.
- 'रामायण' महाकाव्य आदिकवि वाल्मीकि ने लिखा. आरम्भ में रामायण में 6,000 पद्य थे, जो आगे चलकर अन्तिम संकलन में 24,000 हो गये.
- वराह पुराण के अनुसार 18 पुराण निम्नलिखित हैं–

1. अग्नि पुराण	10. लिंग पुराण
2. नारद पुराण	11. वराह पुराण
3. गरुड़ पुराण	12. ब्रह्म पुराण
4. पद्मपुराण	13. वामन पुराण
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण	14. विष्णु पुराण
6. भविष्य पुराण	15. ब्रह्माण्ड पुराण
7. भागवत पुराण	16. स्कन्द पुराण
8. मत्स्य पुराण	17. कूर्म पुराण
9. मार्कण्डेय पुराण	18. वायु पुराण

- पुराणों में निम्नलिखित पाँच तत्व समाहित हैं–

1. सृष्टि	2. प्रतिसर्ग
3. मन्वन्तर	4. दैववंश
5. राजवंशों का क्रमिक इतिहास	

- पुराणों की रचना गुप्तकाल में हुई.
- पुराणों को प्राचीन भारत के सन्दर्भ में 'विश्वकोष' कहा जाता है.
- पुराणों में नन्द वंश, शिशुनाग वंश, मौर्य वंश, शुंग वंश, कण्व वंश, आन्ध्र–सातवाहन वंश एवं गुप्त वंश के शासकों का वर्णन मिलता है.
- 'वंशानुचरित' नामक पुराण प्रकरण भारतीय इतिहास का सर्वोत्तम स्रोत है.
- धर्मशास्त्र या स्मृतियों की रचना गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में हुई.
- प्राचीन स्मृतियाँ निम्नलिखित हैं–

1. मनुस्मृति	2. याज्ञवल्क्य स्मृति
3. नारद स्मृति	4. वृहस्पति स्मृति
5. कात्यायन स्मृति	

- बौद्ध धर्म ग्रन्थों में सबसे पहले लिखा गया साहित्य 'जातक' है. जातक में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्मों को वर्णित किया गया है.
- जातकों के बाद त्रिपिटक का नाम सर्वोपरि है. त्रिपिटक तीन बौद्ध धर्म ग्रन्थों से मिलकर बना है. त्रिपिटक निम्नलिखित हैं–

1. सुत्तपिटक	2. विनयपिटक
3. अभिधम्मपिटक	

- जैन साहित्य के ग्रन्थों में ऐतिहासिक स्रोत के रूप में परिशिष्ट पर्व एवं भद्रबाहुचरित प्रमुख है.
- ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कल्हण की **राजतरंगिणी** एवं कौटिल्य का अर्थशास्त्र सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है.
- राजतरंगिणी में कश्मीर का इतिहास वर्णित है.
- अर्थशास्त्र को 15 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में विभक्त किया गया है. **अर्थशास्त्र** में मौर्यकालीन प्रशासन एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन की जानकारी समाहित है.
- प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक स्रोतों में निम्नलिखित ग्रन्थ प्रमुख हैं–

1. सोमेश्वर का चतुर्विंशति प्रबन्ध
2. हेमचन्द्र का कुमारपालचरित
3. चन्द्रप्रभासूरी का प्रभावकचरित
4. गंगाधर पण्डित का मण्डलीक महाकाव्य
5. जयसिंह सूरी का हम्मीर महाकाव्य
6. राजनाथ का मूषिक वंशम् एवं राजाभ्युदय

- संगम साहित्य में चोल, चेर, पाण्ड्य वंशों का विस्तृत वर्णन किया गया है.
- संगम साहित्य में निम्नलिखित तमिल ग्रन्थ प्रमुख हैं–

1. एतुतोकई	2. पुरननुरू
3. पदु-पदु	4. शिला पदिकारम्
5. कलिंगतुपरणि	6. कुलोत्तुंगगण
7. पिल्लैतमिल	8. चोल चरितम्

- पुरातत्त्व से या खनन से मिली ऐतिहासिक सामग्रियों को चार भागों में वर्गीकृत किया है–

1. उत्खनन से प्राप्त सामग्री
2. उत्कीर्ण या अभिलेख
3. मुद्राएँ एवं सिक्के
4. स्मारक

- अभिलेखों को 4 भागों में वर्गीकृत किया है–

1. स्तम्भ लेख	2. ताम्र लेख
3. शिला लेख	4. गुहा लेख

- प्राचीन भारत में 'आहत' सिक्कों का प्रचलन था जिन्हें पंचमार्कड सिक्के भी कहा जाता था. आहत सिक्के चाँदी एवं ताँबे के बने होते थे. आहत सिक्कों का प्रचलन छठीं शताब्दी ई. पू. माना गया है.
- तक्षशिला और मथुरा से प्राप्त मूर्ति अवशेषों एवं अजन्ता, ऐलोरा, एलिफेन्टा गुफाएँ, सांची, भरहुत के स्तूप एवं बाघ की गुफाओं से प्राचीनतम इतिहास की कला शिल्पकला एवं चित्रकला के बारे में जानकारी मिलती है.
- विदेशी लेखकों में यूनानी लेखक 'हेरोडोट्स' सर्वप्रथम भारत आए, जिन्होंने 'हिस्टोरिका' लिखा. हिस्टोरिका में उत्तरापथ और हखमी साम्राज्य का वर्णन मिलता है.

- निम्नलिखित लेखक सिकन्दर के समकालीत थे–
  1. अरिस्टोबुलस 2. निआर्कस
  3. चारस
- सिकन्दर के परवर्ती लेखकों में मेगस्थनीज प्रमुख है, जिसने 'इण्डिका' लिखी. इण्डिका में चन्द्रगुप्त मौर्य एवं पाटलिपुत्र का वृहद् वर्णन किया गया है.
- बौद्ध धर्म के अध्ययनार्थ आये चीनी लेखक निम्नलिखित थे–
  1. फाह्यान (399 ई.)
  2. सुंगयुन (518 ई.)
  3. इत्सिंग (सातवीं शताब्दी)
- तिब्बती लेखकों में 'लामा तारानाथ' की 'बौद्ध धर्म का इतिहास' तत्कालीन भारतीय इतिहास का सर्वश्रेष्ठ स्रोत है.
- अरब यात्रियों में अलबेरूनी का तहकीक-ए-हिन्द, अलबिलादुरी का किताब 'फुतूह-अल-बुल्दान' एवं सुलेमान का सिलसिला तुल-तवारीख नामक यात्रा वृत्तान्त भारतीय इतिहास के लिए सर्वोत्कृष्ट स्रोत है.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

विभिन्न वंशों के ऐतिहासिक स्रोत

1. मौर्य वंश

मौर्यवंश की सम्पूर्ण जानकारी के लिए सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक स्रोत 'अर्थशास्त्र' था.

अर्थशास्त्र में राज्य, राज्य के तत्त्व, राजा की स्थिति, उसके अधिकार एवं कर्त्तव्य, राज्य के नीति निर्धारक तत्त्वों का विशद् विश्लेषण किया गया है.

अर्थशास्त्र की तुलना अरस्तू के पॉलिटिक्स (Politics) एवं मैकियावेली के प्रिंस (Prince) नामक ग्रन्थ से की जाती है. इसका काल ईसा की 2-3 शताब्दी माना गया है.

(1) मौर्यकालीन साहित्यिक स्रोत

निम्नलिखित साहित्य से मौर्यकालीन सभ्यता, संस्कृति, राजनैतिक एवं धार्मिक परिवेश की जानकारी मिलती है–

लेखक/कवि	कृति
विशाखादत्त	मुद्राराक्षस
सोमदेव	कथासरित्सागर
क्षेमेन्द्र	वृहत्कथा मंजरी
पतञ्जलि	महाभाष्य
पाणिनी	अष्टाध्यायी

(2) मौर्यकालीन बौद्ध धर्म ग्रन्थ

दीपवंश	महावंश
दिव्यावदान	अशोकावदान
मंजूश्रीमूलकल्प	मिलिन्दपञ्हो
महापरिनिर्वानसुत्त	

(3) मौर्यकालीन जैन धर्म ग्रन्थ

परिशिष्ट पर्व	कल्प सूत्र
भद्रबाहुचरित	हेमचन्द्र का स्थविरावलि चरित

(4) मौर्यकालीन तमिल साहित्यिक स्रोत

मुमलनार का साहित्य
परणार का साहित्य

(5) मौर्यकालीन विदेशी यात्री / लेखक

मेगस्थनीज (यूनानी)
राजदूत डायोनीसस (यूनानी)
स्ट्रेबो (यूनानी)
डायोडोरस (यूनानी)
ऐरियन (यूनानी)
ह्वेनसांग (चीनी यात्री)

(6) मौर्यकालीन प्रमुख अभिलेख

(i) स्तम्भ अभिलेख (Pillar Edicts)

निम्न स्थलों के अभिलेख मौर्यकाल के ऐतिहासिक स्रोत हैं–

रुम्मिनदेई (उत्तर प्रदेश)
निगलिवा
दिल्ली-टोपरा
इलाहाबाद-कोसम (कौशाम्बी)
लोरिया–अरेराज
लोरिया–नन्दनगढ (चम्पारण, बिहार)
सारनाथ (बनारस)
साँची (मध्य प्रदेश)
दिल्ली-मेरठ

(7) मौर्यकालीन शिला अभिलेख

निम्नलिखित प्रमुख शिलालेख मौर्यकालीन इतिहास के उत्कृष्ट स्रोत हैं–

येर्रागुडी
राजुलमंदगिरी (आन्ध्र प्रदेश)
ब्रह्मगिरी
सिद्धपुर

जटिंग-रामेश्वर (मैसूर, कर्नाटक)
सहसाराम (बिहार)
रूपनाथ-गुर्जरा (मध्य प्रदेश)
बैराठ-भावरू (राजस्थान)
कलसी (उत्तर प्रदेश)
गिरनार (गुजरात)
धौली-जौगड़ (उड़ीसा)
सोपारा-भूईग्राम (महाराष्ट्र)
शाहबाजगढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान)
मानसेरा (हजारा, पाकिस्तान)
कांधार एवं लमगान (अफगानिस्तान)

(8) **मौर्यकालीन गुहा अभिलेख**

गया के पास बाराबर (Barabar) की पहाड़ियों के तीन गुहा अभिलेख प्रमुख हैं–

नयनग्रोध गुहा या सुदामा गुहा
विश्वझौपड़ी गुहा
कर्ण चौपड़ गुहा

(9) **मौर्यकालीन अन्य अवशेष**

आहत सिक्के एवं उत्खनन से प्राप्त उत्तरी ओपदार काले मृद्‌भाण्ड मौर्यकालीन व्यवस्था की जानकारी प्रदान करते हैं.

2. शुंग वंश

1. **शुंगवंशीय साहित्यिक स्रोत**

पतञ्जलि का महाभाष्य
कालिदास का मालविकाग्निमित्रम्
बाणभट्ट का हर्षचरित
वायु पुराण

2. **जैन साहित्य**

मेरुतुंग की थेरावली

3. **बौद्ध साहित्य**

दिव्यावदान

4. **विदेशी लेखक / यात्री**

तिब्बती लामा तारानाथ की कृति 'बौद्ध धर्म का इतिहास' शुंगवंश का सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक स्रोत है.

5. **शुंगवशीय अभिलेख**

खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
धनदेव का अयोध्या अभिलेख

6. **स्मारक**

भरहुत एवं साँची के स्तूप

3. शक वंश

1. साहित्यिक स्रोत — महाभारत, रामायण, हर्षचरित मनुस्मृति
2. अभिलेख — 1. तक्षशिला ताम्रपत्र अभिलेख
2. जूनागढ़ अभिलेख (शक शासक रुद्रदामन से सम्बन्धित)

4. गुप्त वंश

गुप्तवंशीय साहित्यिक स्रोत

(1) **वैदिक साहित्य**

गुप्त वंश के शासकों एवं शासन प्रणाली, सभ्यता, संस्कृति के बारे में इतिहास को प्रदर्शित करने में निम्न पुराणों का सर्वाधिक महत्व है–

ब्रह्माण्ड पुराण वायु पुराण
विष्णु पुराण

(2) **अन्य साहित्य**

वात्स्यायन का कामसूत्र
विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम्
वसुबंधु का जीवन वृत्तान्त, कौमुदी महोत्सव
शुद्रक का मृच्छकटिकम्
कालिदास की निम्नलिखित रचनाएँ–
(i) ऋतुसंहार (ii) कुमारसम्भवम्
(iii) मेघदूत (iv) मालविकाग्निमित्रम्
(v) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(3) **बौद्ध धर्म ग्रन्थ**

आर्यमंजूश्रीमूलकल्प

(4) **जैन धर्म ग्रन्थ**

1. हरिवंश पुराण 2. तिलोपण्णति

(5) **संस्कृत साहित्यिक ग्रन्थ**

कृष्णचरितम् सेतुबन्ध
कुन्तलेश्वर दैत्यम् वसुबंधुचरितम्
काव्यालंकार सूत्रवृत्ति हर्षचरित
काव्य मीमांसा आयुर्वेद दीपिका टीका
चन्द्रगर्भ परिपृच्छा कथासरित्सागर

(6) **गुप्तवंशीय विदेशी यात्री / लेखक / साहित्य**

1. चीनी यात्री फाह्यान की पुस्तक फो क्यो-की (रिकॉर्डस् ऑफ द बुद्धिस्टिक किंग्डम्स)

फो क्यो-की गुप्तवंश के सम्पूर्ण इतिहास का सशक्त स्रोत है.

2. चीनी यात्री ह्वेनसांग की पुस्तक सी-यु-की (Buddhist records of The Eastern World)

सी-यु-की ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा से लौटने के बाद 646 ई. में लिखी. जिसका अनुवाद वाटर्स (watters) ने किया.

3. चीनी यात्री इत्सिंग की पुस्तक काउ-फा-काओ-सांग-युन.

4. वांग-ह्वेन-त्से की पुस्तक फा-युआन-चु-लिन

(7) **गुप्तवंशीय मुद्राएँ**

वैशाली की ध्रुवस्वामिनी मोहर.

(8) **गुप्त वंशीय सिक्के**

निम्नलिखित सिक्के गुप्तकालीन इतिहास के सर्वश्रेष्ठ स्रोत हैं–

दण्डधारी प्राकार	अश्वमेध सिक्के
कृतान्त परशु प्राकार	धनुर्धारी प्राकार
छत्र प्राकार के सिक्के	सिंहनिहंता के सिक्के

(9) **गुप्तवंशीय स्मारक**

उदयगिरी, देवगढ़ एवं तिगवा का मन्दिर, गुप्तकालीन सिक्के, बयाना दफीना (Bayana Hoard) भरतपुर के पास प्राप्त हुए हैं जिसमें 1821 सोने के सिक्के मिले हैं.

(10) **गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख**

गुप्तकालीन शासक	तत्कालीन अभिलेख
समुद्रगुप्त	प्रयाग प्रशस्ति, एरण प्रशस्ति, नालंदा- गया ताम्र शासनालेख
चन्द्रगुप्त द्वितीय	1. मथुरा स्तम्भलेख, 2. उदयगिरी का प्रथम गुहालेख, 3. उदयगिरी का द्वितीय अभिलेख, 4. गढ़वा का शिलालेख, 5. मेहरौली प्रशस्ति, 6. साँची शिलालेख
कुमारगुप्त प्रथम	1. बिलसाड़ स्तम्भलेख, 2. गढ़वा का द्वितीय शिलालेख, 3. गढ़वा का तृतीय शिलालेख, 4. उदयगिरी का तृतीय गुहालेख, 5. धनदैह ताम्रलेख, 6. मथुरा का जैन मूर्तिलेख, 7. तुमैन शिलालेख, 8. मंदसौर शिलालेख, 9. कर्मदण्डा लिंगलेख, 10. कुलाईकुरी ताम्रलेख, 11. दामोदरपुर प्रथम ताम्रलेख, 12. दामोदरपुर द्वितीय ताम्रलेख, 13. मानवकुंवर बुद्धमूर्ति लेख, 14. बंग्राम ताम्रलेख
स्कन्दगुप्त	1. जूनागढ़ प्रशस्ति, 2. सुपिया स्तम्भलेख, 3. भितरी स्तम्भलेख, 4. इन्दौर ताम्रलेख, 5. कहौंम स्तम्भलेख
कुमार गुप्त द्वितीय	सारनाथ बुद्धमूर्ति अभिलेख
पुरुगुप्त	बिहार स्तम्भ लेख
बुद्धगुप्त	1. सारनाथ बुद्धमूर्ति लेख, 2. राजघाट (वाराणसी) स्तम्भलेख, 3. नन्दपुर ताम्रलेख, 4. चतुर्थ दामोदरपुर ताम्रलेख, 5. दामोदरपुर ताम्र लेख, 6. एरण स्तम्भलेख, 7. पहाड़पुर ताम्र लेख
वैन्यगुप्त	गुनईधर (टिपरा) ताम्र लेख
विष्णुगुप्त	पंचम दामोदरपुर ताम्र लेख
भानुगुप्त	एरण स्तम्भ लेख

5. चालुक्य वंश

चालुक्यवंशीय ऐतिहासिक स्रोत

1. **साहित्यिक स्रोत**

चालुक्य वंश का साहित्यिक स्रोत संगम साहित्य है. एतुतोकई, पुरननुरू, पत्तु-पत्तु, शिलप्पदिकारम आदि ग्रन्थों से चालुक्य वंश का इतिहास प्रस्फुटित होता है.

2. **अन्य साहित्यिक स्रोत**

भारवि का किरातार्जुनीयम्

विल्हण का विक्रमांकदेवचरितम्

महेन्द्रवर्मन का मत्तविलास

3. **उत्खनन से प्राप्त अवशेष स्थल**

कांचीपुरम्	महाबलिपुरम्
तंजौर	पडुकोट्टई

4. **अभिलेख**

1. ऐहोल अभिलेख 2. तोगरचेदी अभिलेख

3. करनूल अभिलेख

6. हर्षवर्द्धन काल

हर्षवर्द्धनकालीन ऐतिहासिक स्रोत

1. **साहित्यिक स्रोत**

बाणभट्ट का हर्षचरित, कादम्बरी, पार्वती-परिणय. नृप हर्षवर्द्धन के तीन नाटक–रत्नावली, प्रियदर्शिका, नागानन्द दण्डिन का दशकुमार चरित.

2. **विदेशी लेखक/यात्री / साहित्य**

चीनी यात्री ह्वेनसांग की पुस्तक-शी-यू-की (Records of the western world) 646 ई.

वाटर्स (watters) ने इसका अनुवाद किया.

हुईली को 'ह्वेनसांग की जीवनी' (Life of Hsuan Tsaug).

अरबी लेखक अलबेरूनी का तहकीक-ए-हिन्द.

3. **अभिलेख**

1. मधुवन अभिलेख (आजमगढ़, उत्तर प्रदेश) 631 ई.

2. बाँसखेड़ा ताम्रपत्र अभिलेख (शाहजहाँपुर, उ. प्र.) 628 ई.

4. **मुहरें**

नालन्दा एवं सोनपत से प्राप्त मुहरें.

प्राचीनकालीन ऐतिहासिक रचनाएं

ऋग्वेद

वास्तविक नाम–ऋग्वेद

अन्य नाम–दाशतयी

ऋग्वेद का अर्थ–उस देव विषयक अति गूढ़ ज्ञान का प्रतिपादन जो छन्दों में संगृहीत है.[1]

शाखाएं–(1) इक्कीस (पतंजलि के अनुसार)

(2) पन्द्रह (भर्तृहरि के अनुसार)

(3) पाँच (चरणव्यूह के अनुसार)

(4) सत्ताइस (भगवतद्दत्त के अनुसार)

ऋग्वेद का विभाजन–(1) इसका विभाजन मण्डल क्रम में है. ऋग्वेद में 10 मण्डल, 85 अनुवाक् एवं 1028 सूक्त, 153826 शब्द हैं तथा 432,000 अक्षर हैं (शाकल शाखा के अनुसार)

(2) वाष्कल शाखा के अनुसार ऋग्वेद अष्टक क्रम में वर्गीकृत है. इसमें 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2006 वर्ग तथा 1028 सूक्त हैं. एक सूक्त में कई ऋचाएं हैं.

(3) महर्षि शौनक के अनुसार ऋग्वेद में $10,580\frac{1}{4}$ मन्त्र हैं.

(iii) 3500 ई. पू. (याकोबी के मतानुसार)

(iv) 6500 ई. पू. (बाल गंगाधर तिलक के मतानुसार)

(v) 8000 ई. पू. (अलेक्जेण्डर के मतानुसार)

(vi) 1500 ई. पू. (जे. हर्टन के मतानुसार)

(vii) 75000 ई. पू. (सम्पूर्णानन्द के मतानुसार)

रचना स्थल–सप्त सैन्धव प्रदेश (प्रारम्भिक सूक्तों की रचना अफगानिस्तान से सिन्धु प्रदेश के मध्य)

रचनाकार–(1) रचनाकारों के सम्बन्ध में मतैक्यता नहीं/ कुछ विद्वानों के अनुसार उन्हें अपौरूषेरु (पुरुष के द्वारा रचना नहीं) माना जाता है.

(2) कुछ विद्वानों के मतानुसार, ऋग्वेद के दूसरे, चौथे, पाँचवे, छठे एवं सातवें मण्डल की रचना, ग्रत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, आत्रे भारद्वाज एव वशिष्ट ऋषि ने की थी, जबकि कुछ इन्हें मात्र भाष्यकार मानते हैं. प्रथम मण्डल के 50 सूक्त कण्व वंश के किसी ऋषि द्वारा रचे गए थे.

समानान्तर ग्रन्थ–जेंद अवेस्ता (ईरानी ग्रन्थ)

दस मण्डलों का कालक्रम–विद्वानों के मतानुसार 2 से 9 मण्डल के सूक्त प्राचीनतम एवं 1 तथा 10वाँ मण्डल बाद में जोड़ा गया था.



रचनाकाल–(i) 1500 – 1000 ई. पू. (सर्वमान्य तिथि घोषित)

(ii) 1200 से 1000 ई. पू. (प्रो. मैक्समूलर के अनुसार)

ऋग्वेद में वर्णित प्रमुख वर्ण–ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य.

ऋग्वेद में उल्लिखित वर्गों की उत्पत्ति–ऋग्वेद के दशम् मण्डल के अनुसार–

(1) ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मणों की उत्पत्ति.

---

1 ऋक सूक्त संग्रह : प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ.

(2) ब्रह्मा की बाहु से क्षत्रियों की उत्पत्ति.

(3) ब्रह्मा की जाँघ से वैश्यों की उत्पत्ति.

(4) ब्रह्मा के पैरों से शूद्रों की उत्पत्ति.

ऋग्वेद में वर्णित विषय–ऋग्वेद में आर्यों की जीवन शैली, राजनैतिक, सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन की वृहद् विवेचना की गई है. इसमें आर्यों के जीवन में होने वाले संघर्षों को भी समाहित किया गया है. ऋग्वेद में वर्ण्य विषय निम्नलिखित हैं–

(A) **धर्म**–ऋग्वेद में आर्यों के वैदिक धर्म का वर्णन किया गया है. ऋग्वेद भारतीय संस्कृति का सबसे पुराना ग्रन्थ है. देवताओं की उपासना करना ही ऋग्वेद का मुख्य धार्मिक रूप है. ऋग्वेद में बहुदेवतावाद का उल्लेख किया गया है. 33 देवताओं की स्तुति को एक ब्रह्म के रूप में समाविष्ट किया गया है. ऋग्वेद में निम्नलिखित देवताओं का उल्लेख है–

(1) **द्यौ**–पृथ्वी के साथ युग्म रूप 'द्यावा पृथिवि' में अधिकांशतः प्रयुक्त हुआ है. आकाश के अर्थ में 500 बार एवं दिन के अर्थ में 5 बार ऋग्वेद में उल्लिखित किया गया है. यह द्युलोक के देवताओं में सबसे प्राचीन देवता है.

(2) **इन्द्र**–ऋग्वेद में सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता इन्द्र को माना गया है. इसे वर्षा का देवता माना गया है. 250 सूक्तों में इन्द्र की स्तुति की गई है. इन्द्र को पुरन्दर रथेष्ट, मधवा, सोमपाल, वृजहन, शतक्रतु, विजयेन्द्र इत्यादि नामों से भी सम्बोधित किया गया है.

(3) **वरुण**–इन्द्र के बाद वरुण को भी श्रेष्ठ देवता माना गया है, लेकिन वरुण शब्द का मात्र 30 बार ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है. वरुण को जल का स्रोत एवं सरिताओं को प्रवाहित करने वाले सरिता-पति कहा गया है. वरुण को नियामक देवता के रूप में ऋग्वेद में उल्लिखित किया है एवं बारह मासों का ज्ञाता बताया गया है. नैतिकवादी होने के कारण वरुण को सब देवताओं से ऊपर माना गया है. सायण के अनुसार वरुण से तात्पर्य–'दुष्टों को बन्धन में बाँधने वाला' होता है. वरुण को 'ऋतस्य गोपा' कहा गया है.

(4) **मित्र**–मित्र की स्तुति हमेशा वरुण के साथ की गई है. मित्र को 'अदब्ध' कहा गया है तथा वरुण के समान बलवान माना गया है. ऋग्वेद में मित्र को सूर्य से सम्बन्धित बताया है. मित्र को द्युलोक एवं पृथ्वी को धारण करने वाला बताया गया है. पञ्चजन मित्र के आज्ञाकारी बताए हैं.

(5) **सूर्य**–लोकों को प्रकाशित करने वाले सूर्य को ही ऋग्वेद में सूर्य देवता के रूप में अंगीकृत किया है. सूर्य को मित्र और वरुण का नेत्र बताया गया है. इसकी माता अदिति और पिता 'द्यौ' वर्णित किए गए हैं. ऋग्वेद में सूर्य को स्थावर और जंगमों को गति प्रदान करने वाला कहा गया है. सूर्य के रथ में आठ घोड़े जुड़े होते हैं, जिनमें से एक को एतश तथा सातों को 'हरित' कहा जाता है.

(6) **सविता**–ऋग्वेद में सविता को सूर्य से अधिक साम्यता रखने वाला बताया है. इसे रात और दिन का स्वामी माना गया है. सविता को दुर्भाग्य, दुःस्वप्न एवं पापों का नाशक कहा गया है. प्रत्यूष और प्रदोष दोनों से इसका सम्बन्ध वर्णित किया गया है.

(7) **उषस् (उषा)**–उषा को ऋग्वेद में सौन्दर्य की देवी एवं सूर्य की प्रेयसी बताते हुए 20 सूक्तों में उल्लिखित किया गया है. किसी स्थान पर सूर्य को उषा का पुत्र भी बताया गया है. उषा को रात्रि की छोटी बहिन एवं मधोनी कहा गया है. धन, पुत्र और यश प्रदान करने वाली उषा को कहा गया है. वह ऋतुओं का वितरण करती है अतः ऋतावरी भी कही गई है. प्रचेताः विश्ववाराः मघोनी, रेवती तथा सुभगा उषा के विशेषण हैं.

(8) **सोम**–ऋग्वेद में सोम देवता का वर्णन भी प्रमुख देवता के रूप में किया गया है. 120 सूक्त सोम की स्तुति के लिए ऋग्वेद में वर्णित हैं. सूक्तों की संख्या के आधार पर अग्नि के बाद दूसरा क्रम 'सोम' का आता है. ऋग्वेद के नवम् मण्डल में मात्र सोम की स्तुति ही की गई है. ऋग्वेद के अनुसार सोम एक वनस्पति थी, जो मुञ्जवान् पर्वत पर पाई जाती थी. इसके पीने से शक्ति एवं स्फूर्ति मिलती थी. इन्द्र को सोमरस पीने का अत्यधिक शौक था– ऐसा ऋग्वेद में वर्णन मिलता है.

(9) **पूषन्**–सोम के साथ पूषा या पूषन् का वर्णन ऋग्वेद में किया गया है. पूषन् शब्द का अर्थ 'पोषण करने वाला होता है. ऋग्वेद के आठ सूक्तों में पूषन् का वर्णन किया गया है जिनमें पाँच सूक्त छठे मण्डल के हैं. पूषन् को ऋग्वेद में चराचर का स्वामी तथा मार्गों का रक्षक कहा गया है. पूषन् को पशुओं का रक्षक भी बताया गया है. ऋग्वेद में पूषन् को 'विमुचीन पात्' (त्यागियों का पुत्र) एवं आघृणि (प्रकाशवान) कहा गया है.

(10) **वात्**–भौतिक वायु के देवता के रूप में ऋग्वेद में दो छोटे-छोटे सूक्तों में वात की स्तुति की गई है. वात को पर्जन्य से जोड़ा गया है तथा वात को नीरोगी बनाने वाला, देवों का श्वास-प्रश्वास, जीवन अवधि का वृद्धिकारक, चमकीले प्रकाश को पैदा करने वाला कहा गया है.

(11) **वास्तोष्पति**[1]–वास्तोष्पति को सोम के समान ही महत्वपूर्ण देव माना गया है. ऋग्वेद में इसके नाम पर केवल एक सूक्त का प्रयोग हुआ है, लेकिन आवृत्ति सात बार हुई है.

1 लेख में प्रयुक्त सभी तथ्य ऋग्वेद की मूल संहिता पर आधारित हैं.

ऋग्वेद के अनुसार वास्तोष्पत्ति देवता के सूक्त का प्रयोग गृह प्रवेश के दौरान किए जाने का उल्लेख किया है. इसे नए घर का अधिपति तथा रक्षक एवं उन्नति, दीघार्यु का कारक बताया गया है.

(12) **वाक्**–वाणी की देवी के रूप में ऋग्वेद में वाक् देवी को समाहित किया गया है. इसे ब्रह्मा से उत्पन्न महान् शक्ति कहा गया है. ऋग्वेद में इसे वाक् शक्ति विकासक एवं ऋषि, ब्राह्मण, विद्वान् बना देने वाली कहा गया है.

(13) **रुद्र**–ऋग्वेद में रुद्र देवता का वर्णन अत्यधिक शक्तिशाली देवता के रूप में हुआ है, लेकिन बहुत ही कम ऋचाओं में इसे स्थान दिया गया है. रुद्र को मरुतों का पिता एवं स्वामी, संसार का पिता एवं स्वामी, उदार, आशुतोष और शिव कहा गया है. रुद्र को कष्टों से बचाने वाला, दण्ड देने वाला, स्वास्थ्य का देवता बताया गया है.

(14) **यम**–ऋग्वेद के दशम् मण्डल के 14वें से अट्ठाहरवें सूक्त में यम को वर्णित किया गया है. इसे मृतात्मा का मार्गदर्शक तथा प्राणों का देवता बताया गया है. वरुण, बृहस्पति और अग्नि से इसका सम्बन्ध बताया गया है. विवस्वान् यम के पिता और सरण्यू को माता के रूप में स्थान दिया गया है. जीवों के कर्मों के अनुसार निर्णय करने वाला एवं प्रेतात्माओं पर शासन करने वाला यम को बताया गया है.

(15) **अश्विन्**–ऋग्वेद के 50 सूक्तों में अश्विन् की युगल रूप में स्तुति की गई है. इन्द्र, अग्नि और सोम के बाद इनका सर्वाधिक महत्व है. प्रकाश, कामपूर्ति के साधन एवं प्राकृतिक आनन्द के देने वाले देवताओं के रूप में इनको वर्णित किया गया है. दस्त्र और नासत्य इन्हीं का नाम है. इन्हें स्वर्ग का पुत्र कहा गया है. अश्विन कुमारों को कुशल चिकित्सक, स्वर्ग के वैद्य, नवयौवन प्रदाता, नए अंगों के निर्माता ऋग्वेद में बताया गया है. निचेतास, मधुयुवा, स्यूमगभास्त्रि इत्यादि विशेषज्ञों का प्रयोग इनके लिए किया गया है.

(16) **पर्जन्य**–ऋग्वेद में मात्र तीन सूक्तों में पर्जन्य की स्तुति की गई है. यह जल बरसाने वाला, दिव्य जलों का पिता, अंकुरों को पैदा करने वाला, गाय, घोड़ियों एवं अन्य मादा जातियों में गर्भाधान के सामर्थ्य को विकसित करने वाला तथा द्युलोक एवं पृथ्वी लोक का पिता बताया गया है. एक स्थान पर पर्जन्य का पिता द्युलोक को बताया गया है तथा पृथिवी को पत्नी कहा गया है.

(17) **विश्वेदेव**–विश्वेदेव देवताओं का एक समूह है जिसमें इन्द्र अग्नि, सोम, त्वष्ट्रा, रुद्र, पूपन्, विष्णु, अश्विनी मित्रावरुण एवं अंगीरस को समाहित किया गया है. ऋग्वेद के 40 सूक्तों में विश्वेदेव की स्तुति की गई है. ऋग्वेद के आठवें मण्डल के 21वें सूक्त में प्रत्येक मन्त्र में विश्वेदेव देवताओं में से एक-एक का वर्णन किया गया है. द्युस्थानीय, पृथ्वी स्थानीय एवं अन्तरिक्ष स्थानीय इन तीनों वर्गों में विश्वेदेव को स्थान दिया गया है.

(18) **अपस्**–जल के देवता के रूप में अपस् का प्रयोग ऋग्वेद के चार सूक्तों में किया गया है. अपस् का प्रयोग हमेशा बहुवचन में ही किया गया है. इनको देवताओं का अनुयायी, यज्ञ करने वालों को वरदान देने वाला, मित्रावरुण और सूर्य का साथी तथा अग्नि का उत्पादक कहा गया है. अपस् को रोग निवारक, स्वास्थ्य, धन, शक्ति, आयु एवं अमरत्व प्रदायक माना गया है.

(19) **पुरुष**–ऋग्वेद में सृष्टि का मूल रचयिता पुरुष को बताया गया है. इस पर एक सूक्त 'पुरुष सूक्त' की रचना उपलब्ध है. पुरुष सूक्त में पदार्थों की रचना का वर्णन किया गया है. इसमें विराट् पुरुष को वर्णित किया है, जिससे चार वर्ण, षड् ऋतुएं तथा ऋक् यजुष् और समास की उत्पत्ति होने का जिक्र किया गया है. ऋग्वेद के अनुसार चतुर्वण पुरुष के चार अंग, सूर्य नेत्र, वायु प्राण, अग्नि मुख तथा मन को चन्द्रमा बताया गया है.

(20) **हिरण्यगर्भ**–ऋग्वेद के अनुसार पुरुष से उत्पन्न विराट् हिरण्यगर्भ है, जिसे प्रजापति भी कहा जाता है. पुराणों में हिरण्यगर्भ को ब्रह्म कहा गया है. ऐसा माना जाता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में सबसे पहले हिरण्यगर्भ की स्तुति की गई थी. हिरण्यगर्भ सूक्त के दस मन्त्रों में इसकी स्तुति की गई है. हिरण्यगर्भ को प्राणशक्ति प्रदायक, बल देने वाला, कर्मफलदाता कहा गया है.

(21) **अदिति**–ऋग्वेद में बन्धनों से मुक्ति के लिए अदिति देवता की उपासना करने की सलाह दी गई है. आदित्यों को अदिति का पुत्र बताया गया है. अदिति का दक्ष से भी विशेष सम्बन्ध बताया गया है. ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के सत्ताइसवें सूक्त के प्रथम मंत्र में मित्र, भग, अर्यमा, वरुण, दक्ष, अंश इत्यादि को आदित्य बताया गया है.

(22) **बृहस्पति**–ऋग्वेद के ग्यारह सूक्तों में पूर्णतः स्वतन्त्र रूप से बृहस्पति की स्तुति की गई है. दो सूक्त ऐसे भी मिलते हैं, जिनमें इन्द्र के साथ बृहस्पति की स्तुति मिलती है. बृहस्पति को ब्रह्मणस्पति, वज्रधारी, इन्द्र की सहायता करने वाला, देवताओं और मनुष्यों का मध्यस्थ, स्तुति करने वालों का गोपाः तथा सुगोपा, सभी देवताओं के जन्मों को उत्पादित करने का कारक बताया गया है. ऋग्वेद के सातवें मण्डल के 19वें मन्त्र में बृहस्पति को श्रेष्ठतम् देवता मानकर उसकी स्तुति की गई है.

(23) **सरित्**–ऋग्वेद में 'सप्त सैन्धव' या सप्त सिन्धु का प्रयोग बहुतायत से हुआ है. ऐसा उल्लेख मिलता है कि सप्तसैन्धव प्रदेश के चारों और चार समुद्र थे. ऋग्वेद में गंगा,

यमुना दृषद्वती, सरस्वती, सिन्धु, विपाशा तथा शतुद्रि नदियों का उल्लेख सप्त सैन्धव प्रदेश के रूप में हुआ है. परुष्णी, सुषोभा, वितस्ता, आजीर्किया, असिक्नी, मरूद्वृधा नामक नदियों का उल्लेख भी ऋग्वेद में हुआ है.

(B) **सृष्टि का प्रादुर्भाव**–धर्म के बाद ऋग्वेद की वर्ण्य विषय-वस्तु सृष्टि की उत्पत्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है. ऋग्वेद में लगभग 6–7 सूक्तों में सृष्टि की उत्पत्ति के सन्दर्भ में विवरण मिलता है. जिनमें पुरुष सूक्त,, नासदीय सूक्त एवं हिरण्यगर्भ सूक्त प्रमुख हैं.

(C) **पुनर्जन्म एवं मृत्यु**–मरने के बाद मनुष्य की गति तथा उसके पुनर्जन्म के सम्बन्ध में ऋग्वेद में उल्लेख किया गया है. ऋग्वेद के अनुसार मरने के बाद मनुष्य की आत्मा का यम निदर्शन करता है, वह पूर्वजों के मार्ग से उसे ले जाता है. ऋग्वेद में यम को मृत्यु का देवता बताया गया है तथा यह भी वर्णित किया गया है कि मनुष्य मृत्यु के बाद पुनः जन्म लेता है.

(D) **मोक्ष**–जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति पाना मोक्ष कहलाता है. ऋग्वेद में मोक्ष को परमानन्ददायक बताया गया है. सत्य, तपस्या, श्रद्धा एवं आध्यात्मिक ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है. ऋग्वेद के अनुसार ज्ञान के प्रकाश से मोक्ष प्राप्ति की समस्त बाधाएं दूर होती हैं.

(E) **सामाजिक वर्णन**–ऋग्वेद में आर्यों की समाज व्यवस्था का विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में वर्णन किया गया है. वर्ण, आश्रम विवाह व्यवस्था, नारियों की स्थिति, दास प्रथा, निवास, खान-पान, आमोद-प्रमोद आदि के साधनों की आर्यकालीन भारत में उपलब्धता का समावेश ऋग्वेद में मिलता है.

वर्ण व्यवस्था–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य प्रारम्भ में तीन वर्ण थे, कालान्तर में आर्य समाज में शूद्र का भी स्थान बनता चला गया. वर्ण व्यवस्था गुण और कर्म के अनुसार विकसित हुई थी. आर्येत्तर जनों को दस्यु या अनार्य कहा जाता था.

आश्रम व्यवस्था–आर्यों का जीवन ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास इन चार आश्रमों में विभाजित था. उम्र 100 वर्ष की मानी गई थी, 25–25 वर्ष के हिसाब से चार आश्रमों में जीवन क्रमशः वर्गीकृत था, तदनुकूल आर्यों को आचरण करना होता था.

विवाह व्यवस्था–ऋग्वेद में बेहद रोचक ढंग से विवाह के उद्देश्य, आदर्श एवं विधियों का उल्लेख किया गया था. पुत्र प्राप्ति आर्यों के विवाह का मूल उद्देश्य था. विवाह के बाद इन्द्र से प्रार्थना करने का उल्लेख किया गया है.

आर्यकालीन नारियाँ–वैदिक काल में नारियों को देवियों के सदृश सम्मान प्राप्त था. कन्याओं के प्रति पिता का अत्यधिक स्नेह होता था. उनके लिए शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था होती थी तथा वर चयन के लिए स्वतंत्र थी. वैदिककालीन नारियाँ युद्धों में भी भाग लेती थीं. पति से द्वेष रखने वाली विषयगामिनी एवं असती स्त्रियों की ऋग्वेद में निन्दा की गई है.

दास प्रथा–ऋग्वेद काल में दासों के अस्तित्व होने का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है. आर्येत्तर जातियाँ दास होती थीं, जिन्हें आर्यों द्वारा जीतकर अधीन कर लिया जाता था. दास आर्यों की सेवा करते थे. ये गुलाम नहीं, अपितु अधीनस्थ प्रजा होते थे. इस समय दासों को खरीदा-बेचा नहीं जाता था.

निवास–ऋग्वेद के अनुसार आर्यों की संस्कृति ग्राम्य संस्कृति थी, उत्तर वैदिक काल में नगर संस्कृति का आविर्भाव हुआ था. पस्त्या, आयतन हर्म्य, गृह, वास्तु इत्यादि शब्दों का उल्लेख ऋग्वेद में घर के लिए हुआ है. ऋग्वेद में अग्निशाला, हविर्धान, पत्नीनां सदन तथा सदस इन चार घर के प्रमुख भागों का आवश्यक रूप से घर में होने का वर्णन मिलता है.

खान-पान–ऋग्वेद के अनुसार आर्य अपने भोजन में सादगी एवं पौष्टिकता का ध्यान रखते थे. घी, दूध, दही एवं अनाजों में जौ, चावल का अधिक प्रयोग करते थे. यद्यपि हमेशा से विवादास्पद रहा है, लेकिन एकाध जगह उनके द्वारा मांस भक्षण का भी उल्लेख मिलता है. कुछ प्रसिद्ध इतिहासकारों का कथन है कि आर्य गौ-मांस का भक्षण करते थे, सर्वथा काल्पनिक एवं असत्य है, क्योंकि ऋग्वेद में गायों को नहीं मारने के सन्दर्भ में ही आर्यों को अधन्या या अछन्या शब्द से जोड़ा गया है. पेय-पदार्थों में आर्य जल, दूध, सोम, सुरा एवं मधु का पान किया करते थे. ऋग्वेद में सोमरस का सर्वाधिक उल्लेख हुआ है. वस्तुतः सोम मुंजमान पर्वत पर पैदा होने वाली सोमलता का रस होता था. यज्ञादि कर्मों पर देवताओं का सोमरस पान के आह्वान का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है.

वस्त्राभूषण–ऋग्वेद में कपास के वस्त्रों का कम एवं ऊनी वस्त्रों के प्रयोग का अधिक वर्णन मिलता है. आर्यों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों में वासस्, वस्त्र, अधोवस्त्र एवं उत्तरीय वस्त्रों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है. तपस्वी एवं संन्यासी मृगचर्म एवं वल्कल वस्त्र धारण करते थे. आर्य महिला और पुरुष आभूषणों के शौकीन थे रुक्म, कनिष्क इत्यादि आभूषण धारण करते थे. गले, वक्षस्थल, कानों में पैरों में आभूषण पहने जाते थे. ऋग्वैदिक महिलाएं विभिन्न प्रकार से अपने आपको सजाती थीं. महिलाएं विभिन्न प्रकार से वेणियाँ भी गूँथती थीं.

आमोद-प्रमोद एवं मनोरंजन–ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल में आर्यों के घुड़दौड़ एवं रथदौड़ में भाग लेने को वर्णित किया गया है. ऋग्वेद में दौड़ के लिए 'आजि' तथा दौड़ के मैदान के लिए 'काष्ठा' शब्दों का प्रयोग हुआ है. सामूहिक नृत्य-

गान एवं आघटि नामक वाद्य यन्त्र का भी ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है. द्यूत (जुआ) खेली जाती थी, अक्षसूक्त में जुए से होने वाले दुष्परिणामों का भी जिक्र मिलता है. आर्य संगीत के स्वरों से पूरी तरह से परिचित थे तथा कर्करि, वाण, नाली, दुन्दुभि जैसे वाद्यों का वादन करते थे.

(F) **राजनीतिक वर्णन**–आर्यों की शासन एवं राजव्यवस्था का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है. ऋग्वैदिक काल में आर्य–अणु, द्रुव्य, यदु, तुर्वसु तथा पुरु इन पाँच जनों में वर्गीकृत थे. प्रजा को विश् या विशः कहा जाता था. ऋग्वैदिक काल में शासन का सर्वेसर्वा राजा होता था.

राजा–ऋग्वैदिक काल में शासन करने के लिए, जनता की बाह्य एवं आन्तरिक आक्रमणों से रक्षा करने के लिए राजा का निर्वाचित होता था. प्रजा से राजा 'कर' लेता था. राजा का सर्व प्रमुख अधिकारी पुरोहित होता था, जो धर्म-कर्म से लेकर युद्धादि में भी भाग लेता था. प्रजा के द्वारा राजा का निर्वाचन होता था. राजकार्य में सहयोग तथा राजा के ऊपर नियन्त्रण रखने के लिए प्रजा सभा एवं समिति का निर्वाचन करती थी. सभा का स्वरूप सीमित तथा समिति का विस्तृत होता था.

शस्त्रास्त्र एवं युद्ध कौशल–ऋग्वेद के अनुसार आर्य धनुष-वाण, तलवार छुरी, भाला का प्रयोग शस्त्रास्त्रों के रूप में करते थे. शरीर रक्षा के लिए दस्तानों, कवच, टोप इत्यादि का प्रयोग किया जाता था. युद्ध विधा में आर्य अत्यन्त कुशल थे. ऋग्वेद में दाशराज्ञ या दशराज्ञ युद्ध का वर्णन मिलता है, जिसमें इन्द्र ने राजा सुदास को सहयोग दिया था.

(G) **आर्थिक जीवन का वर्णन**–ऋग्वेद में आर्यों के आर्थिक जीवन का भी वर्णन मिलता है. ऋग्वैदिक काल में पशुपालन एवं कृषि प्रमुख व्यवसाय थे. कृषि में गेहूँ, धान, उड़द तथा तिल उगाए जाने का उल्लेख मिलता है. प्रमुख रूप से आर्य जौ की खेती करते थे. सिंचाई, हल और बैलों से खेत जोतने, पकी फसल को अलग करने का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है.

आर्य गाय, बैल, भेड़, बकरी इत्यादि पशुओं को मुख्य रूप से पालते थे गाय सम्माननीय पशु होता था जिसे मारा नहीं जाता था. कुत्तों एवं घोड़ों का पालन किया जाता था. पालतू के अतिरिक्त ऋग्वेद में हाथी, सिंह, वराह, वृक, ऋच्छ (रीछ) तथा बन्दर इत्यादि वन्य पशुओं का उल्लेख मिलता है.

ऋग्वेद में कपड़े बुनना, रथ निर्माण, चर्मकारी का कार्य, आभूषण बनाना, लकड़ी और धातुओं के सामान बनाना, हथियार बनाना, नाव का निर्माण एवं मकान बनाने जैसे उद्योगों एवं औद्योगिक वर्गों का विकास हो चुका था.

ऋग्वेद में सोने एवं अयस् खनिज का उपयोग आभूषणों के निर्माण के लिए किया जाता था. ऋग्वैदिक काल में व्यापार का माध्यम वस्तु-विनिमय था. तत्कालीन मुद्रा निष्क होती थी. ऋग्वेद में जलीय एवं स्थलीय दोनों व्यापार किए जाने के संकेत मिलते हैं.

(H) **वैज्ञानिक वर्णन**–ऋग्वेद में आर्यों की विज्ञान विषयक कौशलता का भी वर्णन मिलता है. आर्य औषधियों, जड़ी-बूटियों एवं प्रकृति से रोगियों की चिकित्सा करने में निपुणता एवं योग्यता रखते थे. ऋग्वैदिक काल का प्रमुख चिकित्सक अश्विनी था. ऋग्वेद में अश्विनी द्वारा विश्पला की टूटी हुई जाँघ को जोड़ने एवं श्रोण के घुटने ठीक करने तथा ऋजाश्व की आँखें बनाने का उल्लेख मिलता है.

(I) **ज्योतिषीय वर्णन**–ऋग्वेद में खगोलीय एवं ज्योतिषीय तथ्यों का वर्णन भी मिलता है. इसमें 5 ऋतुएं, 12 राशियों, 360 दिन, सूर्य ग्रहण, दक्षिणायन, उत्तरायण इत्यादि तथ्यों को समाहित किया गया है. ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 35 वें सूक्त में सूर्य द्वारा आकाश में विनाश करने, उदित होने के नियम एवं चन्द्रमा की स्थिति इत्यादि को वर्णित किया गया है. ऋग्वेद में 5059 योजन लम्बाई सूर्य के मार्ग की बताई गई है.

ऋग्वेद की पाँच शाखाएं–(1) शाकल, (2) वाष्कल, (3) आश्वलायन, (4) शांखायन, (5) मण्डूकायन

ऋग्वेद के ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद्–

(i) **ब्राह्मण**
  (1) ऐतरेय ब्राह्मण
  (2) शांखायन या कौषीतकी ब्राह्मण

(ii) **आरण्यक**
  (1) ऐतरेय आरण्यक
  (2) शांखायन या कौषीतकी आरण्यक

(iii) **उपनिषद्**
  (1) ऐतरेय
  (2) कौषीतकी

ऋग्वेद में वर्णित अनार्यों की प्रमुख जातियाँ–(1) अज, (2) यक्ष, (3) पिशाच, (4) किकट, (5) शिश्रु

वेदाङ्ग[1] –शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

ऋग्वेद में वर्णित भारतवर्ष के 5 खण्ड (ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसर)– (1) ध्रुवमध्य प्रतीची देश (मध्यदेश)

(2) प्राचीदिश (पूर्वी भाग)

(3) दक्षिणदिश (दक्षिणी भाग)

(4) प्रतीची दिश (पश्चिमी भाग)

(5) उदीची दिश (उत्तरी भाग)

ऋग्वेद में वर्णित दशराज्ञ युद्ध के प्रमुख तथ्य–

(1) इस युद्ध में 30 राजाओं ने भाग लिया था.

(2) भरत कबीले के राजा सुदास के नेतृत्व में परुष्णी (रावी) नदी के तट पर विश्वामित्र ने पंचजन–अणु, द्रह्यु, यदु, तुर्वसु, पुरु एवं अन्य के साथ यह युद्ध किया था.

(3) यह एक कबीलाई युद्ध था, जिसमें राजा सुदास की विजय हुई थी.

ऋग्वेद में वर्णित आर्यों के प्रमुख कबीले–(1) भारत (ब्रह्मावर्त क्षेत्र में)

(2) मत्स्य (जयपुर में)

(3) अनुस तथा द्रह्यु (पंजाब में)

(4) तुर्वसु (दक्षिण-पूर्व में)

(5) यदु (पश्चिम में)

(6) पुरु (सरस्वती नदी के आसपास)

देवताओं का वर्गीकरण–(1) **पृथ्वीवासी देवता**–पृथ्वी, सोम, अग्नि तथा बृहस्पति.

(2) **अन्तरिक्षवासी देवता**–इन्द्र, वरुण, मरुत, वायु तथा रुद्र

(3) **स्वर्गस्थ देवता**–सूर्य, उषा, सविता, अश्विन्, वरुण एवं मित्र.

ऋग्वेद में वर्णित शब्दों का प्रयोग– पिता – 335 बार, इन्द्र – 250 बार, जन – 275 बार, अग्नि – 200 बार, विश – 171 बार, विदथ – 122 बार, सोम – 144 बार, गाय – 176 बार, विष्णु – 100 बार, वरुण – 30 बार, गण – 46 बार, व्रज – 45 बार, सेना – 20 बार, ग्राम – 13 बार, वर्ण – 23 बार, ब्राह्मण – 15 बार, राष्ट्र – 10 बार, कृषि – 33 बार, व्रज – 45 बार

रुद्र, यमुना का 3 बार, समिति – 9 बार, सभा – 8 बार, क्षत्रिय – 9 बार, गण – 46 बार, बृहस्पति – 11 बार

पृथ्वी, राजा, गंगा, शूद्र, वैश्य का 1 बार प्रयोग हुआ है.

दशम् मण्डल की विषय-वस्तु–दशम् मण्डल के 95 सूक्तों में पुरुरवा, ऐल एवं उर्वसी का संवाद वर्णित है.

यजुर्वेद

वास्तविक नाम–यजुर्वेद

अन्य नाम–यजुष संहिता

यजुर्वेद का अर्थ–जिस वेद के मन्त्रों में पूजा-अर्चना का विधान वर्णित हो, यजुर्वेद कहलाता है.

मंत्रों का प्रकार–गद्यात्मक

मंत्र विषय–यज्ञ विधियों को सम्पन्न करना है.

शाखाएं–(i) 101 शाखाएं महर्षि पतञ्जलि के अनुसार, (ii) 107 शाखाएं स्कन्द पुराण के अनुसार, (iii) 86 शाखाएं चरण व्यूह के अनुसार, (iv) वर्तमान में 5 शाखाएं उपलब्ध हैं

यजुर्वेद के रूप–(i) शुक्ल यजुर्वेद या वाजसनेयी संहिता, (ii) कृष्ण यजुर्वेद या तैत्तिरीय संहिता

शुक्ल यजुर्वेद की शाखाएं[1]–(i) काण्व (ii) माध्यन्दिन

कृष्ण यजुर्वेद की शाखाएं[2]–(i) तैत्तिरीय (ii) मैत्रायणी (iii) काठक (iv) कठ

कृष्ण यजुर्वेद का सम्प्रदाय–ब्रह्म सम्प्रदाय

शुक्ल यजुर्वेद का सम्प्रदाय–आदित्य सम्प्रदाय

शुक्ल यजुर्वेद में मंत्रों की संख्या–1900 मन्त्र 40 अध्यायों में वर्णित हैं.

कृष्ण यजुर्वेद में मंत्रों की सख्या–18,000 मन्त्र सात काण्ड एवं अनेक प्रपाठकों में वर्णित हैं.

कृष्ण यजुर्वेद के उपलब्ध ब्राह्मण भाग[3]– (i) तैत्तिरीय ब्राह्मण (ii) तैत्तिरीय आरण्यक (iii) मैत्रायणी आरण्यक (iv) तैत्तिरीयोपनिषद् (v) मैत्रायणी उपनिषद् (vi) कठोपनिषद् (vii) श्वेताश्वतरोपनिषद्

शुक्ल यजुर्वेद के ब्राह्मण भाग[4]–(i) शतपथ ब्राह्मण (ii) वृहदारण्यक (iii) इशावास्योपनिषद्

सम्बन्धित पुरोहित–अर्ध्वयु कहलाता था.

वर्णित हविर्यज्ञ–(1) अग्न्याध्येय (2) अग्निहोत्र (3) दर्शपौर्णमास (4) अग्रहायन (5) चतुर्मास्य (6) निरूपशुवन्ध (7) सौत्रामणि

---

1 एवं 2–ये यजुर्वेद के दोनों रूपों की वर्तमान में उपलब्ध शाखाएं हैं.

3 एवं 4–यजुर्वेद के दोनों रूपों के ब्राह्मण भाग 'प्राचीन भारतस्य साहित्यिकः सांस्कृतिकश्चेतिहासः' से उद्धृत है.

सोम यज्ञ–(i) अग्निष्टोम (ii) ज्योतिष्टोम (iii) अत्याग्निष्टोम (iv) उक्थ्य (v) षांड्शित (vi) अतिरात्र (vii) आयतोरयार्म

यजुर्वेद का वर्ण्य विषय–(i) यजुर्वेद मूलतः कर्मकाण्ड प्रधान वेद है. इसमें विभिन्न यज्ञों के विधि-विधान एवं सम्पन्न कराने के लिए मन्त्र वर्णित हैं.

(ii) यजुर्वेद में दार्शनिक तत्वों को वर्णित किया गया है, विशेषकर पुरुष सूक्त में दार्शनिक तत्वों का गहन विवेचन किया गया है.

(iii) यजुर्वेद में लोक व्यवहार से पूर्ण उपदेश वर्णित किए गए हैं. 'वयं राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिताः' जैसी सूक्तियाँ यजुर्वेद में ही वर्णित हैं.

सामवेद

वास्तविक नाम–सामवेद

सामवेद का अर्थ–वह वेद जिसके मन्त्र यज्ञों के दौरान प्रत्यूह निवारण के लिए गाए जाते हैं या जिनमें देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कामना की गई होती है.

सामवेद की वर्तमान में उपलब्ध शाखाएं– (i) कौथुम (ii) जैमिनीय (iii) राणायणीय

सामवेद में वर्णित मन्त्रों का स्वरूप–(i) गेय ऋचाएं (आर्चिक कहा जाता है.), (ii) गेय यजुष् (स्तोम कहा जाता है.)

सर्वाधिक प्रचलित संहिता–राणायणीय संहिता

राणायणीय संहिता के भाग–(i) पूर्वार्चिक (ii) उत्तरार्चिक

पूर्वार्चिक में वर्ण्य विषय–(i) ग्राम्य एवं अरण्यगीत वर्णित है.

उत्तरार्चिक में वर्ण्य विषय–(i) उहगीत एवं उह्यगीत वर्णित है.

सामवेद के कुल मंत्रों की संख्या–1875 कुल मन्त्र (1504 ऋग्वेद से उद्धृत हैं, 267 मंत्र पुनरुक्त हैं. 99 मंत्र नए हैं जिनमें 5 मंत्र पुनरुक्त हैं)

सामवेद की कुल शाखाएं–लगभग 100 शाखाओं का उल्लेख मिलता है.

सामवेद की गान प्रक्रिया के अंग–(i) हिंकार (ii) प्रस्ताव (iii) उदगीथ (iv) प्रतिहार (v) निधान

सामवेद के गान की लय के नाम–(i) क्रुष्ट (ii) प्रथमा (iii) द्वितीया (iv) चतुर्थी (v) मन्द्र (vi) अतिस्वार्थ

पूर्वार्चिक से सम्बद्ध तथ्य–(i) पूर्वार्चिक में 6 प्रपाठक हैं जिसमें पहले प्रपाठक में दो खण्ड हैं. पहले प्रपाठक को आग्नेय काण्ड भी कहते हैं, जिसमें अग्नि की स्तुति की गई है.

(ii) दूसरे से चौथे प्रपाठक को ऐन्द्र पर्व कहते हैं जिनमें इन्द्र की स्तुति से सम्बन्धित मन्त्र वर्णित हैं.

(iii) पाँचवे प्रपाठक को पवमान कहा जाता है जिसमें सोम के लिए स्तुतियाँ की गई हैं.

(iv) छठे प्रपाठक आरण्यक पर्व कहलाता है. इन 6 प्रपाठकों में कुल 650 मन्त्र हैं. 5 प्रपाठकों में ग्राम गान एवं छठे प्रपाठक में अरण्यगान वर्णित हैं.

उत्तरार्चिक से सम्बद्ध तथ्य–इसमें 9 प्रपाठक हैं. पहले पाँच प्रपाठकों के दो-दो भाग हैं तथा शेष चार प्रपाठकों के तीन-तीन भाग हैं. इसमें कुल 1225 मन्त्र हैं तथा उत्तरार्चिक को प्रगाथ नाम से भी जाना जाता है.

सामवेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ–(i) ताण्ड्य ब्राह्मण (ii) षड्विंश ब्राह्मण (iii) जैमिनीय ब्राह्मण

सामवेद से सम्बन्धित आरण्यक ग्रन्थ–(i) जैमिनीय आरण्यक

सामवेद से सम्बन्धित उपनिषद् ग्रन्थ–(i) छन्दोग्य उपनिषद् (ii) केनोपनिषद्

सामवेद में वर्ण्य विषय–(1) सामवेद में मुख्य रूप से संगीत वर्णित किया गया है. संगीत के सातों स्वर सामवेद में सन्निहित हैं.

(2) सामवेद में चार तरह का संगीत है–(i) ग्राम गान (ii) अरण्य गान (iii) ऊहगान (iv) ऊह्यगान

(3) सामवेद के पूर्वार्चिक के प्रथम प्रपाठक से पाँचवे प्रपाठक तक की ऋचाएं ग्राम गान कहलाती हैं. छठे प्रपाठक की ऋचाओं को अरण्यगान कहा जाता है.

(4) सामवेद के उत्तरार्चिक में वर्णित ऋचाएं ऊहगान एवं ऊह्यगान कहलाती हैं.

(5) सामवेद में संगीत को देवताओं की उपासना का साधन माना गया है इसलिए उपासना सामवेद का प्रमुख तत्व है.

(6) सामवेद के पूर्वार्चिक में इन्द्र, सोम आदि से सम्बद्ध विषय वस्तु हैं, जबकि उत्तरा-र्चिक में दशरात्र आदि यज्ञों का विवेचन किया गया है.

अथर्ववेद

वास्तविक नाम–अथर्ववेद[1]

अन्य नाम–ब्रह्मवेद, अंगिरावेद, आंगिरस, भृग्वङ्गिरसवेद

पुरोहित–ब्रह्मा होता है.

विषय दृष्टि से विभाग–(i) अथर्वन (ii) अंगिरस

अथर्वन में वर्णित मन्त्र–जादू-टोना, मंत्र-तंत्र एवं औषधि प्रतिपादक मन्त्र

अंगिरस में वर्णित मन्त्र–मारण एवं उच्चाटन विषयक मन्त्र

अथर्ववेद के मन्त्रों की संज्ञा–ब्रह्मणि

अथर्ववेद की शाखाएं–9 शाखाएं हैं.

वर्तमान में उपलब्ध शाखाएं–(i) पिप्पलाद संहिता, (ii) शौनक संहिता

अथर्ववेद में कुल मन्त्र–5859 कुल मन्त्र हैं, जो 20 काण्डों, 34 प्रपाठकों, 111 अनुवाकों, 731 सूक्तों में वर्णित हैं.

अथर्ववेद के ब्राह्मण भाग (वर्तमान में उप-लब्ध)–(i) गोपथ ब्राह्मण, (ii) मुण्डकोप-निषद्, (iii) माण्डूक्योपनिषद्, (iv) प्रश्नोपनिषद्

अथर्ववेद में वर्ण्य विषय–(1) अथर्ववेद में वर्णित विषय की दृष्टि से अथर्ववेद में निम्नलिखित से सम्बन्धित सूक्त हैं–

(i) भैषज्य (ii) आयु (iii) पौष्टिकता (iv) प्रायश्चित (v) स्त्रीकर्म (vi) राजकर्म (vii) ब्राह्मण.

(2) भैषज्य से सम्बन्धित अथर्ववेद के सूक्तों में आयुर्विज्ञान से सम्बन्धित मन्त्र हैं. इन सूक्तों में विविध रोगों के लक्षण, उनकी चिकित्सा विधि, औषधि का वर्णन किया गया है. खाँसी, ज्वर, राजयक्ष्मा का विस्तार से वर्णन मिलता है.

(3) आयु से सम्बन्धित सूक्तों में दीर्घायु के लाभ के लिए उपयोगी मन्त्रों का संग्रह मिलता है.

(4) पौष्टिकता से सम्बद्ध सूक्तों में घर-निर्माण, कृषि कार्य, व्यापार आदि से सम्बन्धित मन्त्रों का संग्रह मिलता है.

(5) प्रायश्चित से जुड़े सूक्तों में जाने-अनजाने में हुए अपराधों के लिए प्रायश्चित करने के लिए उपयोगी मन्त्रों का संग्रह है.

(6) स्त्रीकर्म से सम्बन्धित सूक्तों में प्रेम, विवाह, वशीकरण से सम्बद्ध मन्त्र हैं, जिनका उपयोग स्त्रियाँ पति के प्रेम को पाने के लिए या अन्य किसी को वश में करने, मारण मोहन, उच्चाटन के लिए करती हैं.

(7) राजकर्म से सम्बद्ध सूक्तों में शासन व्यवस्था, युद्ध आदि विषयों को समाहित किया गया है. इन सूक्तों में मातृभूमि के प्रति भक्ति भावना का प्रखर चित्रण हुआ है. युद्धादि विषयों के अधिक समाहित होने के कारण अथर्ववेद को क्षत्रवेद भी कहा जाता है.

(8) ब्राह्मण्य सूक्तों में दार्शनिक तत्वों की गहन विवेचना की गई है. इनमें लौकिक एवं अलौकिक तत्वों का उत्कृष्टतम ढंग से वर्णन किया गया है.

तीनों वेदों से सम्बद्ध तथ्य

रचनाकाल–1000 से 500 ई. पू.

रचना स्थल–कुरू पांचाल क्षेत्र

तत्कालीन व्यवस्थाएं–**(1) राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था**–(1) उस वैदिक काल में ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन हो गया था. अधिकारियों की संख्या बढ़ा दी गई थी. शतपथ ब्राह्मण में उत्तर वैदिक काल के निम्नलिखित 12 रत्निनों का वर्णन किया गया है–

(i) सेनानी (ii) पुरोहित (iii) युवराज (iv) महिषी (रानी) (v) सूत (vi) ग्रामिणी (vii) क्षतृ या प्रतिहारी (viii) संगृहित्री (ix) भागदुध (x) अक्षवाय (xi) पालागल (xii) गोविकर्तन.

ऋग्वैदिक काल की अपेक्षा इस समय 'विशपति' नामक अधिकारी की शक्ति में कमी तथा ग्रामिणी नामक अधिकारी की शक्ति में वृद्धि कर दी गई थी.

(2) इस काल में छोटे-छोटे कबीलाई राज्यों के बजाय क्षेत्रीय राज्यों का निर्माण हुआ था.

(3) उत्तर वैदिक काल में राजा का पद वंशानुगत हो गया था. अधिराज, राजाधिराज, सम्राट, विराट, एकराट्, सार्वभौम इत्यादि उपाधियाँ धारण करना राजाओं ने प्रारम्भ कर दिया था.

(4) सभा, समिति, विदथ इत्यादि कबीलाई संस्थाएं महत्वहीन हो गई थीं, उनके स्थान पर रत्निन एवं राजकृति आ गए थे.

(2) सामाजिक व्यवस्था–(1) उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित न रहकर जन्म पर आधारित हो गई थी. शूद्रों की दशा इस काल में बदतर हो गई थी. पुलिन्द, आन्ध्र, पुण्ड्र शबर, व्रात्य एवं निषाद को वर्ण व्यवस्था से अलग रखा गया था.

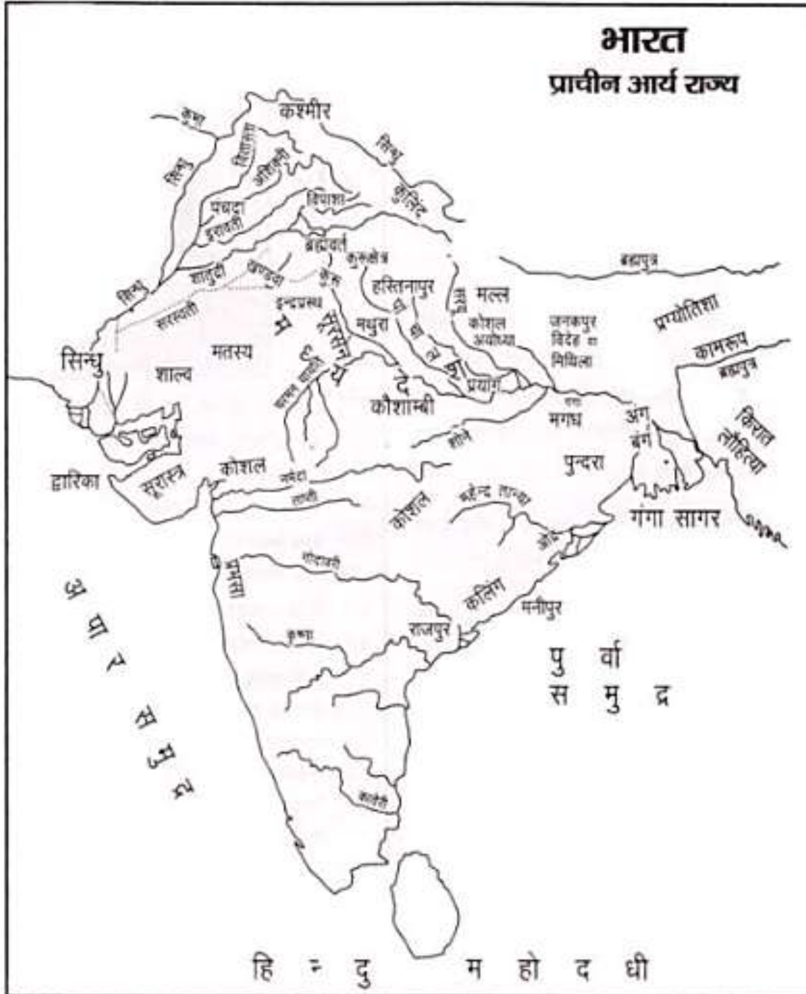
(2) उत्तर वैदिक काल में पितृसत्तात्मक तत्व प्रबल हो गया था, कुछ हद तक पुत्रियों का जन्म अभिशाप माना जाने लगा था.

(3) साधारणतया एकात्मक विवाह होते थे, लेकिन उच्च वर्णों में बहु-विवाह का प्रचलन था. नियोग एवं विधवा विवाह का प्रचलन प्रारम्भ हो गया था. स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा होती थी पर उन पर नियन्त्रण रखा जाता था.

(4) इस काल में आयु का निर्धारण 100 वर्ष कर जीवन को चार आश्रमों–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में विभाजित कर दिया था.

---

1 अथर्वा नामक ऋषि के नाम पर अथर्ववेद का नामकरण हुआ था.



(5) शूद्र एवं स्त्रियों के अतिरिक्त उपनयन संस्कार अनिवार्य हो गया था. शिक्षा की व्यवस्था इस काल में बेहतर हो गई थी.

(3) आर्थिक व्यवस्था–(1) उत्तर वैदिक काल में लोग घुमंतु जीवन को त्यागकर स्थायी रूप से ग्रामीण बस्तियों में रहने लगे थे.

(2) इस काल में पशुपालन एवं कृषि आर्थिक जीवन का मूलाधार बन गया था. तथ्यों के आधार पर कहा जाता है कि धातु की चोंच वाले फाल का आविष्कार हो चुका था. चावल, गेहूँ जौ, गन्ने एवं दलहन, शाक-सब्जी फसल के रूप में उगाई जाती थी.

(3) वाजसनेयी संहिता के अनुसार उत्तर वैदिक काल में निम्नलिखित व्यवसायी वर्ग का आविर्भाव हो चुका था–(i) मछुआरा (ii) सारथी (iii) स्वर्णकार (iv) मणिकार (v) रस्सी बुनने वाला (vi) कुम्भकार (vii) रंगसाज (viii) धोबी (ix) लुहार (x) जुलाहा (xi) टोकरी बनाने वाला (xii) चर्मकार (xiii) बढ़ई इत्यादि.

(4) जल एवं स्थल मार्गों से व्यापार होने का जिक्र मिलता है. कर्ज देने एवं सूद लेने का प्रचलन हो चुका था.

(4) धार्मिक व्यवस्था–(1) उत्तर वैदिक काल में धार्मिक जीवन पर पुरोहितों का वर्चस्व हो गया था. ऋग्वेदकालीन प्रमुख देवताओं के स्थान पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने स्थान ले लिया था. इनके सहायक देवता के रूप में यक्ष, गन्धर्व, दिग्पाल आदि थे. उषा एवं अदिति के स्थान पर यक्षिणि एवं अप्सराएं आ गई थीं.

(2) ब्राह्मण एवं क्षत्रिय प्रभावी वर्ग बन गए थे. तप और भक्ति का स्थान इस काल में यज्ञ और बलि ने ले लिया था. यज्ञ सम्पादन के लिए पुरोहित आवश्यक हो गए थे.

(3) पुरोहित यज्ञ सम्पादित करने के बदले धन, वस्त्र, सामान लेने लगे थे. पुरोहितों को राजा का प्रमुख सलाहकार बनाया जाने लगा था.

महाभारत

1. **वास्तविक नाम**–महाभारत
2. **प्रारम्भिक नाम**–जय, भारत
3. **अन्य नाम**–कार्ष्ण वेद,[1] पंचमवेद,[2] शत-साहस्री संहिता
4. **रचनाकार**–वेद व्यास, (कृष्ण द्वैपायन)
5. **रचनाकार के सम्बन्ध में विभिन्न मत**–

(i) डेनमार्क के डॉ. सोर्यनसेन, जोजफ डालमान, गजानन माधव मुक्तिबोध एवं अन्य प्रख्यात इतिहासकारों के अनुसार महाभारत की रचना एक ही व्यक्ति ने की थी और वे वेद व्यास या कृष्णद्वैपायन थे, जिन्होंने इस महाकाव्य का प्रणयन किया था.

(ii) दुर्गाभागवत, प्रो. मैक्समूलर, प्रो. ई. वाशवर्न हॉपकिन्स महाभारत का एक रचनाकार होना नहीं स्वीकारते.

(iii) प्रो. मैक्समूलर के शब्दों में–"महाभारत किसी एक कवि की कृति कभी नहीं हो सकती और रचयिता अवश्य मनुप्रोक्त धर्म के पक्के अनुयायी ब्राह्मण रहे होंगे."

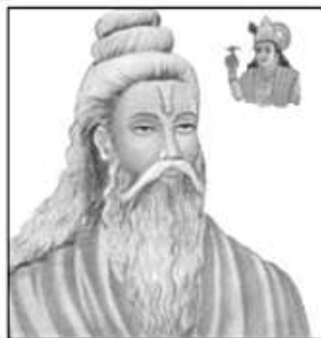
(iv) प्रो. ई. वाशवर्न हॉपकिन्स के शब्दों में–

"The epic was composed not by any person nor even by one generation, but by several; it is primarily the story of an historic incident told by the glorifier of kings, the domestic priest & the bard, who are often one."

(v) दुर्गाभागवत के शब्दों में–

"महाभारत, स्पष्ट ही है. एक व्यक्ति की कृति नहीं है. व्यास ने 'जय' की रचना की. वैशम्पायन ने 'भारत' की और 'सौति' ने 'महाभारत', यह सर्वश्रुत है. व्यास ने 'जय' के रूप में एक आदर्श निर्माण कर जो विशाल पट एवं परिमाणों को रचा, कलाकृति को जो शिल्प दिया, वैशम्पायन और सौति ने उत्तरोत्तर उन्हीं का विस्तार किया और समापन किया."

महाभारत के रचनाकार वेदव्यास : परिचय



1. **वास्तविक ना म**–द्वैपायन (कृष्ण द्वैपायन)
2. **प्रसिद्ध नाम**–वेदव्यास[3] (वेदों के विभाग या विस्तार करने के कारण)
3. **अन्य नाम**–बादरायण
4. **जन्म स्थल**–(i) यमुना गर्भस्थ द्वीप में जन्म हुआ
   (ii) [4]बसाना गाँव (करनाल) में जन्म हुआ.
5. **पिता**–भगवान पाराशर (पराशर)
6. **माता**–सत्यवती (धीवर कन्या)
7. **उल्लेखनीय तथ्य**–(i) बहुत छोटी उम्र में माँ से आज्ञा लेकर तपस्या करने वन में चले गए थे.
   (ii) भागवत पुराण में वेदव्यास को विष्णु का सत्रहवाँ अवतार बतलाया गया है.
   (iii) [5]महाभारत के शान्ति पर्व के 334वें अध्याय के 9वें श्लोक में वेदव्यास को नरनारायण स्वरूप बतलाया गया है.
   (iv) वेदों के विभाग करने, विस्तार करने, मीमांसा करने, महाभारत श्रीमद्भागवतपुराण इत्यादि ग्रन्थों के लेखन का श्रेय वेदव्यास को ही जाता है.
8. **व्यास के प्रमुख शिष्य**–(i) सुमन्तु, (ii) जैमिनी, (iii) पैल, (iv) वैशम्पायन, (v) शुकदेव
9. **प्रमुख समुद्रभूत व्यास**–(i) स्वयम्भू, (ii) मनु, (iii) उशना, (iv) बृहस्पति, (v) सवितृ, (vi) यम, (vii) इन्द्र, (viii) वशिष्ठ, (ix) सारस्वत, (x) त्रिधामन्, (xi) ऋषभ, (xii) सुतेजा, (xiii) अन्तरिक्ष, (xiv) सुचक्षुः (xv) सम्यारुणि, (xvi) धनञ्जय, (xvii) कृतञ्जय, (xviii) ऋतुञ्जय, (xix) भरद्वाज, (xx) गौतम, (xxi) उत्तम, (xxii) वाचश्रवस, (xxiii) तृणबिन्दु, (xxiv) वाल्मिकी, (xxv) शक्ति, (xxvi) पाराशर (xxvii) जात कर्ण, (xxviii) द्वैपायन.

---

1. आदिपर्व के प्रथम अध्याय (श्लोक संख्या 205) तथा स्वर्गारोहण पर्व के 5वें अध्याय (श्लोक संख्या 41) में कार्ष्ण वेद महाभारत को कहा गया है.
2. भविष्य महापुराण में इसे पंचमवेद कहा गया है.
3. विन्यास वेदाचस्माच्च तस्माद्व्यास इति स्मृतः (73, आदिपर्व, 57वाँ अध्याय)
4. अमृता प्रीतम ने नौ फूलों की व्यथा, पृष्ठ 11 पर महर्षि वेदव्यास का जन्मस्थल बसाना (करनाल) है, ऐसा उल्लिखित किया है.
5. "कृष्ण द्वैपायनं व्यासं विद्धिनारायणं प्रभुम् । को ह्यन्यः पुरुषधाग्र महाभारत कृद्भवेत् ॥" –9 श्लोक (334वाँ अध्याय शांतिपर्व)

(vi) मोनियर विलियम्स के शब्दों में—

"It seems to have passed through several stages of construction and reconstruction, untill finally arranged and reduced to orderly written shape by a Brahman to Brahmans, whose names have been perposely concealed, because the work is held to be too sacred to have been composed by any human author, and is therefore attributed to the divine sage Vyas."

(vii) गजानन माधव मुक्तिवोध के शब्दों में—

"आज महाभारत और रामायण जिस रूप में हमें प्राप्त होते हैं, वह रूप ठीक इन्हीं दिनों बना. दोनों महाकाव्य इस युग के पहले भी थे; उनमें निरन्तर वृद्धि होती रही. शुंग और सातवाहन राजाओं के समय में उनमें वहुत कुछ वृद्धि हुई. फलतः दोनों ग्रन्थों के वहुत से अंश इस काल की अवस्था पर प्रकाश डालते हैं.

6. **रचनाकाल—**

(i) महाभारत का प्रारम्भिक रचनाकाल 800 ई. पू. माना जाता है और अंतिम संकलन गुप्तकाल तक माना जाता है.

(ii) महाभारत के अन्तःसाक्ष्य[1] के आधार पर महाभारत का प्रणयन मात्र तीन वर्षों में पूरा हो गया था.

(iii) ऐहोल अभिलेख के अनुसार महाभारत का कालक्रम 3839 ई. पू. माना गया है.

(iv) भारतीय परम्परा की गणना के अनुसार इसका रचनाकाल 3000 ई. पू. माना गया है.

7. **महाभारत युद्ध का कालक्रम—**

(i) अधिकांश साहित्यकार विभिन्न तथ्यों के आधार पर महाभारत युद्ध की संभावित तिथि 950 ई. पू. मानते हैं.

(ii) जोजफ डालमान महाभारत का रचना-काल ईसा पूर्व पाँचवीं और छठी शताब्दी से पूर्व होना माना है. वह इस काल में महाभारत की रचना होना स्वीकार करते हैं.

(iii) एफ. ई. पार्जीटर ने महाभारत के युद्ध का समय 950 ई. पू. के लगभग माना है.[2]

(iv) अर्थर मैकडीनेल एवं डॉ. विंसेंट स्मिथ महाभारत के युद्ध का कालक्रम 1000 ई. पू. मानते हैं.

(v) वेलण्डी अण्यर के अनुसार महाभारत नामक युद्ध का प्रारम्भ 14 अक्टूवर, 1194 ई. पू. को हुआ और अन्त 31 अक्टूवर, 1194 ई. पू. को हुआ.

(vi) डॉ. बी. पी. सिन्हा के मतानुसार यह युद्ध 1200 और 1000 के बीच के किसी काल में हुआ था.

(vii) इलियट एवं डाउसन ज्योतिषीय तथ्यों के आधार पर ईसा से 1200 वर्ष पहले महाभारत का कालक्रम मानते हैं.

(viii) डॉ. रतिलाल मेहता महाभारत युद्ध का कालक्रम ई. पू. 12वीं शताब्दी मानते हैं.

(ix) जर्मन विद्वान् अलब्रेट वेवर के मतानुसार महाभारत का युद्ध पाणिनी के वाद हुआ था.

(x) डॉ. दत्त महाभारत के युद्ध का कालक्रम 1250 ई. पू. मानते हैं.

(xi) एच. एच. विल्सन के अनुसार महाभारत का युद्ध 1370 ई. पू. में घटित हुआ था.

(xii) लोकमान्य तिलक ने 1400 ई. पू. महाभारत युद्ध का कालक्रम माना है.

(xiii) ए. एस. अल्तेकर, पुशालकर, आर. एल. सिंह ने महाभारत के युद्ध का कालक्रम 1400 ई. पू. माना है.

(xiv) सत्यकेतु विद्यालंकार, काशी प्रसाद जायस-वाल के अनुसार महाभारत युद्ध का काल-क्रम 1424 ई. पू. माना गया है.

(xv) एलेक्जेण्डर कनिंघम ने महाभारत युद्ध का कालक्रम 1426 ई. पू. निर्धारित किया है.

(xvi) डॉ. एलिफिस्टन के मतानुसार महाभारत का युद्ध 1450 ई. पू. हुआ था.

(xvii) पाश्चात्य विद्वानों ने महाभारत का कालक्रम 1500 ई. पू. निश्चित किया है.

(xviii) पं. वलदेव उपाध्याय के मतानुसार महा-भारत युद्ध 1506 ई. पू. में लड़ा गया था.

(xix) 'कल्हण की राजतरंगिणी' में महाभारत के युद्ध का काल 2448 ई. पू. माना गया है.

(xx) वराहमिहिर ने महाभारत के युद्ध का कालक्रम 2604 ई. पू. माना है.

(xxi) 'सर्च फार द इयर ऑफ भारतकार' में श्रीराम साठे ने महाभारत युद्ध का कालक्रम 1876 ई. पू. माना है.

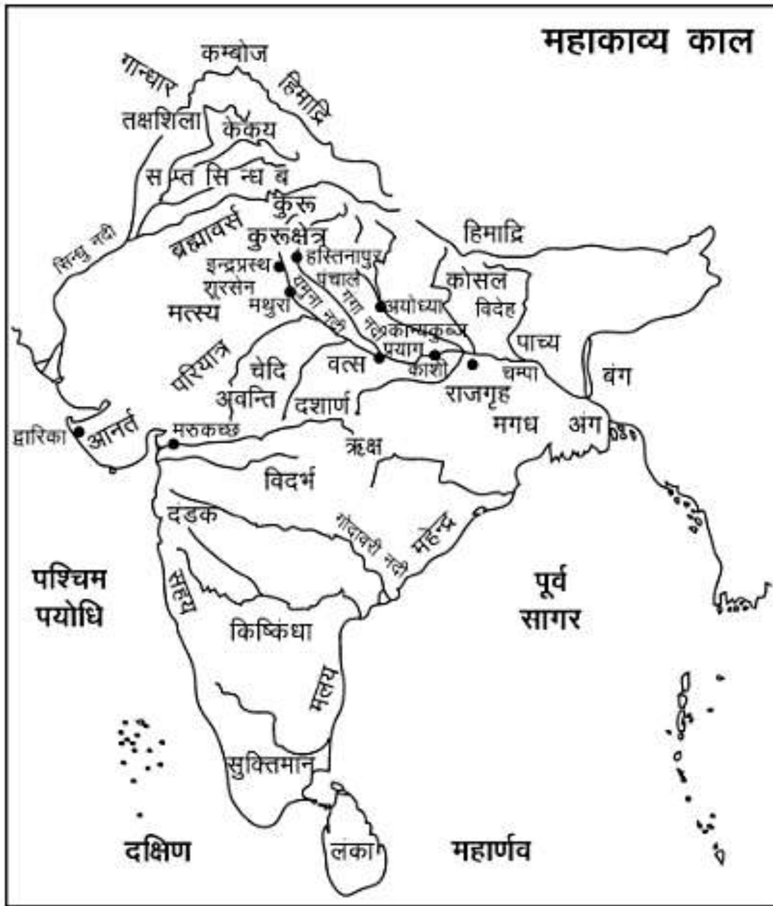
(xxii) पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने महाभारत युद्ध का कालक्रम 1400 ई. पू. माना है.

(xxiii) भारतीय ज्योतिष गणना के अनुसार महाभारत युद्ध की तिथि 3101 ई.पू. मानी गयी है.

---

1 त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनिः ।
महाभाराताख्यानं कृतवानिदमुक्तमम् —आदिपुराण 56वाँ अध्याय, 32वाँ श्लोक,

2 Discovery of India : Pt. J. L. Nehru, Page 112



8. **महाभारत के विभिन्न नामों के रखे जाने का कारण एवं आशय—**

(1) **महाभारत नामकरण :**

(a) [1]महाभारत के आदि पर्व 56वाँ अध्याय के श्लोक 30 के अनुसार भारतवंशीय पुरुषों के महान् कृत्यों को समाहित करने के कारण इसका नाम महाभारत पड़ा.

(b) विभिन्न तथ्यों के अनुसार विशालतम ग्रन्थ होने के कारण प्रत्यय 'महा' एवं भरतवंशीय पुरुषों से सम्बन्धित होने के कारण महाभारत नाम पड़ा.

(2) **जय नामकरण :**

(a) [2]पाण्डवों के विजय वर्णन के कारण महाभारत का प्रारम्भिक नाम 'जय' था.

(b) [3]महाभारत में 18 का बारम्बार प्रयोग होने के कारण विद्वान् 'जय' नामकरण हुआ मानते हैं. समरसार में 'ज' अक्षर 8 का एवं य अक्षर 1 का बोधक है 'अंकानाम् वामतो गतिः' इस आशय से 'जय' का तात्पर्य 18 हुआ. उल्लेखनीय है कि महाभारत में '18' अंक का कई बार प्रयोग हुआ है. महाभारत में मुख्य पर्व 18 हैं, दोनों पक्षों की अक्षौहिणी सेना की संख्या 18 थी, महाभारत का युद्ध 18 दिन चला था, महाभारत के युद्ध होने के बाद धृतराष्ट्र 18 वर्ष तक जीते रहे थे, उसके बाद युधिष्ठिर ने 18 वर्ष तक शासन किया था, महाभारत में मंगलाचरण श्लोक की

---

1. तन्महाभारताख्यानं श्रुत्वैव प्रविसीयते । भारतानां महज्जन्म महाभारतमुच्यते (आदिपर्व 56वाँ अध्याय, 30)
2. पाण्डवैर्निर्जिताः सर्वे कोरवा युद्धदुर्मदाः । अष्टादशे च दिवसे पाण्डवानां जयोऽभवत् । —प्रतिसर्ग-पर्वः 3·1·5.
3. कादयोऽङ्काष्टादयोऽङ्काः पाद्याः पञ्च प्रकीर्तिताः ।
यादयोऽष्टी त्रनौ पूर्णे विज्ञेयाः स्वरशास्त्रकेः ॥ —'समरसार'

आवृत्ति 18 बार हुई और श्रीमद्भगवद्गीता के अध्यायों की संख्या भी 18 थी. अतः जय नामकरण करना अर्थसूचक लगता है.

9. **महाभारत के विभाग**[1] :

महाभारत की सम्पूर्ण कथा अद्वितीय काव्य-शैली में 18 पर्वों में समाहित है. महाभारत के 18 पर्व निम्नलिखित हैं—

(i) **आदिपर्व**— इसमें प्रथम से 19 अध्यायों में महाभारत की प्रारम्भिक कथावस्तु समाहित है.

(ii) **सभा पर्व**—इसमें 20 से 28 अध्यायों में राज्य, सभाओं इत्यादि पर केन्द्रित कथावस्तु महाभारत में वर्णित है.

(iii) **अरण्य पर्व**— इसमें 29 से 44 अध्यायों में महाभारत में निर्वासन की विषयवस्तु को समाहित किया गया है.

(iv) **विराट पर्व**—इसमें 45 से 48 अध्याय तक भारतवंशीय राजाओं के अन्तर्वलह को मुख्य कथावस्तु वनाकर महाभारत में समाहित किया गया है.

(v) **उद्योग पर्व**—इस पर्व में 49 से 60 अध्याय तक विभिन्न योजनाएं क्रियान्वित की विषय-वस्तु को महाभारत में समाहित किया गया है.

(vi) **भीष्म पर्व**— इसमें 61 से 64 अध्याय तक महाभारत कें युद्ध की प्रारम्भिक विषयवस्तु का चित्रण है.

(vii) **द्रोण पर्व**— इसमें 65 से 72 अध्याय तक महाभारत युद्ध का वर्णन है.

(viii) **कर्ण पर्व**—इसमें मात्र एक 73वें अध्याय में युद्ध का वर्णन है.

(ix) **शल्य पर्व**— इसमें 74 से 77 अध्याय तक महाभारत के युद्ध का वर्णन है.

(x) **सौप्तिक पर्व**— इसमें 78 एवं 79 अध्याय में जनसंहार का चित्रण किया गया है.

(xi) **स्त्री पर्व**— इसमें 79 से 83 अध्याय तक जनसंहार के उपरान्त होने वाले क्रन्दन एवं अन्य विषयवस्तु का वर्णन किया गया है.

(xii) **शान्ति पर्व**—इसमें 84 से 86 अध्याय तक की विषयवस्तु में समाहित इस पर्व में शान्तिजन्य तथ्यों को उल्लिखित किया गया है.

(xiii) **अनुशासन पर्व**—इसमें 87 से 88 अध्याय तक विधिजन्य तथ्यों को समाहित किया गया है.

(xiv) **अश्वमेधिक पर्व**—इसमें मात्र एक 89 अध्याय में पूर्व घटित तथ्यों के सामान्यीकरण का उल्लेख हुआ है.

(xv) **आश्रमवासिक पर्व**—इसमें 90 से 92 तक अध्याय में वैराग्य प्रवृत्ति का चित्रण हुआ है.

(xvi) **मौषल पर्व**— इसमें मात्र 93वें अध्याय में वैनाशिक तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है.

(xvii) **महाप्रस्थानिक पर्व**— इसमें 94वें अध्याय में महाभारत की विषयवस्तु को समाप्ति की ओर अग्रसर किया है.

(xviii) **स्वर्गारोहण पर्व**—इसमें 95वें अध्याय में महाभारत की कथावस्तु समाप्त हो जाती है और भारत-वंशीय स्वर्ग के लिए प्रस्थान कर जाते हैं.

10. **महाभारत लेखन का विकास क्रम**—

(i) प्रारम्भ में 8800 पद्य थे, जिसका नामकरण जय था. कालान्तर में पद्यों की संख्या 24,000 हो गई और महाभारत का नामकरण 'भरत' या 'भारत' हो गया. अंतिम संकलन के दौरान महाभारत में पद्यों की संख्या 1,00000 हो गई. जिसे महाभारत या शतसहस्री संहिता कहा गया.

11. **वर्तमान में महाभारत में उपलब्ध पद्य संख्या**—

(i) वर्तमान में उपलब्ध महाभारत में श्लोकों की संख्या डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार 82,136 है.

(ii) गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित महाभारत में 86,600 श्लोक हैं. दक्षिणात्य पाठ के 6,584 एवं उवाचों की संख्या 7,033 मिलाकर महाभारत के श्लोकों की कुल संख्या 100217 हो गई है.

(iii) पुणे स्थित भाण्डारकर प्राच्य विद्या संशोधन मन्दिर द्वारा प्रकाशित महाभारत में 1955 अध्याय एवं 73,820 श्लोक हैं. इसमें महाभारत के खिल[2] हरिवंशपुराण के 118 अध्याय एवं 6073 श्लोकों को मिलाकर कुल श्लोक संख्या 79,893 हो गई है.

(iv) महाभारत के आदिपर्व में 56वें अध्याय में[3] इदं शतसहस्त्रं श्लोकानाम्' कहकर महाभारत में 1 लाख श्लोक होने की पुष्टि करता है.

(v) महाभारत के मत्स्यपुराण में उल्लिखित लक्षैणेकेनयत् प्रोक्तम्' एवं शान्तिपर्व में उल्लिखित 'कृतं शतसहस्त्रं हि श्लोकानामिदमुत्तमम्' से महाभारत में एक लाख श्लोक होने की पुष्टि होती है.

---

1 Samsad Companion to the Mahabharata page 1 to 3

2 हरिवंशपुराण को महाभारत का खिल (उपसंहार) कहा गया है. ऐसा महाभारत में उल्लिखित है.

3 इदं शतसहस्रं हि श्लोकानां पुण्यकर्मणाम् ।
सत्यवत्यात्मजेनेह व्याख्यातममितौजसा ॥ —आदिपर्व 56 अध्याय

12. **महाभारत से उद्धृत आध्यात्मिक पंचरत्न—**
(i) श्रीमद्भगवद्गीता
(ii) विष्णु सहस्त्रनाम
(iii) अनुस्मृति (अनुगीता)
(iv) भीष्मस्तवराज
(v) गजेन्द्र मोक्ष

13. **महाभारत में समाहित मूल विषय (कौरव-पाण्डवों के युद्ध) के सन्दर्भ में विभिन्न मत—**
(i) अधिकांश इतिहासकारों के अनुसार 950 ई. पू. कौरव एवं पाण्डवों के मध्य हुए 'भरत युद्ध' का विस्तृत लेखन महाभारत में किया गया है.
(ii) प्रसिद्ध विद्वान् 'अर्थर ए. मैकडौनेल कौरव-पाण्डवों के युद्ध को प्राचीनतम् कुरू-पांचाल युद्ध का परिवर्तित रूप बतलाते हुए लिखते हैं—

"There can be little doubt that the original Kernal of the epic has as a historical background an ancient conflict between the two neighbouring tribes of the Kurus & Panchals, who finally coalesced into a single people."[1]

(iii) डॉ. ग्रियर्सन के मतानुसार—

"पांचाल देश के राजा द्रुपद ने द्रोणाचार्य का अपमान किया था, जिन्होंने कौरवों के यहाँ शरण ली थी. उसी अपमान का बदला चुकाने के लिए कौरव-पांचालों में युद्ध हुआ था. इस तरह 'महाभारत' कौरव-पाण्डवों का नहीं, कौरव-पांचालों का युद्ध था."

(iv) चिन्तामणि विनायक वैद्य भी कौरव-पाण्डवों के बजाय कौरव-पांचालों का युद्ध कहते हुए लिखते हैं—

"But there is no reason to doubt that he (Vyas) wrote a history of the war between the Kurus and the Panchalas from personal knowledge."[2]

14. **महाभारत रचना के रूप में—**
(i) डॉ. राजाराम जैन ने महाभारत की विशालता और उत्कृष्टतम स्वरूप को दृष्टि में रखकर इसे 'ग्रन्थराज' कहा है.
(ii) अनेक विद्वानों ने महाभारत को 'प्राचीन भारत का विश्वकोष' माना है.
(iii) चाणक्य ने महाभारत को 'स्मृति' माना है.
(iv) पाश्चात्य विद्वानों ने महाभारत को प्राचीन भागवतों का धर्मग्रन्थ माना है.
(v) आदिपर्व के प्रथम अध्याय के 61वें श्लोक (गीता प्रेस संस्करण)[3] में तथा हरिवंश-पुराण (पूना संस्करण) के भविष्य पर्व में 115वें अध्याय के 43वें श्लोक में महाभारत को महाकाव्य कहा गया है.[4]
(vi) महाभारत के आदिपर्व (56·19) में 'जयो नामेतिहासोऽय' श्रोतव्यो विजिगीपुणा' लिखकर महाभारत को इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया है.
(vii) विभिन्न विषयों के संकलनपूर्ण सज्जीकरण किए जाने के कारण महाभारत को संहिता भी कहा गया है.

15. **महाभारत का प्रथम श्रवण—**

[5]वेदव्यास ने सबसे पहले महाभारत अपने पुत्र शुक एवं अपने चार शिष्यों–सुमन्तु, जैमिनी, पैल एवं वैशम्पायन को सुनाई थी.

16. **महाभारत उल्लिखित ब्रह्मा के जन्म—**

महाभारत में ब्रह्मा के निम्नलिखित सात जन्म होना बतलाया गया है—

(i) मानस ब्रह्मा (ii) चाक्षुप ब्रह्मा (iii) वाचस्पत्य (iv) श्रावण (v) नासिक्य (vi) अण्डज हिरण्यगर्भ ब्रह्मा (vii) कमलोद्भव (पद्मज) ब्रह्मा.

17. **महाभारत में वर्णित सप्तद्वीप—**

महाभारत के अनुसार सम्पूर्ण विश्व निम्नलिखित सात द्वीपों में बँटा हुआ है—

(i) जम्बू (ii) शक (iii) कुश (iv) शाल्मलि (v) पुष्कर (vi) श्वेता (vii) क्रौंच

18. **महाभारत में वर्णित कौरव-पाण्डवों की सेना—**
(i) महाभारत में सात पाण्डवों एवं ग्यारह कौरवों की अक्षौहिणी सेना होने का जिक्र किया गया है.
(ii) महाभारत में एक अक्षौहिणी सेना में 21870 रथ, 21870 हाथी, पैदल सैनिक 109350 एवं 65610 घुड़सवार सैनिक थे.

---

1 A history of sanskrit Literature : Munshilal Manoharlal, Delhi, 1958, Page 284-285
2 उवाच स महातेजा ब्राह्मणं परमेष्ठिनम् । कृतं मयेदं भगवन् काव्यं परपूजितम्
(आदिपर्व, प्रथम अध्याय, 61 श्लोक, गीता प्रेस संस्करण)
3 इदं महाकाव्य मृषेर्महात्मनः पठन्नृणां पूज्यतमो भवेन्नरः (पूना संस्करण)
4 The Mahabharata : A criticism—cosmo publication, New Delhi 1983, Page 9
5 Samsad Companion to the Mahabharat Page 3–4.

(iii) महाभारत में वर्णित तथ्यों के अनुसार पाण्डवों की सेना में 153090 रथ, 153090 हाथी, 765450 पैंदल सैनिक एवं 459270 घुड़सवार सैनिक थे.

(iv) महाभारत के तथ्यानुसार कौरवों की सेना में 240570 रथ, 240570 हाथी, 1202850 पैदल सैनिक एवं 721710 घुड़सवार सैनिक थे.

19. **महाभारत से उद्धृत श्रीमद्भगवद्गीता के सम्बन्ध में कुछ तथ्य—**

(i) अधिकांश इतिहासकार, साहित्यकार, विद्वान् एवं चिंतक श्रीमद्भगवद्गीता को महाभारत के भीष्मपर्व से लिया गया मानते हैं. भीष्म पर्व के भीष्म वध पर्व में गीता में 745[1] श्लोक होने का जिक्र किया गया है. इसमें 620 श्लोक कृष्ण द्वारा कथित, 57 श्लोक अर्जुन द्वारा कथित, 67 श्लोक संख्या के द्वारा एवं 1 श्लोक धृतराष्ट्र के द्वारा कथित बतलाया गया है.

(ii) महाभारत में वर्तमान में कृष्ण द्वारा कथित 571 श्लोक, अर्जुन द्वारा कथित 55 श्लोक, संजय द्वारा कथित 73 श्लोक एवं धृतराष्ट्र द्वारा कथित 1 श्लोक कुल 700 श्लोक उपलब्ध होते हैं.

(iii) वर्तमान में गीता प्रेस गोरखपुर के संस्करण के आधार पर श्रीमद्भगवद्गीता में 699 श्लोक हैं, जिसमें 573 कृष्ण[2] द्वारा कथितं, 41 श्लोक संजय द्वारा एंक धृतराष्ट्र तथा 84 श्लोक अर्जुन द्वारा कथित हैं.

(iv) श्रीमद्भगवद्गीता अठारह अध्यायों में विभक्त है, जिनका नामकरण निम्नलिखित हैं—

(1) अर्जुन विषाद योग नामक प्रथम अध्याय
(2) सांख्य योग नामक द्वितीय अध्याय
(3) कर्मयोग नामक तृतीय अध्याय
(4) ज्ञानकर्म संन्यास योग नामक चतुर्थ अध्याय
(5) कर्म संन्यास योग नामक पंचम (5वाँ) अध्याय
(6) आत्मसंयम योग नामक षष्ठम (6वाँ) अध्याय
(7) ज्ञान विज्ञान योग नामक सप्तम (7वाँ) अध्याय
(8) अक्षरब्रह्मयोग नामक अष्टम् (8वाँ) अध्याय
(9) राजविद्याराजगुह्य योग नामक नवम् (9वाँ) अध्याय
(10) विभूति योग नामक दशम् (10वाँ) अध्याय
(11) विश्वरूपदर्शन योग नामक एकादशम (11वाँ) अध्याय
(12) भक्तियोग नामक द्वादश (12वाँ) अध्याय
(13) क्षेत्र-क्षेत्रज्ञविभाग योग नामक त्रयोदश (13वाँ) अध्याय
(14) गुणजयविभाग योग नामक चतुर्दशम् (14वाँ) अध्याय
(15) पुरुषोत्तम योग नामक पंचदशम् (15वाँ) अध्याय
(16) दैवासुर सम्पद् विभाग योग नामक षष्ठदशम् (16वाँ) अध्याय
(17) श्रद्धाजयविभाग योग नामक सप्तदशम् (17वाँ) अध्याय
(18) माक्षसंन्यास योग नामक अष्टदशम् (18वाँ) अध्याय

20. **श्रीमद्भगवद्गीता का महाभारत से सम्बद्धता के सन्दर्भ में विभिन्न मत—**

(i) अधिकांश विद्वान्, साहित्य, धर्मग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता को महाभारत का अभिन्न अंश मानते हैं.

(ii) भगीरथ दीक्षित, सर मोनियर विलियम्स, न्यायाधीश तेसंग एवं अन्य पाश्चात्य विद्वान् श्रीमद्भागवद्गीता को महाभारत से असम्बद्ध मानते हैं और उनके अनुसार इसे बाद में जोड़ा गया था.

(iii) भगीरथ दीक्षित के शब्दों में—

"कई आधुनिक विदेशी विद्वानों का कहना है कि युद्धभूमि में सात सौ श्लोकों का उपदेश देना सम्भव नहीं माना जा सकता है. अतएव कृष्ण ने या तो वास्तव में गीता का उपदेश अर्जुन को दिया ही नहीं, या यदि दिया हो तो उसका रूप अत्यन्त सूक्ष्म रहा होगा, जिसे बाद में किसी ने विस्तार प्रदान कर दिया.

1 महाभारत-भीष्म पर्व 43वाँ अध्याय 4.5 श्लोक (गीता प्रेस संस्करण)

2 श्रीकृष्ण ने द्वितीय अध्याय में श्लोक संख्या 2, 3, 11, 12 से 53 एवं 55 से 72, तृतीय अध्याय में उसे 35 एवं 37 से 43 तक के श्लोक, चतुर्थ अध्याय में 1, 2, 3 एवं 5 से 42 तक, पाँचवें अध्याय में श्लोक संख्या 2 से 29 तक, छठे अध्याय में श्लोक संख्या ∴ 1 से 32, 35 से 36 एवं 40 से 47 तक, सातवें अध्याय में श्लोक संख्या 1 से 29 तक, आठवें अध्याय में 3 से 28 तक नौवें अध्याय में 1 से 34 तक, 10वें अध्याय में 1 से 11 तथा 19 से 42 श्लोक संख्या तक, श्रीमद्भगवत्गीता के ग्यारहवें अध्याय में श्लोक संख्या 5 से 8, 32 से 34, 47 से 49 एवं 52 से 55 तक, बारहवें अध्याय में श्लोक संख्या 2 से 20 तक, तेरहवें अध्याय में श्लोक संख्या 1 से 34 तक, चौदहवें अध्याय में श्लोक संख्या 1 से 20, 22 से 27 तक, पन्द्रहवें अध्याय में 1 से 20 तक, 16वें अध्याय में 1 से 24 तक, सत्रहवें अध्याय में 2 से 28 तक एवं अट्ठारहवें श्रीमद्भगवतद्गीता के अध्याय में उपदेशीय शैली में अर्जुन को सम्बोधित करते हुए कुल 573 श्लोकों में अभिव्यक्ति की है.

(iv) सर मोनियर विलियम्स के शब्दों में—

"The real author of the Bhagvad Gita is unknown. Nor is it known when the work was inserted in the Bhisma-parva of the Mahabharata. The author was probably an earnest Brahman & nominally a vaishanav, but really a philosopher whose mind was cast in a broad mould. He is supposed to have lived in India about the second or third century of our era."

(v) हॉपकिन्स गीता को 'क्षेपक' मानते हैं और गार्वे इसे कॉम्पजिट प्रोडक्शन (संश्लिष्ट रचना) कहते हुए इसका रचनाकाल 200 ई. पू. मानते हैं.

(vi) अर्थर ए. मैकडोनेस का मानना है कि श्रीमद्भगवद्गीता को बाणभट्ट के समय महाभारत में संलग्न किया गया था.

(vii) महाभारत में आदिपर्व की श्लोक संख्या 56 में 'पर्वोक्तं भगवद्गीता पर्व भीष्म-वधस्ततः' तथा शान्ति पर्व (336·8) में 'अर्जुन विमनस्के च गीता भगवता स्वयम्' लिखकर महाभारत से श्रीमद्भगवद्गीता के सम्बद्ध होने की पुष्टि की है.

(viii) शंकराचार्य ने भगवद्गीता को महाभारत का ही अभिन्न अंश माना है.

(ix) प्रख्यात विद्वान् चिन्तामणि विनायक वैद्य वेदव्यास को श्रीमद्भगवद्गीता का रचनाकार भाषागत भिन्नता (महाभारत से) के कारण अस्वीकार करते हुए लिखते हैं—

"It's grammel and construction are archaic. It strikes us as the language of an adopt using a spoken tongue. We may instance the Bhagvad Gita, which, if not the composition of Vyasa, must at least, be that of Vaishampayana, whose date, from the evidence of language, must not have been very distant from the date of the upnishadas."[1]

21. **महाभारत में वर्णित पर्वत**[2]—

(i) हैमावत, (ii) हेमकूट, (iii) निषाद, (iv) नील, (v) श्वेत, (vi) मलय, (vii) सृंगवन.

22. **महाभारत में वर्णित ऐतिहासिक तथ्य**—

महाभारत में मगध, विदेह आदि राज्य, सीथियन, यूनानी आदि विदेशी जातियों राज्य, राजा से सम्बन्धित सिद्धान्त तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक परिस्थिति एवं धार्मिक क्रियाकलापों का विस्तार से वर्णन किया गया है.

23. **महाभारत से जुड़े कुछ उल्लेखनीय तथ्य**—

(i) महाभारत में स्त्रियों के भिक्षुणी बनने का विरोध किया गया है तथा गुजारे के लिए धर्म का आडम्बर करने वालों को भी हेयदृष्टि से देखा गया है.

(ii) सभा पर्व के पंचम अध्याय के 73वें श्लोक में स्त्रियों को अविश्वसनीय मानते हुए उन पर विश्वास नहीं करने का जिक्र हुआ है.

(iii) महाभारत में गृहस्थाश्रम को तीनों आश्रमों से अधिक श्रेष्ठ एवं लोकवेत्ताओं की गति का मार्ग बतलाया है.

(iv) महाभारत के उपसंहार (खिल) के रूप में जाना जाने वाले हरिवंशपुराण में वर्णों के सन्दर्भ में कहा गया है कि गृत्समद के पुत्र भुनक से शौनक एवं शौनक से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नामक चार पुत्र पैदा हुए थे. विष्णुपुराण उक्त तथ्य की पुष्टि करता है.

(v) महाभारत के सन्दर्भ में 'यन्न भारते तन्न भारते' कहा गया है जिसका आशय यह है कि जो महाभारत में नहीं है वह भारतवर्ष में भी नहीं है अर्थात् ऐसा कुछ भी शेष नहीं रहा जिसका वर्णन महाभारत में नहीं किया गया हो.

(vi) महाभारत में धर्मोपदेश, वर्णव्यवस्था, पुरुषार्थ चतुष्टयम् युद्धकला कौशल, चिकित्सा, धर्म, दर्शन, ग्रह नक्षत्र तारादि के परिमाण वर्णन से लेकर कर्मयोग, शिक्षाप्रद आख्यान, 'यतोधर्मस्ततो जयः' को प्रतिपादित करने वाली शिक्षा एवं अन्य कई तत्वों का विस्तार से वर्णन किया गया है.

---

1 The Mahabharata : A criticism, Page 10

2 Samsad companion to the Mahabharata. Page 3

रामायण : आदि महाकाव्य

1. **वास्तविक नाम**–श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण[1]
2. **प्रसिद्ध नाम**–रामायण (अन्य नाम–पौलस्त्य वध, दशानन वध)
3. **रचनाकार**–महर्षि वाल्मीकि
4. **प्रतिष्ठित**–1. आदिकाव्य के रूप में
   2. समस्त काव्यों के बीज के रूप में[2]
5. **रामायण का उल्लेख**–
   (1) स्कन्दपुराण में रामायण का माहात्म्य वर्णित किया गया है.
   (2) 'रामायणतात्पर्यदीपिका' जो व्यासजी की हस्त-लिखित वाल्मीकि रामायण पर युधिष्ठिर के अनुरोध पर लिखी गई टीका है.
   (3) द्रोण पर्व में वाल्मीकि के नाम का उल्लेख करते हुए वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड (लंका काण्ड) के 81/28 श्लोक का वर्णन किया गया है.
   (4) गरुड़पुराण पूर्वखण्ड के 143वें अध्याय में रामायण सार वर्णित किया गया है.
   (5) [3]हरिवंश पुराण (विष्णु पर्व 93/6-33) में यदुवंशियों द्वारा वाल्मीकि रामायण के नाटक खेलने का उल्लेख किया है.
   (6) महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में एवं भवभूति ने उत्तररामचरितम् में वाल्मीकि का उल्लेख किया है.
   (7) गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस, कवितावली, विनय-पत्रिका, बरवै रामायण इत्यादि में वाल्मीकि रामायण एवं वाल्मीकि का उल्लेख किया है.
6. **वाल्मीकि रामायण पर लिखी[4] गई टीकाएं**–
   (1) कतक टीका
   (2) तिलक या रामभिरामी व्याख्या (नागाजी भट्ट की)
   (3) भूषण टीका (गोविन्द राज की)
   (4) रामायण-शिरोमणि व्याख्या (शिवसहाय की)
   (5) तत्त्वदीप या तीर्थ व्याख्या (माहेश्वर तीर्थ की)
   (6) रामानुजीय व्याख्या (कन्दाल रामानुज की)
   (7) विवेक तिलक टीका (वरदराजकृत टीका)
   (8) धर्माकूत व्याख्या (त्र्यम्बकराज मखानी की)
   (9) रामायणकूट व्याख्या (रामानन्दतीर्थ की)
   (10) वाल्मीकि हृदय व्याख्या (अहोबल की)
   (11) रामायण तात्पर्य निर्णय व्याख्या (माधवाचार्य की)
   (12) रामायणभूषण व्याख्या (प्रवाल मुकुन्द सूरि की)
   (13) सुबोधिनी टीका (श्रीरामभद्राश्रम की)
   (14) रामायण सार-संग्रह (वरदराजाचार्य की)
   (15) विषय पदार्थ व्याख्या (देवराय भट्ट भद्र कृत)
   (16) कल्पवल्लिका (नृसिंहशास्त्री कृत)
   (17) रामायणार्थ प्रकाशिका (वेंकटाचार्य कृत)
   (18) अन्य टीकाओं में अमृतकतक, रामायण सार दीपिका गुरुवाला, चितरञ्जिनी, विद्वमनोरञ्जिनी, चतुरर्थ-दीपिका, रामायणविरोध परिहार रामायणसेतु, तात्पर्य-तरणि, शृंगार सुधाकर रामायण-सप्तबिम्ब, मनोरमा एवं उक्त कथित संस्कृत भाषा की प्राप्त वाल्मीकि रामायण की टीकाएं हैं, शेष हिन्दी, बंगला, मराठी, कन्नड़, गुजराती, मलयालम, फ्रेंच, अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं की टीकाएं भी हैं.
7. **वाल्मीकि रामायण की प्रमुख विशेषताएं**–
   (1) विद्वानों का मानना है कि रामायण में निहित काव्यत्व के लक्षणों को आधारभूत मानकर ही दण्डि आदिकवियों ने काव्यों को परिभाषित किया था.
   (1) वाल्मीकि रामायण का सुन्दरकाण्ड के (त्र्यम्बकराज मखानी के अनुसार) प्रत्येक शब्द रसयुक्त, छन्दोबद्ध एवं अलंकारमय है इसलिए उसे सुन्दर कहना सार्थक है.
   (3) वाल्मीकि रामायण में प्राकृतिक चित्रण, संवाद प्रस्तुतीकरण, हनुमानजी की वार्तालाप कुशलता, दशरथ महाराज की सम्भाषण पद्धति, श्रीराम की प्रतिपादन शैली, रावण का कथन इत्यादि के माध्यम से जो चित्रण किया गया है, उस जैसा सुन्दर चित्रण किसी अन्य काव्य, ग्रन्थ में नहीं मिलता.

---

1 वाल्मीकि द्वारा रचित होने के कारण वाल्मीकीय रामायण कहा जाता है.
2 काव्यबीजं सनातनम्–वृहद्धर्म. 1/30/47
3 रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्य नाटकं कृतम्
4 क्रमशः 2, 3, 4 क्रमांक की रामायण पर लिखी गई टीकाएं गुजराती प्रिन्टिंग प्रेस, मुम्बई, क्रमांक 5 एवं 6 वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई से प्रकाशित हुई थी.

रामायण के रचनाकार : महर्षि आदिकवि वाल्मीकि



1. **वास्तविक नाम**–रत्नाकर, अग्नि शर्मा
2. **प्रसिद्ध नाम**–महर्षि वाल्मीकि[1]
3. **उपाधियाँ**–आदिकवि, महर्षि, ब्रह्मर्षि
4. **पिता**–वरुण (आदित्य), प्रचेता (वाल्मीकि रामायण में दोनों का उल्लेख है)
5. **दादा**–महर्षि कश्यप
6. **भाई**–भृगु ऋषि
7. **लेखन का प्रारम्भ**–काममयी स्थिति में क्रौञ्च दम्पत्ति के निमग्न रहने पर एक शिकारी द्वारा नर क्रौञ्च मार देने पर क्रोध से भरे श्लोक के आविर्भाव होने के पश्चात् से.
8. **रामायण लेखन के प्रेरक**–1.नारदजी (प्रेरणा दी), 2.ब्रह्माजी (वरदान दिया), 3.क्रौञ्च पक्षी (अनुष्टुप छन्द दिया)
9. **उल्लेखनीय तथ्य**–1. वाल्मीकि रामायण के रचनाकार बाल्मीकि को नीच जाति का माना जाता है, लेकिन उन्होंने स्वयं को प्रचेता की संतान बतलाया है. मनुस्मृति के अनुसार प्रचेता वशिष्ठ, नारद, पुलस्त्य, भृगु ऋषि के भाई थे और ये सब जन्म और कर्म से ब्राह्मण थे, अतः इस आशय से वाल्मीकि ब्राह्मण थे.

   2.एक बहुत बड़ा वर्ग मानता है कि वाल्मीकि रामायण की रचना करने से पूर्व शिकारी थे. यह सर्वथा असंगत है. वाल्मीकि जन्मान्तर में व्याध (शिकारी) थे और यह रामायण लिखने से पूर्व का जन्म था. ऐसा स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण, आध्यात्म रामायण कृतिवास रामायण एवं अन्य स्रोतों से ज्ञात होता है.
10. **उपासना**–राम नाम उलटे रूप में (मरा-मरा) जपकर उपासना की.
11. **आश्रम**–1.भैंसा लोटन गाँव (वर्तमान चम्पारण का वाल्मीकि नगर), 2.बिठूर नामक स्थल (कानपुर के पास)[2]
12. **वंशज**–प्रचेता ऋषि वंशज
13. **मुनि**–भारद्वाज मुनि
14. **आश्रय प्रदाता**–श्रीराम की निर्वासित पत्नी एवं दो पुत्रों को आश्रय प्रदान किया.

(4) वाल्मीकि रामायण में ज्योतिषशास्त्र के तथ्यों का भी उत्कृष्ट तरीके से चित्रण किया गया है. त्रिजटा का स्वप्न, श्रीराम का यात्राकालिक मुहूर्त विचार, विभीषण द्वारा लंका के अपशकुनों का प्रतिपादन, रावण-मरण की ग्रह स्थिति, लंकायुद्ध के मूल में नौ ग्रहों का इकट्ठा होना इत्यादि तथ्यों का खूबसूरत तरीके से ज्योतिष के समर्थन में चित्रण किया गया है.

(5) वाल्मीकि ने रामायण में ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र, आयुर्वेद, शकुन, राजनीति, दर्शन, अध्यात्म, धर्म इत्यादि पर विश्लेषणात्मक प्रस्तुति की है, जो अन्यत्र एक साथ मिलना दुर्लभ है.

(6) वाल्मीकि ने तप का चित्रण सुन्दर तरीके से किया है. उन्होंने तप को स्वर्गादि सभी सुखों का हेतु माना है. रामायण में विश्वामित्र, राम, रावण, भगीरथ, भृगु वैखानस, वालखिल्य, मरीचिय सम्प्रक्षाल, पत्राहारी, उन्मज्जक, पञ्चाग्निसेवी एवं अन्य तपस्वियों का वर्णन किया गया है.

8. **वाल्मीकि रामायण में निहित भौगोलिक विवरण**–

(1) वाल्मीकि रावण द्वारा वर्णित रावण की लंका को विभिन्न शोधों के आधार पर वर्तमान में मालद्वीप सिद्ध किया गया है.

(2) रामायण में वर्णित धर्मारण्य वर्तमान में गया, गिरिव्रज वर्तमान विहार में राजगीर, कानपुर के पास बिठूर नामक स्थल को वाल्मीकि का आश्रम स्थल माना जाता है.

9. **रामायण में वर्णित विषय-वस्तु के विभाग**–

(1) **बालकाण्डम् (77 सर्ग)**–वाल्मीकि रामायण का आरम्भ बालकाण्ड से होता है. 77 सर्गों में इसका वर्णन किया गया है. नारदजी ने वाल्मीकि को भगवान् श्रीराम का चरित्र सुनाकर इस काण्ड को प्रारम्भ किया है. इसके पश्चात् रामायण महाकाव्य लिखने का उपक्रम, वाल्मीकि द्वारा रामायण में वर्णित विषयों का संक्षेप में उल्लेख, लव-कुश द्वारा राम दरबार में रामायण गान करना, अयोध्या का वर्णन, राजमन्त्रियों और राजा की नीति एवं गुणों का वर्णन, राजा दशरथ द्वारा किए गए अश्वमेध यज्ञ का वर्णन, देवताओं के अनुरोध पर ब्रह्माजी द्वारा रावण वध का उपाय तलाश करना, राम, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न की जन्म पर आधारित कथावस्तु, अंशुमान और भगीरथ की तपस्या का वर्णन,

---

1 तपस्या में अत्यधिक रत रहने की स्थिति में दीमकों द्वारा शरीर पर घर बना लेने के कारण वाल्मीकि कहा गया.

2 गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित वाल्मीकीय रामायण की भूमिका में उल्लिखित.

देवताओं और दैत्यों द्वारा क्षीरसागर का मंथन, धन्वन्तरि, अप्सरा, वारुणी, उच्चैःश्रवा, कौस्तुभ एवं अमृत की उत्पत्ति, शिवजी का विषपान करना, वशिष्ठजी की आज्ञा से कामधेनु गाय एवं विश्वामित्रजी के संहार के लिए शक, यवन, पल्लव आदि वीरों की सृष्टि करना. श्रीरामादि चार भाइयों का विवाह, सीता एवं भगवान् राम के पारस्परिक प्रेम इत्यादि का वर्णन विस्तृत रूप में वाल्मीकि रामायण में किया गया है.

(2) **अयोध्याकाण्डम् (119 सर्ग)**–यह वाल्मीकि रामायण का दूसरा काण्ड है और 119 सर्गों में रामायण की प्रारम्भिक विषय-वस्तु का वर्णन किया गया है. अयोध्याकाण्ड में श्रीराम के सद्गुणों, राम का राज्याभिषेक करने पर विचार करना, दशरथ द्वारा श्रीराम को राजनीति की बातें बतलाना, मंथरा का कैकेयी को बहकाना, कैकेयी द्वारा भरत का राज्याभिषेक एवं राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास वर रूप में दशरथ से माँगना, दशरथ का प्राण त्याग करना, श्रीराम, लक्ष्मण और सीता का वनगमन करना, भरत का श्रीराम को मनाने के लिए वनगमन करना, श्रीराम द्वारा भरत को राजनीति का उपदेश देना, जावालि के द्वारा नास्तिक मत का अवलम्बन करने के लिए श्रीराम को समझाना, अयोध्या की दुर-वस्था, भरत द्वारा श्रीराम की चरण पादुकाओं पर राज्याभिषेक स्वीकार करना, सीता-अनुसूया संवाद एवं अन्य विषयों का विस्तृत रूप में वर्णन किया गया है.

(3) **अरण्यकाण्डम् (75 सर्ग)**–वाल्मीकि रामायण के तीसरे काण्ड अरण्यकाण्ड में 75 सर्गों में रामकथा का वर्णन किया गया है. इसमें श्रीराम द्वारा विराध का वध, वानप्रस्थ मुनियों द्वारा राक्षसों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों से रक्षा करने के लिए राम से प्रार्थना करना, सीता द्वारा श्रीराम से अहिंसा धर्म का पालन करने का अनुरोध, पञ्चाप्सर तीर्थ एवं माण्डकर्णि मुनि की कथा, अगस्त्य ऋषि के प्रभाव का वर्णन, जटायु से श्रीराम का परिचय, हेमन्त ऋतु का लक्ष्मण द्वारा वर्णन, सूर्पणखा का लक्ष्मण से प्रणय निवेदन करना, खरदूषण का राम के साथ युद्ध, श्रीराम द्वारा दूषण एवं खर सहित चौदह सहस्र राक्षसों का वध करना, रावण के द्वारा सीता का अपहरण करना, रावण द्वारा सीता को अपनी पत्नी बनने के लिए बाध्य करना, सीता को रावण द्वारा अपने अन्तःपुर में रखना, श्रीराम का सीता के विरह में विलाप करना, जटायु का प्राण त्याग करना और श्रीराम के द्वारा उसका दाह संस्कार करना, कबन्ध की कथा, श्रीराम, लक्ष्मण द्वारा सीता को खोजना, शबरी के आश्रम में राम और लक्ष्मण का जाना, सुग्रीव से मित्रता के लिए पम्पापुर की ओर गमन करना एवं अन्य विषयों का विश्लेषणात्मक वर्णन अरण्यकाण्ड में किया गया है.

(4) **किष्किन्धाकाण्डम् (67 सर्ग)**–वाल्मीकि रामायण का किष्किन्धा-काण्ड 67 सर्गों में वर्णित किया गया है. इस काण्ड के अन्तर्गत पम्पा सरोवर की सुन्दरता का वर्णन, श्रीराम का हनुमानादि वानरों से परिचय, सुग्रीव और श्रीराम की मैत्री, सुग्रीव द्वारा सीताजी के आभूषण दिखलाने पर शोकग्रस्त होना. बाली का राम के द्वारा वध करना, सुग्रीव और अंगद का हनुमानजी द्वारा अभिषेक करना. श्रीराम द्वारा वर्षा ऋतु का वर्णन किया जाना, शरद् ऋतु का वर्णन, लक्ष्मण और सुग्रीव के बीच मतभेद, वानरों का विभिन्न दिशाओं में भ्रमण कर सीता को खोजना, सुग्रीव द्वारा भूमण्डल वृत्तान्त श्रीराम को बतलाना, सम्पाति द्वारा रावण और सीता का पता बतलाना, सम्पाति की आत्मकथा, हनुमानजी का समुद्र लंघन करने के लिए महेन्द्र पर्वत पर चढ़ना इत्यादि विषयों का विस्तृत वर्णन किया गया है.

(5) **सुन्दरकाण्डम् (68 सर्ग)**–सुन्दरकाण्ड की विषय-वस्तु 68 सर्गों में वर्णित की गई है. इस काण्ड में हनुमानजी द्वारा समुद्र को लंघन करना, लंका में हनुमानजी का पहुँचना, लंकापुरी, रावण के अन्तःपुर, पुष्पक विमान एवं चन्द्रोदय का वर्णन, सीता को अशोक वाटिका में खोजना, सीताजी की दुरावस्था का वर्णन, सीता का विलाप, हनुमानजी द्वारा सीता से वार्तालाप करना एवं आश्वासन देना, हनुमानजी का सीताजी को चूड़ामणि प्रदान करना, हनुमानजी द्वारा लंकापुरी का दहन, हनुमानजी का लंका से लौटना, जामवन्त, अंगद आदि को हनुमानजी द्वारा लंका यात्रा का समस्त विवरण सुनाना, श्रीराम को हनुमानजी द्वारा सीता के समाचार सुनाना एवं अन्य विषयों पर विस्तृत सामग्री को वर्णित किया गया है.

(6) **युद्धकाण्डम् (128 सर्ग)**–नामानुरूप इसके 128 सर्गों में राम एवं राक्षसों के मध्य हुए युद्धों का विस्तृत स्वरूप में वर्णित किया गया है.

युद्धकाण्ड में श्रीराम के साथ वानर सेना का लंका की तरफ प्रस्थान करना, श्रीराम का सीता के लिए विलाप करना, विभीषण, मन्दोदरी एवं अन्य राक्षसों के द्वारा रावण को समझाना एवं सीताजी को लौटाने की सलाह देना, विभीषण द्वारा श्रीराम की शरण में

जाना, समुद्र में नल-नील द्वारा सौ योजन पुल का निर्माण करना, उस पुल को पारकर वानर सेना एवं श्रीराम का दूसरी तरफ पहुँचना, सुग्रीव और रावण का मल्लयुद्ध, वानरों द्वारा लंका पर चढ़ाई करना, श्रीराम और लक्ष्मण को नागपाश में इन्द्रजीत द्वारा बाँधना, गरुड़ द्वारा श्रीराम-लक्ष्मण को नागपाश बंधन से मुक्त करना, कुम्भकर्ण को जगाया जाना, उसे देखकर वानरों का भयभीत होना, कुम्भकर्ण द्वारा रावण को समझाना, वानरों एवं श्रीराम से युद्ध करते हुए कुम्भकर्णादि कई राक्षसों का मारा जाना, लक्ष्मण का मूर्च्छित होना, हनुमानजी द्वारा पर्वत उठाकर लाना, लक्ष्मण का स्वस्थ होना, लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजीत का वध करना, श्रीराम को विजय प्राप्ति के लिए अगस्त्य मुनि द्वारा 'आदित्य हृदय' के पाठ करने की सलाह देना, श्रीराम द्वारा रावण का वध करना, रावण का दाह संस्कार करना, विभीषण का राज्याभिषेक करना, सीता से राम की मुलाकात होना, सीता का परित्याग करना, सीता की अग्नि परीक्षा, सीता की पवित्रता की पुष्टि होने पर राम द्वारा स्वीकार करना, भरत से रामादि की मुलाकात, श्रीराम का अयोध्या में गमन कर राज्याभिषेक सँभालना एवं रामायण का महात्म्य काव्यशैली में वाल्मीकि ने वर्णित किया है.

(7) **उत्तरकाण्डम्** (**111 सर्ग**)–वाल्मीकीय रामायण की अन्तिम उपसंहारात्मक विषय-वस्तु उत्तरकाण्ड के 111 सर्गों में वर्णित की गई है.

उत्तरकाण्ड में श्रीराम के दरबार में महर्षियों का आगमन, विश्रवा मुनि की उत्पत्ति, पुलस्त्य की तपस्या, कुबेर की उत्पत्ति, राक्षस वंश का वर्णन, भगवान् विष्णु द्वारा राक्षसों का संहार, रावण का जन्म होना एवं गोकर्ण आश्रम में तप के लिए जाना, लंका में रावण का राज्याभिषेक, सूर्पणखा तथा रावणादि तीनों भाइयों का विवाह, मेघनाद का जन्म, नन्दीश्वर द्वारा रावण को श्राप देना, हनुमानादि वानरों की उत्पत्ति, सीता को त्यागे जाने पर वाल्मीकि के आश्रम में शरण लेना, कल्मापपाद की कथा, विभिन्न ऋषियों एवं महर्षियों के शाप एवं पूर्वजन्मों की कथा, सीता के दो पुत्रों का जन्म, श्रीराम द्वारा अश्वमेध यज्ञ करना, यज्ञ में आमन्त्रित वाल्मीकि के साथ आए लव और कुश का रामायण का गान करना, सीता का शपथ ग्रहण कर रसातल में प्रवेश करना, भरत द्वारा गन्धर्वों पर आक्रमण किया जाना, लक्ष्मण का सशरीर स्वर्गगमन करना, श्रीराम का परमलोक में गमन करना एवं रामायण काव्य का उपसंहार एवं महिमा बेहद उत्कृष्टतम् तरीके से वर्णित की गई है.

10. **उल्लेखनीय तथ्य–**

(1) वाल्मीकि रामायण को आदिकाव्य एवं वाल्मीकि को आदिकवि की उपाधि सर्वप्रथम रचने वाले कवि एवं सर्वप्रथम काव्यात्मक स्वरूप में रची गई रचना के कारण सम्पूर्ण काव्य जगत् में प्राप्त है.

(2) वाल्मीकि रामायण 7 काण्डों, 645 सर्गों एवं 24,000 श्लोकों में काव्यात्मक रूप में वर्णित की गई है.

(3) [1]वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड के चतुर्थ सर्ग में रामायण में 500 सर्गों के होने का उल्लेख किया है, लेकिन वर्तमान में गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित रामायण में 645 सर्ग हैं, सम्भवतः इन्हें बाद में जोड़ा गया है.

(4) वाल्मीकि रामायण का सर्वप्रथम गान राम द्वारा कराए गए अश्वमेध यज्ञ में लव और कुश द्वारा किया गया था.

(5) वाल्मीकि रामायण गेय हैं और इसमें द्रुत, मध्यम्, विलम्बित तीनों गतियों, षड्ज इत्यादि सात स्वरों, शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, भयानक तथा वीर रस का विश्व में सबसे पहले प्रयोग किया है. इसी आधार पर यह कहा जाता है कि दण्डी आदि कवियों ने वाल्मीकि रामायण के लक्षणों के आधार पर ही साहित्य के समस्त अंगों का निर्धारण एवं वर्णन किया है.

(6) वाल्मीकि रामायण स्वर और ताल के साथ, वीणा आदि वाद्य यन्त्रों के साथ गाया जा सकने वाला प्रथम महाकाव्य है.

(7) वाल्मीकिजी को अनुष्टुप छन्द का सृष्टा कहा जाता है. वाल्मीकीय रामायण के अनुसार एक बार वाल्मीकिजी अपने शिष्य भारद्वाज के साथ तमसा नदी के तट पर स्नान करने के लिए गए थे, वहाँ पर एक क्रौंच पक्षी का जोड़ा देखा, जो कभी भी अलग नहीं होता था. उस समय वे प्रेम में रत थे. एक शिकारी ने उनमें से नर क्रौंच को मार डाला.

---

1 चतुर्विंशतसहस्त्राणि श्लोकानामुक्तवानृषिः
तथा सर्गशतान् पञ्च षट्काण्डानि तथोत्तरम् ॥ 2 ॥
–वाल्मीकि रामायण बालकाण्डम् 4/2

उसकी हत्या से मादा क्रौंची ने गहरा शोक दर्शाते हुए विलाप किया. वाल्मीकि ने दु:खानुभूति होने पर [1]छन्दोबद्ध श्लोक में उस शिकारी को श्राप दिया और वहीं से अनुष्टुप छन्द का आविर्भाव माना जाता है.

(8) अनुष्टुप छन्द की उत्पत्ति होने के पश्चात् ब्रह्माजी के वरदान देने पर वाल्मीकीय रामायण की वाल्मीकि द्वारा रचना की गई–ऐसा विद्वानों का मत है. वाल्मीकि रामायण कुछ पद्यों को छोड़कर अनुष्टुप छन्द में लिखी गई है.

(9) वाल्मीकीय रामायण में तत्पुरुष आदि समासों, प्रकृति, प्रत्यय, दीर्घ गुणादि सन्धियों का यथायोग्य प्रयोग हुआ है. इनका प्रयोग करने वाला यह सबसे पहला महाकाव्य माना जाता है.

(10) वाल्मीकीय रामायण में समता, पदों में माधुर्य तथा अर्थ में प्रसाद गुण की अधिकता को हर कहीं देखा जा सकता है.

(11) वाल्मीकीय रामायण के अनुसार अयोध्या नगरी को आदिपुरुष मनु ने वनवाया था.

(12) रामायण के अनुसार अयोध्या की लम्बाई बारह योजन एवं चौड़ाई तीन योजन थी. इसके चारों ओर खाई खुदी हुई थी और इस नगरी को अष्टापदाकारा (द्यूतफलक) में वसाया गया था. अयोध्या के महलों पर सोने के पानी चढ़े होने का भी उल्लेख मिलता है.

(13) रामायण में विभिन्न प्रकार की नीतियों एवं मर्यादापूर्ण विषय-वस्तु का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है, इसी आधार पर इसकी प्रतिष्ठा नीतिगत महाकाव्य के रूप में है.

(14) रामायण में मूलतः 6,000 पद्य थे, जिन्हें विस्तृत कर 24,000 कालान्तर में वनाए गए.

11. **ऐतिहासिक तथ्य–**

(1) वाल्मीकीय रामायण में उल्लिखित तथ्यों के अनुसार तत्कालीन समाज में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पुरुषार्थों की प्रधानता, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का जन्मानुसार अपने-अपने कर्मों में रत रहने, चार आश्रमों में जीवन व्यतीत करने का उल्लेख किया गया है.

(2) अयोध्या अर्थात् जहाँ पर पहुँच पर कोई युद्ध न कर सके इस आधार पर अयोध्या का नामकरण हुआ माना जाता है.

(3) वशिष्ठ और वामदेव दशरथ के पुरोहित (जत्विज), धृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्धन, अकोप, धर्मपाल, सुमन्त्र, काश्यप, जाबालि सुयज्ञ, गौतम, मार्कण्डेय, कात्यायन इत्यादि महाराज दशरथ के विद्वान् मंत्री थे.

(4) मंत्रियों का कार्य चतुरंगिणी सेना का संग्रह, गुप्तचरों द्वारा अन्य राजाओं के कार्य की जानकारी लेना, कोष का संचय करना, अपराधी को बलाबल के आधार पर दण्ड देना इत्यादि होते थे.

(5) पुत्रादि प्राप्ति के लिए पुरोहितों द्वारा विधिजन्य तरीकों से अश्वमेधादि यज्ञों का प्रचलन जोरों पर था. विधिहीन यज्ञ को यजमान को नष्ट करने वाला माना गया था.

(6) ब्रह्मचर्य पालन के दो रूप माने जाते थे–पहला दण्ड मेखलादि धारण कर मुख्य रूप से ब्रह्मचर्य पालन करना और दूसरा ऋतुकाल में पत्नी समागम करते हुए गौण ब्रह्मचर्य का पालन करना.

(7) स्त्रियों द्वारा विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण करने, पतिव्रत को सर्वस्व मानने.

(8) वेश्यावृत्ति, जुआ आदि का उल्लेख तत्कालीन समाज में व्याप्त होने के सन्दर्भ में मिलता है. राजाओं द्वारा अपनी कार्यसिद्धि के लिए वेश्याओं के माध्यम से तपस्वियों के तप भंग करने का उल्लेख भी मिलता है.

(9) वाल्मीकीय रामायण में सेवकों, शिल्पकारों, बढ़इयों, भूमि खोदने वालों, कारीगरों, नटों, ज्योतिषियों, नर्तकों, रजकों इत्यादि विभिन्न व्यवसायी वर्गों का उल्लेख मिलता है.

(10) सम्मानपूर्वक दान देने की परम्परा विद्यमान थी. दान में अन्न, आभूषण, वस्त्र, धन, सम्पदा एवं रत्न, अश्वादि दिए जाने का उल्लेख मिलता है.

(11) ब्राह्मण षडांगों के ज्ञाता, ब्रह्मचर्य व्रतधारी, बहुश्रुत, विधि, मीमांसा और कल्पसूत्र के जानकार होते थे.

(12) बेल, खैर, पलाश एवं विल्वादि वृक्षों को धार्मिक एवं पूज्यनीय वृक्ष माना जाता था.

(13) अश्वमेध यज्ञ तीन चरणों में सम्पन्न होता था. प्रथम दिन को चतुष्टोम (अग्निस्टोम), द्वितीय दिन उक्थ्य तथा तीसरे दिन 'अतिरात्र' कहा जाता था.

(14) अश्वमेध यज्ञ में चारों दिशाओं का राज्य दक्षिणा में दिए जाने का उल्लेख रामायण में मिलता है.

---

1 मा निषाद प्रतिष्ठांत्वमगमः शाश्वती समाः
यत् क्रौञ्च मिथुनादेक मवधीः काममोहितम् ।
9/2/15 वाल्मीकीय रामायण

(15) ब्राह्मण आचार्यों द्वारा राज्य अस्वीकार करने पर महाराज दशरथ ने अश्वमेध यज्ञ की दक्षिणा के रूप में दस लाख गौएँ, दस करोड़ स्वर्णमुद्रा एवं चालीस करोड़ रजत मुद्राएं प्रत्येक को दान में दी थीं.

(16) जलमार्ग द्वारा रत्नादि व्यवसाय करने का उल्लेख रामायण के अयोध्याकाण्ड के 82वें सर्ग में किया गया है.

(17) तत्कालीन शासक के पास वैतनिक एवं अवैतनिक दोनों प्रकार के कार्यकर्ताओं एवं सेवकों के होने का उल्लेख मिलता है.

(18) सेना में घोड़े, बैलगाड़ियाँ, रथ आदि प्रयोग में लाए जाने का उल्लेख मिलता है.

(19) हाथी, घुड़सवार एवं धनुर्धर सेना में प्रमुख रूप से आवश्यक होते थे.

(20) मणिकार, कुम्भकार, सूत से वस्त्र बनाने वाले, शस्त्र निर्माण करने वाले, मायूरक (मोर पंखों से छत्र बनाने वाले), चन्दन की लकड़ी आरे से चीरने वाले, मणियों में छेद करने वाले, रोचक (दीवारों एवं वेदियों को सजाने वाले), दन्तकार (हाथीदाँत, सुधाकार (चूना बनाने वाले), गन्धी, सोनार, कम्बल और कालीन बनाने वाले, गर्म जल से नहलाने का काम करने वाले, वैद्य, धूपक (धूपन क्रिया द्वारा जीविका चलाने वाले), शौण्डिक (मद्य विक्रेता), धोबी, दर्जी, गाँवों एवं गोशालाओं के महती, नट, केवट इत्यादि व्यावसायिक वर्गों के होने का उल्लेख भी वाल्मीकीय रामायण में मिलता है.

(21) तत्कालीन समाज में तन्त्र, मन्त्र, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, शकुन-अपशकुन का अत्यधिक प्रचलन था.

(22) रामायण को ऐतिहासिक से अधिक सांस्कृतिक महत्व का काव्य माना जाता है, क्योंकि इसमें इतिहास तलाशने के तथ्य अधिक नहीं हैं.

12. **कालक्रम–**

(1) प्रो. रामशरण के अनुसार, रामायण की रचना बारहवीं शताब्दी ई. पू. में प्रारम्भ हुई और पाँचवीं शताब्दी ई. पू. तक पाँच चरणों में पूर्ण हुई.

(2) प्रो. रामशरण के अनुसार, रामायण की रचना महाभारत के बाद हुई, लेकिन प्रो. रामशरण का कथन तर्कसंगत नहीं लगता, क्योंकि महाभारत में कई स्थानों पर वाल्मीकीय रामायण का उल्लेख एवं वर्णन किया गया मिलता है.

(3) स्वीकार रूप में रामायण का प्रारम्भिक रचनाकाल 500 ई. पू. एवं अन्तिम रूप से संकलन 400 ई. पू. माना जाता है.

निरुक्त

1. **वास्तविक नाम**–निरुक्त
2. **प्रसिद्ध नाम**–चौथा वेदाङ्ग
3. **अन्य नाम**–'वेदस्य श्रोतम्'[1]
4. **लक्षण**–अर्थज्ञान के लिए स्वतन्त्र रूप से जहाँ पदों का समूह कहा गया है वही निरुक्त है. (ऋग्वेद भाष्य की भूमिका में सायण द्वारा उल्लिखित).
5. **रचनाकार**–यास्क
6. **मूलरूप उद्धृत**—

(1) निरुक्त निघण्टु नामक वैदिक कोश का भाष्य है.

(2) निघण्टु के पाँच अध्यायों की व्याख्या यास्क ने बारह अध्यायों में की है तथा अन्त के दो अध्यायों में परिशिष्ट दिया गया है.

7. **निघण्टु से सम्बद्ध कुछ तथ्य और उनका निरुक्त से पारस्परिक सम्बन्ध**—

(1) निघण्टु पाँच अध्यायों में बँटा हुआ है जिसका भाष्य रूप निरुक्त यास्क द्वारा बारह अध्यायों में वर्गीकृत किया है.

(2) निघण्टु के पहले तीन अध्याय 'नैघण्टुक काण्ड' कहलाते हैं, जिनकी व्याख्या 'यास्क' ने निरुक्त के दूसरे एवं तीसरे अध्याय में की है.

(3) निघण्टु के नैघण्टुक काण्ड के अन्तर्गत आने वाले अध्यायों में कुल 1340 शब्द परिगणित हैं जिनमें से लगभग 230 शब्दों की व्याख्या यास्क ने निरुक्त के दूसरे एवं तीसरे अध्याय में की है.

(4) निघण्टु में परिगणित 1340 शब्द पर्याय-वाची शब्दों के रूप में संगृहीत हैं, जैसे– पृथ्वी के 21 पर्यायवाची शब्द, 'जलना' के अर्थवाली 11 क्रियाएं एवं 'बहुत' शब्द के 12 पर्यायवाची एवं अन्य पर्याय शब्द दिए गए हैं. निघण्टु की रचना ठीक अमरकोष की शैली में हुई है.

(5) निघण्टु के चौथे अध्याय में तीन खण्ड हैं, जिनमें क्रमशः 62, 84 तथा 132 पद कुल मिलाकर 278 पद हैं. इनमें प्रयुक्त सभी शब्द पर्याय रूप में नहीं, अपितु स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त हुए हैं. इन तीनों खण्डों की व्याख्या यास्क ने निरुक्त के चौथे, पाँचवें एवं छठे अध्याय में की है, इन अध्यायों को यास्क

---

1 छन्दःपादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोतमुच्यते।।

ने ऐकपदिक[1] काण्ड या नैगम नाम दिया है. प्रो. राजवाड़े नामक विद्वान् का मानना है कि निरुक्त के ऐकपदिक काण्ड में केवल 'वृन्दं' शब्द के अतिरिक्त सभी वैदिक शब्द हैं.

(6) निघण्टु का अन्तिम पंचम अध्याय दैवत काण्ड के नाम से जाना जाता है जिसमें 6 खण्ड हैं. दैवत काण्ड के 6 खण्डों में क्रमशः 3, 13, 36, 32, 36 एवं 31 पद हैं जिनमें स्वतन्त्र रूप से विभिन्न देवताओं के नाम हैं. इन खण्डों के शब्दों की व्याख्या निरुक्त में यास्क द्वारा 7 से 12 अध्यायों में की गई है. दैवतकाण्ड के 6 खण्डों की व्याख्या यास्क ने क्रमशः 7, 8, 9, 10, 11, 12 अध्यायों में स्वतन्त्र रूप से की है. इन अध्यायों में यास्क ने देवताओं पर पूर्ण प्रकाश डाला है.

(7) निघण्टु की व्याख्या निरुक्त के 12 अध्यायों में पूर्ण हो जाती है, लेकिन निरुक्त में दो अध्याय परिशिष्ट रूप में भी जोड़े गए हैं. इन परिशिष्टों में देवताओं, यज्ञों एवं दार्शनिक विषयों का विवेचन किया गया है.

8. **निरुक्त से सम्बन्धित उल्लेखनीय तथ्य**—

(1) डॉ. सिद्धेश्वर वर्मा की गणना के अनुसार निरुक्त में वर्णित किए गए शब्दों की संख्या 1298 है.[2]

(2) निरुक्त का पहला अध्याय और द्वितीय अध्याय का पहला पाठ भूमिका से भरा हुआ है, जिसमें पद के भेद, शब्दों का धातुज सिद्धान्त, निरुक्त की उपयोगिता, निर्वचन के नियम एवं अन्य उपयुक्त विषयों को समाहित किया गया है.

(3) निघण्टु के पहले शब्द 'गो' की व्याख्या का प्रारम्भ यास्क ने निरुक्त में भूमिका के ठीक बाद में द्वितीय अध्याय के द्वितीय पाद से किया है.

(4) यास्क ने निघण्टु के शब्दों को लेकर निरुक्त में व्याख्या की है, इसके लिए उन्होंने उद्धरण, इतिहासादि का सहारा भी लिया है.

(5) पतंजलि के महाभाष्य एवं निरुक्त की शैली में अत्यधिक साम्यता है. दोनों में ही छोटे-छोटे वाक्यों एवं समासरहित शब्दों का प्रयोग हुआ है.

(6) निरुक्त के प्रणेता यास्क के अनुसार जिसमें निम्न-लिखित चार बातें हों, उसे निघण्टु कहा जा सकता है–

(i) समानार्थक धातुओं का संग्रह

(ii) एक ही अर्थ वाले भिन्न शब्दों का संग्रह

(iii) कई अर्थों वाले शब्दों का संग्रह

(iv) देवताओं के प्रधान तथा गौण नामों का संग्रह

(7) यास्क के अनुसार शब्दों के चार भाग होते हैं–

(i) नाम (ii) आख्यात

(iii) उपसर्ग (iv) नियात

(8) यास्क सहित चौदह निरुक्तकारों का वर्णन मिलता है, जो निम्न हैं–(i) औपमन्यव, (ii) औदुम्बरायण, (iii) वार्ष्यायाणि, (iv) गार्ग्य, (v) आग्रायण, (vi) शाकपूणि, (vii) और्णनाम, (viii) तैरिकी (ix) गालव, (x) स्थौलाष्ठीवि (xi) कौष्टुकि, (xii) कास्थक्य, (xiii) यास्क, (xiv) शाकपूणि.

(9) विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार निघण्टु को भी यास्क द्वारा रचित माना गया है तथा विभिन्न तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर निघण्टु एवं निरुक्त को एक ही माना गया है.

(10) निरुक्त के प्रथम अध्याय की तुलना महा-भाष्य की पस्यशाब्दिक–भूमिका, शंकराचार्य की शारीरिक-मीमांसा-भाष्य भूमिका, रामानुज की ब्रह्मसूत्र भाष्य भूमिका तथा सायण की वेदभाष्य भूमिकाओं से की जाती है.

(11) निरुक्त के प्रथम अध्याय में निम्नलिखित का वर्णन किया गया है–

(i) निघण्टु का लक्षण

(ii) पदों के भेद

(iii) भाव के विकार

(iv) शब्दों का धातुज सिद्धान्त

(v) निरुक्त की उपयोगिता

(12) निरुक्त को विज्ञान माना गया है और पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र और वेदों के साथ इसका नाम लिया जाता है.

---

1 डॉ. बेलवलर नामक विद्वान् का मानना है कि निरुक्त के ऐकपदिक काण्ड का नाम ऐकपदिक इसलिए रखा गया है, क्योंकि इसमें अज्ञात या संदिग्ध मूल वाले 278 शब्द गिनाये गये हैं.

2 Etymologies of Yaska, Dr. Siddheswar Verma.

(13) निरुक्त को व्याकरण का पूरक कहा गया है, क्योंकि व्याकरण शब्दों की रचना की व्याख्या करता है, जबकि निरुक्त उनके अर्थ की खोज करता है.

(14) शब्दों के अर्थ बतलाने की दृष्टि से यास्क ने निरुक्त में 600 मंत्रों की व्याख्या की है.

(15) विण्टरनित्ज निरुक्त प्रणेता यास्क को प्रथम भाष्यकार मानते हैं.

(16) डॉ. लक्ष्मणस्वरूप नामक विद्वान् निरुक्त की व्युत्पत्ति–विज्ञान, भाषा विज्ञान एवं अर्थ-विज्ञान के सबसे प्राचीन भारतीय ग्रन्थ से करते हैं.

9. **निरुक्त में उद्धृत पूर्वाचार्य—**

(i) आग्रायण, (ii) औदुम्बरायण, (iii) औपमन्यव, (iv) और्णवाय, (v) कात्थक्य, (vi) कौत्स, (vii) क्रौष्टुकि, (viii) गार्ग्य, (ix) गालव, (x) चर्मशिरा, (xi) तैटीकि, (xii) परुच्छेय, (xiii) पारस्कर, (xiv) भारद्वाज, (xv) भूतांश काश्यप, (xvi) वार्ष्यायणि, (xvii) शतपलाक्षमौद्गल्य, (xviii) शाक-रायत, (xix) शाकपूणि, (xx) शाकपूणि के पुत्र, (xxi) शाकल्य, (xxii) स्थौलाष्ठीवि

10. **निरुक्त के रचनाकाल के सम्बन्ध में विभिन्न मत—**

(i) सत्यव्रत सामश्रयी नामक विद्वान् यास्क का रचनाकाल पाणिनि से पूर्व का मानते हैं और इस आशय से यास्क का कालक्रम 700 ई. पू. माना जाता है.

(ii) महाभारत के शान्तिपर्व (342/72/3) में निरुक्त-कार यास्क का वर्णन मिलता है जिससे उसकी प्राचीनता सिद्ध होती है.

(iii) अधिकांश विद्वानों के मतानुसार यास्क का कालक्रम 700–800 ई. पू. माना जाता है.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौनसा स्रोत ऐतिहासिक साहित्यिक स्रोत नहीं हैं ?
   (A) ब्राह्मण ग्रन्थ (B) बौद्ध ग्रन्थ
   (C) जैनधर्म ग्रन्थ (D) अभिलेख
2. वेदों की संख्या है–
   (A) 4 (B) 2
   (C) 3 (D) 6
3. ऋग्वेद का रचनाकाल है–
   (A) 1000-1500 ई. (B) 1500-1000 ई. पू.
   (C) 1400-700 ई. पू. (D) 700-700 ई.
4. कौनसा ग्रन्थ ऋग्वेद से साम्यता रखता है ?
   (A) ईरानी ग्रन्थ–जेंद अवेस्ता
   (B) वैदिक ग्रन्थ–यजुर्वेद
   (C) चीनी ग्रन्थ–फो-क्यो-की
   (D) चीनी ग्रन्थ–शी-यू-की
5. ऋग्वेद सम्बन्धित है–
   (A) कुषाणों से (B) शवर पुलिन्दों से
   (C) किरातों से (D) आर्यों से
6. सामवेद में मन्त्र है–
   (A) 1550 मन्त्र (B) 1600 मन्त्र
   (C) 2000 मन्त्र (D) 2500 मन्त्र
7. कौनसी शाखा कृष्ण-यजुर्वेद से सम्बन्धित नहीं है ?
   (A) काठक (B) कपिष्ठल
   (C) मैत्रायणी (D) तैत्तिरीय
   (E) वाजसनेयी
8. अथर्ववेद में वर्णित है–
   (A) चिकित्सा, जादू-टोना, धनुर्विद्या, तावीज की विधियाँ
   (B) यज्ञ-अनुष्ठान की विधियाँ
   (C) संगीत सम्बन्धित विधियाँ
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
9. उत्तरवैदिक साहित्य का रचना क्षेत्र है–
   (A) अवध (B) मिथिला
   (C) कुरु-पांचाल (D) सौराष्ट्र
10. ऋग्वेद के अतिरिक्त वेदों की रचना हुई–
    (A) 1000-1000 ई. (B) 500-500 ई.
    (C) 1000-500 ई. पू. (D) 1500-1000 ई.
11. ब्राह्मण ग्रन्थ कहे जाते हैं–
    (A) विश्वकोष (B) वेदों की टीका
    (C) धर्मग्रन्थ (D) ऐतिहासिक ग्रन्थ
12. सुमेलित कीजिए–
    (a) ऋग्वेद (1) गौपथ ब्राह्मण
    (b) यजुर्वेद (2) पंचविंश ब्राह्मण
    (c) सामवेद (3) शतपथ ब्राह्मण
    (d) अथर्ववेद (4) ऐतरेय

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	2	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	3	4	1

13. 'दार्शनिक विचारधारा' का सूत्रपात के स्रोत कहे जाते हैं–
    (A) पुराण (B) उपनिषद्
    (C) आरण्यक (D) वेद
14. निम्नलिखित में से आरण्यक नहीं हैं–
    (A) श्वेताश्वतर (B) ऐतरेय
    (C) तैत्तिरीय (D) मैत्रायणी
15. निम्नलिखित में से उपनिषदों की संख्या है–
    (A) 108 (B) 105
    (C) 100 (D) 10
16. उपनिषदों का रचनाकाल है–
    (A) 800-1500 ई. पू. (B) 800-800 ई.
    (C) 1000-1000 ई. (D) 800-500 ई. पू.
17. उपनिषदों के निष्काम कर्म की भावना आगे चलकर विकसित हुई–
    (A) श्रीमद्भागवतुगीता में
    (B) पुराणों में
    (C) दर्शन में
    (D) उपवेदों में

18. वेदाङ्गों के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से शिक्षा है–
(A) वेदों के मंत्रों का सही उच्चारण
(B) पुस्तकीय ज्ञान
(C) लेखन की जानकारी
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–
(a) यज्ञ सम्बन्धी नियम — (1) धर्मसूत्र
(b) मानव संस्कारों से सम्बन्धित नियम — (2) गृहसूत्र
(c) सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक नियम — (3) श्रौतसूत्र
(d) यज्ञ एवं हवनकाण्ड से सम्बन्धित नियम — (4) शुल्वसूत्र

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	2	1	4
(D)	1	4	3	2

20. शुल्वसूत्र के उपविभाग हैं–
(A) 11 (B) 8
(C) 4 (D) एक भी नहीं

टिप्पणी–शुल्वसूत्र कल्पसूत्रों का एक वर्गीकरण है. कल्पसूत्रों के चार विभाग हैं–श्रौतसूत्र, गृहसूत्र, धर्मसूत्र, शुल्वसूत्र. श्रौतसूत्र के ग्यारह, गृहसूत्र के आठ, धर्मसूत्र के चार उपविभाग हैं. शुल्वसूत्र का कोई उपविभाग नहीं है.

21. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–
(a) अष्टाध्यायी — (1) यास्क
(b) महाभाष्य — (2) वराहमिहिर
(c) वृहसंहिता — (3) पतञ्जलि
(d) निरुक्त — (4) पाणिनी

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	2	1
(C)	2	1	4	3
(D)	1	2	3	4

22. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

उपवेद	प्रतिपादक
(a) आयुर्वेद	(1) ब्रह्मा
(b) धनुर्वेद	(2) विश्वामित्र
(c) गंधर्ववेद	(3) नारद
(d) शिल्पवेद	(4) विश्वकर्मा

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	2	1
(C)	1	2	3	4
(D)	2	3	4	1

23. दर्शनशास्त्र का रचना काल है–
(A) छठी शताब्दी ई. पू. से तीसरी शताब्दी ई. पू.
(B) छठी शताब्दी ई. पू. से छठी शताब्दी ई.
(C) तीसरी शताब्दी से छठी शताब्दी ई.
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

24. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

दर्शनशास्त्र	प्रवर्तक
(a) न्याय दर्शन	(1) बदरायण
(b) वैशेषिक दर्शन	(2) जैमिनी
(c) सांख्य दर्शन	(3) पतञ्जलि
(d) योग दर्शन	(4) कपिल मुनि
(e) पूर्वमीमांसा	(5) कणद ऋषि
(f) उत्तरमीमांसा	(6) गौत्तम ऋषि

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)	(f)
(A)	6	5	4	3	2	1
(B)	3	4	2	1	5	6
(C)	1	2	3	4	5	6
(D)	2	3	4	5	6	1

25. दर्शनों के सम्बन्ध में कौनसा कथन असत्य है ?
(A) न्याय दर्शन तर्क पर आधारित है
(B) वैशेषिक दर्शन पदार्थ पर आधारित है
(C) सांख्य दर्शन नास्तिकता का द्योतक है
(D) योग दर्शन योग से एवं उत्तरमीमांसा, पूर्वमीमांसा व्यावहारिक धर्म एवं ब्रह्म पर आधारित है
(E) उपर्युक्त में से कोई नहीं

26. महाभारत को 'वेदव्यास' ने लिखा–
(A) 950 ई. पू. में हुए भरत युद्ध के आधार पर
(B) प्राचीन भारतीय इतिहास के आधार पर
(C) धार्मिक कल्पनाओं के आधार पर
(D) उपर्युक्त सभी

27. महाभारत का अंतिम संस्करण तैयार हुआ–
(A) गुप्तकाल में (B) मौर्यकाल में
(C) हर्षकाल में (D) वैदिककाल में

28. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

महाभारत संस्करण	पद्य संख्या
(a) जय (प्रारम्भिक)	(1) 8,800
(b) भारत (द्वितीय)	(2) 1,00,000
(c) महाभारत (अंतिम)	(3) 24,000

	(a)	(b)	(c)
(A)	1	3	2
(B)	1	2	3
(C)	3	2	1

29. निम्नलिखित में से 'शतसहस्त्री संहिता' है–
(A) रामायण (B) महाभारत
(C) मनुस्मृति (D) ऋग्वेद संहिता

30. महाभारत के सम्बन्ध में कौनसा कथन असत्य है ?
(A) प्राचीन भारत से लेकर गुप्तकाल तक की सम्पूर्ण जानकारी महाभारत में वर्णित है
(B) महाभारत में विदेह, मगध आदि राज्यों की स्थिति वर्णित है
(C) महाभारत में प्राचीन भारत की विदेशी जातियाँ राजा और राज्य के सिद्धान्त वर्णित है
(D) महाभारत में तत्कालीन इतिहास तिथिक्रम से वर्णित है

31. रामायण के सम्बन्ध में कौनसा कथन सत्य है ?
(A) रामायण की रचना 'वाल्मीकि' ने की
(B) रामायण का सम्पादन पाँच चरणों में हुआ
(C) प्रारम्भ में रामायण में 6000 पद्य थे, जो अन्त में 24,000 पद्य हो गए
(D) रामायण के सम्पादन में पाँचवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य का समय लगा
(E) उपर्युक्त सभी

32. 'प्राचीन भारत का विश्वकोष' जिन्हें कहा जाता है–
(A) उपनिषदों को (B) महाकाव्यों को
(C) ब्राह्मण ग्रन्थों को (D) दर्शनशास्त्रों को
(E) पुराणों को

33. पुराणों की रचना हुई–
(A) वैदिककाल में (B) उत्तर-वैदिककाल में
(C) गुप्तकाल में (D) मौर्यकाल में

34. पुराणों की संख्या है–
(A) अट्ठारह (B) एक सौ आठ
(C) तीस (D) 29

35. वंशानुचरित सम्बन्धित हैं–
(A) पुराणों से (B) वेदों से
(C) सांख्य दर्शन से (D) आयुर्वेद से

36. 'खुद्दक निकाय' है–
(A) जैनधर्म के त्रिरत्न (B) जातकों का एक अंग
(C) अष्टांगिक मार्ग (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

37. जातकों में निम्नलिखित में से वर्णित हैं–
(1) कोशल, अंग, मगध एवं काशी की प्रशासनिक व्यवस्था.
(2) तीसरी-चौथी शताब्दी ई. पू. के प्राचीनतम भारतीयों का इतिहास.
(3) बुद्ध के पूर्व जन्म का वर्णन.
(4) सृष्टि की कहानी.
(A) केवल 1, 2, 3 (B) केवल 2, 3, 4
(C) केवल 1, 3, 4 (D) उपर्युक्त सभी

38. मनुस्मृति का रचनाकाल है–
(A) 200 ई. पू. से 200 ई. के मध्य
(B) 200 ई. पू. से 100 ई. पू. के मध्य
(C) 200 ई. से 500 ई. के मध्य
(D) 200 ई. से 300 ई. के मध्य

39. वर्तमान भारत की दण्ड-संहिता का मौलिक आधार है–
(A) महाभारत (B) रामायण
(C) स्मृतियाँ (D) उपनिषद्

40. 'त्रिपिटिकों' की भाषा है–
(A) प्राकृत (B) पालि
(C) संस्कृत (D) उर्दू

41. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–

(a) सुत्तपिटक	(1) संघ से सम्बद्ध नियम
(b) अभिधम्मपिटक	(2) दार्शनिक सिद्धान्तों का संकलन
(c) विनयपिटक	(3) बुद्ध के धार्मिक विचार एवं प्रवचनों का संग्रह

	(a)	(b)	(c)
(A)	1	2	3
(B)	3	2	1
(C)	2	3	1

(D) कोई नहीं

42. जैन धर्म ग्रन्थों की भाषा है–
(A) प्राकृत भाषा (B) पालि
(C) संस्कृत (D) उर्दू

43. जैन ग्रन्थों के सम्बन्ध में कौनसा कथन सत्य है ?
(A) जैन ग्रन्थों का संकलन गुजरात (वल्लभी) में ईसा की छठी शताब्दी में हुआ
(B) जैन ग्रन्थों में बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश की जानकारी सन्निहित है
(C) जैन धर्म ग्रन्थों से महावीरकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की जानकारी सन्निहित है
(D) उपर्युक्त सभी

44. निम्नलिखित ग्रन्थों एवं लेखकों को सुमेलित कीजिए–

ग्रन्थ	लेखक
(a) समरईच कथा	(1) आचार्य हेमचन्द्र
(b) कुवलयमाला	(2) हरिभद्र
(c) आदि पुराण	(3) उद्योतन सूरी
(d) उत्तर पुराण	(4) जिनसेन
(e) परिशिष्ट पर्व	(5) गुण भद्र

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
(A)	3	4	5	2	1
(B)	1	2	3	4	5
(C)	2	3	4	5	1
(D)	5	4	3	2	1

45. ऐतिहासिक साहित्य 'राजतरंगिणी' एवं 'अर्थशास्त्र' में एक प्रमुख समानता है–
(A) दोनों की भाषा संस्कृत है
(B) दोनों की रचना 12वीं शताब्दी में हुई
(C) दोनों में कश्मीर का इतिहास वर्णित है
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

46. अर्थशास्त्र विभक्त है–
(A) 100 प्रकरणों एवं 10 अधिकरणों में
(B) 15 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में
(C) 5 अधिकरणों एवं 50 प्रकरणों में
(D) 25 अधिकरणों एवं 250 प्रकरणों में

47. कौनसा कथन 'अर्थशास्त्र' से सम्बन्धित है ?
(A) अर्थशास्त्र की रचना कौटिल्य या चाणक्य ने की
(B) अर्थशास्त्र में मौर्यकालीन प्रशासन, चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था का वर्णन है
(C) अर्थशास्त्र में राज्य की उत्पत्ति, राज्य का संगठन, राज्य के अधिक एवं कर्त्तव्यों का वर्णन है
(D) अर्थशास्त्र अरस्तू के पोलिटिक्स एवं मैकियावेली के प्रिंस नामक ग्रन्थ से साम्यता रखता है
(E) उपर्युक्त सभी

48. अर्थशास्त्र का रचनाकाल है–
(A) ईसा की 2-3 शताब्दी
(B) ईसा की प्रथम शताब्दी
(C) ईसा की चतुर्थ शताब्दी
(D) ईसा की पञ्चम शताब्दी

49. पाण्ड्य, चोल, चेर राजवंशों का वर्णन हुआ है–
(A) अर्थशास्त्र में (B) राजतरंगिणी में
(C) संगम साहित्य में (D) बौद्ध धर्म साहित्य में

50. पुरातत्त्व से प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री का वर्गीकरण नहीं है–
(A) स्मारक (B) अभिलेख
(C) मुद्राएँ एवं सिक्के (D) ब्राह्मण ग्रन्थ

टिप्पणी–ब्राह्मण ग्रन्थ साहित्यिक स्रोत है, ये पुरातत्त्व या उत्खनन से प्राप्त नहीं होते.

51. उत्खनन से प्राप्त सामग्री का कालक्रम ज्ञात किया जाता है–
(A) स्मारकों से (B) मुद्राओं से
(C) C-14 से (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

52. एत्तुतोकई है–
(A) संगम साहित्य (B) संस्कृत साहित्य
(C) वैदिक साहित्य (D) उर्दू साहित्य

53. अभिलेखों से सम्बन्धित कौनसा कथन असत्य है ?
(A) लेखन के अनुसार अभिलेख स्तम्भ, ताम्र, शिला एवं गुहा अभिलेखों में वर्गीकृत है
(B) अभिलेख पहले प्राकृत भाषा में एवं इसके बाद क्रमशः संस्कृत तमिल, तेलुगू में लिखे गये
(C) अभिलेख लेखन में सर्वाधिक ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठि लिपि एवं अरामाईक लिपि का प्रयोग किया जाता था
(D) अभिलेखों में राजाओं, उनके वंश का नाम, कालक्रम एवं देश की तत्कालीन परिस्थितियों के बारे में ज्ञात होता है
(E) अभिलेख उत्खनन से प्राप्त होते हैं एवं वे पुस्तक के समान होते हैं

54. कर्ण चौपड गुहा अभिलेख किस काल से सम्बन्धित है ?
(A) मौर्यकाल से (B) हर्षकाल से
(C) शुंगवंश से (D) गुप्तकाल से

टिप्पणी–कर्णचोपड़ गुहा अभिलेख मौर्य वंश का गुहा अभिलेख है, जो गया के पास बराबर की पहाड़ियों में प्राप्त हुआ. इस पहाड़ी में दो अन्य गुहा अभिलेख–(i) सुदामा या नयनग्रोध गुहा अभिलेख, (ii) विश्व झोपड़ी गुहा अभिलेख.

55. 'खारवेल का हाथीगुम्फा' अभिलेख जिस वंश से सम्बन्धित है—
(A) शुंगवंश से (B) गुप्तकाल से
(C) मौर्य काल से (D) चालुक्य वंश से

56. गुप्तकालीन सिक्के उत्खनन से प्राप्त हुए हैं—
(A) बयाना दफीना (B) साँची
(C) चिराँद (D) ब्रह्मगिरि

टिप्पणी–बयाना दफीना (Bayana Hoard) भरतपुर के पास हैं. यहाँ पर गुप्तकाल के 1821 सोने के सिक्के प्राप्त हुए हैं.

57. भारत के प्राचीनतम सिक्के थे—
(A) आहत (B) सोने के सिक्के
(C) चमड़े के सिक्के (D) कोई नहीं

टिप्पणी–आहत सिक्कों का प्राचीन भारत में प्रचलन था. ये सिक्के चाँदी एवं ताँबे के बने होते थे. इन्हें पंच मार्कड सिक्के भी कहते थे. इनका छठी शताब्दी ई. पू. प्रचलन माना जाता है.

58. पुराणों की संख्या किसके अनुसार अट्ठारह है ?
(A) वराहपुराण के अनुसार
(B) मत्स्यपुराण के अनुसार
(C) चार्वाक दर्शन के अनुसार
(D) उपर्युक्त सभी के अनुसार

59. 'बौद्ध धर्म का इतिहास' के लेखक थे—
(A) अलवेरूनी (B) मेरुतुंग
(C) लामा तारानाथ (D) ह्वेनसांग

टिप्पणी–लामा तारानाथ एक तिब्बती यात्री लेखक था. 'बौद्ध धर्म का इतिहास' नाम की उसकी पुस्तक शुंगवंश के 'इतिहास को उत्कृष्ट' ढंग से प्रस्तुत करती है.

60. निम्नलिखित चीनी साहित्य को लेखकों से सुमेलित कीजिए—

चीनी साहित्य	लेखक
(a) फो-क्यो-की	(1) वांग-ह्वे-त्से
(b) सी-यु-की	(2) इत्सिंग
(c) काउ-फा-काओ-सांग-चुन	(3) ह्वेनसांग
(d) फा-युआन-चु-लिन	(4) फाह्यान

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	2	3	4	1
(D)	3	4	1	2

61. तहकीक-उल-हिन्द के लेखक थे–
(A) अबुल हसन (B) अलबेरूनी
(C) अबुल कलाम (D) कोई नहीं

62. मजमल-उत्-तवारीख को लिखा–
(A) अबुल हसनअली (B) अलबेरूनी
(C) अबुल कलाम

63. चीनी यात्री ह्वेनसांग की पुस्तक सी-यु-की का अनुवाद किया–
(A) वाटर्स ने (B) प्रो. रोमिला थापर ने
(C) वी. ए. स्मिथ (D) कैथरीन क्लेमाँ ने

64. 'ध्रुवस्वामिनी मोहर' किस वंश से सम्बन्धित है ?
(A) गुप्त वंश से
(B) मौर्य वंश से
(C) कल्याणी के चालुक्य वंश से
(D) शुंगवंश से

65. विक्रमांकदेवचरितम् में चालुक्य वंश का इतिहास है, जिसे लिखा है–
(A) कल्हण (B) विल्हण
(C) भारवी (D) कालिदास

66. 'एरण स्तम्भ लेख' गुप्तकाल के किस शासक के समय का है ?
(A) विष्णुगुप्त (B) भानुगुप्त
(C) वैन्यगुप्त (D) बुद्धगुप्त

67. 'बाँसखेडा ताम्रपत्र अभिलेख' अवस्थित है–
(A) शाहजहाँपुर (उ. प्र.) में
(B) आजमगढ़ (उ. प्र.) में
(C) चिराँद (बिहार)
(D) नालन्दा (बिहार)

टिप्पणी–बाँसखेड़ा ताम्रपत्र अभिलेख हर्षवर्द्धन से सम्बन्धित था. इसका समय 628 ई. आकलन किया है. हर्षवर्द्धन से सम्बन्धित एक दूसरा अभिलेख मधुवन अभिलेख (आजमगढ़, उत्तर प्रदेश) 631 ई. भी महत्वपूर्ण अभिलेख है.

68. थेरावली है–
(A) जैन ग्रन्थ (B) बौद्ध ग्रन्थ
(C) ब्राह्मण ग्रन्थ (D) वैदिक ग्रन्थ

टिप्पणी–थेरावली मेरुतुंग की रचना है, जो शुंगवंश की ऐतिहासिक स्रोत है.

69. वृहत्कथामंजरी के लेखक है–
(A) सोमदेव (B) ब्रह्मदेव
(C) क्षेमेन्द्र (D) बाणभट्ट

70. 'हिस्टोरिका' के लेखक हैं–
(A) हेरोडोट्स (B) शेक्सपियर
(C) चारस (D) अरिस्टोबुलस

71. 'इण्डिका' के लेखक हैं–
(A) सुंगमुन (B) निआर्कस
(C) चारस (D) मेगस्थनीज

72. निम्नलिखित में से किसमें उत्तरापथ और हखमी साम्राज्य का वर्णन है ?
(A) इण्डिका में (B) हिस्टोरिका में
(C) सि-यु-की में (D) थेरावली में

73. अरबी यात्री सुलेमान की रचना है–
(A) तहकीक-ए-हिन्द
(B) किताब-फुतूह-अल-बिल्दान
(C) सिलसिला-तुल-तवारीख
(D) तारणपंथी

74. कौनसा चीनी यात्री नहीं है ?
(A) फाह्यान (B) ह्वेनसांग
(C) सुंगयुन (D) एरियन

टिप्पणी–एरियन मौर्यकाल में आया यूनानी यात्री लेखक था.

75. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–
(a) प्राकृतिक इतिहास (1) अरिस्टोबुलस
(b) भूगोल (2) इण्डिकोप्लुस्टस
(c) क्रिश्चियन ऑफ द यूनिवर्स (3) टॉलेमी
(d) हिस्ट्री ऑफ द वार (4) प्लिनी

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	2	3	4	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	4	1	2

76. कौनसी रचना कालिदास की नहीं हैं ?
(A) रघुवंश (B) मालविकाग्निमित्रम्
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (D) मुद्राराक्षस

टिप्पणी–मुद्राराक्षस विशाखादत्त ने लिखी है एवं गुप्त वंश का इतिहास इसमें वर्णित है.

77. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–
रचना **लेखक**
(a) ताजुल मासिर (1) फरिश्ता
(b) रोजा तुस्सफा (2) मिनहाजुद्दीन
(c) तबकाते नासिरी (3) मीर खोन्द
(d) तारीखे फरिश्ता (4) हसन निजमी

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	2	3	4	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	4	1	2

78. पंचमार्कड सिक्के कहलाते हैं–
(A) आहत सिक्के (B) सोने के सिक्के
(C) चाँदी के सिक्के (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

79. तमिल लेखक 'परणार' किस काल से सम्बन्धित है ?
(A) मौर्यवंश (B) शुंगवंश
(C) चालुक्य वंश (D) गुप्तवंश

80. फाह्यान का भारत आगमन काल है–
(A) 299 ई. (B) 399 ई.
(C) 499 ई. (D) 399 ई. पू.

उत्तरमाला

1. (D)	2. (A)	3. (B)	4. (A)	5. (D)
6. (A)	7. (E)	8. (A)	9. (C)	10. (C)
11. (B)	12. (C)	13. (C)	14. (A)	15. (A)
16. (D)	17. (A)	18. (A)	19. (C)	20. (D)
21. (A)	22. (C)	23. (A)	24. (A)	25. (E)
26. (A)	27. (A)	28. (A)	29. (B)	30. (D)
31. (E)	32. (E)	33. (C)	34. (A)	35. (A)
36. (B)	37. (A)	38. (A)	39. (C)	40. (B)
41. (B)	42. (A)	43. (D)	44. (C)	45. (A)
46. (B)	47. (E)	48. (A)	49. (C)	50. (D)
51. (C)	52. (A)	53. (E)	54. (A)	55. (A)
56. (A)	57. (A)	58. (A)	59. (C)	60. (A)
61. (B)	62. (A)	63. (A)	64. (A)	65. (B)
66. (B)	67. (A)	68. (A)	69. (C)	70. (A)
71. (D)	72. (B)	73. (C)	74. (D)	75. (A)
76. (D)	77. (A)	78. (A)	79. (A)	80. (B)

विगत वर्षों में पूछे गये प्रश्न

1. श्रीवर ने किस भाषा में तीन सौ पचास पुस्तकों के उद्धरणों की चयनिका संकलित की ?
   (A) तेलुगू (B) मराठी
   (C) संस्कृत (D) कश्मीरी
2. सूची-I (कृतिकार) को सूची-II (कृति) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (कृतिकार)	सूची-II (कृति)
(a) महालिंगदेव	1. चन्न बासवपुराण
(b) नाचना सोमनाथ	2. एकोत्तर सतस्थल
(c) रामराज भूषण	3. उत्तर-हरिवंशमु
(d) विरुपाक्ष पंडित	4. वसुचरितमु

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	4	1
(B)	4	1	2	3
(C)	4	3	2	1
(D)	2	1	4	3

3. सुश्रुत के अध्ययन का केन्द्रविन्दु क्या है ?
   (A) रोगविज्ञान (Pathology)
   (B) शल्यचिकित्सा (Surgery)
   (C) आहारविज्ञान (Dietary science)
   (D) तन्त्रिकातन्त्र (Nervous system)
4. कौनसा सूत्र चार प्रमुख जातियों की स्थितियों, व्यवसायों, दायित्वों, कर्तव्यों तथा विशेषाधिकारों में स्पष्ट विभेद करता है ?
   (A) श्रौतसूत्र (B) गृह्यसूत्र
   (C) धर्मसूत्र (D) शांखायन श्रौतसूत्र
5. **कथन (A)** : कल्हण की राजतरंगिणी में कश्मीर में रेशम-बुनाई के उल्लेख मिलते हैं.
   कथन (R) : रेशम उत्पादन प्राचीनकाल से ही कश्मीर में एक सुविकसित प्रथा थी.
6. किस अभिलेख में कालिदास एवं भारवि दोनों का उनके नामों से उल्लेख मिलता है ?
   (A) समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति
   (B) ककुस्थवर्मा का तालगुंड स्तम्भ अभिलेख
   (C) पुलकेशिन की अयहोल प्रशस्ति
   (D) रुद्रदामन की गिरनार प्रशस्ति
7. सूची–I (प्राचीन राज्य) को सूची–II (आधुनिक क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (प्राचीन राज्य)	सूची-II (आधुनिक क्षेत्र)
(a) दुर्गर	1. असम
(b) कामरूप	2. जम्मू
(c) त्रिगर्त	3. जालंधर
	4. उड़ीसा

कूट :

	(a)	(b)	(c)
(A)	1	2	3
(B)	2	1	3
(C)	1	2	4
(D)	2	1	4

8. मंदसौर अभिलेख का लेखक कौन था ?
   (A) बाणभट्ट (B) वत्सभट्ट
   (C) हरिषेण (D) वीरसेन
9. पउमचरिअम निम्नलिखित में से किस एक से सम्बन्धित है ?
   (A) भारतीय वनस्पति एवं प्राणिजात का एक विवरण
   (B) रामायण का एक जैन भापान्तर
   (C) एक दास पुरुष एवं एक स्त्री के मध्य अभिनीत प्रेमकथा (Love-lore) विवरण
   (D) **निर्वाण** के प्रश्न का एक बौद्ध
10. नीचे दिए गए शिल्पों में से कौन भारत के प्रागैतिहासिक काल के लिए स्रोत सामग्री के रूप में उपयोगी हैं?
    1. जीवाश्म 2. हाथ की कुल्हाड़ियाँ
    3. मृद्भाण्ड 4. अस्थि-अवशेष
    नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए–
    कूट :
    (A) 1, 2 व 4 (B) 1, 2 व 3
    (C) 1, 3 व 4 (D) 2, 3 व 4

उत्तर व्याख्या सहित

1. (C) 2. (A) 3. (B)
4. (C) इसमें सामाजिक नियमों तथा आचार-नियमों का विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है.
5. (C)
6. (C) ऐहोल प्रशस्ति की रचना कालिदास तथा भारवि की काव्य शैली पर की गई है. लेखक ने यह दावा किया है कि उसने यह लिखकर कालिदास तथा भारवि के समान यश प्राप्त किया है.
7. (B) 8. (B) 9. (B) 10. (A) 11. (A)

3

सिन्धु सभ्यता तथा उसका उद्गम; परिपक्व चरण : विस्तार, समाज, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति; अन्य संस्कृतियों से सम्पर्क; ह्रास की समस्याएँ

(Indus Civilization and its Origin; The mature Phase : Extent, Society, Economy and Cultural Contacts with other Cultures; Problems of decline)

सिन्धुघाटी सभ्यता
(The Indus Civilization)

सिन्धुघाटी सभ्यता की जानकारी से पूर्व भू-वैज्ञानिकों एवं विद्वानों का मानना था कि मानव सभ्यता का आविर्भाव आर्यों से हुआ, लेकिन सिन्धुघाटी के साक्ष्यों के वाद उनका भ्रम दूर हो गया और उन्हें यह स्वीकारना पड़ा कि आर्यों के आगमन से वर्षों पूर्व ही प्राचीन भारत की सभ्यता पल्लवित हो चुकी थी. इस सभ्यता को **सिन्धुघाटी सभ्यता** या **सैन्धव सभ्यता** नाम दिया गया.

सिन्धुघाटी सभ्यता को प्राचीनता के आधार पर मिस्र, मेसोपोटामिया की सभ्यता के समकक्ष माना जाता है. नगर और भवन नियोजनशीलता में सिन्धुघाटी सभ्यता अपेक्षाकृत मेसोपोटामिया सभ्यता से व्यवस्थित एवं उत्कृष्टतम थी, अवशेषों के आधार पर यह पाया गया.

सिन्धुघाटी सभ्यता के प्रमुख केन्द्र के रूप में 'हड़प्पा' नामक स्थल सामने आया, जिसके आधार पर सिन्धुघाटी सभ्यता को **'हड़प्पा संस्कृति'** भी कहा जाता है.

हड़प्पा सभ्यता की जानकारी का एकमात्र पुरातत्त्व या उत्खनन से प्राप्त सामग्री ही स्रोत है.

साहित्यिक स्रोत इस सभ्यता के बारे में सन्तोषजनक परिणाम उपलब्ध नहीं करा सके.

सबसे पहले सन् 1875 ई. में प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता **सर अलेक्जेण्डर कनिंघम** को हड़प्पा सभ्यता के अवशेष उत्खनन से प्राप्त हुए. कनिंघम को यहाँ पर लिपिबद्ध मुहर एवं भवनों के अवशेष प्राप्त हुए, जिनके आधार पर इन्होंने प्राचीन नगर की कल्पना की.

कनिंघम को प्राप्त हुई मुहर की लिपि अज्ञात होने के कारण पढ़ी नहीं जा सकी.

सर कनिंघम के पश्चात् 40–50 वर्षों तक हड़प्पा सभ्यता का कोई उत्खनन नहीं हुआ.

सन् 1921 ई. में तत्कालीन पुरातत्त्व निदेशक **सर जॉन मार्शल** के सहयोगी राय बहादुर दयाराम साहनी ने पुनः इस सभ्यता को उत्खनन के माध्यम से प्रकाशित किया. इसके बाद इस दिशा में सघन प्रतिस्पर्धा का प्रस्फुटन हुआ एवं अनेक पुरातत्त्वविदों ने यहाँ पर खुदाई कर कई स्थलों की खोज की.

सन् 1922 ई. में मोहनजोदड़ो में राखालदास बनर्जी ने सन् 1928 एवं 1933 में माधोस्वरूप वत्स ने हड़प्पा में, सन् 1946 में डॉक्टर ह्वीलर ने मोहनजोदड़ो में उत्खनन कर सिन्धुघाटी सभ्यता के अनेक स्थलों को खोजा.

एन. जी. मजूमदार, मैके., एस. आर. राव एम. एस. वत्स, ह्वीलर आदि अनेक देशी-विदेशी पुरातत्वविदों ने हड़प्पा संस्कृति के अन्य कई स्थलों को उत्खनन से प्राप्त किया.

सिन्धुघाटी या हड़प्पा सभ्यता के लगभग 1000 स्थलों को खोजा जा चुका है. खोजे गए स्थल भारतीय उपमहाद्वीप (पाकिस्तान सहित) सिन्धुघाटी एवं सिन्धुघाटी से बाहर अवस्थित है.

हड़प्पा संस्कृति की भौगोलिक सीमा एवं प्रसार

सर्वप्रथम उत्खनन से सिन्धुघाटी सभ्यता के दो स्थल प्रकाश में आए–

1. **हड़प्पा (आधुनिक स्थल पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब प्रान्त में मुलतान जिला)**–हड़प्पा सिन्धुघाटी सभ्यता का प्रथम स्थल है जिसकी खोज सन् 1921 में दयाराम साहनी ने की.

2. **मोहनजोदड़ो या मृतकों का टीला या ढेर** (आधुनिक स्थल लरकाना जिला, सिन्ध पाकिस्तान) सिन्ध नदी के तट पर सन् 1922 में मोहनजोदड़ो सिन्धु सभ्यता के दूसरे स्थल के रूप में आर. डी. बनर्जी (राखालदास बनर्जी) ने खोजा.

हड़प्पा से प्राप्त अवशेष

एक लिपिबद्ध मुहर सन् 1875 ई. में सर अलेक्जेण्डर कनिंघम के उत्खनन से प्राप्त हुई. इसके बाद निम्न अवशेष प्राप्त हुए–

1. 31 मुद्रा छापे .2. दो पहिए का ताँबा वाला रथ
3. फियाँस की मुहर 4. मिट्टी के बरतन
5. टूटे हुए मटके 6. ताँबे व काँसे की मूर्तियाँ

उपर्युक्त सभी अवशेष रावी नदी के किनारे पाकिस्तान के मुलतान जिले में प्राप्त हुए.

मोहनजोदड़ो से प्राप्त अवशेष

1. गढ़ी हुई पक्की ईंटों से बना एक बुर्ज
2. एक विशाल स्नानागार (लम्बाई 12 मी. × चौड़ाई 7 मी. × गहराई 2·5 मी.)
3. एक अन्नागार (गोदीबाड़ा) 45·75 मी. लम्बा × 15·24 मी. चौड़ा)
4. गाड़ी और घोड़ा के टेराकोटा नमूने
5. दाड़ी युक्त पुरुष की चूने के पत्थर से बनी मूर्ति
6. एक कृत्रिम धरातल से अश्व का साक्ष्य

उपर्युक्त अवशेष मोहनजोदड़ो में सिन्धुनदी के पूर्वी किनारे पर हड़प्पा स्थल से 483 किलोमीटर की दूरी पर पाकिस्तान के वर्तमान लरकाना जिले में पाये गये सिन्धी भाषा में मोहनजोदड़ो को 'मृतकों का टीला' कहा जाता है. सम्भवतः खण्डहरों के प्राप्त होने के कारण ही इसे मृतकों का टीला (Mound of the Deads) कहा जाता है.

भौगोलिक सीमा एवं प्रसार

सिन्धुघाटी सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता का विस्तार त्रिभुजाकार में उत्तर से दक्षिण लगभग 1100 कि.मी. एवं पश्चिम से पूर्व 1600 किमी तक था.

इस सभ्यता का विस्तार उत्तर से दक्षिण में 1100 किलोमीटर जम्मू से नर्मदा नदी तक एवं पश्चिम से पूर्व में 1600 किमी बलूचिस्तान के मकरान समुद्र तट से उत्तर पूर्व में मेरठ या सहारनपुर तक फैला हुआ था.

सिन्धुघाटी सभ्यता से सम्बद्ध स्थल निम्नलिखित भागों/क्षेत्रों में पाए गए–

1. बलुचिस्तान 2. सिन्ध
3. पंजाब 4. हरियाणा
5. राजस्थान 6. सौराष्ट्र
7. गुजरात 8. गंगाघाटी
9. काठियाबाड़

सिन्धु घाटी सभ्यता का पूरा क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किलोमीटर है.

मिस्र-मेसोपोटामिया की सभ्यता का विस्तार सिन्धु-सभ्यता की तुलना में आधा था.

हड़प्पा-संस्कृति के प्रमुख स्थल

आर्यों से पूर्व ही हड़प्पा-संस्कृति का आविर्भाव सिन्धु-घाटी में हो चुका था, इसका ज्ञान हड़प्पा संस्कृति के बोध होने पर ही हुआ.

सिन्धुघाटी सभ्यता नगरीय ही नहीं अपितु ग्राम, कस्बे, नगर एवं बड़े ग्रामों की सभ्यता थी.



हड़प्पा संस्कृति की सीमा

सिन्धु सभ्यता के अवशेष सबसे पहले हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में पाये गये, लेकिन इसके बाद इससे सम्बद्ध कई स्थल खोजे गए. क्रमशः खोजे गए सिन्धु सभ्यता से सम्बद्ध स्थल निम्नलिखित हैं–

1. हड़प्पा	8. रंगपुर	15. राखीगढ़ी
2. मोहनजोदड़ो	9. रोजदि	16. वणवाली
3. चन्हुदाड़ो	10. सुरकोटड़ा	17. कालीबंगा
4. कोटदीजी	11. मालवण	18. आलमगीरपुर
5. सुत्कगेनडोर	12. संघोल	19. बडगाँव एवं अम्बखेड़ी
6. डाबरकोट	13. रोपड़	
7. लोथल	14. बाड़ा	20. मीत्तायल

हड़प्पा

सिन्धु सभ्यता के अवशेष सबसे पहले **'हड़प्पा'** में प्राप्त हुए. सन् 1875 ई. में **सर कनिंघम** को इस सभ्यता का ज्ञान

उत्खनन से प्राप्त हुआ एवं उन्हें इस दौरान एक अज्ञात लिपिबद्ध मुहर प्राप्त हुई.

सिन्धु सभ्यता का यह **'हड़प्पा'** नामक स्थल रावी नदी के किनारे मुलतान जिले में है. ऋग्वेद में वर्णित 'हरियूपिया' से हड़प्पा में पूर्ण साम्यता है. हड़प्पा पर तैयार की गई सर **अलेक्जेण्डर कनिंघम** की रिपोर्ट के अनुसार 'हड़प्पा' के खण्डहर एवं टीले निम्नवत् वर्गीकृत थे, जिनका वर्गीकरण स्वयं कनिंघम ने किया था–

टीला 'ए'	टीला 'बी'
टीला 'सी'	टीला 'डी'
टीला 'ई'	टीला 'एफ'
थाना टीला	

सर अलेक्जेण्डर कनिंघम के अनुसार हड़प्पा क्षेत्र 5 किलोमीटर तक फैला हुआ था.

हड़प्पा में सन् 1928 एवं 1933 में **माधोस्वरूप वत्स** ने उत्खनन किया एवं दो टीलों को पाया.

उन्होंने निम्नलिखित दो टीलों पर बिन्दु अंकित किए–

टीला 'जी' टीला 'एच'

हड़प्पा में उत्खनन से प्राप्त अवशेष

टीला 'A', 'B

टीला 'A' और टीला 'B' से उत्खनन के दौरान निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए–

1. टूटे हुए मटके
2. ईंटों का बना हुआ कुआँ
3. नालियाँ
4. मानव अस्थि पंजर
5. मिट्टी की मूर्ति

टीला 'सी'

टीला 'सी' से प्राप्त अवशेष निम्नलिखित हैं–

1. मिट्टी की टूटी हुई मूर्तियाँ
2. अन्नागार (गोदीवाड़ा)
3. मिट्टी और कच्ची ईंटों से बनी गढ़ी भट्टियाँ
4. कारीगरों की बस्ती

टीला 'डी'

टीला 'डी' में खुदाई के दौरान प्राप्त अवशेष निम्नलिखित थे–

1. दूधिया पत्थर की मुद्राएँ
2. ताँबे व काँसे की मूर्तियाँ
3. पक्की मिट्टी से बनी पशुओं की मूर्तियाँ

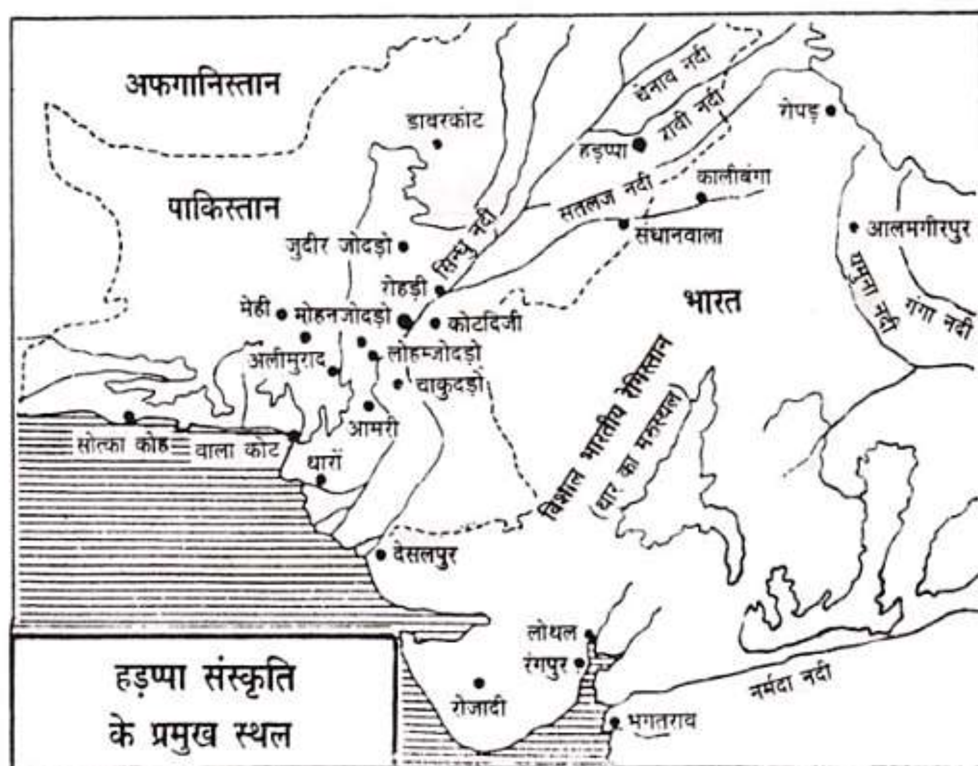
टीला 'ई' एवं 'थाना टीला' के अवशेषों का ज्ञान नहीं हो सका.

टीला 'एफ'

टीला 'एफ' से प्राप्त अवशेषों में प्रमुख रूप से निम्नलिखित हैं–

काँसे के बर्तन खण्डित इमारतें

चित्रित मिट्टी के बरतन



हड़प्पा संस्कृति के प्रमुख स्थल

दो पहिए वाला ताँबे का रथ
चित्रों वाले काँसे के बरतन
भट्टियाँ
विशालघर

टीला 'जी'

निम्नांकित अवशेष टीला 'जी' से प्राप्त हुए हैं–
एक शृंग पशु
फियाँस की बनी मुद्रा छाप
मिट्टी की गोल शलाकाकार 31 मुहरे
मानव की अस्थियाँ
मिट्टी के बरतन

हड़प्पा से अन्य प्राप्त अवशेष

1. हड़प्पा में दुर्ग प्रमुख अवशेष के रूप में पाया गया है.

2. हड़प्पा के दुर्ग में छह कोठार प्राप्त हुए हैं जो ईंटों के बने चबूतरों पर दो पंक्तियों में बने हुए हैं.

3. हड़प्पा में प्राप्त इन दुर्ग कोठारों में प्रत्येक की लम्बाई 15·23 मी. एवं चौड़ाई 6·09 मी है.

4. दो कमरों वाले बैरक भी हड़प्पावशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं.

5. फर्श की दरारों में गेहूँ एवं जौ के दाने प्राप्त हुए हैं.

6. लाल कोटा पत्थर की नग्न पुरुष की प्रतिमा एवं कोटा पत्थर से बनी नृत्य की मुद्रा में एक पुरुष की प्रतिमा प्राप्त हुई है.

मोहनजोदड़ो

यहाँ पर प्राप्त खण्डहर अवशेषों के कारण 'मोहनजोदड़ो' के नाम से इस स्थल को जाना गया.

सिन्धी भाषा के अनुसार मोहनजोदड़ो का अर्थ–'मृतकों का टीला' (Mound of the Deads) होता है.

मोहनजोदड़ो हड़प्पा संस्कृति का सबसे प्रमुख है. यह स्थल सिन्धु नदी के पूर्वी किनारे पर 'हड़प्पा स्थल से 483 किमी दूर पाकिस्तान के लरकाना (सिन्ध) जिले में अवस्थित है.

यह स्थल ढाई वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ था.

सन् 1922 ई. में राखालदास बनर्जी ने एवं 1946 में डॉक्टर ह्वीलर ने मोहनजोदड़ो में उत्खनन कर ऐतिहासिक स्थल के अवशेषों को प्रकाशित किया. मोहनजोदड़ो के खण्डहर में कई टीले अवशेष के रूप में प्राप्त हुए जिनमें मोहनजोदड़ो का सबसे ऊँचा टीला 'स्तूप टीला' है.

काशीनाथ दीक्षित,. एच.आर. ग्रीव्ज एवं माधोस्वरूप वत्स ने मोहनजोदड़ो के टीलों का वर्गीकरण निम्नवत् किया–

टीला 'डी-के' टीला 'एच-आर'

टीला 'वी-एस'

सिन्धु सभ्यता के इस ऐतिहासिक स्थल में विशाल नगर होने के संकेत प्राप्त हुए हैं.

मोहनजोदड़ो में उत्खनन से प्राप्त अवशेष

मोहनजोदड़ो के **खण्डहर के टीलों** से निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. पक्की ईंटों से बना एक बुर्ज

2. भवनों के अवशेष



मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार

3. एक विशाल स्नानागार (40 फीट लम्बाई × 23 फीट चौड़ाई × 8 फीट गहराई)

4. एक विशाल अन्नागार (45·72 मी. लम्बाई × 15·23 मी चौड़ाई)

5. कृत्रिम धरातल से एक घोड़े का अवशेष

6. मेसोपोटामिया में अवशेष के रूप में प्राप्त हुए मुहर के सदृश सिलेण्डर की आकृति की मुहर

7. नाव की आकृति

8. बुने हुए वस्त्र का एक टुकड़ा (सूती कपड़ा)

9. गाड़ी और घोड़ा के टेराकोटा नमूने

10. दूधिया पत्थर से बनी एक दाढ़ी वाले पुरुष की मूर्ति

11. नृत्य की मुद्रा में काँसे से बनी बालिका

मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार का जलाशय दुर्ग के टीले में अवस्थित है, जिसके पास कमरे बने हुए हैं.

स्नानागार के पास के कमरे में एक बड़ा कुआँ पाया गया. जिसका फर्श पक्की ईंटों का बना हुआ था.

मोहनजोदड़ो की नगरीय सभ्यता के पर्याप्त साक्ष्य वहाँ की नालियाँ, सड़कें एवं व्यवस्थित मकानों की संरचना में व्याप्त है. विभिन्न लेखकों के अनुसार मोहनजोदड़ो की जनसंख्या 35,000 से 1,00,000 तक आँकी गई है.

चन्हुदाड़ो

सिन्धु सभ्यता का यह स्थल मोहनजोदड़ो से दक्षिण पूर्व में लगभग 130 किलोमीटर की दूरी पर सिन्धु नदी के किनारे वर्तमान पाकिस्तान में स्थित है.

चन्हुदाड़ो के खण्डहर में तीन टीले खोजे गए हैं. यहाँ पर सिन्धु संस्कृति के साथ-साथ झूकर एवं झांगर हुए के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं.

चन्हुदाड़ो में उत्खनन से प्राप्त अवशेष

चन्हुदाड़ो के अवशेषों में निम्नलिखित हैं–

1. रंगीन चित्रों से युक्त बरतनों के टुकड़े
2. पत्थर के मटके
3. मुद्राएँ
4. शंख और हाथी दाँत की वस्तुएँ
5. आभूषण एवं मनके बनाने का कारखाना
6. पकाई गई ईंटों के भवन
7. दवात जैसा छोटा पात्र
8. लोहे की वस्तुओं के निर्माण के लिए शिल्प केन्द्र

सिन्धु सभ्यता के स्थलों में एकमात्र दुर्गरहित स्थल चन्हुदाड़ो था. यहाँ पर प्राप्त हुए अवशेष हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए अवशेषों के समान ही थे.

भवन एवं बरतनों के अवशेषों के आधार पर यहाँ छोटी बस्ती या ग्राम होने के साक्ष्य मिलते हैं.

कोटदीजी

सिन्धु सभ्यता का 'कोटदीजी' नामक स्थल सिन्ध में खैरपुर से दक्षिण की ओर मोहनजोदड़ो से 40 किमी दूर अवस्थित है. यहाँ पर प्राप्त हुए अवशेष हड़प्पा संस्कृति के अवशेषों से साम्यता रखते हैं.

कोटदीजी नामक सिन्धु सभ्यता के इस स्थल में ऐसे अनेक अवशेष पाए गए हैं जिन्हें अन्यत्र नहीं खोजा गया.

कोटदीजी में उत्खनन से प्राप्त अवशेष

सिन्धु सभ्यता के इस स्थल में उत्खनन से निम्नलिखित अवशेष साक्ष्यस्वरूप प्राप्त हुए हैं–

1. चित्र-धूसरितभाण्ड
2. मुहर एवं मुद्राएँ
3. बाणाग्र
4. पत्थरों द्वारा निर्मित मकान की नींव
5. कच्ची ईंट से निर्मित भवन

सुत्कगेनडोर

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह स्थल पाकिस्तान में कराची से लगभग 480 किमी पश्चिम एवं मकरान समुद्र तट से 56 किमी उत्तर में दाश्त नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित है.

उत्खनन के दौरान यहाँ पर दुर्लभ अवशेषों की खोज की गई. 'जॉर्ज डेल्स' नामक विद्वान् ने यहाँ पर सिन्धु सभ्यता के तीन चरणों की खोज की थी.

सुत्कगेनडोर में व्यावसायिक स्थल होने के पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं.

जॉर्ज डेल्स के अनुसार–"यह स्थल बन्दरगाह के रूप में सिन्धु सभ्यता एवं बेबीलोन के बीच सामुद्रिक व्यापार का प्रमुख केन्द्र था."

सुत्कगेनडोर में अवशेष के रूप में एक बन्दरगाह एक दुर्ग एवं नगरीय सभ्यता के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.

डाबरकोट

सिन्धुघाटी सभ्यता का 'डाबरकोट' नामक स्थल कांधार व्यापारिक मार्ग पर सिन्धु नदी से लगभग 200 किमी दूर लोरालाई के दक्षिण में 'झोब' नामक घाटी' में खोजा गया.

'डाबरकोट' नामक सिन्धु सभ्यता के इस स्थल में नगर योजना के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त हुए हैं. डाबरकोट में प्राक्-हड़प्पा-संस्कृति, हड़प्पा-संस्कृति एवं हड़प्पोत्तरकालीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं–तीनों सभ्यताओं के अवशेष प्राप्त होने के कारण इसका सर्वाधिक महत्त्व है.



हड़प्पा संस्कृतिकालीन पशुपति शिव की मुद्रा

लोथल

हड़प्पा या सिन्धुघाटी सभ्यता का प्रमुख स्थल माना जाने वाला लोथल गुजरात राज्य में खम्भात खाड़ी के पास स्थित है.

लोथल में खुदाई के दौरान निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. मुहर
2. भाण्ड
3. उपकरण
4. भवन एवं दुकानों के खण्डहर
5. गोदीबाड़ा (अन्नागार)
6. ईंटों से बना एक कृत्रिम बन्दरगाह
7. धान की खेती एवं चावल का भूसा
8. अग्निवेदियों के साक्ष्य
9. कब्रिस्तान में पुरुष-महिलाओं को एक साथ गाड़ने के साक्ष्य
10. अश्व का टेराकोटा नमूना
11. मनके बनाने का कारखाना
12. शंख के आभूषण निर्माण के साक्ष्य.

लोथल नामक इस सिन्धु सभ्यता के स्थल की खुदाई एस. आर. राव ने सन् 1957 में की थी. यहाँ पर गोदीबाड़ा एवं भवन तथा दुकानों के भग्नावशेष से बस्ती होने के प्रमाण मिलते हैं.

लोथल में प्राप्त विभिन्न साक्ष्य नगर नियोजनशीलता के व्यवस्थित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं.

रंगपुर

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह स्थल भादर नदी के किनारे लोथल से लगभग 50 किलोमीटर उत्तर-पूर्व और अहमदाबाद के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है.

रंगपुर का उत्खनन एस. आर. राव द्वारा सन् 1954 में किया गया. पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार लोथल के बाद रंगपुर में हड़प्पा सभ्यता का आविर्भाव हुआ. यहाँ पर उत्खनन से प्राप्त कई अवशेष हड़प्पा सभ्यता के सदृश थे. प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता एस. आर. राव के अनुसार–"रंगपुर की सभ्यता की स्थापना लोथल के बाढ़ पीड़ितों के आकर बस जाने से हुई है."

उत्खनन के दौरान रंगपुर से निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए–

1. कच्ची ईंटों के सुरक्षा दुर्ग
2. मिट्टी के चित्रित बर्तन
3. हड्डी एवं हाथी दाँत के आभूषण
4. विशिष्ट नियोजित ईमारतें
5. नालियाँ
6. चावल की भूसी

रंगपुर में प्राप्त अवशेष हड़प्पा की ह्रासोन्मुख सभ्यता को प्रदर्शित करते हैं.

रोजदि

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह स्थल राजकोट से दक्षिण में भादर नदी के किनारे रंगपुर नामक ऐतिहासिक स्थल के निकटस्थ प्रदेश में स्थित है.

रोजदि नामक इस स्थल में भयंकर अग्निकाण्ड होने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं. मकानों के चारों ओर लगी पत्थरों की घेराबन्दी रोजदि के असुरक्षित होने के प्रमाण की पुष्टि करती हैं.

इस तरह की घेराबन्दी सिन्धुसभ्यता के किसी भी स्थल में नहीं पाई गई है.

उत्खनन के दौरान सिन्धुघाटी सभ्यता के 'रोजदि' नामक इस स्थल से निम्न अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. लाल एवं काली मिट्टी के बरतन
2. विभिन्न आभूषण
3. नगर व्यवस्था के पर्याप्त साक्ष्य
4. भीषण अग्निकाण्ड के साक्ष्य

सुरकोटड़ा

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह स्थल कच्छ जिले में खोजा गया था. इस स्थल पर एक बड़ी चट्टान से ढकी कब्र प्राप्त हुई. सुरकोटड़ा के अधिकतर अवशेष हड़प्पा संस्कृति के अन्य अवशेषों से पूर्ण रूप से मिलते हैं.

विभिन्न साक्ष्यों एवं अनुसंधानों के आधार पर स्पष्ट होता है कि सुरकोटड़ा की संस्कृति हड़प्पा संस्कृति का विकसित स्वरूप था.

उत्खनन से सुरकोटड़ा में निम्न अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. अग्निकाण्ड के साक्ष्य
2. हड्डियों से भरा मिट्टी एवं ताँबे का कलश
3. चित्र एवं रंगों से सज्जित मिट्टी के वर्तन
4. आभूषण
5. चट्टान से ढकी कब्र
6. गढ़ी एवं आवासीय भवनों के भग्नावशेष

सुरकोटड़ा की सभ्यता रोजदि की सभ्यता से कुछ हद तक साम्यता रखती है.

मालवण

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह ऐतिहासिक स्थल ताप्ती नदी के मुहाने पर काठियावाड़ के सूरत जिले में स्थित है. मालवण में प्रमुख व्यापारिक केन्द्र होने के प्रमाण मिले हैं. यहाँ पर उत्खनन से निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. एक नहर
2. एक बन्दरगाह
3. मिट्टी के बरतन
4. कच्ची ईंटों का चबूतरा
5. आभूषण

विभिन्न पुरातत्त्ववेत्ताओं एवं उत्खनन के दौरान पाए गए साक्ष्यों के आधार पर मालवण का सिन्धुघाटी सभ्यता के बन्दरगाह होने के पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.

संघोल

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह स्थल चण्डीगढ़ से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. संघोल से प्राप्त अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता के अन्तिम चरण के अवशेष प्रतीत होते हैं.

सिन्धुघाटी सभ्यता के संघोल नामक स्थल से प्राप्त हुए अवशेष निम्नलिखित हैं–

1. ताम्र एवं पत्थर के उपकरण
2. हथियार एवं मुहर
3. मिट्टी के वर्तन
4. मिट्टी से बने आभूषण
5. कुटी हुई मिट्टी एवं कच्ची ईंटों से बनी मकान की दीवारें

संघोल नामक ऐतिहासिक स्थल से रोपड़ एवं बाड़ा (पंजाब) के समान ही अवशेष मिले हैं. यहाँ से प्राप्त साक्ष्य सिन्धुघाटी सभ्यता के लुप्त होने के समय की पुष्टि करते हैं.

रोपड़

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह ऐतिहासिक स्थल पंजाब में शिवालिक पहाड़ियों में अवस्थित है. रोपड़ में हड़प्पा सभ्यता के दो चरण प्राप्त हुए हैं.

इस स्थल पर सिन्धघाटी सभ्यता के सदृश निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. कच्ची ईंटों से निर्मित मकान
2. कुटी हुई मिट्टी एवं कच्ची ईंट की मकान की दीवारें
3. हड़प्पा के समान मिट्टी के आभूषण
4. ताम्र कुल्हाड़ी
5. एक मुहर

पूर्वोक्त अवशेषों के अतिरिक्त रोपड़ में हड़प्पा स्थल से प्राप्त अवशेषों की तरह ही मिट्टी के बरतन उत्खनन से प्राप्त हुए हैं.

बाड़ा

हड़प्पा सभ्यता का यह ऐतिहासिक स्थल पंजाब में रोपड़ के निकट स्थित है.

यहाँ पर निम्नलिखित अवशेष उत्खनन के दौरान प्राप्त हुए–

1. पत्थर से निर्मित मकान की नींव
2. कच्ची ईंट की दीवारें
3. मिट्टी के बरतन
4. मिट्टी के आभूषण

यहाँ से प्राप्त अवशेष हड़प्पा सभ्यता के ह्रासोन्मुख स्वरूप को प्रदर्शित करते हैं. बाड़ा से प्राप्त मिट्टी के बरतन कोटदीजी एवं कालीबंगा के हड़प्पा पूर्व संस्कृति से समानता रखते हैं.

राखीगढ़ी

हड़प्पा सभ्यता का यह स्थल जींद के निकटस्थ क्षेत्र में अवस्थित है.

यहाँ पर हड़प्पा संस्कृति से पूर्व एवं हड़प्पा संस्कृति के बाद के अवशेष साक्ष्य के रूप में पाए गए हैं. राखीगढ़ी नामक इस ऐतिहासिक स्थल में उत्खनन के दौरान एक 'मुहर' प्राप्त हुई थी.

यहाँ से प्राप्त मुहर लिपिबद्ध थी, लेकिन अज्ञातलिपि होने के कारण इसे पढ़ा जाना सम्भव नहीं हो सका.

वणवाली

सिन्धु सभ्यता का यह ऐतिहासिक स्थल हरियाणा राज्य के हिसार जिले में स्थित है. आर. एस. विष्ट द्वारा वणवाली नामक इस स्थल की खुदाई सन् 1973-74 में कराई गई.

वणवाली में उत्खनन के दौरान निम्नलिखित अवशेष साक्ष्य स्वरूप प्राप्त हुए हैं–

1. मिट्टी के बरतन
2. ताँबे के हथियार
3. ताम्र उपकरण
4. मनके
5. बाणाग्र
6. तौलने के बाँट
7. लिपिबद्ध मुहरें
8. मूर्तियों के अवशेष

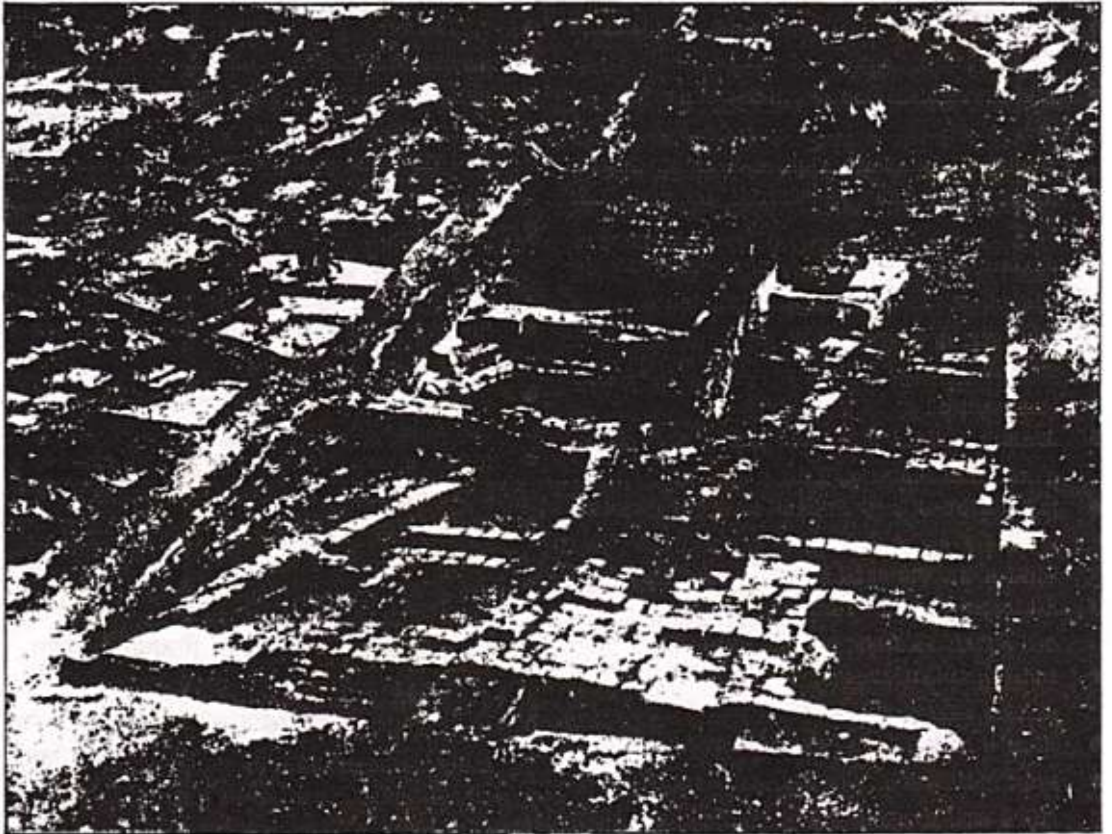
वणवाली में सुरक्षा के लिए घेराबन्दी, किलाबन्दी एवं हड़प्पा संस्कृति के नागरिक स्वरूप के पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.

आलमगीरपुर

सिन्धु सभ्यता का यह स्थल मेरठ (उ.प्र.) के निकट हिन्डन नदी के किनारे पर अवस्थित है. सिन्धु सभ्यता के गंगा-यमुना दोआब में पाया जाने वाला यह अपनी किस्म का पहला स्थल है. यहाँ पर खुदाई के दौरान मिट्टी के बरतन, आभूषण एवं मिट्टी से बनी मकान की दीवारें खोजी गई हैं. उत्खनन से आलमगीरपुर में प्राप्त अवशेष हड़प्पा संस्कृति के पतनोन्मुख साक्ष्यों को प्रदर्शित करते हैं.

कालीबंगा

सिन्धुघाटी सभ्यता का यह ऐतिहासिक स्थल[1] राजस्थान राज्य के गंगानगर जिले में स्थित है. कालीबंगा घग्घर नदी के किनारे पर स्थित है. पुरातत्त्वविदों का मानना है कि कालीबंगा,



हड़प्पा संस्कृति के कालीबंगा स्थल का उत्खनित दृश्य

1 गंगानगर एवं हनुमानगढ़ दोनों की सीमा में होने के कारण कालीबंगा की स्थिति कई पुस्तकों में हनुमानगढ़ में भी बतलाई जाती है.

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के बाद सैन्धव साम्राज्य की तीसरी राजधानी थी. कालीबंगा में उत्खनन से लकड़ी की नालियाँ प्राप्त हुई हैं, जो अन्यत्र कहीं भी नहीं खोजी गई हैं.

यहाँ से प्राप्त आभूषण, उपकरण, हथियार एवं अन्य सामग्री पूर्णतः हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से मिलती हुई थी.

कालीबंगा में उत्खनन से निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. मिट्टी के बरतन
2. लकड़ी की नालियाँ
3. आभूषण
4. हथियार (हड़प्पा सदृश)
5. हल चला मेड़ों युक्त खेत
6. अग्निवेदियों से युक्त महत्वपूर्ण स्थल
7. कच्ची ईंटों के चबूतरे
8. सड़कों के अवशेष

कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ–'काली चूड़ियाँ' होता है. कालीबंगा में मातृदेवी की आकृतियाँ या मूर्तियाँ प्राप्त नहीं हुई हैं. ऐसा किसी स्थल पर नहीं हुआ. कालीबंगा सिन्धु-सभ्यता का आयताकार नगर है जो प्राक् हड़प्पाकालीन संस्कृति के साक्ष्यों का परिचायक है. सिन्धु सभ्यता का यह सबसे विशिष्ट स्थल है.

बड़गाँव और अम्बखेड़ी

सिन्धु सभ्यता के ये दोनों स्थल उत्तर प्रदेश राज्य के सहारनपुर जिले में यमुना की सहायक नदी मस्करा के तट पर स्थित है.

बड़गाँव एवं अम्बखेड़ी ऐसे सिन्धु सभ्यता के स्थल हैं जो कुछ वर्षों पूर्व उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. खुदाई के दौरान प्राप्त होने वाले अवशेष हड़प्पा संस्कृति से पर्याप्त साम्यता रखते हैं.

बड़गाँव और अम्बखेड़ी से साक्ष्य बतौर निम्नलिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. काँचली मिट्टी की चूड़ियाँ
2. ताँबे के छल्ले
3. मिट्टी के चित्रित बर्तन
4. मुहर एवं हड्डियों से भरे मिट्टी के कलश

यहाँ पर नागरिक व्यवस्था से सम्बन्धित कोई भी प्रमाण दृष्टिगत नहीं हुए हैं.

मीत्ताथल

मीत्ताथल हरियाणा राज्य के भिवानी नामक स्थान पर खोजा गया सिन्धु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख स्थल है. इस स्थल से हड़प्पा संस्कृति के पतनोन्मुख एवं विकासशील संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए हैं. यहाँ पर दो बार उत्खनन हुआ है.

प्रथम बार उत्खनन से प्राप्त अवशेष

1. गढ़ी
2. निचले नगरों की योजना एवं सुनियोजित नगर विन्यास के साक्ष्य.

दूसरी बार उत्खनन से प्राप्त अवशेष

1. कच्ची मिट्टी की ईंटें
2. खण्डित ईंटें
3. हड़प्पा के सदृश मिट्टी के वर्तन
4. ताम्र उपकरण एवं हथियार
5. हाथीदाँत के आभूषण एवं मिट्टी के खिलौने.

मीत्ताथल से प्रथम उत्खनन में सिन्धु सभ्यता के विकसित स्वरूप एवं द्वितीय उत्खनन में ह्रासोन्मुख सभ्यता के साक्ष्य अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं.

सिन्धु सभ्यता का काल निर्धारण

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में उत्खनन के दौरान प्राप्त सप्तस्तरीय भग्नावशेषों को आधार मानकर पुरातत्ववेत्ताओं ने सिन्धु सभ्यता का कालक्रम 3250 से 2750 ई. पू. निर्धारित किया है. प्रसिद्ध विद्वान् एच. हेरास ने नक्षत्रीय आधार पर सिन्धु घाटी सभ्यता का कालक्रम 5600 ई. पू. निर्धारित किया है, जबकि पुरातत्त्ववेत्ता सी. एल. फाब्री ने सिन्धुघाटी सभ्यता का कालक्रम 2800 से 2500 ई. पू. निश्चित किया है.

सर मार्टिमर ह्वीलर के अनुसार सिन्धु घाटी सभ्यता का कालक्रम 2500-1500 ई. पू. आँका है.

मार्शल नामक पुरातत्ववेत्ता सिन्धुघाटी सभ्यता का विकास तीसरी सहस्त्राब्दी ई. पू. हुआ मानते हैं.

आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति (C-14) के अनुसार सिन्धु-घाटी सभ्यता का काल 2300–1750 ई. पू. के मध्य निर्धारित किया है.

1750 ई. पू. तक यद्यपि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की सभ्यता नष्ट हो चुकी थी, लेकिन अन्य स्थलों पर इस काल में ह्रासोन्मुख सभ्यता विद्यमान थी.

यहाँ पर दृष्टव्य है कि सिन्धुघाटी सभ्यता के ऐतिहासिक स्थल रंगपुर (गुजरात) में 800 ई. पू. भी सभ्यता के साक्ष्य विद्यमान थे.

विभिन्न उत्खननों, विद्वानों, पुरातत्त्ववेत्ताओं एवं आधुनिक अनुसंधानों के आधार पर हड़प्पा संस्कृति के पूर्ण-काल को निम्नलिखित तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है–

(i) आरम्भिक काल–2500–2250 ई. पू.

(ii) प्रसारण काल 2250–1950 ई. पू.

(iii) ह्रासोन्मुख काल 1950–1750 ई. पू.

सिन्धुघाटी सभ्यता का स्वरूप

पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसंधान एवं उत्खनन के दौरान पाए गए अवशेषों के आधार पर सिन्धुघाटी सभ्यता के स्वरूप को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है–

(i) शान्तिजन्य सभ्यता

(ii) नगरीय सभ्यता

(iii) व्यापारिक सभ्यता

सिन्धुघाटी सभ्यता में खुदाई के दौरान युद्ध के लिए प्रयुक्त होने वाले हथियारों की संख्या कम और घरेलू कार्यों में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की संख्या अधिकतम थी. युद्ध के साक्ष्य उपलब्ध नहीं होने के कारण सिन्धु सभ्यता को **शान्तिमूलक या शान्तिजन्य सभ्यता** के रूप में स्वीकृत किया है.

उत्खनन से विशाल स्नानागार, अन्नागार–मोहनजोदड़ो में, एवं हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, सुरकोटड़ा आदि स्थलों पर गढ़ी तथा निचले शहरों का अवशेष के रूप में प्राप्त होना, विशिष्ट तरीके से सड़कों एवं नालियों का बनी हुई अवस्था में प्राप्त होना–सिन्धुघाटी सभ्यता के स्वरूप को नगरीय सभ्यता के रूप में प्रदर्शित करती है.

कालीबंगा में खेत जोतने के प्रमाण, राणाघुंडई, सुरकोटड़ा में पशुपालन के प्रमाण, चन्हूदाड़ो में मनके बनाने का कारखाना, मीत्ताथल में कुम्भकारी के, तुर्कमेनिस्तान सीरिया (रास, समरा), ईरान (सूसा) में मुहर, बरतन मनके हाथीदाँत की छड़ों का उत्खनन के दौरान प्राप्त होना सिन्धुघाटी सभ्यता को व्यापारिक सभ्यता के रूप में प्रदर्शित करते हैं.

सिन्धु सभ्यता का उद्गम

कर्नल स्यूअल एवं डॉ. गुह ने सिन्धुघाटी सभ्यता में प्राप्त हुए अस्थिपिंजरों का विशिष्ट अध्ययन कर इस सभ्यता की प्रजातियों को चार भागों में वर्गीकृत किया है–

1. आदि आस्ट्रोलॉयड
2. मंगोलियन
3. भूमध्यसागरीय
4. अल्पाईन

सिन्धुघाटी सभ्यता के मूल में भूमध्यसागरीय प्रजाति को उत्तरदायी माना गया है, जिसे आइबेरियन भी कहा जाता है. द्रविड़ नाम की जाति आइबेरियन प्रजाति की एक शाखा है. मार्शल के उत्खनन से मोहनजोदड़ो में सात स्तर के भवन निर्माण खोजे गए हैं इसी के फलस्वरूप इनके अवशेषों को **'सप्तस्तरीय भग्नावशेष'** कहा जाता है.

सप्तस्तरीय भवनों में एक अवशेष प्रारम्भिक काल का, तीन मध्य एवं तीन अन्तिमकालिक चरणों के प्राप्त हुए हैं.

सिन्धुघाटी सभ्यता का विकास क्रमिक चरणों में हुआ. सिन्धुघाटी सभ्यता के उद्भव एवं विकास के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अपने मत प्रस्तुत किए हैं जिन्हें सिन्धुघाटी सभ्यता के मौलिक तत्त्व कहा जाता है.

सिन्धुघाटी सभ्यता के संस्थापक : द्रविड़

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में तथा सिन्धुघाटी के अन्य स्थलों पर प्राप्त मानव खोपड़ियों एवं अस्थिपंजरों का डॉ. गुह एवं कर्नल स्युअल ने अध्ययन एवं अनुसंधान कर स्पष्ट किया कि सिन्धुघाटी सभ्यता में भूमध्यसागरीय प्रजाति की प्रधानता थी, जिसे 'आइबेरियन' कहा जाता था. द्रविड़ जाति इस आइबेरियन प्रजाति की एक शाखा थी. द्रविड़ों की लिपि के समान सिन्धु लिपि का होना, द्रविड़ जाति के समान धार्मिक गतिविधियों का होना, एवं अन्य सांस्कृतिक समानताओं के आधार पर भारतीय बहुलसंख्यक प्रजाति द्रविड़ों को सिन्धुघाटी सभ्यता का संस्थापक माना गया है.

सिन्धुघाटी सभ्यता नगरीय सभ्यता है और यह द्रविड़ों से नहीं मिलने वाली सम्भावना है, अतः कई विद्वान् द्रविड़ों को सिन्धुघाटी सभ्यता के संस्थापक नहीं मानते.

सिन्धुघाटी सभ्यता के संस्थापक : आर्य

प्रारम्भिक काल में आर्यों का पश्चिमोत्तर प्रदेश एवं सप्त-सैन्धव प्रदेश में बसे होना एवं ऋग्वेदोक्त नदियों के समीप सिन्धुघाटी सभ्यता के स्थलों का अवस्थित होना–ये दो प्रमुख कारण हैं, जिसके फलस्वरूप सिन्धुघाटी सभ्यता का संस्थापक आर्यों को माना जाता है.

आर्यों का काल 1500–600 ई. पू. होने एवं सिन्धु-सभ्यता का काल 2500–1750 ई. पू. होने की स्थिति में आर्यों को सिन्धुघाटी सभ्यता का संस्थापक नहीं कहा जा सकता.

सिन्धुसभ्यता और मेसोपोटामिया सभ्यता

सर ह्वीलर के अनुसार, "भारत में नागरिक सभ्यता का कारण मेसोपोटामिया सभ्यता है."[1]

1 डॉ. राजबली पांडेय–प्राचीन भारत (पृ. 34)

लियोनार्ड वूली, गॉर्डन चाईल्ड, डी. डी. कौशाम्बी एवं सर मॉर्टिमर ह्वीलर के मतानुसार मेसोपाटामिया सभ्यता के प्रभाव के कारण ही सिन्धुघाटी सभ्यता का आविर्भाव हुआ.

डी. डी. कौशाम्बी का मानना है कि हड़प्पा, मिस्र और मेसोपोटामिया सभ्यता के संस्थापक जो भी हों, एक ही प्रजाति, एक ही मूल के व्यक्ति हैं.

आर. ई. एम. ह्वीलर के अनुसार, "सिन्धु की नगरीय सभ्यता के मूल में मेसोपोटामिया सभ्यता ही थी."

"India received the idea of city life from Mesopotamia where it was well established in the Third Millennium B.C." —R.E.M. Wheeler.

प्रसिद्ध यूरोपियन विद्वान् जी. एच. गॉर्डन के अनुसार– "यह सोचना असम्भव है कि हड़प्पा संस्कृति का उद्‌भव ग्राम्य संस्कृति से हुआ ...... ऐसा हो सकता है कि जलमार्ग से मेसोपोटामिया सभ्यता के निवासी बलूचिस्तान आए और वहाँ की ग्राम्य संस्कृति को प्रभावित किया. उन्हीं मेसोपोटामिया के निवासियों ने वहाँ आर्थिक तन्त्र को प्रभावित कर ग्राम्य सभ्यता पर अपना प्रभाव स्थापित किया, जिसके फलस्वरूप नगरीय सभ्यता के विकास में दिशा मिली."

"It is impossible to think that the cities of Harappa grew out or Village culture......It is more likely that the village cultures or Baluchistan were influenced by the Foreigners who came there through the water-routes from Mesopotamia. They controlled the economic system & imposed their advanced culture on the villages which led to the growth of towns." —*G. H. Gordon*

हड़प्पा संस्कृति पर मेसोपोटामियाई प्रभाव के तर्क को प्रस्तुत करने वाले विद्वानों का मानना है कि नगरीय सभ्यता का विकास सर्वप्रथम मेसोपोटामिया के सुमेर में, इसके बाद मिस्र में और अन्त में भारत की सिन्धुघाटी सभ्यता में हुआ.

प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता एच. डी. सांकलिया ने उत्खनन के दौरान पाए अवशेषों के आधार पर स्पष्ट किया कि– बलूचिस्तान के अवशेष और सुमेर के अवशेषों में इस तरह के चबूतरे प्राप्त हुए हैं जो नीचे से चौड़े एवं ऊपर से संकरे हैं– इस तरह की सभ्यता को उन्होंने मेसोपोटामियाई प्रभाव कहा है.

सिन्धुघाटी एवं मेसोपोटामिया में साम्यता का कारण व्यापारिक प्रभाव है.

सिन्धु लिपि में 400 चिह्न थे एवं चित्रात्मक स्वरूप था, तथा सुमेर लिपि में कीलनुमा 900 चिह्न थे अतः दोनों में लिपि को आधार मानने पर पर्याप्त विभेद स्पष्ट है.

दोनों सभ्यताओं के अवशेष भी असमान हैं, अतः अधिकांश विद्वान् मेसोपोटामियाई सभ्यता को सिन्धु सभ्यता के उद्‌भव के मूल में नहीं स्वीकारते.

सिन्धुघाटी सभ्यता और बलूची-ग्राम्य सभ्यता

कुछ विद्वानों का मानना है कि सिन्धुघाटी सभ्यता का विकास ईरानी बलूची-ग्राम्य संस्कृतियों के योगदान से हुआ.

प्रसिद्ध विद्वान् फेयर सर्विस के अनुसार, "सिन्धुघाटी सभ्यता क्रमिक रूप में विकसित हुई है एवं इसमें ईरान-बलूची ग्राम्य संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगत होता है."

दक्षिणी-मध्य बलूचिस्तान, दक्षिणी-अफगानिस्तान, सिन्धु, राजस्थान, गुजरात के उत्खनन के अवशेषों के आधार पर फेयर सर्विस ने स्पष्ट किया कि ईरानी-बलूची ग्राम्य संस्कृतियों का धार्मिक कारणों से भारतीयकरण हुआ और इसके बाद यह नगरीय सभ्यता के रूप में सिन्धु घाटी सभ्यता में विकसित हुई. ब्रिजेट, ऑलचिन, रोमिला थापर जैसे इतिहासकार भी बलूची-ग्राम्य सभ्यता के क्रमिक विकास से सिन्धु सभ्यता का उद्‌भव मानते हैं.

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में उत्खनन से प्राप्त अवशेष प्राक् हड़प्पाकालीन संस्कृति में दृष्टिगत हो चुके हैं. राणा घुण्डई, चन्हुदाड़ो, किलीगुल मोहम्मद, आमरी, कोटदीजी एवं अन्य स्थलों पर प्राप्त अवशेषों के आधार पर निर्धारित संस्कृति हड़प्पा संस्कृति से पूर्व भी विद्यमान थी.

सिन्धुसभ्यता के भारतीय उद्‌भव एवं विकास की अवधारणा

विद्वान् एवं पुरातत्त्वविदों के एक समूह के अनुसार सिन्धुघाटी सभ्यता का उद्‌भव एवं क्रमिक विकास भारत में हुआ.

पुरातात्त्विक सर्वेक्षण एवं उत्खनन के दौरान राजस्थान में बीकानेर के निकट सोथी एवं गंगानगर के कालीबंगा नामक स्थलों से प्राप्त अवशेष एवं मृद्‌भाण्ड प्राक्हड़प्पाकालीन संस्कृति से पूरी तरह मिलते हैं.

प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् अमलानन्द घोष के अनुसार सिन्धुघाटी सभ्यता के उद्‌भव में सोथी संस्कृति का पूर्ण योगदान रहा है. नरकंकालों एवं खोपड़ियों के विश्लेषण के बाद अमलानन्द घोष ने स्पष्ट किया कि मोहनजोदड़ो के निवासी आधुनिक सिन्धवासियों, हड़प्पा के निवासी आधुनिक पंजाबियों एवं लोथल के लोग वर्तमानकालिक गुजरातियों से मिलते हैं.

खेतड़ी अंचल के निकट राजस्थान के झुन्झुन क्षेत्र में गणेश्वर नामक स्थल पर मिट्टी के बर्तन, ताम्र उपकरण एवं हथियार उत्खनन के दौरान अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं. इनका काल 2800–2200 ई. पू. आँका गया है. गणेश्वर नामक इस स्थल से प्राप्त अवशेष सिन्धु सभ्यता के अवशेषों

से पूरी तरह मिलते हैं. इसी के क्रमिक विकसित स्वरूप को भी विद्वान् सिन्धु-सभ्यता मानते हैं.

ऑल्चिन नामक प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद सोथी संस्कृति को सिन्धु घाटी सभ्यता की प्रारम्भिक सभ्यता के रूप में स्वीकार करते हैं.

निष्कर्ष–द्रविड़, आर्यों, सुमेर की सभ्यता हड़प्पा संस्कृति से मिलती हुई है तो उसमें अनेक विभिन्नताएँ भी हैं, अतः इन तथ्यों को सिन्धुघाटी सभ्यता के उदय और विकास के मूल में नहीं माना जा सकता.

आधुनिक अनुसंधानों के आधार पर हड़प्पा संस्कृति के आविर्भाव को क्रमिक विकास मानना ही उचित होगा. यह मान लेना ठीक होगा कि बाहरी प्रभाव के कारण नहीं अपितु भौगोलिक परिस्थितिवश सिन्धु और अन्य नदियों के सहयोग से हड़प्पा सभ्यता में नगरीय सभ्यता का उद्‌भव हुआ. इसमें ईरानी-बलूची संस्कृति का भारतीयकरण एवं प्राक् हड़प्पाकालीन संस्कृति का समावेश हुआ, जो हड़प्पा संस्कृति के विकास का कारण बना.

सिन्धुघाटी सभ्यता के विकास के क्रमिक चरण

फेयर सर्विस नामक पुरातत्त्ववेत्ता ने इण्डो-ईरानी सीमावर्ती क्षेत्र एवं बलूचिस्तान क्षेत्र में हुए उत्खननों से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर सिन्धुघाटी सभ्यता के क्रमिक विकास को निम्न चरणों में वर्गीकृत किया है–

(1) प्रथम चरण–3300 ई. पू.

(2) द्वितीय चरण–3300–2500 ई. पू.

(3) तृतीय चरण–2500–2200 ई. पू.

(4) चतुर्थ चरण–2200–1700 ई. पू.

(5) पंचम चरण–1700–1200/800 ई. पू.

दक्षिणी-अफगानिस्तान, उत्तर-बलूचिस्तान, किली गुल मोहम्मद, राणाघुण्डई, डाबरकोट से प्राप्त अवशेष प्रथम चरण के साक्ष्य माने जाते हैं. इस काल का मानव अस्थायी लेकिन कृषि के बारे में पूर्ण जानकार था. पेरियानो घुण्डई, नाल, सुरजंगल किली गुल मोहम्मद, मुण्डिगक से प्राप्त अवशेष द्वितीय चरण के साक्ष्य हैं और इस काल का मानव स्थायी बन गया था एवं उसका जीवन पूरी तरह व्यवस्थित हो चुका था.

मुण्डिगक, दम्बसदात, पेरियानो घुण्डई, कुलीनाल, सिन्ध में आमरी, मोहनजोदड़ो, कोटदीजी, राजस्थान में सोथी एवं कालीबंगा के अवशेष सिन्धु सभ्यता के तृतीय चरण के साक्ष्य हैं. तृतीय चरण में ईरानी सभ्यता का भारतीयकरण हो चुका था. स्थायी एवं विकसित ग्राम्य-संस्कृति का स्वरूप प्रस्फुटित हो चुका था.

चतुर्थ चरण पूर्ण विकसित चरण था. गुजरात, राजस्थान, सिन्ध, बलूचिस्तान, पूर्वी-पंजाब में इस काल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं. विशाल भवन, नाली व्यवस्था, घेराबन्दी, नगरीकरण इस चरण में अवशेष के रूप में प्राप्त हुए थे.

सिन्धु सभ्यता के पंचम चरण में पतनोन्मुख सभ्यता के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.

हड़प्पा-संस्कृति का प्रशासनिक स्वरूप

पाश्चात्य विद्वान् हंटर एवं मैके के अनुसार हड़प्पा संस्कृति का प्रशासन जनतान्त्रिक पद्धति से चलता था. रूसी विद्वान् वी. वी. स्ट्रूवे हड़प्पा के प्रशासन को गुलामों पर आधारित मानते थे एवं सर ह्वीलर के मतानुसार सुमेर और अक्काद की तरह सिन्धुसभ्यता में पुरोहित ही शासन करते थे.

स्टुअर्ट पिगॉट के अनुसार सिन्धु सभ्यता की दो राजधानियाँ–हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो थी, जिनका शासन पुरोहित संभालते थे.

नगर और भवन निर्माण

सिन्धुघाटी सभ्यता के नगरों की सड़कें एवं गलियाँ सीधी बनी हुई थीं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी. नगर की प्रधान सड़क नगर के बीच में उत्तर से दक्षिण की ओर जाती थी और इसकी चौड़ाई 33 फीट थी. पूर्व से पश्चिम को जाने वाली एक दूसरी सड़क जो प्रधान सड़क को काटती हुई जाती थी, जिसकी चौड़ाई 9 फीट से 18 फीट तक चौड़ी थी. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में सबसे सँकरी गली की चौड़ाई भी 4 फीट से कम नहीं थी.

यहाँ की सड़कें पूरी तरह कच्ची थीं, सिर्फ उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर ईंटों के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए हैं.

सिन्धु सभ्यता के नगरीय मकानों को चार भागों में बाँटा गया है–

1. नागरिकों के रहने के मकान
2. सार्वजनिक भवन
3. सार्वजनिक स्नानकुण्ड
4. मन्दिर और धार्मिक स्थान

प्रत्येक मकान में स्नानागार, अग्निकुण्ड, गन्दे पानी और वर्षाजल निकलने की मोरियाँ और कूड़ा रखने के घिरौने बने हुए थे.

आर्थिक जीवन

सिन्धुसभ्यता का आर्थिक आधार सुदृढ़ था. इस सभ्यता का प्रमुख व्यवसाय एकमात्र कृषि था. उत्खनन के दौरान कोयले के रूप में गेहूँ और जौ के नमूने प्राप्त हुए हैं. सिन्धु-सभ्यता के लोग हाथी, जेबरा, सुअर, मुर्गियों को पालते थे.

बहुसंख्य तकुओं और सूत की ढरकियों के साक्ष्य अवशेष के रूप में प्राप्त होने के कारण यहाँ पर कपड़ा बुनने का काम होना सिद्ध होता है.

यहाँ पर पत्थर, लकड़ी, धातु के काम एवं गहने बनाने का रोजगार होता था. सिन्धुघाटी के निवासी व्यापार और दुकानदारी में प्रवीण थे.

सामाजिक जीवन

सिन्धुघाटी सभ्यता में सभी का सामाजिक जीवन मध्यम श्रेणी का था. समान मकानों का प्राप्त होना इसकी पुष्टि करता है. सिन्धु शासन प्रणाली जनतान्त्रिक थी, इसके पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त हो चुके हैं.

भोजन में सिन्धु सभ्यता के निवासी अण्डे, फल, दूध एवं माँस का प्रयोग करते थे. हार, बाजूबन्द, कुण्डल, कड़े और अँगूठियाँ स्त्री-पुरुष आभूषणों के रूप में पहनते थे.

धनी लोग गोमेद, स्फटिक, सोने, चाँदी, हाथीदाँत के आभूषण पहनते थे. जबकि साधारण लोग ताँबे, सामान्य पत्थर, पकी मिट्टी एवं हड्डी के आभूषणों का प्रयोग करते थे.

धार्मिक जीवन

सिन्धुवासी काली अथवा दुर्गा के रूप में मातृशक्ति की पूजा करते थे. इस काल के लोग शिव के दोनों स्वरूप मूर्त्त एवं अमूर्त्त पर विश्वास करते थे. पशुपति और योगी शिव की मूर्तियों एवं अमूर्त रूप में लिंग और योनि की पूजा की जाती थी.

पीपल एवं पशु-पूजा का अस्तित्व विद्यमान था. सिन्धुवासी नागपूजा किया करते थे. सिन्धु संस्कृति के लोग जल एवं अग्नि का पूजन किया करते थे. सिन्धु सभ्यता में शवसंस्कार मुख्यतः दो प्रकार से होता था–

1. पूरे शव को पृथ्वी में गाड़कर.
2. शव को जलाकर और दाह संस्कार के बाद हड्डियों को चुनकर कलश में भरकर गाड़कर.

निरन्तरता एवं उत्तरजीविता

अमलानन्द घोष, बी.बी. लाल, प्रो. रामशरण शर्मा के अनुसार सिन्धु सभ्यता का पतन हो गया एवं बाद की भारतीय सभ्यता इससे सम्बद्ध नहीं थी.

पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार हड़प्पा संस्कृति के बाद उन्हीं स्थानों पर निम्नलिखित संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं–

1. सिन्धु चन्हुदाड़ो की झूकर संस्कृति
2. पंजाब की कब्रिस्तान एच. संस्कृति
3. झांगर संस्कृति
4. बाड़ा संस्कृति
5. मृद्‌भाण्ड संस्कृति
6. गेरुवर्णी मृद्‌भाण्ड संस्कृति
7. चित्रित धूसर मृद्‌भाण्ड संस्कृति

पुरातत्वविज्ञ एस. आर. राव के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का पूरी तरह से लोप नहीं हुआ, अपितु निम्न या उत्तर-हड़प्पा संस्कृति में परिणिति हुई थी.

1100–800 ई. पू. रंगपुर (गुजरात), आहड़ (राजस्थान) नवदाटोली (मालवा), प्रकाश (दक्षिण भारत) एवं गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र की गेरुवर्णी मृद्‌भाण्ड संस्कृति पर हड़प्पा संस्कृति के स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होते हैं.

ताम्रनिधि संस्कृतियों एवं हस्तिनापुर, अहिच्छेत्र, बड़गाँव, अम्बरखेड़ी, कौशाम्बी, अंतरजीखेड़ा के अवशेष हड़प्पा संस्कृति से पूरी तरह मिलते हैं.

हड़प्पा सभ्यता की परवर्ती उत्तर भारतीय संस्कृतियाँ

हड़प्पा सभ्यता का अन्त कभी नहीं हुआ अपितु ह्रासोन्मुख संस्कृति होकर भी यह चलती रही. हड़प्पा सभ्यता के पतनोन्मुख काल में भी हड़प्पा से अलग क्षेत्रों में प्रमुख निम्न संस्कृतियों का आविर्भाव हुआ–

कब्रिस्तान-एच. संस्कृति

हड़प्पा संस्कृति के पतन के बाद सिन्धु घाटी की रावी नदी के किनारे पाकिस्तान के हड़प्पा स्थल में नई संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ, जिसे कब्रिस्तान एच. संस्कृति (Cemetry H. Culture) के नाम से जाना गया. कब्रिस्तान एच. संस्कृति का अनुमानित काल 1750-1400 ई. पू. आँका गया है.

कब्रिस्तान एच. संस्कृति से दो स्तरीय कब्रिस्तान अवशेष प्राप्त हुए. कब्रिस्तान एच. संस्कृति के दोनों स्तरों के अवशेषों के काल में न्यूनतम अन्तर है.

कब्रिस्तान के निचले स्तर में पूर्व से पश्चिम या उत्तरपूर्व, दक्षिण-पश्चिम में लिटाये हुए शवों का होना सिद्ध हुआ है. शवों के साथ मिट्टी के बरतन, भोजन सामग्री, फ्लास्क, प्याले, तस्तरियाँ एवं स्वर्ण आभूषण के अवशेष साक्ष्य के रूप में प्राप्त हुए हैं. कब्रिस्तान के ऊपरी स्तर पर आंशिक रूप से शवोत्सर्ग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं. मिट्टी के पके, चमकीले लाल रंग के पात्र में हड्डियों को दफनाने एवं उन पर मोर बकरी, मछली के चित्र अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं.

एच. डी. साँकलिया एवं आल्चिन कब्रिस्तान एच. संस्कृति एवं हड़प्पा संस्कृति में समानता उत्खनन के आधार पर स्पष्ट करते हैं.

झूकर संस्कृति

सिन्ध में लरकाना के निकट चन्हुदाड़ो में झूकर संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं.

यहाँ पर उत्खनन से निम्नलिखित अवशेष मिले हैं–

1. दो वेल, मोर, मानव से युक्त ईरानी मुहर
2. मिट्टी के बरतन
3. दो छेददार पत्थर की मुहर

इसे हड़प्पा संस्कृति की परवर्ती संस्कृति न कहकर हड़प्पा से इतर परवर्ती संस्कृति कहना तर्कसंगत होगा, क्योंकि हड़प्पा संस्कृति के समानान्तर अवशेष के रूप में यहाँ पर केवल दो छेददार पत्थर की मुहर मिली है.

निष्कर्ष—परवर्ती संस्कृति भले ही हड़प्पा संस्कृति से अलग रही हो, लेकिन उन समस्त संस्कृतियों पर उसके प्रभाव स्पष्टतः प्रस्फुटित होते हैं. इन सबके फलस्वरूप सिन्धु घाटी सभ्यता की उत्तरजीवितता भी निश्चित रूप से सिद्ध होती है.

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- प्राचीन भारतीय इतिहास की नदी-घाटी सभ्यताओं में सर्वप्रथम सिन्धुघाटी में सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए, अतः इसे सिन्धुघाटी सभ्यता कहा जाता है.
- सिन्धुघाटी सभ्यता का प्रथम प्रमुख केन्द्र हड़प्पा था, अतः इसे हड़प्पा-संस्कृति के नाम से जाना गया.
- सबसे पहले हड़प्पा संस्कृति का ज्ञान 1875 ई. में प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता सर अलेक्जेण्डर कनिंघम को हुआ. कनिंघम को इस स्थल पर एक अज्ञात लिपिबद्ध मुहर प्राप्त हुई.
- सन् 1921 ई. में सर जॉन मार्शल के सहयोगी रायबहादुर दयाराम साहनी ने हड़प्पा स्थल की खुदाई कर सिन्धु सभ्यता को उद्‌घाटित किया.
- सन् 1922 ई. में राखलदास बनर्जी ने उत्खनन से मोहनजोदड़ो को खोजा.
- सिन्धु घाटी सभ्यता में उत्खनन से अवशेष प्राप्त करने वाले पुरातत्त्ववेत्ताओं में एन. जी. मजूमदार, एम. एस. वत्स, मैके, ह्वीलर, एस. आर. राव भी थे, जिन्होंने हड़प्पा संस्कृति से सम्बन्धित अनेक स्थलों को खोजा.
- सन् 1928 एवं 1933 में माधोस्वरूप वत्स ने हड़प्पा में तथा 1946 में सर डॉक्टर ह्वीलर ने मोहनजोदड़ो में उत्खनन कर सिन्धु सभ्यता के अनेक अवशेषों को खोजा
- अब तक खोजे गए सिन्धु सभ्यता के अधिकांश स्थल भारतीय उपमहाद्वीप (पाकिस्तान सहित) सिन्धुघाटी एवं सिन्धुघाटी से बाहर अवस्थित हैं.
- प्रारम्भ में सिन्धुघाटी सभ्यता के दो स्थल प्रकाश में आए–हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो.
- मोहनजोदड़ो का अर्थ सिन्धी भाषा में 'मृतकों का टीला' (Mound of the Deads) होता है. यहाँ पर प्राप्त खण्डहर अवशेषों के कारण इसे मोहनजोदड़ो नाम दिया गया.
- मोहनजोदड़ो सिन्धु नदी के पूर्वी किनारे पर हड़प्पा स्थल से 483 किमी दूर पाकिस्तान के लरकाना (सिन्ध) जिले में स्थित है.
- सिन्धुघाटी सभ्यता का विस्तार उत्तर से दक्षिण करीब 1100 किमी एवं पश्चिम से पूर्व 1600 किमी तक था.
- हड़प्पा रावी नदी के किनारे पाकिस्तान के मुलतान जिले में अवस्थित है. हड़प्पा का विस्तार लगभग 5 किमी तक फैला हुआ था.
- सर अलेक्जेण्डर कनिंघम ने उत्खनन से प्राप्त टीलों का A, B, C, D, E, F एवं थाना टीला में वर्गीकरण किया था.
- माधोस्वरूप वत्स नामक पुरातत्त्ववेत्ता ने 1928 एवं 1933 में हड़प्पा में उत्खनन कर 'टीला जी एवं एच. को खोजा था.
- मोहनजोदड़ो का विस्तार ढाई वर्ग किमी था.
- काशीनाथ दीक्षित, एच. आर. ग्रीब्ज एवं माधोस्वरूप वत्स ने मोहनजोदड़ो के टीलों का वर्गीकरण–डी-के., एच-आर. एवं वी-एस. में किया था.
- मोहनजोदड़ो का सबसे ऊँचा टीला 'स्तूप टीला' था.
- मोहनजोदड़ो में उत्खनन से प्राप्त स्नानागार 40 फीट चौड़ाई 23 फीट एवं गहराई 8 फीट की लम्बाई थी.
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्नागार 45·72 मी लम्बा एवं 15·23 मी चौड़ा था.
- चन्हुदाड़ो मोहनजोदड़ो से लगभग 130 किमी की दूरी पर सिन्धुनदी के किनारे दक्षिण-पूर्व में वर्तमान पाकिस्तान में अवस्थित था.
- चन्हुदाड़ो में सिन्धु संस्कृति के साथ-साथ झूकर एवं झांगर संस्कृति के अवशेष भी प्राप्त हुए थे.
- सिन्धु सभ्यता का कोटदीजी नामक स्थल सिन्ध में खैरपुर से दक्षिण की ओर मोहनजोदड़ो से 40 किमी दूर अवस्थित था.
- कोटदीजी नामक स्थल पर प्राप्त वाणाग्र अन्यत्र नहीं पाए गए हैं.
- सुत्कगेनडोर नामक सिन्धु सभ्यता का स्थल पाकिस्तान में कराची से लगभग 480 किमी पश्चिम एवं मकरान समुद्र-तट से 56 किमी उत्तर में दाश्तनदी के पूर्वी किनारे पर अवस्थित था.

- जॉर्ज डेल्स नामक पुरातत्ववेत्ता ने सुत्कगेनडोर में सिन्धु सभ्यता के तीन चरणों की खोज की.
- सुत्कगेनडोर में अवशेष के रूप में एक बन्दरगाह एक दुर्ग एवं नगरीय सभ्यता के पर्याप्त प्रमाण मिले हैं.
- सिन्धु सभ्यता का डाबरकोट नामक स्थल कांधार व्यापारिक मार्ग पर सिन्धु नदी से लगभग 200 किमी दूर लोरालाई के दक्षिण में 'झोब' नामक घाटी में अवस्थित था.
- डाबरकोट में प्राक्-हड़प्पाकालीन, हड़प्पाकालीन एवं हड़प्पोत्तर-कालीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिसके फलस्वरूप यह अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल बन गया है.
- सिन्धु सभ्यता का लोथल नामक स्थल गुजरात राज्य में खम्भात खाड़ी के पास स्थित है.
- लोथल नामक स्थल की खोज एस. आर. राव ने की थी.
- लोथल में प्राप्त गोदीवाड़ा (अन्नागार) एवं भग्नावशेष बस्ती के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं.
- रंगपुर, भादर नदी के किनारे लोथल से करीब 50 किमी उत्तर-पूर्व और अहमदाबाद के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित है.
- पुरातत्त्ववेत्ता एस. आर. राव के अनुसार रंगपुर की स्थापना लोथल से आए बाढ़ पीड़ित लोगों के बस जाने से हुई. रंगपुर में लोथल के बाद सिन्धु सभ्यता का उदय हुआ.
- विद्वानों का मानना है कि कालीबंगा, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के बाद सैन्धव साम्राज्य की तीसरी राजधानी थी.
- कालीबंगा राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के किनारे अवस्थित है.
- कालीबंगा में उत्खनन से लकड़ी की नालियाँ प्राप्त हुई हैं, जो अन्यत्र कहीं भी प्राप्त नहीं हुई हैं.
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ 'काली चूड़ियाँ' होता है.
- कालीबंगा में मातृदेवी की मूर्तियाँ या आकृतियाँ प्राप्त नहीं हुई हैं.
- कालीबंगा सिन्धु सभ्यता का आयताकार नगर है, जो प्राक्-हड़प्पाकालीन एवं हड़प्पोत्तरकालीन संस्कृतियों का परिचायक है.
- मीत्ताथल हरियाणा राज्य के भिवानी नामक स्थल पर अवस्थित है.
- मीत्ताथल में हड़प्पा संस्कृति के पतनोन्मुख एवं विकासशील संस्कृति के प्रमाण मिले हैं.
- आलमगीरपुर मेरठ के निकट हिण्डन नदी तट के निकट स्थित है. यह गंगा-यमुना दोआब में पहला स्थल है, जहाँ पर हड़प्पाकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं.
- प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर माना जाता है कि जम्मू (मांडा) हड़प्पा सभ्यता की उत्तरी, आलमगीरपुर, बड़गाँव, अम्बाखेडी (उ.प्र.) पूर्वी, दयमाबाद (महाराष्ट्र) दक्षिणी एवं सुत्कगेनडोर (बलूचिस्तान) पश्चिम सीमा थी.
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसार उत्तर पश्चिम में रहमान देढ़ी (गोमलघाटी) तक था.
- मार्शल के उत्खननों के दौरान मोहनजोदड़ो से भवन निर्माण के सात स्तर-एक प्रारम्भिक काल का, तीन मध्य एवं तीन अन्तिम चरण के स्तर प्रकाश में आए हैं.
- एच. हेरास नामक पुरातत्त्वविद् ने हड़प्पा संस्कृति का काल 5000 ई. पू. माना है.
- आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों (C-14) के आधार पर हड़प्पा संस्कृति का काल 2300–1750 ई. पू. के मध्य निर्धारित किया गया है.
- हड़प्पा संस्कृति के काल को तीन भागों में बाँटा गया है– आरम्भिक काल (2500–2250 ई. पू.), विस्तार का काल (2250–1950 ई. पू.) एवं पतन का काल (1950–1750 ई. पू.).
- पाश्चात्य विद्वान् हंटर के अनुसार सिन्धुघाटी की प्रशासनिक व्यवस्था जनतान्त्रिक पद्धति पर आधारित थी.
- रूसी विद्वान् वी. वी. स्ट्रूवे एवं जर्मन विद्वान् वाल्टर रूबेन का अनुमान है कि हड़प्पा संस्कृति गुलामों पर आधारित सभ्यता थी.
- स्टुअर्ट पिगॉट का अनुमान है कि सिन्धुघाटी दो राजधानियों (हड़प्पा और मोहनजोदड़ो) वाला राज्य था, जिसका शासन पुरोहित के नियन्त्रण में था.
- सिन्धुघाटी सभ्यता की नगरीय व्यवस्था को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें नगरपालिका जैसी संस्था कार्यरत् थी.
- उत्खनन से मोहनजोदड़ो में एक विशाल भवन प्राप्त हुआ है, जिसे पुरातत्त्ववेत्ता नागरिक परिषद् का सभागार मानते हैं.
- ए. एल. भाषम ने ज्ञात किया कि सिन्धुघाटी सभ्यता के निवासी चावल से परिचित नहीं थे.
- सिन्धुघाटी के निवासी ऊनी एवं सूती वस्त्रों का प्रयोग करते थे.
- विद्वानों का मानना है कि 16 और उसके गुणकों के गुणन की विधि का ज्ञान हड़प्पा संस्कृति के लोगों को हो चुका था.
- मोहनजोदड़ो में खुदाई के दौरान सूती बुने हुए कपड़ों के अवशेष प्राप्त हुए हैं.
- रोपड़ एवं लोथल में प्राक्-हड़प्पाकालीन एवं हड़प्पाकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं.
- धोलावीरा नामक स्थल से पारसी गल्फ मुहर प्राप्त हुई है.
- बणवाली एवं कालीबंगा में अग्निकाण्डों के दृश्य खोजे गए हैं.
- दयमाबाद नामक सिन्धु सभ्यता के स्थल पर एक काँसे की आकृति जो दो बैलों से जुड़ी हुई थी, जिसे एक नंगी मानव आकृति चला रही थी उत्खनन के दौरान खोजी गई.
- मस्तिष्क के बीच में एक सींग वाला सांड की आकृति के पशु का अवशेष हड़प्पाकालीन सभी स्थलों पर समान रूप से पाया गया है.
- हड़प्पावासियों के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आयात की जाने वाली वस्तुओं में धातुएँ एवं कीमती पत्थर थे.
- सिन्धु सभ्यता के प्रशासन में सत्ता का विकेन्द्रीकरण पाया जाता है. सिन्धु सभ्यता में व्यापारी एवं कारीगर प्रशासन पर नियन्त्रण रखते थे.

- सिन्धु सभ्यता में दो स्तरीय नगरों के निर्माण का प्रमाण मिलता है–दुर्ग या गढ़ी और निचला शहर.
- दुर्ग में शासक का निवास एवं निचले शहर में आवासीय भवन होते थे.
- मोहनजोदड़ो का प्रमुख मार्ग 9·14 मीटर चौड़ा एवं गलियाँ 3 मीटर चौड़ी थीं. सड़कें कच्ची एवं मजबूत व उनके किनारों पर कूड़ा डालने के लिए गड्ढे बने होते थे.
- सिन्धु सभ्यता के स्थलों के उत्खनन से पता चलता है कि इन नगरों के प्रत्येक घर के बीच में एक आँगन व चारों ओर कमरे बनाए जाते थे.
- मोहनजोदड़ो के दुर्ग के भीतर एक विशाल जलकुण्ड था, जिसकी लम्बाई 12 मी, चौड़ाई 7 मीटर और गहराई 2·5 मीटर थी.
- मोहनजोदड़ो का अन्नागार लगभग 45·72 मी लम्बा एवं 15·23 मी चौड़ा था, जिसका प्रवेश द्वार नदी की तरफ था.
- मोहनजोदड़ो के उत्खनन से यहाँ पर विशाल सार्वजनिक भवन का अवशेष मिला, जो मूलतः 20 खम्भों पर टिका था. इसे सभागार के रूप में जाना गया था.
- कर्नल स्यूअल एवं डॉ. गुह ने प्राप्त अस्थि-पंजरों के अध्ययन एवं अनुसंधान के उपरान्त सिन्धुघाटी सभ्यता के निवासियों की चार प्रजातियाँ बताई हैं–

  (1) प्रोटो आस्ट्रोलॉयड

  (2) मंगोलियन

  (3) भूमध्य-सागरीय या आइबेरियन

  (4) अल्पाइन
- सिन्धुघाटी सभ्यता के मकानों को चार भागों में वर्गीकृत किया गया था–

  (1) नागरिकों के रहने के मकान

  (2) सार्वजनिक मकान

  (3) सार्वजनिक स्नानकुण्ड

  (4) मन्दिर और धार्मिक स्थान.
- सिन्धु सभ्यता के लोग मातृशक्ति, पशुपति, योगी शिवलिंग, योनि, पीपल एवं पशु-पूजा करते थे.

  प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार सिन्धुघाटी सभ्यता में शव संस्कार दो प्रकार से होता था–

  (1) शव को पृथ्वी में गाड़कर.

  (2) शव को जलाकर और हड्डियों को चुनकर कलश में गाड़कर.
- विद्वानों के मतानुसार सिन्धुघाटी सभ्यता का विध्वंस पश्चिमोत्तर से आने वाले बर्बर आर्यों ने किया.

  कुछ विद्वानों का मानना है कि सिन्धुघाटी सभ्यता का विनाश क्रान्तिकारी जलवायु परिवर्तन और सिन्धु नदी के पथ बदलने से हो गया.
- प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर कहा जाता रहा है कि सिन्धुघाटी सभ्यता के लोग स्थापत्य, मूर्तिकला, निर्माणकला, नृत्यसंगीत और चित्रकला के क्षेत्र में पारंगत थे.
- सिन्धुघाटी सभ्यता और सुमेरी सभ्यता के मध्य व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ थे.
- 1700 ई. पू. तक सिन्धु सभ्यता के प्रमुख केन्द्र मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा का पतन हो चुका था.
- कब्रिस्तान एच. संस्कृति (Cemetery H. Culture) का उदय हड़प्पा संस्कृति के पतन के बाद माना जाता है. इस संस्कृति की अनुमानित तिथि 1750–1400 ई. पू. है.
- झूकर संस्कृति के अवशेष सरकाल (सिन्ध) के निकट चन्हुदाड़ो से प्राप्त हुए हैं.
- झांगर संस्कृति का उदय झूकर संस्कृति के पतन के पश्चात् हुआ था.
- पंजाब के बाड़ा नामक स्थल से बाड़ा संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं. इस संस्कृति का उद्भव सिन्धुघाटी सभ्यता के पश्चात् हुआ था.
- गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में उत्तर-हड़प्पाकालीन अनेक स्थल मिले हैं, जहाँ से गेरूवर्णी मृद्भाण्ड अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं. यहाँ की संस्कृति गेरुवर्णी मृद्भाण्ड संस्कृति कहलाती है. एस. आर. राव इस संस्कृति को निम्न-हड़प्पा संस्कृति मानते हैं.
- गेरुवर्णी-संस्कृति से सम्बन्धित अनेक स्थल हरियाणा, पंजाब, हड़प्पा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से मिले हैं.
- गंगाघाटी ताम्रनिधि संस्कृति को एस. आर. राव पतनोन्मुख हड़प्पा संस्कृति मानते हैं.
- रोपड़ और आलमगीरपुर में लौह-प्रयोक्ता संस्कृति के प्रमाण प्राप्त हुए हैं.
- चित्रित-धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति को आर्य संस्कृति का परिचायक माना जाता है.
- ताम्रनिधि उपकरण उत्तर प्रदेश में राजपुर, साईपाई के अतिरिक्त पंजाब, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा और दक्कन के अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं.
- स्टुअर्ट पिगॉट के अनुसार, "गंगाघाटी ताम्रनिधि संस्कृति पश्चिम की ओर सैन्धव सभ्यता पर हुए आक्रमण से आहत लोगों द्वारा बसाई हुई थी."
- पुरातत्त्ववेत्ता मैके के अनुसार, "झांगर संस्कृति भील आदिवासी संस्कृति से मिलती-जुलती थी."
- चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति का आरम्भ C-14 तिथिक्रम के अनुसार करीब 800 ई. पू. आँका गया है.
- सिन्धु सभ्यता के निवासी आंशिक समाधिकरण विधि से भी मृतकों का संस्कार करते थे.
- सर एम. ह्वीलर के अनुसार, "हड़प्पा सभ्यता के नगर ऋग्वेद के पुरन्दर द्वारा नष्ट किए गए अनार्यों के घेराबन्द दुर्ग हैं."
- गंगाघाटी ताम्रनिधि संस्कृति 2000–1800 ई. पू. के मध्य विकसित हुई.
- बी. बी. लाल और एस. पी. गुप्ता ताम्रनिधि उपकरणों के निर्माताओं को मुण्ड आदिवासी मानते हैं.

  बाड़ा संस्कृति के समान मृद्भाण्ड सतलज घाटी से दिल्ली तक पाए गए.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

सिन्धु निवासी विभिन्न धातुओं का निम्न स्थलों से आयात करते थे–

क्र.	धातु	आयात का स्थल
1.	चाँदी	अफगानिस्तान, ईरान, अजमेर एवं दक्षिण भारत.
2.	सोना	मैसूर एवं कंधार, फारस
3.	ताँबा	राजस्थान, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान एवं अरब देशों से.
4.	टीन	अफगानिस्तान, ईरान, राजस्थान
5.	जेड़	मध्य एशिया एवं मैसूर.
6.	लाजवर्त, गोमेद, पन्ना, मूँगा	कश्मीर, राजस्थान, सौराष्ट्र ईरान, अफगानिस्तान.

- प्रारम्भिक हड़प्पा लिपि सन् 1853 में खोजी गई एवं पूर्ण लिपि सन् 1923 में प्राप्त हुई.
- हड़प्पा में मिले चित्रग्राफों की संख्या 250 से 400 के मध्य है.
- हड़प्पा संस्कृति में नील रत्न बदख्शाँ, नीलमणि महाराष्ट्र सुलेमानी पत्थर सौराष्ट्र एवं पश्चिमी भारत तथा हरितमणि दक्षिण एशिया व शंख-कीडियां सौराष्ट्र तथा दक्षिण भारत से आयात होते थे.
- सिन्धु सभ्यता के विदेशी व्यापार के निम्नलिखित स्थलों पर विभिन्न वस्तुओं का व्यापार होता था–

क्र.	व्यापार की जाने वाली वस्तुएँ	विदेशी व्यापार के क्षेत्र
1.	ताँबा	उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त प्रान्त, बलूचिस्तान एवं खेतड़ी (राजस्थान)
2.	सीसा	राजस्थान (खेतड़ी), कश्मीर
3.	चाँदी	अफगानिस्तान, ईरान, मैसोपोटामिया
4.	समुद्री कवक	गुजरात (समुद्रतट)
5.	लेपिस लेजुली	बदख्शाँ (अफगानिस्तान) शार्तुगही
6.	स्वर्ण सफाई	सिरोही (राज.), हजरा, कांगड़ा, झंग (पंजाब)
7.	सोना	कोलार (कर्नाटक), जम्मू
8.	लकड़ी	जम्मू
9.	गोमेद एवं अन्य पत्थर	पश्चिमी भारत, मध्य एशिया

मोहनजोदड़ो से काँसे की बनी हुई एक मूर्ति उत्खनन से प्राप्त हुई है, जो एक नर्तकी की मूर्ति है. उसका एक हाथ कमर पर और दूसरा हाथ बाएँ पैर की तरफ झुका हुआ था एवं उसका सिर पीछे की ओर घूमा हुआ था.

सिन्धु लिपि 'बूस्ट्रोफेदन पद्धति में लिखी गई है. इसमें पहली पंक्ति दाईं से बाईं और दूसरी पंक्ति बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है.

सिन्धु सभ्यता के निम्नलिखित स्थल सामने अंकित नदियों के किनारे पर स्थित हैं–

क्र.	सिन्धु सभ्यता का स्थल	नदी
1.	हड़प्पा	रावी
2.	मोहनजोदड़ो	सिन्धु (पूर्वी किनारे पर)
3.	सुत्कगेनडोर	दाश्त (पूर्वी किनारे पर)
4.	रंगपुर	भादर
5.	रोजदि	भादर
6.	मालवण	ताप्ती
7.	आलमगीरपुर	हिण्डन
8.	कालीबंगा	घग्घर
9.	बड़गाँव एवं अम्बखेड़ी	मस्करा
10.	लोथल	भोगवा
11.	रोपड़	सतलज
12.	चन्हुदाड़ो	सिन्धु
13.	बणवाली	सरस्वती

- विद्वानों का मानना है कि सिन्धु सभ्यता के लोगों को टिन का ज्ञान नहीं था.
- सबसे पहले कपास का उत्पादन सिन्धुवासियों ने ही किया.
- हड़प्पा से 2500 से अधिक सुन्दर अक्षरों की खुदाईयुक्त मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं.

सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थलों के उत्खननकर्ता एवं उत्खनन करने का सन्, सम्बन्धित राज्य, जिले का नाम निम्नलिखित है–

क्र.	प्रमुख स्थल	उत्खनन काल	उत्खननकर्ता पुरातत्त्ववेत्ता	सम्बन्धित क्षेत्र
1.	हड़प्पा	1921	रायबहादुर दयाराम साहनी	मुलतान (पाकिस्तान)
2.	मोहनजोदड़ो	1922	राखालदास बनर्जी	लरकाना (सिन्ध)
3.	कालीबंगा	1953, 60	बी. लाल	गंगानगर (राज.)
4.	चन्हुदाड़ो	1931	एम. जी. मजूमदार	सिन्ध (पाकिस्तान)
5.	लोथल	1957	एस. आर. राव	गुजरात
6.	सुरकोटड़ा	1969	जगतपति	कच्छ (गुजरात)
7.	रंगपुर	1954	एस. आर. राव	अहमदाबाद
8.	बणवाली	1973-74	आर. एस. विष्ट	हिसार (हरियाणा)
9.	सुत्कगेनडोर	1962	जॉर्ज डेल्स	बलूचिस्तान

यूनानी हड़प्पा को 'सिण्डन' कहते थे, क्योंकि कपास सबसे पहले यहीं उगाया जाता था.

सिन्धु सभ्यता के लोग स्टीलाइट, चूना पत्थर एवं संगमरमर की मूर्ति बनाने के लिए प्रयोग करते थे.

1. सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल

क्र.	नाम स्थल	वर्तमान स्थिति (राज्य/जिला)	उत्खनन से प्राप्त अवशेष/विवरण
1.	हड़प्पा	मुलतान जिले (पाकिस्तान में रावी नदी के किनारे	अन्नागार, निचले नगर की योजना, कारीगरों की बस्ती
2.	मोहनजोदड़ो	लरकाना जिला (पाकिस्तान) में सिन्धु नदी के पूर्वी किनारे पर	विशाल स्नानागार, सामुदायिक भवन, पक्की ईंटों से बना एक बुर्ज.
3.	लोथल	गुजरात में खम्भात खाड़ी के समीप	एक गोदीवाड़ा, भवनों एवं दुकानों के भग्नावशेष.
4.	चन्हुदड़ो	सिन्ध (पाकिस्तान) में	पकाई गई ईंटों के भवन, मनके बनाने के कारखाने, झूकर और झांगर संस्कृति के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं.
5.	कालीबंगा	गंगानगर (राजस्थान) में सरस्वती नदी के किनारे	लकड़ी से बनी नालियों के अवशेष पाए गए हैं. इस स्थल को 'सैंधव साम्राज्य' की तीसरी राजधानी कहा जाता है.
6.	वनवाली	हिसार (हरियाणा) में	ताम्र उपकरण, वाणाग्र, मनके, मिट्टी की मूर्तियाँ तौलने के बाँट एवं लिपियुक्त मुहर.
7.	कोटदीजी	मोहनजोदड़ो स्थल से 40 किमी पूर्व में सिन्ध में	पत्थर की बनी मकान की नींव, कच्ची ईंटों की दीवारें, वाणाग्र एवं कोटदीजी संस्कृति के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं.
8.	सुत्कगेनडोर	दाश्त नदी के पूर्वी किनारे पर	एक बन्दरगाह, दुर्ग, नगर योजना के साक्ष्य
9.	डाबरकोट	लोरालाई के दक्षिण में झोब घाटी में (कांधार व्यापारिक मार्ग पर)	प्राक्-हडप्पन एवं हड़प्पोत्तर संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.
10.	रोपड़	शिवालिक पहाड़ियों (पंजाब) में	काँचली मिट्टी, विभिन्न प्रकार के आभूषण, ताम्र, कुल्हाड़ी एवं मुहर. कच्ची ईंटों के बने भवन.
11.	बाड़ा	रोपड़ के समीप पंजाब में स्थित	प्राक् हड़प्पन संस्कृति से मिलते-जुलते साक्ष्य. मिट्टी के बर्तन.
12.	राखीगढ़ी	जींद के समीप	लिपिबद्ध मुहर, प्राक् हड़प्पाकालीन संस्कृति के पुरावशेष.
13.	संघोल	चण्डीगढ़ से 40 किमी की दूरी पर अवस्थित	मकान की दीवारें, कटी हुई मिट्टी, कच्ची ईंटें, बाड़ा संस्कृति से मिलते-जुलते साक्ष्य मिले हैं.
14.	मालवण	गुजरात के सूरत जिले में ताप्ती नदी के किनारे	सिंचाई के लिए एक नहर, कच्ची ईंटों का चबूतरा, मिट्टी के बर्तन
15.	सुरकोटड़ा	कच्छ जिले में अवस्थित	आवासीय मकान, गढ़ी, कच्ची ईंटों के मकान, अस्थिकलश, बड़ी चट्टान से ढकी एक कब्र एवं अग्निकाण्ड के प्रमाण मिले हैं.
16.	रोजदि	राजकोट (गुजरात) से दक्षिण में भादर नदी के किनारे	घेराबन्दी के प्रमाण, भीषण अग्निकाण्ड के साक्ष्य, मिट्टी के बर्तन एवं आभूषण प्राप्त हुए हैं.
17.	रंगपुर	अहमदाबाद के दक्षिण-पश्चिम में भादर नदी के किनारे	कच्ची ईंटों के सुरक्षा दुर्ग, इमारत, नालियाँ, मिट्टी के बर्तन, आभूषण एवं विकसित तथा पतनोन्मुखी हड़प्पा सभ्यता के प्रमाण प्राप्त हुए हैं.
18.	मीत्तायल	भिवानी (हरियाणा) के समीप अवस्थित	हड़प्पा संस्कृति के दो चरण विकासशील एवं पतनोन्मुख सभ्यता के प्रमाण प्राप्त हुए हैं– 1. प्रथम चरण में–गढ़ी और निचले नगर की योजना तथा सुनियोजित नगर विन्यास. 2. द्वितीय चरण में–पुरानी और खंडित ईंटों से बना मकान, आभूषण, खिलौने, ताम्र उपकरण, विशिष्ट बर्तन.
19.	बड़गाँव एवं अम्बखेड़ी	सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में अवस्थित यमुना की सहायक नदी मस्करा के तट पर अवस्थित	काँचली मिट्टी की चूड़ी, ताँबे का एक छल्ला, मिट्टी के बर्तन.

20.	आलमगीरपुर	गंगा-यमुना दोआब में अवस्थित मेरठ के पास हिण्डन नदी के किनारे पर	पतनोन्मुख हड़प्पा सभ्यता के प्रमाण, मिट्टी के बर्तन.
21.	सोत्काकोह	सुत्कागेनडोर (बलूचिस्तान) स्थल के पूर्व में शादीकौर नदी की घाटी में अवस्थित	व्यापारिक क्षेत्र होने के साक्ष्य, सिन्धु भाण्डों से समानता रखने वाले बर्तन.
22.	नाल	कलात जिला (बलूचिस्तान) में	विस्तीर्ण एवं आंशिक शवाधान के साक्ष्य, प्राक् हड़प्पन संस्कृति का स्थल, छेनी, छुरा, ताँबे की कुल्हाड़ी, अन्त्येष्टि सामग्री के रूप में प्राप्त.
23.	कुल्ली एवं गेट्टी	कोलवा जिला (बलूचिस्तान)	उत्खनन से पाण्डुरंग के मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं.
24.	अली मुराद	सिन्ध में दादू से दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित	मिट्टी की मूर्तियाँ, चर्ट फलक, सेलखड़ी एवं कार्नेलियन के मनके प्राप्त हुए हैं. एक कुआँ मिला है.

2. सिन्धु सभ्यता के स्थल, उत्खननकर्त्ता, वर्ष एवं नदी तट

क्र.सं.	नाम स्थल	उत्खननकर्त्ता	वर्ष	नदी तट
1.	हड़प्पा	दयाराम साहनी	1921	रावी नदी
2.	मोहनजोदड़ो	राखालदास बनर्जी	1922	सिन्धु नदी
3.	कालीबंगा	बी. बी. लाल अमलानन्द घोष	1953	घग्घर नदी
4.	चन्हुदड़ो	एन. जी. मजूमदार	1931	सिन्धु नदी
5.	रोपड़	यज्ञदत्त शर्मा	1953	सतलज नदी
6.	लोथल	ए. आर. राव	1957	भोगवा नदी
7.	सुत्कगेण्डोर	आरेल स्टाइन जॉर्ज डेल्स	1927 1962	दाश्त नदी
8.	सुरकोटड़ा	जगपति जोशी	1964	हिण्डन नदी
9.	आलमगीरपुर	यज्ञदत शर्मा	1958	सरस्वती
10.	बनवाली	आर. एस. विष्ट	1973	भादर नदी
11	रंगपुर	एम. एस. वत्स	1931 1953	सिन्धु नदी
12.	कोटदीजी	फजल अहमद खाँ	1955	

3. सिन्धु सभ्यता के काल निर्धारण सम्बन्धी विविध मत

क्र. सं.	नाम इतिहासकार	प्रस्तावित काल
1.	मार्टीमर व्हीलर	2500 से 1500 ई. पू.
2.	आर. एस. शर्मा	2500 से 1800 ई. पू.
3.	जॉन मार्शल	3250 से 2750 ई. पू.
4.	फेयर सर्विस	2000 से 1500 ई. पू.
5.	अर्नेस्ट मैके	2800 से 2500 ई पू.
6.	माधोस्वरूप वत्स	3500 से 2700 ई. पू.
7.	रेडियो कार्बन तिथि	2800-2900 से 2000 ई. पू.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विद्वानों का मानना था कि मानव सभ्यता का आविर्भाव आर्यों से हुआ–उनकी यह धारणा निर्मूल सिद्ध हुई–
   (A) सिन्धु सभ्यता के खोजे जाने से
   (B) C-14 के द्वारा ज्ञात किए जाने से
   (C) आर्यों के आलेखों के आधार पर
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
2. सबसे पहले हड़प्पा में प्राचीन नगर की कल्पना की–
   (A) आर. डी. बनर्जी
   (B) एम. एस. वत्स
   (C) डॉ. ह्वीलर
   (D) सर अलेक्जैण्डर कनिंघम
3. सर अलेक्जैण्डर कनिंघम को किस सन् में उत्खनन के दौरान एक अज्ञात लिपिबद्ध मोहर प्राप्त हुई है?
   (A) सन् 1875 में (B) सन 1921 में
   (C) सन् 1933 में (D) सन् 1922 में
4. सन् 1921 ई. में हड़प्पा में रायबहादुर दयाराम साहनी ने उत्खनन किया, वे सहयोगी थे–
   (A) डॉ. मैके के
   (B) सर जॉन मार्शल के
   (C) एन. जी. मजूमदार के
   (D) एस. आर. राव के
5. राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो में उत्खनन किया–
   (A) सन् 1922 ई. में (B) सन् 1928 ई. में
   (C) सन् 1933 ई. में (D) सन् 1946 ई. में
6. सिन्धु सभ्यता के लगभग कितने स्थलों की खोज अब तक की जा चुकी है ?
   (A) 1000 (B) 2000
   (C) 50 (D) 500
7. दो पहिए का ताँबे वाला रथ उत्खनन से किस स्थल से प्राप्त हुआ ?
   (A) मोहनजोदड़ो से (B) हड़प्पा से
   (C) चन्हुदाड़ो से (D) बणवाली से
8. निम्नलिखित में जिसे 'मृतकों का टीला' (Mound of the Deads) कहा जाता है–
   (A) सुरकोटड़ा (B) चन्हुदाड़ो
   (C) मोहनजोदड़ो (D) लोथल
9. जिस स्थल से गढ़ी हुई पक्की ईंटों का बुर्ज प्राप्त हुआ है–
   (A) मोहनजोदड़ो (B) रंगपुर
   (C) कोटदीजी (B) अम्बखेड़ी
10. सिन्धु सभ्यता का क्षेत्रफल है–
   (A) 22,99,300 किमी
   (B) 12,99,600 वर्ग किमी
   (C) 13,46,500 वर्ग किमी
   (D) 16,37,100 वर्ग किमी
11. मिस्र-मेसोपोटामिया की सभ्यता का विस्तार सिन्धु सभ्यता की तुलना में था–
   (A) चौथाई (B) आधा
   (C) तिगुना (D) एक-तिहाई
12. ऋग्वेद में वर्णित 'हरियूपिया' सिन्धु सभ्यता के जिस स्थल से मिलता है–
   (A) मोहनजोदड़ो (B) हड़प्पा
   (C) चन्हुदाड़ो (D) रंगपुर
13. सिन्धु सभ्यता के जिस स्थल का विस्तार 5 किमी तक था–
   (A) मोहनजोदड़ो (B) हड़प्पा
   (C) कोटदीजी (D) चन्हूदाड़ो
14. हड़प्पा में सन् 1928 एवं 1933 में जिसके द्वारा उत्खनन हुआ–
   (A) सर अलेक्जैण्डर कनिंघम
   (B) सर ह्वीलर
   (C) एम. एस. वत्स
   (D) मैके
15. मोहनजोदड़ो का सबसे ऊँचा टीला है–
   (A) स्तूप टीला (B) थाना टीला
   (C) एफ टीला (D) जी टीला
16. हड़प्पा के दो टीलों G, H को किसने खोजा ?
   (A) माधोस्वरूप वत्स
   (B) एस. आर. राव
   (C) डॉ. मार्टिमर ह्वीलर
   (D) मैके

17. एक कारीगरों की वस्ती हड़प्पा के जिस टीले से प्राप्त हुई है–
(A) टीला-ए (B) टीला-बी
(C) टीला-डी (D) टीला-सी

18. मिट्टी की गोल शलाकाकार मुद्राएं प्राप्त हुई हैं–
(A) हड़प्पा (B) मोहनजोदड़ो
(C) कालीबंगा (D) लोथल

19. किस इतिहासविद् के अनुसार मोहनजोदड़ो की जनसंख्या 40,000 है ?
(A) एस. आर. राव (B) रोमिला थापर
(C) डॉ. के. के. शर्मा (D) मार्टिमर ह्वीलर

20. जिस स्थान पर सिन्धु संस्कृति के साथ झूकर एवं झांगर संस्कृति के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं–
(A) माहेनजोदड़ो (B) हड़प्पा
(C) लोथल (D) चन्हुदाड़ो

21. कौनसा ऐसा स्थल है जहाँ पर दुर्ग प्राप्त नहीं हुआ है ?
(A) लोथल (B) रंगपुर
(C) कोटदीजी (D) चन्हुदाड़ो

22. निम्नलिखित में से जहाँ पर वाणाग्र प्राप्त हुए हैं–
(A) चन्हुदाड़ो (B) हड़प्पा
(C) मोहनजोदड़ो (D) कोटदीजी

23. निम्नलिखित में से सिन्धु सभ्यता एवं वेबीलोन के मध्य व्यापारिक केन्द्र था–
(A) रंगपुर (B) कोटदीजी
(C) सुत्कगेनडोर (D) हड़प्पा

24. सुत्कगेनडोर में सिन्धु सभ्यता के तीन चरणों को जिस पुरातत्त्ववेत्ता ने खोजा–
(A) जॉर्ज डेल्स (B) एम. एस. वत्स
(C) एन. एम. मजूमदार (D) डॉ. ह्वीलर

25. सिन्धु सभ्यता का कौनसा स्थल 'झोब' घाटी में अवस्थित है ?
(A) कोटदीजी (B) सुत्कगेनडोर
(C) डाबरकोट (D) रंगपुर

26. प्राक्-हड़प्पाकालीन, हड़प्पाकालीन एवं हड़प्पोत्तरकालीन संस्कृति के अवशेष जहाँ से प्राप्त हुए हैं–
(A) डाबरकोट (B) सुत्कगेनडोर
(C) हड़प्पा (D) मोहनजोदड़ो

27. एस. आर. राव ने लोथल को खोजा–
(A) सन् 1957 में (B) सन् 1928 में
(C) सन् 1933 में (D) सन् 1922 में

28. कब्रिस्तान में जहाँ से एक साथ पुरुष महिलाओं को दफनाने के साक्ष्य मिले हैं–
(A) रंगपुर (B) लोथल
(C) कोटदीजी (D) सुत्कगेनडोर

29. किस स्थल के अवशेष हड़प्पा की ह्रासोन्मुख सभ्यता को प्रदर्शित करते हैं ?
(A) लोथल (B) रंगपुर
(C) कोटदीजी (D) कालीबंगा

30. उत्खनन के दौरान चावल की भूसी प्राप्त हुई–
(A) रंगपुर (B) लोथल
(C) सुत्कगेनडोर (D) कोटदीजी

31. लोथल के बाढ़ पीड़ितों के बस जाने से रंगपुर सभ्यता की स्थापना हुई, यह विचार है–
(A) एस. आर. राव का (B) डॉ. मार्टिमर ह्वीलर का
(C) एम. एस. वत्स का (D) डॉ. मैके का

32. जहाँ पर पत्थरों की घेराबन्दी के प्रमाण प्राप्त हुए हैं–
(A) रंगपुर (B) लोथल
(C) सुरकोटड़ा (D) रोजदि

33. जिस स्थल पर भीषण अग्निकाण्ड के दृश्य प्राप्त हुए हैं–
(A) रोजदि (B) लोथल
(C) चन्हुदाड़ो (D) मोहनजोदड़ो

34. उत्खनन के दौरान जिस स्थल से पत्थर से ढकी कब्रगाह प्राप्त हुई है, वह है–
(A) रंगपुर (B) लोथल
(C) सुरकोटड़ा (D) चन्हुदाड़ो

35. सिन्धु सभ्यता के विकसित संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं–
(A) सुरकोटड़ा से (B) लोथल से
(C) रंगपुर से (D) रोजदि से

36. सिन्धुघाटी सभ्यता के अन्तिम चरण के अवशेष प्राप्त हुए हैं–
(A) लोथल (B) कोटदीजी
(C) अम्बखेड़ी (D) संघोल

37. मिट्टी से बने आभूषण प्राप्त हुए हैं–
(A) संघोल (B) कोटदीजी
(C) लोथल (D) सुरकोटड़ा

38. निम्नलिखित में से सिन्धु सभ्यता के जिस स्थल पर नहर उत्खनन से प्राप्त हुई है–
(A) मालवण (B) संघोल
(C) सुरकोटड़ा (D) कोटदीजी

39. मालवण अवस्थित था–
(A) सूरत जिले में (B) कच्छ जिले में
(C) अहमदाबाद में (D) लरकाना में

40. कच्ची ईंटों के चबूतरे साक्ष्यस्वरूप मिले हैं–
(A) संघोल (B) मालवण
(C) सुरकोटड़ा (D) रंगपुर

41. रोपड़ एवं बाड़ा (पंजाब) से मिलते हुए अवशेष प्राप्त हुए हैं–
(A) संघोल (B) मालवण
(C) रंगपुर (D) लोथल

42. 'ताम्र कुल्हाड़ी' जहाँ पर उत्खनन से मिली हैं–
(A) रोपड़ (B) संघोल
(C) सुरकोटड़ा (D) कालीवंगा

43. निम्नलिखित में से हड़प्पा सभ्यता के कितने चरण रोपड़ में प्राप्त हुए हैं ?
(A) तीन चरण (B) सात चरण
(C) दो चरण (D) एक चरण

44. वाड़ा से प्राप्त मिट्टी के वर्तन साम्यता रखते हैं–
(A) लोथल एवं रंगपुर से
(B) कोटदीजी एवं कालीवंगा से
(C) संघोल एवं सुरकोटड़ा से
(D) लोथल एवं बाड़ा से

45. सिन्धु सभ्यता का कौनसा स्थल पंजाब में अवस्थित है ?
(A) लोथल (B) रंगपुर
(C) आलमगीरपुर (D) बाड़ा

46. प्राक् हड़प्पा एवं हड़प्पोत्तरकालीन संस्कृति के अवशेष मिले हैं–
(A) रंगपुर (B) संघोल
(C) बाड़ा (D) राखीगढ़ी

47. सन् 1973-74 में वणवाली का उत्खनन किया–
(A) एस. आर. राव (B) एम. एस. वत्स
(C) आर. एस. विष्ट (D) डॉ. ह्वीलर

48. घेराबन्दी एवं किलाबन्दी के साक्ष्य जहाँ से प्राप्त हुए हैं–
(A) वणवाली (B) सुरकोटड़ा
(C) कालीबंगा (D) लोथल

49. तौलने के बाँट कहाँ से प्राप्त हुए हैं ?
(A) वणवाली (B) रंगपुर
(C) संघोल (D) कोटदीजी

50. हड़प्पावासी गुणन में जिस अंकों से परिचित थे–
(A) 16 और उसके गुणकों से
(B) 2 और उसके गुणन से
(C) 10 और उसके गुणन से
(D) उपर्युक्त सभी से

51. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–
(a) वणवाली (1) मेरठ (उत्तर प्रदेश)
(b) संघोल (2) सूरत जिला
(c) सुरकोटड़ा (3) कच्छ जिला
(d) मालवण (4) चण्डीगढ़
(e) आलमगीरपुर (5) हिसार (हरियाणा)

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
(A)	1	2	3	4	5
(B)	5	4	3	2	1
(C)	3	4	5	2	1
(D)	2	3	4	5	1

52. प्रथम सूची को द्वितीय सूची से सुमेलित कीजिए व सही उत्तर बताइए–

सूची I	सूची II
1. लोथल	(a) सिन्धु
2. रोपड़	(b) सरस्वती
3. चन्हुदाड़ो	(c) भोगवा
4. वणवाली	(d) सतलज
5. सुत्कगेनडोर	(e) दाश्त

(A) 1-d, 2-c, 3-a, 4-b
(B) 1-c, 2-d, 3-a, 4-b, 5-e
(C) 1-b, 2-a, 3-c, 4-d
(D) 5-a, 1-b, 2-c, 3-d, 4-e

53. गंगा-यमुना दोआब में पाया जाने वाला सिन्धु सभ्यता का स्थल है–
(A) वणवाली (B) आलमगीरपुर
(C) सुत्कगेनडोर (D) सुरकोटड़ा

54. कौनसा स्थल हिण्डन नदी के किनारे पर अवस्थित है ?
(A) कालीवंगा (B) आलमगीरपुर
(C) लोथल (D) रंगपुर

55. पुरातत्त्वविदों के अनुसार 'सैन्धव साम्राज्य' में तीन राजधानियाँ थीं. दो राजधानियाँ–हड़प्पा एवं मोहन-जोदड़ो हैं, तीसरी राजधानी निम्नलिखित में से है–
(A) चन्हुदाड़ो (B) डाबरकोट
(C) कालीवंगा (D) वणवाली

56. निम्नलिखित किस स्थल से लकड़ी की नालियाँ अवशेष के रूप में प्राप्त हुई हैं ?
(A) सुत्कगेनडोर (B) लोथल
(C) रोपड़ (D) कालीवंगा

57. घग्घर नदी के किनारे पर अवस्थित सिन्धुघाटी सभ्यता का ऐतिहासिक स्थल है–
(A) हड़प्पा (B) मोहनजोदड़ो
(C) कालीबंगा (D) रंगपुर

58. प्राक्हड़प्पाकालीन संस्कृति का परिचायक है–
(A) कालीबंगा (B) मोहनजोदड़ो
(C) हड़प्पा (D) लोथल

59. कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ है–
(A) प्रेतों का टीला
(B) काली चूड़ियाँ
(C) सिन्धु सभ्यता के अवशेष
(D) उपर्युक्त सभी

60. यमुना की सहायक नदी मस्करा के तट पर हड़प्पा संस्कृति के दो स्थल हैं–
(A) हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो
(B) लोथल एवं रंगपुर
(C) बड़गाँव एवं अम्बखेड़ी
(D) रोपड़ एवं संघोल

61. काँचली मिट्टी की चूड़ियाँ उत्खनन से प्राप्त हुई हैं–
(A) कालीबंगा से (B) बड़गाँव एवं अम्बखेड़ी
(C) रोपड़ (D) लोथल

62. जिस स्थल से प्रथम उत्खनन में सिन्धु सभ्यता का विकसित रूप एवं द्वितीय उत्खनन से ह्रासोन्मुख सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं–
(A) रंगपुर (B) कोटदीजी
(C) सुरकोटड़ा (D) मीत्ताथल

63. मीत्ताथल नामक सिन्धु सभ्यता का स्थल अवस्थित है–
(A) लरकाना में (B) हिसार में
(C) गुजरात में (D) त्रिवानी

64. किस पुरातत्ववेत्ता ने सिन्धु सभ्यता का कालक्रम 5600 ई. पू. नक्षत्रीय आधार पर निर्धारित किया है?
(A) रोमिला थापर (B) एच. हैरास
(C) एस. आर. राव (D) मैके

65. आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति (C-14) के अनुसार सिन्धु सभ्यता का कालक्रम है–
(A) 2500–1500 ई. पू.
(B) 2800–2500 ई. पू.
(C) 2300–1750 ई. पू.
(D) 1750–800 ई. पू.

66. सिन्धुघाटी सभ्यता का विकास तीसरी सहस्त्राब्दी में किसके अनुसार हुआ ?
(A) सी. एस. फावरी (B) मार्शल
(C) एच. हेरास (D) एम. एस. वत्स

67. सिन्धुघाटी सभ्यता का कालक्रम 2500–1500 ई. पू. सर्वमान्य है जिसे प्रतिपादित किया है–
(A) मार्शल (B) एच. हेरास
(C) सर मार्टिमर ह्वीलर (D) सी. एल. फाबरी

68. सिन्धु सभ्यता का ह्रास हो जाने पर भी 800 ई. पू. तक जहाँ पर सभ्यता विद्यमान थी–
(A) रोपड़ (B) लोथल
(C) रंगपुर (D) सुरकोटड़ा

69. खेत जोतने के प्रमाण जहाँ से मिले हैं–
(A) कालीबंगा (B) सुरकोटड़ा
(C) लोथल (D) रंगपुर

70. कौनसा स्थल हरियाणा में अवस्थित है?
(A) लोथल (B) हड़प्पा
(C) मोहनजोदड़ो (D) मीत्ताथल

71. निम्नलिखित में जिस स्थल पर मनके बनाने का कारखाना मिला है–
(A) हड़प्पा (B) मोहनजोदड़ो
(C) तुर्कमेनिस्तान (D) चन्हुदाड़ो

72. निम्नलिखित में से जिसे आइबेरियन कहा जाता है–
(A) आदि आस्ट्रोलॉयड (B) मंगोलियन
(C) भूमध्यसागरीय (D) अल्पाइन

73. द्रविड़ जिसकी शाखा है–
(A) आइबेरियन प्रजाति की
(B) अल्पाइन प्रजाति की
(C) मंगोलियन प्रजाति की
(D) आस्ट्रोलॉयड प्रजाति की

74. सिन्धुघाटी सभ्यता में भूमध्यसागरीय जाति की प्रधानता थी. इसे किसने खोजा ?
(A) मार्शल ने
(B) सी. एल. फावरी
(C) एच. हेरास ने
(D) डॉ. गुह एवं कर्नल स्युअल ने

75. "India received the Idea of city life from mesopotamia where it was well established in the IIIrd Millennium B.C.." उपर्युक्त कथन है–
(A) एस. आर. राव का
(B) एस. आर. राव का

(C) मार्शल का
(D) डॉ. ह्वीलर का

76. "हड़प्पा, मिस्र, मेसोपोटामिया सभ्यता के संस्थापक जो भी हो एक ही प्रजाति, एक ही मूल के व्यक्ति हैं." यह मानना है–
(A) गार्डन चाईल्ड (B) लियोनार्ड वूली
(C) डी. डी. कौशाम्बी (D) सर ह्वीलर

77. सिन्धु लिपि में थे–
(A) चित्रात्मक 400 चिह्न
(B) कीलनुमा 900 चिह्न
(C) गोलाकार 800 चिह्न
(D) उपर्युक्त सभी

78. सिन्धुघाटी सभ्यता क्रमिक रूप में विकसित हुई है, जिसका मानना है–
(A) डी. डी. कौशाम्बी (B) फेयर सर्विस
(C) सर मार्टिमर ह्वीलर (D) एम. एस. वत्स

79. अमलानन्द घोष के अनुसार सिन्धु संस्कृति में किसका विशिष्ट योगदान रहा है ?
(A) सोथी संस्कृति
(B) बलुची ग्राम्य संस्कृति
(C) मेसोपोटामियाई संस्कृति
(D) उपर्युक्त सभी

80. खेतड़ी अंचल के निकट राजस्थान के गणेश्वर नामक स्थल से हड़प्पा संस्कृति से पूर्व के अवशेष प्राप्त हुए हैं उसका काल आँका गया है–
(A) 2500–2200 ई. पू.
(B) 2800–2200 ई. पू.
(C) 2500–1500 ई. पू.
(D) 1950–800 ई. पू.

81. सिन्धु घाटी सभ्यता के क्रमिक विकास के चरण हैं–
(A) 5 (B) 7
(C) 8 (D) 3

82. किसके अनुसार–सिन्धु सभ्यता की दो राजधानियाँ हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो थीं, जिनका शासन पुरोहित सँभालते थे ?
(A) वी. वी. स्ट्रूवे (B) हंटर
(C) स्टुअर्ट पिगॉट (D) मैके

83. सिन्धुकालीन नगरों की प्रधान सड़कों की चौड़ाई थी–
(A) 40 फीट (B) 33 फीट
(C) 8 फीट (D) 10 फीट

84. सिन्धुवासी शिव के जिस स्वरूप को पूजते थे–
(A) केवल मूर्त्त
(B) केवल अमूर्त्त
(C) मूर्त्त एवं अमूर्त्त दोनों
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

85. हड़प्पा के पतन के बाद रावी नदी के किनारे पाकिस्तान में एक नई संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ जिसे कहते हैं–
(A) मृदुभाण्ड संस्कृति
(B) झांगर संस्कृति
(C) कब्रिस्तान एच. संस्कृति
(D) गेरुवर्णी मृद्भाण्ड संस्कृति

86. कब्रिस्तान एच. संस्कृति का अनुमानित काल है–
(A) 1750–1400 ई. पू.
(B) 1950–1650 ई. पू.
(C) 2200–800 ई. पू.
(D) 1700–500 ई. पू.

87. दो छेददार पत्थर की मुहर जिस परवर्ती संस्कृति से सम्बन्धित है–
(A) झूकर संस्कृति (B) झांगर संस्कृति
(C) मृद्भाण्ड संस्कृति (D) कब्रिस्तान एच. संस्कृति

88. सिन्धुघाटी सभ्यता के निवासी चावल से परिचित नहीं थे, यह किसने ज्ञात किया ?
(A) डॉ. एस. आर. राव (B) डॉ. ए. एल. भाषक
(C) सर ह्वीलर (D) मैके

89. नागरिक परिषद् का एक विशाल भवन प्राप्त हुआ है–
(A) मोहनजोदड़ो से (B) हड़प्पा से
(C) चन्हुदाड़ो से (D) कालीबंगा से

90. निम्नलिखित में से किस स्थल से पारसी गल्फ मुहर प्राप्त हुई है ?
(A) सुरकोटड़ा (B) धोला वीरा
(C) हड़प्पा (D) मोहनजोदड़ो

91. सूती कपड़ों के अवशेष प्राप्त हुए हैं–
(A) रंगपुर से (B) लोथल से
(C) मोहनजोदड़ो से (D) हड़प्पा से

92. जिन स्थलों पर अग्निकाण्ड के दृश्य खोजे गए हैं–
(A) वणवाली एवं कालीबंगा में
(B) हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में
(C) लोथल एवं रंगपुर में
(D) सुरकोटड़ा एवं कोटदीजी में

93. एक काँसे की आकृति जो दो बैलों से जुड़ी हुई थी जिसे एक नंगी मानव आकृति चला रही थी–उत्खनन के दौरान खोजी गई–
(A) कोटदीजी में (B) रोपड़ में
(C) दयमाबाद में (D) हड़प्पा में

94. गंगाघाटी ताम्रनिधि का स्वरूप विकसित हुआ–
(A) 2000–1800 ई. पू. (B) 1800–1200 ई. पू.
(C) 2000–1000 ई. पू. (D) 2000–1500 ई. पू.

95. झूकर संस्कृति के पतन के पश्चात् उदय हुआ–
(A) झांगर संस्कृति का
(B) मृद्भाण्ड संस्कृति का
(C) कब्रिस्तान एच. संस्कृति का
(D) उपर्युक्त सभी का

96. प्रारम्भिक हड़प्पा लिपि खोजी गई–
(A) सन् 1853 में (B) सन् 1897 में
(C) सन् 1922 में (D) सन् 1922 में

97. हड़प्पा में मिले चित्रग्राफों की संख्या है–
(A) 200-300 के मध्य (B) 250-400 के मध्य
(C) 100-300 के मध्य (D) उपर्युक्त सभी

98. काँसे से बनी एक मूर्ति जो एक नर्तकी की है, उसका एक हाथ कमर पर और दूसरा बाएँ पैर की तरफ झुका हुआ था एवं उसका सिर पीछे की ओर अवस्थित था, यह मूर्ति खोजी गई–
(A) हड़प्पा में (B) मीत्ताथल में
(C) रंगपुर में (D) कोटदीजी में
(E) मोहनजोदड़ो

99. सिन्धु लिपि की पद्धति है–
(A) बूस्ट्रोफेदन (B) बूफोस्टिक
(C) देवनागरी (D) अरबी

100. सुत्कगेनडोर नामक स्थल को सन् 1962 में किसने खोजा?
(A) जॉर्ज डेल्स (B) एस. आर. राव
(C) एम. एस. वत्स (D) मैके

उत्तरमाला

1. (A)	2. (D)	3. (A)	4. (B)	5. (A)
6. (A)	7. (B)	8. (C)	9. (A)	10. (B)
11. (B)	12. (B)	13. (B)	14. (C)	15. (A)
16. (A)	17. (D)	18. (A)	19. (C)	20. (D)
21. (D)	22. (D)	23. (C)	24. (A)	25. (C)
26. (A)	27. (A)	28. (B)	29. (B)	30. (A)
31. (A)	32. (D)	33. (A)	34. (C)	35. (A)
36. (D)	37. (A)	38. (A)	39. (A)	40. (B)
41. (A)	42. (A)	43. (C)	44. (B)	45. (D)
46. (D)	47. (C)	48. (A)	49. (A)	50. (A)
51. (B)	52. (B)	53. (B)	54. (B)	55. (C)
56. (D)	57. (C)	58. (A)	59. (B)	60. (C)
61. (B)	62. (D)	63. (D)	64. (B)	65. (C)
66. (B)	67. (C)	68. (C)	69. (A)	70. (D)
71. (D)	72. (C)	73. (A)	74. (D)	75. (D)
76. (C)	77. (A)	78. (B)	79. (A)	80. (B)
81. (A)	82. (C)	83. (B)	84. (C)	85.(C)
86. (A)	87. (A)	88. (B)	89. (A)	90. (B)
91. (C)	92. (A)	93. (C)	94. (A)	95. (A)
96. (A)	97. (B)	98. (E)	99. (A)	100. (D)

विगत वर्षों में पूछे गये प्रश्न

1. किस हड़प्पा स्थल से नगर के एक ऐसे असामान्य विन्यास के चिह्न मिलते हैं जिसमें एक ही किले के अन्दर बस्तियों के तीन अलग-अलग सीमांकित क्षेत्र सम्मिलित हैं ?
(A) कालीबंगा (B) लोथल
(C) बनवाली (D) धोलावीरा

2. सूची-I (हड़प्पा स्थल) को सूची-II (स्थिति) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (हड़प्पा स्थल)	सूची-II (स्थिति)
(a) कालीबंगा	1. भुजकच्छ
(b) सुरकोटड़ा	2. सिंध
(c) कोटदीजी	3. राजस्थान
(d) बनवाली	4. हरियाणा

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	3	1
(B)	3	1	2	4
(C)	2	1	3	4
(D)	3	4	2	1

3. निम्नलिखित में से हड़प्पा सभ्यता से सम्बन्धित कौनसा एक कथन सही नहीं है ?
(A) वहाँ के निवासियों को ज्यॉमितीय रूपांकनों का प्रयोग आता था
(B) वहाँ के निवासी पांसे के खेल (Game of dice) से परिचित थे

(C) कालीबंगा में अधिकतर निर्माण कच्ची ईंटों का प्रयोग कर किया गया था

(D) लोथल में निवासियों ने निर्माण के लिए पकी हुई ईंटों का कभी प्रयोग नहीं किया

4. सूची-I (हड़प्पा स्थल) को सूची-II (नदी तट जहाँ स्थित हैं) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (हड़प्पा स्थल)	**सूची-II (नदी तट जहाँ स्थिति हैं)**
(a) आलमगीरपुर	1. सिंधु
(b) कालीबंगा	2. घग्गर
(c) हड़प्पा	3. हिंडन
(d) मोहनजोदड़ो	4. रावी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	4	1	3	2
(C)	3	1	4	2
(D)	4	2	3	1

5. निम्नलिखित चार स्थलों में सबसे पहले की सांस्कृतिक प्रावस्था (Cultural Phase) मिलती है–

(A) बनावली से (B) कोटदीजी से
(C) सुरकोतड़ा से (D) मेहरगढ़ से

6. निम्नलिखित में से कौनसी एक, सम्पूर्ण हड़प्पा संस्कृतिमाला में निर्मित पकी ईंटों की विशालतम संरचना (Largest Structure) है?

(A) वृहद् स्नानागार (The Great bath)
(B) अन्न भण्डार गृह (Granary)
(C) सभागार (Assembly Hall)
(D) लोथल गोदीबाड़ा (Dockyard)

7. हड़प्पा संस्कृति में पाई गई 'शिव' की मोहर पर निरूपित आकृति की पहचान के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. यह लिंग के रूप में दिखाई गई है.
2. यह योगमुद्रा में बैठे हुए रूप में दिखाई गई है.
3. यह पशुओं से घिरी हुई है.
4. यह एक नारी आकृति के साथ दर्शाई गई है, जिसकी पार्वती के रूप में पहचान की जा सकती है.

उपर्युक्त में से कौन-कौनसे ये सही कारण हैं जिनसे उक्त आकृति के शिव की होने की पहचान की जा सकती है?

(A) 1 और 4 (B) 2 और 3
(C) 2 और 4 (D) 3 और 4

8. भारत में विभिन्न व्यापारिक मार्गों के तुलनात्मक गुणों का बुद्धिमत्तापूर्वक गुण-विवेचन किया गया है–

(A) कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में
(B) टॉलेमी के 'भूगोल' में
(C) मेगस्थनीज की 'इंडिका' में
(D) प्लिनी की 'नेचुरल हिस्टरी' में

9. निम्नलिखित में से कौनसे एक संगमयुगीन कवि ने एक तमिल प्रमुख के विरुद्ध हुए मौर्य अभियान का वर्णन किया है?

(A) परनर (B) अव्वैयार
(C) इलंगो अडिगल (D) मामूलनर

10. **कथन** (A) : हड़प्पा संस्कृति के अन्य समकालीन संस्कृतियों से व्यापक सम्बन्ध थे.

कारण (R) : कांस्ययुगीन सभ्यताएं विस्तृत विनिमय नेटवर्क से प्रतिपालित थीं.

कूट :

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है
(C) A सही है, परन्तु R गलत है
(D) A गलत है, परन्तु R सही है

11. निम्न में से कौनसा नृजातीय तत्व हड़प्पा स्थलों के कंकाल अवशेषों में नहीं मिलता है?

(A) ऐल्पीय (B) भूमध्यसागरीय
(C) मंगोलाभ (D) नेग्रीटो

उत्तरमाला

1. (D) 2. (B) 3. (D) 4. (A) 5. (D)
6. (D) 7. (B) 8. (A) 9. (D) 10. (A)
11. (D)

संकेत

1. अन्य हड़प्पाई शहर प्रायः दो भागों में बँटे होते थे.
3. लोथल के भवनों से भी पकी ईंटों का उपयोग किया गया. गोदीबाड़ा (बंदरगाह) इसका अच्छा उदाहरण है.
11. हड़प्पा सभ्यता में पाए जाने वाले नृजातीय तत्व थे–
1. भूमध्यसागरीय 2. अल्पाइन
3. प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड, और 4. मंगोलॉयड

4

वैदिक समाज, वैदिक ग्रन्थ, ऋग्वैदिक से उत्तर-वैदिक चरणों तक परिवर्तन, धर्म, उपनिषद् से सम्बन्धित विचारधारा, राजनैतिक एवं सामाजिक संगठन : राजतन्त्र तथा वर्ण व्यवस्था का विकास

(Vedic Society. The Vedic Texts, Change from Regvedic to Later Vedic Phases. Religion, Upanishedic Thought. Political and Social Organisation : Evolution of Monarchy and Varna System)

वैदिक संस्कृति
(Vedic Culture)

सिन्धु घाटी की सभ्यता के पतन हो जाने पर भारत के अनेक भागों में विभिन्न संस्कृतियों का उदय हुआ, जिनमें प्रमुख रूप से आर्य सभ्यता थी. आर्यों की सभ्यता को जानने के पुरातात्विक स्रोत नहीं के बराबर है एवं साहित्यिक स्रोतों में वैदिक साहित्य प्रमुख है. वेदों से सम्बद्ध होने के कारण ही आर्य सभ्यता को वैदिक संस्कृति (Vedic culture) कहा जाता है.

आर्यों का परिचय

आर्यों के सन्दर्भ में जानने से पूर्व यह अनिवार्य हो जाता है कि हम सबसे पहले आर्य शब्द पर विचार करें.

आर्य शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ श्रेष्ठ, उच्च कुल में जन्मा, इत्यादि होता है. वशिष्ठ स्मृति में आर्य शब्द के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा गया है–

"जो रूप-रंग, आकृति-प्रकृति, सभ्यता-शिष्टता, धर्म-कर्म, ज्ञान-विज्ञान और आचार-विचार तथा शील स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो उसे आर्य कहते हैं."

अमरकोष के अनुसार आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु, कुलीन, महाकुलीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है. इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध विद्वानों के एक वर्ग के अनुसार आर्य शब्द मूलतः 'अरि' शब्द से बना है जिसका अर्थ विदेशी या अजनबी होता है. यद्यपि 'आर्य' शब्द का यह अर्थ किसी भी तरह से तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता. साधारणतया आर्य शब्द जाति विशेष का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह भी माना जाता रहा है कि 'आर्य' शब्द जातीयता को नहीं 'भाषायी समूह' की तरफ संकेत करता है.

आर्यों का सबसे पहले उल्लेख बोगोजकोई (पश्चिम एशिया) की शांति सन्धि 1350 ई. पू. में मिलता है.

बोगाजकोई की शांति संधि हित्तदस (Hettites) के राजाओं एवं मितामी साम्राज्य के मध्य हुई, जिसमें मित्र, वरूण एवं इन्द्र देवताओं का आह्वान साक्षियों के रूप में किया गया था.

2000 ई. पू. के आसपास कई जनसमुदाय संस्कृत, लेटिन, ग्रीक, श्लाव इत्यादि भाषाएँ बोलते थे एवं सभी भाषाएँ एक-दूसरे से सम्बद्ध थीं. इन्हें भोरोपीय भाषा (Indian European language) कहा जाता है. भोरोपीय भाषा बोलने वालों को भी आर्य कहा गया है.

आर्यों के आदिनिवास सम्बन्धित विभिन्न मत

आर्यों का मूल निवास : यूरोप

फ्लोरेंस के एक विद्वान् फिलिप्पो सेसेटी ने यूरोपीय भाषाओं एवं संस्कृत भाषा में साम्यता के आधार पर आर्यों को यूरोप का मूल निवासी कहा. विलियम जोन्स, पी. गाइल्स, पेङ्का, नेहरिंग आदि विद्वानों ने भी आर्यों का आदिनिवास यूरोप बताया. संस्कृत, लेटिन, अंग्रेजी, जर्मन भाषाओं में साम्यता के आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला.

पी. गाइल्स नामक विद्वान् का मानना था कि ऋग्वेद में वर्णित पेड़-पौधे, पशु-पक्षी भारत में नहीं पाये जाते. ऋग्वेद में वर्णित भौगोलिक कारकों से साम्यता रखने वाले पशु-पक्षी,

पेड़-पौधे, कृषि व्यवस्था हंगरी, आस्ट्रिया, बोहेमिया या डैन्यूब नदी की घाटी में विद्यमान थी.

पेङ्का नस्ल एवं शारीरिक संरचना के आधार पर जर्मनी एवं स्केण्डिनेविया को आर्यों का मूल निवास मानते हैं. नेहरिंग नामक विद्वान् वानस्पतिक समानता के आधार पर दक्षिण रूस को आर्यों का आदिनिवास मानते हैं.

मध्य जर्मनी एवं दक्षिणी रूस के प्रागैतिहासिककालीन अवशेष पश्चिमी बाल्टिक समुद्र तट, यूक्रेन, न्यूजीलैण्ड, रूसी, तुर्किस्तान से साम्यता रखते हैं अतः भौगोलिक कारकों के आधार पर आर्यों का आदि निवास यूरोप को नहीं माना जा सकता.

आर्यों का मूल निवास : मध्य एशिया

ऋग्वेद और इराकी ग्रन्थ जेंद अवेस्ता (Zend Avesta) में अत्यधिक साम्यता होने के कारण प्रो. मैक्समूलर ने आर्यों का आदिनिवास मध्य एशिया बताया है.

प्रो. मैक्समूलर के अनुसार, मध्य एशिया से यूरोप एवं एशिया के विभिन्न भागों में आर्यों का प्रसार हुआ. मेयर और रेहर्ड नामक विद्वानों के अनुसार, आर्यों का आदिनिवास पामीर और बैक्ट्रिया था.

मैक्समूलर ने सिद्ध किया कि ईरानी आर्य एवं भारतीय आर्य ईरान और भारत के मध्य किसी एक स्थान पर रहते थे, लेकिन भौगोलिक एवं राजनैतिक कारणों से वे यूरोप और एशिया में बस गए. आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन था और इसका सर्वाधिक उपयुक्त वातावरण मध्य एशिया में था. विभिन्न विद्वानों के मतानुसार आर्य पहले गणना 'हिमवर्ष' एवं इसके बाद वर्ष की गणना 'शरद' के आधार पर करने लगे. आर्य घोड़े, नाव एवं पीपल से परिचित थे एवं आम तथा बरगद से अपरिचित थे.

आर्यों के प्राचीनतम अभिलेख मध्य एशिया से प्राप्त हुए हैं, जिसमें बोगजकोई अभिलेख (1400 ई. पू.) में मित्र, वरूण, इन्द्र आदि देवताओं का उल्लेख किया है, जो ऋग्वेद से साम्यता रखता है. इस आधार पर प्रो. मैक्समूलर भारतीय आर्यों को मध्य एशिया से सम्बद्ध मानते हैं.

आर्यों का मूल निवास : आर्कटिक प्रदेश

प्रसिद्ध भारतीय विद्वान् एवं स्वतन्त्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अपनी पुस्तक 'द आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन्स' (The Arctic Home of the Aryans) में आर्यों का मूल निवास आर्कटिक प्रदेश या उत्तर ध्रुव क्षेत्र बताया.

बाल गंगाधर तिलक के अनुसार, आर्कटिक क्षेत्र में भयंकर हिमपात होता था. 6 महिने का दिन एवं 6 महिने की रात्रि होती थी. इनसे बाध्य होकर आर्यों ने इस प्रदेश को छोड़ दिया.

आर्यों का मूल निवास : भारत

ए. सी. दास, गंगानाथ झा, डी. एस. त्रिवेद आदि विद्वान् आर्यों का मूल निवास भारत ही स्वीकार करते हैं, जबकि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' (Satyartha Prakash) एवं पार्जिटर ने अपनी पुस्तक एनशियेन्ट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन्स (Ancient Indian Historical traditions) में अभिव्यक्त किया है कि आर्यों का मूल निवास तिब्बत था.

भारत को आर्यों का मूल निवास मानने वाले विचारकों के अनुसार ऋग्वेद में वर्णित भौगोलिक अवस्था एवं प्राकृतिक अवस्था सप्तसैन्धव प्रदेश से साम्यता रखती है. गंगानाथ झा नामक विद्वान् आर्यों का आदिनिवास ब्रह्मर्षि प्रदेश (पूर्वी राजस्थान, गंगा-यमुना दोआब, पश्चिमीवर्ती प्रदेश) को मानते हैं.

डॉ. ए. सी. दास आर्यों का आदिनिवास सप्तसैन्धव प्रदेश मानते हैं. जबकि प्रो. मेकडोनाल्ड एवं प्रो. ग्रीव्ज आर्यों का आदिनिवास आस्ट्रो-हंगरी प्रदेश मानते हैं.

आधुनिक विद्वानों का मानना है कि आर्यों का मूल निवास पौलेण्ड से मध्य एशिया तक फैला हुआ था. संस्कृत, लेटिन, ग्रीक, जर्मनी, रोमेनक, स्वीडिश, श्लाव, रूमानियाई भाषाओं को आर्य भाषा कहा जाता है. दक्षिण भारत के विद्वान् चैकलिंगम पिल्लै का मत है कि आर्यों का आदिनिवास अफ्रीका से मलाया तक हिन्द महासागर की जगह पूर्व काल का गौडवाना प्रदेश था. गौडवाना की सुरन जाति भारत में आर्य नाम से विख्यात हुई.

आर्यों का मूल निवास : हिमालय

आर्यों के आदिनिवास के सम्बन्ध में लेखक का स्वयं का मत

विभिन्न विद्वानों, भाषाशास्त्रियों, इतिहासकारों ने अपने अध्ययन एवं अनुसंधान के आधार पर आर्यों के मूल निवास से सम्बन्धित विभिन्न मतों को प्रस्तुत किया. सभी विद्वज्जनों के मतों में पर्याप्त विभेद दृष्टिगोचर होता है. एक ऐसा सार्वभौमिक मत आज तक सामने नहीं आया, जो निर्विवाद आर्यों के आदिनिवास की पुष्टि कर सके. सिर्फ मत-मतान्तर प्रस्तुत कर देने भर से तो आर्यों के आदिनिवास की समस्या हल नहीं हो जाती. चूँकि **लक्षण और प्रमाण से वस्तुसिद्धि हो जाती है, तथापि विद्वानों की आर्य आदिनिवास सम्बन्धित वस्तुसिद्धि लक्षण और प्रमाण की कसौटी पर खरी नहीं उतरती.**

---

1. महाकुलकुलीनार्य सभ्य सज्जन साधवः – अमरकोष
2. कर्तव्यमाचरन् कामम् कर्तव्यमनाचरन् । तिष्ठति प्रकृताचारे स आर्य इति स्मृतः –वशिष्टस्मृति

सबसे पूर्व यदि 'आर्य' शब्द के अर्थ की चर्चा की जाए, तो विद्वानों की लम्बी शृंखला आर्य का अर्थ 'अजनबी' या 'विदेशी' वैदिक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है, लेकिन यह तर्कसंगत कदापि प्रतीत नहीं होता, क्योंकि आर्य का अर्थ यदि विदेशी होता, तो ऋग्वेद में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् 'विश्व को आर्य बना दो' की अभिव्यक्ति नहीं होती. वस्तुतः अमरसिंह द्वारा रचित अमरकोष के अनुसार, "आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु, कुलीन, महाकुलीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है."[1] वशिष्ठ स्मृति के अनुसार, "जो रूप-रंग, आकृति-प्रकृति, सभ्यता-शिष्टता, धर्म-कर्म, ज्ञान-विज्ञान और आचार-विचार तथा शील-स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो उसे आर्य कहते हैं."[2] आर्यों की यही परिभाषा एवं अर्थ तर्कसंगत एवं शास्त्रसम्मत है.

आर्यों के आदिनिवास के सम्बन्ध में मतनिर्धारकों में प्रो. मैक्समूलर का नाम सर्वोपरि लिया जाता है. प्रो. मैक्समूलर 'मध्य एशिया' आर्यों का आदिनिवास मानते हैं और उनकी यह धारणा भाषाजन्य-साम्यता के कारण है, लेकिन 40 वर्ष बाद प्रो. मैक्समूलर स्वयं ही इस मत के प्रति उपेक्षित भाव रखने लगते हैं और 'मध्य एशिया' में से 'मध्य' निकालकर 'एशिया' को आदिनिवास मानते हुए अपनी कृति–गुडवर्डस (अगस्त 1885) में लिखते हैं "जिस प्रकार 40 वर्ष पूर्व मैंने कहा था उसी तरह अब भी कहता हूँ कि आर्यों की जन्मभूमि कहीं एशिया में हैं."

"I should still say as I said forty years ago some where is Asia & no more."

(Good words, Aug, 1887)
—Prof. Mex Muller

प्रो. मैक्समूलर का 'कहीं एशिया' का मत पूर्णतः भ्रामक कहा जा सकता है, क्योंकि कहीं एशिया में तो विस्तृत भू-भाग आता है. मध्य एशिया में आर्यों का निवास माना जा सकता है, लेकिन आदिनिवास की कल्पना भी नहीं की जा सकती. आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी इस तथ्य का 'सत्यार्थ प्रकाश' में खण्डन किया है. स्वामीजी के मतानुसार आर्य त्रिविष्टप या तिब्बत के मूलनिवासी थे, लेकिन उन्होंने प्रमाणस्वरूप एक पंक्ति भी नहीं दी जिससे सिद्ध हो पाता है कि आर्यों का आदिनिवास तिब्बत था.

आर्यों के आदिनिवास के सम्बन्ध में धारणा अभिव्यक्ति करते हुए लोकमान्य तिलक 'आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन्स' (Arctic Home of the Aryans) में लिखते हैं–"आर्य आर्कटिक या उत्तरी ध्रुव के निवासी हैं और आज से दस हजार वर्ष पूर्व उत्तरी ध्रुव पर हिमपात हुआ जिसके परिणामस्वरूप आर्य, यूरोप, मध्य एशिया, ईरान एवं भारत में आकर बस गये." 'आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन्स' के 32वें पृष्ठ पर उन्होंने लिखा है कि "उत्तरी ध्रुव में प्रति 10,500 वर्षों में हिमपात होता था."

In short the glacial & interglacial periods in the Hemispheres alternate with each other every 10,500 years.

Tilak B.G., 'Arctic Home of the Aryans'. Page 32

उनके इस तथ्य के आधार पर स्पष्ट होता है कि आज से 20,000 वर्ष बाद एवं आज से 10,000 वर्ष पूर्व के हिमपात के पूर्व ही आर्य उत्तरी ध्रुव पर रहें. तो क्या बालगंगाधर तिलक के अनुसार आर्यों का आदिकाल 20,000 वर्ष पूर्व ही था ? यह प्रश्न उनके जीवनकाल में भी उमेशचन्द्र विद्यारत्न ने उनके आवास पर उठाया था–जिसके उत्तर में बाल गंगाधर तिलक की अभिव्यक्ति थी–"हमने मूलवेद नहीं पढ़ा है, सिर्फ यूरोपीय विद्वानों की धारणा एवं अनुवाद पढ़ा है." बाल गंगाधर तिलक के इन शब्दों को 'मानबेर आदिजन्म भूमि', नामक उमेश चन्द्र विद्यारत्न की पुस्तक के 124वें पृष्ठ पर पढ़ा जा सकता है–

"आमि गतवत्सरे तिलक महोदयेर बाटीते आतिथ्य ग्रहण करिया छिलाम । ताहौर सहित ये विषये अमार क्रमागत पाँच दिनबहुसंताप हरया छिलो । तिनि आमाके ताँहार द्वितलग्रहे वसिया सरल हृदय बलिया छिलाभ" आमी मूलवेद अध्ययन करि नाई, अमि साहिब दिगरे अनुवाद पाठ करिया छि ।

मानबेर आदि जन्मभूमि
वियारत्न उमेश चन्द्र, पृ. 124

इस तरह बाल गंगाधर तिलक स्वयं ही आर्कटिक प्रदेश के आर्यों के आदिनिवास सम्बन्धित मत से असहमत रहे.

सनातनधर्मियों के कुरुक्षेत्र, भारतीय विद्वानों के सप्तसैन्धव प्रदेश एवं जर्मनी, रूस सम्बन्धित आदिनिवास सम्बन्धित मत भी आर्यों के मूलनिवास की ठीक से पुष्टि नहीं करते.

यद्यपि यह विषय जटिल अवश्य है लेकिन असम्भव नहीं. साक्ष्य के अभाव में अवधारणा बनाना दुष्कर कृत्य है, तथापि लक्षण और प्रमाण से यह समस्या स्वतः दूर हो जाती है. आर्यों के आदिनिवास से पूर्व ध्यातव्य है कि आर्यों की उत्पत्ति अमैथुनिके सृष्टि के द्वारा हुई है, इसीलिए निरुक्त में यास्क ने 'आर्यईश्वरपुत्रः' अर्थात् आर्य को ईश्वर पुत्र कहा है. प्रारम्भ में आर्य चार रंग-रूपों के मिश्रण से उत्पन्न हुए थे. इसी के परिणामस्वरूप आदि में उनका वर्ण, रूप और भाषा एक थी. हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार देव, असुर, मनुष्य सभी मनु से उत्पन्न हुए हैं. आर्य भी अमैथुनिक सृष्टि के द्वारा मनु से उत्पन्न हैं. ट्यूटनों का मूल पुरुष जर्मनी में

मनस् अंग्रेजी में मैन, संस्कृत का मनुष्य, मनु से पूर्ण साम्यता रखता है. वायुपुराण के मतानुसार "मनु की उत्पत्ति हिमालय पर्वत पर हुई और वे दक्षिण के मेरू एवं मानस के ऊपर यमपुर में निवास करते थे." शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'मनु का जलप्लावन भी हिमालय में ही हुआ'. हिमालय को आर्यों का आदिनिवास मान लेना तर्कसंगत प्रतीत होता है. आर्यों के पूर्वज मनु की जन्मस्थली होने से नहीं अपितु समस्त लक्षण और प्रमाण इसकी पुष्टि करते हैं.

विद्वानों के मतानुसार प्रारम्भ में सारी पृथ्वी जलमग्न थी. सबसे पहले अधिक ऊँचाई के कारण हिमालय ही जल से बाहर निकला. उस स्थल पर ही सर्वप्रथम वनस्पति एवं मनुष्य का आविर्भाव हुआ. दूसरे साक्ष्य के रूप में हिमालय में भौगोलिक एवं जलवायवीय परिस्थिति भी मानवानुकूल थी. हिमालय पर मानव से पूर्व वनस्पतियों एवं पशुओं की उत्पत्ति हुई. आर्यों का प्रमुख भोजन फल, अन्न एवं दूध था. वनस्पतियों एवं पशुओं की मानव से पूर्व उत्पत्ति होने के फलस्वरूप ही उन्हें भोजन प्राप्त हो सका. इस तरह की अनुकूल परिस्थिति हिमालय के अलावा अन्यत्र नहीं थी. अतः यह निर्विवाद सत्य है कि आर्यों का आदिनिवास हिमालय ही था.

आर्यों के पशु गाय, घोड़ा, बकरी, ऊँट के हिमालय में होने के प्रमाण बतौर जीवाश्म भी प्राप्त हुए हैं जिसका वर्णन 'मेनुअल ऑफ द जिओलोजी' नामक पुस्तक के 113वें पृष्ठ पर मिलता है. इसके अतिरिक्त सभी वर्णों के समवायत्व स्वरूप का कोई पुतला तैयार कर उसका निरीक्षण किया जाये तो वह हू-ब-हू हिमालय क्षेत्र के वर्तमान मनुष्यों से पूरी तरह मिलता है. हिमालय का विस्तृत भू-भाग, विकास की परिस्थितियाँ भी आर्यों के आदिनिवास के उत्तरदायी कारकों को प्रस्फुटित करती हैं. हिमालय का दूसरा नाम मेरू है, जिसकी जानकारी आदिकाल से विश्व के सभी लोगों को थी. इस आशय के प्रमाण प्राप्त होते हैं. भारतीय आर्य इसे मेरू, जेंदभाषी ईरानी मौरू, यूनानी मेरोस, मिस्रवासी मेरई, आसीरियावासी मोरूख एवं दक्षिण तुर्किस्तानवासी मेरूव के नाम से सम्बोधित करते रहे हैं जो हिमालय की सार्वभौमिकता को सिद्ध करते हैं. ऐसा कोई तथ्य शेष नहीं रह जाता जिससे कि हिमालय को आर्यों का आदिनिवास नहीं माना जाए.

पूर्व विद्वानों द्वारा प्रस्तावित मतों के किसी भी स्थल पर 'आर्य' शब्द किसी भी रूप में दृष्टिगत नहीं होता, जबकि भारत में प्रचलित 'अनारी' शब्द अनार्य का ही अपभ्रंश है, जो असभ्य के अर्थ में प्रयुक्त होता था. साहित्यिक स्रोत भी हिमालय के मूल निवास होने की पुष्टि करते हैं. महाभारत के अनुसार[1]—"संसार में पवित्र हिमालय प्रसिद्ध है. इसमें एक योजन चौड़ा और पाँच योजन घेरे वाला मेरू है, जहाँ पर मनुष्यों की उत्पत्ति हुई. इस स्थल से ऐरावती, वितस्ता, विशाला, देविका और कुछ नदियाँ निकलती हैं, जहाँ पर ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई." देविका नामक नदी के पश्चिम किनारे पर 'मानस' नामक स्थल का मानस नामक स्थल (देविका पश्चिम पार्श्वे मानस सिद्धसेवितम्) था, जो वर्तमान में मानस झील है. इस स्थल का मानस नाम अमैथुनिक सृष्टि के कारण ही पड़ा है और निश्चित रूप से आर्यों की उत्पत्ति अमैथुनिक सृष्टि से हुई थी. अतः आर्यों का आदिनिवास हिमालय में मानस नामक स्थल को मानना तर्कसंगत होगा. इसके अतिरिक्त यदि हम विभिन्न विद्वानों के स्थलों की स्थिति हिमालय से ज्ञात करें तो स्पष्ट होगा कि यह स्थल केन्द्र में है. हिमालय से ही मध्य एशिया, यूरोप एवं अन्य क्षेत्रों में आर्यों का प्रसार हुआ. मध्य-एशिया, कुरुक्षेत्र, हिन्दुकुश पर्वत एवं तिब्बत इसकी चार सीमाएँ थीं.

प्रो. मैक्समूलर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, पारसियों एवं भारतीय विद्वानों द्वारा प्रस्तावित आदिनिवास स्थलों का केन्द्र बिन्दु 'हिमालय' ही है, अतः निर्विवाद सार्वभौमिक रूप से हिमालय को आर्यों का आदिनिवास स्वीकार किया जा सकता है.

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य से आर्यसभ्यता एवं संस्कृति की पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है. वैदिक साहित्य में चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण, षड्दर्शन, उपवेद एवं महाकाव्य आते हैं. ऋग्वेद पूर्ववैदिककालीन रचना है. ऋग्वेद की रचना 1500-1000 ई. पू. के मध्य हुई. ऋग्वेद की रचना सप्तसैन्धव प्रदेश में हुई. उत्तर वैदिक साहित्य का रचना काल 1000-600 ई. पू. माना जाता है. कुरू पांचाल क्षेत्र में उत्तर वैदिक साहित्य की रचना हुई. आर्यों के प्रसार, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिवेश की सम्पूर्ण जानकारी वैदिक साहित्य से प्राप्त होती है.

आर्यो का भौगोलिक विस्तार

ऋग्वेद के अनुसार आर्य भारत में सप्तसैन्धव प्रदेश में सबसे पूर्व बसे एवं वहीं से उनका प्रसार हुआ. ऋग्वेद में सप्तसैन्धव प्रदेश की प्रमुख सात नदियों का उल्लेख प्रमुख

---

1 हिमालयोऽभिधानोऽयं ख्यातो लोकेषु पावनः ।
अर्धयोजन विस्तारः, पञ्चयोजनमायतः ॥
परिमण्डलयोर्मध्ये मेरुरुत्तम पर्वतः
ततः सर्वाः समुत्पन्ना वृत्तयो द्विजसत्तम् ॥
ऐरावती वितस्ता च विशाला, देविका, कुहु ।
प्रसूतिर्यत्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ । (महाभारत)

रूप से किया गया है. अफगानिस्तान की निम्नलिखित चार प्रमुख नदियों का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है–

1. गोमति (आधुनिक गोमल)
2. क्रुमू (आधुनिक कुर्रम)
3. सुवास्तु (आधुनिक स्वात)
4. कुभा (आधुनिक काबुल)

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित नदियों का वर्णन भी ऋग्वेद में प्राप्त होता है–

1. सिन्धु	2. सरस्वती
3. दृषद्वती (घग्घर)	4. शतुद्रि (सतलज)
5. विपासा (व्यास)	6. परूष्णी (रावी)
7. असिक्नी (चेनाव)	8. वितस्ता (झेलम)

पंजाब की पाँच नदियों एवं राजस्थान की दो नदियों सरस्वती एवं दृषद्वती (घग्घर) सात नदियों वाले क्षेत्र को ऋग्वेद में 'सप्तसैन्धव' प्रदेश कहा है.

ऋग्वेद में वर्णित नदियों के विस्तार के आधार पर विद्वान आर्यों का प्रसार अफगानिस्तान से सिन्धु प्रदेश तक मानते हैं, जिसके अन्तर्गत गोमल मैदान, दक्षिणी अफगानिस्तान, दक्षिणी जम्मू व कश्मीर, सम्पूर्ण पंजाब एवं हरियाणा आते हैं. ऋग्वेद के प्रारम्भिक सूक्तों की रचना अफगानिस्तान से सिन्धु प्रदेश के मध्य हुई. सरस्वती और दृषद्वती के मध्य भाग को **ब्रह्मावर्त** कहा गया है. गंगा एवं यमुना का भी एक-दो बार ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है.

विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद में वर्णित गंगानदी आर्यों की पूर्वी सीमा थी. थानेश्वर, पूर्वी राजस्थान, मथुरा, गंगा एवं यमुना को ऋग्वेद में **'ब्रह्मर्षि प्रदेश'** कहा है. विद्वान् इस प्रदेश को आर्यों का दूसरा प्रसार केन्द्र मानते हैं. दशराज्ञ युद्ध में वर्णित जनजातियों का निवास स्थान गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र माना गया है.

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार भारतवर्ष के पाँच खण्ड थे–

1. ध्रुव मध्य प्रतीची देश (मध्यदेश)
2. प्राचीदिश (पूर्वी भाग)
3. दक्षिणदिश (दक्षिणी भाग)
4. प्रतीचीदिश (पश्चिमी भाग)
5. उदीची दिश (उत्तरी भाग)

उत्तर-वैदिकसाहित्य के अनुसार पंजाब से बाहर भी आर्यों का प्रसार हो चुका था.

'शतपथ ब्राह्मणम्' के अनुसार आर्यों से निम्नलिखित क्षेत्र भी सम्बद्ध हो चुके थे–

1. कांपिल्य	2. कुरुक्षेत्र
3. कौशाम्बी	4. हस्तिनापुर

उत्तर-वैदिकसाहित्य में आर्यों के प्रसार क्षेत्र में निम्नलिखित स्थलों का भी वर्णन मिलता है–

1. अरब सागर	2. हिन्द महासागर
3. हिमालय	4. विन्ध्याचल
5. गंगा	6. गण्डक
7. यमुना	8. मारू रेगिस्तान
9. नैमिषारण्य रेगिस्तान	

विद्वानों के अनुसार उत्तर वैदिक आर्यों का प्रमुख केन्द्र कुरुक्षेत्र था. उत्तर-वैदिककालीन आर्यों का केन्द्र दक्षिणी सीमा पर स्थित 'विन्ध्य प्रदेश' था.

आर्यों की सभ्यता को वैदिक सभ्यता कहा जाता है. वैदिक सभ्यता को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है–

1. ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक सभ्यता (1500-1000 ई. पू.)
2. उत्तर वैदिक सभ्यता (1000-600 ई. पू.)

ऋग्वैदिक या पूर्ववैदिक सभ्यता एवं संस्कृति (Rigvedic or Prevedic Civilization & Culture)

ऋग्वैदिक या पूर्ववैदिक काल की सभ्यता एवं संस्कृति की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करने वाला ग्रन्थ ऋग्वेद है.

ऋग्वेद में 10 मण्डल एवं 1028 ऋचाएँ हैं. ऋग्वेद में अग्नि, इन्द्र, उषा, द्यौष, पुरुष आदि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्राकृतिक शक्तियों को दैवीय शक्ति मानकर उनकी स्तुति की गई है.

आर्यों का राजनीतिक जीवन

भारत में सप्तसैन्धव प्रदेश में आकर बसने के उपरान्त आर्यों को दो प्रकार के संघर्षों का सामना करना पड़ा–

1. आर्यों के विभिन्न कबीलों से संघर्ष
2. अनार्यों से युद्ध

यहाँ पर आगमन के समय आर्य निम्नलिखित कबीलों में विभक्त थे–

1. भरत (ब्रह्मावर्त क्षेत्र में)
2. मत्स्य (भरतपुर में)
3. अनुस तथा द्रुह्यु (पंजाब में)
4. तुर्वसु (दक्षिण-पूर्व में)
5. यदु (पश्चिम में)
6. पुरू (सरस्वती नदी के आसपास)

कबीलों में आपसी संघर्ष अधिक भूमि, पशुओं एवं चरागाहों के लिए होता था. ऋग्वेद में युद्ध के अर्थ में गविष्टि, गोषु, गद्य एवं गम्य शब्दों का प्रयोग हुआ है. ऋग्वेद में कबीले के अर्थ को प्रकट करने वाला शब्द विश् है, जिसका 170 बार प्रयोग हुआ है. ऋग्वेद में जन् शब्द का उल्लेख 275 बार हुआ है. ऋग्वेद में कबीलाई युद्धों में प्रमुख युद्ध **'दशराज्ञ युद्ध'** (दस राजाओं के युद्ध) का वर्णन मिलता हैं.

ऋग्वेद में वर्णित तथ्यों के अनुसार दशराज्ञ युद्ध में लगभग तीस राजाओं ने भाग लिया था. दशराज्ञ युद्ध भरत कबीले के राजा सुदास के नेतृत्व में परुष्णी (रावी) नदी के तट पर लड़ा गया था. इस युद्ध में सुदास द्वारा अपमानित करने पर विश्वामित्र ने पंचजन–अणु, द्रुह्यु, यदु, तुवर्सु और पुरू के साथ अन्य लोगों को संगठित कर यह युद्ध किया था. दशराज्ञ युद्ध में सुदास की विजय हुई थी. ऋग्वैदिककाल में जन से तात्पर्य कबीला था, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में सर्वाधिक मिलता है. ऋग्वेद में अनार्यों के लिए पणि, दास, दस्यु के नाम का उल्लेख किया गया है.

ऋग्वेद में अनार्यों की निम्न जातियों का उल्लेख हुआ है–

1. अज
2. यक्ष
3. किकट
4. पिशाच
5. शिश्रु

'पणि' आर्यों को अपमानित कर उनके पशु / मवेशी चुरा लेते थे, जिसके कारण आर्यों को पणियों से संघर्ष करना पड़ता था. पणि, दास, दस्युओं को भारत का मूल निवासी ही माना गया है.

आर्यों का राजनीतिक संगठन

आर्यों में रक्त-सम्बन्धों के आधार पर कुटुम्ब, कुल या परिवार संगठित होते थे. आर्यों में सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई कुटुम्ब होता था. परिवार, कुल या कुटुम्ब का मुखिया (प्रधान) 'कुलप' या 'कुलपति' कहलाता था. अनेक परिवारों के संगठन से ग्राम का निर्माण होता था जिसका मुखिया 'ग्रामणी' कहलाता था.

अनेक ग्रामों को मिलाकर एक विश् का निर्माण होता था, जिसका प्रधान 'विशपति' कहलाता है. अनेक विशों का समूह जन या कबीला होता था जिसका प्रधान राजा या गोप होता था. वैदिक काल के उत्तरार्द्ध में जनपद, राज्य, राष्ट्र की अवधारणा स्थापित हुई. ऋग्वैदिक काल में शासन का प्रमुख राजन (गोप, गोपति, जनराजन, विशपति) होता था.

ऋग्वैदिककाल में शासन का प्रमुख राजन या राजा प्रजा का नेतृत्व करता था, प्रजा की सुरक्षा करता था, उसके बदले में प्रजा राजा की आज्ञा का पालन करती थी. ऋग्वैदिक काल में राजा भगवान् या अवतार नहीं होता था. केवल एक योग्य व्यक्ति माना जाता था. उसे स्वच्छाचारिता का कोई अधिकार नहीं था. राजा की शक्तियाँ सभा (उच्च सदन) एवं जनसभा (जिसे समिति कहते थे) लोगों की इच्छा के अनुसार होती थी.

राजन का पद कई स्थिति में वंशानुगत ही होता था. राजा की प्रशासनिक सहयोगिता के लिए पुरोहित, सेनानी एवं ग्रामणी होते थे. ऋग्वैदिककालीन राजा की कोई सेना या आमदनी का स्रोत नहीं होता था. वैदिककाल में अनेक जनतान्त्रिक संस्थाएँ कार्यरत् थीं.

तत्कालीन जन्तान्त्रिक संस्थाओं में प्रमुख निम्न थीं–

1. सभा
2. समिति
3. विदथ
4. गण

सभा सम्पूर्ण प्रजा की जनसभा थी. यह होमरकालीन गुरुजन प्रणाली से मिलती-जुलती थी. सभा में स्त्रियाँ भी भाग लेती थीं. सभा का प्रमुख कार्य 'न्याय' करना था.

समिति राजा का निर्वाचन करती थी. धार्मिक एवं सैनिकों से सम्बन्धित मामलों के लिए 'विदथ' होता था. सभा, समिति, गण एवं विदथ के साथ राजा का स्नेहिल सम्बन्ध होना अत्यावश्यक था. युद्धकाल में राजा द्वारा गठित सेना का संचालन वर्त्त एवं गण करते थे.

युद्ध में नेतृत्व करने वाला अधिकारी 'व्रजपति' कहलाता था. व्रजपति ही 'ग्रामणी' का नेतृत्व भी करता था. ऋग्वैदिक काल की न्यायिक व्यवस्था अद्वितीय थी, राजा ही न्याय किया करता था.

ऋग्वेदकालीन समाज

ऋग्वेदकालीन समाज 'पितृसत्तात्मक' था. समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार था. उसका मुखिया कुलपति होता था. कुलपति का परिवार पर नियन्त्रण एवं प्रभाव रहता था. ऋग्वेदकालीन परिवार संयुक्त होते थे. कई पीढ़ियों तक परिवार के बन्धु-बान्धव साथ रहते थे. उन्हें 'नप्तृ' कहा जाता था. ऋग्वेद में सौवीर (पुत्र) की कामना का उल्लेख मिलता है. माता को गृहस्वामिनी माना जाता था एवं उसे पूर्ण अधिकार एवं सम्मान प्राप्त था. विवाह के लिए स्त्रियों को पिता की अनुमति लेना आवश्यक था.

वैदिककालीन प्रमुख विदुषी महिलाएँ निम्नलिखित हैं–

1. विश्वतारा
2. विश्पला
3. घोषा

स्त्रियों को सम्पत्ति में हिस्सा प्राप्त नहीं होता था एवं उन्हें पुरुषों के संरक्षण में रहना अत्यावश्यक था. ऋग्वैदिक संस्कृति में सती प्रथा का प्रचलन नहीं था. तत्कालीन संस्कृति में 'नियोग' की व्यवस्था प्रचलित थी. वैदिककालीन समाज में

विवाह एकात्मक होते थे. राजकुमारों के लिए बहुविवाह का भी प्रचलन था. बाल-विवाह प्रचलित नहीं था.

ऋग्वैदिक संस्कृति में वधू मूल्य एवं दहेज दोनों प्रथाएँ प्रचलित थीं. स्त्रियों/कन्याओं को शिक्षा, कबीलों की सभाओं एवं समितियों तथा राजनीति में भाग लेने का अधिकार था. आठों प्रकार के विवाहों का प्रचलन था, तथापि स्वयंवर प्रथा अस्तित्व में नहीं थी.

आर्यों का प्रारम्भिक वर्गीकरण वर्ण एवं कर्म के आधार पर निष्पादित हुआ था. इस काल में प्रमुख तीन वर्ग थे–

1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय
3. वैश्य

वैदिककाल में ब्राह्मण एवं क्षत्रिय को 'राजन्य' कहा जाता था. सामान्य लोग वैश्य वर्ण के अन्तर्गत आते थे. अनार्यों को आर्यों में समाहित कर एक नये वर्ण का उदय हो चुका था जिसे 'शूद्र' कहा जाता था.

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के अनुसार वर्णों की उत्पत्ति निम्न तरीके से हुई थी–

1. ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण की उत्पत्ति
2. ब्रह्मा की बाहु से क्षत्रिय की उत्पत्ति
3. ब्रह्मा की जंघा से वैश्य की उत्पत्ति
4. ब्रह्मा के पैर से शूद्र की उत्पत्ति

ऋग्वेद में दास एवं दस्युओं के साथ आर्यों के संघर्ष का उल्लेख प्राप्त होता है. विद्वान् इतिहासकारों के अनुसार दास या दस्यु भारत के निवासी थे. वैदिक काल में धनी वर्ग दास रखते थे. आर्थिक उत्पादनों में दासों से कोई सम्बन्ध नहीं था. आर्यों का वर्ण गौर था एवं वैदिककालीन मूलनिवासी काले रंग के थे.

वैदिककालीन कबीलाई समाज तीन भागों में विभक्त था–

1. योद्धा 2. पुरोहित
3. प्रजा

आर्यों का भोजन अनाज, दूध, फल एवं माँस होता था. सुरा और सोमरस का प्रयोग भी आर्यों द्वारा किया जाता था. वैदिककालीन लोग कमर के नीचे वास एवं कमर के ऊपर अधिवास वस्त्रों का प्रयोग स्त्री एवं पुरुष दोनों करते थे. स्त्रियाँ कंचुकी (नीवी) पहनती थीं. इस काल में सूती एवं ऊनी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था. रंगने, कशीदाकारी की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई थी. बाल संवारने की विभिन्न कलाओं का विकास हो चुका था. आर्य पुरुष स्त्रियाँ नुपुर, हार, कुण्डल आदि आभूषणों का प्रयोग करते थे. रथ दौड़, नृत्यगान, द्यूत-क्रीड़ा वैदिककालीन मनोरंजन के साधन थे. आर्यों के घर लकड़ी, बाँस एवं फूस से बनाये जाते थे. उन्हें ईंटों का ज्ञान नहीं था. जड़ी-बूटियों, जादू-टोने का प्रयोग बीमारियों से मुक्ति के लिए किया जाता था. बड़ों का सम्मान, अतिथि सत्कार, दान आदि पर आर्यों का प्रबल विश्वास था. मृतकों के दाह संस्कार की परम्परा विद्यमान थी. तत्कालीन विद्यार्थी गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करता था, जहाँ पर ब्राह्मण शिक्षक होता था.

ऋग्वेदकालीन अर्थव्यवस्था

आर्यों की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण तत्त्व पशुपालन था. पशुपालन के अतिरिक्त कृषि एवं कुटीर उद्योगों पर भी आर्य केन्द्रित थे. धनाढ्य व्यक्तियों के पास अनेक पशु होते थे, उन्हें 'गोमत' कहा जाता था. 'गाविष्ती, गवेषणा, गौयत' शब्दों का अर्थ 'गाय की खोज' होता था, जिन्हें आर्य लोग लड़ाई एवं संघर्षों के लिए प्रयोग में लेते थे. ऋग्वेद में पशु सम्पदा की वृद्धि की कामना कई बार की गई है. पशुओं की रक्षा करने वाला देवता **'पूषन'** होता था. पशुओं के कारण ही आर्यों में युद्ध भी होता था.

ऋग्वैदिक समाज में गाय प्रमुख पशु होता था, जिसकी चोरी का उल्लेख सर्वाधिक मिलता है. गाय को 'अधन्या (अछन्या)' (जो मारने के योग्य नहीं हो) माना जाता था. ऋग्वेद के अनुसार देवताओं की उत्पत्ति 'गाय' से ही हुई थी. गाय जमीन से अधिक मूल्यवान थी एवं इसका विनिमय भी होता था. आर्य भेड़, बकरियाँ, कुत्ते एवं घोड़ों का पालन करते थे एवं ऊँट, हाथी, बाघ तथा सिंह से भी परिचित थे. पशुओं एवं चरागाहों की देखभाल वज्रपति करता था. आर्य फसल काटना, बीज बोना, सिंचाई करना, डंठलों से अनाज अलग करना आदि गतिविधियों को जानते थे. जौ (यव) एवं धान (धान्य) प्रमुख रूप से उपजाया जाता था एवं काठ के हल एवं बैलों से आर्य खेती करते थे.

ऋग्वैदिक समाज में प्रमुख व्यवसायी वर्ग निम्नलिखित थे–

1. बढ़ई–रथ, गाड़ियाँ एवं मकान बनाते थे.
2. जुलाहा–वस्त्र बुनते थे, स्त्रियाँ सूत कातती थीं.
3. चर्मकार–चमड़े की वस्तुएँ बनाते थे.
4. कर्मकार–अयस् नामक धातु से हथियार एवं उपकरण बनाते थे.
5. हिरण्यकार–सोने के आभूषण बनाते थे.
6. भिषक्–व्याधियों की रोकथाम करते थे.

देवताओं का वैद्य अश्विनी था. ऋग्वेद में समुद्र शब्द का उल्लेख हुआ है लेकिन विदेशी व्यापार के साक्ष्य नहीं मिलते. विद्वानों के मतानुसार वैदिककाल में भी नगर प्रणाली विद्यमान

विवाह एकात्मक होते थे. राजकुमारों के लिए बहुविवाह का भी प्रचलन था. बाल-विवाह प्रचलित नहीं था.

ऋग्वैदिक संस्कृति में वधू मूल्य एवं दहेज दोनों प्रथाएँ प्रचलित थीं. स्त्रियों/कन्याओं को शिक्षा, कबीलों की सभाओं एवं समितियों तथा राजनीति में भाग लेने का अधिकार था. आठों प्रकार के विवाहों का प्रचलन था, तथापि स्वयंवर प्रथा अस्तित्व में नहीं थी.

आर्यों का प्रारम्भिक वर्गीकरण वर्ण एवं कर्म के आधार पर निष्पादित हुआ था. इस काल में प्रमुख तीन वर्ग थे–

1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय
3. वैश्य

वैदिककाल में ब्राह्मण एवं क्षत्रिय को 'राजन्य' कहा जाता था. सामान्य लोग वैश्य वर्ण के अन्तर्गत आते थे. अनार्यों को आर्यों में समाहित कर एक नये वर्ण का उदय हो चुका था जिसे 'शूद्र' कहा जाता था.

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के अनुसार वर्णों की उत्पत्ति निम्न तरीके से हुई थी–

1. ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण की उत्पत्ति
2. ब्रह्मा की बाहु से क्षत्रिय की उत्पत्ति
3. ब्रह्मा की जंघा से वैश्य की उत्पत्ति
4. ब्रह्मा के पैर से शूद्र की उत्पत्ति

ऋग्वेद में दास एवं दस्युओं के साथ आर्यों के संघर्ष का उल्लेख प्राप्त होता है. विद्वान् इतिहासकारों के अनुसार दास या दस्यु भारत के निवासी थे. वैदिक काल में धनी वर्ग दास रखते थे. आर्थिक उत्पादनों में दासों से कोई सम्बन्ध नहीं था. आर्यों का वर्ण गौर था एवं वैदिककालीन मूलनिवासी काले रंग के थे.

वैदिककालीन कबीलाई समाज तीन भागों में विभक्त था–

1. योद्धा 2. पुरोहित
3. प्रजा

आर्यों का भोजन अनाज, दूध, फल एवं माँस होता था. सुरा और सोमरस का प्रयोग भी आर्यों द्वारा किया जाता था. वैदिककालीन लोग कमर के नीचे वास एवं कमर के ऊपर अधिवास वस्त्रों का प्रयोग स्त्री एवं पुरुष दोनों करते थे. स्त्रियाँ कंचुकी (नीवी) पहनती थीं. इस काल में सूती एवं ऊनी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था. रंगने, कशीदाकारी की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई थी. बाल संवारने की विभिन्न कलाओं का विकास हो चुका था. आर्य पुरुष स्त्रियाँ नुपुर, हार, कुण्डल आदि आभूषणों का प्रयोग करते थे. रथ दौड़, नृत्यगान, द्यूत-क्रीड़ा वैदिककालीन मनोरंजन के साधन थे. आर्यों के घर लकड़ी, बाँस एवं फूस से बनाये जाते थे. उन्हें ईंटों का ज्ञान नहीं था. जड़ी-बूटियों, जादू-टोने का प्रयोग बीमारियों से मुक्ति के लिए किया जाता था. बड़ों का सम्मान, अतिथि सत्कार, दान आदि पर आर्यों का प्रबल विश्वास था. मृतकों के दाह संस्कार की परम्परा विद्यमान थी. तत्कालीन विद्यार्थी गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करता था, जहाँ पर ब्राह्मण शिक्षक होता था.

ऋग्वेदकालीन अर्थव्यवस्था

आर्यों की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण तत्त्व पशुपालन था. पशुपालन के अतिरिक्त कृषि एवं कुटीर उद्योगों पर भी आर्य केन्द्रित थे. धनाढ्य व्यक्तियों के पास अनेक पशु होते थे, उन्हें 'गोमत' कहा जाता था. 'गाविष्ती, गवेषणा, गीयत' शब्दों का अर्थ 'गाय की खोज' होता था, जिन्हें आर्य लोग लड़ाई एवं संघर्षों के लिए प्रयोग में लेते थे. ऋग्वेद में पशु सम्पदा की वृद्धि की कामना कई बार की गई है. पशुओं की रक्षा करने वाला देवता **'पूषन'** होता था. पशुओं के कारण ही आर्यों में युद्ध भी होता था.

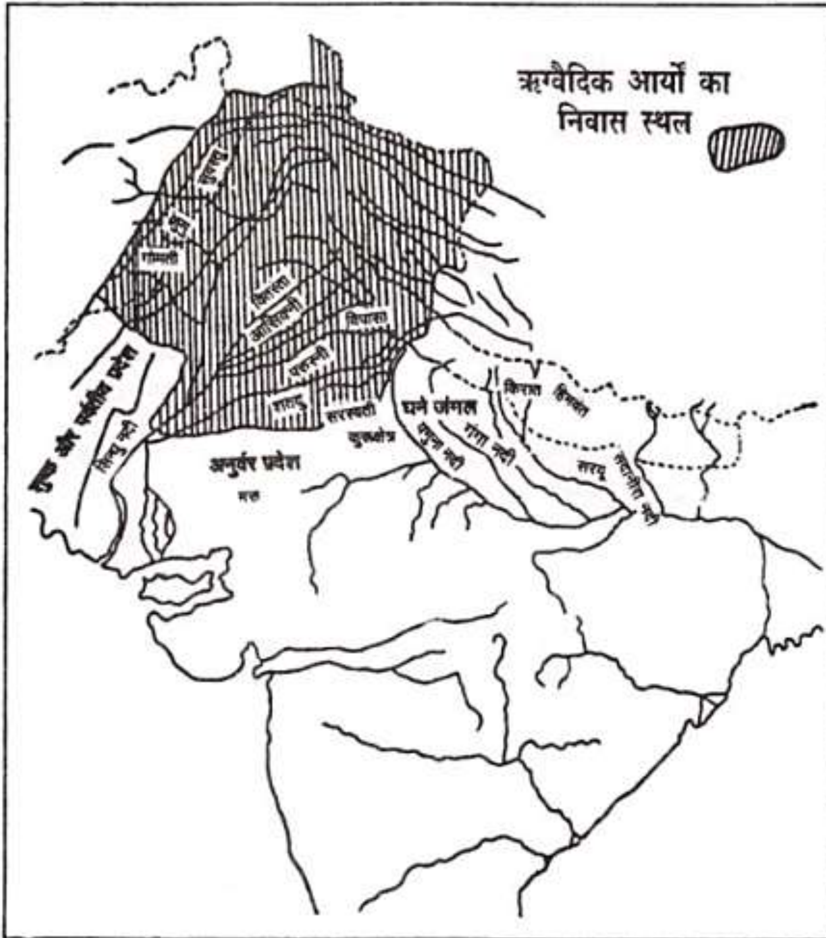
ऋग्वैदिक समाज में गाय प्रमुख पशु होता था, जिसकी चोरी का उल्लेख सर्वाधिक मिलता है. गाय को 'अधन्या (अछन्या)' (जो मारने के योग्य नहीं हो) माना जाता था. ऋग्वेद के अनुसार देवताओं की उत्पत्ति 'गाय' से ही हुई थी. गाय जमीन से अधिक मूल्यवान थी एवं इसका विनिमय भी होता था. आर्य भेड़, बकरियाँ, कुत्ते एवं घोड़ों का पालन करते थे एवं ऊँट, हाथी, बाघ तथा सिंह से भी परिचित थे. पशुओं एवं चरागाहों की देखभाल वज्रपति करता था. आर्य फसल काटना, बीज बोना, सिंचाई करना, डंठलों से अनाज अलग करना आदि गतिविधियों को जानते थे. जौ (यव) एवं धान (धान्य) प्रमुख रूप से उपजाया जाता था एवं काठ के हल एवं बैलों से आर्य खेती करते थे.

ऋग्वैदिक समाज में प्रमुख व्यवसायी वर्ग निम्नलिखित थे–

1. बढ़ई–रथ, गाड़ियाँ एवं मकान बनाते थे.
2. जुलाहा–वस्त्र बुनते थे, स्त्रियाँ सूत कातती थीं.
3. चर्मकार–चमड़े की वस्तुएँ बनाते थे.
4. कर्मकार–अयस् नामक धातु से हथियार एवं उपकरण बनाते थे.
5. हिरण्यकार–सोने के आभूषण बनाते थे.
6. भिषक्–व्याधियों की रोकथाम करते थे.

देवताओं का वैद्य अश्विनी था. ऋग्वेद में समुद्र शब्द का उल्लेख हुआ है लेकिन विदेशी व्यापार के साक्ष्य नहीं मिलते. विद्वानों के मतानुसार वैदिककाल में भी नगर प्रणाली विद्यमान

थी. 1600-1000 ई. पू. के मध्य की तिथि का एक भग्न अवशेष भगवानपुरा (हरियाणा से) प्राप्त हुआ है, जहाँ पर मिट्टी या पक्की ईंटों का तेरह कमरों वाला भवन निकला है. बैलगाड़ी एवं घोड़े व रथ वैदिक समाज के आवागमन का प्रमुख साधन था. समयमाप के लिए वैदिक समाज में गौधूलि एवं दूरी के लिए 'गव्युति' शब्द का प्रयोग हुआ है. इस काल में पत्थर की कुल्हाड़ी का उपयोग होता था. इस आशय का उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है. गायों को दुहने के सन्दर्भ में पुत्री को 'दुहिता' कहा जाता था. आग को जंगल जलाने के प्रयोग में लिया जाता था एवं कृषि भूमि को बदला जाता था.



ऋग्वैदिक धार्मिक मान्यताएँ

ऋग्वेद में 'ऋत' की अवधारणा का प्रस्फुटन हुआ है. विद्वानों के मतानुसार ऋत नैतिक एवं आध्यात्मिक व्यवस्था का नियामक था. ऋत पर ही सम्पूर्ण संसार एवं देवताओं को आधारित माना गया था. वरुण को 'ऋतस्य गोपा' कहा गया है. ऋत की स्थापना एवं रक्षा पासा खेलने से होती थी. समय गुजरते वैदिक समाज वर्ण एवं वर्गों में विभाजित हो गया, जिससे स्वार्थपरता के वशीभूत होकर ऋत की अवधारणा एवं वरुण की महत्ता का विनाश लोगों ने कर दिया. ऋग्वैदिक संस्कृति के आर्य बहुदेववादी एवं प्रकृति की पूजा में विश्वास रखते थे.

आर्यों के देवताओं की निम्नलिखित श्रेणियाँ थीं–

1. पृथ्वी के प्रतीक देवता–पृथ्वी, सोम, अग्नि, बृहस्पति.
2. अंतरिक्षवासी देवता–इन्द्र, वरुण, मरुत, वायु रुद्र.
3. आकाशीय देवता या स्वर्गस्थ देवता—सूर्य, उषा, सविता, अश्विन्, वरुण, मित्र.

ऋग्वेदिककालीन देवताओं में सर्वोपरि इन्द्र को माना जाता था, जो प्रकाश, वर्षा, युद्ध का देवता समझा जाता था. ऋग्वेद में 250 ऋचाएँ इन्द्र की स्तुति के लिए हैं. न्याय, नैतिकता, शक्ति का देवता वरुण था, जिसका सहयोगी देवता मित्र था. देवताओं और मानवों के मध्य सम्पर्क साधक अग्नि

थी, जिसके द्वारा देवता अपना आहार ग्रहण करते थे. ऋग्वेद में इसकी स्तुति में 200 ऋचाओं का प्रयोग हुआ है.

आर्यों के अन्य देवता निम्नलिखित थे–

1. सोम–वनस्पति का देवता
2. सूर्य–प्रकाश का देवता
3. मरुत–तूफान का देवता
4. पूषन–पशुओं का देवता

अदिति एवं उषा–दो देवियों के रूप में मान्य थी. ऋग्वैदिक समाज में भूत-प्रेत, राक्षस, पिशाच, अप्सरा आदि पर विश्वास था. टोने-टोटके की प्रथाएँ प्रचलित थीं. गणचिह्नात्मक आस्थाओं में निम्नलिखित जातियों एवं व्यक्तियों का उल्लेख ऋग्वैदिक समाज में मिलता है–

1. अज 2. शिग्रू
3. काश्यप 4. गौत्तम
5. मत्स्य

आर्यों ने कालान्तर में में इन्द्र-मित्र, वरुण-अग्नि जैसे युगल देवताओं को मानना स्वीकार किया. आर्य यज्ञाहुति एवं स्तुति के द्वारा शतवर्षीय आयु, पुत्र, धन-धान्य और विजय की कामना करते थे. देवताओं से मोक्ष नहीं माँगी जाती थी.

यज्ञ दो प्रकार के होते थे–

1. व्यक्तिगत यज्ञ 2. सामूहिक यज्ञ

यज्ञों में घी, दूध, धान्य, मांस की आहुति प्रदान की जाती थी. पुरोहित यज्ञ करते थे, जिन्हें बदले में गाय-सोना, दास-दासी दक्षिणा में प्राप्त होते थे.

ऋग्वैदिक काल में प्रमुख रूप से निम्न यज्ञों का प्रचलन था–

1. ब्राह्मयज्ञ 2. देवयज्ञ
3. पितृयज्ञ 4. नमित्तिक (नैमित्तिक) यज्ञ

नमित्तिक (नैमित्तिक) यज्ञ निश्चित उद्देश्यों के पूर्ति के लिए होते थे जिनके प्रकार निम्न थे–

1. पुत्र कामेष्टि यज्ञ 2. आयुष्कामेष्टि यज्ञ
3. लोकेष्टि यज्ञ

ऋग्वेद में नरबलि के साक्ष्य के रूप में शुनःशेप का उदाहरण मिलता है, जिसके आधार पर यज्ञों में पशुबलि की धारणा स्पष्ट होती है. मंदिर एवं मूर्तिपूजा का इस काल में कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं होते. मोक्ष प्राप्ति में आर्यों को विशेष विश्वास नहीं था. बलि प्रथा के कारण इस काल में गणित का आविर्भाव हुआ.

उत्तर-वैदिकयुगीन सभ्यता एवं संस्कृति

उत्तर-वैदिककाल को 'परिवर्तनशील काल' (Transitional Phase) कहा जाता है. इस काल के साहित्यिक स्रोतों में तीनों वेद–सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ एवं उपनिषद प्रमुख हैं. पुरातात्त्विक साक्ष्यों में उत्तर-वैदिककाल में चित्रित धूसर मृद्भाण्ड एवं लोहे के प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त होते हैं. उत्तर-वैदिककाल में स्थायी ग्राम व्यवस्था का आविर्भाव एवं कबीलाई तत्त्वों का पतन होने लगा था. उत्तर-वैदिककाल में कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का जन्म हो चुका था. उत्तर-वैदिककालीन साहित्य 1000-600 ई. पू. के मध्य गंगा के ऊपरी मैदान में लिखी गई, जिसके फलस्वरूप उत्तर-वैदिकयुगीन संस्कृति का काल 1000-600 ई. पू. के मध्य माना जाता है. उत्तर-वैदिककालीन साहित्य के अनुसार इस काल के आर्य पंजाब से चलकर गंगा और यमुना के मध्य सारे पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक फैल गए थे. इस काल के उत्खनित स्थलों में हस्तिनापुर, कौशाम्बी एवं अहिच्छत्र प्रमुख थे. उत्खनन और अनुसंधानों के फलस्वरूप उत्तर-वैदिककालीन संस्कृति के 700 स्थल प्रकाश में आये हैं, जहाँ सबसे पहले बस्तियाँ स्थापित हुई थीं. इन बस्तियों को चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (Painted Grayware) या पी. जी. डब्ल्यू स्थल कहते हैं. भारत और पुरू नामक कबीले मिलकर उत्तर-वैदिककाल में कुरू नाम से जाने गये, उन्हीं के नाम पर 'कुरुक्षेत्र' नाम पड़ा.

उत्तर-वैदिककालीन राजनीति एवं प्रशासन

साहित्यिक ग्रन्थों में आर्यों के मध्यदेश एवं कुरुक्षेत्र तक प्रसार के साक्ष्य मिलते हैं. 'शतपथ ब्राह्मणम्' के अनुसार आर्यों का प्रसार सदानीरा या गण्डक नदी तक हो चुका था. दक्षिणी क्षेत्र में विदर्भ तक आर्य प्रसारित हो चुके थे.

उत्खनन से निम्नलिखित स्थलों पर उत्तर-वैदिककालीन लोहे के हथियार (बाणाग्र, बरछी, शीर्ष) प्राप्त हुए हैं–

1. हस्तिनापुर 2. आलमगीरपुर
3. नोह 4. अंतरजीखेड़ा
5. बटेसर

उत्तर-वैदिककाल में कबीलों का स्थान क्षेत्रीय राज्यों ने ले लिया था. वैदिककालीन तुर्वश एवं क्रिवी ने मिलकर **पांचाल** कबीले को जन्म दिया. कुरु एवं पांचालों ने मिलकर हस्तिनापुर (मेरठ) में अपनी राजधानी स्थापित की. 950 ई. पू. कुरु कबीलों के दो गुट–कौरव एवं पांडवों में भरत-युद्ध हुआ, जिसमें कुरु-कबीले का विनाश हुआ. महाभारत नामक महाकाव्य में इसी युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है. हस्तिनापुर बाढ़ से नष्ट हो गया एवं वहाँ के शेष कुरु कबीले के लोग कौशाम्बी में बस गये. दार्शनिक एवं विद्वानों के कारण प्रसिद्ध 'कांपिल्य' पांचालों की राजधानी थी. राजा प्रवाहक जावालि पांचालों का प्रसिद्ध दार्शनिक था. विदेह की राजधानी 'मिथिला' के राजा जनक थे.

इस काल के निम्नलिखित क्षेत्रीय राज्यों का उल्लेख मिलता है–

1. काशी	6. मद्र
2. कोशल	7. मत्स्य
3. विदेह	8. मगध
4. गांधार	9. अंग
5. कैकेय	

उत्तर-वैदिककालीन क्षेत्रीय राज्यों का उदय सैन्य शक्ति के आधार पर हुआ था. पैतृक राजतन्त्र की अवधारणा का विकास होने लगा था. उत्तर-वैदिकयुग में राजा के अधिकारों एवं शक्ति में वृद्धि हो गई थी तथा राष्ट्र राजा के हाथों में आ गया था.

तत्कालीन राजतंत्र क्षेत्रीय थे. विभिन्न राजतन्त्रों का प्रकार निम्नवत् है–

1. प्राची में सम्राट्	2. दक्षिण में भौज्य
3. प्रतीची में स्वराज्य	4. उदीची में वैराज्य

उत्तर-वैदिककाल के राजा निम्न उपाधियाँ धारण करने लगे थे–

1. राजाधिराज	4. विराट
2. सम्राट्	5. एकराट
3. अधिराज	6. सार्वभौम

उत्तर-वैदिककाल राजत्व प्राप्ति के लिए राजा निम्न यज्ञ करते थे–

1. राजसूय	2. वाजपेय
3. अश्वमेध	4. इन्द्रमहाभिषेक

'आपस्तम्ब श्रौतसूत्र' के मतानुसार सार्वभौम राजा को ही 'अश्वमेध यज्ञ' करने का अधिकार था.

'गोपथ ब्राह्मण' के अनुसार अलग-अलग राजा निम्नलिखित यज्ञ करने की योग्यता रखते थे–

1. राजा–राजसूय	2. सम्राट्–वाजपेय
3. विराट–पुरुषमेध	4. स्वराट्–अश्वमेध
5. सर्वराट–सर्वमेध	

राजपद के वंशानुगत होने एवं क्षेत्रीय राज्यों के उदय होने के फलस्वरूप सभा, समिति, विदथ आदि कबीलाई संस्थाओं का पतन हो गया था.

राजा को राज्यासीन होने से पूर्व अभिषेक करना आवश्यक होता था. अभिषेक के दो प्रकार थे–

1. पुनर्भिषेक	2. ऐन्द्रमहाभिषेक

उत्तर-वैदिककालीन प्रशासन में[1] सेनानी, पुरोहित, ग्रामणी, राजन्य (राजकृतियों) की भागीदारी होने लगी थी. राजा इनसे सहायता प्राप्त करता था. 'संग्रहिता' कर लेने वाला अधिकारी होता था. बलि, शुल्क एवं भाग के रूप में राजा आय प्राप्त करता था. न्याय व्यवस्था एवं ग्राम्य व्यवस्था में स्थानीय तत्त्वों की प्रधानता थी.

1. उक्त सभी को रत्निन या राजकृति कहा जाता था.

उत्तर-वैदिककालीन सामाजिक व्यवस्था

उत्तर-वैदिककालीन समाज में कर्म से अधिक वर्ण को महत्त्व दिया जाने लगा था. ब्राह्मण एवं क्षत्रिय, समाज के सर्वश्रेष्ठ वर्ग माने जाते थे. ये दोनों उत्पादन के नियन्त्रक थे. वैश्य और शूद्र इस युग के उत्पादक थे, जिन्हें किसी भी तरह की सुविधा प्राप्त नहीं थी. शूद्रों की दशा बदतर थी. सभी चारों वर्णों की दिनचर्या, खान-पान, आचार-विचार एवं विवाह सम्बन्धी नियम अलग-अलग थे ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य उपनयन संस्कार के अधिकारी थे, लेकिन शूद्रों को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था. शूद्रों को अछूत एवं अस्पृश्य माना जाता था. उनके छूने को निदंनीय माना जाता था.

निम्नलिखित वर्गों को वर्णव्यवस्था से अलग रखा गया था, ये अतिनिम्न श्रेणी में आते थे–

1. पुलिंद	4. निषाद
2. शबर	5. आन्ध्र
3. व्रात्य	6. पुण्ड्र

श्रेष्ठता एवं अधिक धन प्राप्त करने के लिए ब्राह्मण एवं क्षत्रियों में संघर्ष होते थे. ब्राह्मण को सर्वश्रेष्ठ, क्षत्रियों को दूसरे स्थान पर एवं उत्पादन करने वाले वैश्यों को तीसरे स्थान पर माना जाता था. वैश्य सैनिक सेवाएँ भी देते थे. शूद्र सबसे निम्नतर वर्ग था. शूद्र उच्च वर्गों की सेवा करते थे एवं अनेक प्रतिबन्धों को सहते थे. शूद्र धार्मिक कर्मकाण्डों में भाग नहीं ले सकते. उत्तर-वैदिककाल में अन्तरजातीय विवाह का प्रचलन था, लेकिन शूद्रों से विवाह करना धर्मविरोधी, निदंनीय एवं कुकृत्य माना जाता था. आगे चलकर वर्ण-व्यवस्था की जटिलता के फलस्वरूप जाति व्यवस्था का प्रादुर्भाव हुआ. उत्तर-वैदिक साहित्य में भूमि के दान एवं भूमि की खरीद का उल्लेख मिलता है. स्त्री दासियाँ उच्च वर्ण के लोगों के अनाज की पिसाई का कार्य करती थीं. उत्तर-वैदिक-काल में पितृसत्तात्मक तत्त्व प्रबल हो गया था, जिसके फलस्वरूप पुत्रियों का जीवन अभिशाप समझा जाने लगा था.

'ऐतरेय ब्राह्मण' के अनुसार पुत्र परिवार का रक्षक एवं पुत्रियाँ दुःख का मूल थीं. 'मैत्रायणीसंहिता' के मतानुसार जुआ और शराब के साथ स्त्रियाँ भी पुरुष के लिए एक दुर्गुण थीं. उच्च वर्णों में बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी. पहली पत्नी को मुख्य पत्नी मानकर उसे विशेषाधिकार प्रदान किये जाते थे. कन्याओं के बेचने एवं दहेज लेने की प्रथा

उत्तर-वैदिककाल में प्रचलन में आने लगी थी. स्त्रियाँ पुरुषों के नियन्त्रण में ही शिक्षा, संगीत, कला आदि का ज्ञान प्राप्त करती थीं. एक आर्य की आयु 100 वर्ष मानकर सामाजिक व्यवस्था में आश्रम प्रणाली प्रचलित थी. आश्रम क्रमशः 25-25 वर्ष की अवधि के निम्नलिखित चार थे–

1. ब्रह्मचर्याश्रम–प्रथम 25 वर्ष
2. गृहस्थाश्रम–25 से 50 वर्ष की अवधि
3. वानप्रस्थाश्रम–50 से 75 वर्ष की अवधि
4. संन्यासाश्रम–75 से 100 वर्ष की अवधि

ब्रह्मचर्याश्रम में कठोर नियम, अनुशासन के साथ गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती थी. गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर विवाह कर पुत्र पैदा करना एवं अतिथि सत्कार करना प्रमुख लक्ष्य था. यह सर्वश्रेष्ठ आश्रम था, जिसमें पुत्र अपने पिता के कर्ज से मुक्त होता था. वानप्रस्थाश्रम में त्याग का जीवन व्यतीत करना पड़ता था. संन्यासाश्रम में घूमते हुए संन्यासी का जीवन व्यतीत कर मोक्ष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना पड़ता था. घूम-घूम कर उपदेश देने के कारण संन्यासियों को 'परिव्राजक' कहा जाता था.

उत्तर-वैदिककाल में उच्च वर्ण के लोगों को निम्न ऋणों से उऋण होना अत्यावश्यक था–

1. देवऋण	2. ऋषिऋण
3. पितरऋण	4. मानवीय ऋण

उत्तर-वैदिककाल में निम्नलिखित चार पुरुषार्थ तत्कालीन मानव के प्रमुख लक्ष्य थे–

1. धर्म	2. अर्थ
3. काम	4. मोक्ष

शूद्र और स्त्रियों को छोड़कर सबका उपनयन संस्कार कराना अत्यावश्यक था. विद्यार्थी भी उपनयन संस्कार कराता था. शिक्षण संस्थाएँ अनुदान से चलती थीं. राजा द्वारा शिक्षा की व्यवस्था नहीं की जाती थी. 12 वर्ष तक गुरुकुल में विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती थी. शिक्षा मौखिक थी.

उत्तर-वैदिककाल में निम्नलिखित विषयों पर शिक्षा प्रदान की जाती थी–

1. ब्रह्मविद्या	2. देवविद्या
3. भूतविद्या	4. नक्षत्रविद्या
5. इतिहास	6. तर्कशास्त्र
7. उपनिषद	8. स्वाध्याय
9. प्राणायाम	10. चारित्रिक एवं शारीरिक सुधार

उत्तर-वैदिकयुगीन आर्थिक स्थिति

उत्तर-वैदिककाल में आर्य स्थायी ग्रामों में निवास करने लगे थे. कृषि उनके जीवन का मूलभूत आधार बन चुकी थी. उत्तर-वैदिक साहित्य में 'धातु वाले चोंचयुक्त फाल का' उल्लेख प्राप्त होता है. पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, बंगाल, पश्चिमी उत्तर प्रदेश से 900 ई. पू. अवधि के उत्खनन से लोहे के प्रमाण प्राप्त हुए हैं. 500 ई. पू. का लोहे का बना हल का फाल जखेड़ा (वर्तमान एटा उत्तर प्रदेश) से उत्खनन के दौरान प्राप्त हुआ है. श्याम अयस् नामक धातु का वर्णन साहित्य में कई बार हुआ है, जो कृषि उपकरण बनाने के काम में आती थी. अंतरजीखेड़ा एवं हस्तिनापुर से इस काल में जो, गेहूँ, चावल एवं जंगली गन्ने की खेती के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं. खादिर एवं कत्था लकड़ियों से विशाल हल बनते थे. काठकसंहिता में 24 बैलों से हल खींचने का उल्लेख मिलता है. उत्तर-वैदिककाल में सिंचाई एवं गोबर के खाद देने की विधि का विकास हो चुका था. पशुओं में भैंस भी अब आर्यों द्वारा अपनाई जाने लगी थीं. दूध, ऊन, चमड़ा, माँस के कारण पशुओं का व्यापारिक उपयोग होने लगा था.

वाजसनेयी संहिता में उत्तर-वैदिककाल के निम्नलिखित व्यवसायी वर्गों का उल्लेख मिलता है–

1. मछुआरा	2. गड़रिया
3. मणिकार	4. स्वर्णकार
5. धोबी	6. लुहार
7. कुम्भकार	8. रंगसाज
9. जुलाहा	10. रस्सी एवं टोकरी निर्माता
11. सारथी	

उत्तर-वैदिककाल में रंग-बिरंगे बर्तनों का निर्माण होता था, जिन्हें चित्रित-धूसर मृदुभाण्ड (P.G.W. या Painted Grey Ware) कहा जाता था. उत्तर-वैदिककाल में व्यवसायी संगठन में रहते थे एवं उनके प्रधान के लिए श्रेष्ठी, गण, गणपति जैसे शब्दों को प्रयोग में लिया जाता था. बढ़ई, चर्मकार, धातुकर्मी एवं सूत कातने, वस्त्र बुनने की प्रक्रिया प्रचलित थी. उत्तर-वैदिक साहित्य में कुलालों (कुम्भकारों) एवं कुलाल-चक्र (चाक) का उल्लेख मिलता है. 'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार कर्ज देने, ब्याज लेने की प्रथा इस काल में प्रारम्भ हो चुकी थी. निष्क, सतमान एवं कृष्णल उत्तर-वैदिककालीन मूल्यों की महत्त्वपूर्ण इकाइयाँ थीं, जिन्हें सिक्कों की श्रेणियों में गिना जाता था. उत्तर-वैदिककाल में सीसा, चाँदी, टिन का उपयोग किये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है.

उत्तर-वैदिककालीन धार्मिक स्थिति

उत्तर-वैदिक काल का धार्मिक जीवन रूढ़िवादी, आडम्बरपूर्ण एवं कर्मकाण्ड प्रधान बन चुका था. धार्मिक जीवन के सर्वेसर्वा पुरोहित बन गए थे. ऋग्वैदिककालीन देवता इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि का स्थान गौण हो गया था एवं शिव, विष्णु, ब्रह्मा इस काल के श्रेष्ठ देवता बन गये थे. उत्तर-वैदिककाल में यक्ष, गन्धर्व, दिग्पाल देवताओं के सहायक के रूप में सामने आये थे. ऋग्वैदिककालीन देवियों

उषा एवं अदिति का स्थान अप्सरा एवं यक्षिणियों ने ले लिया था. उत्तर-वैदिककाल में अवतारवाद की धारणा प्रबल हुई एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रिमूर्ति स्वरूप में प्रमुख देवता बन गये. ब्रह्मा को विश्व का सृष्टिकर्त्ता, रुद्र या शिव को पशुओं का देवता एवं विष्णु को पालनकर्त्ता माना जाता था. पूषन् ऋग्वैदिककाल में पशुओं का देवता, शूद्रों के देवता के रूप में पहचाना जाने लगा था. अंतरजीखेड़ा से प्राप्त गोलाकार अग्निकुण्ड एवं कौशाम्बी से प्राप्त यज्ञवेदी मूर्तिप्रथा के प्रचलन के साक्ष्य स्पष्ट करते हैं. ब्राह्मण श्रेष्ठ समझे जाते थे एवं क्षत्रिय ब्राह्मणों के संरक्षक बन गये थे. तप और भक्ति के स्थान पर यज्ञ एवं बलि पूर्णरूप से उत्तर-वैदिककाल में आ चुकी थी. यज्ञों के सम्पादन में पुरोहितों का सहयोगी होना आवश्यक था. उत्तर-वैदिककाल में राजसूय यज्ञ करने वाले पुरोहित को सोना, वस्त्र, सामान, जमीन एवं 2,40,000 गायें दान में दी जाती थीं. गर्भाधान से मृत्युपर्यन्त विभिन्न संस्कार उत्तर-वैदिककालीन संस्कृति में प्रचलित थे.

पुरोहित राजा के प्रमुख सलाहकार के रूप में जाने जाते थे और शेष इन उपमाओं से विभूषित होते थे–

1. उद्गाता 2. होतृ
3. अर्ध्वयु

उत्तर-वैदिककाल में कर्मकाण्ड एवं आडम्बरों की भर्त्सना करने की दिशा में उपनिषदों का जन्म हुआ, जिन्होंने अद्वैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया. षड्दर्शन का उद्भव इसी काल में हुआ एवं आत्मज्ञान को मोक्षप्राप्ति का सर्वोपरि उपाय बताया. राजसूय यज्ञ से राजा को दैवियों की प्राप्ति होती थी, जिसकी अवधि 2 वर्ष थी, वाजपेय 17 दिन की अवधि का था, जिससे नवयौवन प्राप्त किया जाता था एवं अश्वमेध यज्ञ राजा के चक्रवर्ती होने के लिए उत्तर-वैदिककाल में किया जाता था.

निष्कर्ष–पूर्व वैदिक सभ्यता एवं उत्तर-वैदिक सभ्यता में अत्यधिक अन्तर था. सरल, भक्तिमयी ऋग्वैदिक संस्कृति उत्तर-वैदिक काल में जटिलतम आडम्बरपूर्ण एवं कर्मकाण्डी बन गयी थी. वर्ण व्यवस्था भी विकृत होकर उत्तर-वैदिक काल में जातीय व्यवस्था बन गयी थी. इन सबके अतिरिक्त उत्तर-वैदिककालीन अर्थव्यवस्था अवश्य सुदृढ़ हो गई थी. पूर्व-वैदिककाल तक का अस्थायी मानव उत्तर वैदिक काल में स्थायी एवं कृषि, पशु तथा अन्य व्यवसायों का मालिक बन चुका था. शिक्षा, संगठन, क्षेत्रीय राज्यों का उदय इत्यादि परिवर्तन भी उत्तर-वैदिककाल में ही हुए थे.

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- वेदों से सम्बन्धित होने के कारण ही आर्य सभ्यता वैदिक संस्कृति कहलाती है.
- आर्यों का अर्थ अजनबी, विदेशी, श्रेष्ठ, उत्तम एवं उच्च-वर्ण में उत्पन्न हुआ माना जाता है.
- 1350 ई. पू. के बोगोजकोई (पश्चिम एशिया) के अभिलेख में आर्यों का सबसे पहले उल्लेख मिलता है.
- विद्वानों का एक वर्ग भोरोपीय भाषा बोलने वालों को भी आर्य कहते हैं.
- यूरोप के विद्वान् आर्यों का आदिनिवास यूरोप बताते हैं.
- प्रो. मैक्समूलर ने आर्यों का आदिनिवास मध्य एशिया बताया है.
- ऋग्वेद और जेंद अवेस्ता (Zend-Avesta) में पूर्णतः साम्यता है.
- विभिन्न विद्वानों के मतानुसार आर्य प्रारम्भ में 'हिमवर्ष' एवं बाद में 'शरद' के आधार पर वर्ष की गणना करते थे.
- आर्य आम एवं बरगद के बारे में नहीं जानते थे.
- घोड़े, नाव, पीपल का ज्ञान आर्यों को हो चुका था और वे इनसे परिचित थे.
- लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के अनुसार आर्यों का आदिनिवास आर्कटिक प्रदेश या उत्तरी ध्रुव क्षेत्र था.
- भयंकर हिमपात के कारण आर्यों ने उत्तरी ध्रुव को छोड़ दिया–यह 'द आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन्स' पुस्तक में उल्लिखित है, जिसे बालगंगाधर तिलक ने लिखी थी.
- ए. सी. दास, गंगानाथ झा, डी. एस. त्रिवेद भारत को आर्यों की आदिभूमि मानते हैं.
- स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं पार्जिटर के अनुसार आर्यों का मूल निवास तिब्बत था.
- पार्जिटर की आर्यों से सम्बन्धित पुस्तक का नाम 'एनशियेन्ट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिसन्स' है.
- भारतीय विद्वान् सप्तसैन्धव प्रदेश को आर्यों का आदिनिवास मानते हैं.
- प्रो. मेकडोनाल्ड एवं प्रो. ग्रीब्ज आस्ट्रो-हंगरी प्रदेश को आर्यों का आदिनिवास मानते हैं.
- संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, जर्मनी, रोमेनक, स्वीडिश, श्लाव, रूमानियाई आदि भाषाओं को आर्यभाषा कहा जाता है.
- चैकलिंगम पिल्ले नामक विद्वान् के अनुसार गोंडवाना की सुरन जाति भारत में आर्य नाम से विख्यात हुई.
- वैदिक सभ्यता की जानकारी वैदिक साहित्य से प्राप्त होती है.
- ऋग्वेद की रचना सप्तसैन्धव प्रदेश में 1500-1000 ई. पू. के मध्य हुई.

- उत्तर-वैदिकसाहित्य की रचना कुरु-पांचाल में 1000-500 ई. पू. के मध्य हुई.
- गोमति, क्रुमू, सुवास्तु एवं कुभा नामक अफगानिस्तान की चार प्रमुख नदियों का ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है.
- पंजाब की पाँच नदियों एवं राजस्थान की दो नदियों सरस्वती एवं दृषद्वती (घग्घर) के कारण 'सप्तसैन्धव' प्रदेश नाम पड़ा.
- ऋग्वेद के प्रारम्भिक सूक्तों की रचना अफगानिस्तान से सिन्धु प्रदेश के मध्य हुई.
- सरस्वती और दृषद्वती (घग्घर) के मध्य भाग को ब्रह्मावर्त कहा गया है.
- 'दशराज्ञ युद्ध' में वर्णित जनजातियों का निवास स्थान गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र माना गया है.
- विद्वानों के अनुसार आर्यों का प्रमुख केन्द्र कुरुक्षेत्र था.
- वैदिक सभ्यता को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है–ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक सभ्यता (1500-1000 ई. पू.). एवं उत्तर वैदिक सभ्यता (1000-600 ई. पू.).
- विद्वानों के मतानुसार ऋग्वेद में 1028 ऋचाएँ हैं.
- पूर्व-वैदिककाल (ऋग्वैदिककाल) की जानकारी का स्रोत ऋग्वेद है.
- आर्यों को प्रारम्भ में विभिन्न कबीलों एवं अनार्यों के साथ पशुओं को चुराने के कारण युद्ध करना पड़ा.
- ऋग्वेद में कबीले के पर्याय विश् नामक शब्द का उल्लेख 170 बार हुआ है.
- कबीलाई युद्धों में प्रमुख 'दशराज्ञ युद्ध' का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है, जिसमें लगभग तीस राजाओं ने भाग लिया था.
- दशराज्ञ युद्ध परुष्णी (रावी) नदी के किनारे भरत कबीले के राजा सुदास के नेतृत्व में विश्वामित्र के विरुद्ध युद्ध लड़ा गया था, जिसमें सुदास विजयी रहा था.
- पणि, दास, दस्यु अनार्य थे, जिन्हें भारतीय ही स्वीकारा गया था.
- 'कुटुम्ब' आर्यों की सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई होती थी, जिसे परिवार या कुल भी कहते थे.
- 'कुलप' या 'कुलपति' कुटुम्ब या परिवार का मुखिया होता था.
- अनेक परिवारों के संगठन से ग्राम का निर्माण होता था, जिसका मुखिया 'ग्रामणी' होता था.
- ग्रामों से विश् का निर्माण होता था, विश्पति उसका मुखिया कहलाता था.
- जनपद, राज्य, राष्ट्र की अवधारणा उत्तर-वैदिककाल में प्रस्फुटित हुई थी.
- ऋग्वैदिककाल में शासन का प्रमुख राजन होता था, जो प्रजा का नेतृत्व करता था.
- राजा या राजन की शक्तियाँ सभा एवं जनसभा पर आधारित होती थीं.
- पूर्व-वैदिककाल में सेनानी, ग्रामणी, पुरोहित राजा के सहयोगी होते थे.
- सभा, समिति, विदथ एवं गण जैसी जनतान्त्रिक संस्थाओं का अस्तित्व पूर्व-वैदिककाल में था.
- राजा का निर्वाचन समिति द्वारा किया जाता था.
- 'व्रजपति' युद्ध में सेना का नेतृत्व करने वाला अधिकारी होता था, जो ग्रामणी का नेतृत्व भी करता था.
- ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक था.
- ऋग्वैदिक समाज में परिवार संयुक्त ही होते थे.
- पूर्व वैदिक काल में माता को गृहस्वामिनी मानकर उसका सम्मान किया जाता था.
- स्त्रियों को विवाह के लिए पिता की अनुमति लेना आवश्यक था.
- परिवार की पीढ़ियों के बन्धु-बान्धवों के एक-साथ रहने को 'नप्तृ' कहा जाता था.
- विश्वतारा, विश्पला, घोषा वैदिककाल की प्रमुख विदुषी महिलाएँ थीं.
- पूर्व-वैदिक काल में विवाह एकात्मक होते थे. बाल विवाह एवं सती प्रथा का प्रचलन नहीं था.
- स्वयंवर प्रथा का अस्तित्व पूर्व-वैदिककाल में नहीं था.
- योद्धा, पुरोहित एवं प्रजा के रूप में पूर्व-वैदिक समाज तीन वर्गों में विभक्त था.
- अनाज, दूध, फल एवं माँस आर्यों का मुख्य भोजन था. सुरा एवं सोमरस का प्रयोग भी आर्य किया करते थे.
- सूती एवं ऊनी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था. रंगने, कशीदाकारी की प्रथा का प्रचलन हो चुका था.
- पूर्व-वैदिककाल में दाह-संस्कार का प्रचलन नहीं था.
- पूर्व-वैदिककाल में धनी लोगों के पास अनेक पशु होते थे, उन धनी लोगों को 'गोमत' कहा जाता था.
- ऋग्वैदिककाल में पशुओं के कारण ही युद्ध होता था.
- गाय 'अधन्या (अछन्या)' (नहीं मारने योग्य) समझी जाती थी.
- जौ (यव) एवं धान (धाय) पूर्व-वैदिककाल के प्रमुख अनाज थे. काठ के हल और बैल से आर्य खेती करते थे.
- अश्विनी देवताओं का भिषक् (वैद्य) था.
- गोधूलि समयमापन के लिए एवं गव्यूति दूरी मात्रक के रूप में आर्यों में प्रचलित था.
- ऋग्वैदिककाल में गायों को दुहने के कारण पुत्री को 'दुहिता' कहा जाता था.
- धार्मिक मान्यताओं में पूर्व-वैदिक काल में ऋत की अवधारणा सर्वोपरि थी. वरुण को 'ऋतस्य गोपा' कहा जाता था. पासा खेलने से ऋत की स्थापना एवं रक्षा होती थी.
- पूर्व-वैदिककाल का सबसे प्रमुख देवता इन्द्र था, जो वर्षा एवं प्रकाश का देवता था. ऋग्वेद में इन्द्र की स्तुति में 250 ऋचाएँ उल्लिखित हैं.

- देवताओं और मानवों की सम्पर्क-साधक अग्नि थी, जो ऋग्वेद की 200 ऋचाओं में वर्णित है.
- 'पूषन्' पशुओं का देवता समझा जाता था, जो उत्तर-वैदिक-काल में शूद्रों का देवता बन गया था.
- अदिति एवं उषा पूर्व-वैदिककाल की दो देवियाँ थीं.
- टोने-टोटके, भूत-प्रेत, पिशाच पर पूर्व वैदिककालीन आर्य विश्वास करते थे.
- ऋग्वैदिककाल में व्यक्तिगत एवं सामूहिक दो यज्ञ होते थे.
- ऋग्वेद में शुनःशेप का वर्णन नरबलि के उदाहरण के रूप में प्राप्त होता है.
- ऋग्वैदिक आर्यों का मोक्ष में विश्वास नहीं था.
- पूर्व-वैदिककाल में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए नमित्तिक (नैमित्तिक) यज्ञ होता था.
- उत्तर-वैदिककाल परिवर्तन काल कहा जाता था.
- स्थायी ग्राम व्यवस्था, कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का आविर्भाव उत्तर-वैदिककाल में हुआ था.
- भरत और पुरु मिलकर कुरु हुए एवं उनके नाम पर कुरुक्षेत्र बना.
- 'शतपथ ब्राह्मणम्' के अनुसार सदानीरा या गण्डक नदी तक उत्तर-वैदिककाल में आर्यों का प्रसार हुआ.
- क्षेत्रीय राज्यों का उदय उत्तर-वैदिककाल में हुआ था.
- तुर्वस एवं क्रिवी से पांचाल कबीले का आविर्भाव हुआ. पांचाल एवं कुरुओं के मिलने से हस्तिनापुर का निर्माण हुआ.
- विद्वानों के अनुसार कांपिल्य पांचालों की राजधानी थी.
- उत्तर वैदिक काल में सैन्य शक्ति के बल पर क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ. पैतृक राजतन्त्र का आविर्भाव उत्तर वैदिक काल में हुआ.
- राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध, इन्द्रमहाभिषेक यज्ञ राजत्व प्राप्ति के लिए राजा किया करते थे.
- पुनर्भिषेक एवं ऐन्द्रमहाभिषेक दो प्रकार के प्रमुख अभिषेक उत्तर-वैदिककाल में किए जाते थे.
- कर्म से प्रबल वर्ण उत्तर वैदिक सभ्यता में माना जाता था.
- ब्राह्मण एवं क्षत्रिय उत्पादन के नियन्त्रक एवं सर्वश्रेष्ठ वर्ग तथा शूद्र एवं वैश्य हेय तथा उत्पादनकर्त्ता माने जाते थे.
- शूद्रों को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था.
- उत्तर-वैदिककाल में शूद्रों के अतिरिक्त अन्य से अन्तर्विवाह करना प्रचलित था.
- पितृसत्तात्मक तत्त्व प्रबल होने के फलस्वरूप पुत्र वंश का रक्षक एवं पुत्रियाँ अभिशाप मानी जाती थीं.
- उच्च वर्गों में बहुविवाह प्रचलित था. प्रथम पत्नी को प्रमुख माना जाता था.
- वधूमूल्य एवं दहेज प्रथा प्रचलित थी.
- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास ये चार आश्रम एवं धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों का पालन उत्तर-वैदिक-आर्य किया करते थे.
- विद्यार्थी 12 वर्ष तक गुरुकुल में मौखिक शिक्षा प्राप्त करते थे. विद्यार्थियों में उपनयन संस्कार प्रचलित था.
- उत्तर-वैदिकसाहित्य में धातु के चोंच वाले फाल का उल्लेख मिलता है.
- जखेड़ा, जिला एटा (उ. प्र.) से 500 ई. पू. के लोहे के फाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं.
- व्यापारिक उपयोग में उत्तर-वैदिककाल में पशु भी आ गये थे.
- उत्तर-वैदिककाल में लगभग सभी व्यवसायी वर्गों का अस्तित्व था. व्यवसायी संगठित रहते थे. रस्सी एवं टोकरी बनाने वालों का भी आविर्भाव हो चुका था.
- श्रेष्ठी, गण, गणपति जैसे शब्दों का प्रयोग व्यावसायियों के संगठन के लिए होता था.
- चाक एवं कुम्भकार होने के प्रमाण भी उत्तर वैदिक काल से प्राप्त होते हैं.
- चाँदी, सीसा, टिन का प्रयोग उत्तर वैदिक काल में होने लगा था.
- पुरोहित उत्तर-वैदिक युग के धार्मिक प्रणेता माने जाते थे.
- ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रमुख देवता थे. यक्ष, दिग्पाल, गन्धर्व देवताओं के सहायक के रूप में जाने जाते थे.
- उत्तर-वैदिक युग में अप्सरा एवं यक्षिणियों ने ऋग्वैदिक देवियों का स्थान ले लिया था.
- राजसूय यज्ञ करने वाले को उत्तर-वैदिक काल में 2,40,000 गायें, सोना एवं अन्य सामान दान में दिया जाता था.
- अद्वैतवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन उपनिषदों ने किया, जो उत्तर-वैदिककाल में रचे गये थे.
- षड्दर्शन की उत्पत्ति उत्तर-वैदिककाल में हुई.

विशिष्ट तथ्य

वैदिककालीन शब्दावली

शब्द	अर्थ
सभासह	सभा का प्रमुख व्यक्ति
सभा	ऋग्वैदिककालीन विधायिका
व्रत	जनजाति सेना के समूह
उपास्ति	राजपरिवार के लोग
व्रात्य	मगध
कुलाल	कुम्हार (धर्मशास्त्र में प्रयुक्त)
कुलाल चक्र	कुम्हार का चाक
सार्वभौम प्रणाली	अश्वमेध यज्ञ की प्रणाली
परिव्राजक	संन्यासी

परिव्राजिक	शर्मण वर्ग की स्त्रियाँ
अन्तर्वेदी	गंगा-दोआब के लिए प्रयुक्त शब्द
सह्याद्रि	पश्चिमी घाट
यदु एवं तुर्वस	दासों की तरह उपेक्षित आर्य
कीकट	दक्षिण बिहार के अनार्य
निवी	कंचुकी
स्पस	गुप्तचर
प्रप	कुआँ
पत्ति	पैदल सैनिक
अवत	कूप
लांगल	हल
कृष्टि या चाराशायी	कृषि करने वाला
कर्मकार	घरेलू नौकर
उपनार	नमक बनाकर बेचने वाला
अरिवार	ज्योतिषी
उत्ज	इस्पात
भोग	राजस्व लगान
स्नातगो	सैन्य प्रशासक
अयोमुखम	ताँबे या लोहे के बने तीर
पर्जन्य	बादल

प्राचीन नदियाँ एवं उनके आधुनिक नाम

	प्राचीन नदी	आधुनिक नाम
1.	इन्दुस नदी	सिन्धु
2.	गोमल	गोमती
3.	सरसुती	सरस्वती
4.	झेलम	वितस्ता
5.	विपाशा	व्यास
6.	शतुद्रि	सतलज
7.	स्वस्तु	स्वात
8.	दृषद्वती	घग्घर
9.	क्रुमू	कुर्रम
10.	अस्किनी	चिनाव
11.	परुष्णी	रावी

वेदानुसार प्रमुख पुरोहित

	वेद	पुरोहित
1.	ऋग्वेद	होत्री
2.	सामवेद	उद्गात्री
3.	यजुर्वेद	अर्ध्वयु
4.	अथर्ववेद	अथर्व

आर्यों के मूलनिवास सम्बन्धित प्रमुख मत एवं प्रतिपादक

	प्रतिपादक	प्रमुख मत
1.	डॉ. ए. सी. दास	सप्तसैन्ध्य प्रदेश
2.	प्रो. मैक्समूलर	मध्य एशिया
3.	महर्षि दयानन्द सरस्वती, पार्जिटर	तिव्वत प्रदेश
4.	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक	आर्कटिक या उत्तरी ध्रुव प्रदेश
5.	प्रो. मेकडोनाल्ड एवं प्रो. ग्रीब्ज	आस्ट्रो-हंगरी प्रदेश
6.	मेयर एवं रेहर्ड	पामीर एवं वैक्ट्रिया
7.	गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि प्रदेश (पूर्वी राजस्थान, गंगा-यमुना दोआब पश्चिम-वर्ती प्रदेश)
8.	आधुनिक विद्वान्	पौलेण्ड
9.	चैकलिंगम पिल्लै	गौडवाना प्रदेश
10.	फिलिप्पो सेसेटी सर विलियम्स जोन्स	यूरोप
11.	पी. गाईल्स	डेन्यूव नदी की घाटी में
12.	पेङ्का	स्केण्ड्रिनेविया
13.	नेहरिंग	दक्षिण रूस
14.	डॉ. के. के. शर्मा	हिमालय
15.	डॉ. राजबलि पांडेय	मध्य प्रदेश
16.	जे. जी. रोड	वैक्ट्रिया

वैदिककालीन लोहे के औजार

	औजारों का प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
1.	कुद्दाल	कुदाल
2.	अयोकुटा	हथौड़ी
3.	अयानगल	लोहे का फाल
4.	अयोविकार कुषि	लोहे का फाल
5.	फाल	लोहे का फाल

ऋग्वेद में उल्लिखित शब्दों की आवृत्ति

1.	इन्द्र	250 बार
2.	अग्नि	200 बार
3.	जन	275 बार
4.	विश्	170 बार
5.	गौ	176 बार

6.	सोम	114 बार
7.	गंगा	1 बार
8.	यमुना	3 बार
9.	गण	46 बार
10.	कृषि	33 बार
11.	व्रज (गौशाला	45 बार
12.	वरुण	30 बार

ऋग्वेद के रचनाकाल के सम्बन्ध में विभिन्न मत

क्र.सं.	प्रस्तावक	प्रस्तावित कालक्रम
1.	प्रो. मैक्समूलर	1200 ई. पू.-1000 ई. पू. के मध्य
2.	बाल गंगाधर तिलक	4000 ई. पू.
3.	सर्वमान्य प्रचलित तिथि	1500 ई. पू.
4.	जैकोबी	तृतीय शताब्दी ई. पू.
5.	विण्टरनित्ज	2500-2000 ई. पू.

उत्तर-वैदिककालीन षोड्श संस्कार

1. गर्भाधान	9. कर्णवेध
2. पुंसवन	10. विद्यारम्भ
3. सीमन्तोन्नयन	11. उपनयन
4. जातकर्म	12. वेदारम्भ
5. नामकरण	13. केशान्त
6. निष्क्रमण	14. समावर्तन
7. अन्नप्राशन	15. विवाह संस्कार
8. चूड़ाकर्म	16. अन्त्येष्टि

ऋग्वेद में वर्णित सात नदियाँ

1. सिन्धु	5. परुष्णी
2. सरस्वती	6. असिक्नी
3. शतुद्रि	7 वितस्ता (झेलम)
4. विपासा	

ऋग्वैदिक देवताओं की श्रेणियाँ

1. आकाशीय देवता–

(i) वरुण (ii) मित्र (iii) घोष (iv) सविता (v) पूषण (vi) अदिति, (vii) विष्णु (viii) अश्विनी (ix) उषा (x) सूर्य.

2. अन्तरिक्षीय देवता–

(i) अपाया (ii) इन्द्र (iii) वात (iv) पर्जन्य (v) बुद्धायन (vi) रुद्र (vii) अहि (viii) मातरिश्वन्.

3. पृथ्वीवासी देवता–

(i) पृथ्वी (ii) अग्नि (iii) सोम (iv) बृहस्पति (v) सरस्वती.

इन्द्र के विभिन्न नाम

1. **माधवा**–दानशीलता के कारण
2. **रथेष्ट**–कुशल रथ योद्धा होने के कारण
3. **पुरन्दर**–शत्रुओं के किले को नष्ट करने के कारण
4. **वृज**–वृज राक्षस का संहार करने के कारण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आर्य शब्द मूलरूप से जिस भाषा का है–
   (A) जर्मन (B) संस्कृत
   (C) हिन्दी (D) रोमेनिक
2. बोगोजकोई की शान्ति सन्धि का काल है–
   (A) 1550 ई. पू. (B) 1350 ई. पू.
   (C) 2250 ई. पू. (D) 1000 ई. पू.
3. बोगोजकोई की शांति संधि जिनके मध्य हुई–
   (A) आर्य एवं अनार्यों के मध्य
   (B) भारतीय आर्य एवं ईरानी आर्यों के मध्य
   (C) हित्तदस के राजाओं एवं मितामी साम्राज्य के मध्य
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
4. भोरोपीय भाषा का काल है–
   (A) 2000 ई. पू. (B) 1500 ई. पू.
   (C) 1000 ई. पू. (D) 600 ई. पू.
5. जर्मनी एवं स्केण्डिनेविया को आर्यों का आदिनिवास मानने वाले विद्वान् थे–
   (A) नेहरिंग (B) पेंका
   (C) पी. गाईल्स (D) विलियम जोन्स
6. नेहरिंग नामक विद्वान् के अनुसार आर्यों का आदिनिवास था–
   (A) दक्षिण रूस (B) जर्मनी
   (C) आस्ट्रिया (D) बोहेमिया
7. निम्नलिखित में से कौनसे ग्रन्थ समान हैं ?
   (A) द आर्कटिक हॉम ऑफ द आर्यन्स एवं सत्यार्थ प्रकाश
   (B) ऋग्वेद एवं जेंद अवेस्ता
   (C) कौशिक गृहसूत्रम् एवं कौषितकी गृहसूत्रम्
   (D) उपर्युक्त सभी
8. प्रो. मैक्समूलर के अनुसार आर्यों का आदिनिवास था–
   (A) मध्य एशिया (B) पामीर
   (C) तिब्वत (D) भारत
9. प्रारम्भ में आर्यों के गणना का स्रोत था–
   (A) शरद वर्ष (B) हिमवर्ष
   (C) गव्यूति (D) मिनट
10. आर्य जिससे परिचित नहीं थे–
    (A) घोड़े एवं नाव से (B) पीपल एवं जौ से
    (C) दूध एवं चावल से (D) आम एवं बरगद से
11. आर्यों का आदिनिवास आर्कटिक प्रदेश था–यह अभिमत प्रस्तुत किया–
    (A) द आर्कटिक हॉम आफ द आर्यन्स में बाल गंगाधर तिलक ने
    (B) सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने
    (C) एनशियेन्ट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिसन्स में पार्जिटर ने
    (D) उपर्युक्त किसी ने नहीं
12. 6 महीने का दिन एवं 6 महीने की रात्रि जहाँ पर होती है–
    (A) आर्कटिक प्रदेश में (B) अमरीका में
    (C) तिब्बत में (D) जर्मनी में
13. ब्रह्मर्षि प्रदेश के अन्तर्गत कौनसा क्षेत्र आता है ?
    (A) पंजाब एवं राजस्थान का भाग
    (B) अफगानिस्तान एवं सिन्ध क्षेत्र का भाग
    (C) पूर्वी राजस्थान, गंगा-यमुना दोआब, पश्चिमीवर्ती प्रदेश
    (D) मध्य एशिया का सम्पूर्ण भाग
14. सप्तसैन्धव प्रदेश आर्यों का आदिनिवास है–यह अभिमत प्रस्तुत किया–
    (A) डॉ. ए. सी. दास ने (B) प्रो. ग्रीब्ज ने
    (C) प्रो. मैक्समूलर ने (D) दयानन्द सरस्वती ने
15. गोंडवाना की कौनसी जाति भारत में आर्य बनी ?
    (A) सुरन (B) तुर्वसु
    (C) यदु (D) अनारी
16. ऋग्वेद का रचनाकाल है–
    (A) 1500-1200 ई. पू. (B) 1500-1000 ई.
    (C) 1000-6000 ई. पू. (D) 1000-200 ई. पू.
17. ऋग्वेद की रचना हुई–
    (A) गोंडवाना में (B) कुरु-पांचाल में
    (C) मध्य एशिया में (D) सप्त सैन्धव प्रदेश में

18. उत्तर वैदिक साहित्य का रचनाकाल है–
(A) 1000-700 ई. पू. (B) 1000-500 ई. पू.
(C) 1500-500 ई. पू. (D) 1000-3000 ई. पू.

19. उत्तर वैदिक साहित्य की रचना हुई–
(A) कुरु पांचाल में (B) सप्त सैन्धव प्रदेश में
(C) जर्मनी में (D) दक्षिणी रूस में

20. प्राचीन नदियों को आधुनिक नाम से सुमेलित कीजिए–
(a) वितस्ता (1) घग्घर
(b) विपासा (2) कुर्रम
(c) कुभा (3) काबुल
(d) क्रूमू (4) ब्यास
(e) दृषद्वती (5) झेलम

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
(A)	1	2	3	4	5
(B)	5	4	3	2	1
(C)	3	2	1	5	4
(D)	1	2	3	4	5

21. ऋग्वेद के प्रारम्भिक सूक्तों की रचना हुई–
(A) कुरु-पांचाल क्षेत्र में
(B) विदर्भ में
(C) अफगानिस्तान से सिन्धु प्रदेश के मध्य
(D) ईरान में

22. ब्रह्मावर्त है–
(A) वितस्ता एवं असिक्नी के मध्य का क्षेत्र
(B) क्रूमू एवं सुवास्तु के मध्य का क्षेत्र
(C) सरस्वती एवं दृषद्वती के मध्य का भाग
(D) सरस्वती एवं सिन्धु के मध्य का भाग

23. आर्यों की पूर्वी सीमा थी–
(A) यमुना नदी (B) गंगा नदी
(C) झेलम नदी (D) सिन्धु नदी

24. ऋग्वैदिक काल की जानकारी मिलती है–
(A) अथर्ववेद से (B) सामवेद से
(C) ऋग्वेद से (D) उपर्युक्त सभी से

25. ऋग्वेद में ऋचाओं की संख्या है–
(A) 1000 (B) 1700
(C) 1525 (D) 1028

26. विभिन्न कबीलों को अपने क्षेत्र से सुमेलित कीजिए–
(a) यदु (1) भरतपुर
(b) तुर्वसु (2) दक्षिण-पूर्व
(c) मत्स्य (3) पश्चिम
(d) भरत (4) सरस्वती नदी के पास
(e) द्रुहु तथा अनुस (5) पंजाब में
(f) पुरु (6) ब्रह्मावर्त क्षेत्र में

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)	(f)
(A)	3	2	1	6	5	4
(B)	5	6	2	1	4	3
(C)	6	2	3	4	5	1
(D)	1	2	3	4	5	6

27. आर्यों के कबीलों में आपस में युद्ध होता था–
(A) राज्य प्राप्ति के लिए
(B) सम्पन्नता प्रदर्शित करने के लिए
(C) अधिक भूमि एवं पशुओं के लिए
(D) भोजन प्राप्ति के लिए

28. ऋग्वेद में 'विश्' शब्द का उल्लेख हुआ है–
(A) 170 बार (B) 180 बार
(C) 10 बार (D) 100 बार

29. ऋग्वेद में 'जन' शब्द का उल्लेख हुआ है–
(A) 170 बार (B) 175 बार
(C) 275 बार (D) 200 बार

30. दशराज्ञ युद्ध में भाग लिया था–
(A) दशराजाओं ने (B) बीस राजाओं ने
(C) तीस राजाओं ने (D) चालीस राजाओं ने

31. आर्यों की सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई थी–
(A) कुटुम्ब (B) समाज
(C) कबीला (D) ग्राम

32. कुलप है–
(A) आर्य कबीलों का प्रधान
(B) सेनाध्यक्ष
(C) आर्य परिवारों का प्रधान
(D) कोई नहीं

33. राष्ट्र की अवधारणा स्थापित हुई–
(A) उत्तर वैदिक काल में
(B) पूर्व वैदिक काल में
(C) उत्तर वैदिक काल की समाप्ति पर
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

34. राजा का निर्वाचन करती थी–
(A) सभा (B) विदथ
(C) समिति (D) जनसभा

35. आर्यकाल में व्रजपति होता था–
   (A) कबीलों का प्रधान
   (B) राजा द्वारा गठित सेना का संचालक
   (C) विश् का मुखिया
   (D) ग्राम का मुखिया
36. ऋग्वैदिककालीन समाज था–
   (A) पितृसत्तात्मक
   (B) मातृसत्तात्मक
   (C) मातृ एवं पितृ सत्तात्मक
   (D) भातृ सत्तात्मक
37. ऋग्वेद में वर्णित 'सौवीर' शब्द का अर्थ है–
   (A) माता (B) पिता
   (C) पुत्री (D) पुत्र
38. ऋग्वैदिक परिवार होते थे–
   (A) संयुक्त परिवार
   (B) एकात्मक परिवार
   (C) संयुक्त एवं एकात्मक
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
39. विश्पला है–
   (A) वैदिककालीन विदुषी महिला
   (B) क्षेत्रीय राज्य
   (C) आर्यों की प्रशासन व्यवस्था
   (D) आर्यों की सैन्य व्यवस्था
40. आर्यों के काल में प्रचलित प्रथा थी–
   (A) बाल-विवाह (B) सती प्रथा
   (C) स्वयंवर प्रथा (D) नियोग प्रथा
41. वर्णों की उत्पत्ति को ब्रह्मा के अंगों से सुमेलित कीजिए–
   (a) ब्रह्मा के मुख से (1) शूद्र
   (b) ब्रह्मा की बाहु से (2) वैश्य
   (c) ब्रह्मा की जांघ से (3) क्षत्रिय
   (d) ब्रह्मा के पैर से (4) ब्राह्मण

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	1	2	3	4
(D)	1	2	4	3

42. कौनसा वर्ग कबीलाई समाज में नहीं आता था?
   (A) योद्धा (B) पुरोहित
   (C) प्रजा (D) डाकू
43. आर्यों में नीवी पहनावा था–
   (A) पुरुषों का
   (B) स्त्रियों का
   (C) पुरुष, स्त्री दोनों का
   (D) उपर्युक्त में से किसी का नहीं
44. आर्यकालीन शब्द 'अधिवास' से तात्पर्य था–
   (A) कमर के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र
   (B) कमर के नीचे पहने जाने वाला वस्त्र
   (C) शरीर पर पहने जाना वाला वस्त्र
   (D) उपर्युक्त सभी
45. आर्य पुरुष-स्त्रियाँ कौनसे आभूषण पहनती थीं ?
   (1) नूपुर (2) हार
   (3) कुण्डल (4) अँगूठी
   (A) केवल (1) व (2)
   (B) केवल (2) व (3)
   (C) केवल (1), (2) व (3)
   (D) केवल (1), (2), (3), (4)
46. आर्यों के घर बनाये जाते थे–
   (1) ईंट से (2) घास-फूस से
   (3) लकड़ी से (4) बाँस से
   (A) केवल (1) से
   (B) केवल (2), (3) व (4) से
   (C) केवल (1), (2) व (3) से
   (D) केवल (1), (2), (3) व (4) से
47. वैदिक काल में शिक्षक होता था–
   (A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
   (C) वैश्य (D) शूद्र
48. 'गोमत' कहा जाता था–
   (A) अधिक धन वालों को
   (B) अधिक पशु वालों को
   (C) अधिक आभूषण वालों को
   (D) अधिक कृषि वालों को
49. ऋग्वेदकालीन समाज में पशुओं का देवता जो आगे चलकर शूद्रों का देवता बन गया–
   (A) यक्ष (B) किन्नर
   (C) गन्धर्व (D) पूषन्
50. ऋग्वेद के अनुसार देवताओं की उत्पत्ति हुई–
   (A) गाय से (B) ब्रह्मा से
   (C) मनु से (D) अदृश्य शक्ति से
51. अश्विनी था–
   (A) देवताओं का वैद्य (B) आर्यों का वैद्य
   (C) चरक का गुरु (D) आर्यों का दास

52. तेरह कमरों वाला पक्की ईंटों का वैदिककालीन भवन भग्नावशेष के रूप में प्राप्त हुआ है–
(A) चन्हुदाड़ो (पाकिस्तान)
(B) लोथल (गुजरात)
(C) कालीवंगा (राजस्थान)
(D) भगवानपुरा (हरियाणा)

53. समयमापन का वैदिक सभ्यता में प्रचलित शब्द था–
(A) गव्यूति (B) गोधूलि
(C) मिनट (D) सेकण्ड

54. ऋग्वेद के अनुसार सम्पूर्ण संसार एवं देवताओं का आधार है–
(A) अन्तरिक्ष (B) पृथ्वी
(C) ऋत (D) ब्रह्मा

55. ऋग्वैदिक धार्मिक मान्यताओं में सर्वोपरि देवता था–
(A) वरुण (B) मरुत
(C) रुद्र (D) इन्द्र

56. ऋग्वेद में नरबलि के उदाहरण के रूप में अभिव्यक्त है–
(A) शुनः शेप
(B) दशराज्ञ युद्ध
(C) शुनः शेप एवं दशराज्ञ युद्ध दोनों
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

57. जिसमें पूर्व वैदिक आर्यों का विश्वास नहीं था–
(A) शतायु (B) पुत्र प्राप्ति
(C) विजय कामना (D) मोक्ष प्राप्ति

58. उत्तर-वैदिककालीन संस्कृति थी–
(A) कृषि प्रधान संस्कृति
(B) पशु प्रधान संस्कृति
(C) साहित्य प्रधान संस्कृति
(D) कोई नहीं

59. उत्तर-वैदिककालीन रचनाएँ लिखी गईं–
(A) गंगा के ऊपरी मैदान में
(B) यमुना के ऊपरी मैदान में
(C) सरस्वती के ऊपरी मैदान में
(D) घग्घर के ऊपरी मैदान में

60. उत्तर-वैदिक संस्कृति का काल है–
(A) 1500-1000 ई. पू.
(B) 1000-600 ई. पू.
(C) 2500-1500 ई. पू.
(D) 1500-1200 ई. पू.

61. कौनसा उत्तर-वैदिककालीन उत्खनित स्थल नहीं हैं ?
(A) अम्बखेड़ी (B) हस्तिनापुर
(C) कौशाम्बी (D) अहिच्छत्र

62. कुरु हैं–
(A) भरत और पुरु (B) यदु और तुर्वस
(C) तुर्वस एवं क्रिवी (D) कुरु एवं पांचाल

63. पांचाल थे–
(A) तुर्वस एवं क्रिवी (B) यदु और तुर्वस
(C) कुरु एवं पुरु (D) भरत एवं पुरु

64. कुरु एवं पांचालों की राजधानी थी–
(A) हस्तिनापुर (B) पांचाल
(C) मगध (D) अवध

65. कौरव एवं पांडवों का युद्ध हुआ–
(A) 1500 ई. पू. (B) 1000 ई. पू.
(C) 950 ई. पू. (D) 900 ई. पू.

66. राजा प्रवाहिक जावालि था–
(A) देवताओं का गुरु (B) पांचालों का दार्शनिक
(C) मागधों का वैद्य (D) आर्यों का शासक

67. क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ–
(A) पूर्व-वैदिककाल में (B) उत्तर-वैदिककाल में
(C) हड़प्पा काल में (D) उपर्युक्त सभी

68. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए–
(a) सम्राट् (1) उदीची
(b) भौज्य (2) प्रतीची
(c) स्वराज्य (3) दक्षिण
(d) वैराज्य (4) प्राची

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	4	3	2	1
(C)	1	2	3	4
(D)	3	2	1	4

69. सार्वभौम राजा ही अश्वमेध यज्ञ कर सकता था–यह लिखा है–
(A) ऋग्वेद में
(B) गृह्यसूत्रम्
(C) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र में
(D) कौशिक गृहसूत्रम् में

70. संग्रहिता था–
(A) कर लेने वाला अधिकारी
(B) ग्राम अधिकारी
(C) विशूपति
(D) जनपति

71. उत्तर-वैदिककाल में अधिक महत्वपूर्ण था–
(A) कर्म (B) धर्म
(C) वर्ण (D) समाज

72. उत्तर-वैदिककाल में सैन्य सेवाएँ देते थे–
(A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
(C) वैश्य (D) शूद्र

73. उत्तर-वैदिककाल में अनाज की पिसाई का कार्य था–
(A) स्त्रीदासियों का (B) पुरुष दासों का
(C) दस्युओं का (D) यदुओं का

74. किसके अनुसार उत्तर-वैदिककाल में पुत्र परिवार का रक्षक एवं पुत्रियाँ दुःख का मूल थीं?
(A) मैत्रायणी संहिता (B) आपस्तम्ब श्रौतसूत्रम्
(C) ऐतरेय ब्राह्मण (D) उपनिषद्

75. वैदिककाल में आश्रमों का सही क्रम था–
(A) ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, संन्यासाश्रम
(B) ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थाश्रम, गृहस्थाश्रम, संन्यासाश्रम
(C) ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, संन्यासाश्रम, वानप्रस्थाश्रम
(D) ब्रह्मचर्य, संन्यासाश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम

76. वैदिक शिक्षा दी जाती थी–
(A) लिखित (B) मौखिक
(C) ऑडियो से (D) वीडियो से

77. विद्यार्थियों को गुरुकुल में कितने वर्षों तक अध्ययन करना पड़ता था ?
(A) 12 वर्ष (B) 15 वर्ष
(C) 18 वर्ष (D) 25 वर्ष

78. जिसे उपनयन संस्कार का अधिकार कभी नहीं था–
(A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
(C) वैश्य (D) शूद्र

79. वैदिककाल में कौनसा वर्ण नहीं था ?
(A) शूद्र (B) वैश्य
(C) क्षत्रिय (D) ब्राह्मण

80. जौ, गेहूँ, चावल एवं जंगली गन्ने की खेती के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं–
(A) अंतरजीखेड़ा एवं हस्तिनापुर से
(B) रंगपुर एवं लोथल से
(C) रंगपुर एवं कोटदीजी से
(D) कालीबंगा एवं हड़प्पा से

81. उत्तर-वैदिककालीन धर्म का प्रमुख था–
(A) राजन (B) गोप
(C) पुरोहित (D) क्षत्रिय

82. उत्तर-वैदिककालीन देवियाँ थीं–
(A) उषा एवं अदिति (B) सीता एवं पार्वती
(C) अप्सरा एवं यक्षिणी (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

83. उत्तर-वैदिककालीन देवताओं में प्रमुख थे–
(1) ब्रह्मा (2) विष्णु
(3) शिव (4) मरुत
(A) केवल (1) (2) व (3)
(B) केवल (2), (3)
(C) केवल (2), (3) व (4)
(D) केवल (1), (2), (3) व (4)

84. उत्तर-वैदिककाल में शूद्रों का देवता था–
(A) पूषन् (B) मरुत
(C) मित्र (D) वरूण

85. उत्खनन से वैदिककालीन यज्ञवेदी प्राप्त हुई–
(A) अंतरजीखेड़ा (B) जाखेड़ा
(C) कौशाम्बी (D) मोहनजोदड़ो

86. ब्राह्मणों के वैदिक काल में संरक्षक थे–
(A) क्षत्रिय (B) शूद्र
(C) वैश्य (D) आर्य

87. उत्तर-वैदिक काल में राजसूय यज्ञ करने वाले पुरोहित को दान में दी जाने वाली गायों की संख्या थी–
(A) 10,000 (B) 15,000
(C) 2,40,000 (D) 25,000

88. नवयौवन प्राप्त करने के लिए वैदिक काल में किया जाने वाला यज्ञ था–
(A) राजसूय (B) वाजपेय
(C) अश्वमेध (D) नमित्तिक

89. राजा के चक्रवर्ती होने की कामना से किया जाने वाला यज्ञ था–
(A) वाजपेय (B) अश्वमेध
(C) राजसूय (D) नमित्तिक

90. कर्मकाण्ड एवं आडम्बरों की भर्त्सना करने वाले उत्तर वैदिककालीन साहित्यिक स्रोत थे–
(A) उपनिषद् (B) ब्राह्मण
(C) आरण्यक (D) वेद

91. 'एनशियेन्ट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिसन्स' नामक पुस्तक लिखी–
(A) स्वामी दयानन्द सरस्वती ने
(B) पार्जिटर ने
(C) मेक्समूलर ने
(D) नेहरिंग ने

71. उत्तर-वैदिककाल में अधिक महत्वपूर्ण था–
(A) कर्म (B) धर्म
(C) वर्ण (D) समाज

72. उत्तर-वैदिककाल में सैन्य सेवाएँ देते थे–
(A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
(C) वैश्य (D) शूद्र

73. उत्तर-वैदिककाल में अनाज की पिसाई का कार्य था–
(A) स्त्रीदासियों का (B) पुरुष दासों का
(C) दस्युओं का (D) यदुओं का

74. किसके अनुसार उत्तर-वैदिककाल में पुत्र परिवार का रक्षक एवं पुत्रियाँ दु:ख का मूल थीं?
(A) मैत्रायणी संहिता (B) आपस्तम्ब श्रौतसूत्रम्
(C) ऐतरेय ब्राह्मण (D) उपनिषद्

75. वैदिककाल में आश्रमों का सही क्रम था–
(A) ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, संन्यासाश्रम
(B) ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थाश्रम, गृहस्थाश्रम, संन्यासाश्रम
(C) ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, संन्यासाश्रम, वानप्रस्थाश्रम
(D) ब्रह्मचर्य, संन्यासाश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम

76. वैदिक शिक्षा दी जाती थी–
(A) लिखित (B) मौखिक
(C) ऑडियो से (D) वीडियो से

77. विद्यार्थियों को गुरुकुल में कितने वर्षों तक अध्ययन करना पड़ता था ?
(A) 12 वर्ष (B) 15 वर्ष
(C) 18 वर्ष (D) 25 वर्ष

78. जिसे उपनयन संस्कार का अधिकार कभी नहीं था–
(A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
(C) वैश्य (D) शूद्र

79. वैदिककाल में कौनसा वर्ण नहीं था ?
(A) शूद्र (B) वैश्य
(C) क्षत्रिय (D) ब्राह्मण

80. जौ, गेहूँ, चावल एवं जंगली गन्ने की खेती के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं–
(A) अंतरजीखेड़ा एवं हस्तिनापुर से
(B) रंगपुर एवं लोथल से
(C) रंगपुर एवं कोटदीजी से
(D) कालीबंगा एवं हड़प्पा से

81. उत्तर-वैदिककालीन धर्म का प्रमुख था–
(A) राजन (B) गोप
(C) पुरोहित (D) क्षत्रिय

82. उत्तर-वैदिककालीन देवियाँ थीं–
(A) उषा एवं अदिति (B) सीता एवं पार्वती
(C) अप्सरा एवं यक्षिणी (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

83. उत्तर-वैदिककालीन देवताओं में प्रमुख थे–
(1) ब्रह्मा (2) विष्णु
(3) शिव (4) मरुत
(A) केवल (1) (2) व (3)
(B) केवल (2), (3)
(C) केवल (2), (3) व (4)
(D) केवल (1), (2), (3) व (4)

84. उत्तर-वैदिककाल में शूद्रों का देवता था–
(A) पूषन् (B) मरुत
(C) मित्र (D) वरूण

85. उत्खनन से वैदिककालीन यज्ञवेदी प्राप्त हुई–
(A) अंतरजीखेड़ा (B) जाखेड़ा
(C) कौशाम्बी (D) मोहनजोदड़ो

86. ब्राह्मणों के वैदिक काल में संरक्षक थे–
(A) क्षत्रिय (B) शूद्र
(C) वैश्य (D) आर्य

87. उत्तर-वैदिक काल में राजसूय यज्ञ करने वाले पुरोहित को दान में दी जाने वाली गायों की संख्या थी–
(A) 10,000 (B) 15,000
(C) 2,40,000 (D) 25,000

88. नवयौवन प्राप्त करने के लिए वैदिक काल में किया जाने वाला यज्ञ था–
(A) राजसूय (B) वाजपेय
(C) अश्वमेध (D) नमित्तिक

89. राजा के चक्रवर्ती होने की कामना से किया जाने वाला यज्ञ था–
(A) वाजपेय (B) अश्वमेध
(C) राजसूय (D) नमित्तिक

90. कर्मकाण्ड एवं आडम्बरों की भर्त्सना करने वाले उत्तर वैदिककालीन साहित्यिक स्रोत थे–
(A) उपनिषद् (B) ब्राह्मण
(C) आरण्यक (D) वेद

91. 'एनशियेन्ट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिसन्स' नामक पुस्तक लिखी–
(A) स्वामी दयानन्द सरस्वती ने
(B) पार्जिटर ने
(C) मेक्समूलर ने
(D) नेहरिंग ने

92. यजुर्वेद के पुरोहित को कहा जाता था–
(A) होत्री (B) उद्गात्री
(C) अध्वर्यु (D) अथर्व

93. वैदिककालीन 'अन्तर्वेदी' शब्द का अर्थ था–
(A) गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र
(B) गंगा का ऊपरी क्षेत्र
(C) यमुना का ऊपरी क्षेत्र
(D) चिनाव एवं सरस्वती का मध्य भाग

94. प्राचीनकालीन 'अस्किनी' का वर्तमान नाम है–
(A) रावी नदी (B) चिनाव नदी
(C) झेलम नदी (D) व्यास नदी

95. वैदिककालीन लोहे के फाल के अवशेष प्राप्त हुए–
(A) जखेड़ा (B) अंतरजीखेड़ा
(C) कालीबंगा (D) मोहनजोदड़ो

96. बहुविवाह का प्रचलन था–
(A) उच्चवर्गीय आर्यों में (B) शूद्रों में
(C) दासों में (D) तुर्वसों में

97. उत्तर-वैदिककाल में यक्ष, दिग्पाल, गन्धर्व का देवताओं से सम्बन्ध था–
(A) सहायक का (B) दासों का
(C) गुरु का (D) कुछ नहीं

98. श्रेष्ठी शब्द वैदिककाल में प्रयुक्त होता था–
(A) दासों के लिए
(B) सैनिकों के लिए
(C) व्यवसायी संगठन के लिए
(D) पारिवारिक लोगों के लिए

99. पी. जी. डब्ल्यू संस्कृति का समानार्थ है–
(A) चित्रित धूसर मृद्भाण्ड स्थल
(B) कांस्य संस्कृति
(C) उत्तर वैदिककालीन स्थल
(D) हड़प्पाकालीन संस्कृति स्थल

100. ऋग्वैदिक आर्य विश्वास नहीं करते थे–
(A) मोक्ष पर (B) ईश्वर पर
(C) आकाश पर (D) पृथ्वी पर

उत्तरमाला

1. (B)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (B)
6. (A)	7. (B)	8. (A)	9. (B)	10. (D)
11. (A)	12. (A)	13. (C)	14. (A)	15. (A)
16. (B)	17. (D)	18. (B)	19. (A)	20. (B)
21. (C)	22. (C)	23. (B)	24. (C)	25. (D)
26. (A)	27. (C)	28. (A)	29. (C)	30. (C)
31. (A)	32. (C)	33. (A)	34. (C)	35. (B)
36. (A)	37. (D)	38. (A)	39. (A)	40. (D)
41. (A)	42. (D)	43. (B)	44. (A)	45. (C)
46. (B)	47. (A)	48. (B)	49. (D)	50. (A)
51. (A)	52. (D)	53. (B)	54. (C)	55. (D)
56. (A)	57. (D)	58. (A)	59. (A)	60. (B)
61. (A)	62. (A)	63. (A)	64. (A)	65. (C)
66. (B)	67. (B)	68. (B)	69. (C)	70. (A)
71. (C)	72. (C)	73. (A)	74. (C)	75. (A)
76. (B)	77. (A)	78. (D)	79. (A)	80. (A)
81. (C)	82. (C)	83. (A)	84. (A)	85. (C)
86. (A)	87. (C)	88. (B)	89. (B)	90. (A)
91. (B)	92. (C)	93. (A)	94. (B)	95. (A)
96. (A)	97. (A)	98. (C)	99. (A)	100. (A)

विगत वर्षों में पूछे गये प्रश्न

1. ऋग्वेद के किस सूक्त में भारतीय नाटक के आरम्भिक सूत्र पाए जाते हैं ?
(A) विवाहसूक्त (B) आप्रीसूक्त
(C) संवादसूक्त (D) पुरुषसूक्त

2. निम्नलिखित में से कौनसा एक कथन सही नहीं है ?
(A) गोत्र शब्द 'एक कुल' के अर्थ में सर्वप्रथम अथर्ववेद में प्रयुक्त दिखाई देता है
(B) प्रवर के कारण वैवाहिक चयन अत्यधिक सीमित हो गया था
(C) श्राद्ध की प्रथा का आरम्भ उत्तर भारत में गुप्त वंश के शासनकाल में हुआ था
(D) श्राद्ध परिवार को परिभाषित करता है, क्योंकि **सपिंड** उस पारिवारिक समुदाय के सदस्य होते हैं जिनको श्राद्ध प्रथा में भाग लेने का अधिकार होता है

3. सूची-I (विचार पद्धति) को सूची-II (व्यक्ति) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (विचार पद्धति)	**सूची-II (व्यक्ति)**
(a) मीमांसा	1. अक्षपाद गौतम
(b) न्याय	2. ईश्वरकृष्ण
(c) सांख्य	3. जैमिनी
(d) वैशेषिक	4. उलूक कणाद

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	1	2	4
(B)	2	4	3	1
(C)	3	4	2	1
(D)	2	1	3	4

4. निम्नलिखित में से किस एक से फिट्सूत्र सम्बन्धित हैं ?
(A) छंद (Metre) (B) आघात (Accent)
(C) संज्ञाएं (Nouns) (D) रीति (Ritual)

5. दस प्रपाठकों में **निदानसूत्र** निम्नलिखित में से किस एक से सम्बन्धित हैं ?
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

6. निम्नलिखित में से सिन्धुघाटी सभ्यता में जो नहीं थे–
(A) नावें (B) पहिए
(C) धातुई मुद्रा (D) चीता

7. मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत थी–
(A) स्नानागार
(B) अन्नागार
(C) सभा भवन
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

8. हड़प्पा संस्कृति का नाम कैसे पड़ा ?
(A) हड़प्पा एक विस्तृत स्थल है
(B) यह पहला स्थल है
(C) एक मुहर में हड़प्पा का वर्णन मिला था
(D) अधिकांश अवशेष हड़प्पा में प्राप्त हुए

9. ऐसे स्थल जहाँ पर प्राक् हड़प्पाकालीन और हड़प्पा-कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं–
(A) रोपड़ एवं लोथल
(B) बनवाली एवं कालीबंगा
(C) सुत्कगेण्डोर एवं हड़प्पा
(D) आलमगीरपुर एवं बोग्त्राव

10. हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो की उन्नति रुक गई–
(A) 1500 ई. पू. (B) 1750 ई. पू.
(C) 2000 ई. पू. (D) 1000 ई. पू.

11. सिन्धु घाटी के व्यावसायिक सम्बन्ध जिससे नहीं रहे–
(A) राजस्थान (B) अफगानिस्तान
(C) ईरान (D) रोम

12. ऋग्वैदिक काल से सम्बन्धित नदियाँ थीं–
(1) गंगा (2) यमुना
(3) सरस्वती (4) सिन्धु
(A) 1 एवं 2 (B) 3 एवं 4
(C) 2, 3 एवं 4 (D) उपर्युक्त सभी

13. उपनिषदों को एक साथ कहा जाता है–
(A) वेदाङ्ग (B) वेदान्त
(C) श्रुति (D) स्मृति

14. संगम साहित्य लिखा गया–
(A) 100–250 ई. (B) 300–600 ई.
(C) 600–300 ई. (D) 400–500 ई.

15. कौनसे देवता ऋग्वेद से सम्बन्धित नहीं हैं ?
(A) मरुत (B) वरुण
(C) शिव (D) इन्द्र

16. संगम काल में जिनका अस्तित्व नहीं था–
(A) चोल (B) पाण्ड्य
(C) पल्लव (D) चेर

17. ऋग्वैदिककाल में जो प्रथा प्रचलित नहीं थी–
(A) बाल विवाह (B) वर्ण आधारित व्यवसाय
(C) विधवा पुनर्विवाह (D) कोई नहीं

18. हड़प्पा में दुर्लभ जानवर था–
(A) घोड़ा (B) चूहा
(C) बिल्ली (D) चीता

19. संगमकालीन साहित्य .... भाषा में लिखा है.
(A) तमिल (B) हिन्दी
(C) तेलुगू (D) कन्नड़

20. ऋग्वैदिक स्रोत में ऋत का वर्णन सम्बद्ध है–
(A) मौसम (B) रीति-रिवाज
(C) नैतिक आदेश (D) धार्मिक

21. वैदिक शब्द सीता है–
(A) एक स्त्री (B) एक रानी
(C) प्रजनन की देवी (D) राजा जनक की पुत्री

22. संगमकाल में तमिल देश की उत्तरी सीमा फैली हुई थी–
(A) कुडूर (B) कांचीपुरम्
(C) वेंगांडम (D) येरागुड़ी

23. प्राचीन पुस्तकें मानव जीवन को चार आश्रमों में विभाजित करती हैं, क्रमशः चार आश्रम कौनसे हैं ?
(A) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यास, वानप्रस्थ
(B) संन्यास, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ

(C) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
(D) वानप्रस्थ, गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, संन्यास

24. कौनसा वैदिक ग्रन्थ नहीं है ?
(A) संहिता (B) ब्राह्मण
(C) धम्मपद (D) आरण्यक

25. उत्तर-वैदिककालीन सभ्यता को जिन ग्रन्थों से जाना जा सकता है–
(A) अन्तिम तीन संहिताओं द्वारा
(B) पुराणों द्वारा
(C) तीन अन्तिम संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यक एवं उपनिषदों द्वारा
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

26. जिस वंश का उल्लेख संगम साहित्य में नहीं मिलता–
(A) कदम्ब (B) चेर
(C) चोल (D) पाण्ड्य

27. उपनिषदों का दर्शन जोर देता है–
(A) भक्ति पर (B) ज्ञान पर
(C) कर्म पर (D) तप पर

28. किस नदी से सम्बद्ध स्थल पर हड़प्पा स्थल के अवशेष अधिक पाए गए?
(A) सतलज (B) सिन्धु
(C) घग्घर-हावड़ा (D) रावी

29. कौनसी फसल है, जो हड़प्पा सभ्यता को पश्चिमी एशिया से अलग करती है ?
1. गेहूँ, 2. चावल,
3. कपास 4. जौ
(A) 1 एवं 4 (B) 2 एवं 3
(C) 1, 3, और 4 (D) 1, 2 एवं 4

30. आर्नयानी-जंगल की देवी जिसका सर्वप्रथम वर्णन हुआ है–
(A) ऋक् संहिता (B) अथर्ववेद
(C) आर्य का ग्रन्थ (D) उपनिषद् ग्रन्थ

31. प्रथम तमिल संगम को संचालित करने के लिए कहा गया–
(A) तिरुवल्लुवर (B) परशुराम
(C) मामुलानर (D) अगस्त्य

32. हड़प्पा संस्कृति में जिन फसलों का उत्पादन होता था–
(A) गेहूँ, जौ, मक्का
(B) गेहूँ, चावल एवं गन्ना
(C) जौ, मूँगफली एवं चावल
(D) गेहूँ, कपास एवं गन्ना

33. निम्नलिखित में से कौनसे हड़प्पा संस्कृति के स्थल कच्छ क्षेत्र में स्थित हैं ?
(A) देशलपुर एवं सुरकोटड़ा
(B) रंगपुर एवं रोजदि
(C) अलावादिनो एवं बालाकोट
(D) लोथल एवं सुरकोटड़ा

34. ऋग्वेद में वर्णित 'सुतुद्री' है–
(A) वधु के लिए प्रयुक्त शब्द
(B) एक नदी का नाम
(C) सुर की तैयारी के लिए उपयोगी पौधा
(D) एक पवित्र जानवर

35. वैदिक संस्कृति में जो ठीक मेल खाता हो–
(A) असुर-एक पवित्र पौधा
(B) पूषण-आदिवासी सभा
(C) ऋत-पेय
(D) कोई नहीं

36. कौनसे वेदाङ्ग ठीक तरह से मेल नहीं खाते ?
(A) कल्प–रायच्युल
(B) ज्योतिष–एस्ट्रोनोमी
(C) शिक्षा–फोनिटिक्स
(D) निरुक्त–ग्रामर

37. उत्तर-वैदिककाल की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–
(A) जंगलों का व्यापक दहन
(B) लोहे का उत्पादन
(C) ऋतुओं का ज्ञान
(D) विस्तृत पैमाने पर सिंचाई

38. ऐसा हड़प्पा संस्कृति का स्थल जहाँ पर उत्खनन के दौरान पारसी मुहर प्राप्त हुई है–
(A) मोहनजोदड़ो (B) धोलावीरा
(C) लोथल (D) कालीबंगा

39. उपनिषद् में वर्णित 'कांपिल्य जनपद' के दार्शनिक राजा थे–
(A) प्रवाहक जावालि (B) जमदग्नि
(C) श्रुतसेन (D) अश्वपति

40. प्रारम्भिक भारतीय धार्मिक ग्रन्थों में कृष्ण एवं किसके मध्य के सम्बन्धों का वर्णन है ?
(A) ब्रह्मा (B) रुद्र
(C) इन्द्र (D) वरुण

41. उद्दालका, अरुणी एवं उसके पुत्र श्वेतकेतु की प्रसिद्ध वार्तालाप ब्राह्मण एवं आत्मा की पहचान से सम्बन्धित वर्णन प्राप्त होता है–
(A) श्वेताश्वतरोपनिषद (B) छान्दोग्योपनिषद्
(C) मुण्डकोपनिषद् (D) केनोपनिषद्

42. यदु एवं तुर्वश ऋग्वेद में जिस रूप में वर्णित थे–
(A) दो महानायक (B) दो भाई
(C) दो राजा (D) दो कबीले

43. प्रारम्भिक तमिल साहित्य में वर्णित एक टोल टैक्स है–
(A) पादुपोरुल (B) इदुपोरुल
(C) अलगु (D) ऊरोपोरल

44. निम्नलिखित में से कौनसा क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत था ?
(A) मोहनजोदड़ो (B) हड़प्पा
(C) धोलावीरा (D) कालीबंगा

45. ऋग्वैदिक इन्द्र के बारे में कौनसा कथन सत्य नहीं है ?
(A) उसे सोमरस की आदत थी
(B) वह पुरों का विनाशक था
(C) वह कुशल रथ योद्धा था
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

46. प्रथम सूची को द्वितीय सूची से मिलाकर सही उत्तर दीजिए–

सूची-I (नदियों के नाम)	सूची-II (आधुनिक नाम)
(a) सरस्वती	1. रावी
(b) परुष्णी	2. व्यास
(c) शतुद्री	3. सतलज
(d) विपास	4. झेलम
	5. घग्घर

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	5	1	3	2
(C)	3	1	2	4
(D)	5	4	3	1

47. वैदिककाल में ब्राह्मणों को शादी करने की अनुमति थी–
(A) केवल ब्राह्मण लड़कियों से
(B) ब्राह्मण एवं क्षत्रिय लड़कियों से
(C) ब्रा[illegible]
(D) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र लड़कियों से

48. वेदाङ्ग है–
(A) कल्प, शिक्षा, निरुक्त, वैयाकरण, छन्द, ज्योतिष
(B) कल्प, शिक्षा, ब्राह्मण, वैयाकरण, छन्द, ज्योतिष
(C) कल्प, शिक्षा, निरुक्त, आरण्यक, छन्द, ज्योतिष
(D) कल्प, उपनिषद्, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष

49. ऋग्वेद में वर्णित अन्याव्रत जिससे सम्बद्ध है–
(A) दास (B) दस्यु
(C) मलेच्छ (D) यादु

50. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (पुरातात्त्विक स्थल)	सूची-II (विशिष्ट लक्षण)
(a) ब्रह्मगिरी	1. मध्य पाषाण उपकरण
(b) कुपगल	2. गर्त निवास
(c) बुर्जहोम	3. कलश शवाधान
(d) आदिच्चनल्लूर	4. महापाषाण उपकरण
	5. राख वाले टीले

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	5	2	1	4
(B)	1	5	2	4
(C)	1	2	5	3
(D)	4	5	2	1

51. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) हड़प्पा	1. शवाधिस्थान आर-37
(b) लोथल	2. गोदीवाड़ा
(c) कालीबंगा	3. नर्तकी आकृति
(d) मोहनजोदड़ो	4. जुता खेत

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
(D)	1	2	4	3

52. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I (स्थान का नाम)	सूची-II (सम्बद्ध संस्कृति)
(a) रंगपुर	1. पुरापाषाण
(b) सोहन	2. नवपाषाण
(c) आदिच्चनल्लूर	3. ताम्रपाषाण
(d) बुर्जहोम	4. मध्यपाषाण
	5. महापाषाण

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	4	5	2
(B)	3	1	5	2
(C)	3	1	5	4
(D)	2	3	4	5

53. सैन्धव संस्कृति के विषय में निम्नांकित किस वक्तव्य की न्यूनतम सम्भावना है ?
(A) सैन्धव संस्कृति का उदय कालीबंगा संस्कृति में हुआ.
(B) सैन्धव संस्कृति का उदय सिन्ध और बलुचिस्तान की कृपक संस्कृतियों से हुआ.
(C) सैन्धव संस्कृति सोथी संस्कृति का प्रसार है.
(D) सैन्धव संस्कृति कहीं भी ग्राम संस्कृति की अवस्था से गुजरे बिना सीधे एक नगर संस्कृति के रूप में प्रकट हुई.

54. पूर्व-वैदिककाल में कोई नियमित भूमि कर नहीं था, क्योंकि–
(A) लोग एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं बसे थे.
(B) सरकार का व्यय अल्प था.
(C) राजा को भूमि का मालिक नहीं समझा जाता था.
(D) लोग भूमि कर देने के आदी नहीं थे.

55. चार वर्णों का उल्लेख सर्वप्रथम कहाँ मिलता है ?
(A) पृथ्वीसूक्त (B) पुरुषसूक्त
(C) तैत्तिरीय संहिता (D) वाजसनेयी संहिता

56. ऋग्वेद में सम्पत्ति का प्रमुख रूप क्या था ?
(A) सुवर्ण (B) गोधन
(C) मकान (D) भूमि

57. बोगोजकोई के एक अभिलेख में आहूत आर्य देवता हैं–
(A) इन्द्र, विष्णु, वरुण एवं नासत्य
(B) रुद्र मित्र, इन्द्र एवं नासत्य
(C) इन्द्र, मित्र, वरुण एवं नासत्य
(D) मित्र, विष्णु, वरुण एवं इन्द्र

58. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) आश्वलायन	1. संहिता
(b) आपस्तम्ब	2. गृह्यसूत्र
(c) मैत्रायण	3. निरुक्त
(d) यास्क	4. धर्म सूत्र

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	4	2	3
(B)	3	1	2	4
(C)	2	3	1	4
(D)	2	4	1	3

59. निम्नलिखित में कौनसी वैदिक संस्थाएँ थीं ?
1. सभा 2. विदथ
3. समिति 4. परिषद्
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–
कूट–
(A) 1 एवं 2 (B) 3 एवं 4
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 1, 3 एवं 4

60. संगमकाल में तमिल में महाभारत किसने लिखी ?
(A) पेरुन्देवनार (B) विल्लिपुतुर
(C) कम्बन (D) कुट्टन

61. आत्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त का कहाँ उल्लेख नहीं मिलता ?
(A) आरण्यक (B) जातक साहित्य
(C) उपनिषद् (D) वेद

62. संगमकाल में रोम और तमिलनाडु के मध्य सघन वाणिज्य सम्बन्ध थे, अनेक वस्तुओं का तमिलनाडु से रोम को निर्यात होता था, निम्नांकित में से कौनसी वस्तु निर्यात में सम्मिलित नहीं थी ?
(A) मसाले (B) वैदूर्य
(C) हाथीदाँत (D) शराब

63. हड़प्पा संस्कृति के स्थल में किस स्थान पर अग्निकुंडों को खोजा गया ?
(A) चन्हुदड़ो एवं आमरी
(B) वनवाली एवं कालीबंगा
(C) हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो
(D) आलमगीरपुर एवं दयमाबाद

64. हड़प्पाकालीन अवशेषों में एक काँसे की आकृति जो दो बैलों से जुड़ी हुई थी जिसे नंगी मानव आकृति चला रहा थी–कहाँ खोजी गई ?
(A) संघोल (B) रोजदि
(C) कुणाल (D) दयमाबाद

65. एक उच्च अत्याधुनिक पानी प्रबन्धन व्यवस्था हड़प्पा काल में उत्खनन के दौरान पाई गई–
(A) धोलावीरा (B) लोथल
(C) कालीबंगा (D) आलमगीरपुर

66. किसमें 'ब्रह्म' को सर्वोपरि शक्ति माना गया?
(A) ऋग्वेद में (B) ब्राह्मणों में
(C) आरण्यकों में (D) उपनिषदों में

67. संगम तमिल की प्रारम्भिक प्राप्त रचना थी–
(A) पट्टीनप्पालई (B) तिरुमुरुगर्रुप्पदई
(C) मदुरैकाञ्चि (D) तोलकप्यम

68. निम्नलिखित में से कौनसा हड़प्पा सांस्कृतिक स्थल गुजरात में स्थित नहीं है ?
(A) सुरकोटड़ा (B) रंगपुर
(C) सुत्केगेण्डोर (D) देशलपुर

69. निम्नलिखित में से कौन सिन्धी लिपि पर कार्य कर चुके हैं ?
(A) एच.डी.सांकलिया (B) बी. बी. लाल
(C) आई-महादेवन (D) वी. ए. स्मिथ

70. निम्नलिखित में से कौनसे स्थल पर कब्रिस्तान एच. संस्कृति के जारी रहने के प्रमाण मिलते हैं ?
(A) चन्हुदड़ो (B) हड़प्पा
(C) मोहनजोदड़ो (D) कालीबंगा

71. ऋग्वैदिक औरत के बारे में सत्य नहीं है–
(A) वे सभा संचालन करती थीं या भाग लेती थीं
(B) वे यज्ञों में भूमिका निभाती थीं
(C) वे सक्रिय युद्ध करती थीं
(D) उनकी जल्दी शादी हो जाती थी

72. वर्णसंकर की धारणा पहली बार प्राप्त होती है–
(A) ब्राह्मण (B) उपनिषद्
(C) धर्मसूत्र (D) स्मृति

73. याज्ञवल्क्य स्मृति पर मिताक्षरा टीका था, जो हिन्दू विधि का प्रमुख स्रोत है, लेखक है–
(A) अपरार्क (B) कुल्लूक
(C) विज्ञानेश्वर (D) विश्वरूप

निम्नलिखित कथन एवं कारक वाले प्रश्नों का नीचे दिये गये कूट के आधार पर उत्तर दीजिए–

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है.
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.
(C) A सही है, परन्तु R गलत है.
(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

74. **कथन (A) :** ऋग्वेद कभी भी लोक प्रचलित ग्रन्थ नहीं रहा.
कारण (R) : यह कर्मकाण्डीय ग्रन्थ था.

75. **कथन (A) :** वर्णसंस्कार का धर्मशास्त्र के लेखकों ने अत्यधिक समर्थन किया.
कारण (R) : यह मिश्रित जातियों के प्रसार में सहायक हुआ.

76. शुक्ल एवं कृष्ण के रूप में ज्ञात दो संस्करण मिलते हैं–
(A) ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में
(B) केवल यजुर्वेद में
(C) सामवेद एवं अथर्ववेद में
(D) केवल अथर्ववेद में

77. वैदिक शब्द ऋत का आशय है–
(A) नैतिक नियम (B) ऋतुएँ
(C) पुरोहित (D) ऋण

78. विभिन्न संस्कृतियों को निरूपित करने वाली निम्नलिखित वस्तुओं पर विचार कीजिए–
1. ऐरेटीन मृद्भाण्ड (Arretine ware)
2. उत्तरी काले पालिश के मृद्भाण्ड (NBPW)
3. चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (PGW)
4. गेरुए रंग के मृद्भाण्ड (Ochre coloured pottery)
उनका सही कालानुक्रम (Chronological order) है–
(A) 3, 4, 1, 2 (B) 4, 3, 1, 2
(C) 3, 4, 2, 1 (D) 4, 3, 2, 1

79. निम्नलिखित ब्राह्मण मूलग्रन्थों में से कौनसा एक, ऋग्वेद से सम्बन्धित है?
(A) ऐतरेय ब्राह्मण (B) गोपथ ब्राह्मण
(C) शतपथ ब्राह्मण (D) तैत्तरीय ब्राह्मण

80. ऋग्वेद में सर्वाधिक संख्या में सूक्त (hymns) हैं–
(A) वरुण के विषय में (B) अग्नि के विषय में
(C) विष्णु के विषय में (D) यम के विषय में

81. निम्नलिखित में से किस एक को वैदिक साहित्य में प्रजापति के एक रूप में वर्णित किया गया है?
(A) कपिल (B) नृसिंह
(C) वामन (D) वराह

निम्नलिखित कथन एवं कारक वाले प्रश्नों का नीचे दिये गये कूट के आधार पर उत्तर दीजिए–

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है.
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.
(C) A सही है, परन्तु R गलत है.
(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

82. **कथन (A) :** उपनिषदों का संकलन वैदिक काल के अन्त के आसपास किया गया था.

कारण (R) : उपनिषदों का चिन्तन आत्मा के विचार के इर्द-गिर्द केन्द्रित है, न कि बलि के.

83. **कथन (A) :** प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति में, जिसका आदर्शीकरण साहित्य और कला में था, धीरे-धीरे समय के साथ-साथ लगातार ह्रास आता गया.

कारण (R) : यद्यपि एक विवाह प्रथा आदर्श थी, बहुविवाह प्रथा अक्सर समाज के उच्च वर्गों में प्रचलित थी.

84. मिट्टानी संस्कृति की धार्मिक आस्था में निम्नलिखित में से कौनसे वैदिक देवता विद्यमान थे ?
(A) अग्नि, पूषाण, सूर्य, यम
(B) अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरुण
(C) इन्द्र, वरुण, मित्र, नास्त्य
(D) मित्र, वरुण, पूषाण, रुद्र

85. निम्नलिखित पाठों पर विचार कीजिए–

1. शतपथ ब्राह्मण 2. बृहदारण्यक उपनिषद्
3. आचारांग सूत्र 4. विनयपिटक

उपर्युक्त में से कौनसा/से वैदिक साहित्य से सम्बन्धित नहीं है/हैं ?
(A) केवल 4 (B) 1 और 2
(C) 2 और 3 (D) 3 और 4

86. सूची-I (वेदांग) को सूची-II (उनके विषय) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I	**सूची-II**
(वेदांग)	(उनके विषय)
(a) शिक्षा	1. व्युत्पत्ति विज्ञान
(b) कल्प	2. ज्योतिषशास्त्र
(c) निरुक्त	3. चतुष्पदी वृत्त
(d) छंद	4. स्वर विज्ञान
	5. अनुष्ठान

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	3	5	1	4
(C)	4	5	1	3
(D)	3	1	2	4

निर्देश–निम्नलिखित कथन एवं कारक वाले प्रश्नों का नीचे दिये गये कूट के आधार पर उत्तर दीजिए–

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है.
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.
(C) A सही है, परन्तु R गलत है.
(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

87. **कथन** (A) : विश्वमित्र ने सुदास के विरुद्ध दस राजाओं का राज्यमण्डल संगठित किया.

कारण (R) : सुदास ने वशिष्ठ को पुरोहित के रूप में अधिमान्य किया.

88. निम्न में से कौनसा एक प्रतिलोम विवाह है?
(A) ब्राह्मण लड़के का क्षत्रिय लड़की से
(B) वैश्य लड़के का शूद्र लड़की से
(C) ब्राह्मण लड़के का शूद्र लड़की से
(D) शूद्र लड़के का वैश्य लड़की से

89. उत्तर वैदिक पाठों से सम्बन्धित पुरातात्त्विक संस्कृति है–
(A) गेरुवर्णी मृद्भाण्ड
(B) काले एवं लाल मृद्भाण्ड
(C) चित्रित धूसर मृद्भाण्ड
(D) उत्तरी काली पॉलिश वाले मृद्भाण्ड

90. निम्न में से कौनसा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) चातुर्वर्ण्य–चार आश्रम
(B) शूद्र–तीन वर्णों की सेवा
(C) धर्मशास्त्र–धर्म तथा दर्शन सम्बन्धी कृतियाँ
(D) महामात्र–उच्चवर्गीय अधिकारी

91. अवतारवाद का सम्पुष्टिकरण तथा विष्णु के अवतारों की पूजा भागवत धर्म के लक्षण थे–
(A) आरम्भिक वैदिक युग के
(B) उत्तर वैदिक युग के
(C) मौर्य काल के
(D) गुप्त काल के

92. जाति-प्रथा के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–

1. शुद्धता, आनुवंशिकता, विवाह तथा भोज्य पदार्थ जाति-प्रथा के आधारभूत लक्षण हैं.
2. 'धर्म, अर्थ, काम' के सन्दर्भ में धर्म का अर्थ है जाति नियमों का शास्त्रानुधारित होना.
3. अनिर्वासित का अर्थ है वर्णसंकर.
4. जातियों के प्रचुरोद्‌भवन की प्रक्रिया का वर्णन पुरुषसूक्त में मिलता है.

इनमें से कौनसे कथन सही हैं?

(A) 1, 2 व 3 (B) 2 व 3
(C) 3 व 4 (D) 2 व 4

उत्तरमाला

1. (C)	2. (C)	3. (A)	4. (C)	5. (D)
6. (C)	7. (C)	8. (A)	9. (A)	10. (C)
11. (C)	12. (A)	13. (B)	14. (A)	15. (C)
16. (C)	17. (A)	18. (A)	19. (A)	20. (D)
21. (C)	22. (A)	23. (C)	24. (C)	25. (C)
26. (A)	27. (B)	28. (B)	29. (A)	30. (A)
31. (D)	32. (A)	33. (A)	34. (B)	35. (D)
36. (D)	37. (A)	38. (B)	39. (A)	40. (C)
41. (B)	42. (D)	43. (C)	44. (A)	45. (D)
46. (B)	47. (D)	48. (A)	49. (B)	50. (D)
51. (D)	52. (B)	53. (C)	54. (A)	55. (B)
56. (B)	57. (C)	58. (D)	59. (C)	60. (A)
61. (D)	62. (D)	63. (B)	64. (D)	65. (B)
66. (B)	67. (D)	68. (C)	69. (C)	70. (B)
71. (D)	72. (D)	73. (C)	74. (C)	75. (C)
76. (B)	77. (A)	78. (D)	79. (A)	80. (B)
81. (A)	82. (A)	83. (B)	84. (C)	85. (D)
86. (C)	87. (A)	88. (D)	89. (C)	90. (A)
91. (D)	92. (A)			

संकेत

2. श्राद्ध की प्रथा वैदिकोत्तरकाल तक प्रतिष्ठित हो चुकी थी.
3. न्यायदर्शन के मूल प्रतिपादक महर्षि गौतम थे.

88. उच्च वर्ण के पुरुष और निम्न वर्ण की स्त्री के बीच विवाह अनुलोम विवाह कहलाता है, जबकि निम्न वर्ण के पुरुष और उच्च वर्ण की स्त्री के मध्य विवाह प्रतिलोम विवाह कहलाएगा.

89. उत्तरी काली पॉलिश वाले मृद्‌भांड का सम्बन्ध बुद्ध युग एवं मौर्य युग से है.

काला और लाल मृद्‌भांड – संगम काल.

गेरुवर्णी मृद्‌भांड – पूर्ववैदिक काल.

5

महाजनपदों से नन्द तक राज्य निर्माण एवं नगरीकरण

(State Formation & Urbanisation from the Mahajanapadas to the Nandas)

प्राचीन भारतीय इतिहास में सर्वाधिक घटनाओं का आविर्भाव छठी शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी ई. पू. के मध्य हुआ, इस अवधि को भारतीय इतिहास में प्राक् मौर्य युग या बुद्ध युग के नाम से जाना जाता था.

प्राक् मौर्य युग में घटित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाएँ प्रमुख हैं—

(1) महाजनपदों का उदय.

(2) नये धर्मों का उदय.

(3) मगध साम्राज्यवाद का विकास.

(4) ईरानी एवं यूनानी आक्रमण.

महाजनपदों का उदय

(The Emergence of Mahajanapadas)

उत्तर-वैदिककालीन संस्कृति में 'जन' या 'जाति' आर्यों के राज्यों की मूलाधार होती थी. जाति या कुल के वसने के स्थान का नाम उसी जाति के नाम पर रखा जाता था, जो आगे चलकर प्रदेश या प्रान्त का नाम पड़ जाता था. इस तरह के राज्यों को 'जन' या **'जातीय राज्य'** कहा जाता था. उत्तर-वैदिक काल के वाद राजनैतिक परिस्थितियों के कारण जातियाँ भिन्न-भिन्न स्थानों पर वस गईं, जिन्हें 'जनपद' कहा गया.

पालि भाषा में रचित बौद्ध-ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में निम्नलिखित सोलह महाजनपदों का उल्लेख किया गया है—

1. काशी	9. कुरु
2. कोशल	10. पांचाल
3. अंग	11. मत्स्य
4. मगध	12. शूरसेन
5. वज्जि	13. अश्मक
6. मल्ल	14. अवन्ति
7. चेदि	15. गांधार
8. वत्स	16. कम्बोज

- महावस्तु नामक ग्रन्थ में भी सोलह महाजनपदों का उल्लेख है, लेकिन उसके अनुसार अंगुत्तरनिकाय में वर्णित गांधार और कम्बोज के स्थान पर शिवि (पंजाव या राजपूताना) एवं **दशार्ण (मध्य भारत)** महाजनपद है.
- बौद्ध धर्मग्रन्थ भगवतीसूत्र के अनुसार 16 महाजनपद निम्नलिखित हैं—

1. अंग	9. लाढ़ (लाट या राधा)
2. बंग	10. पाढ (पाण्ड्य या पौण्ड्र)
3. मगह (मगध)	11. वज्जि
4. मलय	12. मोलि (मल्ल)
5. मालवा	13. काशी
6. अच्छ	14. कोशल
7. वत्छ (वत्स)	15. अवाह
8. कोच्छ (कच्छ)	16. संभुत्तरा (संहोत्रा)

- अंग, मगध, वत्स, वज्जि, काशी और कोशल. ऐसे 6 महाजनपद हैं, जोकि अंगुत्तरनिकाय एवं भगवतीसूत्र में समान हैं. मोलि को मल्ल एवं मालव को अवन्ती माना गया है. इसके अतिरिक्त अन्य महाजनपद नये हैं, जो सुदूर पूर्व और दक्षिण में स्थित हो सकते हैं.
- छठी शताब्दी ई. पू. की राजनीतिक स्थिति को प्रामाणिक स्वरूप में प्रदर्शित करने का एकमात्र उत्कृष्ट साक्ष्य अंगुत्तरनिकाय है.
- अंगुत्तरनिकाय, महावस्तु, भगवतीसूत्र के अतिरिक्त निम्नलिखित धर्मग्रन्थों में भी सोलह महाजनपदों का स्पष्ट वर्णन मिलता है—

वैदिक साहित्य

1. ऋग्वेद	7. श्रौतसूत्र
2. अथर्ववेद	8. प्रश्नोपनिषद्
3. शतपथब्राह्मणम्	9. बौधायन श्रौतसूत्र
4. गोपथब्राह्मणम्	10. शांखायन
5. ऐतरेय ब्राह्मण	11. वाजसनेय संहिता
6. ब्राह्मण	

बौद्ध साहित्य

1. जातक साहित्य	6. दीपवंश
2. विनयपिटक	7. महावंश
3. महावग्ग	8. ललितविस्तर
4. महापरिनिर्वाण सूत्त	9. बुद्धचरितम्
5. त्रिपिटक	10. अवदान साहित्य

जैन साहित्य

1. आचारांग सूत्त	3. धूर्ताख्यान
2. पद्मचरित	4. नंदीसूत्र

- अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सभी जनपद उत्तरी भारत में अवस्थित थे.
- अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सभी महाजनपद विन्ध्य के उत्तर में अवस्थित थे एवं उत्तरी-पश्चिमी सीमा से बिहार तक फैले हुए थे.

महाजनपदों का विकास : कारण एवं प्रक्रिया

- महाजनपदों का उदय एवं विकास छठी शताब्दी ई. पू. में हुआ.
- महाजनपदों के आविर्भाव एवं विकास की पृष्ठभूमि तैयार करने में सर्वाधिक मौलिक कारण उत्तर-वैदिककालीन आर्थिक परिवर्तन था.
- जातिगत प्रवृत्ति के कम पड़ने से क्षेत्रीय तत्त्वों का विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप जातीय राज्यों के स्थान पर क्षेत्रीय राज्यों का आविर्भाव एवं विकास हुआ.
- क्षेत्रीय राज्यों के आविर्भाव से वैदिक जन का स्वरूप परिवर्तित हुआ एवं जनपदों या महाजनपदों के विकास का रास्ता खुला.
- पांचाल महाजनपद का निर्माण पाँच जनों या पाँच जातियों के मिलने पर हुआ.
- चेदि, कोशल, काशी, मत्स्य आदि ऐसे जनपद थे, जो बिना बाहरी सहयोग के ही महाजनपदों के स्वरूप को ग्रहण करने में सफल हो सके.

सोलह महाजनपद
(The Sixteen Mahajanapadas)

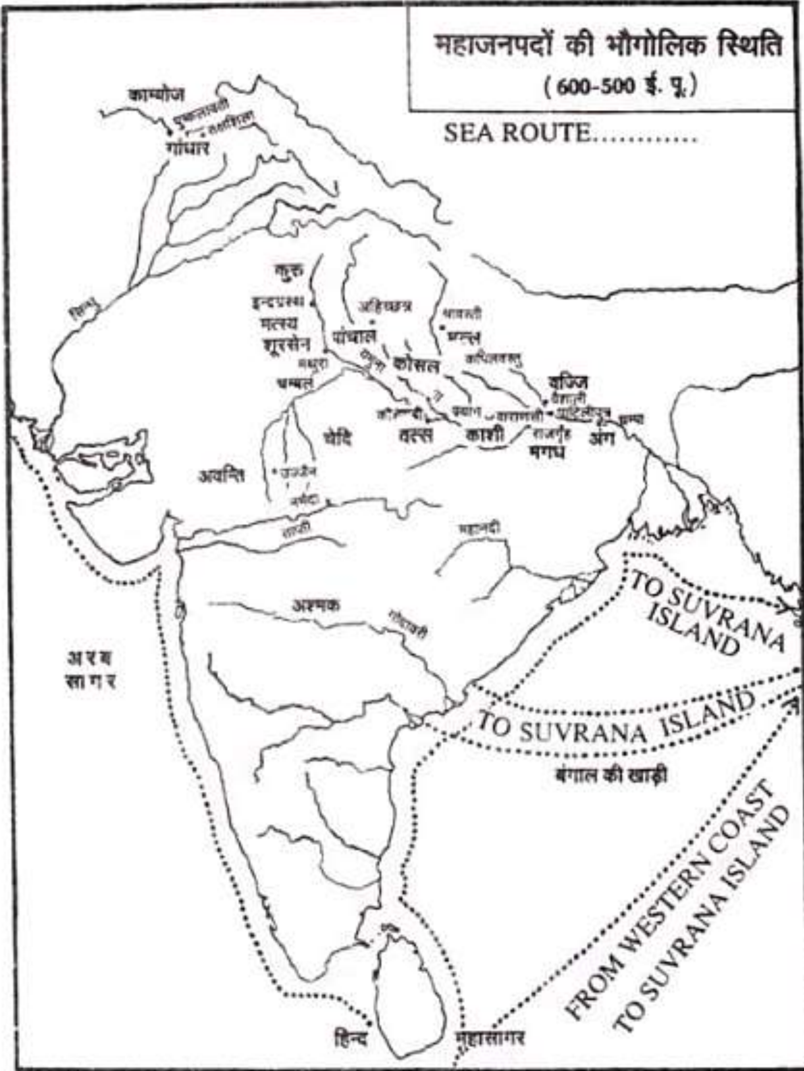
- पालिभाषा में रचित बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में वर्णित महाजनपदों में वज्जि एवं मल्ल महाजनपद गणतन्त्रात्मक थे.
- अंगुत्तरनिकाय में वर्णित शेष महाजनपद अंग, मगध, काशी, कोशल, वत्स, चेदि, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अवन्ति, गान्धार, कम्बोज एवं अश्मक राजतन्त्रात्मक प्रणाली के महाजनपद थे.
- अंगुत्तरनिकाय में काशी, कोशल और अंग के मध्य में विद्यमान साम्राज्य की भावना के विकास एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का स्पष्ट रूप से उल्लेख मिलता है.

1. अंग महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	बिहार के उत्तरी पूर्वी भाग में अवस्थित (वर्तमान बिहार के भागलपुर एवं मुंगेर जिलों में)
2. राजधानी	चम्पा नगरी (भागलपुर के निकट गंगा और मालिनी के संगम पर)
3. उल्लेख	जातक कथाओं एवं अंगुत्तर निकाय में
4. व्यापारिक स्थिति	अंग की राजधानी चम्पा नगरी छठी शताब्दी में श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र थी
5. महाजनपदों में तुलनात्मक स्थिति	पूर्व का सबसे प्रमुख एवं शक्तिशाली महाजनपद
6. उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य	चम्पा नगरी में छठी शताब्दी ई. पू. के जनजीवन के प्रमाण
7. पड़ोसी महाजनपद	अंग महाजनपद की सीमा मगध से लगी हुई थी
8. संघर्ष	सम्प्रभुता के लिए मगध और अंग में
9. विजय	मगध की राजधानी राजगीर पर अंग का अधिकार हो गया
10. पराजय	मगध के शासक बिम्बिसार द्वारा अंग के शासक ब्रह्मदत्त की हत्या एवं अंग का मगध में विलय हो गया.

2. मगध महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	गंगा के दक्षिणी भाग में अवस्थित (दक्षिणी बिहार में) (वर्तमान पटना एवं शाहाबाद)
2. प्राचीन राजधानी	गिरिव्रज (राजगृह या राजगीर)
3. उल्लेख	अंगुत्तरनिकाय में विस्तृत वर्णन (प्रजा, राजा एवं राजगृह के बारे में)
4. नयी राजधानी	पाटलिपुत्र (कुसुमपुर, पुष्पपुर, पटना, पाटलिग्राम)



5. महाजनपदों में तुलनात्मक स्थिति	छठी शताब्दी ई. पू. के महाजनपदों में सर्वाधिक शक्तिशाली एवं उत्तरी भारत की राजनीतिक शक्ति का प्रमुख केन्द्र.
6. मगध के विकास में उत्तरदायी शासक एवं वंश	बिम्बिसार, अजातशत्रु, शिशुनाग, हर्यंक एवं नन्द वंश
7. विजय	चतुर्थ शताब्दी में आसपास के महाजनपदों पर अधिसत्ता स्थापित की
8. पूर्व शासक	बार्हद्रथ वंश के वृहद्रथ एवं जरासन्ध
9. विशेषताएँ	महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र (राजगृह)

3. काशी महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	वरुणा और अस्सी नदियों के संगम पर अवस्थित (वर्तमान उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्व में)
2. राजधानी	वाराणसी या बनारस (राजा बानर के नाम पर नामकरण)
3. प्राचीन स्वरूप	वाराणसी छठी ई. पू. मिट्टी की दीवारों से घिरी एक नगरी थी

4. उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य	राजघाट की खुदाई से सातवीं शताब्दी ई. पू. से जनजीवन स्थापित होने के साक्ष्य
5. महाजनपदों में तुलनात्मक स्थिति	ज्ञान, शिष्य, व्यापार और समृद्धि के लिए सभी महाजनपदों में श्रेष्ठ
6. उल्लेख	गुत्तिलजातक में
7. विस्तार	बारह योजन तक
8. संघर्ष	सम्प्रभुता के लिए काशी और कौशल में
9. शासक	1. ब्रह्मदत्त (इसके शासनकाल में काशी 'अग्रराज' से प्रसिद्ध थी) 2. जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन (नागवंश)
10. पराजय	अजातशत्रु ने काशी पर अधिकार कर इसे मगध में सम्मिलित कर लिया

4. कोशल महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	पूर्वी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में
2. सीमाएँ	पूर्व में गण्डक नदी तक, पश्चिम में पांचाल (मध्य दोआव)
3. विभाजित प्रदेश	सरयू नदी के कारण दो विभाग— 1. उत्तरी कोशल 2. दक्षिणी कोशल
4. उत्तरी कोशल की राजधानी (आरम्भिक)	श्रावस्ती (वर्तमान सहेतमहेत, उत्तर प्रदेश)
5. उत्तरी कोशल की राजधानी (नयी)	साकेत (अयोध्या)
6. दक्षिणी कोशल की राजधानी	कुशावती
7. संघर्ष	कोशल और काशी के मध्य राज-नीतिक एवं व्यावसायिक संघर्ष
8. शासक	प्रसेनजित (बुद्ध के काल में)
9. विजय	काशी पर आक्रमण कर कोशल में काशी को मिला लिया
10. पराजय	अजातशत्रु ने आक्रमण कर कोशल को मगध में मिला लिया
11. उल्लेख	पालि ग्रंथ एवं रामायण में

5. वज्जि महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	मगध के उत्तरी भाग में
2. प्रशासनिक स्थिति	गणतान्त्रिक महाजनपद
3. महाजनपदों में लोकतान्त्रिक स्थिति	गणतान्त्रिक महाजनपदों में सर्वोत्कृष्ट स्थिति
4. गणतन्त्रों की संख्या	आठ
5. आठ गणराज्यों में प्रमुख	(1) विदेह, (2) लिच्छवि, (3) ज्ञातृंक
6. उद्भव प्रक्रिया	प्राचीन विदेह एवं वैशाली के टूटने से वज्जि महाजनपद राजतन्त्र से गणतन्त्र बना.
7. लिच्छवी गणराज्य की राजधानी	वैशाली (वर्तमान में मुजफ्फरपुर का वसाढ़ नामक स्थान)
8. उल्लेखनीय स्थिति	बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र, गौतम बुद्ध ने प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली को यहीं उपदेश दिया था.
9. उत्खनन के साक्ष्य	वैशाली में छठी शताब्दी ई. पू. के जनजीवन होने के प्रमाण
10. साहित्य में उल्लेख	पालि एवं प्राकृत साहित्य में प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन
11. पराजय	मगध के सम्राट् अजातशत्रु ने वज्जि को मगध साम्राज्य में मिला लिया था.

6. मल्ल महाजनपद

1. प्रशासनिक स्थिति	गणतान्त्रिक महाजनपद
2. भौगोलिक स्थिति	वज्जि महाजनपद के पश्चिमोत्तर एवं कोशल महाजनपद के पूर्व में हिमालय की तराई में अवस्थित प्राचीन कोशल का पूर्वी भाग
3. विभाग	मल्ल महाजनपद के दो विभाग थे
4. राजधानी	1. कुशीनारा (वर्तमान में देवरिया, उ.प्र. का कुसिया ग्राम) 2. पावा (गोरखपुर का पावा नामक स्थल)
5. उल्लेखनीय स्थिति	बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल के रूप में मल्ल महाजनपद की राजधानी कुशीनारा थी

6. गणतन्त्रों की संख्या	नी (9)
7. संघर्ष	वज्जि एवं मल्ल के मध्य राजनैतिक संघर्ष
8. पराजय	मल्ल का विलय मगध में हो गया था.

7. वत्स महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	काशी महाजनपद के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित
2. राजधानी	यमुना नदी के किनारे स्थित कौशाम्बी (वर्तमान इलाहाबाद)
3. स्थापना सम्बन्धी अवधारणा	1. पौराणिक कथाओं के अनुसार 'हस्तिनापुर' के नष्ट हो जाने पर पौरव राजा निचक्षु ने यमुना किनारे बसाया 2. महाभारत के अनुसार चेदियों द्वारा स्थापित
4. शासक	बुद्ध का समकालीन प्रसिद्ध राजा उदयन
5. उल्लेखनीय स्थिति	नाटककार भास की नाट्य रचना. 'स्वप्नवासवदत्ता' का मुख्य पात्र 'उदयन' इसी महाजनपद का शासक था
6. संघर्ष	राजनीतिक प्रभुत्व के लिए अवन्ति से संघर्ष

8. चेदि महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	वत्स के दक्षिण भाग में यमुना नदी के किनारे पर अवस्थित
2. राजधानी	शुक्तिमती या सोत्थिमती (पालिग्रन्थों के अनुसार)
3. सीमा	कुरु महाजनपद (आधुनिक बुन्देल-खण्ड) से मिली हुई थी
4. उल्लेखनीय स्थिति	1. कलिंग के चेदि इस जनपद से सम्बद्ध थे 2. मत्स्य, कुरु एवं काशी के साथ राजनीतिक सम्बन्ध थे 3. वैदिक विधानों को मानने वाला महाजनपद (महाभारत के अनुसार) था.
5. शासक	प्रतापी शासक शिशुपाल (महाभारत के अनुसार) था.

9. कुरु महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	यमुना नदी के किनारे पर इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुर के आसपास अवस्थित
2. राजधानी	इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान–पुराना किला दिल्ली)
3. तुलनात्मक स्थिति	कुरुओं का अत्यन्त प्रसिद्ध राजवंश
4. शासक	धनंजय राजा कौरव (बौद्ध काल में), इक्ष्वाकु, सुतसोम
5. उल्लेखनीय स्थिति	1. हस्तिनापुर के नष्ट हो जाने पर कुरुओं का एक हिस्सा कौशाम्बी में चला गया 2. जातक ग्रन्थों के अनुसार श्रेष्ठ एवं धर्माचारी महाजनपद 3. राजतन्त्रात्मक से गणतन्त्रात्मक शासन में परिवर्तन 4. कुरु महाजनपद में तीन सौ संघ थे (जातक कथाओं के अनुसार)
6. साहित्यिक स्रोत	जातक, महाभारत एवं अन्य बौद्ध ग्रन्थ

10. पांचाल महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	रुहेलखण्ड और पश्चिमी उत्तर प्रदेश मध्य दोआब क्षेत्र में अवस्थित
2. विभाग	1. उत्तरी पांचाल 2. दक्षिणी पांचाल. (दिव्यावदान एवं जातक के अनुसार)
3. विभाजन रेखा	गंगा नदी द्वारा निर्मित
4. राजधानी (उत्तरी पांचाल)	1. अहिच्छत्र (वर्तमान बरेली)
5. राजधानी (दक्षिणी पांचाल)	2. कांपिल्य (वर्तमान फर्रुखाबाद)
6. सीमाएँ	हिमालय की तराई से दक्षिण में चम्बल नदी, पूर्व में कोशल महाजनपद तथा पश्चिम में कुरु महाजनपद
7. उल्लेखनीय स्थिति	1. महाभारत के कर्ण पर्व के अनुसार कुरु एवं पांचाल वाले आधे शब्दों से ही पूरा अर्थ निकाल लेते थे 2. द्रोपदी पांचाल नरेश द्रुपद की कन्या थी, अतः पांचाली कहलाती थी 3. महाभारत के अनुसार श्रेष्ठ महाजनपद
8. साहित्यिक स्रोत	दिव्यावदान, जातक कथाएँ, महाभारत

11. मत्स्य महाजनपद

1. भौगोलिक सीमाएँ	चम्बल नदी से सरस्वती नदी तक प्रसार

2. महाजनपद की शाखाएँ	वीरमत्स्य, अपरमत्स्य
3. आधुनिक स्थल	भरतपुर, जयपुर, अलवर
4. राजधानी	विराट नगर (वर्तमान बैराठ)
5. शासक	विराट (इसी के नाम पर राजधानी का नामकरण हुआ)
6. पराजय	शहाज नामक शासक द्वारा मगध एवं मत्स्य पर एक साथ शासन किया.
7. साहित्यिक स्रोत	महाभारत

12. शूरसेन महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	चेदि महाजनपद के पश्चिमोत्तर में एवं कुरु के दक्षिण में अवस्थित (वर्तमान बृजमण्डल)
2. राजधानी	मथुरा
3. शासक	अवन्तिपुत्र (बुद्ध समकालीन)
4. उल्लेखनीय स्थिति	1. इस महाजनपद में सबसे पहले यदुवंशी अंधक वृष्णियों का गणराज्य था. 2. महाभारत और पुराणों के अनुसार मथुरा प्रसिद्ध व्यापारिक एवं धार्मिक स्थल था. 3. पौराणिक कथाओं के अनुसार यहाँ पर वितिहोत्र एवं सत्वत यादवों का राज्य था. 4. महिष्मति एवं विदर्भ जैसे राज्यों को यादव राजाओं ने स्थापित किया था. 5. वृष्णि यादवों के संघ के प्रमुख श्रीकृष्ण थे. 6. पाणिनी एवं पालि साहित्य के अनुसार पहले यहाँ गणतन्त्रात्मक शासन-प्रणाली थी, जो कालान्तर में राजतन्त्रात्मक हो गई थी. 7. शूरसेन एवं अवन्ति में पारस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध था. 8. तत्कालीन पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार मथुरा की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यन्त सुदृढ़ एवं उत्कृष्ट थी.

13. अवन्ति महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	पश्चिमी भारत में मध्य प्रदेश के मालवा प्रदेश में अवस्थित था
2. विभाग	1. उत्तरी अवन्ति 2. दक्षिणी अवन्ति
3. राजधानी	1. उज्जयिनी या उज्जैन (उत्तरी अवन्ति) 2. महिष्मति (दक्षिणी अवन्ति) वर्तमान मान्धाता
4. शासक	चण्डप्रद्योत (बुद्ध समकालीन)
5. विजय	वत्स, कोशल एवं मगध पर
6. उल्लेखनीय स्थिति	1. बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र 2. उत्तर से दक्षिण की तरफ व्यापारिक मार्ग उज्जैन से निकलता था
7. पराजय	मगध सम्राट् शिशुनाग ने अवन्ति पर आक्रमण कर लिया था.

14. गांधार महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	भारत के उत्तर-पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्र में अवस्थित [वर्तमान में पेशावर, रावलपिण्डी (पाकिस्तान) के क्षेत्र]
2. तुलनात्मक स्थिति	अत्यन्त शक्तिशाली राज्य
3. राजधानी	तक्षशिला
4. शासक	प्रसिद्ध शासक पुष्करसारिन
5. संघर्ष	सम्प्रभुता के लिए अवन्ति के साथ संघर्ष
6. उल्लेखनीय स्थिति	1. यहाँ की राजधानी शिक्षा एवं व्यापार का मुख्य केन्द्र थी. 2. यहाँ का शासक प्रसिद्ध एवं मगध सम्राट् बिम्बिसार का मित्र था.
7. पराजय	छठी शताब्दी ई. पू. के उत्तरार्द्ध में गांधार पर फारस (ईरान) का अधिकार हो गया था.

15. कम्बोज महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र का दूसरा भाग
2. राजधानी	हाटक या राजपुर
3. शासक	चन्द्रवर्मन, सुदक्षिण (साहित्यिक स्रोतों के अनुसार)
4. उल्लेखनीय स्थिति	1. प्रारम्भ में राजतन्त्रीय व्यवस्था थी, जो गणतन्त्रीय शासन-प्रणाली में परिवर्तित हो गई थी. 2. गांधार महाजनपद का पड़ोसी जनपद

16. अश्मक महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित
2. राजधानी	पोतन या पोतना या पोटली
3. शासक	इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रिय
4. संघर्ष	अवन्ति के साथ सम्प्रभुता के लिए संघर्ष
5. उल्लेखनीय स्थिति	1. यह महाजनपद उत्तरी भारत में स्थित नहीं था 2. यूनानी इतिहासकारों के अनुसार वर्तमान में सिन्धु नदी के किनारे पर एस्सेकेनाय राज्य अश्मक महाजनपद ही था
6. पराजय	अवन्ति ने इस पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया

महाजनपदों की राजतन्त्रीय व्यवस्था

(The Monarchical set-up of the Mahajanapadas)

- छठी शताब्दी ई. पू. में लगभग सभी महाजनपदों में प्रशासनिक व्यवस्था राजतन्त्रीय थी, लेकिन उन सभी में असमानता दृष्टिगोचर होती थी.
- ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार निम्नलिखित पाँच प्रकार के राज्य होते थे—

 1. साम्राज्य
 2. भोज्य
 3. स्वराज्य
 4. वैराज्य
 5. राज्य

विभिन्न महाजनपदों में शासक एवं राज्य की स्थिति इस प्रकार की होती थी—

राजतंत्रीय व्यवस्था में (राजा)

(1) छठी शताब्दी ई. पू. राजतन्त्रीय व्यवस्था में शासन का प्रधान राजा होता था, जिसका पद वंशानुगत होता था. निर्वाचित राजतन्त्रीय प्रणाली समाप्त हो गई थी.

(2) राजा प्रजापालक, सामाजिक व्यवस्था को लागू करने वाला, कर उगाहने वाला तथा युद्ध में विजय दिलाने वाला होता था.

(3) राज्य की आमदनी निश्चित हो चुकी थी, अतः राज्य और प्रजा की सुरक्षा के लिए सेना रखने का क्रम प्रारम्भ हो गया था.

(4) उत्तर-वैदिक साहित्य के अनुसार राजा या राज्य की उत्पत्ति देवताओं के प्रयास से हुई. अतः उसमें देवत्व का अंश माना जाता था.

(5) दीघनिकाय, महावस्तु के अनुसार राज्य का जन्म एक समझौते के अनुसार हुआ था.

राजतन्त्रीय व्यवस्था में 'परिषद्'

(1) छठी शताब्दी ई. पू. से राजा को सलाह देने एवं सहायता करने के लिए 'परिषद्' (मंत्रिपरिषद्) संगठित हो गई थी.

(2) प्राक्-मौर्य युग में राजतन्त्रीय व्यवस्था का प्रमुख अंग 'परिषद्' थी.

(3) प्रधान पुरोहित, (ब्राह्मण) राजा के सलाहकार होते थे, वे परिषद् में चुने जाते थे.

राजतन्त्रीय व्यवस्था में 'नौकरशाही'

(1) इस काल में राजा अपनी सहायता के लिए पदाधिकारियों की नियुक्ति करता था. प्रमुख अधिकारियों का वर्ग 'महामात्र' के नाम से जाना जाता था. कुछ राज्यों में इन्हें 'आयुक्त' कहा जाता था.

क्र.	नाम क्षेत्र / वंश	शासक	राज्य	प्रणाली / प्रक्रिया
1.	(1) मगध, (2) कलिंग, (3) बंग	सम्राट् कहलाता था	साम्राज्य कहलाता था.	1. इनका अभिषेक साम्राज्य के लिए होता था. 2. सदैव अपने राज्य विस्तार के लिए प्रयासरत् रहते थे.
2.	दक्षिण के सात्वतों (यादवों) का राज्य	भोज कहलाता था	'भोज्य' कहलाता था.	1. नियुक्ति निश्चित अवधि के लिए होती थी. 2. शासकों का पद वंशानुगत नहीं होता था.
3.	स्वराष्ट्र, कच्छ, सौवीर	स्वराट् कहलाता था	स्वराज्य कहलाता था.	1. राजा की स्थिति 'समानों में ज्येष्ठ' जैसी थी. 2. व्यवस्था कुलीनतन्त्रीय थी. 3. सभी कुलीन बारी-बारी से शासन में भाग लेते थे.
4.	उत्तरी क्षेत्र (हिमालय)	विराट कहलाता था	वैराज्य कहलाता था.	1. राजा निश्चित नहीं होते थे. 2. प्रजा के प्रतिनिधि शासन सँभालते थे.
5.	मध्य प्रदेश	राजा कहलाता था	राज्य कहलाता था.	
6.	कुरु, पांचाल, काशी, कोशल			यहाँ पर परम्परागत राजतन्त्रात्मक व्यवस्था प्रचलित थी.

(2) अधिकारियों का पद वंशानुगत नहीं होता था.

(3) सेनानायक, मंत्री, प्रधान न्यायाधीश, कोषाध्यक्ष इत्यादि पद अधिकारियों के लिए सृजित किये जाते थे.

(4) राजा द्वारा अधिकारियों को नकद वेतन प्रदान किया जाता था.

(5) इनका पद, कार्य एवं अन्य गतिविधियाँ राजा की इच्छा पर आधारित होती थीं.

राजतन्त्रीय 'ग्रामीण प्रशासन व्यवस्था'

(1) गाँव में प्रशासन व्यवस्था को चलाने के लिए छठी शताब्दी ई. पू. ग्राम प्रशासन का प्रधान ग्रामणी, ग्रामिक या ग्राम भोजक होता था.

(2) शान्ति व्यवस्था स्थापित करने से लेकर कर उगाहने की व्यवस्था ग्रामणी के द्वारा ही सम्पन्न होती थी.

(3) ग्रामणी का मनोनयन ग्रामवासियों द्वारा ही होता था.

राजतन्त्रीय 'न्याय' एवं 'राजस्व व्यवस्था'

(अ) राजस्व व्यवस्था

(1) राजतन्त्रीय व्यवस्था में विभिन्न स्रोतों से राजस्व इकट्ठा किया जाता था.

(2) भूमि कर $\left(\text{उपज का } \frac{1}{6} \text{ भाग}\right)$ एवं विभिन्न स्रोतों से प्राप्त चुँगी राज्य की आमदनी का स्रोत था.

(3) उपहार और भेंट (बलि) प्राप्त होती थी जिसे इकट्ठा करने वाला अधिकारी **'बलिसाधक'** होता था.

(4) कर वैश्य वर्ग से लिया जाता था. ब्राह्मण, क्षत्रिय कर मुक्त थे.

(5) कर एकत्र करने एवं खजाने की देखभाल करने के लिए 'भाण्डागारिक' (शौल्किक) एवं 'भागदुध' नामक अधिकारी होते थे.

(ब) न्याय व्यवस्था

(1) कानून व्यवस्था वर्ण व्यवस्था पर आधारित थी.

(2) निम्न वर्ग को अधिक सजा का एवं उच्च वर्ग को कम सजा का प्रावधान था.

(3) राजा न्याय का प्रधान होता था.

(4) जातीयता, परिवार एवं क्षेत्रीयता को न्याय में विशेष महत्वपूर्ण माना जाता था.

गणतन्त्रीय व्यवस्था
(The Republican Tradition)

- छठी शताब्दी ई. पू. राजतन्त्रीय व्यवस्था के अलावा गणतन्त्रीय व्यवस्था वाले महाजनपद भी अस्तित्व में थे.
- पालि साहित्य में 10 गणतन्त्रों की प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लेख मिलता है. ये गणतन्त्र सिन्धु नदी की द्रोणी एवं हिमालय की तलहटी में अवस्थित थे, जिनमें कालान्तर में राजतन्त्र से गणतन्त्र की स्थापना हो चुकी थी.
- पालि साहित्य में वर्णित प्रमुख गणराज्य निम्नलिखित थे—

1. कपिलवस्तु के शाक्य	6. सुसुमार के भग्ग
2. कुशीनारा के मल्ल	7. अल्लकप्प के बुलि
3. मिथिला के विदेह	8. वैशाली के लिच्छवि
4. पिप्पलीवन के मोरिय	9. केसपुत्त के कालाम
5. रामग्राम के कोलिय	10. पावा के मल्ल

- कपिल वस्तु जो वर्तमान में पिपरहवा, बस्ती जिला, उत्तर प्रदेश है, शाक्यों की राजधानी थी. गौतम बुद्ध के पिता शुद्धोदन शाक्यों के गण के प्रमुख थे. इसी में शाक्यों की प्रसिद्ध नगरी लुम्बिनी में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था. यहाँ पर इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रियों का शासन था. कालान्तर में यह कोशल राजतन्त्र में विलय हो गया.
- शाक्यों के पूर्व में कोलियों का राज्य था. शाक्य और कोलियों के मध्य रोहिणी नदी प्रवाहित होती थी जो विभाजक रेखा का काम करती थी. इन दोनों में जल बँटवारे के कारण संघर्ष होता रहता था.
- कोशल के पूर्व में एवं वज्जि के पश्चिम में मल्ल अवस्थित थे. कुशीनारा और पावा इनकी दो शाखाएँ थीं. पावा महावीर स्वामी का निर्वाण स्थल एवं कुशीनारा गौतम बुद्ध के निर्वाण स्थल के रूप में प्रसिद्ध रहा है.
- मिथिला की संस्कृति सारे देश भर में प्रसिद्ध थी, यह विदेहों की राजधानी थी.
- केसपुत्त का कालाम एक छोटा गणराज्य था, केसपुत्त कालाम का प्रसिद्ध नगर था, जो गोमती नदी के तट पर अवस्थित था. आलार कालाम बुद्ध के प्रारम्भिक गुरु इसी कालाम गणराज्य के रहने वाले थे.
- सुसुमार, मिर्जापुर (उ.प्र.), पिप्पलीवन नेपाल की तराई में, अल्लकप्प राज्य का भाग बुलि मुज्जफ्फरपुर और शाहवाद के समीप अवस्थित था.

गणराज्यीय 'प्रशासनिक व्यवस्था'

(1) गणराज्यीय प्रशासन में राजा निर्वाचित होता था, राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था, जो कुलीनों के नियन्त्रण एवं सहयोग से कार्य करता था.

(2) गणराज्यीय प्रशासन में गण के प्रमुख व्यक्ति राजा की उपाधि धारण कर सकते थे. उन्हें राजस्व इकट्ठा करने, सेना रखने एवं प्रशासन पर पूर्ण नियन्त्रण का अधिकार था.

(3) गणराज्यीय प्रशासन में ब्राह्मणों को विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होता था, वे राजा के सलाहकार या गण के प्रमुख नहीं होते थे.

(4) गणराज्य की वास्तविक शक्ति व्यवस्थापिका या उसकी केन्द्रीय सभा में निहित होती थी, जिसकी सदस्य संख्या अनिश्चित होती थी.

(5) प्राचीन भारतीय गणतन्त्र कुलीनतन्त्र होता था, जहाँ पर कुलीन वर्ग ही प्रशासन की गतिविधियों को संचालित करता था.

मगध-साम्राज्यवाद का उदय (The Rise of the Magadh Imperialism)

- मगध साम्राज्यवाद का उदय छठी शताब्दी ई. पू. की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी.
- 16 महाजनपदों में से मगध राजनीतिक सर्वोच्चता प्राप्त कर साम्राज्यवाद के अस्तित्व को अंगीकृत कर चुका था. जिसकी नींव पर कालान्तर में चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी.

उदय के कारण

अन्य सभी महाजनपदों को अपने में विलीन कर मगध एक शक्तिशाली एवं समृद्ध साम्राज्य बन गया. मगध साम्राज्यवाद के उदय में मूलतः उसकी भौगोलिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं. मगध साम्राज्य के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1. मगध उत्तरी भारत के विशाल तटवर्ती मैदानों के ऊपरी एवं निचले भाग के मध्य सुरक्षित भौगोलिक परिस्थितियों के मध्य अवस्थित था; जिस पर आक्रमणकारी गतिविधियाँ सँभावित नहीं थीं. यहाँ के शासक बाहरी आक्रमण एवं राजधानी की सुरक्षा की चिन्ता से मुक्त थे.

2. मगध के पास अन्य महाजनपदों की अपेक्षा में गज सेना एवं आधुनिक हथियारों से युक्त प्रबल सेना थी, जिसकी दम पर अनवरत् मगध दूसरे जनपदों को अपने में सम्मिलित करता गया.

3. मगध की आर्थिक परिस्थितियों के कारक व्यापार, कृषि, उद्योग अत्यधिक सम्पन्न थे जिसके फलस्वरूप मगध साम्राज्यवाद की दिशा में अग्रसर होने में सफल हो सका.

4. मगध में श्रेष्ठ शासकों की कमी नहीं थी. बिम्बिसार, अजातशत्रु, शिशुनाग, महापद्मानंद आदि ऐसे शासक मगध में पैदा हुए जो बेहद कुशल एवं प्रतापी थे, जिन्होंने मगध साम्राज्यवाद के उदय में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया.

मगध का प्राचीन इतिहास (Ancient History of Magadh)

- मगध का सबसे पहले उल्लेख 'अथर्ववेद' में प्राप्त होता है. ऋग्वेद में 'कीकट' (किराट या किरात) नामक जाति एवं प्रमगंद नामक शासक का उल्लेख मिलता है जिसकी पहचान मगध से कई गई है.
- अथर्वसंहिता के जात्यभाग से व्रात्य को पुंश्चली या वैश्या कहा गया है और उसे मगध से सम्बद्ध किया है. वेदों में मगध के ब्राह्मणों (ब्रह्मबन्धुओं) को निम्न श्रेणी का माना जाता था.

बृहद्रथ वंश

महाभारत एवं पुराणों के अनुसार मगध के सबसे प्राचीन राजवंश का संस्थापक 'बृहद्रथ' था. बृहद्रथ का पिता वसु चैद्य-उपरिचर था, जिसने मगध की प्रारम्भिक राजधानी वसुमती या गिरिव्रज की स्थापना की थी.

बृहद्रथ का पुत्र अत्यन्त प्रतापी एवं कुशल शासक जरासंध था, जिसने अपने साम्राज्य का प्रसार किया. जरासंध ने कृष्ण के निर्देशानुसार भीम से पराजित होकर मृत्यु का वरण किया था. मगध का अन्तिम शासक रिपुंजय था, जो अयोग्य एवं निर्बल था. उसकी मृत्यु उसके मंत्री के द्वारा करवाने के बाद मगध में दूसरे वंश का आविर्भाव हुआ.

शिशुनाग या हर्यंक वंश

बृहद्रथ वंश के बाद मगध में शिशुनाग वंश या हर्यंक वंश का उदय हुआ. पुराणों में इसे शिशुनाग वंश एवं जैन, बौद्ध ग्रन्थों में हर्यंक वंश कहा गया है. शिशुनाग या सुसुनाग ने इस वंश की स्थापना की. मगध साम्राज्य की नींव रखने वाला शासक बिम्बिसार हर्यंक वंश का प्रथम महान् शासक था. इस वंश के राजाओं का वर्णन आगे किया गया है—

बिम्बिसार (544-492 ई. पू.)

1.	**वास्तविक नाम**	बिम्बिसार
2.	**पिता**	1. दक्षिण बिहार के एक छोटे सैनिक अधिकारी. 2. भट्टिय या भाटियों का पुत्र (महावंश के अनुसार).
3.	**कुल**	हर्यंक कुल (अश्वघोष के बुद्धचरित के अनुसार)
4.	**उपनाम**	सेणिय, श्रेणिक
5.	**राज्याभिषेक**	14 वर्ष की अल्पायु में 544 ई. पू.
6.	**राज्याभिषेक के समय मगध की स्थिति**	1. मगध की स्थिति उस समय अत्यधिक खराब थी.

		2. पड़ोसी राज्य विस्तार में लगे थे. 3. तक्षशिला और अवन्ति के सम्बन्ध कटु थे.
7.	**तुलनात्मक राजवंश**	यूरोप के हैप्सवर्ग एवं बौरवन्स राजवर्ग
8.	**उल्लेखनीय कार्य**	1. अवन्ति के राजा चंड प्रद्योत एवं गांधार के राजा पौष्करसारिन में समझौता कराकर मैत्री स्थापित की. 2. राजा चंड प्रद्योत (अवन्ति नरेश) पीलिया से पीड़ित था जिसका इलाज बिम्बिसार के प्रसिद्ध वैद्य 'जीवक' ने किया यह कार्य उसने सम्बन्ध सुधारने के लिए किया था. 3. मद्र (पूर्वी पंजाब), कोशल एवं वैशाली के लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये. 4. कूटनीति, वैवाहिक सम्बन्ध एवं सैन्य शक्ति के द्वारा वर्चस्व स्थापित किया. 5. अंग को जीतकर उसके राजा ब्रह्मदत्त की हत्या कर दी, जिसके परिणामस्वरूप स्वतः ही अंग पर अधिकार हो गया. 6. प्रशासन, सेना तथा न्याय को सशक्त बनाया.
9.	**प्रधान रानी**	मद्र की राजकुमारी 'खेमा'
10.	**विवाह एवं दहेज**	1. कोशल की राजकुमारी कोशल देवी से (दहेज में एक काशिग्राम मिला था, जिससे 1 लाख रु. का वार्षिक राजस्व प्राप्त होता था.) 2. लिच्छवि राजकुमारी चेलना से
11.	**प्रशासनिक पदाधिकारी**	1. सभासत्तक 2. सेनानायक 3. वोहारिक (न्यायाधीश)
12.	**न्याय व्यवस्था**	1. अपराधियों को कठोर सजा का प्रावधान था. 2. मृत्यु दण्ड, अंग-भंग एवं शारीरिक यातना का प्रावधान था.
13.	**ग्रामीण प्रशासन**	1. ग्राम का मुखिया 'ग्रामभोजक' होता था. 2. ग्रामभोजक गाँवों में शांति व्यवस्था स्थापित करते थे. 3. लगान वसूली का कार्य ग्राम भोजक का ही था. 4. ग्रामीण प्रशासन पर केन्द्र का नियन्त्रण था.
14.	**राज्य में शहरों की संख्या**	80,000 शहर थे (महावग्ग के अनुसार).
15.	**अन्तिम समय**	1. बिम्बिसार का अन्तिम समय अत्यधिक दुःखद रहा. 2. बिम्बिसार के पुत्र कूणिक अजातशत्रु ने अपने पिता को गिरफ्तार कर हत्या कर राज्यारोहण स्वीकार किया.

अजातशत्रु (492-462 ई. पू.)

1.	**वास्तविक नाम**	कूणिक अजातशत्रु
2.	**पिता का नाम**	बिम्बिसार
3.	**पिता से सम्बन्ध**	असन्तोषजनक
4.	**उसके काल में राजवंश की स्थिति**	हर्यक वंश का चरमोत्कर्ष काल (प्रो. राय चौधरी के अनुसार)[1]
5.	**साम्यता**	यूरोप के प्रसिया पर्सिया राजवंश के फ्रेडरिक द्वितीय से[2]
6.	**महत्वपूर्ण कार्य**	1. राजगृह की किलेबंदी को सुदृढ़ किया एवं राजगृह में एक चहारदीवारी का निर्माण कराया. 2. गंगा और सोन के संगम पर पाटलिग्राम में एक दुर्ग का निर्माण कराया. 3. आंतरिक स्थिति सशक्त कर सैनिक अभियान प्रारम्भ किये.
7.	**उल्लेखनीय कार्य**	1. कोशल के साथ संघर्ष काशीग्राम के राजस्व रुक जाने के कारण किया, लेकिन बाद में दोनों में समझौता हो गया और कोशल नरेश प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वज्जीरा से अजातशत्रु का विवाह कर दिया.

1 Like Frederick II nd of Prussia he carried out the policy of a father with whom his relations were by no means cordial. His reign was the high watermark of the power of the Haryank dynasty

—H. C. RayChaudhary

2 Political History of India. Page—186

		2. मगध और वैशाली के मध्य लम्बे समय तक युद्ध चला. अजातशत्रु वैशाली के लिच्छवियों को परास्त कर वैशाली को मगध में मिला लिया था. युद्ध का कारण कीमती पत्थर, हार और हाथी के स्वामित्व को लेकर था. युद्ध 484-468 ई. पू. तक लगभग 16 वर्षों तक चला. मगध की विजय हुई.
		3. लिच्छवियों के पराजय से काशी, विदेह, मल्ल इत्यादि मगध में विलीन हो गये.
		4. अजातशत्रु के काल में मगध महाजनपद से साम्राज्य बन गया था.
8.	**अजातशत्रु की सेना के प्रमुख हथियार**	1. रथमूसल (गदायुक्त गाड़ी) 2. महासिला कण्टग (पत्थर फेंकने वाली मशीन)
9.	**मंत्री**	वस्सकार
10.	**अन्तिम समय**	462 ई. पू. में मृत्यु (अपने पुत्र द्वारा हत्या)

उदायिन् (462-440 ई. पू.)

1.	**वास्तविक नाम**	उदायिभद्र या उदायिन
2.	**राज्याभिषेक**	अपने पिता अजातशत्रु को मारकर 462 ई. पू. में
3.	**उल्लेखनीय कार्य**	1. मगध की राजधानी राजगृह से हटाकर पाटलिपुत्र में 457 ई. पू. में स्थानान्तरित. 2. अवन्ति और मगध के मध्य युद्ध हुआ परिणाम असन्तोषजनक रहा.

पुराणों के अनुसार नन्दिवर्धन और महानन्दी उदायिन के पश्चात मगध के सम्राट् बने, लेकिन जैन एवं बौद्ध साहित्य के अनुसार नागदासक, मुण्ड और अनुरुद्ध उदायिन् के उत्तराधिकारी थे. इन शासकों ने लगभग 32 वर्षों तक मगध पर शासन किया. इनके शासन में मगध में प्रगति अंशमात्र भी परिलक्षित नहीं हुई.

शिशुनाग वंश (412-344 ई. पू.)

शिशुनाग

- मगध में नये राजवंश के रूप में शिशुनाग वंश का प्रादुर्भाव हुआ.
- हर्यंक वंश के दौरान शिशुनाग बनारस में मगध के राजा का गवर्नर था.
- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार शिशुनाग ने 18 वर्षों तक एवं पुराणों के अनुसार 40 वर्षों तक शासन किया.
- शिशुनाग ने वैशाली को अपनी राजधानी बनाया था.

शिशुनाग ने अवन्ति के साथ युद्ध किया और उसे मगध साम्राज्य का अंग बना लिया. उस दौरान अवन्ति का राजा प्रद्योत था.

कालाशोक

बनारस और गया का पूर्व प्रशासक कालाशोक शिशुनाग वंश के प्रथम शासक शिशुनाग के उपरान्त मगध का शासक बना. इसके काल में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र बनाई गयी थी. कालाशोक के दौरान बौद्धों की द्वितीय संगीति का आयोजन वैशाली में हुआ था. उसने 28 वर्षों तक शासन किया था. कालाशोक की हत्या कर दी गई जिससे शिशुनाग वंश में योग्य राजाओं का अभाव हो गया था.

'महाबोधिवंश' के अनुसार कालाशोक के निम्नलिखित दस पुत्र थे—मंगुर, सर्वज्ञजह, कोर्णदवर्ण, जालिक, संजय, कोर्व्य, पंचमक, नन्दिवर्धन, उभक, भद्रसेन.

कालाशोक की हत्या के बाद उनके दस बेटों ने शिशुनाग वंश के अन्त होने तक मगध साम्राज्य पर शासन किया. इसके उपरान्त शिशुनाग वंश का पतन हो गया.

शिशुनाग वंश का अन्तिम राजा नन्दिवर्धन या महानंदिन था.

नन्दवंश (344-323 ई. पू.)

महापद्मनन्द

शिशुनाग वंश के उपरान्त नन्दवंश का उद्‌भव हुआ जिसका संस्थापक उग्रसेन या महापद्मनन्द था. महापद्मनन्द को शूद्र या निम्न श्रेणी का माना जाता था. महापद्मनन्द श्रेष्ठ एवं शक्तिशाली शासक था. पुराणों में महापद्मनन्द को सर्वक्षत्रान्तक (सभी क्षत्रियों का नाश करने वाला) एवं परशुराम का अवतार कहा जाता था. उसने एकराट् की उपाधि भी धारण की थी. कलिंग विजय के सम्बन्ध में खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में उल्लेख मिलता है. महापद्मनन्द के पास एक विशाल सेना थी, जिसके बल पर उसने पांचाल, काशी, अश्मक, इक्ष्वाकु, कुरु, शूरसेन इत्यादि क्षत्रिय कुलों को पराजित कर अपनी शक्ति को विस्तृत स्वरूप में फैलाया था. पंजाब से पूर्व का सारा भारत, मध्य प्रदेश, कलिंग, गोदावरी नदी, मालवा एवं महाराष्ट्र तथा मैसूर का क्षेत्र महापद्मनन्द के राज्य की सीमा में आता था. महापद्मनन्द ने मगध पर लगभग 28 वर्षों तक शासन किया था. महापद्मनन्द के बाद नन्दवंश पतन की ओर अग्रसर होता चला गया था.

महाबोधिवंश के अनुसार महापद्मनन्द के उत्तराधिकारी निम्नलिखित थे—

1. पंडुक, 2. पंडुगति, 3. भूतपाल, 4. राष्ट्रपाल, 5. गोविशानक, 6. कैवर्त, 7. दसिधक, 8. धनानन्द.

इन 8 उत्तराधिकारियों ने 12 वर्षों तक शासन किया था. नन्दवंश का अन्तिम शासक धनानन्द था, जो अत्यन्त अत्याचारी एवं दुष्ट था. यह सिकन्दर महान् का समकालीन था. इसके अत्याचारों से मुक्त करने के लिए चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध की जनता एवं कौटिल्य (चाणक्य) के सहयोग से नन्दवंश का पतन कर मौर्य साम्राज्य की नींव रखी थी. 322 ई. पू. में गुरु चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने धनानन्द की हत्या कर दी थी. धनानन्द का सेनापति भद्दशाल था एवं शकटार और राक्षस उसके अमात्य थे. नन्दवंश के दौरान पाटलिपुत्र मगध की राजधानी थी. उनके समय में पाणिनी, कात्यायन, उपवर्ष, वर्ष, वररुचि जैसे महान् विद्वानों ने आश्रय प्राप्त किया एवं शिक्षा तथा संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन किया. नन्दवंश ने सभी धर्मों को भी संरक्षण एवं आश्रय प्रदान किया था.

विदेशी आक्रमण (The Foreign Invasions)

मगध साम्राज्यवाद के उदय के अलावा भारत में छठी शताब्दी ई. पू. से चतुर्थ शताब्दी ई. पू. के मध्य घटित होने वाली घटना थी–विदेशी आक्रमण (The foreign Invasion). उस दौरान मगध साम्राज्यवाद का उदय पूर्व में हो रहा था, जबकि पश्चिमोत्तर प्रदेश में विदेशी आक्रमण का क्रम जारी था. विदेशी आक्रमणों से यद्यपि कोई विशेष राजनीतिक लाभ विदेशियों को नहीं हो पाया, क्योंकि वे भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने में नाकाम रहे.

पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण एवं राजनीतिक स्थिरता का अभाव, परस्पर वैमनस्य एवं शक्तिशाली शक्ति के अभाव के फलस्वरूप विदेशी आक्रमण का सामना करना पड़ा.

ईरानी आक्रमण (पारसी)

साइरस—पहला विदेशी आक्रमण भारत पर ईरान के हखामनी (पारसी साम्राज्य) ने किया, जिसका संस्थापक साइरस था. साइरस ने 558 ई. पू. से 530 ई. पू. के मध्य मकरान के रास्ते से भारत में प्रवेश किया. बैक्ट्रिया, सीस्तान, मकरान, कपिशा एवं हिन्दुकुश पर्वतमाला तक के क्षेत्रों पर उसका अधिकार हो गया. काबुल घाटी में उसे सफलता प्राप्त हुई. साइरस के इस सैनिक अभियान से हखामनी (पारसी) साम्राज्य की पूर्वी सीमा पश्चिमी सीमा से मिल गई थी.

डेरियस प्रथम—डेरियस या दारा प्रथम (522-486 ई. पू.) ने भारत पर पुनः आक्रमण किया. हमदान, नक्श-ए-रुस्तम अभिलेख में डेरियस या दारा प्रथम की सिन्धु विजय का उल्लेख प्राप्त होता है. डेरियस प्रथम ने 519-513 ई. पू. के मध्य सिन्धु प्रदेश पर विजय प्राप्त की थी. इसके अतिरिक्त पश्चिमी गांधार, कम्बोज एवं सिन्ध प्रदेश पर भी डेरियस प्रथम ने विजय प्राप्त की थी. भारत से ईरानी साम्राज्य को हर वर्ष '360' टेलेन्ट सोना प्राप्त होता था.[1]

क्षहर्यांश या क्षयार्प

क्षयार्प या क्षहर्यांश (486–465 ई. पू.) डेरियस या दारा प्रथम का उत्तराधिकारी था. उसने भारतीय राज्यों पर अपनी पकड़ जारी रखी. आक्रमण के दौरान इसने अनेक मंदिरों को तोड़ा एवं भारतीय देवताओं की पूजा को निषिद्ध किया. क्षयार्ष ने बलपूर्वक ईरान का प्रधान देवता अहुरमज्दा एवं ऋतम् (प्रकृति की पूजा) को आरम्भ किया.

भारत पर डेरियस या दारा तृतीय (335-350 ई. पू.) तक ईरानी आक्रमण का प्रभाव रहा. इसके उपरान्त सिकन्दर महान् (यूनानी शासक) ने दारा तृतीय पर आक्रमण कर भारत को ईरान के आक्रमण से मुक्त कर दिया.

ईरानी आक्रमण के परिणाम

ईरानी आक्रमण के 200 वर्षों में भारत की राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, कला एवं प्रशासनिक गतिविधियों में अत्यधिक अन्तर दृष्टिगोचर हुआ. भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में ईरानी सभ्यता-संस्कृति का स्वरूप परिलक्षित होने लगा था. ईरानी आक्रमण के संभावित परिणाम निम्नलिखित थे—

(1) ईरानी आक्रमण से सीमान्त प्रदेश की राजनीतिक दुर्दशा की पोल विदेशियों के समक्ष खुल गई. अप्रत्यक्ष रूप से यूनानी सम्राट् ने इस स्थिति से परिचित होकर भारत पर आक्रमण किया एवं विजयी रहा.[2]

(2) ईरानी आक्रमण से आर्थिक परिदृश्य प्रभावित हुआ. भारत और ईरान में व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़ हो गये. भारत में चाँदी के सिक्कों का प्रचलन ईरानियों के आगमन से प्रारम्भ हुआ.

---

1. India Constituted the twentieth and the most populous strapy of the Persians empire and it paid a tribute proportionately larger than all the rest—360 talents of gold dust. —Herodotus
2. If the Achaemenian brought the Indian bowmen and lancers to Hellenic soil, they also showed the way of conquest to the peoples of Greece and Macedon. —Political History of Ancient India, Page 214, H. C. RayChaudhary

(3) ईरानी आक्रमण से ईरानी प्रशासनिक तत्वों की समाविष्टि भारतीय प्रशासन में हुई. मौर्य शासन में ईरानी प्रशासन तत्त्वों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है. अशोक की राजाज्ञाओं की प्रस्तावना एवं मेगस्थनीज की इण्डिका में यह विवरण उपलब्ध है.

(4) ईरानी आक्रमण से अरामाइक लिपि, खरोष्ठि लिपि का भारत में विकास हुआ. पवित्र अग्नि जलाने की प्रथा का आविर्भाव ईरानियों से ही भारतीयों ने सीखा.

(5) ईरानी आक्रमण से भारतीय कला को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला. अशोक की शिलालेख खुदवाने की कला, पत्थर को चिकना बनाने की कला, अशोक स्तम्भों के शीर्ष पर चित्रित घण्टानुमा आकृतियाँ ईरानी कला से ही प्रस्फुटित हुई. चन्द्रगुप्त मौर्य ने पाटलिपुत्र में अपना राजप्रासाद पर्सीपोलिस के राजमहल के ढाँचे पर तैयार किया था.

यूनानी आक्रमण
(The Greek Invasions)

ईरानियों के पश्चात् यूनानियों द्वारा भारत पर आक्रमण का सिलसिला प्रारम्भ हुआ. यूनानी आक्रमणकारियों का नेतृत्वकर्ता मकदूनिया के शासक फिलिप का पुत्र सिकन्दर था, जो उस दौरान यूनान के मकदूनिया का सम्राट् था. सिकन्दर के पिता की इच्छा विश्वविजेता बनने की थी, लेकिन यह सम्भव नहीं हो पाया और इसको पूरा करने का जिम्मा सिकन्दर ने लिया. 336 ई. पू. में 20 वर्ष की उम्र में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् सिकन्दर मकदूनिया का सम्राट् बना. एशिया माइनर, भूमध्यसागरीय प्रदेश, मिस्र, फिनिशिया, ईरान पर उसने विजय प्राप्त की. 330 ई. पू. गौगमेला या अरबेला के युद्ध में हखामनी साम्राज्य का सिकन्दर ने विनाश कर दिया. इसके बाद उसका मार्ग भारत विजय के लिए प्रशस्त हो गया. उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति दयनीय थी. चतुर्थ शताब्दी ई. पू. सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर यूनानी साम्राज्य स्थापित किया.

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के विभिन्न राज्यों की दशा

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के विभिन्न राज्यों की राजनीतिक दशा अत्यन्त दयनीय थी. भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र का सम्पूर्ण क्षेत्र अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था. यूनानी इतिहासकारों के अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के दौरान निम्नांकित राज्य थे—

(1) **अस्पेशियन** (Aspasian)—नामकरण ईरानी शब्द 'अस्प तथा संस्कृत शब्द अश्व' या अश्वक के आधार पर किया गया था. यह काबुल नदी के उत्तर के पहाड़ी भागों में अवस्थित था. इस राज्य का राजा युअस्पला था. अन्दक और ऐरिजियम इस राज्य के प्रमुख नगर थे.

(2) **गौर या गुरेअन्स** (Guraeans)—अस्पेशियन और अस्सकेनियन के मध्य गुरेअन्स या गौर अवस्थित था. इस परिक्षेत्र में पंचकौर, गौरी या गुरेअस नाम की नदी प्रवाहित होती थी.

(3) **अश्वक या अश्मक या अस्सकेनस** (Assakenos)—अश्वक या अश्मक सिन्धु नदी तक फैला हुआ था. मालकन्द दर्रे के पास में उत्तर की ओर 'मसग' नामक अश्मक की राजधानी थी. अस्सकेनोस यहाँ का राजा था, जो अत्यन्त प्रभावशाली एवं सैनिक शक्तिवाला शासक था.

(4) **आर्सकेस या उरसा** (Arasakes)—यह कम्बोज राज्य का भाग था एवं हाजरा जिले में अवस्थित था. आर्सकेस संस्कृत भाषा में उरसा कहलाता है. इसका खरोष्ठि अभिलेखों में कई बार प्रयोग हुआ है.

(5) **नीसा** (Nysa)—नीसा काबुल और सिन्धु नदियों के मध्य मेरोस पर्वत की तलहटी में था. यहाँ का शासन गणतन्त्रात्मक था. नीसा की स्थापना यूनानी उपनिवेशवादियों ने की थी. सिकन्दर के आक्रमण के समय नीसा का शासक आकूफिस था. यहाँ के निवासी डायोनिसस के साथ आयी हुई जातियों के वंशज थे.

(6) **तक्षशिला** (Takshshila)—तक्षशिला सिन्धु एवं झेलम नदियों के मध्य अवस्थित था. चतुर्थ शताब्दी ई. पू. में यह स्वतन्त्र राज्य बन चुका था. इससे पूर्व गांधार प्रदेश की राजधानी तक्षशिला थी. वर्तमान में यह स्थल रावलपिण्डी में आता है. तक्षशिला में वंशानुगत राजतन्त्रात्मक प्रणाली के प्रचलित होने के प्रमाण मिलते हैं. सिकन्दर के आक्रमण के समय टैक्साइल्स या बेसिलियस तक्षशिला का शासक था. बेसिलियस की मृत्यु के उपरान्त ओम्फिस या आम्भी यहाँ का शासक बना.

(7) **प्यूकेलाओटिस** (Peukelaotis)—प्यूकेलाओटिस राज्य काबुल से सिन्ध जाने वाली सड़क के पास वाले क्षेत्र में अवस्थित था, जो पाकिस्तान के वर्तमान पेशावर के अन्तर्गत आता था. इस राज्य की तुलना संस्कृत में पुष्करावती (पुष्कलावती) से की गई है. यहाँ का शासक आस्टेस था, जिसे हस्ती या अष्टक भी कहा जाता था. सिकन्दर के सेनापति हेफिस्तीन ने अष्टक की हत्या कर दी थी.

(8) **गान्दारिस** (Gandaris)—यह राज्य चिनाव और रावी के मध्य अवस्थित छोटा-सा राज्य था. इसके बारे में

अधिक उल्लेख प्राप्त नहीं होते तथापि यहाँ का शासक पुरु था, जो सम्भवतः ज्येष्ठ पुरु से किसी तरह से सम्बन्धित था. कुछ विद्वान् उसे ज्येष्ठ पुरु का भतीजा मानते थे.

(9) **अभिसार** (Abhisara)—अभिसार झेलम और चिनाव के मध्य अवस्थित था. ऐसा माना जाता है कि अभिसार प्राचीन कम्बोज का ही अंग था. यहाँ का शासक अबीसेर्यस था जो शक्तिशाली एवं कूटनीतिज्ञ था. तक्षशिला के उत्तरी पहाड़ियों के मध्य भाग को भी प्रसिद्ध विद्वान् स्ट्रेबो ने अभिसार कहा है.

(10) **आद्रेस्ताई** (Adraistai)—आद्रेस्ताई रावी नदी के तट पर बसा राज्य था. इसे महाभारत में आद्विज के रूप में वर्णित किया गया है. आद्रिस्ताई का प्रमुख शहर पिम्प्रमा था.

(11) **ज्येष्ठ पुरु (पोरस) का राज्य** (Kingdom of the Elder Porous)—वर्तमान गुजरात एवं शाहपुर में अवस्थित यह राज्य झेलम एवं चिनाव नदियों के मध्य अवस्थित था. यह अत्यधिक सम्पन्न, शक्तिशाली एवं सैनिकों से समृद्ध राज्य था. पोरस को वैदिककालीन आर्यों की शाखा के रूप में माना जाता रहा है. स्ट्रेबो एवं डायोडोरस यहाँ के सम्बन्ध में अनेक उल्लेख करते हैं.

(12) **सोफाइटस या सौभूति** (Sophytes)—सोफाइटस नामक एक सम्पन्न राज्य था, जो झेलम नदी के पूर्व में अवस्थित था. यहाँ पर स्वतन्त्र राज्य होने के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते.

(13) **कठ या कथैओई** (Kathaioi)—यह राज्य चिनाव और झेलम नदियों के मध्य में अवस्थित था. इसकी राजधानी सागल (गुरुदासपुरा जिले के अन्तर्गत) थी. यहाँ पर सुन्दर पुरुष को राजा बनाया जाता था.

(14) **ग्लौगनिकाई प्रदेश** (Glauganikai)—ग्लौगनिकाई प्रदेश एक छोटा-सा राज्य था, जिसकी जनसंख्या 5 हजार थी. पुरु राज्य की सीमा से लगता हुआ, यह राज्य चिनाव नदी के पश्चिम में स्थित था.

(15) **पटलेन या पटल** (Patalene)—सिन्धु के डेल्टा में यह राज्य फैला हुआ था. इस क्षेत्र की राजधानी पाटल नगर थी. सिकन्दरकालीन मोरेस यहाँ का शासक था. यहाँ की शासन व्यवस्था स्पार्टा से मिलती हुई थी.

(16) **फेगल या फेगेलास** (Phegelas)—फेगेलस रावी और व्यास नदियों के मध्य बसा हुआ था. शासन-प्रणाली गणतन्त्रात्मक थी. फेगेलास का तत्कालीन शासक फेगेलास (भागल) था.

सिकन्दरकालीन अन्य राज्य

(17) **राज्य**—सिबोई (Siboi).

अवस्थित—क्षंग जिला का शेरकोट क्षेत्र.

वर्णन / विवरण—1. इनकी राजधानी शिविपुर या शिविनगर थी.

2. ऋग्वेद में वर्णित शिव जाति यहाँ के निवासियों की ही थी.

3. जातक कथाओं एवं अष्टाध्यायी में इसका उल्लेख हुआ है.

(18) **राज्य**—शाम्ब, सम्बस या सम्बोस (Sambos).

अवस्थित—मूषिक राज्य के समीपस्थ पहाड़ी स्थलों में.

वर्णन / विवरण—राजधानी सेहवान या सिंधिमान थी.

मूषिकों के साथ इनका सम्बन्ध अच्छा नहीं था.

(19) **राज्य**—आगलस्सोई (Agalassoi).

अवस्थित—ये शिवियों के पड़ोसी थे.

वर्णन / विवरण—1. इनके पास विशाल सेना थी.

2. सेना में 40 हजार पैदल एवं 3 हजार घुड़सवार सैनिक थे.

(20) **राज्य**—ऑक्सीकनोस या प्रोस्थस (Oxykanos)

अवस्थित—सिन्ध के पश्चिम में लरकान.

वर्णन / विवरण—यहाँ की प्रजा प्रास्ती या प्रोस्थस कहलाती थी.

(21) **राज्य**—मालव या मल्लोई (Malloi).

अवस्थित—रावी नदी के निचले भाग पर दाहिने तट पर अवस्थित.

वर्णन / विवरण—1. पाणिनी ने इन्हें 'शास्त्रीय जीवी' कहा है.

2. यह एक गणराज्य था जिसमें क्षुद्रक और मालवों का संघ था. क्षुद्रकों एवं मालवों का संयुक्त राज्य था.

3. चिनाव और सिन्धु नदी का संगम इसी स्थल पर है.

(22) **राज्य**—क्षुद्रक या आक्सीड्रकाई (Oxydrakai—Kshudrak).

अवस्थित—झेलम एवं चिनाव के पास अवस्थित.

वर्णन / विवरण—1. यह एक गणराज्य था.

2. वीरता के लिए प्रसिद्ध था.

3. शिवियों के पड़ोसी थे.

(23) **राज्य**—मौषिकनोष या मूषिक (Mousikanos).

अवस्थित—सिन्ध के विस्तृत क्षेत्र में अवस्थित.

राजधानी–सक्खर जिले का एलोर स्थल.

वर्णन / विवरण—1. यहाँ पर ब्राह्मणों की संख्या अत्यधिक थी, जो प्रभावशाली थे.

(24) **राज्य**—अम्वष्ट या आवष्टनोई (Abastanoi).

अवस्थित—मालव देश के नीचे एवं चेनाव-सिन्धु संगम के ऊपरी प्रदेश में अवस्थित था.

वर्णन / विवरण—1. सिकन्दर के काल में शासन-पद्धति गणतन्त्रात्मक थी.

2. यहाँ पर चारों वर्णों के लोग निवास करते थे.

(25) **राज्य**—मस्सनोई और सोद्रई (Sodrai Massanoi).

अवस्थित—उत्तरी सिंध, बहावलपुर एवं सिन्ध की सहायक नदियों के संगम के पास अवस्थित.

वर्णन / विवरण—यह राज्य सिन्ध नदी के दोनों ओर अवस्थित था.

(26) **राज्य**—ओसोडियोई (Ossadioi).

अवस्थित—चेनाव के तटवर्ती क्षेत्र में अवस्थित था.

वर्णन / विवरण—ओसोडियोई महाभारत में.

सिकन्दर का विजय अभियान

सिकन्दर का भारत अभियान लगभग 327 ई. पू. में प्रारम्भ हुआ. हिन्दुकुश पर्वत श्रेणी से गुजरता हुआ सिकन्दर काबुल की उपत्यका में निकाइया या निकाई नगर (जलालाबाद के पास) तक पहुँच गया. सेना की एक टुकड़ी हफिस्तियन और पर्दिकस सिकन्दर के दो विश्वस्त सैनिक एवं सेनापतियों के नेतृत्व में पेशावर की तरफ बढ़ी एवं सिकन्दर के साथ दूसरी टुकड़ी तक्षशिला की ओर कूच पर निकली.

अश्वकों को परास्त करते हुए मस्सग से सिकन्दर नीसा पहुँचा. यूनानी देवता डायनोसिस के वंशज माने जाने वाले नीसा के निवासियों ने सिकन्दर के आक्रमण का विरोध नहीं किया. 326 ई. पू. में सिकन्दर सिन्धु नदी को पारकर तक्षशिला की तरफ बढ़ गया. उसके आते ही तक्षशिला एवं उर्सा के शासकों ने उसके समक्ष समर्पण कर दिया. अष्टकों को पराजित करता हुआ सिकन्दर पोरस को परास्त करने के लिए अग्रसर हुआ. इस दौरान उसकी सेना की दोनों टुकड़ियाँ आपस में मिल चुकी थीं. सीमान्त क्षेत्र में चौथी शताब्दी में

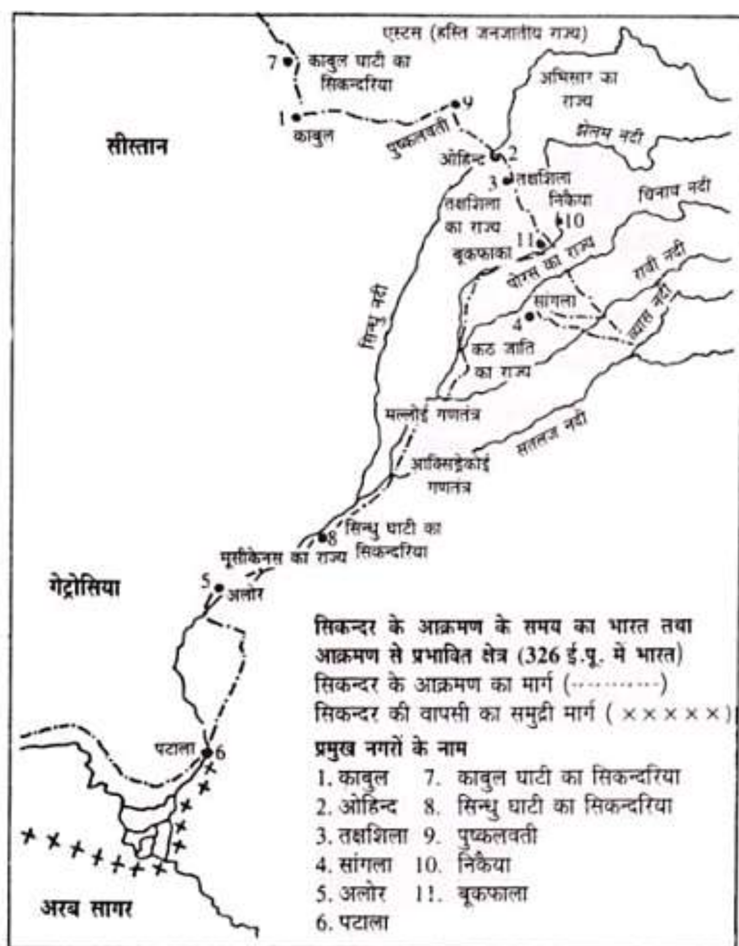
पोरुष उस समय का सर्वाधिक शक्तिशाली, स्वाभिमानी, राष्ट्रीय प्रेमी एवं वीर योद्धा था. पोरुष या पोरस झेलम नदी के तट पर सिकन्दर का अकेला ही रास्ता रोककर खड़ा हो गया. पोरस पर सिकन्दर के आक्रमण से उसे हार का सामना करना पड़ा था. इसके पश्चात् पोरस के व्यवहार से प्रसन्न होकर सिकन्दर ने उससे मित्रता कर ली. पोरस की विजय के पश्चात् निकाइया (पोरस का युद्ध स्थल) और बूकेफल दो नगरों की सिकन्दर ने स्थापना की. बूकेफल में सिकन्दर के प्रिय घोड़े की मृत्यु हो गई थी.

इसके पश्चात् सिन्धु प्रदेश में सिकन्दर आगे बढ़ा. जहाँ पर उसको विद्रोहों का सामना करना पड़ा. छोटे पोरस को परास्त कर उसके क्षेत्र को बड़े पोरस को देकर सिकन्दर ग्लौगनिकाई प्रदेश की तरफ बढ़ा. उसके 37 नगरों को जीतकर ज्येष्ठ पुरु को वह प्रदेश सौंप दिया.

कठों को जीतता हुआ सिकन्दर फेगल और सौभूति शासकों को परास्त कर व्यास नदी तक पहुँच गया. इसके आगे बढ़ने के लिए सिकन्दर की सेना के इनकार कर देने के बाद वह वापस लौटने के लिए तैयार हो गया. सिकन्दर ने व्यास नदी के तट पर 12 वैदिका स्तम्भों का निर्माण यूनान देवताओं के नाम पर किया. सिकन्दर ने पूर्वी सीमा को अपनी विजय यात्रा को प्रदर्शित करने के लिए उसने यह सब किया. सिकन्दर ने जीते हुए प्रदेशों को अपने मित्रों में वर्गीकृत कर दिया. वर्गीकरण निम्न प्रकार से था—

1. झेलम और व्यास नदी का मध्य भाग—ज्येष्ठ पोरस को
2. सिन्धु और झेलम के मध्य का भाग—आम्भी को
3. कश्मीर और उर्सा क्षेत्र—अभिसार के राजा को

नवम्बर 326 ई. पू. सिकन्दर ने झेलम नदी के मार्ग से पुनः अपनी वापसी की यात्रा प्रारम्भ की. झेलम और चिनाव के संगम से स्थलमार्ग द्वारा सिकन्दर ने यात्रा की. वापसी यात्रा में क्षुद्रकों, शिवियों, मालवों, मूषिकों, अम्वष्टों एवं अन्य भारतीय सैनिकों से उसे कष्टकारी सामना करना पड़ा. सिकन्दर इन सबको परास्त कर पटल नगर में पहुँचा. एक सेना की टुकड़ी निर्याकस के नेतृत्व में समुद्री मार्ग से यूनान भेजी एवं दूसरी टुकड़ी क्रेटेरस के नेतृत्व में स्थलमार्ग से बोलनदर्रा से गुजर कर बेबीलोन तक पहुँची. सिकन्दर बेबीलोन में अस्वस्थ हो गया और वहीं उसका 323 ई. पू. में निधन हो गया.



सिकन्दर के आक्रमण के प्रभाव
(Effects of Alexander's Invasion)

सिकन्दर का आक्रमण महज एक लड़ाई युद्ध या संघर्ष से परे भी भारत की वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन का कारक था. सिकन्दर के आक्रमण से तत्कालीन सभ्यता, संस्कृति, आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में यूनान का समन्वित स्वरूप दृष्टिगोचर हुआ. इसके आक्रमण के निम्न-लिखित प्रभाव थे—

(1) सिकन्दर के आक्रमण का सबसे प्रमुख कारण भारतीयों में राजनीतिक अस्थिरता था. इसके आक्रमण के पश्चात् भारतीयों ने सीमान्त प्रदेश की राजनीति में परिवर्तन कर उसमें एकता स्थापित की.

(2) सिकन्दर ने आक्रमण के दौरान कई यवन बस्तियों की स्थापना की. काबुल में सिकन्दरिया या अलेक्जेण्डरिया, घोड़े के मृत्यु स्थल पर बूकेफल, पोरस और सिकन्दर के युद्ध के स्थल पर निकाइया नगर एवं अन्य कई नगरों की स्थापना की.

(3) सिकन्दर के आक्रमण से तिथिक्रम को निश्चित आयाम मिला है. 326 ई. पू. के बाद का इतिहास का तिथिक्रम एवं क्रमबद्ध होना, इसी आक्रमण के फलस्वरूप सम्भव हो सका.

(4) सिकन्दर के आक्रमण के फलस्वरूप भारत और यूनानी सम्बन्धों में निकटता आई थी. भारत और यूनान के मध्य तीन जलमार्ग और एक स्थलमार्ग का खुलना इसी के फलस्वरूप हो पाया है.

(5) सिकन्दर के आक्रमण से भारत में सांस्कृतिक प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए हैं. सैन्यकला, साहित्य, कला, चिकित्सा, मुद्रा एवं ज्योतिष पर यूनानी प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है.

विशिष्ट स्मरणीय परीक्षोपयोगी तथ्य

सोलह महाजनपदों का विशिष्ट विवरण

	नाम महाजनपद	राजधानी	टिप्पणी / विवरण
1.	अंग महाजनपद	चम्पा नगरी	श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र
2.	मगध महाजनपद	गिरिव्रज एवं पाटलिपुत्र	महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का केन्द्र
3.	काशी महाजनपद	वाराणसी या बनारस	बारह योजन तक विस्तृत नगरी
4.	कोशल महाजनपद	श्रावस्ती (उ. कोशल) कुशावती (द. कोशल)	सरयू नदी का प्रवाह क्षेत्र
5.	वज्जि महाजनपद	वैशाली (लिच्छवी गण की राजधानी)	आठ गणतन्त्रों वाला श्रेष्ठ महाजनपद
6.	मल्ल महाजनपद	कुशीनारा एवं पावा	नौ गणतन्त्रों वाला महाजनपद
7.	वत्स महाजनपद	कौशाम्बी	प्रसिद्ध शासक उदयन का क्षेत्र
8.	चेदि महाजनपद	'शुक्तिमती' एवं सोत्थिमती	प्रतापी शासक शिशुपाल का क्षेत्र
9.	कुरु महाजनपद	इन्द्रप्रस्थ	तीन सौ संघों वाला महाजनपद
10.	पांचाल महाजनपद	अहिच्छत्र (उ. पांचाल), कांपिल्य (द. पांचाल)	द्रोपदी की जन्मभूमि
11.	मत्स्य महाजनपद	विराट नगर	चम्बल से सरस्वती तक फैली हुई
12.	शूरसेन महाजनपद	मथुरा	वृष्णि यादवों के संघ के अध्यक्ष भगवान् कृष्ण थे
13.	अवन्ति महाजनपद	उज्जैन (उ. अवन्ति) माहिष्मती (द. अवन्ति)	बौद्ध धर्म का केन्द्र
14.	गांधार महाजनपद	तक्षशिला	प्रसिद्ध शासक पुष्करसारिन
15.	कम्बोज महाजनपद	हाटक या राजपुर	राजतन्त्र से गणतन्त्र में परिवर्तित
16.	अश्मक महाजनपद	पोतना (पोतन)	गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित

प्रमुख 10 गणराज्य

1. कपिलवस्तु के शाक्य
2. कुशीनारा के मल्ल
3. पावा के मल्ल
4. मिथिला के विदेह
5. पिप्पलीवन के मोरिय
6. रामग्राम के कोलिय
7. सुसुमार के भग्ग
8. अल्लकप्प के बुलि
9. वैशाली के लिच्छवि
10. केसपुत्त के कालाम

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के प्रमुख राज्य

	नाम राज्य	स्थिति	उल्लेख / वर्णन / टिप्पणी
1.	**अस्पेशियन**	काबुल नदी के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में	अन्दक और ऐरिजियम प्रवाह नगर
2.	**गूरेअन्स या गौर**	अस्पेशियन और अस्सकेनियन के मध्य	पंचकौर नदी का प्रवाह स्थल
3.	**अश्मक**	सिन्धु नदी तक प्रसारित	शक्तिशाली अस्सकेनोस शासक
4.	**उर्सा या आर्सकेस**	हाजरा जिले में अवस्थित	कम्बोज राज्य का भाग
5.	**नीसा**	काबुल और सिन्धु नदी के मध्य	यूनानी उपनिवेशवादियों द्वारा स्थापित
6.	**तक्षशिला**	सिन्धु एवं झेलम के मध्य में अवस्थित	वंशानुगत राजतन्त्रात्मक प्रणाली
7.	**प्यूकेलाओटिस**	काबुल से सिन्ध के मार्ग के पास	पुष्करावती (पुष्कलावती) के समकक्ष
8.	**गान्दारिस**	चिनाव और रावी के मध्य छोटा राज्य	शासक पुरु था
9.	**अभिसार**	झेलम और चिनाव के मध्य	अबीसेर्यस प्रसिद्ध शासक
10.	**आद्रेस्ताई**	रावी नदी के तट पर अवस्थित	पिम्प्रभा प्रमुख नगर
11.	**ज्येष्ठ पुरु का राज्य**	झेलम एवं चिनाव के मध्य अवस्थित	सिकन्दर का मित्र एवं शक्तिशाली शासक
12.	**सौभूति**	झेलम नदी के पूर्व में अवस्थित	अत्यधिक सम्पन्न राज्य
13.	**कठ**	चिनाव और झेलम के मध्य अवस्थित	राजधानी सागल थी
14.	**ग्लौगनिकाई प्रदेश**	चिनाव राज्य के पश्चिम में	5 हजार की जनसंख्या का राज्य

विशिष्ट स्मरणीय परीक्षोपयोगी तथ्य

सोलह महाजनपदों का विशिष्ट विवरण

	नाम महाजनपद	राजधानी	टिप्पणी / विवरण
1.	अंग महाजनपद	चम्पा नगरी	श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र
2.	मगध महाजनपद	गिरिव्रज एवं पाटलिपुत्र	महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का केन्द्र
3.	काशी महाजनपद	वाराणसी या बनारस	बारह योजन तक विस्तृत नगरी
4.	कोशल महाजनपद	श्रावस्ती (उ. कोशल) कुशावती (द. कोशल)	सरयू नदी का प्रवाह क्षेत्र
5.	वज्जि महाजनपद	वैशाली (लिच्छवी गण की राजधानी)	आठ गणतन्त्रों वाला श्रेष्ठ महाजनपद
6.	मल्ल महाजनपद	कुशीनारा एवं पावा	नौ गणतन्त्रों वाला महाजनपद
7.	वत्स महाजनपद	कौशाम्बी	प्रसिद्ध शासक उदयन का क्षेत्र
8.	चेदि महाजनपद	'शुक्तिमती' एवं सोत्थिमती	प्रतापी शासक शिशुपाल का क्षेत्र
9.	कुरु महाजनपद	इन्द्रप्रस्थ	तीन सौ संघों वाला महाजनपद
10.	पांचाल महाजनपद	अहिच्छत्र (उ. पांचाल), कांपिल्य (द. पांचाल)	द्रोपदी की जन्मभूमि
11.	मत्स्य महाजनपद	विराट नगर	चम्बल से सरस्वती तक फैली हुई
12.	शूरसेन महाजनपद	मथुरा	वृष्णि यादवों के संघ के अध्यक्ष भगवान् कृष्ण थे
13.	अवन्ति महाजनपद	उज्जैन (उ. अवन्ति) माहिष्मती (द. अवन्ति)	बौद्ध धर्म का केन्द्र
14.	गांधार महाजनपद	तक्षशिला	प्रसिद्ध शासक पुष्करसारिन
15.	कम्बोज महाजनपद	हाटक या राजपुर	राजतन्त्र से गणतन्त्र में परिवर्तित
16.	अश्मक महाजनपद	पोतना (पोतन)	गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित

प्रमुख 10 गणराज्य

1. कपिलवस्तु के शाक्य
2. कुशीनारा के मल्ल
3. पावा के मल्ल
4. मिथिला के विदेह
5. पिप्पलीवन के मोरिय
6. रामग्राम के कोलिय
7. सुसुमार के भग्ग
8. अल्लकप्प के बुलि
9. वैशाली के लिच्छवि
10. केसपुत्त के कालाम

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के प्रमुख राज्य

	नाम राज्य	स्थिति	उल्लेख / वर्णन / टिप्पणी
1.	**अस्पेशियन**	काबुल नदी के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में	अन्दक और ऐरिजियम प्रवाह नगर
2.	**गूरेअन्स या गौर**	अस्पेशियन और अस्सकेनियन के मध्य	पंचकौर नदी का प्रवाह स्थल
3.	**अश्मक**	सिन्धु नदी तक प्रसारित	शक्तिशाली अस्सकेनोस शासक
4.	**उर्सा या आर्सकेस**	हाजरा जिले में अवस्थित	कम्बोज राज्य का भाग
5.	**नीसा**	काबुल और सिन्धु नदी के मध्य	यूनानी उपनिवेशवादियों द्वारा स्थापित
6.	**तक्षशिला**	सिन्धु एवं झेलम के मध्य में अवस्थित	वंशानुगत राजतन्त्रात्मक प्रणाली
7.	**प्यूकेलाओटिस**	काबुल से सिन्ध के मार्ग के पास	पुष्करावती (पुष्कलावती) के समकक्ष
8.	**गान्दारिस**	चिनाव और रावी के मध्य छोटा राज्य	शासक पुरु था
9.	**अभिसार**	झेलम और चिनाव के मध्य	अबीसेर्यस प्रसिद्ध शासक
10.	**आद्रेस्ताई**	रावी नदी के तट पर अवस्थित	पिम्प्रभा प्रमुख नगर
11.	**ज्येष्ठ पुरु का राज्य**	झेलम एवं चिनाव के मध्य अवस्थित	सिकन्दर का मित्र एवं शक्तिशाली शासक
12.	**सौभूति**	झेलम नदी के पूर्व में अवस्थित	अत्यधिक सम्पन्न राज्य
13.	**कठ**	चिनाव और झेलम के मध्य अवस्थित	राजधानी सागल थी
14.	**ग्लौगनिकाई प्रदेश**	चिनाव राज्य के पश्चिम में	5 हजार की जनसंख्या का राज्य

15.	**पटल**	सिन्धु के डेल्टा में फैला हुआ राज्य	स्पार्टा के समान शासन-प्रणाली
16.	**फेगल**	रावी और व्यास नदियों के मध्य अवस्थित	गणतन्त्रात्मक शासन-प्रणाली
17.	**सिवोई**	क्षंग जिला के शेरकोट क्षेत्र में	शिव जाति के निवासी
18.	**शाम्ब**	मूषिक राज्य के पहाड़ी स्थल में	राजधानी सिन्धिमान
19.	**आगलस्सोई**	शिवियों के पड़ोस में स्थित	विशाल सैनिक शक्ति वाला राज्य
20.	**मालव**	रावी नदी के निचले भाग पर दाहिने तट पर	क्षुद्रक और मालवों का संघ
21.	**क्षुद्रक**	झेलम एवं चिनाव के पास	वीरता के लिए प्रसिद्ध गणराज्य
22.	**मूषिक**	सिन्ध के विस्तृत क्षेत्र में अवस्थित	ब्राह्मण वाहुल्य क्षेत्र

1. अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सोलह महाजनपद

1. काशी	2. कोशल
3. अंग	4. मगध
5. वज्जि (वृज्जि)	6. मल्ल
7. चेदि (चेतिय)	8. वत्स (वंश)
9. कुरु	10. पांचाल
11. मत्स्य (मच्छ)	12. शूरसेन
13. अस्सक (अश्मक)	14. आवन्ति (अवन्ती)
15. गांधार	16. कम्वोज

2. भगवतीसूत्र में वर्णित सोलह महाजनपद

1. अंग	2. वंग
2. मगह (मगध)	4. मलय
5. मालवा	6. अच्छ
7. वच्छ (वत्स)	8. कोच्छ (कच्छ)
9. लाढ़ (लाट या राधा)	10. पाढ़ (पांड्य)
11. वज्जि	12. मोलि (मल्ल)
13. काशी	14. कोशल
15. अवाह	16. संभुत्तरा (संहोत्रा)

3. सोलह महाजनपदों की राजधानी एवं शासन-प्रणाली

क्र. सं.	नाम महाजनपद	राजधानी	शासन-प्रणाली
1.	अंग	चम्पा (भागलपुर के पास)	राजतंत्रात्मक
2.	मगध	प्रारम्भ में–गिरिव्रज (राजगृह या राजगीर) बाद में–पाटलिपुत्र	राजतंत्रात्मक
3.	काशी	वाराणसी (वनारस)	राजतंत्रात्मक
4.	वत्स	कोरुम या कौशाम्बी (इलाहाबाद, उ. प्र.)	राजतंत्रात्मक
5.	कोशल	उत्तरी कोशल की श्रावस्ती दक्षिण कोशल की कुशावती	राजतंत्रात्मक
6.	शूरसेन	मथुरा	राजतंत्रात्मक
7.	पांचाल	(i) उत्तरी पांचाल की अहिच्छत्रा (बरेली, उ. प्र.) (ii) दक्षिण पांचाल की कांपिल्य (फर्रुखाबाद, उ. प्र.)	राजतंत्रात्मक
8.	कुरु महाजनपद	इन्द्रप्रस्थ	प्रारम्भ में राजतंत्रात्मक कालान्तर में गणतंत्रात्मक
9.	मत्स्य महाजनपद	बैराठ या विराट नगर	राजतंत्रात्मक
10.	चेदि महाजनपद	सोत्थिवती या शक्तिमति	राजतंत्रात्मक
11.	अवन्ति (अवन्ती) महाजनपद	1. उत्तरी अवन्ति की उज्जैन या उज्जयिनी 2. दक्षिण अवन्ति की माहिष्मती	राजतंत्रात्मक
12.	गांधार	तक्षशिला	राजतंत्रात्मक
13.	कम्वोज	हाटक या राजपुर	प्रारम्भ में राजतंत्रीय व्यवस्था बाद में गणतंत्रीय व्यवस्था
14.	अस्सक या अश्मक	पोतन, पोतना या पोटली	राजतंत्रात्मक व्यवस्था
15.	वज्जि या वृज्जि	वैशाली	आठ गणराज्यों का समूह गणतंत्रात्मक शासन-प्रणाली
16.	मल्ल	1. कुशीनारा 2. पावा	गणतन्त्रात्मक

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- छठी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य की अवधि को भारतीय इतिहास में प्राक् मौर्य या बुद्ध युग के नाम से जाना जाता था.
- कुल या जाति के बसने के स्थान का नाम उसी जाति के नाम पर रखा जाता था, जो आगे चलकर प्रदेश या प्रान्त का नाम बन जाता था. इस तरह के राज्यों को 'जन' या जातीय राज्य कहते थे.
- कालान्तर में राजनैतिक परिस्थितियों के कारण जातियाँ भिन्न-भिन्न स्थानों पर बस गयीं, जिन्हें 'जनपद' कहा जाने लगा.
- अगुंत्तरनिकाय में वर्णित महाजनपद विन्ध्य के उत्तर में अवस्थित था.
- पाँच जनों या पाँच जातियों के मिलने से **'पांचाल'** महाजनपद का निर्माण हुआ.
- अगुंत्तरनिकाय में वर्णित राजतन्त्रात्मक प्रणाली के महाजनपद निम्न थे—

  अंग, मगध, काशी, कौशल, वत्स, चेदि, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अवन्ति, गांधार, कम्बोज एवं अश्मक.
- अंग महाजनपद की सीमा मगध से लगी हुई थी. सम्प्रभुता के लिए मगध और अंग के बीच संघर्ष छिड़ा, जिसके परिणामस्वरूप मगध की राजधानी राजगीर पर अंग का अधिकार हो गया.
- गंगा नदी के दक्षिणी भाग में अवस्थित मगध महाजनपद की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज थी. इस महाजनपद की नयी राजधानी पाटलिपुत्र थी.
- वरुणा एवं अस्सी नदियों के संगम पर अवस्थित काशी महाजनपद की राजधानी वाराणसी या बनारस थी. वाराणसी छठी ई. पू. मिट्टी की दीवारों से घिरी एक नगरी थी.
- सम्प्रभुता के लिए काशी और कौशल में संघर्ष हुआ. अजातशत्रु ने काशी पर अधिकार कर काशी महाजनपद को मगध में सम्मिलित कर लिया.
- पूर्वी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में अवस्थित कौशल महाजनपद के उत्तरी कौशल की आरम्भिक राजधानी श्रावस्ती व नयी राजधानी साकेत थी. दक्षिणी कौशल की राजधानी कुशावती थी.
- वज्जि महाजनपद मगध के उत्तरी भाग में अवस्थित था. यह बौद्ध का प्रमुख धर्म केन्द्र था गौतम बुद्ध ने प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली को यहीं उपदेश दिया था. इस महाजनपद को सम्राट् अजातशत्रु ने मगध साम्राज्य में मिला लिया था.
- वज्जि महाजनपद के पश्चिमोत्तर एवं कौशल महाजनपद के पूर्व में हिमालय की तराई में मल्ल महाजनपद की राजधानी कुशीनारा थी. यह बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल के रूप में विख्यात है.
- काशी महाजनपद के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी थी. नाटककार भास की नाट्य रचना 'स्वप्नवासवदत्ता' का मुख्य पात्र 'उद्यन' इसी महाजनपद का शासक था.
- वत्स के दक्षिण भाग में यमुना नदी के किनारे अवस्थित चेदि महाजनपद की राजधानी शुक्तिमती या सोत्थिमती थी. शिशुपाल यहाँ का प्रसिद्ध शासक था.
- कुरु महाजनपद यमुना नदी के किनारे पर इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुर के आसपास अवस्थित था. इस महाजनपद की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी.
- पांचाल महाजनपद रुहेलखण्ड एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश मध्य दोआब क्षेत्र में अवस्थित था. उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र एवं दक्षिण पांचाल की राजधानी कांपिल्य थी.
- मत्स्य महाजनपद चम्बल से सरस्वती नदी तक फैला हुआ था. इसकी राजधानी विराट (वर्तमान बैराठ) थी. यहाँ के शासक विराट के नाम पर इसका नामकरण हुआ.
- शूरसेन महाजन पद चेदि महाजनपद के पश्चिमोत्तर में एवं कुरु के दक्षिण में अवस्थित था. इसकी राजधानी मथुरा थी. अवन्ति पुत्र (बुद्ध समकालीन) यहाँ का शासक था.
- पश्चिमी भारत मध्य प्रदेश के मालवा प्रदेश में अवस्थित अवन्ति महाजनपद दो विभागों (1. उत्तरी अवन्ति, 2. दक्षिणी अवन्ति) में विभाजित था. उत्तरी अवन्ति की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिणी अवन्ति की राजधानी माहिष्मति थी.
- गांधार महाजनपद भारत के उत्तर-पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्र में अवस्थित था, जिसकी राजधानी तक्षशिला एवं शासक पुष्करसारन थे. छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यहाँ पर फारस (ईरान) का अधिकार हो गया था.
- कम्बोज महाजनपद भारत के उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र का दूसरा भाग था. इसकी राजधानी हाटक या राजपुर थी. यहाँ के प्रसिद्ध शासक चन्द्रवर्मन व सुदक्षिण थे.
- गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित अश्मक महाजनपद की राजधानी 'पोतन' या पोतना या पोटली थी. मूलक जनपद अश्मक का पड़ोसी क्षेत्र था. क्षत्रियों का यहाँ पर शासन था. अवन्ति के साथ सम्प्रभुता के संघर्ष के फलस्वरूप अवन्ति ने अश्मक पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया था.
- तत्कालीन भारत में ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार निम्नलिखित पाँच प्रकार के राज्य थे—

  1. साम्राज्य 2. भोज्य
  3. स्वराज्य 4. वैराज्य
  5. राज्य.
- मगध महाजनपद के कलिंग क्षेत्र में बंग वंश के शासक का राज्याभिषेक साम्राज्य के लिए होता था. ये सदैव अपने राज्य के विस्तार के लिए प्रयासरत् रहते थे.

- दक्षिणी के सात्वतों (यादवों) का राज्य 'भोज्य' व शासक 'भोज' कहलाता था. शासकों की नियुक्ति एक निश्चित अवधि के लिए होती थी.
- उत्तरी क्षेत्र (हिमालय) के शासक 'विराट' व राज्य 'वैराज्य' कहलाता था. राजा निश्चित नहीं होते थे. प्रजा के प्रतिनिधि शासन संभालते थे.
- छठी शताब्दी ई. पू. से राजा को सलाह देने एवं सहायता के लिए 'परिषद्' संगठित हो गयी थी. प्राक् मौर्य युग में राजतन्त्रीय व्यवस्था का प्रमुख अंग 'परिषद्' थी. इन परिषदों में प्रधान पुरोहित एवं राजा के सलाहकारों को चुना जाता था.
- राजा द्वारा अपनी सहायता के लिए चुने गये प्रमुख अधिकारियों का वर्ग 'महापात्र' होता था, जिन्हें कुछ राज्यों में 'आयुक्त' भी कहा जाता था.
- ग्रामवासियों द्वारा ग्राम में प्रशासन व्यवस्था चलाने के लिए छठी शताब्दी ई. पू. ग्राम प्रशासन का प्रधान 'ग्रामणी', ग्रामिक या ग्राम भोजक होता था. इनका कार्य शान्ति व्यवस्था स्थापित करने से लेकर कर उगाहने की व्यवस्था करना था.
- राजतन्त्रीय व्यवस्था में भूमि कर (उपज का 1/6 भाग) एवं विभिन्न स्रोतों से प्राप्त चुँगी राज्य की आमदनी का स्रोत था. कर एकत्र करने व खजाने की देखभाल करने वाले अधिकारी को 'भाण्डागरिक' (शौल्किक) एवं 'भागदुध' कहा जाता था.
- कानून व्यवस्था वर्गव्यवस्था पर आधारित थी. निम्नवर्ग को अधिक एवं उच्चवर्ग को कम सजा देने का प्रावधान था. न्यायिक क्षेत्र का प्रधान राजा होता था.
- छठी शताब्दी ई. पू. गणतन्त्रीय व्यवस्था वाले महाजनपद भी थे, जिनका उल्लेख पालि साहित्य में प्राप्त होता है. 10 गणतन्त्रों की प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन भी पालि साहित्य में किया गया है. ये गणतन्त्र सिन्धु नदी के द्रोणी एवं हिमालय की तलहटी में विद्यमान था.
- शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु जो वर्तमान में पिपरहवा, बस्ती जिला, उत्तर प्रदेश में अवस्थित है. शाक्यों की नगरी लुम्बिनी में ही गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था. कालान्तर में यह कौशल राजतन्त्र में विलय हो गया था.
- शाक्यों के पूर्व में कोलियों का राज्य था. यहाँ पर रोहिणी दोनों के मध्य विभाजक रेखा का काम करती थी. इस नदी के जल के बँटवारे को लेकर दोनों में संघर्ष होता रहता था.
- कोशल के पूर्व में एवं वज्जि के पश्चिम में मल्ल महाजनपद अवस्थित था. यहाँ की पावा शाखा में महावीर स्वामी एवं कुशीनारा शाखा में गौतम बुद्ध का निर्वाण स्थल था.
- गणराज्यीय प्रशासन में निर्वाचित राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था. गण के प्रमुख व्यक्ति 'राजा की उपाधि' धारण कर सकते थे.
- महाभारत एवं पुराणों के अनुसार मगध के सबसे प्राचीनतम् राजवंश का संस्थापक वसु का पुत्र बृहद्रथ था. वसु ने ही मगध की प्रारम्भिक राजधानी गिरिव्रज की स्थापना की थी. मगध का अन्तिम शासक रिपुंजय था.
- शिशुनागवंश के बाद नन्दवंश का उद्‌भव हुआ, जिसके संस्थापक महापद्मनन्द थे. पुराणों में इन्हें 'सर्वक्षत्रान्तक' एवं परशुराम का अवतार कहा जाता था.
- नन्दवंश का अन्तिम शासक धनानन्द अत्यन्त अत्याचारी एवं क्रूर था. चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य के सहयोग से धनानन्द की हत्या कर दी और नन्दवंश का पतन कर मौर्य वंश की नींव रखी थी.
- भारत पर पहला विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी (पारसी साम्राज्य) ने साइरस के नेतृत्व में किया. साइरस के इस सैनिक अभियान से पारसी साम्राज्य की पूर्वी सीमा पश्चिमी सीमा से मिल गई.
- ईरान के डेरियस या दारा प्रथम (522-486 ई. पू.) ने भारत पर आक्रमण किया. हमदान, नक्श-ए-रुस्तम अभिलेख में डेरियस या दारा प्रथम की सिन्धु-विजय का उल्लेख मिलता है.
- भारत पर इरानियों के आक्रमणों का प्रभाव डेरियस या दारा तृतीय (335-350 ई. पू.) तक रहा. इसके उपरान्त यूनानी शासक सिकन्दर महान् द्वारा दारा तृतीय पर आक्रमण कर भारत को ईरान के आक्रमण से मुक्त कर दिया था.
- ईरानियों के पश्चात् यूनानियों द्वारा भारत पर आक्रमण का सिलसिला प्रारम्भ हुआ. यूनानी आक्रमणकारियों का नेतृत्व मकदूनिया के शासक फिलिप के पुत्र सिकन्दर ने किया. उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति कमजोर होने से चतुर्थ शताब्दी ई. पू. सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर यूनानी साम्राज्य स्थापित किया था.
- यूनानी इतिहासकारों के अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के दौरान भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था.
- तक्षशिला सिन्धु एवं झेलम नदी के मध्य अवस्थित था. चतुर्थ शताब्दी में यह स्वतन्त्र राज्य बन चुका था. इससे पूर्व यह गांधार प्रदेश की राजधानी थी.
- व्यास नदी के तट पर सिकन्दर ने 12 वैदिका स्तम्भों का यूनानी देवताओं के नाम पर निर्माण कराया था.
- सिकन्दर ने जीते हुए राज्यों को अपने मित्रों में निम्नलिखित तरीके से बाँट दिए—
  1. झेलम और व्यास नदी का मध्य भाग—ज्येष्ठ पोरस को
  2. सिन्धु और झेलम के मध्य का भाग—आम्भी को
  3. कश्मीर और उर्सा क्षेत्र—अभिसार के राजा को
- सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण के दौरान काबुल में सिकन्दरिया या अलेक्जेण्डरिया, घोड़े की मृत्यु स्थल पर बूकेफल, पोरस और सिकन्दर के युद्ध स्थल पर निकाइयाँ नगर एवं अन्य कई नगरों की स्थापना की.
- नवम्बर, 326 ई. पू. सिकन्दर ने झेलम नदी मार्ग से पुनः वापसी यात्रा प्रारम्भ की. वापसी यात्रा में शिबियों, मालवों, मूषिकों, अम्बष्टों एवं अन्य भारतीय सैनिकों से सामना कर वहाँ भी जीत कायम कर ली थी.
- सिकन्दर की सेना की एक टुकड़ी नियार्कस के नेतृत्व में स्थलमार्ग से बोलन दर्रा से गुजरकर बेबीलोन तक पहुँची. बेबीलोन में सिकन्दर के अस्वस्थ हो जाने से 323 ई. पू. में उनका निधन हो गया.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पालि भाषा में रचित बौद्धग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में उल्लेख किये गये महाजनपदों की संख्या थी—
   (A) 15 (B) 13
   (C) 12 (D) 16
2. अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सभी जनपद अवस्थित थे—
   (A) दक्षिणी भारत (B) उत्तरी भारत
   (C) पश्चिमी भारत (D) पूर्वी भारत
3. महाजनपदों का उदय एवं विकास हुआ था—
   (A) चौथी शताब्दी ई.पू. में
   (B) सातवीं शताब्दी में
   (C) छठी शताब्दी ई.पू. में
   (D) इनमें से कोई नहीं
4. पांचाल महाजनपद का निर्माण हुआ था—
   (A) पाँच जनों या पाँच जातियों के मिलने से
   (B) चार जनों के मिलने से
   (C) तीन जनों के मिलने से
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
5. पालि भाषा में रचित बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में वर्णित गणतन्त्रात्मक महाजनपद थे—
   (A) वज्जि एवं मल्ल (B) अंग एवं मगध
   (C) काशी (D) कौशल
6. अंग महाजनपद की राजधानी थी—
   (A) चम्पानगरी (B) वाराणसी
   (C) पाटलिपुत्र (D) साकेत
7. अंग महाजनपद का अन्तिम शासक था—
   (A) अजातशत्रु (B) सिकन्दर
   (C) विम्बिसार (D) शिशुनाग
8. अंग महाजनपद का पड़ोसी महाजनपद था—
   (A) कौशल (B) मगध
   (C) वज्जि (D) पांचाल
9. अंग महाजनपद के शासक ब्रह्मदत्त की हत्या किस महाजनपद के शासक ने की ?
   (A) वज्जि (B) शूरसेन
   (C) मगध (D) चेदि
10. भौगोलिक स्थिति की दृष्टि से मगध महाजनपद अवस्थित था—
   (A) गंगा के दक्षिण भाग में
   (B) बिहार के उत्तरी-पूर्वी भाग में
   (C) वज्जि महाजनपद के पश्चिमी भाग में
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
11. वज्जि महाजनपद में गणतन्त्रों की संख्या थी—
   (A) सात (B) पाँच
   (C) चार (D) आठ
12. बुद्ध का महापरिनिर्वाण किस महाजनपद की राजधानी में हुआ—
   (A) मगध की राजधानी गिरिव्रज में
   (B) मल्ल की राजधानी कुशीनारा में
   (C) काशी की राजधानी वाराणसी में
   (D) उपर्युक्त से कोई नहीं
13. वत्स महाजनपद की राजधानी थी—
   (A) गिरिव्रज (B) कुशीनारा
   (C) कौशाम्बी (D) वाराणसी
14. नाटककार भास की नाट्य रचना 'स्वप्नवासवदत्ता' का मुख्य पात्र 'उद्‌यन' इस महाजनपद का शासक था—
   (A) मगध (B) वत्स
   (C) चेदि (D) मत्स्य
15. पालि ग्रन्थों के अनुसार चेदि महाजन की राजधानी थी—
   (A) शुक्तिमति (B) कुशीनारा
   (C) इन्द्रप्रस्थ (D) वाराणसी
16. महाभारत के अनुसार वत्स महाजनपद स्थापित किया गया था—
   (A) पौरव राजा निचक्षु द्वारा
   (B) चेदियों द्वारा
   (C) मगध के शासक द्वारा
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
17. चेदि महाजनपद के प्रतापी शासक थे—
   (A) सिकन्दर (B) शिशुपाल
   (C) उद्‌यन (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

18. दिव्यावदान एवं जातक के अनुसार पांचाल महाजनपद के दो विभाग थे—
(A) पूर्वी पांचाल एवं दक्षिणी पांचाल
(B) उत्तरी पांचाल एवं दक्षिणी पांचाल
(C) पूर्वी पांचाल एवं पश्चिमी पांचाल
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. पांचाल महाजनपद की उत्तरी पांचाल की राजधानी थी—
(A) अहिच्छत्र (B) विराट नगर
(C) कौशाम्बी (D) वाराणसी

20. मत्स्य महाजनपद का साहित्यिक स्रोत है—
(A) महाभारत (B) रामायण
(C) दिव्यावदान (D) जातक

21. अवन्ति महाजनपद के उत्तरी अवन्ति की राजधानी थी—
(A) उज्जैन (B) तक्षशिला
(C) मथुरा (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

22. अवन्ति पर मगध के इस सम्राट् ने आक्रमण कर विजय प्राप्त की—
(A) पुष्करसारिन (B) चन्द्रवर्मन
(C) इक्ष्वाकु (D) शिशुनाग

23. गांधार महाजनपद की राजधानी थी—
(A) वाराणसी
(B) कपिलवस्तु
(C) तक्षशिला
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

24. मगध जनपद के शासक कहलाते थे—
(A) भोज (B) स्वराट
(C) विराट (D) सम्राट्

25. कर एकत्र करने वाले एवं खजाने की देखभाल करने वाले अधिकारी कहे जाते थे—
(A) सेनापति (B) मन्त्री
(C) भागदुध (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

26. पालि साहित्य में वर्णित गणतन्त्रों की संख्या थी—
(A) आठ (B) दस
(C) पाँच (D) तीन

27. निम्नलिखित जनपदों को उनकी राजधानी से सुमेलित कीजिए—
(a) मगध (1) हाटक
(b) कम्बोज (2) इन्द्रप्रस्थ
(c) कुरु (3) गिरिव्रज
(d) अंग (4) चम्पा

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	1	2	4
(C)	2	4	3	1
(D)	3	2	4	1

28. निम्नलिखित में से कपिलवस्तु राजधानी थी—
(A) शाक्यों की (B) मगध की
(C) अंग की (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

29. शाक्यों की इस नगरी में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था—
(A) कपिलवस्तु (B) लुम्बिनी
(C) कोशल (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

30. कुशीनारा और पावा किस महाजनपद की दो शाखाएँ थीं ?
(A) कोशल की (B) मगध की
(C) मत्स्य की (D) अवन्ति की
(E) मल्ल

31. बुद्ध के प्रारम्भिक गुरु आलार कलाम किस गणराज्य के रहने वाले थे ?
(A) कालाम (B) मल्ल
(C) भग्ग (D) विदेह

32. मगध साम्राज्य का उदय हुआ—
(A) पाँचवीं शताब्दी ई. पू.
(B) सातवीं शताब्दी ई. पू.
(C) छठी शताब्दी ई. पू.
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

33. मौर्य साम्राज्य की स्थापना की—
(A) समुन्द्रगुप्त मौर्य (B) स्कन्द गुप्त
(C) चन्द्रगुप्त मौर्य (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

34. मगध के सबसे प्राचीन राजवंश का संस्थापक था—
(A) शिशुनाग (B) बिम्बिसार
(C) बृहद्रथ (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

35. मगध की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज की स्थापना की थी—
(A) वसु (B) रिपुंजय
(C) वृहद्रथ (D) शिशुनाग

36. ब्रहद्रथ वंश के किस शासक ने कृष्ण के निर्देशानुसार भीम से पराजित होकर मृत्यु का वरण किया ?
(A) वृहद्रथ (B) जरासंध
(C) वसु (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

37. नन्द वंश की स्थापना की थी–
(A) बृहद्रथ ने (B) जरासंध ने
(C) वसु ने (D) महापद्मनन्द ने

38. बिम्बिसार का सम्बन्ध किस वंश से था ?
(A) हर्यंक वंश (B) नन्दवंश
(C) बृहद्रथ वंश (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

39. निम्नलिखित शासकों के नाम से उनके पिता के नाम को सुमेलित कीजिए–
(a) उदयिन (1) बिम्बिसार
(b) अजातशत्रु (2) वसु
(c) बृहद्रथ (3) अश्वसेन
(d) पार्श्वनाथ (4) अजातशत्रु

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	1	4
(B)	4	2	1	3
(C)	3	4	2	1
(D)	4	1	2	3

40. हर्यक वंश के दौरान बनारस में मगध के राजा का गवर्नर था–
(A) अजातशत्रु (B) बिम्बिसार
(C) शिशुनाग (D) उग्रसेन

41. शिशुनाग वंश के प्रथम शासक शिशुनाग के बाद मगध का शासक था–
(A) उग्रसेन (B) घनानन्द
(C) कालाशोक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

42. शिशुनाग वंश का अन्तिम शासक था–
(A) नन्दिवर्धन (B) उग्रसेन
(C) भद्रसेन (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

43. नन्दवंश का संस्थापक था–
(A) पंडुक (B) संजय
(C) महापद्मनन्द (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

44. नन्दवंश के दौरान मगध की राजधानी थी–
(A) वाराणसी (B) पाटलिपुत्र
(C) कलिंग (D) गिरिव्रज

45. भारत पर पहला विदेशी आक्रमण किस ईरानी शासक ने किया था ?
(A) डेरियस
(B) डेरियस या दारा तृतीय
(C) साइरस
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

46. ईरान पर आक्रमण कर भारत को ईरानी आक्रमण से मुक्त कराने वाला यूनानी शासक था–
(A) पोरस (B) अशोक
(C) सिकन्दर (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

47. इस यूनानी शासक ने व्यास नदी के तट पर 12 वैदिका स्तम्भों का निर्माण कराया था–
(A) पोरस (B) आम्भी
(C) अभिसार (D) सिकन्दर

48. निम्नलिखित महाजनपदों को उनके विशिष्ट विवरण से सुमेलित कीजिए–
(a) अंग महाजनपद 1. महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का केन्द्र
(b) पांचाल महाजनपद 2. श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र
(c) मगध महाजनपद 3. द्रोपदी की जन्मभूमि
(d) कुरु महाजनपद 4. तीन सौ संघों वाला महाजनपद

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	3	1
(B)	4	2	3	1
(C)	2	3	1	4
(D)	1	2	3	4

49. गांधार प्रदेश की राजधानी थी–
(A) नीसा (B) गान्दारिस
(C) तक्षशिला (D) अभिसार

50. यूनानी आक्रमणकारियों का नेतृत्वकर्त्ता था–
(A) सिकन्दर (B) पोरस
(C) चन्द्रगुप्त मौर्य (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

51. यहाँ पर सिकन्दर की मृत्यु हुई थी–
(A) बेबीलोन (B) कश्मीर
(C) फेगल (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (A)
6. (A)	7. (A)	8. (B)	9. (C)	10. (A)
11. (D)	12. (B)	13. (C)	14. (B)	15. (A)
16. (B)	17. (B)	18. (B)	19. (A)	20. (A)
21. (A)	22. (D)	23. (C)	24. (D)	25. (C)
26. (B)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (E)
31. (A)	32. (C)	33. (C)	34. (C)	35. (A)
36. (B)	37. (D)	38. (A)	39. (D)	40. (C)
41. (C)	42. (A)	43. (C)	44. (B)	45. (C)
46. (C)	47. (D)	48. (C)	49. (C)	50. (A)
51. (A)				

विगत वर्षों में पूछे गये प्रश्न

1. सूची-I (प्राचीन राज्य) को सूची-II (राजधानी) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (प्राचीन राज्य)	सूची-II (राजधानी)
(a) अंग	1. चम्पा
(b) वत्स	2. कौशाम्बी
(c) मत्स्य	3. विराटनगर
(d) शूरसेन	4. मथुरा

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	1	2
(C)	1	4	3	2
(D)	3	2	1	4

2. **कथन (A)** : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आरम्भिक वर्षों में यह निर्णय लिया गया था कि कांग्रेस का अधिवेशन देश के विभिन्न भागों में वारी-वारी से आयोजित किया जाएगा.

कथन (R) : कांग्रेस का एकदम प्रारम्भिक नेतृत्व देश के विभिन्न भागों से सम्बन्धित सामाजिक सुधार का मुद्दा उठाना चाहता था.

3. निम्नलिखित में से किसने सर्वप्रथम पोटिन मुद्राओं को जारी किया ?

(A) मौर्य शासकों ने (B) मगध शासकों ने
(C) सातवाहन शासकों ने (D) चेदि शासकों ने

4. सूची–I (मौर्य प्रशासन में अधिकारी) को सूची–II (कर्तव्य) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (मौर्य प्रशासन में अधिकारी)

(a) समाहर्ता (b) सन्निधाता
(c) कर्मान्तिक (d) व्यावहारिक

सूची-II (कर्तव्य)

1. उत्तराधिकारी
2. महासंग्राहक (कलक्टर जनरल)
3. मुख्य न्यायाधीश
4. खानों का प्रमुख

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	2	3	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	1	4	3

निर्देश–(प्रश्न 5–7) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दिये गये कूट की सहायता से चुनिए–

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है.
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.
(C) A सही है, परन्तु R गलत है.
(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

5. **कथन (A)** : बौद्ध भिक्षुणियाँ भिक्षुओं के पर्यवेक्षण में रहती थीं.

कथन (R) : भिक्षुणियों के लिए एक विशेष संहिता थी, जिसे भिक्कुनी पति मोक्ख कहते थे.

6. **कथन (A)** : जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों की पूजा करते हैं.

कथन (R) : वे परमसत्ता के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं.

7. **कथन (A)** : भागवत धर्म गुप्तकाल में लोकप्रिय हुआ.

कथन (R) : गुप्तवंश के शासक कृष्ण के बहुत भक्त थे.

8. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चुनाव कीजिए–

सूची–I	सूची–II
(a) श्रमण	(1) दया और करुणा के लिए विख्यात
(b) उपासक	(2) आकाशावृत्त
(c) दिगम्बर	(3) अवैदिक संन्यासी
(d) बोधिसत्व	(4) गृहस्थ आराधक

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	2	1

9. दो जैन तीर्थंकरों के सिवाय परम्परा (Tradition) में उल्लिखित शेष सभी तीर्थंकर पौराणिक हैं. ये दो अपवाद हैं–

(A) शान्तिनाथ और वर्धमान
(B) पार्श्वनाथ और वर्धमान
(C) शान्तिनाथ और आदिनाथ
(D) पार्श्वनाथ और आदिनाथ

10. सूची I तथा सूची II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) आजीवक	(1) बन्धनों से मुक्ति
(b) अर्हन्त	(2) पार-पथ-निर्माता
(c) निर्ग्रन्थ	(3) धार्मिक लोगों का एक सम्प्रदाय
(d) तीर्थंकर	(4) योग्य अथवा विजेता

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	1	4
(B)	4	3	2	1
(C)	3	4	1	2
(D)	2	1	3	4

11. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) आचारांग सूत्त	(1) वैदिक
(b) अंगुत्तरनिकाय	(2) भागवत
(c) पांचरात्र संहिता	(3) जैन
(d) वाजसनेयी संहिता	(4) बौद्ध

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	2	1
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	2	1

12. जिस राजा ने कलिंग में नहर खुदवाई, वह था–
(A) हर्यक राजवंश का (B) शैशुनाग राजवंश का
(C) नन्द राजवंश का (D) मौर्य राजवंश का

13. 'दूसरा नगरीकरण' इंगित करता है–
(A) हड़प्पा नगरों का पुनरुज्जीवन
(B) गंगा घाटी में नगरीय संस्कृति का उत्थान
(C) दक्कन में नर्मदा घाटी में नगरों का जन्म
(D) केरल में कोल्लम नामक नगर का पुनर्निर्माण

14. महाजनपदों ने उदय के कारण के रूप में सम्बन्धित नहीं है–
(A) विदेशियों द्वारा विजित होने का भय
(B) कृषि प्रसार
(C) व्यापार तथा नगरीकरण का विकास
(D) लोहे का विस्तृत प्रयोग

15. नीचे कुछ प्राचीन भारतीय राज्यों की सूची दी गई है–
1. कोशल 2. वज्जि
3. मगध 4. शाक्य
इनमें से कौनसे राज्य प्रशासन की राजतन्त्रीय पद्धति का अनुसरण नहीं करते थे?
(A) 1 व 2 (B) 2 व 4
(C) 1 व 4 (D) 2 व 3

16. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
मगध के एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उदय के प्रमुख कारण थे, इसकी / इसका–
1. पाँच पहाड़ियों से घिरी हुई सामरिक महत्व की स्थिति.
2. एक समृद्ध उर्वर क्षेत्र में स्थिति तथा अच्छा संसार तन्त्र.
3. शासकों द्वारा अपनाई गई आक्रामक साम्राज्यिक नीति.
4. महात्मा बुद्ध की गतिविधियों के साथ सम्बन्ध.
इन कथनों में कौनसे सही हैं?
(A) 1 व 2 (B) 1, 2 व 4
(C) 1, 2 व 3 (D) 3 व 4

17. सूची-I (जनपद) को सूची-II (राजधानी) से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची–I (जनपद)	सूची–II (राजधानी)
(a) कुरु	1. कौशाम्बी
(b) कौशल	2. राजगृह
(c) वत्स	3. अयोध्या
(d) मगध	4. इन्द्रप्रस्थ
	5. पाटलिपुत्र

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	3	5	2
(B)	4	2	1	3
(C)	1	2	5	3
(D)	4	3	1	2

उत्तरमाला

1. (A)	2. (C)	3. (C)	4. (D)	5. (D)
6. (B)	7. (C)	8. (C)	9. (B)	10. (C)
11. (B)	12. (C)	13. (B)	14. (A)	15. (B)
16. (C)	17. (D)			

6

जैन एवं बौद्धधर्म, जैनधर्म एवं बौद्धधर्म के प्रसार के कारक, शैव सम्प्रदाय, भगवद् सम्प्रदाय, बौद्धधर्म–हीनयान एवं महायान, जैनधर्म एवं संस्कृति कला

(Jainism & Buddhism, Factors for the Spread of Jainism & Buddhism, Saivism, Bhagvatism; Buddhism : Hinayana & Mahayana, Jainism & Culture Art)

- गंगा घाटी में छठी शताब्दी ई. पू. अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ, जिनकी ज्ञात संख्या 62 है. इन समस्त धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र मगध था.
- जिस दौरान यूनान में पाइथोगोरस, ईरान में जरथ्रुष्ट एवं चीन में लाओत्से तथा कन्फ्यूशियस ने धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ किया. उसी समय भारत में महावीर एवं बुद्ध ने धार्मिक सुधार आन्दोलन की शुरूआत की.

धर्म-सुधार आन्दोलन के कारण

- उत्तर-वैदिककाल में सामाजिक जीवन की विकृति एवं वर्ण व्यवस्था की जटिलता, धार्मिक व्यवस्था के प्रति असन्तोष की भावना तथा नयी विचारधाराओं के फलस्वरूप धर्म सुधार आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ.
- उत्तर वैदिक काल के उत्तरार्द्ध में 'उपनिषदों' ने वर्ण, धर्म, यज्ञ, वलि, ब्राह्मण, कर्मकाण्ड को व्यर्थ सिद्ध कर अध्यात्म को सर्वोपरि माना. छठी शताब्दी ई. पू. के धर्म सुधार आन्दोलनों की पृष्ठभूमि के निर्माता 'उपनिषद्' थे.
- आरण्यकों के मतानुसार 'तप' अध्यात्म का सर्वोपरि तत्त्व था. नई विचारधाराओं के फलस्वरूप निम्नलिखित कर्मकाण्ड विरोधी 6 सम्प्रदायों का उदय हुआ—
  (अ) अक्रियावाद या सांख्यवाद
  (ब) आजीवक सम्प्रदाय (अक्रियावाद एवं नियतिवाद)
  (स) भौतिकवाद (लोकायत या चार्वाक)
  (द) अनिश्चयवाद
  (य) भौतिकवाद
  (र) जैन दर्शन.
- अक्रियावाद एवं नियतिवाद के समन्वित स्वरूप का प्रस्फुटन 'आजीवक सम्प्रदाय' के रूप में 'मक्खलि गोशाल' ने किया.
- ब्राह्मण 'पूरण काश्यप' के अनुसार 'कर्मों का कोई फल नहीं मिलता' और उसकी यह विचारधारा 'अक्रियावाद' में परिणित हुई जो 'सांख्यवाद' के रूप में उदित हुआ.
- 'यदृच्छावाद या भौतिकवाद' जिसे कालान्तर में चार्वाक दर्शन के नाम से पहचाना गया. इस विचारधारा के प्रतिपादक 'अजीत केशकम्बली' (अजीत केशकम्बलिन) था.
- 'संजय वेलट्ठिपुत्त' ने अनिश्चयवादी दर्शन का प्रतिपादन किया.
- पुनर्जन्म एवं कर्म के प्रति अविश्वास रखने वाला 'पकुध कच्चायन' भौतिकवाद का समर्थक था.
- निगण्ठ नाथपुत्र जो महावीर स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए. जिन्होंने जैन धर्म का प्रतिपादन किया.
- नई अर्थव्यवस्था का उदय भी धार्मिक सुधार आन्दोलन के मूल में एक महत्वपूर्ण तथ्य था, जिसमें 'पशुओं की सुरक्षा' धर्म एवं अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ स्थिति का पूरक था.
- विभिन्न सम्प्रदायों एवं धार्मिक आन्दोलनों के विकास में सर्वाधिक योगदान वैश्यों का था, जिसके मूल में उनकी प्रारम्भिक स्थिति का दयनीय होना था.

धर्म सुधार आन्दोलन का स्वरूप

- भारतीय धार्मिक आन्दोलन का स्वरूप धार्मिक पृष्ठभूमि के साथ सुधारवादी था.

- तत्कालीन भारत में वर्ण, जाति, कर्मकाण्ड एवं ब्राह्मणों के प्रभुत्व से छुटकारा पाने के लिए दो नास्तिक सम्प्रदायों जैन एवं बौद्ध का प्रादुर्भाव हुआ.
- अतिवादी धार्मिक प्रवृत्तियों, हिंसा, कर्मकाण्ड एवं अव्यवस्थाजन्य मतों को समाप्त कर महावीर एवं बौद्ध धर्म के प्रवर्तक बुद्ध ने इन दोनों धर्मों को सरल एवं सर्वग्राह्य बनाया.
- नास्तिक सम्प्रदायों के प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए वैदिक धर्म में धर्म के सुधरे हुए स्वरूप के रूप में निम्न दो सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ—
  1. भागवत सम्प्रदाय (वैष्णव सम्प्रदाय)
  2. शिव भागवत सम्प्रदाय (शैव धर्म)
- वैष्णव सम्प्रदाय एवं शैव धर्म में पूर्व प्रचलित ब्राह्मण या वैदिक धर्म की अपेक्षा महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये थे.

बौद्ध धर्म
(Buddhism)

- गंगाघाटी में छठी शताब्दी ई. पू. में जिन नये धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ. उनमें सर्वाधिक सशक्त एवं चुनौतीपूर्ण धर्म बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म था. वैदिक धर्म के आडम्बरमयी स्वरूप को ध्वस्त करने में बौद्ध धर्म निश्चित रूप से सफल रहा.

गौतम बुद्ध : जीवन परिचय

- गंगाघाटी में छठी शताब्दी ई. पू. में जिन नये धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ. उनमें सर्वाधिक सशक्त एवं चुनौतीपूर्ण धर्म बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म था. वैदिक धर्म के आडम्बरमयी स्वरूप को ध्वस्त करने में बौद्ध धर्म निश्चित रूप से सफल रहा.



1.	प्रारम्भिक नाम	—	सिद्धार्थ
2.	आध्यात्मिक नाम	—	गौतम बुद्ध
3.	जन्म	—	563 ई. पू.
4.	जन्म स्थान	—	कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी (साल वृक्ष का उपवन) ग्राम में
5.	गौत्र	—	गौतम
6.	पिता	—	शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्य गण राजा)
7.	माता	—	माता कोशल राज्य की राज-कुमारी महामाया
8.	परिवार	—	उच्च कुलीन क्षत्रिय राज परिवार
9.	पालक-पोषक	—	मौसी महाप्रजापति गौतमी (जन्म के पहले सप्ताह में माँ की मृत्यु के कारण)
10.	प्रारम्भिक जीवन	—	सुख सुविधापूर्ण
11.	पत्नी	—	यशोधरा (गोपा) (16 वर्ष की उम्र में शादी)
12.	पुत्र	—	राहुल
13.	चचेरा भाई	—	देवदत्त
14.	बुद्ध का शिक्षक	—	1. अलारा कलाम (सांख्य दर्शन के शिक्षक) 2. रुद्रक रामपुत्र (राजगृह के)
15.	बुद्ध का घोड़ा	—	कंठक
16.	बुद्ध का सारथी	—	चन्ना
17.	वैराग्य उत्पत्ति	—	नगर भ्रमण के दौरान वृद्ध, रोगी मृत और संन्यासी को देखकर
18.	घृणा का प्रादुर्भाव	—	निर्वस्त्र गणिकाओं को देखकर
19.	गृहत्याग	—	29 वर्ष की उम्र में पुत्र, पत्नी को निद्रावस्था में छोड़कर गृह का परित्याग कर दिया जिसे 'महाभिनिष्क्रमण कहा गया
20.	तपस्या के साथी	—	1. आंज, 2. अस्सजि, 3. वप्प, 4. महानाम, 5. भद्दिय
21.	तपस्या सहचर (विशेष)	—	ब्राह्मण कौण्डिन्य (गौतम गया के पास उरुवेला में)
22.	तप भंग	—	तप मार्ग को निरर्थक जानकर सुजाता नामक स्त्री की खीर खाकर

23.	तपस्या का दूसरा चरण	गौतम गया में वटवृक्ष के नीचे समाधिस्थ
24.	ज्ञान प्राप्ति एवं बुद्ध नामकरण	समाधिस्थ वटवृक्ष के नीचे 8 दिनों के बाद वैशाखी पूर्णिमा की रात्रि को सच्चे ज्ञान की प्राप्ति जो 'सम्बोधि' के नाम से प्रसिद्ध हुई एवं सिद्धार्थ गौतम 'बुद्ध' कहलाए.
25.	प्रथम उपदेश	ऋषिपत्तन (सारनाथ) में अपने पाँच साथियों को जिन्होंने बुद्ध को पाखण्डी कहा था. प्रथम उपदेश **धर्मचक्र प्रवर्तन** (Turning of wheel) कहलाया.
26.	संघ के सदस्य	बुद्ध के पाँच साथी कौंडिन्य इत्यादि एवं बनारस के श्रेष्ठि 'यश'
27.	द्वितीय उपदेश	मगध की राजधानी राजगृह में जहाँ पर तत्कालीन मगध राजा विम्बिसार ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था.
28.	अन्य उपदेश स्थल एवं बुद्ध के अनुयायी	वैशाली, कौशल में 40 वर्षों तक घूम-घूम कर उपदेश दिए. अजातशत्रु, विम्बिसार, कोशल नरेश प्रसेनजित, अनाथपिण्डक एवं नगरवधू आम्रपाली प्रमुख अनुयायी थे. बुद्ध की मौसी, पुत्र, पत्नी एवं उनके पिता भी बौद्ध के अनुयायी बने.
29.	मृत्यु	80 वर्ष की उम्र में कुशीनगर (आधुनिक उत्तर प्रदेश देवरिया जिले के कुसिया ग्राम) में बुद्ध की मृत्यु 'महापरिनिर्वाण' कही जाती है.
30.	मृत्यु का कारण	चन्दु नामक सुनार के घर खाने में सुअर का माँस खाने से उदर विकार के कारण (पालि साहित्य में उल्लिखित 'सूकर मद्दव' के आधार पर प्रारम्भिक भाष्यकार मानते हैं.).[1]
31.	बुद्ध के जीवन की पाँच घटनाओं के प्रतीक	1. जन्म—कमल और वृषभ 2. महाभिनिष्क्रमण—अश्व 3. धर्मचक्र प्रवर्तन—चक्र 4. निर्वाण (सम्बोधि)—बोधिवृक्ष 5. महापरिनिर्वाण—स्तूप
32.	बुद्ध एवं बौद्ध धर्म पर आधारित ग्रन्थ, साहित्य	पालि त्रिपिटक 1. सुत्तापिटक 2. विनयपिटक 3. अभिधम्मपिटक

- महात्मा बुद्ध के सबसे पहले अनुयायी दो बंजारे निम्नलिखित थे—

  1. तापुस 2. भल्लूक

- बुद्ध की उत्कृष्टता को चारों तरफ स्वीकारा गया. उनके प्रमुख शिष्य निम्नलिखित थे—

1. सारिपुत्र	2. आनन्द
3. उपालि	4. सुनीति
5. मौदगस्थान	6. अनाथपिण्डक
7. अनुरुद्ध	8. जीवक
9. महाकश्यप	10. उपालि
11. विम्बिसार	12. प्रसेनजित

- 'वेलुवन विहार' का निर्माण बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए विम्बिसार ने कराया था.
- 'जेतवन' अनाथ पिण्डक द्वारा बौद्ध संघ को प्रदत्त किया गया था.
- सबसे पहले बौद्ध संघ में प्रवेश करने वाली महिला बुद्ध की मौसी गौतमी थी.
- आनन्द नामक शिष्य के आग्रह से बुद्ध ने संघ में स्त्रियों का प्रवेश प्रारम्भ किया.
- 'पूर्वाराम विहार' अंग जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री विशाखा द्वारा संघ के लिए बनाया गया, जिसमें बौद्ध स्वयं विश्राम करते थे. विशाखा बौद्ध संघ की संरक्षिका भी थी.
- बौद्ध संघ में निम्नलिखित स्त्रियों को सदस्यता प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है—

  1. यशोधरा (बुद्ध की पत्नी)
  2. खेमा (विम्बिसार की पत्नी)
  3. नन्दा (गौतमी की पुत्री)
  4. विशाखा (अंग जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री
  5. आम्रपाली (वैशाली की गणिका)

1 कुछ विद्वान् इसे कुन्द या चुन्द या चन्दु लौहार मानते हैं. यहाँ मृत्यु का कारण पालि भाषा के 'सुकर-मद्दव' को बौद्ध धर्म अनुयायी कन्दमूल फल मानते हैं.

- 'श्रावस्ती' कोशल की राजधानी में बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश दिये थे, यहाँ पर उन्होंने 21 विश्राम स्थलों पर प्रवास किया था.
- मनुष्यों की अंगुलियों को काटकर माला पहनने वाले कुख्यात डाकू 'अंगुलिमाल' को श्रावस्ती में ही बौद्ध ने बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी.
- महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् उनके अवशेषों के स्थान पर 8 स्तूपों का निर्माण कराया. जिनमें 'महापरिनिर्वाणसूत्र' के अनुसार निम्नलिखित उत्तरदायी थे—
  1. पावा तथा कुशीनारा के मल्ल
  2. कपिलवस्तु के शाक्य
  3. वैशाली के लिच्छवि
  4. अलकप्प के बुलि
  5. रामग्राम के कोलिय
  6. पिप्पलीवन के मोरिय
  7. वेष्ठ द्वीप के ब्राह्मण
  8. मगध सम्राट् अजातशत्रु

गौतम बुद्ध की शिक्षाएं

(i) बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य

1.	दुःख	—	संसार दुःखमय है.
2.	दुःख समुदाय	—	दुःख का कारण तृष्णा है.
3.	दुःख निरोध	—	तृष्णाओं पर विजय प्राप्त करना दुःख समाप्ति का कारण है.
4.	दुःख निरोध-गामिनी प्रतिप्रदा	—	दुःख मुक्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण एकमात्र उपाय है.

(ii) बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्टांगिक मार्ग

- गौतम बुद्ध ने निर्वाण की प्राप्ति एवं दुःखों से मुक्ति पाने के लिए अत्यन्त सरल एवं सुग्राह्य मार्ग को प्रतिपादित किया, जिसे अष्टांगिक मार्ग या मध्यम मार्ग कहते हैं.

  अष्टांगिक मार्ग के तत्त्व निम्नलिखित हैं—
  1. **सम्यक् दृष्टि**—सत्य एवं असत्य को पहचानने की शक्ति
  2. **सम्यक् संकल्प**—हिंसा एवं तृष्णा रहित संकल्प
  3. **सम्यक् वाणी**—मृदु, प्रिय एवं सत्य वचन
  4. **सम्यक् कर्म**—दान, दया, अहिंसा, सदाचार इत्यादि अच्छे कर्म
  5. **सम्यक् आजीव**—उचित एवं सदाचारपूर्ण जीवन-यापन का तरीका
  6. **सम्यक् व्यायाम**—विवेकयुक्त प्रयत्न
  7. **सम्यक् स्मृति**—करणीय व अकरणीय पर ध्यान देना
  8. **सम्यक् समाधि**—चित्त की एकाग्रता
- बुद्ध के अनुसार मध्यम मार्ग का अनुसरण करना चाहिए जिसमें अत्यधिक विलासिता या अत्यधिक तप दोनों ही नहीं होने चाहिए.

(iii) बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दस शील

1. अहिंसा
2. सत्य
3. अस्तेय
4. अपरिग्रह
5. व्यभिचार से बचना
6. नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना
7. असमय भोजन का त्याग
8. सुखप्रद विस्तर का त्याग
9. नाच-गान से बचना
10. ब्रह्मचर्य का पालन करना

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित चार स्मृत प्रधान

1.	काया में कायानुपश्यना	—	संस्कार एवं चेष्टा के प्रति सम्यक् दृष्टि
2.	वेदना में वेदानानुपश्यना	—	दुःख-सुःख का यथार्थ अनुभव करना
3.	चित्त में चित्तामुपश्यना	—	राग-द्वेप के प्रति सजग रहना
4.	धर्म में धर्मानुपश्यना	—	मनसा, वाचा, कर्मणा सजग रहना एवं चार आर्य सत्यों से परिचित होना

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित चार ऋद्धिपाद

- महात्मा बुद्ध निम्नलिखित ऋद्धिपाद आत्मोत्कर्ष के लिए प्रतिपादित किये हैं—

  1. छन्द 2. वीर्य
  3. चित्त 4. विमर्श

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित सात बोध्यंग

- महात्मा बुद्ध ने ज्ञान को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित सात तत्वों को बोध्यंग कहा है—

  1. स्मृति 2. धर्मविचय
  3. वीर्य 4. प्रीति
  5. प्रश्रब्धि 6. समाधि
  7. उपेक्षा

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- निम्नलिखित बौद्ध धर्म के त्रिरत्न कहे जाते हैं—

1. बुद्ध	2. धर्म
3. संघ	

बौद्ध दर्शन का मूलमंत्र—प्रतीत्यसमुत्पाद

- प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध धर्म का मूल मंत्र था. बुद्ध पुनर्जन्म एवं निर्वाण पर गहरा विश्वास रखते थे.

  बुद्ध के अनुसार जन्म के कारण दुःख समुदाय उत्पन्न होते हैं एवं जन्म का कारण अज्ञान रूपी चक्र है, जिसे बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद कहा है. क्षणभंगवाद, नैरात्म्यवाद भी प्रतीत्यसमुत्पाद के अंग हैं.

  प्रतीत्यसमुत्पाद के मौलिक तत्व निम्न हैं—

1. अविद्या	7. तृष्णा
2. संस्कार	8. उपादान
3. विज्ञान	9. भव
4. नामरूप	10. जाति
5. षडायतन	11. जरा
6. स्पर्श वेदना	12. मरण

बौद्ध संघ का संगठन

- धर्मचक्र प्रवर्तन के बाद बुद्ध ने सारनाथ में एक संघ की स्थापना की, जिसके सबसे पहले सदस्य बुद्ध के पाँच ब्राह्मण साथी एवं बनारस का एक धनी व्यापारी था.
- संघ में शामिल होने वाले 'भिक्षुक' कहलाते थे. संघ का संगठन 'गणतन्त्रात्मक पद्धति' पर आधारित था. भिक्षुक घर-परिवार को त्यागकर संन्यासी की तरह जीवनयापन करते थे.
- बौद्ध के संघ में 15 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति, चोर, हत्यारे, ऋणी व्यक्ति, राज्य के दास एवं सेवक तथा रोगी व्यक्ति का प्रवेश वर्जित था. गृहस्थ के लिए भिक्षुओं से अलग नियम बने हुए थे. स्त्रियों को संघ में प्रवेश दिया जाता था.

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित पंचेन्द्रियाँ

1. श्रद्धा	2. वीर्य
3. समाधि	4. स्मृति
5. प्रज्ञा	

'मज्झिम निकाय' के अनुसार श्रद्धा एवं सहृदय समन्वित भावनात्मक ज्ञान, प्रज्ञा, चित्त की एकाग्रता, समाधि एवं सदाचारशीलता है.

बौद्ध संघ नियमावली

- बौद्ध संघ लिच्छवियों की शासन प्रणाली के अनुसार संगठित था. संघ में प्रवेश करने को 'प्रवज्या' कहा जाता था. अल्पवयस्क (15 वर्ष से कम उम्र), कर्जदार, दास, अपराधी सैनिक, रोगी संघ में प्रवेश नहीं ले सकते थे. प्रवज्या लेने वाला भिक्षु श्रामणेतर कहलाता था, जिसे आचार्य के आश्रम में रहना अनिवार्य होता था. श्रामणेतर को भिक्षु बनने से पाँच वर्ष के पश्चात् 'उपसम्पदा' की दीक्षा प्रदान की जाती थी. श्रामणेतर दस शीलों की शिक्षा लेते थे, जिन्हें 'शिक्षापद' कहा जाता था. श्रामणेतर को भिक्षुपद स्वीकार करने के लिए दस विशिष्ट भिक्षुक संघ की अनुमति लेनी होती थी.
- श्रामणेतरों के लिए निम्नलिखित अनिवार्य थे—
  1. भिक्षा माँगकर भोजन करना.
  2. वृक्ष के नीचे प्रवास करना.
  3. गोमूत्र का सेवन करना.
  4. फटे हुए एवं पड़े हुए चिथड़ों से वस्त्र निर्माण कर पहनना.

बौद्ध धर्म की सफलता के कारण

- बौद्ध धर्म का विकास तीव्र गति से हुआ. इसके उद्‌भव से लेकर 12वीं शताब्दी तक यह धर्म अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैल गया. तिब्बत, दक्षिण-पूर्व चीन मध्य एशिया में इसका व्यापक प्रभाव देखा गया. बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् भी यह उल्लेखनीय ढंग से विकसित होता रहा और कनिष्क और अशोक जैसे महान् शासकों ने बौद्ध धर्म के विकास में उत्कृष्ट भूमिका का निर्वहन किया.

  बौद्ध धर्म की सफलता के संभावित कारण निम्नलिखित थे—
  1. आडम्बरपूर्ण पुरोहितजन्य वैदिक धर्म से मोहभंग
  2. गौतम बुद्ध का तार्किक एवं सुहृदयी व्यक्तित्व
  3. बौद्ध धर्म की व्यावहारिक सरलता
  4. बौद्ध धर्म के प्रचार की रोचक भाषा शैली
  5. सभी धर्म-जाति के लिए समानता का सिद्धान्त
  6. बौद्ध संघ के भिक्षुकों का अथक परिश्रम
  7. बौद्ध का जीवन परिवृत्त राजकुल से सम्बन्धित होने के कारण राजकीय संरक्षण
  8. आर्थिक व्यवस्था का समर्थन

बौद्ध धर्म का विकास

- गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् बौद्ध धर्म का विकास द्रुतगति से चलता रहा. विभिन्न परिषदों, संगीतियों के आयोजन, सम्मेलन से बौद्ध धर्म के विकास की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई.

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- निम्नलिखित बौद्ध धर्म के त्रिरत्न कहे जाते हैं—

1. बुद्ध
2. धर्म
3. संघ

बौद्ध दर्शन का मूलमंत्र—प्रतीत्यसमुत्पाद

- प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध धर्म का मूल मंत्र था. बुद्ध पुनर्जन्म एवं निर्वाण पर गहरा विश्वास रखते थे.

  बुद्ध के अनुसार जन्म के कारण दुःख समुदाय उत्पन्न होते हैं एवं जन्म का कारण अज्ञान रूपी चक्र है, जिसे बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद कहा है. क्षणभंगवाद, नैरात्म्यवाद भी प्रतीत्यसमुत्पाद के अंग हैं.

  प्रतीत्यसमुत्पाद के मौलिक तत्व निम्न हैं—

1. अविद्या	7. तृष्णा
2. संस्कार	8. उपादान
3. विज्ञान	9. भव
4. नामरूप	10. जाति
5. षडायतन	11. जरा
6. स्पर्श वेदना	12. मरण

बौद्ध संघ का संगठन

- धर्मचक्र प्रवर्तन के बाद बुद्ध ने सारनाथ में एक संघ की स्थापना की, जिसके सबसे पहले सदस्य बुद्ध के पाँच ब्राह्मण साथी एवं बनारस का एक धनी व्यापारी था.
- संघ में शामिल होने वाले 'भिक्षुक' कहलाते थे. संघ का संगठन 'गणतन्त्रात्मक पद्धति' पर आधारित था. भिक्षुक घर-परिवार को त्यागकर संन्यासी की तरह जीवनयापन करते थे.
- बौद्ध के संघ में 15 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति, चोर, हत्यारे, ऋणी व्यक्ति, राज्य के दास एवं सेवक तथा रोगी व्यक्ति का प्रवेश वर्जित था. गृहस्थ के लिए भिक्षुओं से अलग नियम बने हुए थे. स्त्रियों को संघ में प्रवेश दिया जाता था.

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित पंचेन्द्रियाँ

1. श्रद्धा
2. वीर्य
3. समाधि
4. स्मृति
5. प्रज्ञा

'मज्झिम निकाय' के अनुसार श्रद्धा एवं सहृदय समन्वित भावनात्मक ज्ञान, प्रज्ञा, चित्त की एकाग्रता, समाधि एवं सदाचारशीलता है.

बौद्ध संघ नियमावली

- बौद्ध संघ लिच्छवियों की शासन प्रणाली के अनुसार संगठित था. संघ में प्रवेश करने को 'प्रवज्या' कहा जाता था. अल्पवयस्क (15 वर्ष से कम उम्र), कर्जदार, दास, अपराधी सैनिक, रोगी संघ में प्रवेश नहीं ले सकते थे. प्रवज्या लेने वाला भिक्षु श्रामणेतर कहलाता था, जिसे आचार्य के आश्रम में रहना अनिवार्य होता था. श्रामणेतर को भिक्षु बनने से पाँच वर्ष के पश्चात् 'उपसम्पदा' की दीक्षा प्रदान की जाती थी. श्रामणेतर दस शीलों की शिक्षा लेते थे, जिन्हें 'शिक्षापद' कहा जाता था. श्रामणेतर को भिक्षुपद स्वीकार करने के लिए दस विशिष्ट भिक्षुक संघ की अनुमति लेनी होती थी.
- श्रामणेतरों के लिए निम्नलिखित अनिवार्य थे—

1. भिक्षा माँगकर भोजन करना.
2. वृक्ष के नीचे प्रवास करना.
3. गोमूत्र का सेवन करना.
4. फटे हुए एवं पड़े हुए चिथड़ों से वस्त्र निर्माण कर पहनना.

बौद्ध धर्म की सफलता के कारण

- बौद्ध धर्म का विकास तीव्र गति से हुआ. इसके उद्भव से लेकर 12वीं शताब्दी तक यह धर्म अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैल गया. तिब्बत, दक्षिण-पूर्व चीन मध्य एशिया में इसका व्यापक प्रभाव देखा गया. बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् भी यह उल्लेखनीय ढंग से विकसित होता रहा और कनिष्क और अशोक जैसे महान् शासकों ने बौद्ध धर्म के विकास में उत्कृष्ट भूमिका का निर्वहन किया.

  बौद्ध धर्म की सफलता के संभावित कारण निम्नलिखित थे—

1. आडम्बरपूर्ण पुरोहितजन्य वैदिक धर्म से मोहभंग
2. गौतम बुद्ध का तार्किक एवं सुहृदयी व्यक्तित्व
3. बौद्ध धर्म की व्यावहारिक सरलता
4. बौद्ध धर्म के प्रचार की रोचक भाषा शैली
5. सभी धर्म-जाति के लिए समानता का सिद्धान्त
6. बौद्ध संघ के भिक्षुकों का अथक परिश्रम
7. बौद्ध का जीवन परिवृत्त राजकुल से सम्बन्धित होने के कारण राजकीय संरक्षण
8. आर्थिक व्यवस्था का समर्थन

बौद्ध धर्म का विकास

- गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् बौद्ध धर्म का विकास द्रुतगति से चलता रहा. विभिन्न परिषदों, संगीतियों के आयोजन, सम्मेलन से बौद्ध धर्म के विकास की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई.

श्रामणेतर या भिक्षुगण निम्नलिखित वस्त्र (चीवर) धारण करते थे—

1. अन्तर्वासक 2. उत्तरासंग
3. संघाटी

- 'उपोसथ' भिक्षुओं द्वारा की जाने वाली विशिष्ट धर्म चर्चा को कहते थे.
- बौद्ध भिक्षुओं के निषेधात्मक नियमों का सन्निवेष 'पातिमोक्ख' में होता था.
- वर्तमान में श्रीलंका, चीन, म्यांमार, मध्य एशिया, जापान, वियतनाम, कम्बोडिया में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता प्रखर एवं उत्कर्ष पर है. कम्बोडिया में बौद्ध धर्म को 1989 में राष्ट्रीय धर्म घोषित किया जा चुका है. हीनयान सम्प्रदाय का कम्बोडिया में अधिक जोर है.
- **सभी भौतिक वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं. कर्तव्यपरायणता के साथ प्रयास करो.** ये बौद्ध धर्म के प्रवर्तक स्वामी बुद्ध के अन्तिम शब्द थे.
- प्राचीनतम बौद्ध ग्रन्थ 'सुत्तनिपात' में **'अन्नदा वन्नदा सुखदा'** गाय के लिए प्रयुक्त हुआ है, जिसमें गाय को अन्न देने वाली, रूप देने वाली एवं सुख देने वाली कहा है.
- गौड़ देश के शिवभक्त शशांक ने बौद्ध गया में जहाँ पर बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था. वहाँ पर खड़े बोधिवृक्ष को काट डाला था.

बौद्ध संगीतियाँ

प्रथम बौद्ध संगीति

- समय — प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् 483 ई. पू. में हुआ था.
- आयोजन स्थल — राजगृह (बिहार) में सप्तपर्णि गुफा
- अध्यक्ष — भिक्षु महाकश्यप
- तत्कालीन शासक — मगध नरेश अजातशत्रु (हर्यंकवंश)
- उद्देश्य — संघ के नियमों, बौद्ध मत के सिद्धान्तों एवं मतों का निर्धारण करना
- प्रमुख कार्य — बुद्ध की शिक्षाओं को संकलित कर दो पिटकों में विभाजित किया. सुत्त (धर्म सिद्धान्त) एवं विनय (आचार नियम) क्रमशः बौद्ध के शिष्य आनन्द एवं उपालि द्वारा संकलित किये गये.

द्वितीय बौद्ध संगीति

- आयोजन काल — बुद्ध के महापरिनिर्वाण से एक शताब्दी बाद 383 ई. पू. आयोजन हुआ.
- आयोजन स्थल — वैशाली (बिहार) के चुल्लवग में
- तत्कालीन शासक — कालाशोक (शिशुनाग वंश)
- संगीति के अध्यक्ष — रेवत स्थविर
- उद्देश्य — पूर्वी एवं पश्चिमी भिक्षुओं के विनय सम्बन्धी मतभेदों का निराकरण
- प्रमुख कार्य — पूर्वी भिक्षुओं (वज्जिपुत्र) एवं पश्चिमी भिक्षुओं के मध्य विनय सम्बन्धी नियमों के मतभेद के फलस्वरूप भिक्षु संघ का दो सम्प्रदाय में विभाजन

(अ) परम्परागत, विनय में आस्था रखने वाले भिक्षुओं का **स्थविर** या **थेरवादी** सम्प्रदाय बना.

(ब) परिवर्तन के साथ विनय में आस्था रखने वाले भिक्षुओं का महासंधिक या सर्वास्तिवादी सम्प्रदाय बना. आगे चलकर इन दो सम्प्रदायों के 18 उपसम्प्रदाय बन गये.

(स) स्थविर सम्प्रदाय के नेतृत्वकर्त्ता महाकच्चायन एवं महासंधिक के नेतृत्वकर्त्ता महाकश्यप थे.

तृतीय बौद्ध संगीति

- आयोजन काल — बुद्ध की मृत्यु के 236 वर्ष बाद 250 ई. पू. में
- आयोजन काल — पाटलिपुत्र
- तत्कालीन शासक — अशोक
- संगीति के अध्यक्ष — मोग्गलिपुत्त तिस्स
- उद्देश्य — पिटकों के अध्यात्मिक-दार्शनिक तत्वों का निर्धारण
- प्रमुख कार्य — 1. अभिधम्मपिटक (तृतीय पिटक) का धर्म सिद्धान्त की दार्शनिक व्याख्याओं का संकलन किया गया.
  2. संघ में भेद रोकने के लिए कठोर नियम बनाये गये.

3. त्रिपिटिकों का पुनरावलोकन एवं बौद्ध साहित्य का प्रमाणीकरण.
4. तृतीय बौद्ध संगीति में थेरवादियों का पक्ष प्रबल रहा.

चतुर्थ बौद्ध संगीति

- आयोजन समय — प्रथम शताब्दी ई.
- आयोजन स्थल — कश्मीर के कुण्डलवन में
- संगीति के अध्यक्ष — वसुमित्र
- संगीति के उपाध्यक्ष — अश्वघोष
- तत्कालीन शासक — कनिष्क
- उद्देश्य — बौद्ध धर्म विषयक सिद्धान्तों का निर्धारण
- प्रमुख कार्य — 1. बौद्ध धर्म का दो भागों हीनयान एवं महायान में विभाजन.
  (अ) हीनयानी बौद्ध धर्म की प्राचीन परम्परा पर विश्वास करते थे.
  (ब) महायानी बुद्ध को ईश्वर तुल्य मानते थे, जिसके फलस्वरूप मूर्ति पूजा प्रारम्भ हो गई थी.
  (स) गांधार एवं मथुरा शैली में बुद्ध की मूर्तियाँ पूजने के उद्देश्य से महायान वर्ग द्वारा तैयार करवाई गई थी.
  2. बौद्ध ग्रन्थों के कठिन अंशों को 'विभाषा शास्त्र' नामक टीकाओं में संकलित किया.
  3. 'सर्वस्तिवादिन' सिद्धान्तों का संकलन 'महाविभास' में किया गया.

पाँचवीं बौद्ध संगीति

- आयोजन काल — सातवीं शताब्दी
- तत्कालीन शासक — हर्षवर्द्धन
- आयोजन स्थल — कन्नौज
- संगीति के अध्यक्ष — ह्वेनसांग
- संगीति के प्रमुख कार्यक्रम — 1. सहस्त्रों हीनयान, महायान सम्प्रदायी एवं 20 राज्यों के राजाओं का आगमन.
  2. कन्नौज में 100 फीट ऊँचे बुर्ज एवं विशाल संघाराम का निर्माण.
  3. बुर्ज में हर्ष के कद के बराबर बुद्ध की सोने की मूर्ति को स्थापित किया.
  4. बुद्ध का दाँत कश्मीर से मँगाकर कन्नौज में प्रतिष्ठापित कराया.
  5. महायान सम्प्रदाय की श्रेष्ठता की स्थापना.

षष्टम् बौद्ध संगीति

- आयोजन काल — 7वीं शताब्दी
- आयोजन स्थल — कन्नौज
- तत्कालीन शासक — हर्षवर्धन
- संगीति के अध्यक्ष — ह्वेनसांग
- संगीति के प्रमुख कार्यक्रम — 1. संगीति लगभग 75 दिनों तक चलती रही.
  2. 5 लाख व्यक्ति एकत्रित हुए.
  3. संगीति में श्रमण, निग्रंथ ब्राह्मण एवं निर्धन एकत्रित हुए थे.
  4. प्रथम दिन बुद्ध, दूसरे दिन सूर्य एवं तीसरे दिन शिव की पूजा की गई थी.

बौद्ध मत के स्वीकार्य तथ्य

(1) जगत् नश्वर है एवं क्षणिक है.
(2) कर्मवाद की अवधारणा—कर्म से शरीर का निर्माण होता है, मरने पर कर्म शेष रह जाता है.
(3) पुनर्जन्मवाद—शेष कर्मों से पुनर्जन्म होता है.
(4) संसार की सभी वस्तुएँ कार्य और कारण पर निर्भर रहती हैं. 'प्रतीत्यसमुत्पाद' इसी का नाम है.
(5) जगत् अस्थिर है. परिवर्तन सभी वस्तुओं में होता रहता है, प्रवाह के दौरान उनमें स्थिरता प्रकट होती है.
(6) प्रयोजनवाद—किसी भी कार्य में मानव जाति के प्रति कल्याण का भाव सुरक्षित रहना चाहिए.

बौद्ध धर्म के अस्वीकार्य तथ्य

1. अनात्मवाद — आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं है.
2. अनीश्वरवाद — ईश्वर का अस्तित्व नहीं है. महायान ईश्वर का समर्थक है.
3. सांसारिकता में संलिप्तता — सांसारिक माया-मोह में लिप्त रहना घातक है.
4. अत्यधिक स्वदमन — तपस्या में अत्यधिक रूप से स्वयं को दुःख, यातना देना व्यर्थ है.
5. वैदिक कर्मकाण्ड एवं ब्राह्मणों को बढ़ावा देना व्यर्थ है.

प्राचीन बौद्ध आस्थाओं का सम्प्रदाय : हीनयान

- चतुर्थ बौद्ध संगीति के दौरान कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध धर्म का विभाजन दो सम्प्रदायों में हो गया—

  1. हीनयान, 2. महायान.

- बौद्ध धर्म की प्राचीन आस्थाओं एवं स्वरूप को स्वीकारने वाले बौद्ध भिक्षुओं का समुदाय हीनयान कहलाया. हीनयान का दूसरा नाम **श्रावकयान** भी था. हीनयान का शाब्दिक अर्थ 'निम्न मार्ग' है. हीनयान सम्प्रदाय का साहित्य 'पालि भाषा' में लिखा हुआ है.
- जीवन के दुःखमय मार्ग से त्रस्त होकर निर्वाण पथ को स्वीकार करने वाला व्यक्ति **'श्रावक'** कहलाता है.
- हीनयान सम्प्रदाय के साहित्य के अनुसार श्रावक की निम्नलिखित चार अवस्थाएँ हैं—

  1. स्रोतापन्न, 2. सकृदागामी,
  3. अनागामी, 4. अर्हत्.

- हीनयान सम्प्रदाय भी दो भागों में विभाजित है—

  1. वैभाषिक, 2. सौत्रान्तिक.

- वैभाषिक मतानुसार सम्यक् ज्ञान प्रमाण है, जिसके दो विभाग हैं—

  1. प्रत्यक्ष, 2. अनुमान.

- प्रति + अक्ष = आँखों के सामने हुआ ज्ञान प्रत्यक्ष है, जिसके चार भेद हैं—

  1. इन्द्रियजन्य ज्ञान, 2. मनोविज्ञान,
  3. आत्मसंवेदन, 4. योग विज्ञान.

- अनु = पीछे, मान = मानना अर्थात् किसी अप्रत्यक्ष के सम्बन्ध में अनुभूति करना अनुमान है. इसके दो विभाग हैं—

  1. स्वार्थ, 2. पदार्थ.

- वैभाषिक मत के 4 आचार्य निम्नलिखित हैं—

  1. धर्मत्रात, 2. वसुमित्र,
  3. बुद्धदेव, 4. घोषक.

- हीनयान सम्प्रदाय के वैभाषिक मत का मानना है कि सारे जगत् का अनुभव इन्द्रियों के द्वारा किया जाता है और यह अनुभव (1) ग्रहण एवं (2) अध्यवसाय दो प्रकार का होता है.
- निराकार स्वरूप में निर्विकल्पक ज्ञान का आभास होना ग्रहण एवं साकार रूप में आभास होना अध्यवसाय है.
- ज्ञान दीपक के समान है और स्वतः प्रकाशित होता रहता है. यह मत सौत्रान्तिक सम्प्रदाय का है.

नूतन बौद्ध आस्थाओं एवं सुधारवादितापरक सम्प्रदाय : महायान

- 'महायान' शब्द का शाब्दिक अर्थ उत्कृष्ट मार्ग है. नामानुरूप महायान उदारवादी एवं परिवर्तित सम्प्रदाय था, जिसके उत्कृष्ट स्वरूप के कारण इसे विश्वव्यापी मान्यता प्राप्त हुई.
- महायान सम्प्रदाय दो भागों में वर्गीकृत था—

  1. विज्ञानवाद या योगाचार सम्प्रदाय.
  2. माध्यमिक या शून्यवाद सम्प्रदाय.

- शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन एवं विज्ञानवाद या योगाचार के प्रवर्तक मैत्रेयनाथ थे.
- महायान सम्प्रदाय का अधिकतम साहित्य संस्कृत में लिखा गया था.
- महायान सम्प्रदाय में तन्त्र, मन्त्र का समावेश हो जाने से इसके अन्तर्गत निम्नलिखित सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ—

  1. वज्रयान, 2. मन्त्रयान, 3. सहजयान, 4. कालचक्रयान.

- वज्रयान का आविर्भाव आठवीं शताब्दी में हुआ, जिसमें तामसिक, वैलासिक क्रियाओं युक्त 'गुह्य समाज' का जन्म हुआ. बौद्धाचार्य **असंग** गुह्य समाज के प्रवर्तक थे.

महायान का नवीन सम्प्रदाय : कालचक्रयान

- महायान सम्प्रदाय के एक वर्ग कालचक्रयान का आविर्भाव नवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ. कालचक्र इस सम्प्रदाय का परम देवता था.

  'कालचक्रयान' के अनुसार बुद्ध के दो लक्षण हैं—

  1. प्रज्ञा 2. करुणा.

- कालचक्रयान में शक्ति एवं शक्तिमान दोनों का समन्वय किया गया है. कालचक्रमान के आधारग्रन्थ विमलप्रभा एवं कालचक्र तन्त्र हैं.

- महाबुद्ध को वज्रयान सम्प्रदाय ने वज्रधर माना है. ध्यान मुद्रा में पाँच बौद्ध जोकि धर्मचक्र प्रवर्तन, वरद, समाधि, भय एवं अभूमि स्पर्श की मुद्राओं से सम्बन्धित है; निम्नलिखित है—

1. वैरोचन
2. रत्नसम्भव
3. अभिताभ
4. अमोघ सिद्धि
5. अक्षोभ्य

महायान एवं हीनयान में अन्तर

क्र.	महायान	हीनयान
1.	बुद्ध एक देवता के रूप में स्वीकार्य.	बुद्ध एक पवित्र विचारक एवं महान व्यक्ति के रूप में स्वीकार्य.
2.	मानव जाति के कल्याण पर आधारित धर्म, परोपकार एवं निःस्वार्थ सेवा परम लक्ष्य था.	व्यक्तिवादी धर्म की अवधारणा को मानते थे, स्वार्थपरता अत्यधिक थी.
3.	बोधिसत्व की अवधारणा परम आदर्श था.	अर्हत् पद की प्राप्ति परम आदर्श था.
4.	मूर्तिपूजा के प्रबल पक्षधर.	मूर्तिपूजा के प्रबल विरोधी.
5.	धार्मिक भाषा संस्कृत.	धार्मिक भाषा पालि.
6.	विश्वास पर आधारित सम्प्रदाय.	तर्क पर आधारित सम्प्रदाय.
7.	सर्वाधिक महत्व गृहस्थ जीवन को दिया है.	सर्वाधिक महत्व संन्यास जीवन को दिया है.
8.	जीवन का अन्तिम लक्ष्य स्वर्ग प्राप्ति था.	जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति था.
9.	अनेक भिक्षुओं के मन्दिर बनाये.	किसी मन्दिर का निर्माण नहीं किया.
10.	जापान, कोरिया, चीन, मंगोलिया, तिब्बत में प्रसारित.	जावा, श्रीलंका, म्यांमार में प्रसारित.

जैन तथा बौद्ध धर्म में समानताएँ

(1) जैन एवं बौद्ध धर्म दोनों अनीश्वरवादी एवं नास्तिक थे एवं दोनों का उदय छठी शताब्दी ई. पू. में हुआ था.

(2) जैन एवं बौद्ध धर्म दोनों कर्मकाण्ड एवं वैदिक धर्म के आडम्बर के खिलाफ थे. दोनों धर्मों के प्रवर्त्तकों का केन्द्र मगध था.

(3) जैन एवं बौद्ध दोनों धर्म वर्ण-व्यवस्था का विरोध कर समानता का उपदेश देते हैं.

(4) दोनों धर्मों के प्रवर्तक महावीर एवं बौद्ध क्षत्रिय वर्ण से सम्बन्धित थे तथा दोनों का सम्बन्ध गणराज्यों से भी था.

(5) दोनों धर्मों ने सांसारिक जीवन का त्याग एवं मोक्ष प्राप्ति का समर्थन किया. दोनों के तीन रत्न थे तथा दोनों धर्मों के तीन प्रमुख ग्रन्थ थे.

(6) दोनों ने सादा एवं पवित्र जीवन जीने का प्रावधान निर्दिष्ट किया है.

जैन तथा बौद्ध धर्म में असमानताएँ

	जैन धर्म	बौद्ध धर्म
1.	महावीर की उपदेश की भाषा प्राकृत थी.	बौद्ध की उपदेश की भाषा पालि थी.
2.	प्रसार भारत में हुआ विदेशों में नहीं.	विदेशों में प्रसार अधिक हुआ, भारत में नहीं.
3.	अनुयायियों पर आधारित था.	संघ एवं भिक्षुओं पर आधारित था.
4.	आत्मा को शाश्वत मानते हैं.	ईश्वर एवं आत्मा के अस्तित्व को नकारते हैं.
5.	कठोर व्रत पालन एवं उदासीन शारीरिक सुख-दुःख के समर्थक.	न अधिक सुख एवं न अधिक दुःख अर्थात् मध्यम मार्ग के समर्थक.
6.	जैन धर्म मोक्ष को सिद्धावस्था में शरीर का त्याग मानता है.	बौद्ध धर्म मोक्ष को मध्यम मार्ग के रूप में स्वीकार करता है.
7.	महावीर की नग्न मूर्तियों के उपासक हैं.	बौद्ध धर्म में नग्न मूर्तियों की पूजा नहीं होती.
8.	अहिंसा अत्यधिक कठोरतम थी.	अहिंसा का नियम व्यावहारिक था.
9.	जैन धर्म के अनुसार गृहस्थों के लिए निर्वाण प्राप्त करना असम्भव था.	अष्टांगिक मार्ग से गृहस्थ भी निर्वाण प्राप्त कर सकते थे.

बौद्ध धर्म के केन्द्र

- मथुरा बौद्ध धर्म का एक महान् केन्द्र था गान्धार की तरह मथुरा शैली का भी आविर्भाव हुआ. कुषाणों के शासनकाल में बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केन्द्र पुरुषपुर था, जहाँ पर तक्षशिला सर्वाधिक महत्वपूर्ण बुद्ध की शिक्षा का केन्द्र बना.
- शुंगकाल में बौद्ध गया, साँची एवं भरहुत बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में पहचाने गये.
- बौद्ध कला की दृष्टि से पूर्वी दक्कन में अमरावती एवं नागार्जुनकोण्डा महत्वपूर्ण क्षेत्र रहे थे. नागार्जुनकोण्डा का महाचैत्य बौद्धों के लिए उत्कृष्टतम तीर्थस्थल था.

बौद्ध धर्म का प्रारम्भिक साहित्य

- आरम्भिक बौद्ध साहित्य पालि भाषा में तीन खण्डों में संकलित है, जिन्हें त्रिपिटक कहा जाता है. पिटक का शाब्दिक अर्थ 'टोकरी' होता है. त्रिपिटक में निम्न ग्रन्थ आते हैं—

1. विनय पिटक, 2. सुत्त पिटक
3. अभिधम्म पिटक.

विनय पिटक—विनय पिटक का सम्पादन प्रथम संगीति में उपालि ने किया. विनय पिटक में संघ के नियम एवं बुद्ध के 'अनुशासनात्मक उपदेशों' का संकलन है.

सुत्त पिटक—सुत्त पिटक का सम्पादन प्रथम बौद्ध संगीति में आनन्द (बुद्ध के शिष्य) द्वारा हुआ.

सुत्त पिटक निम्नलिखित पाँच निकायों में वर्गीकृत है—

(i) दीघ निकाय, (ii) मज्झिम निकाय,
(iii) संयुक्त निकाय, (iv) खुद्दक निकाय,
(v) अंगुत्तर निकाय.

सुत्त पिटक में बौद्ध धर्म के सिद्धान्त एवं बुद्ध द्वारा दिये गये उपदेशों को संकलित किया गया है. सुत्त पिटक के खुद्दक निकाय में निम्नलिखित ग्रन्थ समाहित है—

1. धम्मपद (गीता के समकक्ष अंगीकृत)
2. थेरगाथा (वयोवृद्ध भिक्षुओं की कविताएँ)
3. थेरीगाथा (भिक्षुणियों की कविताएँ)
4. जातक (बुद्ध के पूर्व जन्म की कहानियाँ)

- जातक में इक्कीस खण्ड हैं जिसमें बुद्ध के पूर्व जन्मों की पाँच सौ सैंतालीस कहानियाँ समाहित हैं.

अभिधम्मपिटक—अभिधम्मपिटक तृतीय बौद्ध संगीति में संकलित किया गया था, जिसमें बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों एवं आध्यात्म का वर्णन है.

बौद्ध धर्म के पतन के कारण

- बौद्ध धर्म का जिस तेजी से विकास व प्रसार हुआ, उसी तेजी से उसका पतन हो गया. बारहवीं शताब्दी तक भारत में बौद्ध धर्म लुप्त प्रायः हो गया. बौद्ध धर्म के पतन के निम्नलिखित कारण थे—

(1) बौद्ध धर्म में ब्राह्मण धर्म के समकक्ष मान्यताओं और बुराइयों का प्रचलन हुआ, जिसके फलस्वरूप विभिन्न आडम्बरों का आविर्भाव हुआ और बौद्ध धर्म आकर्षणहीन हो गया.

(2) विभिन्न सम्प्रदायों एवं बौद्ध धर्म में विखण्डन से बौद्ध धर्म का अस्तित्व स्वतः समाप्त हो गया.

(3) जनसाधारण की भाषा पालि को छोड़कर संस्कृत को प्रचार भाषा बनाने एवं बौद्ध साहित्य में प्रयोग करने से आम जनता की समझ से बाहर हो जाने के कारण बौद्ध धर्म का पतन हो गया.

(4) दान व अनुदान प्राप्त होने से बौद्ध भिक्षु भ्रष्टाचारी बन गये एवं उनमें तामसी, विलासी प्रवृत्ति ने जन्म ले लिया.

(5) संघ ऐय्याशी एवं विवाद का अड्डा बन गया, जिससे धर्मावलम्बियों का बौद्ध धर्म से विश्वास जाता रहा, जो बौद्ध धर्म के पतन का मूल कारण बना.

(6) अशोक, कनिष्क एवं हर्षवर्धन के पश्चात् बौद्ध धर्म की दशा से परिचित होकर किसी भी राजा ने राज्याश्रय नहीं दिया, इसके फलस्वरूप बंगाल बिहार एवं उत्तर प्रदेश तक ही बौद्ध धर्म सीमित रह गया.

(7) कुमारिल भट्ट, शंकराचार्य जैसे दार्शनिकों के तार्किक प्रभाव एवं बौद्धिकता से नवब्राह्मणवाद का प्रस्फुटन हुआ, जिसके समक्ष जर्जर बौद्ध धर्म को जनता ने अस्वीकार कर ब्राह्मण धर्म को स्वीकार किया.

(8) विदेशी आक्रान्ताओं ने बौद्ध धर्म को नष्ट करने में जान की बाजी लगा दी. बौद्ध धर्म के सभी धार्मिक एवं शैक्षणिक केन्द्रों को तबाह कर बौद्ध धर्म के पतन में सहयोग दिया.

बौद्ध धर्म की देनें

(1) प्रारम्भिक काल में समाजवाद की अवधारणा की स्थापना कर धर्म, अर्थव्यवस्था को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया.

(2) राजनीति के स्वरूप को परिष्कृत बनाकर राजाओं की हिंसक प्रवृत्ति को मिटाया.

(3) शिक्षा एवं साहित्य के विभिन्न केन्द्रों की स्थापना कर तत्कालीन परिवेश को परिवर्तित किया.

(4) अनीश्वरवाद, अनात्मवाद, कर्मवाद एवं पुनर्जन्मवाद के तथ्यों से अवगत कराने वाले दर्शन का सूत्रपात किया.

(5) स्थापत्य-मूर्तिकला, चित्रकला का विकास किया. बराबर (बारबर) की पहाड़ियों की गुहा (जिला गया, बिहार), नासिक, अजन्ता, एलोरा की गुहाओं का विकास बुद्ध काल में हुआ. मथुरा एवं गांधार शैली, स्तूप, विहार, चैत्यों के निर्माण की कला का प्रारम्भ इसी काल में हुआ.

(6) बौद्ध धर्म ने विदेशों से मधुर सम्बन्ध स्थापित करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया.

जैन धर्म
(Jainism)

जैन धर्म के संस्थापक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे, लेकिन इस धर्म को विकसित एवं संगठित करने का श्रेय वर्द्धमान महावीर को दिया जाता है, जो जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे.

पार्श्वनाथ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे. उनके अतिरिक्त अन्य तीर्थंकरों के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती. पार्श्वनाथ महावीर स्वामी से 250 वर्ष पूर्व काशी के राजा अश्वसेन के घर पर पैदा हुए थे. महावीर स्वामी के पिता उनके अनुयायी थे. पार्श्वनाथ के अनुयायी 'निर्ग्रन्थ' कहलाते थे. पार्श्वनाथ ने संन्यास लेकर घूम-घूमकर सत्य, अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह का संदेश दिया. पार्श्वनाथ के विचारों को प्रचारित एवं संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन महावीर स्वामी ने किया था.

जैन धर्म के 24 तीर्थंकर निम्नलिखित थे—

1. ऋषभदेव	13. विमलनाथ
2. अजितनाथ	14. अनन्तनाथ
3. साम्बनाथ	15. धर्मनाथ
4. अभिनन्दन	16. शान्तिनाथ
5. सुमतिनाथ	17. कुन्थुनाथ
6. पद्मप्रभु	18. अरिनाथ
7. सुपार्श्वनाथ	19. मल्लिनाथ
8. चन्द्र प्रभु	20. मुनिसुव्रतनाथ
9. सुविधिनाथ	21. नेमिनाथ
10. शीतलनाथ	22. अरिस्टनेमि
11. श्रेयान्सनाथ	23. पार्श्वनाथ
12. वसुपुज्य	24. महावीर

महावीर स्वामी : जीवन परिचय



1.	प्रारम्भिक नाम	—	वर्द्धमान
2.	आध्यात्मिक नाम	—	महावीर स्वामी
3.	जन्म	—	540 ई. पू. में
4.	जन्म स्थल	—	वैशाली के निकट कुण्डग्राम में
5.	परिवार	—	क्षत्रिय राजपरिवार
6.	पिता	—	सिद्धार्थ (ज्ञांतृक कुल के गणराजा)
7.	माता	—	त्रिशला (लिच्छवि गणराज्य के प्रधान चेटक की बहिन)
8.	पत्नी	—	यशोदा (राजा समरवीर की पुत्री)
9.	पुत्री	—	प्रियदर्शना
10.	पुत्री दामाद	—	क्षत्रिय युवक जमालि
11.	संन्यास	—	30 वर्ष की उम्र में (जिसे महा-परिभिनिष्क्रमण कहा जाता है).
12.	महापरिभिनिष्क्रमण की अनुमति	—	पिता की मृत्यु के बाद भाई नन्दिवर्द्धन से
13.	वस्त्र त्याग	—	संन्यास के ग्यारह मास के बाद
14.	केवल्य (ज्ञान की प्राप्ति)	—	12 वर्ष की तपस्या के बाद
15.	केवल्य प्राप्ति स्थल	—	जम्भियग्राम (जृम्भिका) के निकट 'ऋजुपालिका' नदी के तट पर शाल्मलि वृक्ष के नीचे
16.	उपनाम	—	1. केवलिन (पूर्ण ज्ञान प्राप्ति के कारण) 2. जिन (इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण) 3. महावीर (अतुलित पराक्रम के कारण) 4. निर्ग्रन्थ एवं अर्हत
17.	धर्मप्रचारक्षेत्र	—	चम्पा, वैशाली, राजगृह
18.	अनुयायियों का सम्बोधन	—	जैन
19.	महावीरस्वामी के शिष्य	—	1. अग्निभूति 2. इन्द्रभूति 3. वायुभूति 4. सुधर्मन 5. मण्डित 6. मोरिय पुत्र 7. अचल भ्राता 8. प्रभास

9. मेदार्य
10. अकम्पित
11. आर्यव्यक्त
12. वैशाली के शासक चेटक
13. अवन्ति के राजा प्रद्योत
14. बिम्बिसार
15. अजातशत्रु
16. दधिवाहन
17. मल्लिराज सस्तिपाल

20. प्रथम भिक्षुणी	—	चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना
21. महावीर के उपरान्त जैन संघ के अध्यक्ष	—	सुधर्मन
22. सुधर्मन के पश्चात् जैन संघ के अध्यक्ष	—	जम्बु जैन
23. महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	—	72 वर्ष की उम्र में पावा राजगृह के पास मल्लराजा सस्तिपाल के राजप्रासाद में 468 ई. पू. में

23वें तीर्थंकर : पार्श्वनाथ : संक्षिप्त परिचय

1. जन्म	—	महावीर स्वामी से 250 वर्ष पूर्व
2. पिता	—	काशी नरेश अश्वसेन
3. माता	—	वामा
4. पत्नी	—	प्रभावती (कुशस्थल देश की राजकुमारी)
5. संन्यास	—	30 वर्ष की उम्र में
6. तपस्या	—	83 दिनों तक
7. ज्ञान प्राप्ति	—	84वें दिन सम्मेय पर्वत पर
8. प्रथम अनुयायी	—	माता एवं पत्नी
9. धर्म प्रचार	—	70 वर्ष तक
10. अनुयायियों का सम्बोधन	—	निर्ग्रन्थ
11. भिक्षुणी संघ की अध्यक्षा	—	पुष्पचूला
12. स्थापना	—	4 गणों की
13. विरोध	—	ब्राह्मण धर्म के देववाद, कर्मकाण्ड, यज्ञ, वर्ण एवं जाति व्यवस्था का पार्श्वनाथ ने घोर विरोध किया
14. प्रमुख उपदेशों के आधारभूत तत्त्व	—	1. अहिंसा 2. सत्य भाषण 3. अस्तेय (चोरी न करना) 4. अपरिग्रह (सम्पत्ति का संग्रह न करना)
15. समाधि के पंचतत्त्व	—	1. तपस 2. सत्य 3. सूत्र 4. एकत्व 5. बल

महावीर स्वामी के सिद्धान्त

राजगृह के निकट विपुलचल पहाड़ियों पर महावीर स्वामी ने अपना पहला उपदेश दिया था. जैन धर्म सांख्य धर्म से साम्यता रखता था. महावीर स्वामी ने अपने उपदेशों में पार्श्वनाथ के विचारों को संशोधित कर प्रस्तुत किया था. 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के मूलभूत सिद्धान्तों में ब्रह्मचर्य पालन का सिद्धान्त महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया.

जैन धर्म के मूलभूत सिद्धान्त (पाँच महाव्रत)

1. सत्य
2. अहिंसा
3. अपरिग्रह
4. अस्तेय
5. ब्रह्मचर्य पालन (महावीर स्वामी द्वारा)

जैन धर्म के त्रिरत्न

महावीर स्वामी के अनुसार निर्वाण प्राप्ति एवं कर्म वन्धन से मुक्ति पाने के लिए निम्नलिखित तीन रत्नों (त्रिरत्न) का पालन करना चाहिए—

1. सम्यक् श्रद्धा (यथार्थ को स्वीकारना)
2. सम्यक् ज्ञान (वास्तविक ज्ञान के प्रति सजग रहना)
3. सम्यक् चरित्र (आचरण के प्रति सजग रहना)

जैन धर्म के निषेधात्मक अट्ठारह पाप

जैन धर्म में निम्नलिखित अट्ठारह कर्मों को पाप मानकर पाँच महाव्रतों के द्वारा बचने के लिए सलाह प्रदान की गई है—

1. हिंसा
2. झूठ
3. चोरी
4. मैथुन
5. परिग्रह
6. क्रोध
7. मान
8. माया
9. लोभ
10. राग
11. द्वेष
12. कलह
13. दोषारोपण
14. चुगलखोरी
15. असंयम
16. निन्दा
17. छल-कपट
18. मिथ्यादर्शन

जैन दर्शन का सप्तभंगी ज्ञान

जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक प्रकार का ज्ञान, मति, श्रुति, अवधि एवं मनः पर्याय के अनुसार विविध प्रकार का होता है, जिसे सप्तभंगी ज्ञान कहा जाता है. स्याद्‌वाद एवं अनेकान्तवाद सप्तभंगी ज्ञान के ही नाम हैं.

सप्तभंगी ज्ञान निम्न 7 स्वरूपों में विभक्त किया गया है—

1. हैं. (किसी के प्रति विश्वसनीयता)
2. नहीं हैं. (किसी के प्रति अविश्वसनीयता)
3. हैं और नहीं हैं. (संशयात्मक ज्ञान)
4. कहा नहीं जा सकता.
5. हैं किन्तु कहा नहीं जा सकता.
6. नहीं हैं और कहा नहीं जा सकता.
7. हैं, नहीं हैं और कहा नहीं जा सकता.

जैन दर्शन के ज्ञान प्राप्ति के तीन मार्ग

जैन दर्शन के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के निम्नलिखित तीन मार्ग हैं—

1. प्रत्यक्ष
2. अनुमान
3. तीर्थंकरों द्वारा

जैन धर्म में सम्यक् ज्ञान के प्रकार

जैन धर्म में सम्यक् ज्ञान के पाँच प्रकार बताये गये हैं—

1. मति (मस्तिष्क द्वारा प्राप्त होने वाला ज्ञान)
2. श्रुति (सुनने से प्राप्त होने वाला ज्ञान)
3. अवधि (दूर की चीज का उत्कृष्टम ज्ञान)
4. मनःपर्याय (दूसरे की बातों का ज्ञान)
5. केवल्य (पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति)

जैन धर्म के सप्त तत्व

जैन धर्म निम्नलिखित सात तत्त्वों को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता है—

1. जीव या आत्मा
2. अजीव
3. आस्रव (जीव और अजीव के समन्वय से निर्मित कर्म)
4. संवर (जीव और अजीव से प्राप्त कर्मसंचय का अवरोध)
5. निर्जरा (संचित कर्मों को नष्ट करने का प्रकार)
6. वंध
7. मोक्ष

जैन दर्शन में प्रतिपादित अणुव्रत के मूलाधार

जैन धर्म में ग्रहस्थों के लिए पञ्च-महाव्रतों एवं अन्य सिद्धान्तों में शिथिलता रखी गई है, ताकि ग्रहस्थ सरलता से जैन धर्म से जुड़ सकें—यह प्रक्रिया 'अणुव्रत' (आंशिक नियम पालन) कहलाती है. जैन दर्शन में अणुव्रत के निम्नलिखित 4 आधार हैं—

1. मैत्री (मित्रता की भावना)
2. प्रमोद (प्रसन्नता की भावना)
3. करुणा (दया की भावना)
4. माध्यस्थ (नीच व्यक्तियों से दूरी)

जैन दर्शन में प्रतिपादित ग्रहस्थों के 7 शीलव्रत

अणुव्रत के साथ ही गुणव्रत एवं शिक्षाव्रत के अन्तर्गत ग्रहस्थों के लिए 7 शीलजनों का प्रतिपादन किया है, जो निम्नलिखित हैं—

(i) गुणव्रत

(1) दिगृव्रत (विशेष दिशाओं में गतिविधियों को सीमित रखना)

(2) देशव्रत (विशेष क्षेत्रों में अपने कार्य को सीमित रखना)

(3) अनर्थदण्ड व्रत (वेवजह अपराध नहीं करना)

(ii) शिक्षा व्रत

(4) सामयिक व्रत (आत्मचिन्तन के लिए समय को वचाना)

(5) प्रौपधोपवास व्रत (वताये हुए दिनों में उपवास रखना)

(6) उपभोग परिभोग परिमाप (दैनिक उपभोग का लेखा-जोखा रखना)

(7) अतिथि संविभाग (अतिथि का सम्मान करना)

जैन धर्म के स्वीकरणीय तथ्य

1. जैन धर्म के अनुसार संसार दुःखमय है. मनुष्य दुःखों एवं तृष्णाओं से घिरा हुआ है. भय एवं तृष्णाएँ दुःखों में वृद्धि करती है. सांसारिक मायाजाल के त्याग एवं संन्यास से सच्चा सुख प्राप्त किया जा सकता है.
2. जैन धर्म की धारणा के अनुसार कर्मों के आधार पर सभी सांसारिक प्राणियों को फल की प्राप्ति होती है. जन्म एवं मृत्यु का कारण कर्मफल है. निर्वाण की प्राप्ति इससे युक्त होकर ही प्राप्त की जा सकती है.
3. जैन धर्म का मानना है कि प्रकृति और आत्मा दो तत्त्व हैं, जिनसे मनुष्य का व्यक्तित्व निर्मित होता है. इन दो तत्वों में प्रकृति नाशवान है और आत्मा विकासशील

तथा अनन्त है. निर्वाण की प्राप्ति आत्मा के विकास से ही सम्भव है. जैन धर्म का प्रकृति और आत्मा सम्बन्धी यह सिद्धान्त 'द्वैतवादी तत्त्वज्ञान' कहलाता है.

4. जैन धर्म के अनुसार कठोर तप एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए 'काया क्लेश' अत्यावश्यक है. काया क्लेश में उपवास के द्वारा आत्महत्या करनी पड़ती है जिसे जैन धर्म में 'सल्लेखन' कहा जाता है.
5. जैन धर्म में अहिंसा एवं तपस्या पर सर्वाधिक जोर दिया गया था. हिंसा के आकस्मिक एवं ऐच्छिक दोनों स्वरूपों पर प्रतिबन्ध था.
6. जैन धर्म प्रत्येक पदार्थ में जीव के अस्तित्व की कल्पना करते हैं. इसके फलस्वरूप मांस-भक्षण, आखेट, कृषि एवं युद्ध में उनकी प्रवृत्ति नहीं थी.
7. जैन धर्म में आचरण के नियम कठोरतम थे. उन्हें नियमित दिनचर्या में निम्नलिखित निर्देशों का पालन करना होता था—
   1. इन्द्रिय दमन के लिए नग्न रहना.
   2. दीक्षा के समय बालों को जड़ से उखाड़ना.
   3. गर्मी में दोपहर में तपस्या करना.
   4. दीर्घकाल तक असुविधाजनक मुद्रा में रहना.
   5. निश्चित स्थान पर निवास नहीं करना.
   6. मुख को कपड़े से ढँके रखना.
   7. नंगे पैर चलना.
   8. किसी वाहन में यात्रा न करना.
   9. जल छानकर पीना.
8. जैन धर्म के अनुसार सृष्टि के कर्त्ता एवं पालक के रूप में कोई अतिमानवीय आत्मा का अस्तित्व नहीं हैं. उसके अनुसार परमात्मा उन शक्तियों का उत्कृष्टतम एवं पूर्णतमरूप है, जो मानव की आत्मा में विद्यमान है.
9. जैन धर्म में कर्मबन्धन के उत्तरदायी कारक के रूप में निम्नलिखित आठ प्रकार के कर्म माने जाते हैं—
   1. ज्ञानावरणीय (आत्मा के ज्ञान को आवरणमय रखने वाले)
   2. दर्शनावरणीय (आत्मा की दर्शन शक्ति को अविद्यमान रखने वाले)
   3. वेदनीय (सुख-दुःखात्मक ज्ञान को आवृत्त रखने वाले)
   4. मोहनीय (जीव को मोह में भ्रमित रखने वाले)
   5. आयु कर्म (मनुष्य की उम्र को निश्चित करने वाले)
   6. नाम कर्म (मनुष्य की गति, शरीर, स्थिति के निर्धारक तत्त्व)
   7. गोत्र कर्म (मनुष्य के स्तर के निर्धारण करने वाले)
   8. अन्तराय कर्म (अच्छे कार्यों में बाधोत्पादक तत्व)
10. जैन धर्म के अनुसार संसार 6 द्रव्यों का समुदाय है. ये छह द्रव्य शाश्वत, नित्य अनश्वर है जिसके कारण संसार भी शाश्वत, नित्य एवं अनश्वर है.
    जैन धर्म के 6 द्रव्य निम्नलिखित हैं—

1. जीव	2. पुद्गल
3. धर्म	4. अधर्म
5. आकाश	6. काल

11. आत्मा में प्रविष्ट विषय वासनाओं के नाश एवं नियन्त्रण से कर्मबन्धन से छुटकारा प्राप्त हो जाता है. इसके लिए प्रयुक्त तत्व निम्नलिखित हैं—
    1. आस्रव (विषयों का संग्रहीकरण)
    2. संवर (विषयों के प्रवाह पर नियन्त्रण)
    3. निर्जरा (विषय वासनाओं को विनष्ट करना)
12. जैन धर्म में अन्तःकरण की शुद्धि बाह्य शुद्धि से अधिक महत्वपूर्ण है. सदाचार एवं सच्चरित्र उसके मूल आधार हैं.
13. जैन धर्म के अनुसार सत्कर्म का पालन करने वाला उच्च है; भले ही वो जन्म से नीच जाति का ही हो.
14. जैन धर्म अनीश्वरवादी एवं निवृत्तिमार्गी है. उनके अनुसार ईश्वर सृष्टिकर्त्ता नहीं है. जैन धर्म में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कर्म है.

जैन संघ

- संन्यासियों एवं गृहस्थों के लिए सुविधाजनक स्थिति को देखते हुए महावीर स्वामी ने पावा में 'चतुर्विध संघ' की स्थापना की थी. संघ में सभी जाति एवं धर्म के व्यक्तियों को प्रवेश दिया जाता था—
  1. भिक्षु (संन्यासी पुरुष सदस्य)
  2. भिक्षुणी (संन्यासी महिला सदस्या)
  3. श्रावक (पुरुष गृहस्थ सदस्य)
  4. श्राविका (महिला गृहस्थ सदस्या)
- इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण महावीर स्वामी को 'जिन' की उपाधि प्रदान की गई, जिससे 'जैन' शब्द का आविर्भाव हुआ. जैन शब्द को पहले इस अर्थ में 'निर्ग्रन्थ' कहा जाता था.
- महावीर स्वामी का दामाद 'जमालि' जैन संघ का सबसे पहला विच्छेदक था.
- कालान्तर में आजीवक सम्प्रदाय का प्रवर्तन करने वाला 'मुक्खलि गोशाल' (मक्खलि घोषाल) मूलतः महावीर स्वामी का शिष्य था.

- जैन संघ में त्यागियों का 'निष्क्रमण संस्कार' होता था, जिसमें निष्क्रमणार्थी को माता-पिता एवं संरक्षक की आज्ञा से बाल मुँडवाकर भिक्षापात्र ग्रहण कर जैन आचार्य के पास जैन धर्म की दीक्षा लेना अनिवार्य था.
- महावीर स्वामी ने मनुष्यों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया था—
  1. अव्रती—सांसारिकता से न हटने वाले व्यक्ति (संघ में प्रवेश वर्जित था)
  2. अणुव्रती—नियमों का आंशिक पालन करने वाले (श्रावक-श्राविका)
  3. सर्वव्रती—पूर्ण नियमों का पालन करने वाले (भिक्षु-भिक्षुणियाँ)

जैन धर्म के सम्प्रदाय

- महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात् चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में जैन धर्म निम्नलिखित दो सम्प्रदायों में वर्गीकृत हो गया—
  1. श्वेताम्बर (सफेद वस्त्र धारण करने वाले)
  2. दिगम्बर (नग्न रहने वाले)
- श्वेताम्बर सम्प्रदाय का नेतृत्वकर्त्ता स्थूलभद्र एवं दिगम्बर सम्प्रदाय का नेतृत्वकर्त्ता भद्रबाहु था.
- कालान्तर में श्वेताम्बर सम्प्रदाय निम्नलिखित तीन उपसम्प्रदायों में विभाजित हो गया—
  1. पूजेरा (मन्दिर मार्गी)
  2. ढुंढिया (साधु मार्गी)
  3. तेरापंथी (तीर्थंकरों के उपासक)
- तेरापंथी सम्प्रदाय की स्थापना महाराज भिक्खल ने की.
- दिगम्बर सम्प्रदाय भी निम्नलिखित तीन उपसम्प्रदायों में विभक्त हो गया था—
  1. बीस पन्थी (क्षेत्रपाल एवं तीर्थंकरों की मूर्तियों के पूजक)
  2. तेरा पन्थी (मन्दिरों में तीर्थंकरों की मूर्तियाँ रखने वाले)
  3. समैयापन्थी एवं तारणपंथी.
- स्वामी तरणतारण ने समैयापन्थी उपसम्प्रदाय की संस्थापना की.
- दोनों सम्प्रदायों में मूलभूत अन्तर यह था कि दिगम्बर नंगे रहने एवं नियमों के कठोरता से पालन करने पर जोर देते हैं, जबकि श्वेताम्बर श्वेत वस्त्र धारण करने एवं कम नियमों की सरल प्रणाली पर जोर देते हैं.

जैन परिषदें

प्रथम जैन परिषद्—प्रथम जैन परिषद् तृतीय शताब्दी ई. पू. स्थूलभद्र द्वारा पाटलिपुत्र में आयोजित की गई. इसमें जैन धर्म के सिद्धान्तों को निश्चित कर 12 ग्रन्थों में 12 अंगों को समाहित किया गया. प्रथम जैन परिषद् मात्र श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा ही अंगीकृत की गई थी.

द्वितीय जैन परिषद्—द्वितीय जैन संगीति देवार्धिगण नामक जैन साधु की अध्यक्षता में पाँचवीं शताब्दी (518 ई.) में वल्लभी (गुजरात) में सम्पन्न हुई. इसमें 84 आगमों की संख्या तय की गई एवं अर्द्धमागधी भाषा में 12 उपांगों को सम्मिलित किया गया.

इन प्रसिद्ध जैन परिषदों के अतिरिक्त अन्य परिषदों के सम्पन्न होने के साक्ष्य मिलते हैं. एक परिषद् का आयोजन चौथी शताब्दी में दो स्थानों वल्लभी एवं मथुरा में किया गया. जिसकी अध्यक्षता वल्लभी में नागार्जुन ने एवं मथुरा में आर्य स्कन्दिल ने की थी.

जैन धर्म का साहित्य

चार सूत्र—जैन धर्म के साहित्य में सर्वोपरि निम्नलिखित चार सूत्रों का नाम आता है—

1. उत्तराध्ययन सूत्र
2. दशवैकालिक सूत्र
3. आवश्यक सूत्र
4. ओकर्नियति सूत्र

द्वादश अंग—चार सूत्रों के बाद निम्नलिखित बारह अंगों का क्रम आता है—

1. आचरांग सुत्त (जैन भिक्षुओं के लिए अनुसरणीय नियम)
2. सूत्र कृतांग
3. थाणंग
4. समवायांग
5. भगवती सूत्र (समकालीन जैन मुनि वृत्तान्त, जैन धर्म सिद्धान्त एवं स्वर्ग-नरक का वर्णन)
6. ज्ञान, धर्म, कथा
7. उवासगदसाओ (मोक्ष प्राप्त करने वाले 10 जैन व्यापारियों का वर्णन)
8. अंतगडदसाओ ('सल्लेखन' द्वारा मोक्ष प्राप्त करने वाले भिक्षुओं का उल्लेख)
9. अनुत्तरोपयातिक दशा
10. प्रश्न व्याकरण (प्रश्न रूप में जैन धर्म की 10 शिक्षाओं एवं निवन्धों का उल्लेख)
11. विमाकसुतम्
12. दृष्टिवाद.

जैन धर्म का विकास

- महावीर स्वामी के जीवनकाल में जैन धर्म का प्रसार मगध, कोशल, विदेह, अंग, वज्जि, मल्ल, अवन्ति आदि महाजनपदों में हो गया था.
- महावीर स्वामी के काल में उनके अनुयायियों की संख्या 14,000 हो गयी थी. मगध नरेश अजातशत्रु उसके उत्तराधिकारी उदायिन, चन्द्रगुप्त मौर्य (कर्नाटक क्षेत्र), मगध का राजा नन्द ने जैन धर्म के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया था.
- उदयगिरि पर्वत पर जैन साधुओं के लिए भवन निर्माण ई. पू. प्रथम शताब्दी में कलिंग के चेदिवंश के राजा 'खारवेल' ने कराया था.
- सम्प्रति अशोक महान् का पौत्र था जिसने 'आर्यसुहस्त्री' से जैन धर्म की दीक्षा प्राप्त कर जैन धर्म के विकास में महती भूमिका का निर्वहन किया था.
- मौर्य और गुप्तकाल तक जैन धर्म पूर्व में उड़ीसा से श्रीलंका एवं पश्चिम में मथुरा तक प्रसारित हो चुका था.
- जैन धर्म के दोषों को दूर करने के लिए जैनाचार्यों एवं श्रावकों के मध्य धार्मिक विचारों का प्रचार करने वालों में 'हरिभद्र सूरी' प्रमुख थे.
- 57 फुट ऊँची गोमटेश्वर की विशाल प्रतिमा का निर्माण 10वीं शताब्दी में गंग नरेशों ने कराया था.
- मेगुती मन्दिर (जिनेन्द्र का मन्दिर) ऐहोल में जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए रविकीर्ति ने बनवाया था.
- राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष ने जैन धर्म की दीक्षा जैनाचार्य 'जिनसेन' से ग्रहण की थी.
- 12वीं शती में चालुक्य शासक कुमारपाल की मृत्यु के पश्चात् पश्चिम में शैव, वैष्णव सम्प्रदायों के आविर्भाव से दक्षिण में जैन धर्म का पतन हो गया था.

जैन धर्म की सफलता के कारण

महावीर स्वामी के जीवनकाल में एवं उनके पश्चात् द्रुत गति से भारत में जैन धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ. इसके मूल में निम्नांकित कारण थे—

1. महावीर स्वामी के राज परिवार से सम्बन्ध होने के कारण उन्हें तत्कालीन राजवंशियों का पूर्ण समर्थन प्राप्त हुआ, जो जैन धर्म के विकास में उल्लेखनीय प्रयास रहा.

2. आर्थिक हितों के प्रति सकारात्मक भाव रखने के कारण समाज के सभी वर्गों में एवं विशेषकर व्यापारिक वर्ग ने जैन धर्म के प्रसार के लिए उत्कृष्टतम भूमिका का निर्वहन किया.

3. जैन धर्म की प्रचार भाषा प्राकृत थी, जो संस्कृत की अपेक्षा तत्कालीन आम जनता के लिए सरल एवं सुगम थी.

4. जैन धर्म का स्वरूप आडम्बरपूर्ण न होकर व्यावहारिक था. ग्रहस्थों के लिए अणुव्रत सर्वाधिक उत्कृष्टतम नियम परम्परा थी. इसके अतिरिक्त अन्य नियम भी लोगों की मानसिकता के अनुरूप था, जो जैन धर्म की सफलता का एक कारक बना.

5. जैन धर्म में किसी भी वर्ग, वर्ण या धर्म के प्रति मतभेदपूर्ण या भेदभावपूर्ण नीति नहीं थी, जिससे जैन धर्म को बढ़ावा मिला.

जैन धर्म के पतन के कारण

1. जैन धर्म का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में ब्राह्मण धर्म की आडम्बरपूर्ण गतिविधियों से अनवरत् रहा, जिसके फलस्वरूप जनता को जैन धर्म में कुछ विशिष्ट अनुभूति नहीं हुई और जैन धर्म पतन की ओर अग्रसर हो गया.

2. जैन धर्म में जाति व्यवस्था पूर्णतः विद्यमान थी. महावीर स्वामी कर्मफल के अनुसार जाति प्रथा की व्यवस्था को अंगीकृत करते थे, जो जैन धर्म के विकास में बाधक बनी रही.

3. जैन धर्म को राज्याश्रय मिला, लेकिन कनिष्क एवं अशोक जैसे सशक्त एवं प्रतापी शासकों का राज्याश्रय मिला होता तो जैन धर्म तेजी से पल्लवित होता, लेकिन यह सम्भव नहीं हो सका.

4. बाल उखड़वाना, नग्न रहना, धूप में तपस्या करना एवं अहिंसा का कठोरतम पालन आम लोगों के लिए बेहद दुष्कृत्य था, जिससे जैन धर्म का अधिक विकास नहीं हो सका.

5. बौद्ध धर्म एवं तर्कपूर्ण भागवतधर्म के उदय हो जाने से जैन धर्म से दूर होकर लोगों ने दूसरे धर्मों का सहारा लिया, जिससे जैन धर्म का पतन हो गया.

6. जैन धर्म का संगठनात्मक स्वरूप पूरी तरह निर्बल था, जिसके चलते जैन धर्म कई सम्प्रदायों एवं उपसम्प्रदायों में वर्गीकृत हो गया, जो जैन धर्म के पतन का मूल कारण बना.

जैन धर्म का योगदान

अन्य धर्मों की अपेक्षा जैन धर्म अत्यधिक प्रबलधर्म नहीं था, फिर भी कर्मकाण्ड एवं सामाजिक दोषों को दूर करने में उसकी भूमिका उल्लेखनीय रही. भारतीय दार्शनिक व्यवस्था की अमूल्य निधि के रूप में स्वीकारा जाने वाला 'स्याद्वाद या अनेकान्तवाद' का प्रतिपादन जैन धर्म से ही हुआ था.

अर्धमागधी, प्राकृत भाषा, अपभ्रंश भाषा का विकास जैन धर्म के द्वारा हुआ. चित्रकला, स्थापत्यकला, मूर्तिकला का विकास 11वीं, 12वीं शताब्दी में जैनधर्मावलम्बियों के द्वारा सम्पादित हुआ.

भागवत सम्प्रदाय
(The Bhagavatism)

- छठी शताब्दी ई. पू. जैन और बौद्ध धर्म के अतिरिक्त कट्टरपंथी सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ, उनमें भागवत एवं शिव भागवत सम्प्रदाय प्रमुख थे.
- ब्राह्मण धर्म के आडम्बर, कर्मकाण्ड, यज्ञ-बलि एवं अन्य दोषों से दूर रहने के लिए 'उपनिषदों' में उपदेशों को समाहित किया गया है. कुछ कट्टरपंथियों एवं आस्तिकवादियों ने उपनिषदों का अनुसरण कर अनावश्यक आडम्बरों से दूर रहकर भक्तिमार्ग को अपनाने की प्रेरणा दी एवं उसका प्रचार-प्रसार किया, जिसके फलस्वरूप भागवत सम्प्रदाय का आविर्भाव हुआ.
- भागवत शब्द का शाब्दिक अर्थ **'भगवत् सम्बन्धी'** होता है. यह उस सम्प्रदाय का प्रतीक है जिसमें विष्णु भगवान को सर्वेसर्वा माना जाता है.
- भागवत सम्प्रदाय के अनुसार ईश्वर को भक्ति के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है. यज्ञ, बलि एवं आडम्बरों से ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता.
- भागवत सम्प्रदाय के प्रवर्तक 'वासुदेव' माने जाते हैं एवं इस सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र मथुरा माना गया है. इस सम्प्रदाय को वृष्णि शाखा (सात्वत) के प्रधान वासुदेव (कृष्ण) ने लोकप्रिय बनाया था.
- भागवत धर्म का प्रमुख ग्रन्थ 'भागवत पुराण' माना जाता है एवं मूल तत्व के रूप में 'श्रीमद्भागवद्गीता' अंगीकृत की गई है जो ईसा की चतुर्थ शताब्दी में अस्तित्व में आई थी.
- कालान्तर में भागवत सम्प्रदाय ही वैष्णव धर्म में परिवर्तित हो गया.
- श्रीमद्भगवद्गीता में कृष्ण को निष्काम कर्म एवं भक्तियोग, कर्मयोग का प्रतिपादक बताया है. श्रीकृष्ण को विष्णु के अवतार के रूप में अपनाया गया है.
- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए निम्नलिखित तीन मार्गों को अपनाना आवश्यक है—

1. ज्ञान मार्ग,	2. कर्म मार्ग,
3. भक्ति मार्ग.	

- श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार 'ज्ञान का मार्ग' अत्यन्त कठिन एवं मुश्किल है. कर्म मार्ग के द्वारा अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है. सर्वाधिक सरल मार्ग भक्ति मार्ग है. ईश्वर की निष्काम भक्ति से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है.
- श्रीमद्भागवत पुराण के लेखक 'केशवदास' हैं, जो अठारह पुराणों में सबसे प्रमुख एवं कृष्ण पर आधारित है.
- मत-विभेद से कृष्ण के अवतारों की संख्या भिन्न-भिन्न है. कृष्ण के अवतारों की अधिकतम संख्या 24 एवं सर्वमान्य संख्या 10 है.
- श्रीमद्भागवत पुराण में 10 स्कन्ध हैं, जिनमें कृष्ण के अवतार, लीला एवं उन पर आधारित कथाओं का वर्णन किया गया है. भागवत पुराण के स्कन्धों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण दशम् स्कन्ध है.
- श्रीमद् भागवत पुराण के अनुसार विष्णु भगवान् के निम्नलिखित 10 अवतार अंगीकृत किये गये हैं—

1. मत्स्य	6. परशुराम
2. कच्छप	7. कृष्ण
3. वराह	8. राम
4. नृसिंह	9. बुद्ध
5. वामन	10. कल्कि

- देवी भागवत के रूप में स्वीकृत भागवत सम्प्रदाय के दूसरे ग्रन्थ के रूप में 'दुर्गा सप्तशती' है, जिसमें दुर्गा के अवतार एवं महिमा का वर्णन है.
- कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद् में अंगिरस ऋषि के शिष्य के रूप में एवं देवकी पुत्र के रूप में हुआ था.
- महाकाव्य काल में वैष्णव धर्म में भागवत सम्प्रदाय रूपान्तरित हो गया था. महाभारत की भूमिका वैष्णव धर्म के उत्थान में महत्वपूर्ण थी.
- महाभारत के 'नारायण उपाख्यान' से भागवत धर्म का प्रारम्भ माना जाता है. भागवत धर्म का सर्वप्रथम उल्लेख महाभारत के 'भीष्म पर्व' में हुआ था. विष्णु, नारायण, वासुदेव, कृष्ण आदि समन्वित नामों का उल्लेख भी 'भीष्म पर्व' में ही हुआ है.
- महाभारत में भागवत धर्म के लिए निम्नलिखित नामों का उल्लेख हुआ है—

1. नारायण,	2. पांचरात्र,
3. भागवत,	4. सात्वत.

- 'वैष्णव धर्म पर्व' नाम महाभारत के शान्ति पर्व एवं आदि पर्व का समन्वित नाम है.
- भागवत सम्प्रदाय का आधारभूत तत्व 'वैष्णव भक्ति' है, जिसके प्रमुख देवता विष्णु भगवान है.
- ऋग्वेद में 'विष्णु' का सर्वप्रथम उल्लेख किया है, जो भागवत काल में वासुदेव (कृष्ण) हो गये थे.
- श्वेताश्वतरोपनिषद् में वैष्णव भक्ति का संक्षिप्त उल्लेख प्राप्त होता है.
- शतपथ ब्राह्मण में विष्णु को सर्वश्रेष्ठ देवता के रूप में अंगीकृत किया गया है. भागवत सम्प्रदाय के काल में ऋग्वेद काल की अपेक्षा विष्णु को अधिक महान् माना गया था.

- पाणिनी के काल में कृष्ण का प्रारम्भिक नाम वासुदेव था और इसी के आधार पर उनके उपासकों को 'वासुदेवक' कहा जाता था.
- भागवत धर्म का अनुसरण करने वाला पुरुष 'भागवतम्' एवं स्त्री 'भागवती' कहलाती थी.
- वैष्णव धर्म का प्रधान मत 'पांचरात्र मत' था, जिसका आविर्भाव तृतीय शताब्दी ई. पू. हुआ. पांचरात्र संहिताएँ इनके प्रधान ग्रन्थ हैं, जिसमें वासुदेव के स्वरूप एवं आराधना के प्रकार वर्णित हैं.
- पांचरात्र मत को मानने वाले अनुयायी भगवान् नारायण एवं भागवत सम्प्रदाय के अनुयायी वासुदेव की आराधना करते हैं. पांचरात्र मत का मूल आधार व्यूहवाद है.
- चतुर्व्यूह में निम्नलिखित 4 की पूजा होती है—

  1. साम्ब, 2. संकर्षण,
  3. प्रद्युम्न, 4. अनिरुद्ध.
- 'हेलियोडोरस' तक्षशिला के यवन नरेश आंतियाल कीड्स का राजदूत था, जिसने आत्मनिग्रह, त्याग एवं सतर्कता अंकित 'गरुड ध्वज' को विष्णु मन्दिर में स्थापित किया था. वेसनगर (द्वितीय ई. पू.) अभिलेख में यह उल्लेख मिलता है.
- दक्षिण भारत के द्रविड़ वैष्णव 'अलवार' कहलाते थे जिन्हें अलवार सन्त भी कहा जाता था. अलवार सन्त भक्ति गीतों एवं भजनों के माध्यम से वैष्णव धर्म का प्रचार करते थे. 'दिव्यप्रबन्धम्' अलवार सन्तों की रचनाओं के संग्रह का नाम है.
- युक्ति एवं तर्क से अपने सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने वाले वैष्णव सन्त 'आचार्य' कहलाते थे. वैष्णव आचार्यों में 'रामानुज' का नाम सर्वोपरि है.
- गुप्त नरेश स्कन्दगुप्त, कुमारगुप्त, चन्द्रगुप्त II ने भागवत धर्म के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया एवं 'परम भागवत' की उपाधि धारण की.
- झाँसी में देवगढ़ का 'दशावतार मन्दिर' वैष्णव धर्म का महत्वपूर्ण स्मारक है, जिसे गुप्तकाल में बनाया गया था.
- वैष्णव धर्म में अवतारवाद को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है. अवतारवाद का उल्लेख सर्वप्रथम श्रीमद्भगवद्गीता में मिलता है.

भागवत एवं वैष्णव धर्म का मूलाधार : अवतारवाद

दोनों सम्प्रदायों का सर्वाधिक मौलिक आधार अवतारवाद था. जिसमें ईश्वरीय शक्ति के प्रादुर्भाव को प्रतिष्ठापित किया जाता था. अवतारवाद की अवधारणा अधर्म की वृद्धि एवं अनैतिकता के प्रसार होने पर प्रस्फुटित होती है. श्रीमद्भागवद्गीता के अनुसार[1] "भक्तों की रक्षा करने के लिए, पापियों के विनाश के लिए और धर्म की भली-भाँति स्थापना करने के लिए श्रीकृष्ण युग-युग में अवतरित होते हैं."

भागवत धर्म के अवतार

भागवत धर्म में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अवतारवाद की है. भागवत धर्म निम्नलिखित तीन प्रकार के अवतारों को अंगीकृत करता है—

1. पुरुषावतार 2. गुणावतार
3. लीलावतार

भागवत सम्प्रदाय में स्वीकृत ईश्वर के 5 रूप

भागवत सम्प्रदाय के अनुयायी ईश्वर के निम्नलिखित पाँच रूपों को मानते हैं—

1. परब्रह्म
2. अन्तर्यामी
3. विभव
4. अर्चावतार
5. व्यूह

अवतारवाद के 'पाँच प्रयोजन'

भागवत एवं वैष्णव धर्म सर्वाधिक महत्त्व अवतारवाद को देते हैं. इन सम्प्रदायों के अनुयायियों के अनुसार ईश्वर का अवतार होता है. भागवत सम्प्रदाय के अनुसार अवतार लेने के मूल में निम्नलिखित पाँच प्रयोजन हैं—

1. देवकार्य सम्पादन
2. प्राणियों को मोक्षदान
3. भक्तों पर कृपा एवं अनुग्रह
4. लीला के प्रसार के लिए
5. भक्तों से मैत्रीभाव स्थापनार्थ

भागवत सम्प्रदाय द्वारा प्रतिपादित नवधा भक्ति

भगवान विष्णु या कृष्ण की आराधना करने एवं प्रसन्न करने के लिए भागवत धर्म भक्ति पर जोर देता है. भागवत धर्म में भक्ति को इस धर्म की आत्मा माना गया है, जो मुक्ति के लिए आवश्यक है. भागवत् सम्प्रदाय में अग्रांकित भक्तियाँ मानी जाती हैं—(1) श्रवण, (2) कीर्तन, (3) स्मरण, (4) पाद सेवन, (4) अर्चन, (5) वन्दन, (6) दास्य, (7) सांख्य, (8) आत्मा, (9) निवेदन.

---

1 परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥
—श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक सं. 8

भागवत सम्प्रदाय की पाँच मुक्तियाँ

भागवत सम्प्रदाय में भक्ति से मुक्ति की अवधारणा प्रस्फुटित होती है. भागवत सम्प्रदाय में निम्नलिखित पाँच मुक्तियाँ मानी जाती हैं—

1. सालोक्य,
2. सामीप्य,
3. सार्ष्टि,
4. सारूप्य,
5. सायुज्य.

भागवत सम्प्रदाय में स्वीकृत चार प्रकार के भक्त

भागवत सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण ग्रन्थ श्रीमद्भागवद्गीता में भक्तों को चार भागों में वर्गीकृत किया गया है. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार चार भक्त[1] निम्नलिखित हैं—

1. आर्त (रोग निवारणार्थ भक्ति करने वाला)
2. जिज्ञासु (ज्ञान पाने की इच्छा रखने वाले भक्त)
3. अर्थार्थी (सांसारिक पदार्थों की इच्छा वाले भक्त)
4. ज्ञानी (परमेश्वर को जानने वाला भक्त)

- आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी तीन प्रकार के भक्त सकाम भक्ति करते हैं, जबकि ज्ञानी निष्काम भाव से भक्ति करते हैं.
- प्रभु की शरण में जाने को भागवत धर्म में 'प्रपत्ति' कहा जाता है, जो भागवत धर्म का अत्यधिक आवश्यक तत्व है.
- भागवत धर्म में 'नाम' की अत्यधिक महत्ता स्वीकारी गई है.

भागवत धर्म के सम्प्रदाय

भागवत धर्म के सम्प्रदाय निम्नलिखित हैं—

1. निम्बार्क सम्प्रदाय
2. माधवाचार्य सम्प्रदाय
3. वल्लभ सम्प्रदाय
4. गौडीय सम्प्रदाय
5. रामानन्द सम्प्रदाय
6. चैतन्य सम्प्रदाय.

- राम भक्ति में दास्य भाव एवं कृष्ण भक्ति में सखा भाव का सन्निवेश है. राम भक्ति परम्परा में दास्य भाव के सर्वोत्तम तुलसीदास एवं कृष्ण भक्ति परम्परा में सूरदास का स्थान सर्वोपरि है.

भागवत धर्म की प्रमुख उपलब्धियाँ

(1) भागवत धर्म के प्रचार एवं प्रसार से कला एवं संस्कृति के विकास के साथ भावनात्मक एकता का प्रादुर्भाव हुआ.

(2) भागवत धर्म के फलस्वरूप कर्मवादी व्यक्तित्व का प्रस्फुटन हुआ, जिससे सामाजिक परिवेश में परिवर्तन हुआ.

(3) जातिगत भेदभाव एवं छुआछूत तथा अस्पृश्यता जैसे तत्वों का उन्मूलन भागवत सम्प्रदाय से हो पाया.

(4) भागवत धर्म की भक्ति में स्वधर्म, स्वभूमि पर जोर दिया गया जिससे राष्ट्रीयता को बल मिला.

ब्राह्मण सम्प्रदाय (Brahmanism)

उत्तर वैदिक काल के अन्त में ब्राह्मण सम्प्रदाय का आविर्भाव हुआ. यह सम्प्रदाय मूलतः वैदिक धर्म का ही एक अंग था. प्राचीनकाल से ही धार्मिक व्यवस्थाओं पर ब्राह्मणों का एकाधिकार रहा है, जिसके फलस्वरूप इस सम्प्रदाय का नाम 'ब्राह्मण सम्प्रदाय' पड़ा. ब्राह्मण सम्प्रदाय में मौलिक तत्व के रूप में वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था को अंगीकृत किया गया था.

- ब्राह्मण सम्प्रदाय तीन भागों में वर्गीकृत है—
  1. वैष्णव
  2. शैव
  3. शाक्त
- इन सभी सम्प्रदायों में ब्रह्मचर्य, संन्यास, तप का सर्वाधिक महत्त्व परिलक्षित होता है.

शैव धर्म

- शैव सम्प्रदाय शिव की उपासना करने वाले व्यक्तियों के समुदाय द्वारा निर्मित हुआ था. शिव के स्वरूप का प्रस्फुटन वैदिक देवता रुद्र से हुआ था. ऋग्वेद में भी शिव के अर्थ में रुद्र का प्रयोग हुआ है.
- 'श्वेताश्वेतरोपनिषद' में शिव को **'विश्व का उपास्य'** माना गया है.
- वाजसनेय संहिता के 'शतरुद्रीय' मन्त्र में रुद्र को सारे विश्व का स्वामी बताया गया है.
- ब्राह्मण सम्प्रदाय के शैव धर्म के अनुसार शिव की आराधना भय एवं भक्ति से की जाती है. शिव सृष्टिकर्त्ता एवं संहारक माने गये हैं.
- ब्राह्मण ग्रन्थों में 'रुद्र' की गणना सर्वश्रेष्ठ देवता के रूप में की गई है, जिससे सभी देवता भी डरते थे. इसी के फलस्वरूप आगे चलकर उत्तर वैदिक काल में रुद्र, शिव से महादेव बन गये.

---

1 चतुर्विधा भजन्ति मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी, ज्ञानी च भरतर्षभ ॥
—श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 7, श्लोक 16

- शिव का द्विसत्तात्मक चरित्र है. एक तरफ शिव कैलाश पर्वत पर गम्भीर मुद्रा में तपस्या करते हैं. दूसरी तरफ साँप-बिच्छुओं को लटकाये, भूत-प्रेतों का साथ देते हुए मुण्डमालों को गले में लटकाकर शमशान में सुशोभित होते हैं.
- 'पाशुपत महेश्वर' नामक सम्प्रदाय की स्थापना 'लकुलिश' या लकुलिन ने की, जो आगे चलकर शिव सम्प्रदाय बना.
- शिव सम्प्रदाय के अनुसार कर्त्ता शिव, करण शक्ति एवं उत्पादन बिन्दु है.
- शिव सम्प्रदाय में निम्नलिखित चार पाद हैं—

  1. विद्या 2. क्रिया
  3. योग 4. चर्या
- शिव सम्प्रदाय में तीन पदार्थों को स्वीकारा जाता है—

  1. पति, 2. पशु,
  3. पाश.
- शिव सम्प्रदाय के अनुसार पति शिव, पशु जीवात्मा एवं पाश बन्धन है. जीव पाश से मुक्त होने पर ही शिव का निर्माण होता है.
- वामन पुराण एवं शैवागम के अनुसार शैव सम्प्रदाय निम्नलिखित 4 सम्प्रदायों में वर्गीकृत था—

  1. पाशुपत, 2. शैव,
  3. कापालिक, 4. कालामुख.
- शिव में अनार्य उर्वरण देवता के तत्वों का समवायत्व स्वरूप विद्यमान था.

पाशुपत

- शिव धर्म का सबसे प्राचीनतम सम्प्रदाय पाशुपत था. जिसे ई. पू. द्वितीय शताब्दी में[1] 'लकुनीश' (लकुलिन) ने स्थापित किया था.
- पाशुपत सम्प्रदाय का संस्थापक 'लकुनीश' (लकुलिन) भगवान शिव का 28वाँ एवं अन्तिम अवतार के रूप में स्वीकारा जाता रहा है.
- 'पंचाध्यायी' नामक ग्रन्थ पाशुपत सम्प्रदाय से सम्बन्धित था, जिसे लकुनीश या लकुलिश (लकुलिन) ने लिखा था.
- पाशुपत सम्प्रदाय के बारे में विस्तृत वर्णन वायुपुराण एवं महेश्वर के पाशुपत सूत्र में उल्लिखित है.
- पाशुपत सम्प्रदाय के लोग शिव प्रतीक के रूप में हाथ में एक लगुड एवं दण्ड धारण करते थे.
- पाशुपत सम्प्रदाय में शिव के प्रभावशाली एवं सौम्य स्वरूप की उपासना की जाती थी.
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार हर्षकालीन अहिच्छेत्र एवं सिन्ध की प्रजा पाशुपत सम्प्रदाय की अनुयायी थी.
- पाशुपत सम्प्रदाय 5 पदार्थों की सत्ता को सर्वोपरि मानता है. पाशुपत सम्प्रदाय के 5 पदार्थों की सत्ता निम्न थी—

  1. कार्य 4. विधि
  2. कारण 5. दुखान्त
  3. योग
- शिव सम्प्रदाय का पाशुपत सम्प्रदाय पूर्णतः सौम्य एवं उत्कृष्टतम सम्प्रदाय था, जिसका तेजी से विकास हुआ. प्रथम शताब्दी में पाशुपत सम्प्रदाय के अनुयायियों में कुषाण, शक, पल्लव राजा प्रमुख रूप से थे.

कापालिक

कापालिक सम्प्रदाय के लोग शिव की पूजा भैरव में करते थे. उनके अनुसार भैरव शिव के अवतार स्वरूप थे. भवभूति के 'मालतीमाधव' नाटक के अनुसार कापालिक सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र **श्री शैल** नामक स्थल था.

कापालिक सम्प्रदाय के लोग भैरव को नरमुण्डों की माला पहनाते थे. इस सम्प्रदाय के अनुयायी सुरापान करते थे एवं शरीर पर भस्मी लगाते थे. भैरव की पूजा मद्य से की जाती थी.

कालामुख

पूरी तरह कापालिकों से मेल खाते कालामुख भी अतिमार्गी एवं भयंकर प्रवृत्ति के लोग होते थे. शिवपुराण में कालामुख सम्प्रदाय के अनुयायियों के सन्दर्भ में 'महाव्रतधर' नाम का उल्लेख हुआ है.

शिव सम्प्रदाय के अन्य सम्प्रदाय

उपर्युक्त शैव सम्प्रदायों के अतिरिक्त अन्य सम्प्रदायों का भी अस्तित्व था. प्रायः शिव सम्प्रदाय से सम्बन्धित सभी धर्म शिव को किसी भी रूप, अवस्था में स्वीकार कर उपासना करते थे. अन्य शैव सम्प्रदायों में प्रमुख निम्नलिखित हैं—

1. लिंगायत सम्प्रदाय
2. कश्मीरी शैव सम्प्रदाय
3. नाथ सम्प्रदाय

लिंगायत सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय को वीर शैव सम्प्रदाय भी कहा जाता था. लिंगायत सम्प्रदाय में शिव के लिंग रूप की उपासना की जाती थी. लिंगायत सम्प्रदाय के अनुयायी शिवलिंग को चाँदी में रखकर गले में धारण करते थे. अल्लप्रभु एवं उनके शिष्य बसव को लिंगायत सम्प्रदाय का प्रवर्त्तक माना गया था.

---

1 पाशुपत सम्प्रदाय के प्रवर्तक के नाम विभिन्न पुस्तकों में लकुनीश, लकुलिश एवं लकुलिन मिलता है.

लिंगायत सम्प्रदाय के स्वीकरणीय तथ्य निम्नलिखित थे—

1. निष्काम कर्म करना.
2. शिव को परम तत्त्व के रूप में मानना.
3. जाँति-पाँति का खण्डन करते थे.
4. वेदों के अस्तित्व को नकारते थे.
5. पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं रखते थे.
6. गुरु पर सर्वाधिक आस्था थी.

कश्मीरी शैव सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय को त्रिक, प्रत्यभिज्ञा दर्शन या स्कन्द के नाम से भी पहचानते हैं. कश्मीर शैव सम्प्रदायी ज्ञान और ध्यान को परमात्मा प्राप्ति का मूल साधन मानते थे. कश्मीरी शैव सम्प्रदाय की स्थापना वसुगुप्त के द्वारा हुई थी. यह सम्प्रदाय पूर्णतः ज्ञानमार्गी एवं दर्शन मूलक था. कश्मीरी शैव सम्प्रदाय के अनुयायी शिव को अद्वैत शक्ति के रूप में मानते थे. इस सम्प्रदाय के अनुयायी कापालिक सम्प्रदाय के लोगों से घृणा करते थे.

नाथ सम्प्रदाय

- शिवधर्म का यह सम्प्रदाय हठयोग या सहजयान सिद्धि के नाम से भी प्रसिद्ध है. 'मत्स्येन्द्रनाथ' नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक थे, जिन्होंने 'योगिनी कौल' नामक सिद्धान्त को प्रतिपादित किया था.
- मत्स्येन्द्रनाथ के अनुसार शिव आदिनाथ है एवं अन्य नौ नाथ दिव्य पुरुष हैं.
- मत्स्येन्द्रनाथ के योगिनी कौल नामक सिद्धान्त के अनुसार शिव अकुल है एवं उनकी शक्ति कुल है. दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं. एक दूसरे के बिना उनका रहना असम्भव है. अकुल एवं कुल के संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति होती है, ये दोनों स्त्री-पुरुष के प्रतीक स्वरूप हैं.
- मत्स्येन्द्रनाथ के नाथ सम्प्रदाय की साधना वज्रयान बौद्ध सम्प्रदाय से पूर्ण साम्यता रखती थी, जिसके कारण मत्स्येन्द्रनाथ को 'अवलोकितेश्वर' के अवतार के रूप में माना गया था.
- मत्स्येन्द्रनाथ को तिब्बत में 'सिद्धलुईपाद' के नाम से जाना जाता था.
- नाथ सम्प्रदाय को सर्वाधिक बल गोरखनाथ से प्राप्त हुआ. गोरखनाथ ने **'योगमार्ग'** एवं **'गोरक्षा सिद्धान्त'** संग्रह नामक ग्रन्थ की संरचना की. गोरखनाथ के अनुसार "शिव परम तत्व हैं, जो सृष्टि के दौरान शक्ति में परिवर्तित हो जाते हैं."

नाथ सम्प्रदाय की पाँच शक्तियों की स्थितियाँ

गोरखनाथ ने नाथ सम्प्रदाय में अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था. उनके अनुसार शक्ति की अग्रलिखित पाँच स्थितियाँ हैं—

(1) निजा (परम शिव में ध्यानावस्था)
(2) परा (साक्षात्कार की कला)
(3) अपरा (अभिव्यक्ति का तरीका)
(4) सूक्ष्मा (अभिमान का आविर्भाव)
(5) कुण्डली (अभिमान जाग्रत करने की क्रिया)

नाथ सम्प्रदाय में शिव के पाँच रूप

गोरखनाथ शिव को पाँच रूपों में स्वीकार करते हैं—

1. अपरा
2. परम
3. शून्य
4. निरंजन
5. परमात्मा

कुण्डलिनी जागृति का सिद्धान्त नाथ सम्प्रदाय में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है.

शिव में आनन्द के पाँच स्तर

- गोरखनाथ शिव में आनन्द के निम्नलिखित पाँच स्तरों को स्वीकारते हैं—

  1. परमानन्द,
  2. प्रबोध,
  3. चिदुदय,
  4. प्रकाश,
  5. सोहं.

- शिव के पाँच रूपों में ईशान, तत्पुरुष, घोर, कामदेव एवं सद्योजात शामिल है. सद्योजात शिव के पैर, कामदेव गुह्य अंग, ईशान शिव का मस्तिष्क, तत्पुरुष मुख एवं घोर हृदय के रूप में माना जाता है.

शाक्त धर्म

- देवी शक्ति की उपासना करने वालों को शाक्त कहा जाता है और उनके द्वारा अनुमोदित सिद्धान्त शाक्त धर्म के अन्तर्गत आते हैं. ऋग्वेद के दशम मण्डल का पूरा सूक्त देवी उपासना पर आधारित है.
- देवी का उल्लेख सर्वप्रथम अम्बिका के रूप में वाजसनेयी संहिता में हुआ है.
- शाक्त धर्म के अनुयायी देवी को ब्रह्मा, विष्णु, महेश का अंश मानते हैं. जिसके कारण सृजन, पालन, संहार में देवी की भूमिका को वे सर्वोपरि मानते हैं. इसी अवधारणा के कारण देवी को 'जगमाता' कहा गया है.
- 'अर्द्धनारीश्वर' शिव और शक्ति दोनों के समन्वय का प्रतीक है.
- मार्कण्डेय पुराण के अनुसार शक्ति के तीन रूप हैं—

  1. महालक्ष्मी,
  2. महाकाली,
  3. महासरस्वती.

- शाक्त सम्प्रदाय के अनुयायी शक्ति के दो रूप मानते हैं उग्र एवं सौम्य.

उग्रस्वरूप में देवी का सम्बोधन	सौम्यरूप में देवी का सम्बोधन
1. दुर्गा	1. उमा
2. चामुण्डा	2. गौरी
3. काली	3. अन्नपूर्णा
4. भवानी	4. पार्वती
5. चण्डी	

- जनसाधारण शक्ति के सौम्य स्वरूप को एवं घोरपंथी अनुयायी शक्ति के उग्ररूप की उपासना करते हैं.
- शक्ति के 'काम स्वरूप की भी उपासना' शाक्त धर्मावलम्बी करते हैं. इस स्वरूप में वे देवी को त्रिपुरसुन्दरी, ललिता, भैरव सुन्दरी तथा शिव को आनन्द भैरव के रूप में मानते हैं.
- शाक्त सम्प्रदाय के अनुयायियों के अनुसार जगत् की उत्पत्ति में महाभैरव (शिव) एवं महाभैरवी (देवी) की प्रधानता होती है.
- शाक्त सम्प्रदाय दो वर्गों में वर्गीकृत था—
  1. कौलिक (कौल मार्गी)
  2. समयी अथवा समयाचारी.
- कौलिक या कौल मार्गी मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन की उपासना करते थे, जिसे पंचमकार उपासना भी कहते हैं.
- समयी या समयाचारी अपना पूरा समय अन्तर्साधना में बिताते हैं.
- मार्कण्डेय पुराण में उल्लिखित 'दुर्गा सप्तशती' दुर्गा की उपासना से सम्बन्धित है. जिसका नवरात्रा में प्रयोग किया जाता है इसे देवी भागवत भी कहते हैं.
- सौन्दर्य लहरी में शंकराचार्य ने कामप्रधान उपासना के लिए शक्ति के अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन किया है.
- शक्ति पूजा के तीन प्रधान केन्द्र हैं—
  1. कश्मीर 2. काँची
  3. कामाख्या (असम) (कौल मत का केन्द्र)
- श्रीविद्या के प्रधानपीठ 2 हैं—
  1. कश्मीर 2. कांची.
- शाक्त दर्शन में निम्न 4 शक्ति तत्वों की प्रधानता है—
  1. मूल विन्दु (सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का मौलिक तत्व)
  2. नाद (विन्दु से प्रादुर्भूत तत्व)
  3. श्वेत विन्दु (पुरुष से सम्बन्धित)
  4. रक्त विन्दु (स्त्री से सम्बन्धित)
- मूल विन्दु, नाद, श्वेत विन्दु, रक्त विन्दु इन चारों तत्वों के समवायत्व स्वरूप से 'कामकला' का प्रस्फुटन होता है, जो सृष्टि के मूल में अत्यावश्यक है.

अन्य ब्राह्मण सम्प्रदाय

(i) गणपति (गणपत्य) सम्प्रदाय

- गणेश की उपासना करने वाले लोगों का गणपति या गणपत्य सम्प्रदाय है. ब्राह्मणस्पति में गणेश का उल्लेख मिलता है. पौराणिक कथाओं के अनुसार अम्बिका गणेश की माता एवं शिव पिता हैं.
- गणपति सम्प्रदाय के अनुयायियों के अनुसार गणेश की उपासना करने से व्यक्ति वाधाओं से मुक्त हो जाता है.

अन्य ब्राह्मणेतर सम्प्रदाय

अन्य ब्राह्मण धर्म के अतिरिक्त सम्प्रदायों में चार्वाक एवं आजीवक सम्प्रदाय का नाम प्रमुख था. दोनों सम्प्रदाय ब्राह्मण धर्म की आडम्बरपूर्ण शैली की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुए थे.

आजीवक सम्प्रदाय

- बौद्ध धर्म के प्रारम्भिक चरण में बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा आलोचक सम्प्रदाय आजीवक सम्प्रदाय था, जिसकी स्थापना मुक्खलि गोशाल (मक्खलि घोषाल) द्वारा की गई थी.
- आजीवक सम्प्रदाय ब्राह्मणवाद की अवधारणा का भी उत्कट विरोधी था, जिसके फलस्वरूप इस सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार में अनवरत ब्राह्मण धर्म का विरोध दृष्टिगत होता रहा.
- ई. पू. 5वीं शताब्दी में आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायियों की संख्या बौद्ध धर्म के अनुयायियों से अधिक थी.
- आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायियों में भेदभाव एवं जातिप्रथा का अस्तित्व नहीं था, जिसके कारण आजीवक सम्प्रदायी सभी धर्म, जाति, अछूत एवं नीचों में लोकप्रिय था.
- गोशाल (घोषाल) की तुलना पालि ग्रन्थों में मछुआरे के साथ की गई है.
- कौशल की राजधानी श्रावस्ती का एक धनी साहूकार मिगारा आजीवकों का संरक्षक था, जो कालान्तर में बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया. यह बुद्ध घोष ने अभिव्यक्त किया था.

आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक गोशाल (घोषाल) के सिद्धान्त

(1) गोशाल (घोषाल) के अनुसार मानवीय प्रयास मात्र सान्त्वना है. भाग्य के आगे सारा संसार असहाय एवं व्यर्थ है.

(2) मानव जाति के कष्टों एवं दरिद्रता की मुक्ति के लिए किसी भी तर्क में उसका विश्वास नहीं था.

(3) गोशाल (घोषाल) संसार की विशुद्धि के सिद्धान्त का समर्थक था. जिसके अनुसार सभी प्रकार के अस्तित्वों में से गुजरने से ही शुद्धि सम्भव है.

(4) गोशाल (घोषाल) के मतानुसार सभी प्रकार के जीवों की नियति संसार से गुजरना है. चक्र के पूरा होने पर दुःखों का अन्त हो जाता है.

भौतिकवाद (लोकायत या चार्वाक) सम्प्रदाय

- भौतिकवादी सम्प्रदाय एकमात्र जड़वादी सम्प्रदाय है, जो अध्यात्म से किसी भी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं रखता.
- इस सिद्धान्त के अनुसार भूत ही चरम सत्ता है, जिससे चैतन्य का आविर्भाव होता है.
- भौतिकवादी सम्प्रदाय के प्रणेता महाभारत एवं अन्य धर्म ग्रन्थों के अनुसार देवताओं के गुरु बृहस्पति थे. जड़वाद की मीमांसा में बृहस्पति ने बारह सूत्रों को लिखा था.
- लोकायत चार्वाक का पर्यायवाची शब्द है, जिसका अर्थ साधारण व्यक्ति है. साधारण व्यक्ति में निहित अर्थ से तात्पर्य है विकृत एवं निम्नस्तरीय रुचियों वाला व्यक्ति.
- भौतिकवादी या चार्वाक दर्शन अनीश्वरवादी, सुखवादी, नास्तिक, प्रत्यक्षवादी सम्प्रदाय है. 'खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ' का सिद्धान्त इसका प्रमुख सिद्धान्त है.
- भौतिकवादी सम्प्रदाय नास्तिक शिरोमणि के नाम से सर्वज्ञात है.
- भौतिकवादी या चार्वाक सम्प्रदाय की सबसे महत्वपूर्ण उक्ति है—प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्[1] (Perception is the only source of knowledge)

भौतिकवादी सम्प्रदाय की शिक्षाएँ

(1) अन्य सम्प्रदायों में पञ्चमहाभूतों को माना जाता है, लेकिन भौतिकवादी या चार्वाक सम्प्रदाय निम्न 4 तत्वों को विश्व के निर्माण के मूल में मानता है—

1. पृथ्वी, 2. जल,
3. अग्नि, 4. वायु.

आकाश अप्रत्यक्ष है, अतः चार्वाक उसे नहीं स्वीकारता.

(2) चार्वाक प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है. प्रत्यक्ष के अलावा चार्वाक किसी पर विश्वास नहीं करता.

(3) चार्वाक के अनुसार ईश्वर, आत्मा, स्वर्ग, कर्म इत्यादि मात्र कल्पनाएँ हैं. इनमें कुछ भी यथार्थ नहीं है, क्योंकि ये सभी अप्रत्यक्ष हैं.

(4) चार्वाक धर्म को पुरोहितों एवं ब्राह्मणों की आजीविका का साधन मानता है.

(5) चार्वाक के अनुसार वेद के लेखक स्वार्थी, धूर्त, राक्षस एवं पापी थे, जिन्होंने अपनी आजीविका के लिए वेदों को लिखा.

(6) चार्वाक चार पुरुषार्थों में से धर्म, मोक्ष को स्वीकार नहीं करता. वह सिर्फ काम और अर्थ को ही सब कुछ मानता है.

(7) मदिरा, कामिनी, शारीरिक सुख ही सबसे बड़ा सुख है एवं रमणियाँ भोग विलास की वस्तु हैं—यह चार्वाक का मानना है.

(8) चार्वाक के अनुसार वेद अप्रामाणिक ग्रन्थ हैं, जो बलि, अश्लील गतिविधियों से परिपूर्ण हैं.

(9) चार्वाक के अनुसार कामिनी के आलिंगन से प्राप्त सुख ही परम सुख है.

(10) चार्वाक अनुमान पर विश्वास नहीं करता और अप्रत्यक्ष चीजें सभी काल्पनिक हैं.

(11) चार्वाक के अनुसार मस्तिष्क पदार्थ का उत्पादन है.

निष्कर्ष—आध्यात्मिक क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा में लगातार नये-नये धर्मों का आविर्भाव होता रहा है. सभी के सिद्धान्तों में साम्यता एवं मतभेद भी लगभग हमेशा से रहा है. इसी शृंखला में जड़वाद की दिशा में चार्वाक दर्शन पूरी तरह अलग एवं विकृत जीवन व्यवस्था है, जिसका एकमात्र लक्ष्य मौज-मस्ती है. साधारण लोगों की जीवनचर्या में भले ही यह अस्तित्व में आ गया हो, तथापि बौद्धिक परिवेश में इस वेद विरोधी सम्प्रदाय को कभी नहीं स्वीकारा गया.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

षड्दर्शन

1. न्याय दर्शन — प्रवर्तक गौतम, मूलग्रन्थ—गौतम का न्याय सूत्र
2. वैशेषिक — प्रवर्तक कणाद, मूलग्रन्थ—वैशेषिक सूत्र (कणादका)
3. सांख्य दर्शन — प्रवर्तक कपिल, मूलग्रन्थ—सांख्य सूत्र (कपिलमुनि)
4. योगदर्शन — प्रवर्तक पतञ्जलि, मूलग्रन्थ—योगसूत्र (पतञ्जलिकृत)
5. मीमांसा — प्रवर्तक जैमिनी, मूलग्रन्थ—पूर्वमीमांसा सूत्र (जैमिनीकृत)
6. उत्तर मीमांसा — प्रवर्तक वादरायण, मूलग्रन्थ—वेदान्तसूत्र (वादरायणकृत)

1 Indian Philosophy
—Dr. Radha Krishnan, Vol. I, Page 278

सोलह संस्कार

1. गर्भाधान	9. चूड़ाकर्म
2. पुंसवन	10. उपनयन
3. सीमान्तोन्नयन	11. वेदारम्भ
4. जातकर्म	12. केशान्त
5. नामकरण	13. समावर्तन
6. निष्क्रमण	14. विद्यारम्भ
7. अन्नप्राशन	15. विवाह
8. कर्णवेध	16. अन्त्येष्टि

आश्रम व्यवस्था

1. ब्रह्मचर्याश्रम (प्रथम 25 वर्ष)
2. गृहस्थाश्रम (25 से 50 वर्ष)
3. वानप्रस्थाश्रम (50 से 75 वर्ष)
4. संन्यासाश्रम (75 वर्ष से 100 वर्ष)

विवाह के प्रकार

1. ब्रह्म विवाह — योग्य वर को आमन्त्रित कर विधि-विधान से शादी करना.
2. दैव विवाह — यज्ञकर्ता पुरोहित को आमन्त्रित कर विधान से उसको कन्यादान करना.
3. आर्ष विवाह — ऋषि से बैल एवं गाय लेकर ऋषि के साथ कन्या की माता-पिता द्वारा शादी करना.
4. प्रजापत्य विवाह — वर की विधिपूर्वक पूजा कर कन्या के साथ सम्मान से शादी करना एवं वंशवृद्धि की कामना करना.
5. गान्धर्व विवाह — युवक-युवती का भाग कर प्रेम विवाह करना जिसमें माता-पिता की अनुमति नहीं ली जाती.
6. आसुर विवाह — कन्या के पिता को वर द्वारा दहेज देकर विवाह करना.
7. राक्षस विवाह — अपहरण कर विवाह करना.
8. पैशाच विवाह — सोती हुई कन्या के साथ सम्भोग करना.

पंच महायज्ञ

1. ब्रह्म यज्ञ — वेदाध्ययन एवं आध्यात्मिक सत्कर्मों से विद्वान् ऋषियों को सम्मान देना.
2. पितृ यज्ञ — तर्पण, श्राद्ध द्वारा पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करना.
3. देव यज्ञ — आहुति एवं बलि द्वारा देवताओं की पूजा-अर्चना करना.
4. भूत यज्ञ — विभिन्न दिशाओं में पशु-पक्षियों को दाना रखना एवं अनिष्टकारी शक्तियों से बचने के लिए प्रार्थना करना.
5. नृ यज्ञ — घर आने वाले अतिथि का सत्कार करना.

त्रि-ऋण

	ऋण	मुक्ति के उपाय
1.	ऋषि ऋण	यज्ञ अनुष्ठान
2.	देव ऋण	वेदाध्ययन
3.	पितृ ऋण	विधान द्वारा विवाह कर सन्तान पैदा करना.

चार युग

1. सतयुग,	2. त्रेता युग,
3. द्वापर युग,	4. कलियुग.

पंचायतन देवता

1. सूर्य,	4. विष्णु,
2. शिव,	5. गणेश.
3. शक्ति,	

शैव धर्म के प्रमुख मन्दिर एवं निर्माता

	मन्दिर	निर्माता
1.	वृहदीश्वर शिव मन्दिर (तंजौर)	चोल नरेश राजराज I
2.	कैलाश मन्दिर (ऐलोरा)	राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण प्रथम
3.	सोमनाथ मन्दिर (काठियावाड़)	चालुक्य नरेश भीम I
4.	कन्दरिया महादेव मन्दिर (खजुराहो)	चन्देल नरेश धंग चन्देल द्वारा
5.	सिद्धेश्वर महादेव	प्रतिहार नरेश

जैन धर्म के 24 तीर्थंकर

1. ऋषभदेव
2. अजितनाथ
3. साम्बनाथ
4. अभिनन्दन
5. सुमतिनाथ
6. पद्मप्रभु
7. सुपार्श्वनाथ
8. चन्द्रप्रभु
9. सुविधिनाथ
10. शीतलनाथ
11. श्रेयांशनाथ
12. वसुपूज्य
13. विमलनाथ
14. अनन्तनाथ
15. धर्मनाथ
16. शान्तिनाथ
17. कुन्थुनाथ
18. अरिनाथ
19. मल्लिनाथ
20. मुनिसुव्रतनाथ
21. नेमिनाथ
22. अरिस्ट नेमि
23. पार्श्वनाथ
24. महावीर

जैन धर्म के त्रिरत्न

1. सम्यक् दर्शन
2. सम्यक् ज्ञान
3. सम्यक् चरित्र

जैन धर्म के पाँच महाव्रत

1. सत्य
2. अहिंसा
3. अपरिग्रह
4. अस्तेय
5. ब्रह्मचर्य (महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया)

जैन धर्म में निषेधित अठारह पाप

1. हिंसा
2. झूठ
3. चोरी
4. परिग्रह
5. मैथुन
6. क्रोध
7. मान
8. माया
9. लोभ
10. राग
11. द्वेष
12. कलह
13. दोषारोपण
14. चुगलखोरी
15. असंयम
16. निन्दा
17. छलकपट
18. मिथ्यादर्शन

जैन संघ के चार सदस्य

1. भिक्षु
2. भिक्षुणी
3. श्रावक
4. श्राविका

महावीर स्वामी के गणधर

1. अग्निभूति
2. भवभूति
3. इन्द्रभूति
4. गौत्तम
5. प्रद्रास
6. अलचमृत
7. मेदार्य
8. आर्याप्यक
9. मण्डिक
10. सुद्धर्म
11. मौर्यपुत्र
12. अकम्पी

जैन दर्शन द्वारा स्वीकृत सात तत्व

1. जीव या आत्मा
2. अजीव
3. आस्त्रव
4. संवर
5. निर्जरा
6. वंध
7. मोक्ष

बौद्ध धर्म के चार आर्यसत्य

1. दु:ख
2. दु:ख समुदाय
3. दु:ख निरोध
4. दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दस शील

1. अहिंसा
2. सत्य
3. अस्तेय
4. अपरिग्रह
5. व्यभिचार से बचना
6. नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना
7. असमय भोजन नहीं करना
8. सुखप्रद विस्तर का त्याग
9. नाच गान से बचना
10. ब्रह्मचर्य का पालन करना

बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वाणी
4. सम्यक् कर्म
5. सम्यक् अजीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

बौद्ध धर्म में प्रतीत्यसमुत्पाद के अन्तर्गत आने वाले अंग

1. अविद्या	2. संस्कार
3. विज्ञान	4. नामरूप
5. षडायतन	6. स्पर्श वेदन
7. तृष्णा	8. उणदान
9. भव	10. जाति
11. जरा	12. मरण

महात्मा बुद्ध के प्रमुख शिष्य

पुरुष शिष्य :

1. सारिपुत्र	2. आनन्द
3. मौदगल्यायन	4. उपालि
5. अनुरुद्ध	6. सुनीति
7. अनाथपिण्डक	8. बिम्बिसार
9. जीवक	10. अजातशत्रु
11. महाकश्यप	12. प्रसेनजित

शिष्याएं

1. महाप्रजापति गौतमी	2. विशाखा
3. आम्रपाली	4. यशोधरा
5. नन्दा	6. खेमा

महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित सात बोध्यंग

1. स्मृति	2. धर्मविचय
3. वीर्य	4. प्रीति
5. प्रश्रब्धि	6. समाधि
7. उपेक्षा	

महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित पाँच इन्द्रियाँ

1. श्रद्धा	2. वीर्य
3. स्मृति	4. समाधि
5. प्रज्ञा	

महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित पाँच बल

1. श्रद्धा बल	2. वीर्य बल
3. स्मृति बल	4. समाधि बल
5. प्रज्ञा बल	

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- लगभग 62 सम्प्रदायों का आविर्भाव छठी शताब्दी ई. पू. में गंगा घाटी में हुआ, जिसका केन्द्र मगध था.
- अक्रियावाद एवं नियतिवाद के समन्वित स्वरूप का प्रस्फुटन आजीवक सम्प्रदाय के रूप में मक्खलि गोशाल ने किया.
- यदृच्छावाद एवं भौतिकवाद ही कालान्तर में चार्वाक दर्शन के रूप में प्रस्फुटित हुए.
- सांख्यवाद प्रणेता पूरण काश्यप के अनुसार कर्मों का कोई फल नहीं मिलता.
- मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य ने श्रवणबेलगोला (मैसूर) में राज्य में अकाल पड़ जाने के कारण उपेवास द्वारा आत्महत्या (सल्लेखन) की थी.
- वैदिक धर्म में धर्म के सुधरे हुए स्वरूप के रूप में भागवत सम्प्रदाय एवं शिव भागवत सम्प्रदाय नामक सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ.
- कपिलवस्तु के लुम्बिनी ग्राम में 563 ई. पू. महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ, जिन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की.
- महात्मा बुद्ध के प्रथम गुरु अलारा कलामा एवं दूसरे गुरु रुद्रक रामपुत्र थे.
- बाणभट्ट के 'हर्षचरितम्' के अनुसार हर्षकाल में थानेश्वर नगर का प्रत्येक व्यक्ति शैव उपासक था.
- महात्मा बौद्ध कपिलवस्तु के शाक्य वंश में पैदा हुए थे, अतः उन्हें शाक्य भी कहा जाता था.
- 29 वर्ष की उम्र में महात्मा बुद्ध ने गृहत्याग किया, जिसे **महाभिनिष्क्रमण** कहा जाता है.
- ऋषिपत्तन (सारनाथ) में बुद्ध द्वारा दिये गये प्रथम उपदेशों को **धर्मचक्र प्रवर्तन** कहा गया.
- बौद्ध की मृत्यु 80 वर्ष की उम्र में कुशीनगर में हुई, जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कुसिया ग्राम में है. बौद्ध की मृत्यु **महापरिनिर्वाण** कहलाती है.
- सुअर का माँस खाने से बुद्ध की मृत्यु हुई. इस आशय का विवरण पालि साहित्य में प्राप्त होता है.
- तापस एवं भल्लुक ये दो बन्जारे बुद्ध के सबसे पहले अनुयायी थे.
- गौतमी बुद्ध की मौसी थी, जिसने संघ में स्त्री सदस्य के रूप में सर्वप्रथम प्रवेश लिया.
- कौशल की राजधानी श्रावस्ती में बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश दिये.
- अंग जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री विशाखा बौद्ध धर्म की संरक्षिका थी, जिसने पूर्वाराम विहार का निर्माण कराया. जहाँ पर बौद्ध धर्मानुयायी विश्राम करते थे.

- बुद्ध के अनुसार अधिक तप एवं अधिक विलासिता को त्यागकर मध्यम मार्ग का अनुसरण करना चाहिए.
- बुद्ध धर्म, संघ बौद्ध धर्म के त्रिरत्न के रूप में जाने जाते हैं.
- धर्मचक्र प्रवर्तन के पश्चात् सारनाथ में बौद्ध ने एक संघ की स्थापना की, जिसके सदस्य बौद्ध के प्रथम पाँच साथी थे.
- बौद्ध संघ में प्रवेश लेने की प्रणाली को प्रवज्या कहा जाता था.
- बौद्ध की ज्ञान प्राप्ति का वृक्ष बोधिवृक्ष को गौड़ देश के शिव भक्त शशांक द्वारा काटा गया था.
- भिक्षु महाकश्यप की अध्यक्षता में 483 ई. पू. में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन राजगृह की सप्तपर्णि गुहा में किया गया.
- वैशाली के चुल्लवग्ग में 383 ई. पू. रेवतस्थविर की अध्यक्षता में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया.
- 250 ई. पू. में तृतीय बौद्ध संगीति मोग्गलिपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई.
- काश्मीर के कुण्डलवन में प्रथम शताब्दी ई. में वसुमित्र की अध्यक्षता में चतुर्थ संगीति आयोजित की गई.
- सातवीं शताब्दी में हर्ष के कद के बराबर की बुद्ध की सोने की प्रतिमा बुर्ज में स्थापित की गई.
- बौद्ध धर्म का मूल तत्त्व 'प्रतीत्यसमुत्पाद' है. जिसके अनुसार संसार की सभी वस्तुएँ कार्य और कारण पर निर्भर करती हैं.
- कनिष्क के शासनकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति के दौरान बौद्ध धर्म हीनयान और महायान दो सम्प्रदायों में वर्गीकृत हो गया.
- हीनयान का शाब्दिक अर्थ निम्न मार्ग एवं महायान का शाब्दिक अर्थ उत्तम मार्ग है.
- महायान सम्प्रदाय में तन्त्र-मन्त्र का समावेश हो जाने से वज्रयान, मन्त्रयान, सहजयान, कालचक्रयान आदि सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ.
- कालचक्रयान के अनुसार करुणा एवं प्रज्ञा बुद्ध के दो लक्षण हैं.
- महायान मूर्तिपूजा के प्रबल पक्षधर थे, जबकि हीनयान मूर्तिपूजा के प्रबल विरोधी थे.
- जैन एवं बौद्ध धर्म दोनों नास्तिक एवं अनीश्वरवादी थे एवं दोनों धर्मों का आविर्भाव छठी शताब्दी ई. पू. में हुआ.
- कुषाणों के शासनकाल में पुरुषपुर बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था.
- प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य पालि भाषा में तीन खण्डों में संकलित है. जिन्हें त्रिपिटक कहा जाता है.
- सुत्तपिटक के खुद्दक निकाय का एक अंग जातक कथाएँ हैं. जिसमें बुद्ध के पूर्व जन्म की 547 कहानियाँ हैं. इस जातक में 21 खण्ड हैं.
- बौद्ध संघ की अनुचित गतिविधियों एवं ब्राह्मण धर्म के आविर्भाव के फलस्वरूप बौद्ध धर्म का पतन हो गया.
- जैनधर्म के संस्थापक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे, लेकिन इस धर्म को संगठित एवं विकसित जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर ने किया.
- पार्श्वनाथ 23वें जैन तीर्थंकर थे, जिनका जन्म महावीर से 250 ई. पू. काशी के राजा अश्वसेन के घर पर हुआ.
- महावीर स्वामी के पिताजी पार्श्वनाथ के अनुयायी थे.
- पार्श्वनाथ के अनुयायियों को **निर्ग्रन्थ** कहा जाता था.
- 540 ई. पू. वैशाली के निकट कुण्डग्राम में ज्ञांतृक कुल में सिद्धार्थ के घर पर महावीर स्वामी का जन्म हुआ, जिनका प्रारम्भिक नाम वर्द्धमान था.
- पिता की मृत्यु के बाद भाई नन्दिवर्धन से आज्ञा लेकर महावीर स्वामी ने 30 वर्ष की उम्र में संन्यास लिया, जिसे महापरिभिनिष्क्रमण कहा जाता है.
- संन्यास के 11 मास बाद महावीर स्वामी ने अपने वस्त्रों का परित्याग कर नग्नावस्था में रहना प्रारम्भ किया.
- महावीर स्वामी की प्रथम भिक्षुणी चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना थी.
- महावीर स्वामी के पश्चात् जैन संघ का कार्यभार सुधर्मन ने ग्रहण किया.
- सुधर्मन के पश्चात् जम्बू जैन ने संघ के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया.
- 72 वर्ष की उम्र में पावा राजगृह के पास मल्ल राजा सस्तिपाल के राजाप्रासाद में 648 ई. पू. में महावीर स्वामी की मृत्यु हो गई.
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ को अपनी तपस्या के 84वें दिन सम्मेय पर्वत पर ज्ञान की प्राप्ति हुई.
- भिक्षुणी संघ की पार्श्वनाथ के काल में पुष्पचूला अध्यक्षा थी.
- महावीर स्वामी ने राजगृह के निकट विपुलाचल पहाड़ियों पर अपना प्रथम उपदेश दिया.
- पार्श्वनाथ के मूलभूत सिद्धान्त सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह अस्तेय में महावीर स्वामी ने ब्रह्मचर्य पालन को जोड़कर मूलभूत सिद्धान्तों को पाँच महाव्रत का नाम दिया.
- सम्यक् श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र जैन धर्म के त्रिरत्न के रूप में स्वीकार किये गये हैं.
- जैन दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष, अनुमान एवं तीर्थंकरों द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है.
- काया क्लेश में उपवास के द्वारा आत्महत्या करना जैन दर्शन में 'सल्लेखन' के नाम से जानी जाती है.
- जैन धर्म निवृत्तिमार्गी एवं अनीश्वरवादी है, इनके अनुसार ईश्वर सृष्टिकर्ता नहीं हैं.
- इन्द्रियों पर विजय प्राप्ति के अर्थ में जिन शब्द का प्रयोग होता था, जिसके फलस्वरूप जैन शब्द का आविर्भाव हुआ.
- अव्रती, अणुव्रती, सर्वव्रती—महावीर स्वामी ने मनुष्यों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया है.
- चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में महावीर स्वामी के पश्चात् जैन धर्म श्वेताम्बर एवं दिगम्बर दो सम्प्रदायों में वर्गीकृत हो गया.
- महावीर स्वामी का दामाद 'जमालि' (जामालि) जैन संघ का सबसे पहला विच्छेदक था.

- प्रथम जैन परिषद् तृतीय शताब्दी ई. पू. स्थूलभद्र द्वारा पाटलिपुत्र में आयोजित की गई.
- द्वितीय जैन परिषद् देवार्धिगण नामक जैन साधु की अध्यक्षता में 518 ई. में बल्लभी गुजरात में सम्पन्न हुई.
- जैन साहित्य में चार सूत्र एवं द्वादश अंग का स्थान सर्वोपरि आता है.
- महावीर स्वामी के समय में उनके अनुयायियों की संख्या 14,000 हो गई थी.
- 57 फुट ऊँची गोमटेश्वर की विशाल प्रतिमा का निर्माण 10वीं शताब्दी में गंग नरेशों ने कराया था.
- तपश्चर्या की कठोरतम पद्धति एवं बौद्ध तथा भागवत धर्म के प्रादुर्भाव से जैन धर्म का पतन हो गया.
- जैन धर्म की प्रचार भाषा प्राकृत थी.
- जैन संघ में त्यागियों का निष्क्रमण संस्कार होता था.
- भागवत सम्प्रदाय के प्रवर्तक वृष्णि शाखा (सात्वत) के प्रधान वासुदेव माने जाते हैं एवं इस सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र मथुरा माना गया है.
- ईसा की चतुर्थ शताब्दी में अस्तित्व में आई श्रीमद्भागवद्गीता भागवत धर्म के मूल ग्रन्थ के रूप में जानी जाती है.
- श्रीमद्भागवद्गीता के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञानमार्ग कर्ममार्ग एवं भक्तिमार्ग को अपनाना आवश्यक होता है.
- भागवत पुराण के लेखक केशवदास हैं, जो अट्ठारह पुराणों में सबसे प्रमुख एवं कृष्ण पर आधारित ग्रन्थ है.
- देवी भागवत के रूप में भागवत सम्प्रदाय में दुर्गा सप्तशती को अंगीकृत की गई है.
- महाभारत के नारायण उपाख्यान से भागवत सम्प्रदाय का आरम्भ हुआ था. भागवत धर्म का सबसे पहले उल्लेख भीष्म पर्व में हुआ है.
- भागवत धर्म का अनुसरण करने वाला पुरुष भागवतम् एवं स्त्री भागवती कहलाती थी.
- पांचरात्र मत वैष्णव धर्म का प्रधान मत है, जो तृतीय शताब्दी ई. पू. में उदित हुई.
- पाणिनी के काल में कृष्ण का नाम वासुदेव था और उन्हीं के नाम पर उनके अनुयायियों को 'वासुदेवक' कहा जाता था.
- शतपथब्राह्मणम् में विष्णु को सर्वश्रेष्ठ देवता के रूप में वर्णित किया गया है.
- पांचरात्र मत का मूलाधार व्यूहवाद है.
- अलवार सन्तों की रचनाओं का प्रमुख संग्रह 'दिव्य प्रबन्धम्' है.
- गुप्तकाल में निर्मित झाँसी में देवगढ़ का दशावतार मन्दिर वैष्णव धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्मारक है.
- वैष्णव धर्म में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवतारवाद है, जिसका उल्लेख सबसे पहले भगवद्गीता में किया गया है.
- भागवत धर्म में पुरुषावतार, गुणावतार एवं लीलावतार तीन प्रकार के अवतारों को सर्वोपरि माना जाता है.
- भागवत में मुक्ति प्राप्त करने का सबसे प्रबल उपाय भक्ति है. भक्ति से ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है.
- वैष्णव, शैव, शाक्त—ब्राह्मण सम्प्रदाय के तीन वर्गीकृत सम्प्रदाय हैं.
- ब्राह्मण ग्रन्थों में रुद्र की गणना सर्वश्रेष्ठ देवताओं में की जाती है.
- ब्राह्मण सम्प्रदाय के शैव धर्मानुसार शिव की आराधना भय एवं भक्ति से की जाती है.
- ब्राह्मण धर्म का शैव धर्मानुयायी धर्मों में सबसे प्राचीनतम सम्प्रदाय पाशुपत था, जिसे ई. पू. द्वितीय शताब्दी में लकुनीश (लकुलिश) ने स्थापित किया.
- कापालिक सम्प्रदाय के लोग शिव का अवतार स्वरूप भैरव को मानकर उसकी पूजा करते थे.
- कालामुख सम्प्रदाय के लोग अतिमार्गी एवं भयंकर प्रवृत्ति के लोग होते थे. शिवपुराण में इस सम्प्रदाय के लिए महाव्रतधर का उल्लेख हुआ है.
- लिंगायत सम्प्रदाय शिवलिंग की उपासना करते थे एवं गले में चाँदी की सम्पुट में शिवलिंग को लटकाते थे. अल्लप्रभु एवं बसव इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे.
- वसुगुप्त द्वारा संस्थापित कश्मीरी शैव सम्प्रदाय ज्ञान और ध्यान को परमात्मा प्राप्ति का मूल साधन मानते हैं.
- नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक मत्स्येन्द्रनाथ हैं, जिन्हें तिब्बत में सिद्ध लुईपाद के नाम से जाना जाता था.
- मत्स्येन्द्रनाथ के सिद्धान्त वज्रयान बौद्ध सम्प्रदाय के सिद्धान्तों से साम्यता रखते थे, इसीलिए उन्हें अवलोकितेश्वर के अवतार के रूप में माना जाता था.
- गोरखनाथ के अनुसार शिव परम तत्व हैं, जो सृष्टि के दौरान शक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं.
- देवी शक्ति की उपासना करने वालों को शाक्त कहा जाता है.
- वाजसनेय संहिता में अम्बिका के रूप में देवी का सर्वप्रथम उल्लेख हुआ था.
- शाक्त धर्म के अनुयायी त्रिदेव को समवायत्व अंश के रूप में स्वीकार करते हैं.
- मत्स्येन्द्रनाथ के योगिनी कौल सिद्धान्त के अनुसार शिव अकुल है एवं उनकी शक्ति कुल है, जो दोनों अन्योन्याश्रित सिद्धान्त पर आधारित हैं.
- कौलिक और समयाचारी शाक्त सम्प्रदाय के दो वर्गीकृत सम्प्रदाय थे.
- कौलिक मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन अर्थात् पंचमकार की उपासना करते थे.
- कौलिक या कौल मार्गियों का प्रमुख केन्द्र कामाख्या (असम) है.
- गणेश की उपासना करने वाले लोगों का गणपति या गणपत्य सम्प्रदाय है.
- आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना मक्खलि गोशाल ने की थी.
- अक्रियावाद एवं नियतिवाद का समन्वित स्वरूप आजीवक सम्प्रदाय है, जो भाग्य को ही सब कुछ मानता है.
- विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार जड़वादी दर्शन चार्वाक के प्रणेता बृहस्पति थे.
- चार्वाक या भौतिकवादी सम्प्रदाय को नास्तिक शिरोमणि के नाम से भी जाना जाता है.
- चार्वाक आकाश को पंचमहाभूतों में नहीं गिनता, क्योंकि आकाश अप्रत्यक्ष है.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छठी शताब्दी ई. पू. गंगाघाटी में अनेक सम्प्रदायों का उदय हुआ, जिनकी ज्ञात संख्या है–
   (A) 62 (B) 10
   (C) 3 (D) 100

2. सुमेलित कीजिए–
   (a) पाइथोगोरस (1) भारत
   (b) जरथुष्ट्र (2) चीन
   (c) कन्फ्यूशियस (3) ईरान
   (d) महावीर (4) यूनान

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	3	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	3	1	4

3. आरण्यकों के अनुसार आध्यात्म का सर्वोत्तम तत्त्व था–
   (A) ज्ञान (B) शिक्षा
   (C) प्रवचन (D) तप

4. जिस सम्प्रदाय में अक्रियावाद एवं नियतिवाद का समवायत्व स्वरूप विद्यमान है–
   (A) चार्वाक सम्प्रदाय (B) जैन सम्प्रदाय
   (C) आजीवक सम्प्रदाय (D) शैव सम्प्रदाय

5. प्राचीन यदृच्छावाद का कालान्तर में नाम पड़ा–
   (A) चार्वाक सम्प्रदाय (B) ब्राह्मण धर्म
   (C) शाक्त सम्प्रदाय (D) आजीवक सम्प्रदाय

6. गौतम बुद्ध का जन्म हुआ–
   (A) 563 ई. पू. (B) 565 ई. पू.
   (C) 560 ई. पू. (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

7. बुद्ध का प्रथम गुरु था–
   (A) रुद्रक रामपुत्र (B) अलारा कलाम
   (C) मोग्गलिपुत्त तिस्स (D) कौण्डिन्य

8. 'धर्मचक्र प्रवर्तन' है–
   (A) बुद्ध का प्रथम उपदेश
   (B) महावीर का प्रथम उपदेश
   (C) बुद्ध का महाभिनिष्क्रमण
   (D) बुद्ध का महापरिनिर्वाण

9. महात्मा बुद्ध के सबसे पहले अनुयायी थे–
   (A) उपालि एवं सुनीति
   (B) तापस एवं भल्लूक
   (C) जीवक एवं महाकश्यप
   (D) आनन्द एवं सारिपुत्र

10. बौद्ध धर्म का साहित्य कहलाता है–
    (A) त्रिपिटक (B) चार सूत्र
    (C) द्वादशांग (D) निपात्तसूत्त

11. वेलुवन विहार का निर्माण किस राजा ने कराया ?
    (A) बिम्बिसार ने (B) प्रसेनजित ने
    (C) जीवक ने (D) उपालि ने

12. बौद्ध संघ की संरक्षिका विशाखा थी–
    (A) मगध जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री
    (B) अंग जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री
    (C) अवन्ति जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री
    (D) गांधार जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री

13. निम्न में से कौनसा बुद्ध की तपस्या का साथी नहीं था ?
    (A) आंज (B) अस्सजि
    (C) महानाम (D) रामानुज

14. बुद्ध का महापरिनिर्वाण स्थल कुशीनगर वर्तमान में है–
    (A) उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में कुशिया गाँव
    (B) मध्य प्रदेश के खजुराहो में
    (C) महाराष्ट्र के जलगाँव में
    (D) केरल के त्रिचूर में

15. सुमेलित कीजिए–

बुद्ध की अवस्थाएँ	प्रतीक
(a) जन्म	(1) बोधिवृक्ष
(b) महाभिनिष्क्रमण	(2) स्तूप
(c) धर्मचक्र प्रवर्तन	(3) चक्र
(d) निर्वाण	(4) अश्व
(e) महापरिनिर्वाण	(5) कमल और वृषभ

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
(A)	1	2	3	4	5
(B)	5	4	3	1	2
(C)	1	2	3	4	5

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

16. बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश दिये—
(A) श्रावस्ती में (B) पटना में
(C) वैशाली में (D) कपिलवस्तु में

17. बुद्ध का मानना था—
(A) अत्यधिक तप करना चाहिए
(B) अत्यधिक विलासिता से रहना चाहिए
(C) मध्यम मार्ग का अनुसरण करना चाहिए
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

18. बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बोध्यंग की संख्या है—
(A) 10 (B) 6
(C) 7 (D) 15

19. कौनसा बुद्ध के त्रिरत्न में नहीं आता ?
(A) ज्ञान (B) बुद्ध
(C) धर्म (D) संघ

20. बौद्ध संघ में जिसका प्रवेश वर्जित नहीं था—
(A) 15 वर्ष से कम आयु के बालक
(B) चोर, डाकू व हत्यारे
(C) ऋणी व्यक्ति, रोगी, राजा के सेवक एवं दास
(D) स्त्रियाँ एवं गृहस्थ पुरुष

21. प्रवज्या से तात्पर्य है—
(A) संघ में प्रवेश करना
(B) सुरा-सुन्दरी का पान करना
(C) भक्ति करना
(D) पुस्तकें लिखना

22. श्रामणेतर कहलाता था—
(A) नग्न भिक्षु (B) प्रवज्या लेने वाला भिक्षु
(C) आध्यात्म पुरुष (D) भिखारी

23. बोधिवृक्ष को जिसने काटा था—
(A) शिव भक्त शशांक ने (B) तोलकप्पियर ने
(C) परशुराम ने (D) महावीर स्वामी ने

24. भिक्षुओं द्वारा की जाने वाली धर्म चर्चा को कहा जाता था—
(A) उपोसथ (B) सम्यक् श्रद्धा
(C) सम्यक् संकल्प (D) सम्यक् ज्ञान

25. किस राष्ट्र में सन् 1989 में बौद्ध धर्म को राष्ट्रीय धर्म घोषित किया ?
(A) अमरीका (B) कम्बोडिया
(C) थाईलैण्ड (D) रूस

26. 'शिक्षापद' से अभिप्राय है—
(A) श्रामणेतरों को दी जाने वाली दस शीलों की शिक्षा
(B) तपस्या करने की प्रवृत्ति
(C) श्रामणेतरों को प्रदान की जाने वाली दीक्षा
(D) उपर्युक्त सभी

27. कौनसा वस्त्र श्रामणेतर से सम्बन्ध नहीं रखता ?
(A) अन्तर्वासक (B) उत्तरासंग
(C) संघाटी (D) कंचुकी

28. महात्मा बौद्ध के अन्तिम शब्द थे—
(A) सभी भौतिक वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं, कर्त्तव्य-परायणता के साथ कार्य करो
(B) तृष्णा दुःखों का मूल है
(C) अष्टांगिक मार्ग के पालन से दुःख दूर किया जा सकता है
(D) तृष्णाओं पर विजय पाना दुःख समाप्ति का कारण है

29. बौद्ध संघ का संगठन था—
(A) एकात्मक (B) गणतन्त्रात्मक
(C) (A) और (B) दोनों (D) कोई नहीं

30. प्रथम बौद्ध संगीति (483 ई. पू.) की अध्यक्षता की—
(A) भिक्षु महाकश्यप ने (B) रेवतस्थविर ने
(C) मोग्गलिपुत्त तिस्स ने (D) वसुमित्र ने

31. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

बौद्ध संगीतियाँ	**तत्कालीन शासक**
(a) प्रथम बौद्ध संगीति	(1) कनिष्क
(b) द्वितीय बौद्ध संगीति	(2) अशोक
(c) तृतीय बौद्ध संगीति	(3) कालाशोक
(d) चतुर्थ बौद्ध संगीति	(4) अजातशत्रु

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	2	1	4	3
(D)	3	4	1	2

32. पाँचवीं बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की—
(A) वसुमित्र (B) ह्वेनसांग
(C) अश्वघोष (D) कालाशोक

33. हीनयान का शाब्दिक अर्थ है—
(A) निम्न मार्ग (B) उच्च मार्ग
(C) मध्यम मार्ग (D) कोई नहीं

34. छठी बौद्ध संगीति का आयोजन स्थल था—
(A) मगध (B) अवन्ति
(C) कन्नौज (D) कौशल

35. हीनयान सम्प्रदाय का साहित्य जिस भाषा में संकलित है—
(A) पालि भाषा में (B) संस्कृत भाषा में
(C) प्राकृत भाषा में (D) शौसिनी अपभ्रंश में

36. श्रावकयान जिसका पर्यायवाची नाम है—
(A) महायान (B) वज्रयान
(C) सहजयान (D) हीनयान

37. किस बौद्ध ग्रन्थ में गाय को 'अन्नदा वन्नदा सुखदा' कहा है—
(A) अभिधम्म पिटक में (B) सुत्तनिपात में
(C) विनय पिटक में (D) मज्झिम निकाय में

38. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—
(a) शून्यवाद सम्प्रदाय (1) महाकश्यप
(b) योगाचार सम्प्रदाय (2) महाकच्चायन
(c) स्थविर सम्प्रदाय (3) मैत्रियनाथ
(d) महासंघिक सम्प्रदाय (4) नागार्जुन

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	1	2	3	4
(C)	3	1	2	4
(D)	2	3	4	1

39. षष्ठम् बौद्ध संगीति में एकत्रित लोगों की संख्या थी—
(A) 1,00,000 (B) 50,000
(C) 30,000 (D) 1,000

40. महायान सम्प्रदाय का साहित्य लिखा गया है—
(A) प्राकृत भाषा में (B) पालि भाषा में
(C) संस्कृत भाषा में (D) अपभ्रंश भाषा में

41. निम्नलिखित में से कौनसा भेद प्रत्यक्ष का नहीं है ?
(A) इन्द्रियजन्य ज्ञान (B) मनोविज्ञान
(C) आत्म संवेदन (D) योग विज्ञान
(E) अनुमान

42. कालचक्रयान के अनुसार निम्नलिखित में से कौनसे दो लक्षण बुद्ध के हैं ?
(A) भक्ति व तप (B) ज्ञान व तप
(C) प्रज्ञा व करुणा (D) विनम्रता एवं भक्ति

43. निम्नलिखित में से जैन एवं बौद्ध धर्म में असमानता है—
(A) दोनों का उदय छठी शताब्दी ई. पू. हुआ
(B) दोनों नास्तिक एवं अनीश्वरवादी थे
(C) दोनों धर्मों के प्रवर्तक क्षत्रिय एवं राजपरिवार से सम्बन्धित थे
(D) दोनों की धार्मिक भाषा संस्कृत थी

44. कुषाणों के शासनकाल में बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था—
(A) मगध (B) अवन्ति
(C) पुरुषपुर (D) कुण्डलवन

45. संसार की सभी वस्तुएँ कार्य और कारण पर निर्भर रहती हैं, इस सिद्धान्त को कहते हैं—
(A) प्रतीत्यसमुत्पाद (B) ऋद्धिपाद
(C) अष्टांगिक मार्ग (D) बोध्यंग

46. निम्नलिखित में से कौनसा बौद्ध धर्म के पतन का कारण नहीं है ?
(A) बौद्ध धर्म का विखण्डन
(B) दूसरे सम्प्रदायों का आविर्भाव
(C) प्रचार भाषा संस्कृत
(D) सरल एवं व्यावहारिक धर्म प्रचार प्रणाली

47. विनय पिटक का सम्पादन जिसने किया—
(A) मोग्गलिपुत्त तिस्स (B) उपालि
(C) नागार्जुन (D) महात्मा बुद्ध

48. जातक में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ हैं, जो उद्धृत की गई हैं—
(A) विनय पिटक से (B) सुत्त पिटक से
(C) अभिधम्मपिटक (D) अंगुत्तर निकाय से

49. पिटक का शाब्दिक अर्थ होता है—
(A) श्रेष्ठ साहित्य (B) बौद्ध साहित्य
(C) टोकरी (D) कलम

50. जातक में हैं—
(A) 21 खण्ड एवं 547 कहानियाँ
(B) 10 खण्ड एवं 200 कहानियाँ
(C) 15 खण्ड एवं 1000 कहानियाँ
(D) 42 खण्ड एवं 500 कहानियाँ

51. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—
(a) वयोवृद्ध भिक्षुओं की कथाएँ (1) जातक
(b) भिक्षुणियों की कविताएँ (2) थेरी गाथा
(c) बुद्ध के अनुशासनात्मक उपदेश (3) थेरगाथा
(d) बुद्ध के पूर्व जन्म की कहानियाँ (4) विनय पिटक

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	2	4	1
(C)	2	1	4	3
(D)	4	1	2	3

52. जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे–
(A) पार्श्वनाथ (B) ऋषभदेव
(C) महावीर स्वामी (D) नेमिनाथ

53. पार्श्वनाथ के अनुयायी कहलाते थे–
(A) निर्ग्रन्थ (B) भिक्षुक
(C) श्रावक (D) श्रावणेत्तर

54. जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर थे–
(A) महावीर स्वामी (B) पार्श्वनाथ
(C) मल्लिनाथ (D) अजितनाथ

55. जैन धर्म के संस्थापक थे–
(A) ऋषभदेव (B) नेमिनाथ
(C) पार्श्वनाथ (D) महावीर स्वामी

56. जैन धर्म में अब तक हुए तीर्थंकरों की संख्या है–
(A) 10 (B) 15
(C) 24 (D) 20

57. महावीर स्वामी का जन्म हुआ था–
(A) 540 ई. पू. (B) 540 ई.
(C) 400 ई. पू. (D) 640 ई. पू.

58. महावीर स्वामी के पिता जिस राजवंश से सम्बन्धित थे–
(A) शाक्य गणराज्य (B) ज्ञातृंक गणराज्य
(C) पल्लव वंश (D) लिच्छवि गणराज्य

59. महावीर स्वामी को जिस नदी के तट पर कैवल्य (ज्ञान की) प्राप्ति हुई–
(A) सिन्धु नदी (B) सरस्वती नदी
(C) ऋजुपालिका नदी (D) गंगा नदी

60. महावीर स्वामी के अनुयायी कहलाते हैं–
(A) जैन (B) निर्ग्रन्थ
(C) श्रामणेत्तर (D) भिक्षु

61. महावीर स्वामी के बाद जैन संघ के अध्यक्ष बने–
(A) जम्बु जैन (B) सुधर्मन
(C) अग्निभूति (D) दधिवाहन

62. महावीर स्वामी का महापरिनिर्वाण स्थल है–
(A) पावा राजगृह (B) वैशाली
(C) कुशीनगर (D) मगध

63. महावीर स्वामी से निम्नलिखित के सम्बन्धों को सुमेलित कीजिए–
(a) त्रिशला (1) पुत्री दामाद
(b) सिद्धार्थ (2) माता
(c) यशोदा (3) पिता
(d) प्रियदर्शना (4) पत्नी
(e) जमालि (5) पुत्री

	(a)	(b)	(c)	(d)	(e)
(A)	2	3	4	5	1
(B)	1	2	3	4	5
(C)	3	1	2	5	4
(D)	4	5	1	3	2

64. जैन संघ की प्रथम भिक्षुणी थी–
(A) पुष्पचूला (B) चन्दना
(C) सुजाता (D) गौतमी

65. महावीर स्वामी का महापरिनिर्वाण काल है–
(A) 468 ई. पू. (B) 468 ई.
(C) 568 ई. पू. (D) 768 ई. पू.

66. पार्श्वनाथ के काल में भिक्षुणी संघ की अध्यक्षा थी–
(A) सुजाता (B) पुष्पचूला
(C) जशोदा (D) प्रियदर्शना

67. जैन धर्म में पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित मूलभूत तत्वों में महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया–
(A) अहिंसा (B) सत्य भाषण
(C) अस्तेय (D) अपरिग्रह
(E) ब्रह्मचर्य पालन

68. महावीर स्वामी ने अपना पहला उपदेश दिया–
(A) विपुलचल पहाड़ियों पर (राजगृह में)
(B) सिन्धु नदी के तट पर (लरकाना में)
(C) अवन्ति में
(D) श्रावस्ती में

69. जैन धर्म में गृहस्थों के लिए बने हुए शीलव्रतों की संख्या है–
(A) सात (B) दस
(C) पाँच (D) तीन

70. जैन श्रावकों के लिए निम्नलिखित में से कौनसा व्रत लागू नहीं है ?
(A) इन्द्रिय दमन के लिए नग्न रहना
(B) नंगे पैर चलना
(C) जल छानकर पीना
(D) ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकारना

71. महावीर स्वामी द्वारा गृहस्थों के लिए प्रतिपादित नियम को कहते थे—
(A) अणुव्रत (B) शीलव्रत
(C) गुणव्रत (D) शिक्षाव्रत

72. जैन संघ का सबसे पहला विच्छेक था—
(A) जमालि (B) मुक्खलि गोशाल
(C) नेमिनाथ (D) कोई नहीं

73. निम्नलिखित में से कौनसा श्वेताम्बर सम्प्रदाय का उपसम्प्रदाय नहीं है ?
(A) पूजेरा (B) ढुँढिया
(C) तेरापंथी (D) तारणपंथी

74. प्रथम जैन परिषद् आयोजित की गई—
(A) प्रथम शताब्दी ई. पू.
(B) तृतीय शताब्दी ई. पू.
(C) द्वितीय शताब्दी ई. पू.
(D) चतुर्थ शताब्दी ई. पू.

75. द्वितीय जैन परिषद् किस स्थल पर आयोजित हुई ?
(A) वल्लभी में (B) मगध में
(C) पाटलिपुत्र में (D) अवन्ति में

76. प्रथम शताब्दी ई. पू. उदयगिरि पर्वत पर जिसने जैन साधुओं के लिए विश्राम स्थल बनवाया—
(A) खारवेल ने (B) अजातशत्रु ने
(C) कालाशोक ने (D) कनिष्क ने

77. गंग नरेशों द्वारा निर्मित 57 फुट ऊँची गोमटेश्वर की विशाल प्रतिमा का निर्माण हुआ—
(A) 5वीं शताब्दी में (B) 4थीं शताब्दी में
(C) 10वीं शताब्दी में (D) 8वीं शताब्दी में

78. भागवत सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं—
(A) वासुदेव (B) शिव
(C) देवी (D) गणेश

79. श्रीमद्‌भागवद्‌गीता अस्तित्व में आई—
(A) ईसा की चतुर्थ शताब्दी में
(B) ईसा की पाँचवीं शताब्दी में
(C) ईसा की दसवीं शताब्दी में
(D) ईसा की द्वितीय शताब्दी में

80. विष्णु के अवतारों की संख्या है—
(A) 23 (B) 18
(C) 20 (D) 10

81. निम्नलिखित में से कौनसा ग्रन्थ देवी भागवत है ?
(A) श्रीमद्‌भागवद्‌गीता (B) दुर्गा सप्तशती
(C) स्कन्द पुराण (D) भीष्म पर्व

82. विष्णु का सर्वप्रथम उल्लेख हुआ है—
(A) ऋग्वेद में (B) अथर्ववेद में
(C) यजुर्वेद में (D) सामवेद में

83. वासुदेवक से अभिप्राय है—
(A) शिव के उपासक (B) वासुदेव के उपासक
(C) देवी के उपासक (D) कोई नहीं

84. पांचरात्र मत का जिससे सम्बन्ध है—
(A) भागवत सम्प्रदाय से
(B) शाक्त सम्प्रदाय
(C) आजीवक सम्प्रदाय
(D) चार्वाक सम्प्रदाय

85. पांचरात्र मत को मानने वाले जिसकी आराधना करते हैं—
(A) नारायण की (B) शिव की
(C) वासुदेव की (D) कृष्ण की

86. दक्षिण भारत के द्रविड़ वैष्णवों को कहा जाता था—
(A) आलवार (B) आचार्य
(C) सन्त (D) भिक्षु

87. आलवार सन्तों की रचना संग्रह का नाम है—
(A) खेटकौतुकम् (B) दिव्य प्रबन्धम्
(C) जातकम् (D) मज्झिम निकायम्

88. वैष्णव आचार्यों में जिनका नाम सर्वोपरि था—
(A) रामानुज (B) चैतन्य महाप्रभु
(C) ब्रहस्पति (D) कपिलमुनि

89. भागवत धर्म के अवतारवाद का उल्लेख सर्वप्रथम हुआ है—
(A) श्रीमद्‌भागवद्‌गीता में
(B) भागवत पुराण में
(C) वेदों में
(D) वायु पुराण में

90. जिस प्रकार का भक्त निष्काम भक्ति करता है—
(A) आर्त्त (B) जिज्ञासु
(C) अर्थार्थी (D) ज्ञानी

91. कौनसा सम्प्रदाय ब्राह्मण धर्म के अन्तर्गत नहीं आता ?
(A) आजीवक सम्प्रदाय (B) वैष्णव सम्प्रदाय
(C) शैव सम्प्रदाय (D) शाक्त सम्प्रदाय

92. शिव को 'विश्व के उपास्य' के रूप में वर्णित किया है—
(A) कठोपनिषद् में (B) श्वेताश्वेतरोपनिषद् में
(C) ऋग्वेद में (D) सामवेद में

93. भगवान् शिव के 28वें अवतार के रूप में जिसे माना जाता है—
(A) लकुलीश को (B) रामानुज को
(C) चैतन्य महाप्रभु को (D) वासुदेव को

94. भैरव को जो शिव के अवतार के रूप में मानते हैं—
(A) कापालिक (B) कालामुख
(C) लिंगायत सम्प्रदाय (D) कश्मीरी शैव सम्प्रदाय

95. जिसे तिब्बत में 'सिद्ध लुईपाद' के नाम से जाना जाता है—
(A) गोरखनाथ (B) मत्स्येन्द्रनाथ
(C) कच्चायन (D) रामानुज

96. जो ज्ञान और ध्यान को सर्वस्व मानते हैं—
(A) कश्मीरी शैव सम्प्रदाय
(B) कापालिक
(C) कालामुख
(D) लिंगायत सम्प्रदाय

97. जिस सम्प्रदाय के लोग लिंग की पूजा करते हैं—
(A) लिंगायत सम्प्रदाय (B) नाथ सम्प्रदाय
(C) कापालिक सम्प्रदाय (D) कश्मीरी शैव सम्प्रदाय

98. 'योगिनी कौल' किसका सिद्धान्त था?
(A) गोरखनाथ का (B) मत्स्येन्द्रनाथ का
(C) आचार्य रामानुज का (D) चैतन्य महाप्रभु का

99. आजीवक सम्प्रदाय का संस्थापक था?
(A) मुक्खलि गोशाल (B) पकुध कच्चायन
(C) निगण्ठ नाथपुत्र (D) पूरण काश्यप

100. 'नास्तिक शिरोमणि' कहा जाता है—
(A) चार्वाक या लोकायत सम्प्रदाय को
(B) आजीवक सम्प्रदाय
(C) शिव सम्प्रदाय
(D) शाक्त सम्प्रदाय

उत्तरमाला

1. (A)	2. (C)	3. (D)	4. (C)	5. (A)
6. (A)	7. (B)	8. (A)	9. (B)	10. (A)
11. (A)	12. (B)	13. (D)	14. (A)	15. (B)
16. (A)	17. (C)	18. (C)	19. (A)	20. (D)
21. (A)	22. (B)	23. (A)	24. (A)	25. (B)
26. (A)	27. (D)	28. (A)	29. (B)	30. (A)
31. (A)	32. (B)	33. (A)	34. (C)	35. (A)
36. (D)	37. (B)	38. (A)	39. (A)	40. (C)
41. (E)	42. (C)	43. (D)	44. (C)	45. (A)
46. (D)	47. (B)	48. (B)	49. (C)	50. (A)
51. (B)	52. (C)	53. (A)	54. (B)	55. (A)
56. (C)	57. (A)	58. (B)	59. (C)	60. (A)
61. (B)	62. (A)	63. (A)	64. (B)	65. (A)
66. (B)	67. (E)	68. (A)	69. (A)	70. (D)
71. (A)	72. (A)	73. (D)	74. (B)	75. (A)
76. (A)	77. (C)	78. (A)	79. (A)	80. (D)
81. (B)	82. (A)	83. (B)	84. (A)	85. (A)
86. (A)	87. (B)	88. (A)	89. (A)	90. (D)
91. (A)	92. (B)	93. (A)	94. (A)	95. (B)
96. (A)	97. (A)	98. (B)	99. (A)	100. (A)

विगत वर्षों में आई.ए.एस. (प्री.) में पूछे गये प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौनसा एक कथन सही नहीं है ?
(A) भद्रबाहु ने मगध के राजा उदयन के काल में कल्पसूत्रों की रचना की
(B) महावीर ने ऋजुपालिक नदी के तट पर कैवल्य-ज्ञान प्राप्त किया
(C) जैन धर्म लिच्छवियों का राज्य धर्म बन गया था
(D) हरिभद्र एक जैन विद्वान् था जो 9वीं शताब्दी ईस्वी में जीवित था

2. निम्नलिखित में से नालन्दा के किस विद्वत-समुदाय ने तिब्बत में बौद्धधर्म का प्रसार किया ?
(A) कुमारजीव, परमार्थ, शुभकरसिंह, धर्मदेव
(B) संतरक्षित, पद्मसम्भव, कमलशील, स्थिरमति
(C) वसुबंधु, दिन्नाग, धर्मपाल, चन्द्रपाल
(D) अर्यदेव, अंग, नागार्जुन, जिनमित्र

3. तिब्बती परम्परा के अनुसार किसने बौद्धधर्म के थेरवाद मत की स्थापना की थी ?
(A) नालक
(B) महाकस्सप
(C) नागार्जुन
(D) मोग्गलिपुत्त तिस्स

4. राजगृह में होने वाली प्रथम बौद्ध संगीति (Council) का कौन अध्यक्ष था ?
(A) पार्श्वक (B) संघरक्ष
(C) वसुमित्र (D) महाकस्सप

5. निर्गुण धारा से सम्बन्धित हैं—
(A) महावीर (B) जैन
(C) चैतन्य (D) शंकराचार्य

6. निम्न को क्रमबद्ध कीजिए—
   (1) वल्लभाचार्य (2) रामानन्द
   (3) माधवाचार्य (4) रामानुज
   (A) 3, 2, 1, 4, (B) 4, 3, 2, 1
   (C) 2, 4, 1, 3 (D) 4, 1, 3, 2

7. बुद्ध से सम्बन्धित है—
   (A) जातकालंकार (B) सप्ताप्त
   (C) उपनिषद् (D) धम्मपद

8. जैन धर्म से सम्बन्धित विवेचन मिलता है—
   (A) उज्जैन (B) वैशाली
   (C) बल्लभी (D) वातापी

9. 'मिलिन्दयामा' है—
   (A) बौद्ध धर्म से सम्बद्ध (B) जैन धर्म से सम्बद्ध
   (C) हिन्दू धर्म से सम्बद्ध (D) कोई नहीं

10. चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कश्मीर में राजा कनिष्क ने करवाया था, उसका नेतृत्व किया था—
   (A) आशांग (B) नागार्जुन
   (C) वसुमित्र (D) आर्यदेव

11. बुद्ध की कल्पनाओं को पहली बार वर्णित किया—
   (A) बोधगया कला स्कूल में
   (B) गांधार कला स्कूल में
   (C) मथुरा कला स्कूल में
   (D) कोई नहीं

12. कुशीनगर में बुद्ध की मृत्यु हुई, तब वह किस राज्य का हिस्सा था?
   (A) अजातशत्रु साम्राज्य (B) हिल साम्राज्य
   (C) लिच्छवी साम्राज्य (D) कौर्यरूप साम्राज्य

13. जैन पुस्तकें लिखी गई हैं—
   (A) अपभ्रंश (B) प्राकृत
   (C) पालि (D) संस्कृत

14. सुमेलित कीजिए—
   (a) अमरनाथ (1) बुद्धों का आगम
   (b) रॉककट मन्दिर (2) जैन सन्त
   (c) अजन्ता (3) हिन्दू श्रावक
   (d) वाहुवली (4) महावलीपुरम्

	(a)	(b)	(c)	(s)
(A)	3	4	2	1
(B)	4	3	1	2
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	2	1

15. किसके पास के गाँव में रामानुज का जन्म हुआ?
   (A) कोलकाता (B) चेन्नई
   (C) पटना (D) लखनऊ

16. रामानुज आचार्य ने जिस पर जोर दिया—
   (A) भक्ति (B) धर्म
   (C) मोक्ष (D) उपर्युक्त सभी

17. कोण्कामन था एक—
   (A) बुद्धकालीन वास्तुकार
   (B) पूर्व बुद्ध
   (C) जैन उपदेशक
   (D) अशोक का अधीनस्थ

18. कौनसे तीन शासकों ने क्रमशः बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया ?
   (A) बिम्बिसार, अशोक, दशरथ
   (B) प्रसेनजीत, बिम्बिसार, अजातशत्रु
   (C) अशोक, कनिष्क, हर्ष
   (D) अजातशत्रु, कालाशोक, अशोक

19. शून्यवाद के प्रवर्तक थे—
   (A) नागार्जुन (B) नागसेन
   (C) अश्वघोष (D) आनन्द

20. मत्तमपूर एक समूह था—
   (A) शैवों का (B) भागवतों का
   (C) भिक्षुओं का (D) वज्रायन बुद्धों का

21. जैन मान्यताओं के अनुसार 'सम्प्राप्ति' की द्वितीय राजधानी थी—
   (A) श्रावस्ती (B) साँची
   (C) तक्षशिला (D) उज्जैन

22. चैतन्य उपदेश देते थे—
   (A) ईश्वर को प्रेम करने का
   (B) गीत और नृत्य से
   (C) गुरु श्रद्धा का
   (D) ईश्वर प्रशंसा का

23. शून्यता के पहले प्रवर्तक बौद्ध दार्शनिक थे—
   (A) नागार्जुन (B) नागसेन
   (C) आनन्द (D) अश्वघोष

24. निम्नलिखित स्थानों में से शिल्पीय साक्ष्य कहाँ मिले हैं, जो मानव के प्रतिनिधि के रूप में बुद्ध को प्रस्तुत करते हैं ?
   (A) भरहुत (B) मथुरा
   (C) साँची (D) अमरावती

25. शब्द 'निर्ग्रन्थ' का सम्बन्ध है—
(A) आजीविका (B) चार्वाक
(C) जैन (D) पशुपति

26. जैन समुदाय का चिन्तन जिससे अधिक निकट है—
(A) वेदान्त (B) सांख्य
(C) वैशेषिक (D) योगाचार

27. वास्तविक जैन धर्मस्थ विश्वास करते हैं—
(A) 6 अंगों पर (B) 8 अंगों पर
(C) 10 अंगों पर (D) 12 अंगों पर

28. हिन्दू देवता जिसे 'हेराकलस' के साथ ग्रीक लेखकों ने परिचय कराया है—
(A) स्कन्द (B) शिव
(C) कृष्ण (D) पर्जन्य

29. सुमेलित कीजिए—
(a) न्याय (1) जैमिनी
(b) वैशेषिक (2) कपिल
(c) सांख्य (3) कणद
(d) मीमांसा (4) गौतम

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	4	2	1
(B)	2	3	1	4
(C)	4	3	2	1
(D)	4	1	3	2

30. बुद्ध धर्म के स्थलों को तिथिक्रम से व्यवस्थित कीजिए—
(A) नालन्दा, नागार्जुन कोण्डा, अमरावती, साँची
(B) साँची, अमरावती, नागार्जुन कोण्डा, नालन्दा
(C) साँची, नागार्जुन कोण्डा, अमरावती, नालन्दा
(D) नागार्जुन कोण्डा, साँची, अमरावती, नालन्दा

31. प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य में वर्णित 'जीवक' था—
(A) बोधिसत्व (B) राजा
(C) व्यापारी (D) चिकित्सक

32. वज्रयान बुद्धवाद में काल्पनिक बोधिसत्व जाना जाता था—
(A) मातंगी (B) योगिनी
(C) दाकिनी (D) तारा

33. मथुरा के कंकाली तिला में धर्म के स्थापत्य थे—
(A) बौद्ध धर्म के (B) जैन धर्म के
(C) शाक्त (D) वैष्णव

34. जैन ग्रन्थों के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं—
(1) निर्ग्रन्थ (2) पूर्वा
(3) अंग (4) उपांग
(A) 1, 2 एवं 3 (B) 2, 3 एवं 4
(C) केवल 1 (D) 2 एवं 4

35. निम्नलिखित में से कौनसा दर्शन जैन धर्म से सम्बद्ध था ?
(A) स्याद्वाद (B) योगाचार
(C) माध्यमिका (D) शून्यवाद

36. जैन धर्म के विकास को ह्वेनसांग ने देखा—
(A) उड़ीसा में (B) कश्मीर में
(C) बंगाल में (D) बिहार में

37. निम्नलिखित में से कौन यक्ष एवं यक्षिणी की पूजा में विश्वास करते थे ?
(1) ब्राह्मण (2) कालामुख सम्प्रदाय
(3) बुद्धवाद (4) जैन धर्मावलम्बी
(A) 1, 2 एवं 3 (B) 1, 2 एवं 4
(C) 1, 3 एवं 4 (D) 2, 3 एवं 4

38. नागार्जुन के शून्यवाद को जिसमें वर्णित किया है—
(A) योगाचार (B) वैभाषिका
(C) माध्यमिका (D) महापरिनिर्वान सूत्र
(E) सैविन्तका

39. निम्नलिखित में से कौन प्रत्यक्ष प्रमाण को गृहित करती है ?
(A) मीमांसा (B) न्याय
(C) सांख्य (D) लोकायत

40. जैन तीर्थकरों की जीवनियाँ जिसमें लिखी हुई हैं—
(A) भगवती सूत्र (B) कल्प सूत्र
(C) नित्यावली सूत्र (D) उवासगदसाओ

41. सात्वत विधि शब्द का अर्थ है—
(A) तान्त्रिक अभ्यास (B) भगवद्वाद
(C) महायान दर्शन (D) लकुलिशा पूजा का भाव

42. कालानुक्रम से चार बौद्ध संगीतियों का स्थान बतलाइए—
(1) वैशाली (2) राजगृह
(3) कुण्डलवन (4) पाटलिपुत्र
(A) 1, 2, 3, 4 (B) 4, 3, 2, 1
(C) 2, 1, 3, 4 (D) 2, 1, 4, 3

43. प्रारम्भिक भगवद्वाद की प्रमुख विशेषताएँ थीं—
(1) समर्पण (2) कर्म
(3) ज्ञान (4) सामाजिक दृढ़ता
(5) स्वत्याग
(A) 1 एवं 3 (B) 1, 2, 3 एवं 5
(C) 1, 2, 4 एवं 5 (D) 2, 3 एवं 5

44. रुद्र की बहिन अम्बिका जिसमें वर्णित है ?
(A) वाजसनेयी संहिता (B) शतपथ ब्राह्मण
(C) तैत्तिरीय आर्यका (D) शिवपुराण

45. शलाका पुरुष की धारणा जिससे सम्बद्ध है—
(A) पाशुपत (B) जैनमतावलम्बियों से
(C) बौद्ध धर्मावलम्बी (D) भागवद्‌वाद

46. कुछ ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार निम्न में से अन्त्य जातियाँ थीं—
(1) बेनास (2) मेदा
(3) लोकायतिका (4) नास्तिक
(A) 1, 2, 3 एवं 4 (B) 1, 2 एवं 3
(C) 1, 2 एवं 4 (D) 3 एवं 4

47. बुद्ध निम्नलिखित में से किन बातों को नहीं मानते थे ?
(1) वेदों की प्रामाणिकता
(2) ब्राह्मणों की श्रेष्ठता
(3) यज्ञों की फलोत्पादकता
(4) पुनर्जन्म का सिद्धान्त
निम्नलिखित दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(A) 1, 2 एवं 3 (B) 1, 3 एवं 4
(C) 1,2, 4 (D) 1, 2, 3, 4

48. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (घटना)	सूची-II (स्थान)
(a) प्रथम बौद्धि संगीति	(1) वैशाली
(b) द्वितीय बौद्धि संगीति	(2) राजगृह
(c) तृतीय बौद्धि संगीति	(3) पाटलिपुत्र
(d) चतुर्थ बौद्धि संगीति	(4) कश्मीर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	1	4
(B)	3	1	4	2
(C)	1	4	3	2
(D)	2	1	3	4

49. बुद्ध के अनुसार निम्नलिखित में किससे निर्वाण की प्राप्ति होती है ?
(A) निरन्तर स्थित प्रज्ञ अवस्था में रहने से
(B) अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करने से
(C) संन्यास एवं तप का अनुपालन करने से
(D) श्रद्धा-भाजन के प्रतीक स्तूप की पूजा करने से

50. सभी संस्कार व्ययधर्मा हैं. प्रमाद के साथ अपने मोक्ष का सम्पादन करें. इन वचनों का श्रेय किसे दिया व जाता है ?
(A) कृष्ण (B) महावीर
(C) बुद्ध (D) शंकराचार्य

51. निम्नलिखित में से किस एक विचार का प्रचलन महावीर ने किया ?
(A) अहिंसा (B) अपरिग्रह
(C) ब्रह्मचर्य (D) सत्य

52. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (जिनों के नाम)	सूची-II (उनके संज्ञान)
(a) पार्श्वनाथ	(1) वृषभ
(b) आदिनाथ	(2) सिंह
(c) महावीर	(3) सर्प
(d) शान्तिनाथ	(4) अज
	(5) हरिश

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	3	1	2	5
(C)	2	4	1	3
(D)	5	2	4	1

53. निम्नलिखित में कौनसा व्यक्तव्य सही नहीं है ?
(A) खजुराहो में जैन मन्दिर है
(B) उड़ीसा में उदयगिरि में जैन गुफाएँ हैं
(C) मथुरा में एक जैन स्तूप था
(D) वैशाली में जैन विहार है

54. मेगस्थनीज द्वारा डायोनोसस एवं हेरेक्लीज के रूप में वर्णित दो भारतीय देवताओं की पहचान किसके रूप में की गई है ?
(A) सूर्य एवं कार्तिकेय (B) शिव एवं कृष्ण
(C) इन्द्र एवं यम (D) अग्नि एवं वरुण

55. बेसनगर स्तम्भ अभिलेख में निम्नांकित में से किसे भागवत कहा गया है ?
(A) डियोन (B) हेलियोडोरस
(C) आण्टियाल्किडस (D) कासी पुत्र भागभद्र

56. निम्नलिखित में से किसे पाशुपत मत का प्रवर्तक माना जाता है ?
   (A) बसव (B) लकुलीश
   (C) कुशिक (D) गोरखनाथ

57. बुद्ध की प्राचीनतम मूर्तियाँ लगभग एक ही समय कहाँ बनी थीं ?
   (A) गान्धार एवं अजन्ता
   (B) मथुरा एवं अमरावती
   (C) मथुरा एवं गान्धार
   (D) अजन्ता एवं अमरावती

58. पुरुष सूक्त से सम्बन्धित कौनसा वक्तव्य असत्य है ?
   (A) यह ऋग्वेद के सातवें मण्डल में वर्णित है
   (B) इसमें ब्राह्मण का आयपुरुष के मुख से निःसृत होने का उल्लेख है
   (C) यह श्रेणीबद्धता के उदय को प्रकट करता है
   (D) यह उस समय उद्भूत होती हुई सामाजिक संरचना का धार्मिक अनुमोदन करता है

59. वैश्य का लक्षण दूसरे को बलि देने वाला (अन्यस्थ बलिकृत) और दूसरे के द्वारा भोज्य का उपभोग में आने वाला बताया गया है—
   (A) वाजसनेयी संहिता में
   (B) ऐतरेय ब्राह्मण में
   (C) अथर्ववेद में
   (D) शतपथ ब्राह्मण में

60. निम्नलिखित में से कौनसा एक ऋग्वेद में स्त्रियों के विषय में सही नहीं है ?
   (A) वे सभा की कार्यवाही में भाग लेती थीं
   (B) वे यज्ञ का अनुष्ठान करती थीं
   (C) वे युद्धों में सक्रिय भाग लेती थीं
   (D) उनका विवाह यौवनारम्भ से पूर्व हो जाता था

61. जाति का लक्षण नहीं है—
   (A) अंतर्विवाह (B) श्रम विभाजन
   (C) साम्या (D) आनुवंशिकता

62. वर्ण संकर की संकल्पना सबसे पहली बार मिलती है—
   (A) ब्राह्मणों में (B) उपनिषदों में
   (C) धर्मसूत्रों में (D) स्मृतियों में

63. निम्नलिखित में से कौन भागवत धर्म का सबसे पहला ज्ञात अनुगामी था ?
   (A) डेमेट्रियस (B) एन्टिअलकिडस
   (C) हेलियोडोरस (D) मिनेण्डर

64. निम्नलिखित में से कौनसा प्रारम्भिक ग्रीक था, जो भगवद्वाद का अनुयायी था ?
   (A) डेमेत्रियुस (B) एन्टियलकीड्स
   (C) हेलियोडोरस (D) मिनेण्डर

65. जैन धर्म जिसमें तीर्थंकरों की जीवनी होती थी—
   (A) भगवत सूत्र (B) आदि पुराण
   (C) कल्पसूत्र (D) उवासगदसाओ

66. द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन वैशाली में हुआ जहाँ बुद्ध धर्म दो भागों में बँट गया—
   1. स्थाविर या थेरवाडी 2. महासंघिक या सर्वास्तिवादी
   3. वज्रायन 4. कालचक्रायन
   इस कथन में—
   (A) 1, 2, 3 एवं 4 सत्य हैं
   (B) 1, 3 एवं 4 सत्य हैं
   (C) 2, 3 एवं 4 सत्य हैं
   (D) 1 एवं 2 सत्य हैं

67. भारत में भागवत्वाद सम्बन्धी साक्ष्य प्रारम्भ में आये—
   (A) सर्वताता राजा के गोसुदी शिलालेख से
   (B) हेलियोडोरस के बेसनगर अभिलेख से
   (C) सातवाहन सनी नग्निका के नानाधार गुहा अभिलेख से
   (D) चन्देर के महरोली स्तम्भ अभिलेख से

68. भागवत्वाद का विकास यमुना के किनारे मथुरा जिले में हुआ. यह साक्ष्य सम्बद्ध है—
   (A) जस्तिन (B) एरियन
   (C) मेगस्थनीज (D) स्ट्राबो

69. बुद्ध के द्वारा सबसे अधिक संख्या में प्रवचन (Discourses) दिए गए थे–
   (A) श्रावस्ती में (B) कौशाम्बी में
   (C) राजगृह में (D) सारनाथ में

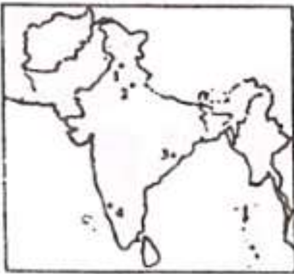
70. बौद्ध श्रमणों के आहार-सम्बन्धी अनुशासन में बौद्ध भिक्षुओं को अनुमति थी–
   1. भिक्षा माँगने की.
   2. भोजन के लिए निमंत्रण स्वीकार करने की.
   3. मठ में भेजी गई भेंट ग्रहण करने की.
   4. किसी विशेष प्रकार के आहार के लिए अपनी इच्छा प्रकट करने की.
   उपर्युक्त में से कौन-कौनसे कथन सही हैं?
   (A) 1 और 2 (B) 3 और 4
   (C) 1, 2 और 4 (D) 1, 2 और 3

71. बौद्ध धर्म की निम्नलिखित विशेषताओं में से कौनसी एक, इसे जैन धर्म से भिन्न करती है?
   (A) वेदों की सत्ता का अधिकार
   (B) कर्म की प्रभावशीलता से विश्वास
   (C) अत्यधिक सुख और आत्मनिग्रह, दोनों का तिरस्कार
   (D) सभी प्राणियों को क्षति नहीं पहुँचाने की अभिवृत्ति

72. 'वास्तविकता की बहुलता' का सिद्धान्त (Doctrine of Manyness of reality) एक विशिष्ट लक्षण है–
   (A) बौद्ध धर्म का
   (B) जैन धर्म का
   (C) बौद्ध धर्म और जैन धर्म दोनों का
   (D) पाशुपत का

73. निम्नलिखित में से किस एक स्थान पर जैन धर्म साहित्य पाँचवीं शताब्दी ई. में संहिताबद्ध (Codified) किए गए?
   (A) वल्लभी (B) वैशाली
   (C) राजगृह (D) पाटलिपुत्र

74. निम्नलिखित स्थलों पर विचार कीजिए–
   (a) हस्तिनापुर (b) पिष्टपुर
   (c) रोपड़ (d) श्रवणबेलगोला



इन स्थलों को दिए गए मानचित्र में 1, 2, 3 और 4 से चिह्नांकित अवस्थितियों से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए–

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	2	3	1	4
(C)	3	2	1	4
(D)	2	3	4	1

75. मूलतः कश्मीरी बौद्ध दार्शनिक जिसने महायान बौद्ध शाखा का प्रचार मध्य एशिया और चीन में किया, था–
   (A) कुमार जीव (B) असंग
   (C) वसुबंधु (D) अतीस

76. निम्नलिखित में से कौन पाशुपत मत का व्याख्याता (Expounder) था?
   (A) कपिलेश्वर (B) कुषिक
   (C) लकुलिश (D) पराशर

77. भागवत धर्म में वासुदेव के अतिरिक्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता था–
   (A) बलराम (B) प्रद्युम्न
   (C) साम्ब (D) अनिरुद्ध

78. सूची–I (विवाहों के प्रकार) को सूची–II (विशेषताओं) से सुमेलित कीजिए और दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची–I
   (a) दैव (b) आर्ष
   (c) असुर (d) राक्षस

सूची–II
   1. वधू का पिता वर से एक जोड़ी गाय और बैल प्राप्त करता है.
   2. वधू का बलपूर्वक अपहरण कर विवाह किया जाता है.
   3. पिता पुत्री को वस्त्र-आभूषण आदि देता है.
   4. पिता पुत्री को पुजारी (Priest) को सौंपता है.
   5. वर-वधू की कीमत अदा करता है.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	4	3	5
(B)	4	1	5	2
(C)	3	4	5	2
(D)	4	1	2	5

79. बौद्ध संघ के नियम मूलतः किस पुस्तक में दिए गए हैं ?
   (A) त्रिपिटक
   (B) विनय पिटक
   (C) अभिधम्म पिटक
   (D) सुत्तपिटक

80. निम्नलिखित पर विचार कीजिए–
   1. अपवाहन 2. अभिश्यंदवामन
   3. अहिंसा 4. उपासक की स्थिति

इनमें से किसके / किनके सम्बन्ध से अर्थशास्त्र तथा अशोक का अभिलेख पूर्ण साम्यता रखता है ?

(A) 1 और 3 (B) केवल 1
(C) 2 और 4 (D) 3 और 4

81. छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों के विषय में निम्नलिखित में से किस बौद्ध ग्रंथ में सूचना मिलती है ?

(A) दीपवंश (B) अंगुत्तरनिकाय
(C) दीघनिकाय (D) त्रिपिटक

82. सूची-I (चरित्र) को सूची-II (सम्बन्धित वस्तु) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (चरित्र)	सूची-II (सम्बन्धित वस्तु)
(a) गौतम बुद्ध	1. सुराही तथा जपमाला
(b) जिन	2. धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा
(c) विष्णु	3. कात्योत्सर्ग अभिमुद्रा
(d) बोधिसत्व मैत्रेय	4. गरुड़ध्वज

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	1	4
(B)	2	3	4	1
(C)	3	2	4	1
(D)	2	3	1	4

83. सूची-I (शब्द) को सूची-II (व्याख्या) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (शब्द)	सूची-II (व्याख्या)
(a) भाग	1. रेखीय माप
(b) द्रम	2. राजा का भाग
(c) निवर्तन	3. मुद्रा
(d) विष्टि	4. बेगार
	5. भू-माप की इकाई

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	5	4
(B)	4	5	3	1
(C)	2	5	3	4
(D)	4	3	5	1

84. निम्नलिखित अवयवों पर विचार कीजिए–

1. दुर्वासा का श्राप 2. मुद्रिका
3. राजकीय आखेट 4. मारीच का आश्रम

महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान को अपने गौरवग्रन्थ में रूपान्तरित करने में इनमें से किन अवयवों का कालिदास ने उपयोग किया ?

(A) 1, 2 और 3 (B) 1, 2 और 4
(C) 2, 3 और 4 (D) 1, 3 और 4

85. कुमारिल निम्नलिखित में से किसके आचार्य थे ?

(A) मीमांसा (B) सांख्य
(C) वैशेषिक (D) वेदांत

86. बौद्ध संघ स्थाविरवादी तथा महासंघिका जैसे दो भागों में टूटा था–

(A) प्रथम धर्म सभा में (B) द्वितीय धर्म सभा में
(C) तृतीय धर्म सभा में (D) चतुर्थ धर्म सभा में

87. निम्नलिखित में से कौनसे जैन धर्म से सम्बन्धित हैं?

1. अनेकान्तवाद 2. शून्यवाद
3. स्यादवाद 4. सर्वास्तिवाद

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए–

कूट :

(A) 1 व 2 (B) 1 व 3
(C) 2 व 3 (D) 3 व 4

88. जेम्स प्रिंसेप द्वारा अशोक के अभिलेखों का अर्थ निकालने के सूत्र द्विभाषीय प्रलेखों से मिले, जो सम्बद्ध थे–

(A) ब्राह्मी तथा अरमाई से
(B) ब्राह्मी तथा कीलाक्षरों से
(C) ब्राह्मी तथा ग्रीक से
(D) ब्राह्मी तथा चित्रलिपियों से

89. बौद्धमत में उपसम्पदा पद से क्या तात्पर्य है?

(A) बौद्धमत को दान देने से अर्जित धार्मिक पुण्य
(B) बौद्ध मठ से सम्बद्ध सम्पत्ति
(C) बौद्धमत में आरम्भिक धर्म परिवर्तन
(D) बौद्ध भिक्षु के धर्म परिवर्तन की अन्तिम अवस्था

90. निम्न में से कौनसा एक लक्षण यवन लेखकों के अनुसार मौर्य राजत्व का लक्षण नहीं था?

(A) राजा सदैव सशस्त्र व्यक्तियों से घिरा रहता था, जो अंगरक्षक थे
(B) राजाओं का प्रिय व्यसन आखेट था
(C) राजा को मुदित करने के लिए पशु-युद्धों का आयोजन किया जाता था
(D) राजा का भोजन अनेक व्यक्तियों द्वारा परखा जाता था

91. बौद्ध साहित्य में 'मिलिन्दपञ्हो' ऐसी प्रश्नोत्तरी के रूप में मिलती है जिसके दो प्रमुख चरित्र हैं, नागशेण तथा–
   (A) कनिष्क (B) मिनांडर
   (C) यूथिडिमस (D) एन्टियालकिड्स

92. श्रवणबेलगोला सम्बन्धित है–
   (A) बौद्ध मत से (B) जैन मत से
   (C) अशोक के धम्म से (D) नागार्जुन से

उत्तरमाला

1. (A)	2. (B)	3. (B)	4. (D)	5. (D)
6. (B)	7. (D)	8. (C)	9. (A)	10. (C)
11. (B)	12. (C)	13. (C)	14. (C)	15. (B)
16. (A)	17. (B)	18. (D)	19. (A)	20. (A)
21. (D)	22. (B)	23. (A)	24. (B)	25. (C)
26. (B)	27. (D)	28. (C)	29. (C)	30. (B)
31. (D)	32. (D)	33. (B)	34. (B)	35. (A)
36. (A)	37. (D)	38. (C)	39. (D)	40. (B)
41. (B)	42. (D)	43. (A)	44. (A)	45. (B)
46. (A)	47. (A)	48. (D)	49. (B)	50. (C)
51. (C)	52. (B)	53. (C)	54. (B)	55. (B)
56. (B)	57. (C)	58. (A)	59. (B)	60. (D)
61. (C)	62. (D)	63. (C)	64. (C)	65. (C)
66. (D)	67. (B)	68. (C)	69. (A)	70. (D)
71. (C)	72. (B)	73. (A)	74. (B)	75. (A)
76. (C)	77. (B)	78. (B)	79. (B)	80. (C)
81. (B)	82. (B)	83. (A)	84. (A)	85. (A)
86. (B)	87. (B)	88. (C)	89. (C)	90. (D)
91. (B)	92. (B)			

संकेत

1. भद्रबाहु मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के समकालीन थे.

65. कल्पसूत्र में जैन धर्म के अन्तिम दो तीर्थंकरों की जीवनी वर्णित है.

87. शून्यवाद एवं सर्वस्तिवाद का सम्बन्ध बौद्ध धर्म से है.

89. संघ में प्रविष्ट होने को उपसम्पदा कहा जाता था.

90. (A) स्ट्रेबो का कथन है, जबकि (B) और (C) मेगस्थनीज का (D) कौटिल्य का विचार है.

92. यहाँ महावीर स्वामी की विशाल मूर्ति स्थापित है.

7

मौर्य साम्राज्य : चन्द्रगुप्त मौर्य, मेगस्थनीज, अशोक एवं उसके शिलालेख, उसका धम्म, प्रशासन, तत्कालीन संस्कृति एवं कला, अर्थशास्त्र

(The Mauryan Empire : Chandragupta Maurya, Megasthenese, Ashoka & his Inscriptions, his Dhamma, Administration, Culture & Art, The Arthasastra)

मौर्य साम्राज्य
(The Mauryan Empire)

मगध साम्राज्यवाद के उदय से मौर्य साम्राज्य की नींव लगना सम्भव हो सकी. तत्कालीन (छठी शताब्दी में) महाजनपदों को शक्ति के बल पर मगध में विलय कर मौर्यों ने एक विशाल मगध साम्राज्य की स्थापना की. मगध साम्राज्य की स्थापना का श्रेय मौर्य साम्राज्य के प्रथम शासक चन्द्रगुप्त मौर्य को जाता है. भारतीय इतिहास के सम्पूर्ण कथानक में मौर्य साम्राज्य की महत्ता सर्वोपरि रही है.

मौर्यकालीन ऐतिहासिक स्रोत

किसी भी वंश, राजवंश या क्षेत्र, प्रदेश के इतिहास को जानने के लिए विभिन्न स्रोतों को आधारभूत मानकर उनका सहारा लिया जाता है. ये स्रोत साहित्यिक, विदेशी यात्री वृत्तान्त, अभिलेख, पुरातात्त्विक प्रमाण, मुद्राएँ, स्तम्भाभिलेख, शिलालेख इत्यादि हो सकते हैं. ठीक इसी प्रकार मौर्यकालीन इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उपर्युक्त स्रोतों को आधारभूत मानना अपरिहार्य होगा—

(i) साहित्यिक स्रोत

मौर्य वंश के इतिहास को जानने के लिए साहित्यिक स्रोतों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

1. भारतीय साहित्य
2. विदेशी साहित्य एवं यात्रा वृत्तान्त

भारतीय साहित्य

अर्थशास्त्र—मौर्यवंश की प्रामाणिक जानकारी का भारतीय साहित्यिक स्रोत कौटिल्य का अर्थशास्त्र है. विद्वानों ने सबसे पहले सन् 1909 ई. में कौटिल्य के अर्थशास्त्र की जानकारी प्राप्त की. सारा अर्थशास्त्र 15 अधिकरण एवं 180 प्रकरणों में बँटा हुआ है. अरस्तू के पॉलिटिक्स (Politics) और मैकियावेली के प्रिंस (Prince) से कौटिल्य का अर्थशास्त्र साम्यता रखता है. अर्थशास्त्र से मौर्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है.

के. पी. जायसवाल, फ्लीट, स्मिथ, जैकोबी, शाम शास्त्री इत्यादि विद्वानों के अनुसार अर्थशास्त्र की रचना मौर्यकाल में हुई एवं इसकी रचना चन्द्रगुप्त मौर्य के महामन्त्री कौटिल्य या चाणक्य ने की.

विण्टरनीज, कीथ, भण्डारकार, जॉली इत्यादि विद्वान् प्रथम से तृतीय शताब्दी के मध्य का समय अर्थशास्त्र का रचनाकाल मानते हैं.

यू. एन. घोषाल नामक विद्वान् के अनुसार अर्थशास्त्र प्राक् मौर्यकालीन है.

मूलतः अर्थशास्त्र चाणक्य या कौटिल्य द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में लिखा गया हो, लेकिन इस ग्रन्थ का अन्तिम संकलन ईसा की 2-3 शताब्दी में हुआ था. विद्वानों के अनुसार ऐसा माना जाता रहा है.

अर्थशास्त्र में मौर्य शासकों की नामावली नहीं दी गई है.

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य या राजा की उत्पत्ति, राज्य के तत्त्व, राजा की स्थिति, उसके अधिकार एवं कर्त्तव्य, राज्य की नीति-निर्धारण सम्बन्धी प्रश्न, युद्ध एवं शांति के समय राजा के कर्त्तव्य, नगर प्रशासन, गुप्तचर, न्याय एवं सैन्य व्यवस्था तथा राज्य के आर्थिक आधार एवं सामाजिक व्यवस्था पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है.

मुद्राराक्षस—अर्थशास्त्र के बाद दूसरा मौर्यकालीन प्रमुख साहित्यिक स्रोत विशाखादत्त का मुद्राराक्षस है. यह जासूसी नाटक है, जिसमें नन्दवंश का पतन, चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्थान, तत्कालीन सभ्यता एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त होती है.

विष्णुपुराण के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य शूद्र या नीच कुल में उत्पन्न हुआ था. इसी पुराण के आधार पर यह माना जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म नन्द राजा की मुरा नामक पत्नी से हुआ था

सोमदेव की 'कथासरित्सागर', क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी, पतञ्जलि का महाभाष्य, पाणिनी की अष्टाध्यायी भी मौर्यकाल के बारे में राजनीतिक एवं सामाजिक जानकारी प्रदान करते हैं.

मुमुलनार एवं परणार नामक तमिल लेखकों के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने दक्षिण में त्रिचनापल्ली जिले की पोदियिल पहाड़ी तक आक्रमण किया था.

बौद्ध साहित्य

पालि और संस्कृत भाषा में लिखा गया बौद्ध साहित्य मौर्यकालीन शासन एवं सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालता है.

दिव्यावदान, अशोकावदान, दीपवंश, महावंश, मिलिन्दपञ्हो, मंजूश्रीमूलकल्प इत्यादि बौद्ध ग्रन्थों से मौर्य वंश के निर्धारण में सहायता प्राप्त होती है. अशोक एवं चन्द्रगुप्त मौर्य से सम्बन्धित विशिष्ट जानकारियाँ भी बौद्ध धर्म ग्रन्थ से प्राप्त होती हैं.

महावंशटीका के अनुसार चाणक्य ने नन्द वंश को समाप्त कर जम्बूद्वीप का सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य को बना दिया था. इसमें चन्द्रगुप्त की तुलना एक ऐसे छोटे बालक से की है, जो किनारे को छोड़कर रोटी को मध्य भाग से खाता है.

दिव्यावदान में अशोक ने स्वयं को क्षत्रिय बताया है. इसी के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र बिन्दुसार को मूर्धन्य भिषिक्त क्षत्रिय कहा है. बौद्ध ग्रन्थ 'मिलिन्दपञ्हो' में मगध की सेना का विस्तृत वर्णन किया गया है.

मंजूश्रीमूलकल्प में प्राक्-मौर्यकाल से लेकर हर्षवर्द्धन के काल की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं का वर्णन मिलता है. दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान, अशोकावदान में अशोक की जीवनी पर प्रकाश डाला गया है. इन्हीं बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाइयों को मौत के घाट उतारकर मगध का साम्राज्य ग्रहण किया था. अशोक द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण करना एवं अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रतिबद्ध होने का वर्णन इन्हीं ग्रन्थों में प्राप्त होता है.

जैन साहित्य

स्थविरावलिचरित, परिशिष्टपर्व, कल्पसूत्र, भद्रबाहु चरितम् इत्यादि जैन साहित्य से चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन, मौर्य साम्राज्य के विकास एवं नन्दवंश के पतन की जानकारी प्राप्त होती है.

विदेशियों के विवरण

इण्डिका—विदेशी यात्रियों के विवरण में सर्वोपरि मेगस्थनीज का नाम आता है. मेगस्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस के राजदूत के रूप में पाटलिपुत्र में 6 वर्षों तक रहा. मेगस्थनीज ने सम्पूर्ण विवरण के लिए 'इण्डिका' नामक पुस्तक लिखी. इण्डिका और 'कौटिल्य' के अर्थशास्त्र में अत्यधिक साम्यता दृष्टिगत होती है. इण्डिका में मौर्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक अवस्था का विस्तृत विवरण दिया गया है. वर्तमान में इण्डिका मूल रूप में नहीं, अपितु यूनानी यात्रा विवरणों के उद्धरणों में उपलब्ध है.

यूनान से आने वाला दूसरा राजदूत 'डायोनिसस' था, जो बिन्दुसार के दरबार में कई वर्षों तक रहा था. इसके विवरण से भी तत्कालीन व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है. डायोनिसस एवं मेगस्थनीज के अतिरिक्त स्ट्रैबो, ऐरियन, डायोडोरस के विवरण भी मौर्य साम्राज्य की जानकारी उपलब्ध कराते हैं.

चीनी विवरण

फाह्यान और ह्वेनसांग का यात्रा विवरण भी मौर्यकाल और अशोक के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराता है. दोनों चीनी यात्री अशोक के हृदय परिवर्तन के पूर्व उसकी क्रूरता का अतिशयोक्तिपूर्ण शब्दों में वर्णन करते हैं.

पुरातात्त्विक साक्ष्य

राजाज्ञाओं को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करने वाला मौर्यकालीन भारतीय शासक अशोक था. इन अभिलेखों को प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मी, खरोष्ठि एवं अरेमिक लिपि में लिखा गया था. मौर्यकालीन प्रशासन, साम्राज्य एवं अशोक की गृह एवं विदेश नीति के सम्बन्ध में इनसे वर्णन प्राप्त होता है. अभिलेखों को स्तम्भ, शिला एवं गुहा के आधार पर वर्गीकृत किया गया है.

अशोक के द्वारा स्थापित स्तम्भाभिलेखों की संख्या 9 है, उनके नाम निम्नानुसार हैं—

1. रुम्मिनदेई (उत्तर प्रदेश)
2. दिल्ली टोपरा
3. निगलिवा (नेपाल की तराई)
4. दिल्ली-मेरठ
5. इलाहाबाद-कोसम (कौशाम्बी)

6. लौरिया-अरेराज
7. लौरिया-नन्दनगढ़ (चम्पारण, बिहार)
8. सारनाथ (बनारस)
9. सांची (मध्य प्रदेश)

अशोक के शिलाभिलेख एवं लघु शिलाभिलेखों के नाम निम्नानुसार हैं—

1. येरागुड़ी (आन्ध्र प्रदेश)
2. राजुल मंदगिरि (आन्ध्र प्रदेश)
3. ब्रह्मगिरि (मैसूर)
4. सिद्धपुर (कर्नाटक)
5. जटिंगरामेश्वर (कर्नाटक)
6. सहसराम (बिहार)
7. रूपनाथ (मध्यप्रदेश)
8. गुर्जरा (मध्यप्रदेश)
9. बैराठ (राजस्थान)
10. भावरू (राजस्थान)
11. कलसी (उत्तर प्रदेश)
12. गिरनार (गुजरात)
13. धौली (उड़ीसा)
14. जौगड़ (उड़ीसा)
15. सोपारा (महाराष्ट्र)
16. भूईग्राम (महाराष्ट्र)
17. शाहबाजगढ़ी
18. मानसेरा
19. कांधार
20 लमगान

शिला और स्तम्भ अभिलेखों के अतिरिक्त गया के पास बराबर की पहाड़ी में स्थित गुफाओं में अभिलेख उत्कीर्ण हैं. ये गुहा अभिलेखों के नाम से जाने जाते हैं. अशोक के अभिलेखों की निम्नलिखित तीन संख्याएँ हैं—

(1) कर्ण चौपड़ गुहा
(2) नयनग्रोथ या सुदामा गुहा
(3) विश्व झोपड़ी गुहा

तीनों प्रकार के अभिलेख अशोक एवं मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी के प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत हैं.

मौर्यों का राजनीतिक इतिहास
(Political History of the Mauryas)

मौर्य वंश की स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य को जाता है. यूनानी आक्रमण और नन्दवंश के अत्याचारी शासकों से त्रस्त मगध की जनता को चन्द्रगुप्त ने राहत की साँस दिलाई. चन्द्रगुप्त मौर्य को 'भारत का मुक्तिदाता' भी कहा जाता है.

विष्णुपुराण के अनुसार चन्द्रगुप्त का जन्म नन्द राजा की पत्नी मुरा से हुआ था. मुरा शब्द से कालान्तर में चन्द्रगुप्त 'मौर्य' कहलाया. माना जाता है कि नन्द भी शूद्र ही होते हैं अतः चन्द्रगुप्त को भी शूद्र ही स्वीकारा गया है.

मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए 'वृषल' और 'कुलहीन' शब्दों का प्रयोग किया है जो चन्द्रगुप्त मौर्य के शूद्र होने की परिकल्पना को इंगित करते हैं.

ब्राह्मण ग्रन्थ मौर्य को निम्न कुल में उत्पन्न एवं बौद्ध धर्मग्रन्थ क्षत्रिय कुल में उत्पन्न बताते हैं.

बौद्ध ग्रन्थ 'महापरिनिव्वानसुत्त' के अनुसार मौर्य पिप्पली वन के शासक थे, जो बुद्ध की तरह ही क्षत्रिय वर्ण से सम्बन्धित थे.

जैन ग्रन्थ 'परिशिष्ट पर्व' के अनुसार चन्द्रगुप्त के पैतृक गाँव में मोर पाला जाता था. जिसके फलस्वरूप उन्हें मौर्य कहा गया है.

इतिहासकार जस्टिन के अनुसार साण्ड्रोकोटस (चन्द्रगुप्त) निम्न कुल में पैदा हुआ था, लेकिन दैवीय शक्ति की प्रेरणा से उसे राजपद की प्राप्ति हुई थी.

ब्राह्मण ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य सभी विद्वान्, ग्रन्थ एवं कुछ अन्य साहित्य चन्द्रगुप्त मौर्य को क्षत्रिय मानते हैं.

राधाकुमुद मुखर्जी विष्णुपुराण के चन्द्रगुप्त मौर्य के शूद्र होने के तर्क को खण्डित करते हुए अभिव्यक्त करते हैं. "विष्णुपुराण का टीकाकार व्याकरण के नियमों का पालन करने से अधिक चन्द्रगुप्त के लिए एक माँ ढूँढ़ने में ज्यादा लालायित है."

मौर्य वंश के शासक

मगध को विकृत परिस्थितियों, यूनानी आक्रमण एवं नन्द वंश से मुक्त कर शासन को संभालने वाला मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था. मौर्य वंश के शासकों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है.

चन्द्रगुप्त मौर्य (321-300 ई.पू.)

1. वास्तविक नाम—चन्द्रगुप्त मौर्य
2. पूर्वज—पिप्पलीवन के शासक
3. बाल्यकाल—जंगलों में बीता

4. प्रेरणा एवं संरक्षण—तक्षशिला के आचार्य चाणक्य द्वारा नन्दवंश के विनाश के लिए बचपन से शिक्षा एवं कूटनीति से तैयार करना.

5. लक्ष्य—(i) यूनानी आक्रमणकारियों से मुक्ति
(ii) मगध को नन्दों से मुक्त करना

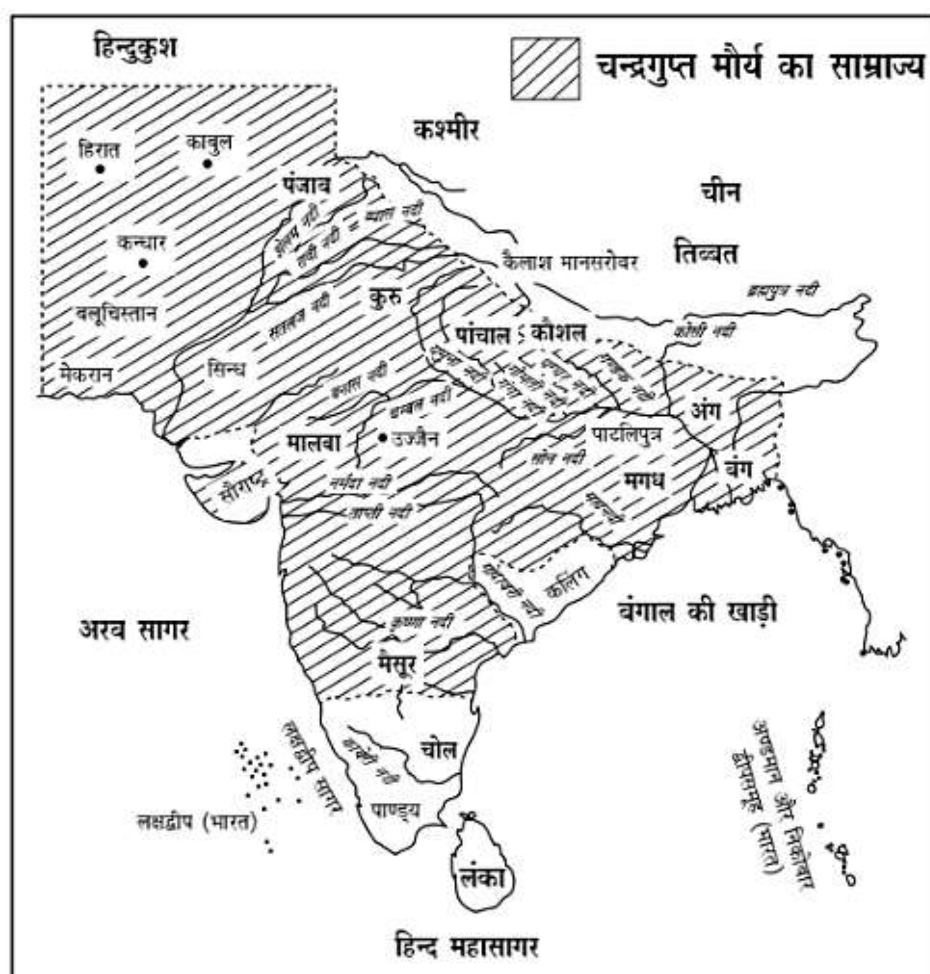
6. **उल्लेखनीय कार्य**—1. चन्द्रगुप्त मौर्य ने धनानन्द (नन्दवंश) को मारने के लिए सिकन्दर से सहायता के लिए निवेदन किया, लेकिन असमर्थ रहा.

प्रथम विजय—1. विदेशी शासन के विरुद्ध भड़काकर लोगों को समर्थन में लेकर यूनानी सत्ता से कमजोर अवस्था में चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिन्ध और पंजाब पर आक्रमण कर दिया. पाटलिपुत्र पर अधिकार करने के लिए सिन्ध और पंजाब से सहयोग लिया.

द्वितीय विजय—2. पंजाब से चन्द्रगुप्त मौर्य पाटलिपुत्र पहुँचा. वहाँ पर उसको मुक्तिदाता के रूप में स्वीकृत किया गया. मगध की जनता की सहायता से नन्दवंश के अन्तिम शासक धनानन्द को मारकर चन्द्रगुप्त मौर्य मगध का शासक बन गया.

द्वितीय विजय के तरीके—(अ) नंद की विशालतम एवं शक्तिशाली सेना जिसका सेनापति भद्दशाल था की सहायता से धनानन्द को हराने के लिए चाणक्य ने षड्यन्त्र का सहारा लिया (मुद्राराक्षस के अनुसार).

(ब) चन्द्रगुप्त और धनानन्द के युद्ध में 100 कोटि सैनिक, 10 हजार हाथी, 1 लाख घोड़े और 5000 रथ पूरी तरह ध्वस्त हो गये (मिलिन्दपञ्हो के अनुसार).



(स) युद्ध से डर कर धनानन्द अपनी दो पत्नियों एवं एक पुत्री के साथ भाग गया था (परिशिष्ट पर्व के अनुसार).

राज्याभिषेक—धनानन्द को मारकर 321 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य मगध साम्राज्य का शासक बन बैठा.

चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा सम्पादित अन्य महत्वपूर्ण कार्य

(1) विन्ध्य पर्वत के दक्षिणी भाग पर आक्रमण कर विशाल साम्राज्य का निर्माण किया.

(2) विभिन्न अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि पश्चिम में सौराष्ट्र (शक शासक रुद्रदामन के अभिलेख से) एवं दक्षिण में मैसूर चन्द्रगुप्त ने अपने अधिकार में कर लिया था.

(अ) सौराष्ट्र का शासक पुष्यगुप्त चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा मनोनीत किया गया था.

(3) सेल्यूकस 312-11 ई. पू. अपने प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय प्राप्त कर बेबीलोन और बैक्ट्रिया के मार्ग से भारत की तरफ अग्रसर हुआ. 305-04 ई. पू. काबुल के मार्ग से सिन्धु नदी की तरफ सिकन्दर द्वारा जीते हुए प्रदेशों पर आक्रमण करने के लिए जैसे ही आया, उसका सामना चन्द्रगुप्त मौर्य से करना पड़ा. दोनों में सन्धि होकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गये.

(अ) संधि की शर्तों में एरियाना के निम्नलिखित चार प्रदेश चन्द्रगुप्त मौर्य को प्राप्त हुए—

(1) एरिया (हेरात)

(2) आरकोशिया (कन्दहार)

(3) जेड्रोसिया (बलूचिस्तान)

(4) पेरीपेमिसदाई (काबुल)

(ब) मौर्य साम्राज्य की सीमा ईरान और अफगानिस्तान तक हो गई थी.

(स) हिन्दुकुश पर्वतमाला मौर्य साम्राज्य और सेल्युकस के राज्य के बीच की सीमा रेखा बन गई थी.

(द) सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया गया था.

(य) मेगस्थनीज इण्डिका का लेखक था, जिसे सेल्यूकस ने अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था.

साम्राज्य विस्तार—(4) चन्द्रगुप्त का साम्राज्य पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक एवं उत्तर में हिमालय शृंखला से दक्षिण में मैसूर तक तथा पश्चिमोत्तर में मध्य एशिया तक फैल गया था, जो किसी भारतीय शासक द्वारा स्थापित सबसे बड़ा साम्राज्य था.

प्रशासन व्यवस्था—1. राजा राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होता था. सभी अधिकार राजा के हाथों में होते थे.

2. मन्त्रिपरिषद् एवं पदाधिकारियों द्वारा प्रशासन का नियन्त्रण राजा करता था.

3. राजा राज्य के सभी विभागों पर गुप्तचरों की सहायता से नियन्त्रण रखता था.

4. नगर प्रशासन, सैनिक व्यवस्था, स्थानीय प्रशासन की व्यवस्था अत्यन्त सुदृढ़ थी.

विभिन्न गतिविधियाँ—(1) चन्द्रगुप्त मौर्य महल में स्त्री अंगरक्षकों के साथ रहता था. वह मद्यपान एवं खेलकूद में अभिरुचि लेता था.

(2) ब्राह्मण एवं श्रमणों का सम्मान करता था.

(3) महल से बाहर युद्ध, यज्ञ, आखेट, न्याय के लिए निकलता था.

निष्कर्ष—(1) चन्द्रगुप्त मौर्य प्रथम भारतीय साम्राज्य निर्माता, मुक्तिदाता एवं विश्वविख्यात शासक था.

(2) पंजाब से यूनानियों को खदेड़ने एवं मगध की प्रजा को नन्दों के अत्याचारों से मुक्त कराने के फलस्वरूप उसे 'मुक्तिदाता' कहा जाता है.

(3) एक प्रखर प्रशासक, विजेता एवं कुशल कूटनीतिज्ञ के रूप में ख्यात व्यक्तित्व रहा है, जो भारतीय इतिहास में हमेशा अंकित रहेगा.

(4) चन्द्रगुप्त मौर्य जैनधर्म का समर्थक था.

अन्तिम जीवन—मगध में 12 वर्ष तक अकाल पड़ा जिससे क्षुब्ध होकर चन्द्रगुप्त मौर्य आचार्य भद्रबाहु के साथ मैसूर चला गया और उपवास करते हुए आत्महत्या (सल्लेखन) कर ली. श्रवणबेलगोला में चन्द्रगुप्त को कैवल्य की प्राप्ति हुई.

बिन्दुसार (अमित्रघात) (300-272 ई. पू.)

वास्तविक नाम—बिन्दुसार

उपनाम—अमित्रघात (शत्रुओं का संहारक)

अन्य प्रचलित नाम—(i) अमित्रकेटे, (ii) अमित्रचेत्स, (iii) अल्लित्रोशेड्स, (iv) सिंहसेन.

शासनावधि—(i) 24 वर्ष (पुराणों के अनुसार)

(ii) 27 वर्ष (महावंश के अनुसार)

विशिष्ट उपलब्धियाँ—(1) चन्द्रगुप्त के पश्चात् भी चाणक्य ने बिन्दुसार के प्रशासन में प्रधानमंत्री का पद संभालकर उल्लेखनीय योगदान दिया, जिससे अनेक विशिष्ट उपलब्धियाँ बिन्दुसार ने हासिल कीं (आर्यमंजूश्रीमूलकल्प, लामा तारानाथ के अनुसार).

(2) लामा तारानाथ के अनुसार[1]—"चाणक्य ने 16 राज्यों के राजाओं और सामन्तों का नाश किया एवं बिन्दुसार को पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्रपर्यन्त भू-भाग का अधीश बनाया."

(3) यूनानियों से मैत्री सम्बन्ध बिन्दुसार ने अनवरत बनाये रखे.

(4) सीरिया का राजा अन्तिओक प्रथम ने डायमेकस को, मिस्र के शासक टॉलेमी द्वितीय, फिलाडेल्फस ने डायोनिसस को बिन्दुसार के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा था.

महत्वपूर्ण कार्य—(1) साम्राज्य सुरक्षा के लिए विद्रोहों का दमन एवं विदेशी शासकों के साथ मित्रता.

(2) बिन्दुसार ने अपने पास योग्य मंत्रियों को रखा था. चाणक्य, सुबंधु, खल्लाटक, राधागुप्त बिन्दुसार के मंत्री थे. 500 सदस्यों वाली एक सभा भी उसकी सहायता करती थी.

(3) बिन्दुसार आजीवकों से प्रभावित था और संरक्षण देता था.

(4) उसने चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य को अखण्डित बनाये रखा.

मृत्यु—272 या 270 ई. पू. में.

अशोक महान् (273-232 ई. पू.)

1. **वास्तविक नाम**—अशोक

2. **उपाधि**—महान्

3. **विशेषताएं**—साम्राज्यवादी युग में युद्ध नीति का परित्याग करने वाला, प्रजा को संतान की तरह मानने वाला पहला विश्व सम्राट्.

4. **साहित्यिक स्रोत**—दीपवंश, दिव्यावदान, महावंश, महाबोधिवंश.

5. **ऐतिहासिक स्रोत**—(i) रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख.

(ii) मास्की शिलाभिलेख.

6. **पिता**—बिन्दुसार.

7. **माता**—धम्मा या सुभद्रांगणी (चंपा के ब्राह्मण की पुत्री)

8. **विवाह**—उज्जैन के धनी व्यापारी की पुत्री देवी के साथ

9. **सन्तान**—(i) महेन्द्र, (ii) संघमित्रा.

10. **प्रारम्भिक जीवन**—उद्दण्डतापूर्ण व्यतीत हुआ.

11. **राज्याभिषेक**—अपने पिता की मृत्यु के 4 वर्ष बाद 99 भाइयों की हत्या कर 273 ई. पू. शासक बना. (बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार)

12. **शासनावधि**—37 वर्षों तक शासन किया.

13. **प्रवृत्तियाँ**—कलिंग युद्ध से पूर्व अशोक दुष्ट एवं क्रूर शासक था–

(i) अन्तःपुर में उसकी कुरूपता का मजाक उड़ाने पर 500 स्त्रियों को मार दिया गया.

(ii) फाह्यान एवं ह्वेनसांग के अनुसार पाटलिपुत्र में अशोक द्वारा स्थापित एक नरक था जिसमें वह प्रजा को दण्ड देता था.

14. **हृदय परिवर्तन**—बौद्ध धर्म के प्रभाव से धर्मावलम्बी एवं श्रेष्ठ शासक बना.

उल्लेखनीय कार्य—1. वह उग्रगामी भारतीय साम्राज्यवादी नीति का पोषक एवं मैत्रीपूर्ण विदेशी सम्बन्धों का समर्थक बन गया

2. शासक बनने से पूर्व नेपाल और रूस पर अधिकार.

3. कलिंग युद्ध (261-60 ई. पू.) जीवन की सबसे बड़ी घटना थी, जिसने अशोक को **'चण्डाशोक'** से **'धर्माशोक'** में परिवर्तित कर दिया.

कलिंग युद्ध का स्वरूप एवं परिणाम

अशोक के मुख्य 13वें अभिलेख (शिलाभिलेख) में कलिंग युद्ध के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है. जिस समय अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया उस दौरान कलिंग उत्तर में वैतरणी से लेकर पश्चिम में अमरकंटक एवं दक्षिण में महेन्द्रगिरि पर्वत तक फैला हुआ था. यह राज्य स्वतन्त्र, सम्पन्न, शक्तिशाली एवं अत्यधिक सैनिक शक्ति से परिपूर्ण प्रान्त था. कलिंग की सेना में 60,000 पैदल, 1000 घुड़सवार एवं 7000 हाथी युक्त सैनिक थे—इस आशय का लेखन प्लिनी अपनी पुस्तक में अभिव्यक्त करता है. कलिंग की शक्ति से चकाचौंध होकर अशोक ने उस पर आक्रमण करने का निश्चय किया.

दक्षिण भारत से सीधे सम्पर्क बनाने, बिन्दुसारकालीन प्रतिशोध की भावना एवं मौर्य साम्राज्य के हितों की सुरक्षा के लिए अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की. कलिंग युद्ध अत्यधिक भीषण रक्तपात वाला युद्ध था, जिसमें अशोक महान् विजयी हुआ एवं कलिंग मगध साम्राज्य का अंग बन गया. तोसली (पुरी जिला) के राजकुमार को कलिंग का प्रशासक नियुक्त किया गया. धौली और जौगड़ अभिलेख कलिंग की प्रजा से सम्बन्धित है. इन अभिलेखों में अशोक ने प्रजा को अपनी सन्तान कहा है.

---

1 "Chanakya, one of his (Bindusara's) great lords, procured the destruction of the nobles and kings of sixteen towns and made the king master of all the territory between the eastern and western seas."

—Lama Taranath

कलिंग युद्ध के फलस्वरूप अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया. अशोक ने युद्ध के बजाय शांति और अहिंसा की नीति को अपनाया. कलिंग विजय अशोक के लिए परिवर्तनकारी घटना थी. यह युग दिग्विजय से धम्मविजय में परिवर्तित हो गया. कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने रणभेरीघोष के स्थान पर धर्मघोष करना प्रारम्भ किया. शांतिमिशन और मित्रवत् व्यवहार उसकी जीवनचर्या का एक अंग बन गया.

अशोक का साम्राज्य (The Empire of Ashoka)

अशोक के अभिलेखों के अनुसार मगध, पाटलिपुत्र, खलतिक पर्वत (गया के पास), कौशाम्बी, लुम्बिनीग्राम कलिंग (समापा, तोसली, जौगड़) अटवी या आलवी इसिला, उज्जयिनी, सुवर्णगिरि एवं तक्षशिला अशोक के साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे.

शाहबाजगढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान), मानसेरा (पाकिस्तान), कांधार, लमगान (अफगानिस्तान) से भी अशोक के शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जो सिद्ध करते हैं कि उत्तर-पश्चिम में अशोक की सीमा हिन्दुकुश पर्वत तक फैली हुई थी. राजतरंगिणी में अशोक को श्रीनगर का प्रथम सम्राट् बताया है. इसी सन्दर्भ में ह्वेनसांग का मानना है कि श्रीनगर का संस्थापक अशोक ही था. नेपाल, देहरादून का तराई क्षेत्र (रामपुरवा, लौरिया नंदनगढ़, लौरिया अरेराज) चम्पारण, बिहार एवं पूर्व में बंगाल तक अशोक का साम्राज्य था. उड़ीसा और गंजाम से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र एवं महाराष्ट्र तक अशोक का राज्य फैला हुआ था. अशोक के अभिलेखों के आधार पर स्पष्ट होता है कि सुदूर दक्षिण और असम के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत अशोक के अधिकार क्षेत्र में आता था.

अशोक महान् की धार्मिक एवं आध्यात्मिक नीति

अशोक कलिंग युद्ध के पश्चात् मानवतावादी बन गया था. उसकी कल्याणकारी नीति के मौलिक आधार सत्य, अहिंसा एवं नैतिकता मात्र बनकर रह गये थे. अशोक के नीतिगत सिद्धान्तों को 'धम्म' के नाम से जाना जाता है.

वैदिक धर्म और बौद्ध तथा जैन धर्म के मध्य समन्वित तत्वों को पैदा कर जनकल्याणार्थ जिन सिद्धान्तों को अशोक ने प्रतिपादित किया, उन्हें धम्म कहा जाता है. यह सारग्राही धर्म अशोक ने राजनीतिक महत्वाकांक्षा के वश में होकर किया था. साम्राज्य को सैनिक शक्ति के बजाय धम्म से संगठित करना ज्यादा सरल था. बौद्ध धर्म स्वीकार करने के पश्चात् ही अशोक के धम्म का स्वरूप प्रस्फुटित हुआ. महावंश, दीपवंश, प्रथम लघु शिलालेख (रूपनाथ) तथा प्रसिद्ध इतिहासकारों के अनुसार 'धम्म' बौद्ध धर्म ही था और अशोक ने बौद्ध धर्म श्रमण, मोगलिपुत्त तिस्स के सम्पर्क से अपनाया था.

भाब्रू शिलालेख में बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों पर अशोक ने आस्था अभिव्यक्त की है. माना जाता है कि अशोक ने 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया था. बोधगया की यात्रा, लुम्बिनी से करमुक्ति एवं स्तूपों के निर्माण से सिद्ध होता है कि अशोक का 'धम्म' बौद्ध धर्म ही था और उसने उसी का प्रचार किया.

अशोक के धम्म में बौद्ध धर्म से भिन्नताएँ भी थीं.

धम्म में निम्नलिखित तत्त्वों को महत्त्व नहीं दिया गया था—

1. चार आर्य सत्य
2. अष्टांगिक मार्ग
3. निर्वाण
4. संघ की स्थापना

वस्तुतः अशोक का धम्म मानव धर्म एवं नैतिक नियमों से परिपूर्ण सर्वग्राही दिनचर्या थी, जो मानव-मानव में विश्व-बन्धुत्व एवं सहिष्णुता को प्रकट करने का उद्देश्य मात्र था.

अशोक द्वारा प्रतिपादित धम्म के मूल तत्त्व

मानव कल्याणकारी तत्वों को बौद्ध धर्म में से निकालकर बुद्ध की परिकल्पनाओं को सर्वग्राह्य रूप में अशोक ने 'धम्म' के रूप में प्रस्तुत किया.

अशोक के धम्म को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. व्यावहारिक
2. सैद्धान्तिक

व्यावहारिक पहलू के दो भाग हैं—

1. स्वीकारात्मक
2. निषेधात्मक

अशोक के दूसरे एवं सातवें अभिलेखों के अनुसार अशोक ने धम्म को परिभाषित करते हुए अभिव्यक्त किया है—"धम्म है साधुता, बहुत से अच्छे कल्याणकारी कार्य करना, पाप रहित होना, मृदुता, दूसरों के प्रति व्यवहार में मधुरता, दया, दान, सत्य एवं पवित्रता."

धम्म के स्वीकरणीय तथ्य

1. जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए.
2. माता-पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए.
3. गुरुजनों के प्रति आदरभाव प्रदर्शित करना चाहिए.
4. मित्रों, परिचितों, श्रमणों, ब्राह्मणों के प्रति दानशीलता का प्रदर्शन किया जाना चाहिए.
5. दास एवं नौकरों के प्रति सुहृदयी होना चाहिए.
6. अल्प व्यय करना चाहिए.
7. अल्प संग्रह करना चाहिए.

- अशोक के धम्म के अनुसार पाप धम्म की प्रगति का अवरोधक है. पाप को अशोक के धम्म के अनुसार निम्नलिखित भागों में वर्गीकृत किया गया है—

1. चांड्य
2. नैष्ठूर्य
3. क्रोध
4. मान
5. ईर्ष्या

- 'धम्म' की प्राप्ति के लिए इनसे बचना अत्यावश्यक है.
- धम्म के अनुसार निम्नलिखित तत्त्वों को समाहित किए विना इहलीकिक और पारलीकिक सिद्धि प्राप्ति नहीं हो सकती—

1. अत्यन्त धर्म कामना	2. अत्यन्त परीक्षा
3. अत्यन्त शुश्रूषा	4. अत्यन्त भय
5. अत्यन्त उत्साह	

- धम्म के वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करने के लिए निम्न तत्त्वों का पालन करना अत्यावश्यक था—

1. धर्मगुण	2. धर्मानुशासन
3. धर्माचरण	4. धर्मयात्रा
5. धर्ममंगल	6. धर्मदान

अशोक के धम्म का सैद्धान्तिक पक्ष

1. अशोक को परलोक में विश्वास था.

2. प्रजा के भौतिक एवं इहलौकिक कल्याण की कामना करता था.

3. सर्वधर्म समभाव का पक्षधर था.

4. धर्मदान और धर्ममंगल महत्वपूर्ण तत्व थे.

5. अशोक के शासन का मूलाधार 'धम्म' था.

अशोक द्वारा धम्म का प्रचार

1. अशोक धम्म प्रचार के लिए धम्म महामात्रों की नियुक्ति करता था.

2. राजुकों, पुरुषों, प्रादेशिकों, युक्तों को प्रति पाँच वर्षों में धर्मानुशासन के लिए निकलने की आज्ञा प्रदान की जाती थी.

3. धर्मस्तम्भ, स्तूप, धार्मिक यात्राओं का आयोजन अशोक धम्म प्रचार के लिए ही किया करता था.

4. व्यक्तिगत कार्यों से, अहिंसात्मक कार्यक्रमों को निषेधित कर धम्म का प्रचार किया.

5. धम्मयात्रा, विमानदर्शन, हस्तिदर्शन, अग्निस्कन्ध आदि स्वर्ग झाँकियाँ प्रदर्शित कर लोगों को धम्म की तरफ आकर्षित किया.

6. स्वयं अशोक ने निगलीसागर, लुम्बिनी, बोधगया की यात्रा धम्म प्रचार के उद्देश्य से ही की थी.

7. अशोक अपनी पुत्री संघमित्रा एवं पुत्र महेन्द्र को भी धम्म प्रचार के लिए भेजता था. श्रीलंका में उसने अपने पुत्र-पुत्रियों को भेजा था.

8. अशोक द्वारा विभिन्न स्थलों पर भेजे गये धर्म प्रचारक निम्न थे[1]—

क्षेत्र	धर्म प्रचारक
1. कश्मीर और गांधार	मंज्क्षतिक
2. महिषमण्डल	महादेव
3. यवन राज्यों में	महारक्षित
4. अपरान्त में	धर्मरक्षित
5. महाराष्ट्र	महाधर्मरक्षित
6. वनवासी	रक्षित
7. स्वर्णभूमि	सोन
8. उत्तरा और श्रीलंका में	महेन्द्र एवं संघमित्रा

निम्नलिखित क्षेत्रों में भी धम्मप्रचार मिशन अशोक द्वारा भेजे गये—

1. चोल	10. सीरिया
2. पाण्ड्य	11. मिस्र
3. केरलपुत्र	12. साइरिन
4. सतियपुत्र	13. एपीरस
5. महिषमण्डल	14. मकदूनिया
6. कश्मीर एवं गान्धार	15. खोतान (मध्य एशिया)
7. अपरान्तक	16. सिंहलद्वीप (श्रीलंका)
8. महाराष्ट्र	17. सुमात्रा
9. वनवासी	

अशोक की प्रशासनिक व्यवस्था

1. अशोक ने चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन में नये तत्त्वों का समावेश किया, जिसमें राजत्व एवं देवत्व के मध्य सीधा सम्पर्क करना आसान था. 'देवानांपिय' की उपाधि उसने इसी के कारण धारण की थी.

2. प्रजा को अपनी सन्तान के समकक्ष मानने के लिए हर सम्भव प्रयास किये गये.

3. अशोक के प्रतिवेदकों को आदेश था कि प्रजा को किसी भी तरह के कष्ट होने पर किसी भी समय और किसी भी स्थान पर उसे सूचना दी जा सकती थी.

4. न्यायिक अधिकारी 'राजुक' होते थे, जिन्हें व्यापक अधिकार प्रदान किये गये थे.

5. प्रति पाँच वर्ष में प्रशासनिक अधिकारी दौरे पर जाते थे.

6. कलिंग अभिलेख में अशोक ने अभिव्यक्त किया है—"सारी प्रजा मेरी सन्तान है. जिस प्रकार मैं अपनी सन्तान के ऐहिक सुख और कल्याण की कामना करता हूँ, उसी प्रकार अपनी प्रजा के ऐहिक और पारलौकिक कल्याण और सुख के लिए भी ……… ."

---

1 सभी धर्म प्रचारक तृतीय बौद्ध संगीति के बाद धर्म प्रचार के लिए भेजे गये थे.

राजा

अशोक के काल में प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था. सभी विभागों का नियन्त्रक राजा होता था. सभी पदाधिकारियों की नियुक्ति एवं समस्त कार्यों का उत्तरदायित्व राजा के हाथों में होता था. इन सबके फलस्वरूप अशोक निरंकुश न होकर प्रजा कल्याणकारी शासक था.

परिषद्

परिषद् के द्वारा अशोक का शासन चलता था. परिषद् का उल्लेख अशोक के तीसरे एवं छठे अभिलेख में प्राप्त होता है. राजा को मंत्रणा देना, राजाज्ञा को मनवाना, विवादास्पद मामलों का फैसला करना, नीतियों की क्रियान्विति, कर्मचारियों के कार्यों पर नियन्त्रण, राजा के अनुचित कार्यों पर नियन्त्रण परिषद् के प्रमुख कार्य थे. **'अशोकावदान'** के अनुसार कुक्कटाराम विहार को अशोक के देने पर परिषद् ने प्रतिबन्ध लगा दिया था.

पदाधिकारी

1. **पुरुष**—अशोककालीन प्रशासन का सर्वोच्च पदाधिकारी पुरुष (चतुर्थ, सप्तम स्तम्भाभिलेखों में वर्णन) होता था. इसी वर्ग से परिषद् के सदस्यों को चुना जाता था.

2. **वर्ग**—जनसाधारण एवं अधिकारी वर्ग के अन्तर्गत आते थे. (द्वितीय एवं दशम शिलाभिलेख में वर्णन).

3. **मुख**—राज्य का प्रमुख पदाधिकारी एवं विभागाध्यक्ष होता था.

4. **महामात्र**—अशोक के शासनकाल में सर्वाधिक प्रभावशाली कर्मचारी महामात्र होते थे.

महामात्रों का वर्गीकरण

1. कुमार महामात्र
2. नगर व्यावहारिक महामात्र
3. अन्त महामात्र
4. धर्म महामात्र
5. स्त्री अध्यक्ष महामात्र

6. **युक्तक**—न्यायिक अधिकारी होता था, जो राजस्व का कार्य भी देखता था.

7. **राजुक**—न्याय प्रशासन एवं जनहित कार्यों का सम्पादन करता था.

8. **प्रादेशिक**—प्रान्तीय शासक के अधीनस्थ पदाधिकारी होता था.

9. **व्रजभूमिक**—चरागाहों और पशुओं की देखभाल करने वाला होता था.

10. **पुलिसाः**—गुप्तचर होते थे.

11. **प्रतिवेदक**—सन्देशवाहक एवं दूत का कार्य करता था.

12. **लिपिकार**—यह लेखनकार्य संभालता था.

13. **सायुक्त**—ग्राम प्रशासन से सम्बन्ध रखने वाला पदाधिकारी होता था.

14. **कारणक**—क्लर्क, न्यायाधिकारी या अध्यापक होता था.

उपर्युक्त पदाधिकारियों को तक्षशिला एवं उज्जैन में तीसरे वर्ष तथा अन्य राज्यों में पाँचवें वर्ष में दौरे पर जाना पड़ता था. इन्हें निर्देश प्राप्त था कि अधिकारी धर्म और न्याय की वृद्धि कर प्रजा के कल्याणकारी हितों का सम्पादन करें.

स्थानीय प्रशासन

अशोक का साम्राज्य तीन तरह के प्रान्तों में वर्गीकृत था—

(1) कुमारशासित प्रदेश—उत्तरापथ, दक्षिणापथ, अवन्तिरथ, कलिंग.

(2) कुमारेतरशासित प्रदेश.

(3) केन्द्रशासित प्रदेश.

1. आर्यपुत्र या कुमारों द्वारा शासन किया जाने वाला प्रदेश कुमारशासित प्रदेश कहलाता था. महामात्र एवं अधिकारियों के द्वारा कुमार प्रशासनिक गतिविधियाँ सम्पन्न करते थे.

2. अर्द्धस्वतन्त्रशासक केन्द्रीय सत्ता के नियन्त्रण में शासन करते थे, जिन्हें कुमारेतरशासित प्रदेश कहा जाता था.

3. केन्द्रशासित प्रदेश पर राजा द्वारा स्वयं पाटलिपुत्र से शासन किया जाता था. प्रान्तों को विषयों में बाँटा गया था, जिनका शासन विषयपति चलाते थे. नगर व्यावहारिक एवं महामात्र नगरों के प्रशासन को सँभालते थे. गाँव प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी.

अशोक की न्याय व्यवस्था

न्यायिक प्रशासन का सर्वोच्च न्यायाधिकारी एवं न्यायाधीश अशोक स्वयं ही था. 'राजुक' न्यायिक पदाधिकारी कार्यकारिणी की इच्छा को माने बिना स्वतन्त्र रूप से कार्य करते थे. व्यवहार समता और दण्ड समता अशोक के न्याय प्रशासन में प्रचलित थी. अच्छे और धार्मिक व्यक्ति को पुरस्कृत करने की व्यवस्था थी. न्याय व्यवस्था में धर्ममहामात्र नगर व्यावहारिक, महामात्र भी दौरे पर जाकर न्याय का सम्पादन करते थे.

सैनिक एवं राजस्व व्यवस्था

कलिंग युद्ध के बाद अशोक के पास की सैन्य शक्ति के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते. युद्ध के बाद उसका हृदय परिवर्तित

होकर धार्मिक हृदय बन गया. राजस्व व्यवस्था में कुछ क्षेत्रों को कर से मुक्त करने के अलावा ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं होते.

सम्राट् अशोक के उत्तराधिकारी

दानशीलता में वृद्धि होने, धर्म में अधिक प्रवृत्त होने से एवं अशोक की रानी तिष्यरक्षिता का प्रभुत्व स्थापित हो जाने से सम्राट् अशोक के अन्तिम दिन अच्छे नहीं रहे. कुणाल पुत्र सम्प्रति ने राज्य पर सर्वाधिकार कर लिया. रानी तिष्यरक्षिता द्वारा संप्रति की रक्षा करने का उल्लेख अशोक ने अपने अंतिम अभिलेख में किया है. 232 ई. पू. में अशोक की मृत्यु हो गई. सम्राट् अशोक के उत्तराधिकारियों का विवरण पालि ग्रन्थों के अनुसार निम्नलिखित है—

कुणाल (232-224 ई. पू.)

अशोक के तीवर, महेन्द्र, कुणाल एवं जालौक चार पुत्र थे. अशोक की मृत्यु के बाद कुणाल ने राज्य ग्रहण किया. बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों के अनुसार कुणाल का पुत्र सम्प्रति अशोक के बाद का शासक बना. जनश्रुतियों के अनुसार कुणाल को उसकी सौतेली माता ने अन्धा करवा दिया था. अतः कुणाल राजकार्य सँभाले ऐसा असम्भव था. विष्णुपुराण एवं भागवतपुराण के अनुसार कुणाल 'सुयशस' एवं दिव्यावदान के अनुसार 'धर्मविवर्धन' नामक उपाधि धारण करता था. कुणाल ने आठ वर्षों तक शासन किया. उसकी 224 ई. पू. में मृत्यु हो गई.

दशरथ (224-216 ई. पू.)

1. **वास्तविक नाम**—दशरथ

2. **पिता**—कुणाल

3. **कुणाल का उत्तराधिकारी**—(i) दशरथ (मत्स्यपुराण के अनुसार)

(ii) विगतशोक (लामा तारानाथ के अनुसार)

(iii) सम्प्रति (बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार)

(iv) बंधुपालित (वायुपुराण के अनुसार)

4. **सम्बन्धित अभिलेख**—नागार्जुनी पहाड़ी अभिलेख (गया, बिहार)

5. **उपाधि**—देवानांप्रिय

6. **उल्लेखनीय घटनाएँ**— राज्य दो भागों में वर्गीकृत हो गया था. पूर्वी भाग दशरथ के अधिकार एवं पश्चिमी भाग सम्प्रति के अधिकार में रहा.

7. **राजधानियाँ**—1. पाटलिपुत्र, 2. उज्जैन.

8. **मृत्यु**—216 ई. पू.

सम्प्रति (216-207 ई. पू.)

अशोक का सशक्त उत्तराधिकारी सम्प्रति था, जो 216 ई.पू. में गद्दी पर बैठा. सम्प्रति जैन मत का समर्थक था. पाटलिपुत्र एवं उज्जैन दोनों स्थानों पर एक साथ शासन करने का उल्लेख जैन ग्रन्थों में प्राप्त होता है. अकाल से दुःखी होकर उसने श्रवणबेलगोला में 207 ई. पू. में शरीर का त्याग कर दिया. सम्प्रति के बाद 207-206 ई. पू. शालिशक ने राज्य का भार सँभाला, लेकिन उसकी अव्यवस्थित स्थिति के कारण 206 ई. पू. में उसकी हत्या कर दी गई. देव वर्मा, शतधनुप एवं बृहद्रथ ने भी उत्तराधिकारिता निभाई. इन राजाओं की विकृत परिस्थितियों ने मौर्य साम्राज्य का अन्त कर दिया. बृहद्रथ (191-187 ई. पू.) मौर्य वंश का अन्तिम शासक था. उसकी मृत्यु 180 ई. पू. हुई, लेकिन विद्वान् मौर्य साम्राज्य का अन्त 184, 185 ई. पू. मानते हैं. बृहद्रथ के सेनापति पुष्यमित्र शुंग मौर्य साम्राज्य पर अधिकार करने के लिए राजा की हत्या कर स्वयं राजा बन बैठा. इस तरह मौर्य साम्राज्य पतन की राह को तपकर विनाश तक पहुँचा.

मौर्य साम्राज्य का पतन

शक्तिशाली एवं प्रखर बौद्धिक चाणक्य की कूटनीति से प्राप्त विशाल साम्राज्य का पतन हो गया. इसके उत्तरदायी कारक निम्नलिखित थे—

1. अशोक के ब्राह्मण विरोधी सिद्धान्तों के फलस्वरूप ब्राह्मण प्रतिक्रिया का आविर्भाव हुआ एवं इस उपेक्षित स्थिति से मौर्य साम्राज्य के पतन में एक उत्तरदायी घटक का अस्तित्व निर्मित हुआ.

2. धम्म विजय के कारण अशोक की सैन्य शक्ति कमजोर पड़ गयी. उसकी अहिंसा की नीति के परिणामस्वरूप उसे कई विदेशी आक्रमणों का सामना करना पड़ा और इससे साम्राज्य विघटित होकर पतनोन्मुख हो गया.

3. अत्यधिक दानशीलता के फलस्वरूप मौर्य साम्राज्य का कोष रिक्त हो गया. आर्थिक स्थिति के कमजोर हो जाने से अशोक प्रशासन से दूर हो गया, जो मौर्य साम्राज्य के पतन का कारण बना.

4. विपरीत परिस्थितियों के बाद भी अशोक के उत्तराधिकारी अच्छे होते तो, सब कुछ परिवर्तित करना आसान था, लेकिन अशोक के सारे उत्तराधिकारी कुणाल से लेकर बृहद्रथ तक सभी अयोग्य, राज्येतर गतिविधियों में केन्द्रित थे. उनकी उदासीनता ने मौर्य साम्राज्य को पतन की राह दिखाई.

5. अशोक के बाद केन्द्रीय प्रशासन क्षीण हो गया एवं मौर्य साम्राज्य विघटित हो गया, जिसके फलस्वरूप मौर्य साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हुआ.

6. अशोक के अयोग्य उत्तराधिकारियों की बदतर स्थिति से परिचित होकर अधिकारियों ने प्रजा को परेशान करना प्रारम्भ कर दिया. प्रजा पर अत्याचार बढ़ने से विद्रोहों का सिलसिला प्रारम्भ हुआ और इस परिस्थिति का लाभ उठाते हुए पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य साम्राज्य पर अधिकार कर लिया और मौर्य साम्राज्य का पतन हुआ.

7. मौर्य साम्राज्य के प्रशासन में आंतरिक कलह का व्याप्त होना भी एक महत्वपूर्ण कारक का पतन में प्रस्फुटन करता है.

मौर्य प्रशासन

मौर्य प्रशासन का ऐतिहासिक स्रोत कौटिल्य का अर्थशास्त्र एवं मेगस्थनीज की इण्डिका है. नीचे चन्द्रगुप्त कालीन प्रशासन का वर्णन दिया जा रहा है.

राजा

चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री कौटिल्य राजतन्त्र में विश्वास करता था. इसके परिणामस्वरूप तत्कालीन प्रशासन में राजा सर्वोच्च अधिकारी होता था. सभी राज्याधिकार राजा के हाथों में केन्द्रित होते थे. राजा ही कार्यकारिणी का प्रधान होता था. मंत्रियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति राजा ही करता था. राजा को विधायिका का अधिकार प्राप्त था. सेना एवं न्याय का प्रधान भी राजा ही होता था.

मंत्रिपरिषद्

राजा के सहयोग के लिए एक मंत्रिपरिषद् होती थी, जिसके सदस्य मंत्री से भी अधिक निम्न स्तर के होते थे. अर्थशास्त्र में मंत्रिमण्डल के सदस्यों को 48,000 पण एवं मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को 12,000 पण वेतनस्वरूप दिये जाने के साक्ष्य मिलते हैं. मंत्रिपरिषद् का मुख्य कार्य मन्त्रि-मण्डल के निर्णयों को क्रियान्वित करना था. मंत्रिपरिषद् का स्वरूप केन्द्रीय सचिवालय की तरह था.

पदाधिकारी

मौर्यकालीन प्रशासन में उच्च अधिकारी के रूप में तीर्थ, महामात्र या अमात्य होते थे. इनकी संख्या 18 के लगभग थी.

प्रमुख महामात्र श्रेणी के अधिकारी निम्नलिखित थे—

1. मन्त्री
2. सेनापति
3. पुरोहित
4. समाहर्ता (राजस्व की देखभाल करने वाला)
5. युवराज
6. नायक (नगर रक्षक)
7. सन्निधाता (कोषाध्यक्ष)
8. दुर्गपाल (दुर्ग की रक्षा व्यवस्था का प्रमुख)
9. दण्डपाल (पुलिस का प्रधान)
10. व्यावहारिक (प्रधान न्यायाधीश)
11. अन्तपाल (सीमारक्षक)

महामात्रों के बाद सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक प्रशासन के नियन्त्रण के लिए अध्यक्ष होते थे. अर्थशास्त्र में 30 अध्यक्षों का उल्लेख मिलता है. इनके सहयोगी के रूप में उपाध्यक्ष एवं निम्नवर्गीय कर्मचारी होते थे. प्रतियोगिता परीक्षा से इनका चयन होता था.

प्रमुख अध्यक्ष निम्नलिखित थे—

1. कोषाध्यक्ष (खजाने का प्रमुख)
2. लोहाध्यक्ष (धातु विभाग का प्रमुख)
3. आकराध्यक्ष (खान का प्रमुख)
4. लक्षणाध्यक्ष (मुद्रा व्यवस्था का प्रधान)
5. पण्याध्यक्ष (व्यापार देखने वाला प्रमुख)
6. सीताध्यक्ष (राजकीय जमीन को देखने वाला)
7. पौतवाध्यक्ष (बाजार एवं माप तौल का नियन्त्रक)
8. देवताध्यक्ष (धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख)
9. गणिकाध्यक्ष (गणिकाओं की देखभाल करने वाला)
10. सुराध्यक्ष (शराब उत्पादक एवं बिक्री नियन्त्रक)
11. नगराध्यक्ष (नगर में शांति व्यवस्था बनाने वाला)

सबसे ऊपर का पद मंत्री का होता था. इन्हें योग्यतानुसार वेतन दिया जाता था.

पुलिस एवं गुप्तचर

1. **दण्डपाल**—पुलिस का प्रधान होता था. अपराधियों पर नियन्त्रण रखना प्रमुख कार्य था.

2. **गुढ़ पुरुष**—गूढ़ पुरुष गुप्तचर होते थे जो पूरे राज्य में फैले रहते थे. ये सम्पूर्ण गतिविधियों की गुप्त सूचना राजा को देते थे.

गुप्तचरों की श्रेणियाँ—गुप्तचर दो श्रेणी में वर्गीकृत थे—(i) स्थायी गुप्तचर, (ii) संचार गुप्तचर.

पहले प्रकार के गुप्तचर उदास्थित, कायटिकक्षात्र, गृहपतिक, तापस, वैदेहक के रूप में स्थायी रूप से कार्य

करते थे. दूसरे प्रकार के गुप्तचर भ्रमण कर सूचनाएँ जुटाते थे. वैश्याओं एवं स्त्रियों की इस कार्य में सहायता ली जाती थी. गुप्तचर सभी वर्ग के लोगों पर दृष्टि रखते थे और सम्पूर्ण विवरण राजा को सौंपते थे.

सेना का संगठन

चन्द्रगुप्त मौर्य के पास एक विशाल संगठित सेना थी. मेगस्थनीज एवं कौटिल्य ने इसका वर्णन किया है. प्लिनी के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना में 6,00,000 पैदल सैनिक, 30,000 घुड़सवार, 9,000 हाथी एवं 8,000 रथ थे. मेगस्थनीज के अनुसार 6 समितियों में विभक्त 30 सदस्यों का बोर्ड नौ सेना, सेना यातायात, रसद एवं युद्ध सामग्री पहुँचाने वाली टुकड़ी, पैदल सेना, अश्वसेना, रथ एवं हाथी की देखभाल करती थी. 'इण्डिका' के अनुसार मौर्यकालीन सेना चतुरंगिणी थी. सैनिक को अच्छे वेतन एवं सुविधाएँ प्राप्त थीं. सीमा की रक्षा के लिए दुर्ग बनाये जाते थे, जिनकी रक्षा दुर्गपाल एवं अन्तपाल किया करते थे.

न्याय एवं दण्ड व्यवस्था

न्याय व्यवस्था का प्रधान राजा होता था. सबसे नीचे ग्राम न्यायालय होते थे. संग्रहण, द्रोणमुख, स्थानीय एवं जनपद ग्राम न्यायालयों के ऊपर होते थे. केन्द्रीय न्यायालय सर्वोपरि होता था.

केन्द्रीय न्यायालय दो भागों में वर्गीकृत था—

1. धर्मस्थीय (दीवानी मामलों की सुनवाई के लिए)

2. कण्टकशोधन (फौजदारी मामलों की सुनवाई के लिए अंग, भंग, जुर्माना एवं मृत्युदण्ड की सजा का प्रावधान था. धार्मिक लोगों को सम्मानित करने का प्रावधान था).

कर व्यवस्था

1. मौर्य साम्राज्य के प्रशासन, सेना एवं अन्य गतिविधियों को संचालित रखने के लिए उत्कृष्टतम् राजस्व प्रणाली की व्यवस्था थी.

2. 'अर्थशास्त्र' के अनुसार मौर्यकालीन आय के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित थे—

(i) **दुर्ग**—चूँगी, जुर्माना, शराव, जेलखाना, वैश्या, कारीगर, अचल सम्पत्ति से प्राप्त कर.

(ii) **राष्ट्र**—जनपद से प्राप्त होने वाली आय.

(iii) **खनि**—खनिज पदार्थों एवं खानों से प्राप्त होने वाली आय.

(iv) **सेतु**—वगीचों से प्राप्त होने वाली आय.

(v) **वन**—वन से प्राप्त होने वाली आय.

(vi) **व्रज**—जानवरों से प्राप्त आय.

(vii) **वणिक् पथ**—स्थल एवं जलमार्ग से प्राप्त आय.

3. किसानों से उपज का 1/4 या 1/6 भाग भूमि कर के रूप में लिया जाता था.

4. राज्य को निजी उद्योग-धन्धों एवं जुर्माने से भी आय प्राप्त होती थी.

5. राजस्व व्यवस्था का प्रमुख समाहर्ता था, जो विभिन्न कर्मचारियों की मदद से कर इकट्ठा करता था.

6. राजकोष की देखभाल करने वाला कर्मचारी सन्निधाता होता था.

7. राजस्व से प्राप्त आय राजपरिवार, राजकर्मचारियों एवं जनहित के कार्यों में व्यय होती थी.

प्रान्तीय प्रशासन

मौर्य साम्राज्य विभिन्न इकाइयों में विभक्त था. प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई प्रान्त थी. अभिलेखों के अनुसार अशोककाल में निम्नलिखित प्रान्त थे—

प्रान्त	राजधानी
1. उत्तरापथ	तक्षशिला
2. अवन्तिपथ	उज्जैन
3. दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि
4. कलिंग	तोसली
5. प्राची	पाटलिपुत्र

प्रो. हेमचन्द्ररायचौधरी के अनुसार उत्तरापथ, अवन्तिपथ, प्राची चन्द्रगुप्त के काल में विद्यमान थे. अर्द्धस्वतन्त्र प्रान्तों में सौराष्ट्र भी था.

पुष्यगुप्त सौराष्ट्र (अर्द्धस्वतन्त्र प्रान्त) का शासक था, जो चन्द्रगुप्त के आदेश पर कार्य करता था.

उत्तरी भारत का शासन पाटलिपुत्र के राजा द्वारा सँभाला जाता था.

सीमावर्ती शासक के रूप में राजकुमारों का नियन्त्रण रहता था.

प्रान्त का शासक राष्ट्रपाल होता था. प्रान्तीय व्यवस्था केन्द्रीय व्यवस्था के आधार पर गठित थी. प्रान्तीय प्रशासनिक व्यवस्था पर केन्द्र का नियन्त्रण रहता था.

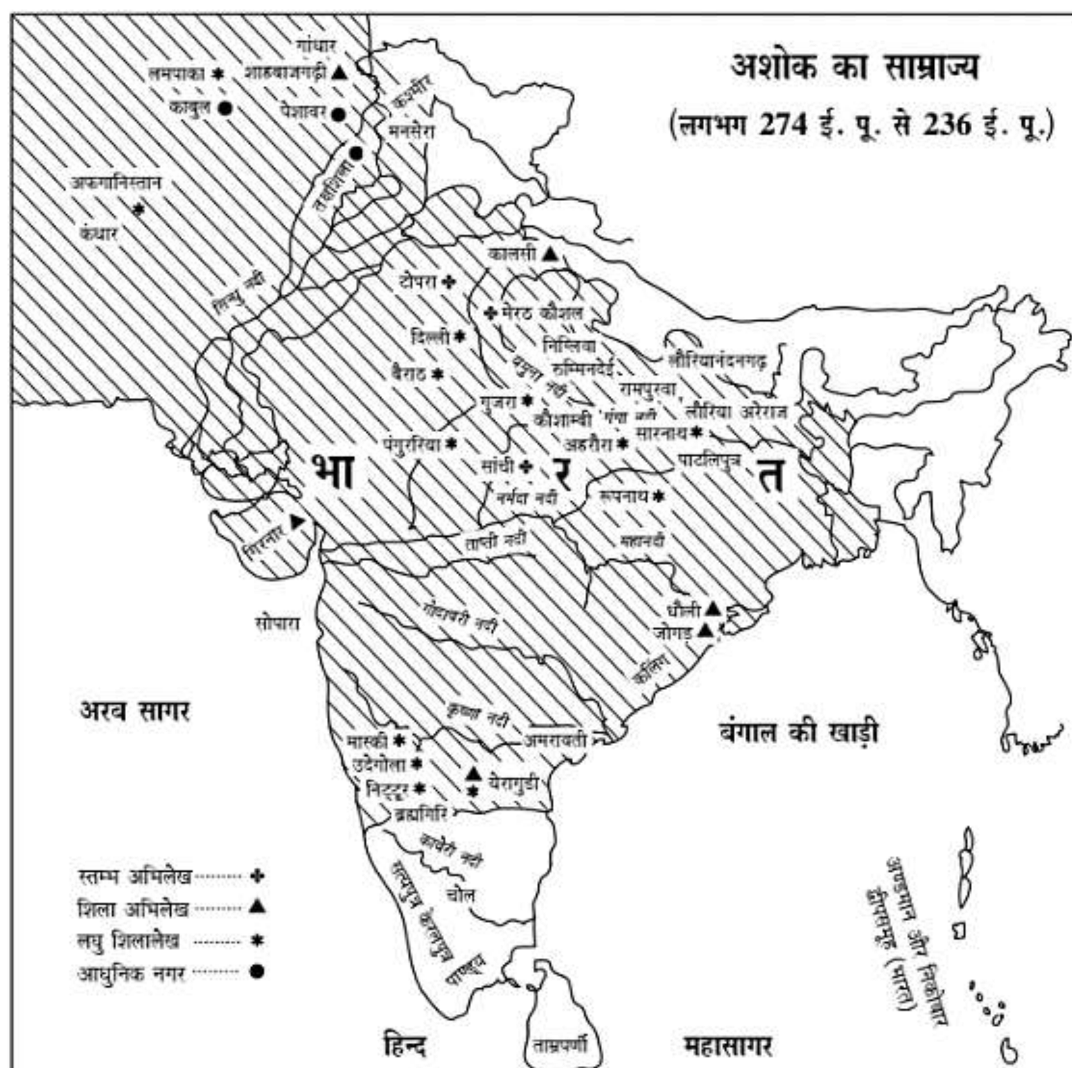
स्थानीय प्रशासन

प्रान्त **जिला** या **स्थानीय** में विभक्त था. 'स्थानिक' जिला प्रशासन का प्रमुख होता था. स्थानिक पर समाहर्ता का नियन्त्रण रहता था. 800 गाँवों का समूह स्थानीय होता था. द्रोणमुख स्थानीय से छोटी इकाई थी. द्रोणमुख में 400 ग्राम सम्मिलित होते थे. द्रोणमुख से छोटी इकाई खर्वटिक थी, जो 200 ग्रामों का समूह हुआ करती थी. संग्रहण में 100 ग्राम होते थे. ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी. ग्राम का मुखिया ग्रामिक होता था. ग्राम के बुजुर्गों के द्वारा ग्रामिक प्रशासन चलाता था. गोप ग्रामिकों पर नियन्त्रण रखते थे. एक गोप के पास 10 गाँव होते थे. राजस्व की वसूली, अपराधों की रोकथाम प्रमुख रूप से ग्रामिक के कार्य थे.

मौर्यकाल की सामाजिक व्यवस्था

कौटिल्य का अर्थशास्त्र एवं मेगस्थनीज की इण्डिका मौर्यकालीन समाज पर प्रकाश डालती है. मौर्यकाल में वर्णव्यवस्था की रक्षा करना राजा का प्रमुख दायित्त्व था. इस काल में सभी वर्णों के अनुसार लोग व्यवसाय करते थे. ब्राह्मण समाज के धार्मिक एवं बौद्धिक नेतृत्वकर्त्ता थे.

1. ब्राह्मण राजा के मंत्री, कानूनी सलाहकार, पुरोहित, शिक्षक के रूप में राज्य एवं प्रशासन के मुख्य अंग थे. इसी के फलस्वरूप उन्हें कानूनी और आर्थिक विशेषाधिकार प्राप्त था. उन्हें करमुक्तभूमि का दान किया जाता था, जो ब्रह्मदेय के नाम से जाना जाता था.



2. क्षत्रियों को भी प्रतिष्ठित पद प्राप्त थे. सैनिक वृत्ति, प्रशासन एवं राजकाज में इनकी अच्छी भागीदारी थी.

3. वैश्य कृषि कार्य, व्यापार एवं उद्योगों को संचालित करते थे.

4. शूद्र वैश्यों के सहायक थे एवं स्वतन्त्र रूप से भी कृषि, शिल्पकला, व्यापार पशुपालन का कार्य करते थे. शूद्रों को जमीन प्रदान की गई थी.

5. मौर्यकाल में प्रतिलोम और अनुलोम विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न जातियों को **अन्तवासिन** (मिश्रित) कहा जाता था. अर्थशास्त्र में इनके अस्तित्त्व की चर्चा की गई है. मिश्रित या अन्तवासिन तत्कालीन जातियाँ निम्नलिखित थीं—

1. अम्बष्ट
2. निषाद
3. पराशव
4. रथकार
5. वैदेहक
6. चांडाल
7. श्वापक
8. सूत
9. मागध

उपर्युक्त जातियों में से चांडाल और श्वापकों को अछूत माना जाता था. ये लोग बस्तियों से बाहर श्मशान के निकट रहते थे.

कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार कर्मकार, वर्णसंकर एवं दासों को शूद्र माना जाता था.

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीन वर्गों को द्विज की श्रेणी में रखा गया था.

मौर्यकाल में आश्रम व्यवस्था, खानपान, विवाह सम्बन्धी नियमों के पालन भी वर्ण व्यवस्था के अनुरूप प्रचलित थे.

मेगस्थनीज की इण्डिका के अनुसार सामाजिक व्यवस्था

मेगस्थनीज की इण्डिका के अनुसार भारतीय समाज के सात वर्ग थे. दार्शनिकों की पहली जाति होती थी. ब्राह्मण और श्रमण इनके वर्ग होते थे. इन्हें समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त थी. यज्ञ, संस्कार और धार्मिक कार्यों से दान प्राप्त करते थे. श्रमण संन्यासी का जीवन व्यतीत करते थे. ब्राह्मणों के लिए बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी. केवल ब्राह्मण ही व्यवसाय बदल सकते थे एवं अलग जाति में शादी कर सकते थे.

इण्डिका में वर्णित भारतीय समाज के सात वर्ग

भारतीय समाज सात जातियों में वर्गीकृत था—यह उल्लेख मेगस्थनीज ने इण्डिका में किया है. मेगस्थनीज द्वारा वर्णित सात जातियाँ अग्रलिखित हैं—

क्र.	जाति	विभाग	कार्य / टिप्पणी
1.	दार्शनिक	श्रमण एवं ब्राह्मण	यज्ञ, संस्कार एवं धार्मिक कार्य.
2.	किसान	मुख्य व्यवसाय कृषि था.	उपज का 1/4 भाग कर देते थे. इनकी सर्वाधिक संख्या थी.
3.	शिकारी एवं पशुपालक	शिकार और मवेशियों की देखभाल करते थे.	हमेशा भ्रमण करते रहते थे.
4.	शिल्पी एवं कारीगर	विभिन्न तरह का सामान तैयार करते थे.	व्यापारी वर्ग के अन्तर्गत आते थे.
5.	सैनिक वर्ग	राज्य की तरफ से धन दिया जाता था.	सैनिकों को घोड़े और अस्त्र राज्य से प्राप्त होते थे.
6.	अमाल जाति	राजा के विश्वासपात्र थे.	मन्त्री एवं अधिकारी इसी वर्ग के होते थे.
7.	निरीक्षक एवं गुप्तचर	राजा की सूचना के लिए गुप्तचर होते थे.	महिला गुप्तचर भी होती थी.

दास प्रथा

1. डायोडोरस, एरियन, स्ट्रेबो एवं मेगस्थनीज के अनुसार मौर्यकालीन भारतीय समाज में दास प्रथा प्रचलित नहीं थी.

2. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में निम्नलिखित 9 प्रकार के दासों का उल्लेख किया गया है. 9 प्रकार के दास निम्नलिखित थे—

1. उदरदास
2. दण्डप्रणीत
3. ध्वजाहृत
4. गृहजात
5. दायागत
6. लब्धदास
7. क्रीतदास
8. आत्मविक्रयी
9. अहितक

3. दासों में युद्धबन्धी, बंधक, जुर्माना नहीं चुकाने वाले दास होते थे.

4. स्त्रीदास होने का उल्लेख मिलता है. मौर्यकाल में निम्नलिखित स्त्रीदास होती थीं—

1. धातृ
2. उपचारिका
3. परिचारिका
4. गणिकाएँ
5. बंधकी

5. बंधकी ऐसी महिला दास होती थी, जो लोगों का मनोरंजन कर मालिक के लिए पैसा इकट्ठा करती थी.

6. आजीवन (स्थायी दास) एवं अहितकों (अस्थायी दास) का अस्तित्त्व था. आजीवन दासों पर मालिक का पूर्णाधिकार होता था.

मौर्यकालीन परिवार एवं समाज

1. मौर्यकाल में संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित थी. विवाह का अस्तित्व था. विवाह एकात्मक होते थे. विवाह आठों प्रकार के होते थे.

2. ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य—ये चार प्रकार के विवाह धर्मसंगत थे एवं असुर, गांधर्व, राक्षस एवं पिशाच—ये चार अधार्मिक विवाह होते थे. अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह का अस्तित्व था. नियोग एवं पुनर्विवाह का प्रचलन था. सती प्रथा का अस्तित्व नहीं था. यूनानी लेखकों के अनुसार सती प्रथा प्रचलित थी.

3. पर्दा प्रथा, सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार एवं तलाक, पुनर्विवाह के अधिकार तत्कालीन स्त्री को प्राप्त थे.

4. मेगस्थनीज के अनुसार स्त्रियों को खरीदा-बेचा जाता था. स्त्री अध्यक्ष महामात्र गणिका एवं रूपा जीवा (वेश्या) का जीवन व्यतीत करती थीं. स्त्रियाँ गुप्तचरी का कार्य भी करती थीं.

5. मौर्यकाल में चावल, मांस-मछली, मदिरा भोजन के रूप में प्रयुक्त होते थे. शराब के उत्पादन एवं बिक्री पर नियन्त्रण था.

6. सुन्दर, रंगीन, फूलवाले वस्त्र एवं ऊँची एड़ी के सेन्डिलों का प्रचलन साधारण लोग भी करते थे. धनवान लोग मूल्यवान मखमल, रेशम, सोने के कसीदाकारी से युक्त कपड़े पहनते थे.

7. सम्पन्न व्यक्ति सोने के उत्तम बर्तन एवं मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करते थे.

8. मनोरंजन में विहार, यात्रा, समाज, प्रवहण का प्रचलन था. शतरंज, आखेट, गेंद खेलने का प्रचलन था. नट, नर्तक, गायक, मदारी, कुश्ती करने वाले, बाजा बजाने वालों का अस्तित्व था.

9. अंधविश्वास, पारलौकिक शक्तियों, ज्योतिष, शकुन, अपशकुन, अनुष्ठान, यज्ञ आदि का प्रचलन था. अंग विद्या, जम्भक, मायागत विद्या निमितम, अंतरचक्र का अस्तित्व था.

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था

1. मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन एवं व्यापार पर आधारित थी. इन सब अर्थव्यवस्था के घटकों को सम्मिलित रूप में **वार्ता** कहा जाता था. भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था. दासों, कर्मकारों, कैदियों के द्वारा कृषि कार्य सम्पन्न होता था. मुद्रा को जारी करने वाला **'लक्षणाध्यक्ष'** कहलाता था. लोग जब सिक्कों का निर्माण स्वयं करवाते थे, उस समय राज्य को 13·5% ब्याज रूपिका और परीक्षण के लिए देना पड़ता था.

2. चाँदी की मुद्राओं का प्रचलन था. ये आहत मुद्राएँ मयूर, पर्वत, अर्द्धचन्द्र से युक्त होती थीं. अर्थशास्त्र में निम्न-लिखित सिक्कों का वर्णन मिलता है—

(i) पण	(iv) माषक
(ii) सुवर्ण	(v) कांकणी
(iii) कार्षापण	(vi) अट्टकांकणी

3. सिक्के ताँबे, सोने, चाँदी के बने होते थे. मौर्यकाल में निम्नलिखित चार प्रकार के चाँदी के सिक्के होते थे—

(i) माशक	(iii) कांकणी
(ii) अर्द्धमाशक	(iv) अर्द्धकांकणी

4. मौर्यकाल में **एस्टिनोमोई** नामक पदाधिकारी सड़कों की देखभाल करते थे. प्रमुख राजमार्ग राजधानी पाटलिपुत्र से उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला और पूर्व में ताम्रलिप्ति तक फैला हुआ था. इसकी 1300 मील की लम्बाई थी. पश्चिमी तट पर भड़ौंच, सोपारा बन्दरगाह थे, जिसके द्वारा समुद्री व्यापार होता था.

5. मौर्यकाल में हाथीदाँत, मोती, रंग, नील, बहुमूल्य लकड़ियाँ, वस्त्र विदेशों को भेजे जाते थे एवं सोना एवं बहुमूल्य वस्त्र मँगाये जाते थे.

6. व्यापार का नियन्त्रक 'पण्याध्यक्ष' होता था. 'पौतवाध्यक्ष' नाप-तौल, बटखरे बाजार पर नियन्त्रण रखते थे.

7. मौर्यकाल में अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ स्वरूप का उत्तरदायी घटक शिल्प व्यवसाय भी था.

8. शिल्पी दो प्रकार के होते थे—राजकीय शिल्पी एवं स्वतन्त्र शिल्पी. ये राज्य को कर एवं बेगार प्रदान करते थे. मिट्टी के बर्तन बनाना, लकड़ी का कार्य, वस्त्र बुनना, धातु, पत्थर एवं शीशे का सामान का निर्माण शिल्पकार्य में सम्मिलित था. बढ़ईगीरी, ईंट बनाने का कार्य भी होता था.

9. मौर्यकाल में काशी, मगध, वंग, बंगाल, कलिंग और मालवा सूती वस्त्र के लिए ख्याति प्राप्त स्थल थे.

10. बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण, जूते निर्माण, सोने-चाँदी, ताँबे, लोहे के निर्माण से भी मौर्य साम्राज्य को आय होती थी.

मौर्यकालीन कला

मौर्यकाल में राजकीय एवं लोक कला का जितना विकास हुआ उतना किसी काल में नहीं हुआ. वास्तुकला एवं मूर्तिकला के प्रचलन के सम्बन्ध में अनेक पुरातात्त्विक साक्ष्य प्राप्त होते हैं.

पाटलिपुत्र नगर का स्वरूप : राजप्रासाद[1]

1. **अवस्थित**—गंगा और सोन के संगम पर
2. **राजप्रासाद की तुलना**—सूसा और एकबतना से
3. **नगर की लम्बाई**—$9\frac{1}{2}$ मील (15·2 किमी)
4. **नगर की चौड़ाई**—$\frac{1}{2}$ मील (0·8 किमी)

5. **नगर सुरक्षा**—सुरक्षा की दृष्टि से लकड़ी की चारदीवारी छिद्रयुक्त, चारों तरफ 600 फुट चौड़ी एवं 60 फुट गहरी खाई बनाई गयी थी.

6. **प्रवेश द्वार**—64 प्रवेश द्वार थे.

7. **बुर्ज**—दीवारों पर बुर्ज बने हुए थे, जो संख्या में 570 थे.

8. **उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य**—1. चारदीवारी एवं लकड़ी के स्तम्भ (कुम्हरार, बुलन्दीबाग से)

2. 150 फीट लम्बा लकड़ी का प्राचीर (बुलंदीबाग से)

3. $12\frac{1}{2}$ फीट ऊँचे खम्भे एवं 5 फीट जमीन के नीचे गढ़े हुए.

स्तूप

चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार अशोक ने बुद्ध के अवशेषों पर 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया. बोधगया का मन्दिर, साँची, भरहूत एवं सारनाथ के स्तूप अशोक द्वारा ही बनाये गये थे.

अशोककालीन गुफाएँ

1. कुशलता से गुफाओं का निर्माण पहाड़ियों की चट्टानों को काटकर केवल मौर्यकाल में अशोक के द्वारा ही हुआ, जो कला के विकास का सर्वोत्कृष्ट प्रयास था. कलापूर्ण गुफाएँ निम्नलिखित हैं, जो बिहार में गया जिले के अन्तर्गत बराबर (बाराबर) की पहाड़ियों में निर्मित हैं—

1. नयनग्रोध गुहा या सुदामा गुहा
2. विश्व झोपड़ी गुहा
3. कर्ण चौपड़ गुहा

2. तीनों बराबर (बाराबर) में स्थित गुफाएँ अशोक के राज्याभिषेक के 12वें वर्ष में निर्मित की गईं एवं 19वें वर्ष में संन्यासियों को बाढ़ से बचाने के लिए दान में दी गईं. निर्माण शैली बौद्ध शैली के समानान्तर थी.

अशोक स्तम्भ

1. दिल्ली-टोपरा, दिल्ली-मेरठ, लौरिया-अरेराज, लौरिया-नन्दनगढ़, रामपुरवा, कौशाम्बी, सारनाथ एवं अन्य 20 स्थलों पर अशोक द्वारा उत्कृष्टतम कला के नमूने के रूप में विशाल प्रस्तर स्तम्भ प्राप्त हुए हैं. इनकी ऊँचाई 40 फीट एवं वजन 50 टन के करीब है. नीचे से मोटा एवं ऊपर से पतले होते हुए ये स्तम्भ चमकदार पॉलिश किये हुए हैं. स्तम्भों के शीर्ष भाग पर घण्टा, गोल अण्ड या चौकी है जिन पर पशुओं, चक्रों एवं हंसों का चित्रण किया गया है.

मौर्यकालीन लोककला

मौर्यकाल में लोककला का प्रचलन था. नाटक, संगीत, नृत्य, चित्रकारी एवं अन्य ललितकलाएँ इस दौरान अस्तित्व में थीं. मिट्टी के सुन्दर बरतन, मूर्तियाँ, खिलौने बड़े कलात्मक तरीके से तैयार किए जाते थे. परखम (मथुरा) से यक्ष की मूर्ति, दीदारगंज से चामरधारिणी यक्षिणी की मूर्ति, पटना से यक्ष की दो मूर्तियाँ, लोहानीपुर से नग्न तीर्थंकर की मूर्ति उत्खनन में साक्ष्य बतौर प्राप्त हुई है.

मौर्यकालीन धार्मिक व्यवस्था

ब्राह्मण धर्म—मौर्यकाल में अन्य धर्मों के साथ ब्राह्मण धर्म का अस्तित्व था. यज्ञ, बलि, संस्कार, वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था पूरी तरह प्रचलित थी. ब्राह्मण एवं श्रमण दो वर्ग थे. समाज में ब्राह्मणों की प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति थी एवं इन्हें सम्मानपूर्ण पद भी प्राप्त होते थे. ब्रह्मा, इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर, कार्तिकेय की पूजा की जाती थी. मन्दिरों और देवताओं के लिए देवताध्यक्ष का पद होता था. वृक्षपूजा, नागपूजा, अन्धविश्वास एवं भूतप्रेत पर गहरी श्रद्धा थी. शिव भागवत एवं भागवत सम्प्रदाय को भी माना जाता था.

जैन धर्म—चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु से प्रभावित होकर जैन धर्म को मानने लगा था. श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में विभाजन इसी काल की एक महत्वपूर्ण घटना थी.

बौद्ध धर्म—सर्वाधिक विस्तार बौद्ध धर्म का मौर्यकाल में हुआ. अशोक का 'धम्म' बौद्ध धर्म से पूरी तरह मिलता था. 84,000 स्तूपों का निर्माण बौद्ध धर्म के विकास की पराकाष्ठा थी. बौद्ध की तीसरी संगीति पाटलिपुत्र में मोग्गलि पुत्त तिस्स की अध्यक्षता में अशोक द्वारा सम्पन्न कराई गयी थी. इस धर्म का श्रीलंका से मध्य एशिया तक प्रसार मौर्यकाल में ही हुआ था.

निष्कर्ष

मौर्यकाल में मगध साम्राज्य का जितना विकास हुआ उतना कभी नहीं हुआ. इस काल में साम्राज्य का विस्तार भी सम्पूर्ण भारतवर्ष में हुआ. राज्याभिषेक के पूर्व काल से लेकर, साम्राज्यवाद के आविर्भाव, चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्याभिषेक एवं मगध साम्राज्य के विस्तार के मूल में चाणक्य या कौटिल्य की भूमिका सर्वोत्कृष्ट रही. उसी सुदृढ़ नींव के बल पर अशोक जैसे महान् सम्राट् ने सम्पूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त की. मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था पर चर्चा की जाए तो वह निश्चित रूप से सन्तोषप्रद थी एवं सम्पूर्ण प्रक्रिया में नयापन कुछ भी नहीं था. मौर्यकाल अध्यात्म एवं धर्म के प्रचार-प्रसार एवं

1 इण्डिका–मेगस्थनीज, पृष्ठ 93

संस्थापना में महती भूमिका का निर्वाहक रहा. अशोक का 'धम्म' मानव कल्याण की दिशा में किसी शासक द्वारा अपनाया गया पहला कदम कहना अतिशयोक्ति न होगा. मौर्यकालीन कला, संस्कृति, शिल्प एवं स्थापत्य की समृद्धता आज भी अवशेष स्थलों पर देखी जा सकती है. मौर्यकाल को कला, संस्कृति का 'स्वर्णयुग' कहना उपयुक्त होगा. साहित्यिक स्रोत का अभाव अवश्य मौर्यकाल को कचोटता रहेगा. ऐतिहासिक स्रोतों में अभिलेख, शिलाभिलेख, स्तूपों के अतिरिक्त लिखित साहित्य में कौटिल्य का अर्थशास्त्र एवं मेगस्थनीज की इण्डिका उपलब्ध है. उपलब्ध साहित्य भी मौर्यकाल की सन्तोषजनक सामग्री उपलब्ध नहीं करा पाता. इन दोनों में अतिशयोक्तिपूर्ण एवं तिथि रहित तथ्य भरे पड़े हैं.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

मौर्यकालीन प्रशासनिक शब्दावली एवं साधारण शब्दावली

	प्रशासनिक शब्द	परिभाषा/अर्थ
1.	देवभातृक	वर्षा पर आधारित रहने वाली भूमि
2.	अदेवभातृक	नहरों से सिंचाई की जाने वाली भूमि
3.	धर्मस्थीय	दीवानी अदालतें (मेगस्थनीज के अनुसार)
4.	कंटकशोधन	फौजदारी अदालतें
5.	अनिष्कासिनी	घरों में रहने वाली सम्भ्रान्त परिवार की स्त्रियाँ
6.	प्रदेष्टा	न्यायाधीश जो अनैतिक कार्यों की सजा देता था
7.	समाहर्ता	राजस्व मंत्री
8.	विष्टि	बेगार के रूप में लिया जाने वाला कर
9.	हिरण्य	नकद राशि में लिया जाने वाला कर
10.	कर्मान्तिक	उद्योग मन्त्री
11.	सन्निधाता	वित्तमंत्री
12.	पौर (नागरक)	नगर की शासनव्यवस्था को सँभालने वाला
13.	आन्तर्वंशिक	सम्राट् की सेना का अध्यक्ष
14.	प्रणय	संकटकाल में वसूला जाने वाला कर
15.	परिहीनक	हर्जाने के रूप में लिया जाने वाला कर
16.	प्रशास्ता	सम्राट् की आज्ञा को लिपिबद्ध करने वाला
17.	परिषद्	मन्त्रियों की सभा
18.	कोष्ठयेक	सरकारी जलाशयों से सिंचित भूमि पर लिया जाने वाला कर
19.	आटविक	वन विभाग का अधिकारी
20.	दण्डपाल	युद्ध का सामान जुटाने वाला सैनिक अधिकारी
21.	न्यायक	सेना का संचालक एवं छावनी बनाने वाला मंत्री
22.	रूपाजीवा	गणिका या वैश्याएँ
23.	बंधकी	मालिक के लिए मनोरंजन कर पैसा इकट्ठा करने वाली महिला दास
24.	अहितक	स्थायी दास
25.	लक्षणाध्यक्ष	मुद्रा जारी करने वाला अधिकारी

सम्राट् अशोक द्वारा विभिन्न स्थलों पर भेजे गये धर्म प्रचारक

	धर्म प्रचारक	स्थान
1.	मज्झन्तिक	कश्मीर एवं गान्धार
2.	मज्झिम	हिमाचल प्रदेश
3.	महारक्षित	यूनान प्रदेश (गान्धार के उत्तर-पश्चिम में)
4.	महादेव	मैसूर और मान्धाता (महिष्मण्डल)
5.	सोन एवं उत्तरा	सुवर्ण भूमि (पूर्वी द्वीप समूह एवं ब्रह्मा)
6.	महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
7.	धर्म-रक्षित	अपरान्त (मुम्बई का उत्तरी भाग)
8.	रक्षित	बनवासी (उत्तरी कनाड़ा)
9.	महेन्द्र एवं संघमित्रा	श्रीलंका

अशोक द्वारा विभिन्न राजाओं के पास भेजे गये धर्म प्रचारक

	धर्म प्रचारक	राजा
1.	अन्तियोक	सीरिया के राजा एण्टिओकस थियोस के पास
2.	यक	साइरीन के नरेश मगस के पास
3.	अलिकसुदरो	एपिरस के राजा अलेक्जैण्डर के पास
4.	तुरमय	मिस्र के राजा टॉलेमी फिलेडेलफस के पास
5.	अन्तिकिनी	मकदूनिया के राजा एन्टिगोनस के पास

- तिब्बती बौद्ध यात्री लामा तारानाथ के अनुसार बिन्दुसार ने दो समुद्रों के बीच स्थित क्षेत्र पर विजय स्थापित की.
- "वह जो अपने सम्प्रदाय का सम्मान करता है तथा अन्य सम्प्रदायों की आलोचना करता है. पूरी तरह से अपने विश्वास के प्रति समर्पित होकर अपने सम्प्रदाय के सकारात्मक पक्षों को प्रकाशित करता है, वह अपने सम्प्रदाय को भी प्रचण्डता से हानि पहुँचाता है"—**यह कथन अशोक के द्वादश वृहद् अभिलेख में उल्लिखित है.**

अशोक के अभिलेखों में वर्णित विषय

शिलालेख	वर्णित विषय/टिप्पणियाँ
प्रथम वृहद् शिलालेख	उत्सवों के अवसर पर पशु हत्या करना वर्जित था. राजकीय रसोई में दो मोर एवं 1 हिरण के वध का उल्लेख मिलता है.
द्वितीय वृहद् शिलालेख	चोल, पाण्ड्य, सत्यपुत्र, केरलपुत्र एवं श्रीलंका की भूमि का वर्णन मिलता है. पशु एवं मानव चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध थी. सड़कों के किनारे पर वृक्ष लगाने एवं कुएँ खुदवाने का उल्लेख किया गया है.
तृतीय वृहद् शिलालेख	युक्तकों, प्रादेशिकों, राजुकों को 5 वर्ष के अन्तराल से साम्राज्य के सभी भागों में भ्रमण करने का आदेश उल्लिखित है. माता-पिता एवं पुत्र के आत्मीय सम्बन्ध, मित्र एवं सम्बन्धियों के सम्बन्ध, ब्राह्मण एवं श्रमणों के प्रति सम्मान तथा पवित्रता के नियमों का उल्लेख मिलता है.
चतुर्थ वृहद् शिलालेख	धम्म के प्रति अत्यधिक आस्था, सम्मान एवं धम्म से सम्बन्धित अन्य सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है. सर्वजनभाव की सामाजिक अभिव्यक्ति भी प्रस्फुटित होती है.
पंचम वृहद् शिलालेख	धर्म महामात्रों की नियुक्ति, ग्रीक, कम्बोज, गांधार, पिटनीक लोगों के कल्याण एवं कुलीन,सेवक, अकिंचन तथा कारागार के बन्दियों के कल्याणकारी कार्यों का वर्णन है. अशोक एवं उसके परिवार के लोगों द्वारा लोकहितकारी कार्यों का सम्पादन करने एवं धम्म कार्यकारिणी की नियुक्ति के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है.
षष्ठम् वृहद् शिलालेख	सशक्त प्रशासनिक व्यवस्था एवं आत्मनियन्त्रण का उल्लेख मिलता है.
सप्तम् वृहद् शिलालेख	मानव समुदायों के मध्य सहअस्तित्व, आत्मसंयम एवं मानसिक शुद्धता का उल्लेख है.
अष्टम् वृहद् शिलालेख	अशोक द्वारा सम्पादित की गई धम्म यात्राओं के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है.
नवम् वृहद् शिलालेख	अनावश्यक गतिविधियों को रोककर धम्म विषयक गतिविधियों पर बल दिये जाने का उल्लेख है.
दशम् वृहद् शिलालेख	दुष्प्रवत्तियों की आलोचना की गई है. मंगलकारी कार्यों पर जोर दिया है.
एकादश वृहद् शिलालेख	धम्म की शिक्षा, धम्म की प्रशंसा एवं धम्म में सहयोग प्रदान करने का उल्लेख है.
द्वादश वृहद् शिलालेख	धार्मिक सहिष्णुता एवं सर्वधर्म समभाव की अवधारणा का उल्लेख.
त्रयोदश वृहद् शिलालेख	कलिंग युद्ध का विस्तृत वर्णन, दुर्घटना की जिम्मेदारी लेते हुए पश्चाताप एवं 'धम्म' को विजय के रूप में अंगीकृत करने के सम्बन्ध में उल्लेख किया गया है.
चतुर्दश वृहद् शिलालेख	इस अभिलेख में अशोक ने पूर्व संदेशों की पुनरावृत्ति की है.

चौदह वृहद् शिलालेखों के स्थापित स्थल

चौदह वृहद् शिलालेखों का उत्कीर्णकाल 257-256 ई. पू. के लगभग माना जाता है. यह सभी शिलालेख सीमान्त प्रदेशों में अशोक के प्रतिनिधियों के नियन्त्रण में थे. उत्तर-पश्चिम में एब्बोटबाद के समीपस्थ मानसेहरा एवं पेशावर के पास शाहबाजगढ़ी में इनके स्थापित उत्कीर्ण स्थल हैं. खरोष्ठी लिपि में लिखे गये हैं, जिसकी लेखन शैली दाईं ओर से बाईं ओर होती है. पश्चिम में गिरनार एवं काठियावाड़, पूर्व में धोली, दक्षिण में मास्की, काल्सी (उत्तर प्रदेश), सोपारा (महाराष्ट्र), गंजाम (उड़ीसा) में तथा पेरागुडी एवं करनूल (आन्ध्र प्रदेश) में पाये गये हैं.

मौर्यकालीन आयातित वस्तुएँ

1. मोती	2. लाल रंजक
3. कछुए की खास	4. शराब
5. खजूर	6. वस्त्र
7. स्वर्ण	8. दास
9. रेशम	10. पुखराज
11. शिलाजीत	12. सोने एवं चाँदी के सिक्के
13. चिकित्सकीय मरहम	14. तीनपतिया घास
15. लाल हरलाल	16. ताम्बा
17. टिन	18. स्वर्णपत्र
19. शीशा	20. महीन रेशमी कपड़ा
21. सुरमा	22. लोहबात

मौर्यकालीन निर्यातित वस्तुएँ

1. लाजवर्तमणि	2. मसाले
3. वैदूर्यमणि	4. मलमल
5. वस्त्र	6. स्त्रीदास
7. गेहूँ	8. चावल
9. सिक्के	10. सागवान
11. नील	12. मलाबाश्रम
13. हीरा	14. नीलम एवं अन्य कीमती पत्थर
15. जटामासी	

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित राज्य की सात प्रकृतियाँ

1. स्वामी	2. अमात्य
3. कोष	4. दुर्ग
5. जनपद	6. मित्र
7. बल	

अर्थशास्त्र में वर्णित मौर्यकालीन पदाधिकारी

1. मंत्रिन (प्रधानमंत्री) : यह पद चाणक्य को प्राप्त था,
2. पुरोहित
3. सेनापति
4. युवराज (यह राजकुल से सम्बन्धित अथवा सम्राट् का पुत्र होता था)
5. दीवारिक (राजदरबार, सीमाद्वारों तथा अन्य प्रमुख राजकीय द्वारों का रक्षक)
6. अन्तर्वेशिक (अन्तःपुर का अध्यक्ष)
7. समाहर्ता (आय का संग्रहकर्ता)
8. सन्निधाता (राजकीय कोष का अध्यक्ष)
9. प्रशास्तृ (कारागारों का अध्यक्ष)
10. प्रदेष्ट्री (कमिश्नर),
11. नायक (नगर-कक्ष का अध्यक्ष)
12. पौर (नगर का कोतवाल)
13. व्यावहारिक (प्रमुख न्यायाधीश)
14. कर्मान्तिक (उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष)
15. मंत्रिपरिषद् का अध्यक्ष
16. दण्डपाल (पुलिस तथा अनुशासन स्थापित करने वाले दल का अध्यक्ष)
17. दुर्गपाल (राजकीय दुर्गों की रक्षा का अध्यक्ष)
18. अन्तपाल (राजकीय सीमाओं का अध्यक्ष)

अशोककालीन प्रमुख प्रान्त एवं राजधानी

नाम प्रान्त	राजधानी
1. उत्तरापथ	तक्षशिला
2. अवन्तिपथ (अवन्ति राष्ट्र)	उज्जयिनी
3. दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि
4. कलिंग	तोसाली
5. प्राशी (प्राची)	पाटलिपुत्र

मेगस्थनीज द्वारा इण्डिका में वर्णित मौर्यकालीन समाज का वर्गीकरण

1. प्रथम वर्ग	–	दार्शनिक
2. द्वितीय वर्ग	–	किसान
3. तृतीय वर्ग	–	शिकारी एवं पशुपालक
4. चतुर्थ वर्ग	–	शिल्पी एवं कारीगर
5. पंचम वर्ग	–	योद्धा एवं सैनिक वर्ग
6. षष्ट्म वर्ग	–	निरीक्षक एवं गुप्तचर
7. सप्तम् वर्ग	–	अमात्य एवं सभासद

अर्थशास्त्र में वर्णित 9 प्रकार के दास

1. उदरदास	2. दण्डप्रणीत
3. ध्वजादृत	4. दायागत
5. गृहजात	6. लब्ध
7. क्रीत	8. अहितक
9. आत्मविक्रयी	

अर्थशास्त्र में वर्णित आठ प्रकार के विवाह

1. ब्रह्म	2. दैव
3. आर्ष	4. प्रजापत्य
5. असुर	6. गान्धर्व
7. राक्षस	8. पैशाच विवाह

अर्थशास्त्र में वर्णित ताँवे और चाँदी के मौर्यकालीन सिक्के

चाँदी के सिक्के	ताँबे के सक्के
1. पण	1. माषक
2. अर्द्धपण	2. अर्द्धमाषक
3. पाद	3. कांकणी
4. अष्टभाग	4. अर्द्धकांकणी

पाटलिपुत्र की स्थिति

1. अवस्थित गंगा और सोन के संगम पर

2. आकार–$9\frac{1}{2}$ मील (15·20 किमी) लम्बा एवं $\frac{1}{2}$ मील (0·8 किमी) चौड़ा (मेगस्थनीज के अनुसार)

3. चारदीवारी–लकड़ी से बनाई हुई जिसमें कई छिद्र थे.

4. बाहर की स्थिति–चारदीवारी के बाहर चारों तरफ एक गहरी खाई 600 फुट चौड़ी एवं 60 फुट गहरी थी.

5. प्रवेश द्वार–64

6. दीवारों पर बने बुर्जों की संख्या–570

7. सभाकक्ष का आकार—140 फीट लम्बा एवं ऊँचाई 120 फीट (कुम्हरार के उत्खनन से प्राप्त)

मौर्यकालीन व्यापार मार्ग

1. मथुरा से सिन्ध तक का मार्ग (घोड़े का मार्ग)

2. इटीथियन के द्वारा गया मार्ग जिसे पेरिप्लस ने खोजा था.

3. मथुरा-उज्जैन-भड़ौच मार्ग

4. बैक्टीरिया-(ऑक्सस घाटी)-कपिशा एवं काबुल

5. दक्षिणा पथ

6. उत्तरापथ-पुष्कलावती (उद्गम)-तक्षशिला

7. मथुरा-कौशाम्बी-वाराणसी-पाटलिपुत्र-चंपा-चन्द्रकेतुगढ़

अभिलेखों से सम्बन्धित विशिष्ट तथ्य

1. सभी मनुष्य मेरे पुत्र हैं—अशोक का यह कथन छठे वृहद् अभिलेख में वर्णित है.

2. कंधार अभिलेखों की दो भाषाएँ थीं—ग्रीक एवं अरेमिक थी.

3. भाब्रू अभिलेख—सबसे लम्बा स्तम्भ अभिलेख है.

4. येरागुड़ी का लघु शिलालेख खरोष्ठी लिपि में लिखा गया था.

5. भाब्रू, रुम्मिनदेई, निगलीसागर एवं शिल्प ये चार स्तम्भ अभिलेख हैं, जो बौद्ध सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं.

सबसे पहले अशोक स्तम्भों को 1750 में श्री पाद्रेटीफेन्थैलर ने खोजा एवं जैम्स प्रिंसेप ने 1837 में इन्हें पढ़ने में सफलता प्राप्त की.

अभिलेखों के माध्यम से प्रजा को संदेश देने की प्रेरणा सम्राट् अशोक को ईरान के राजा दारा (डेरियस) प्रथम से प्राप्त हुई थी.

अशोक ने राज्याभिषेक के 10वें वर्ष में बोध गया की एवं राज्याभिषेक के 20वें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा धम्म प्रचार के उद्देश्य से की थी.

अशोक के अभिलेख एवं उनके खोजकर्त्ता

	नाम खोजकर्त्ता	अभिलेख	सन्
1.	पाद्रेटीफेन्थैलर	दिल्ली-मेरठ स्तम्भ अभिलेख	1750 ई.
2.	जे. एच. हरिन्गटन	बराबर (गया) की गुहा में प्राप्त अभिलेख	1785 ई.
3.	कर्नल टॉड	गिरनार शिलालेख	1822 ई.
4.	महाराजा रणजीत	शाहबाजगढ़ी अभिलेख	1836 ई.
5.	किटॉक	धौली या कलिंग अभिलेख	1837 ई.
6.	केप्टन बर्ट	भाब्रू या वैराठ अभिलेख (राजस्थान में जयपुर के पास)	1840 ई.
7.	सरवाल्टर इलियट	जौगड़ शिलालेख	1850 ई.
8.	फॉरेस्ट	कॉल्सी शिलालेख	1860 ई.
9.	कारलेल	बैराठ का लघु शिलालेख एवं रामपुरवा स्तम्भ अभिलेख	1872 ई.
10.	एक भारतीय सेवक	रूपगढ़ का लघु शिलालेख	1872 ई.
11.	भगवान लाल इंदराजी	8वें शिलालेख का एक भाग सोपारा में खोजा	
12.	केप्टन लाई	मानसेहरा शिलालेख	1889 ई.
13.	राइस	मैसूर के तीन लघु शिलालेख	1891 ई.
14.	फाईरर	निगली सागर स्तम्भलेख एवं रुम्मिनदेई स्तम्भाभिलेख	1896 ई.
15.	आरटेल	सारनाथ स्तम्भाभिलेख	1905 ई.
16.	बेडोन	मास्की शिलालेख	1915 ई.
17.	अनु घोष	येरागुड़ी शिलालेख	1915 ई.

- अशोक के 13वें अभिलेख में पाँच शासक एन्टिओकस, सीरिया के थियोस एन्टिगोनस गोनटस (मेसाडोनिया), इपिरस के सिकन्दर, टॉलेमी फिलाडेल्फस (285-246 ई. पू. मिस्र) एवं साइथियन के मगस का उल्लेख मिलता है.
- स्व. प्रो. सुविमलचन्द्र सरकार के अनुसार बर्बर जातियों से रक्षा के लिए अशोक के समकालीन चीन के राजा शी-हुआंग-शी ने 'चीन की दीवार' का निर्माण कराया था, जिससे बर्बर जातियाँ चीन के बदले भारत में मुड़ जाती थीं.

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- छठी शताब्दी में महाजनपदों को शक्ति के बल पर मगध में विलय कर मौर्यों ने एक विशाल मगध साम्राज्य की स्थापना की थी. मगध साम्राज्य की स्थापना मौर्य साम्राज्य के प्रथम शासक चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी.
- मौर्य वंश के इतिहास को जानने के लिए साहित्य स्रोतों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—1. भारतीय साहित्य, 2. विदेशी साहित्य एवं वृत्तान्त. मौर्य वंश की प्रामाणिक जानकारी भारतीय साहित्य स्रोत कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्राप्त होती है.
- विद्वानों ने सर्वप्रथम सन् 1909 ई. में कौटिल्य के अर्थशास्त्र की जानकारी प्राप्त की. अर्थशास्त्र 15 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में विभक्त है.
- के. पी. जायसवाल, फ्लीट, स्मिथ, जैकोबी, शामशास्त्री इत्यादि विद्वानों के अनुसार अर्थशास्त्र की रचना मौर्यकाल में चन्द्रगुप्त मौर्य के महामन्त्री कौटिल्य (चाणक्य) ने की थी.
- दिव्यावदान, अशोकावदान, दीपवंश, महावंश, मिलिन्दपञ्हों, मंजूश्रीमूलकल्प इत्यादि बौद्ध ग्रन्थों से मौर्य वंश के काल निर्धारण में सहायता मिलती है. इन्हीं बौद्ध ग्रन्थों से अशोक एवं चन्द्रगुप्त मौर्य से सम्बन्धित जानकारियाँ मिलती हैं.
- विदेशी यात्री मेगस्थनीज यूनानी शासक सेल्युकस के राजदूत के रूप में पाटलिपुत्र में 6 वर्षों तक रहा था. मेगस्थनीज ने मौर्यकालीन विवरण के लिए 'इण्डिका' नामक पुस्तक लिखी. इस पुस्तक में मौर्यकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक अवस्था का विवरण मिलता है.
- मेगस्थनीज के बाद राजदूत के रूप में आने वाला दूसरा विदेशी यात्री 'डायोनिसस' था, जोकि बिन्दुसार के दरबार में आया था.
- राजाज्ञाओं को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करने वाला पहला भारतीय शासक अशोक था. ये अभिलेख प्राकृत भाषा एवं ब्राह्मी, खरोष्ठी एवं अरेमिक में लिखे गये हैं. इन अभिलेखों से मौर्यकालीन प्रशासन, साम्राज्य एवं अशोक की गृह एवं विदेश नीति के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है.
- अशोक द्वारा स्थापित किये गये स्तम्भाभिलेखों के नाम निम्नानुसार हैं—

  1. रुम्मिनदेई
  2. दिल्लीटोपरा
  3. पिगलिका
  4. दिल्ली-मेरठ
  5. इलाहाबाद
  6. लोरिया-अरेराज
  7. लोरिया-नन्दनगढ़
  8. सारनाथ
  9. सांची
- अशोक के निम्नलिखित तीन गुहा अभिलेख हैं—
  1. कर्ण चौपड़ गुहा
  2. नयनग्रोथ या सुदामा गुहा
  3. विश्व झोपड़ी गुहा
- चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक, उत्तर में हिमालय शृंखला से दक्षिण में मैसूर तक तथा पश्चिमोत्तर के मध्य-एशिया तक फैला हुआ था. यह किसी भारतीय शासक द्वारा स्थापित सबसे बड़ा साम्राज्य था.
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने पंजाब से यूनानियों को खदेड़ने एवं मगध की जनता को नन्दों के अत्याचार से मुक्त कराने का कार्य किया था, इसलिए उन्हें 'मुक्तिदाता' की संज्ञा दी गई थी. चन्द्रगुप्त मौर्य जैन धर्म के समर्थक थे.
- कलिंग युद्ध का वर्णन अशोक के 13वें अभिलेख में मिलता है. अशोक के कलिंग पर आक्रमण के दौरान कलिंग उत्तर में वैतरणी से लेकर पश्चिम में अमरकंटक एवं दक्षिण में महेन्द्रगिरि पर्वत तक फैला हुआ था. कलिंग की सेना में 60,000 पैदल सैनिक, 1,000 घुड़सवार एवं 7,000 हाथीयुक्त सैनिक थे. इस युद्ध ने अशोक को 'चण्डाशोक' से 'धर्माशोक' में परिवर्तित कर दिया.
- अशोक के अभिलेखों के अनुसार मगध, पाटलिपुत्र, खलतिक पर्वत, कौशाम्बी, लुम्बिनी ग्राम, कलिंग, अटवी या आलवी, इसिला, उज्जयिनी, सुवर्णगिरि एवं तक्षशिला अशोक साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे.
- राजतरंगिणी में अशोक को श्रीनगर का प्रथम सम्राट् बतलाया है. इसी सन्दर्भ में ह्वेनसांग का मानना है कि श्रीनगर का संस्थापक अशोक ही था.
- वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के मध्य समन्वित तत्वों को पैदा कर जनकल्याणार्थ जिन सिद्धान्तों का अशोक ने प्रतिपादन किया, उन्हें 'धम्म' कहा जाता था.
- अशोक के धम्म को दो वर्गों में विभाजित किया गया था—
  1. व्यावहारिक
  2. सैद्धान्तिक.
- व्यावहारिक पहलू के दो भाग थे—
  1. स्वीकारात्मक
  2. निषेधात्मक.
- अशोक के काल में राजा को मंत्रणा देना, राजाज्ञाओं को मनवाना, विवादास्पद मामलों का फैसला करना, नीतियों की क्रियान्विति, कर्मचारियों के कार्यों पर नियन्त्रण, राजा के अनुचित कार्यों पर नियन्त्रण करना इत्यादि परिषद् के मुख्य कार्य थे.
- चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में अशोक ने नये तत्वों का समावेश किया, जिससे राजत्व और देवत्व के मध्य सीधा

सम्पर्क करना आसान था. इसी कारण अशोक ने 'देवानांप्रिय' की उपाधि धारण की थी.

- विण्टरनीज, कीथ, भण्डारकार, जॉली इत्यादि विद्वानों के अनुसार प्रथम से तृतीय शताब्दी के मध्य का समय अर्थशास्त्र का रचनाकाल था.
- यू. एन. घोषाल के अनुसार अर्थशास्त्र प्राक्‌मौर्यकालीन ग्रन्थ था.
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य या राजा की उत्पत्ति, राज्य की नीति-निर्धारण सम्बन्धी प्रश्न, युद्ध एवं शान्ति के समय राजा के कर्त्तव्य, नगर प्रशासन, गुप्तचर एवं न्याय सैन्य व्यवस्था तथा राज्य के आर्थिक आधार एवं सामाजिक व्यवस्था पर विस्तृत विवरण दिया गया है.
- विष्णुपुराण के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य शूद्र या नीच कुल में पैदा हुए थे. माना जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म नन्द राजा की पत्नी 'मुरा' से हुआ था.
- मौर्यकाल की राजनीतिक एवं सामाजिक जानकारी सोमदेव की 'कथासरित्सागर' क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी, पतञ्जलि के महाभाष्य में मिलती है.
- ब्राह्मण ग्रन्थ चन्द्रगुप्त मौर्य को निम्नकुल एवं बौद्ध धर्म ग्रन्थ क्षत्रिय कुल में उत्पन्न बतलाते हैं. बौद्ध ग्रन्थ महापरिनिर्वाण 'सुत्त' के अनुसार मौर्य पिप्पलीवन के शासक थे, जो बुद्ध की तरह ही क्षत्रिय वर्ण से सम्बन्धित थे. ब्राह्मण ग्रन्थों के अतिरिक्त सभी विद्वानों ने साहित्यिक ग्रन्थों में चन्द्रगुप्त मौर्य को क्षत्रिय माना है.
- जैन धर्म 'परिशिष्ट पर्व' के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के पैतृक गाँव में मोर पाले जाते थे, इसी कारण उन्हें मौर्य कहा गया था.
- मुद्राराक्षस के अनुसार धनानन्द को हराने के लिए चाणक्य ने षड्यन्त्र का सहारा लिया था. मिलिन्दपण्हों के अनुसार चन्द्रगुप्त और धनानन्द के युद्ध में 100 कोटि सैनिक, 10 हजार हाथी, 1 लाख घोड़े और 5000 रथ पूरी तरह ध्वस्त हो गये थे. इसी सन्दर्भ में 'परिशिष्ट पर्व' से विवरण मिलता है कि युद्ध से डरकर धनानन्द अपनी पत्नियों एवं पुत्री के साथ भाग गया था.
- मगध में 12 वर्षों तक अकाल पड़ गया था, जिससे क्षुब्ध होकर चन्द्रगुप्त मौर्य भद्रबाहु के साथ मैसूर चला गया था.
- अशोक ने दक्षिण भारत से सीधे सम्पर्क बनाने, बिन्दुसार-कालीन प्रतिशोध की भावना एवं मौर्य साम्राज्य के हितों की सुरक्षा के उद्देश्य से कलिंग पर युद्ध कर विजय प्राप्त की थी.
- शाहबाजगढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान), मानसेरा (पाकिस्तान), कांधार, लमगान (अफगानिस्तान) से प्राप्त शिलालेखों से यह सिद्ध होता है कि उत्तर-पश्चिम में अशोक की सीमा हिन्दुकुश पर्वत तक फैली हुई थी.
- भाब्रू शिलालेख में बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों पर अशोक ने आस्था अभिव्यक्त की थी. बोधगया की यात्रा, लुम्बिनी से कर मुक्ति एवं 84,000 स्तूपों के निर्माण से सिद्ध होता है कि अशोक का 'धम्म' बौद्ध धर्म ही था. धम्म में बौद्ध धर्म के निम्न तत्त्वों को महत्त्व नहीं दिया गया था—

  (1) चार आर्य सत्य, (2) अष्टांगिक मार्ग,
  (3) निर्वाण, (4) संघ की स्थापना.
- दूसरे एवं सातवें अभिलेखों के अनुसार अशोक ने धम्म की परिभाषा इस प्रकार व्यक्त की थी—"धम्म है साधुता, बहुत से अच्छे कल्याणकारी कार्य करना, पाप रहित होना, मृदुता, दूसरों के प्रति व्यवहार में मधुरता, दया, दान, सत्य एवं पवित्रता."
- अशोक के धम्म के अनुसार पाप को निम्न भागों में वर्गीकृत किया है—

  1. चांड्य, 2. नैष्ठूर्य,
  3. क्रोध, 4. मान,
  5. ईर्ष्या.
- अशोक के शासनकाल में न्यायिक अधिकारी को 'राजुक' कहते थे. प्रत्येक पाँच वर्षों में प्रशासनिक अधिकारी विभिन्न क्षेत्रों के दौरे पर जाते थे.
- अशोक का साम्राज्य तीन तरह के प्रान्तों में वर्गीकृत था—

  (i) कुमारशासित प्रदेश—उत्तरापथ, दक्षिणापथ, अवन्तिपथ, कलिंग
  (ii) कुमारेतरशासित प्रदेश
  (iii) केन्द्रशासित प्रदेश
- आर्य या कुमार पुत्रों द्वारा शासन किया जाने वाला प्रदेश कुमारशासित प्रदेश कहलाता था. इन प्रदेशों की प्रशासनिक गतिविधियाँ महामात्र एवं अधिकारियों द्वारा सम्पन्न होती थीं.
- विष्णुपुराण एवं भागवतपुराण के अनुसार कुणाल 'सुयश' एवं दिव्यावदान के अनुसार 'धर्म विवर्धन' नामक उपाधि धारण करता था.
- कुणाल के बाद मौर्य साम्राज्य दो भागों में वर्गीकृत हो गया था. जिसके पूर्वी भाग पर दशरथ का अधिकार एवं पश्चिमी भाग पर सम्प्रति का अधिकार था.
- सम्प्रति के बाद शालिशक ने राज्य का भार सँभाला था, लेकिन उसकी अव्यवस्थित स्थिति के कारण हत्या कर दी गई. शालिशक के बाद देववर्मा, शतधनुष एवं ब्रहद्रथ मौर्य साम्राज्य के शासक हुए थे. मौर्य साम्राज्य का अन्तिम शासक वृहद्रथ था.
- मौर्य साम्राज्य के प्रशासन में राजा के सहयोग के लिए मन्त्रि-परिषद् होती थी. अर्थशास्त्र में मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों को 12,000 पण, मन्त्रिमण्डल के सदस्यों को 48,000 पण वेतन के रूप में दिये जाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.
- उच्चाधिकारियों के रूप में मौर्य प्रशासन में तीर्थ, महामात्र या अमात्य होते थे. इनकी संख्या लगभग 18 थी.
- महामात्रों के बाद सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक प्रशासन की देखरेख के लिए अध्यक्ष होते थे. अर्थशास्त्र में 30 अध्यक्षों

का विवरण मिलता है. इन अध्यक्षों के सहयोगी उपाध्यक्ष एवं निम्न कर्मचारी होते थे. जिनका चयन प्रतियोगिता परीक्षा के द्वारा होता था.

- मौर्य प्रशासन में गुप्तचरों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था—
  - (i) **स्थायी गुप्तचर**—ऐसे गुप्तचर उपास्थित, कायटिक क्षात्र, गृहपतिक, तापस, वैदेहक के रूप में स्थायी रूप से कार्य करते थे.
  - (ii) **संचार गुप्तचर**— ये गुप्तचर भ्रमण कर तरह-तरह की सूचनाएँ एकत्रित करते थे.
- प्लिनी के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना में 6,00,000 पैदल सैनिक, 30,000 घुड़सवार, 9,000 हाथी एवं 8,000 रथ थे.
- केन्द्रीय न्यायालय दो भागों में वर्गीकृत था—
  1. धर्मस्थीय (दीवानी मामलों की सुनवाई)
  2. कण्टकशोधन (फौजदारी मामलों की सुनवाई)

  मौर्य साम्राज्य की न्याय व्यवस्था में अंग, भंग, जुर्माना एवं मृत्युदण्ड की सजा का प्रावधान था.
- अर्थशास्त्र के अनुसार मौर्यकालीन आय के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित थे—

  1. दुर्ग, 2. राष्ट्र,
  3. खनि, 4. सेतु,
  5. वन, 6. व्रज,
  7. वणिक पथ.
- मौर्य साम्राज्य में किसानों से उपज का 1/4 या 1/6 भाग भूमिकर के रूप में एवं निजी उद्योग-धन्धों एवं जुर्मानें से भी आय प्राप्त होती थी. राजकोष की देखभाल करने वाला अधिकारी को 'सन्निधाता' कहा जाता था.
- विभिन्न इकाइयों में विभक्त मौर्य साम्राज्य के प्रशासन की सबसे छोटी इकाई प्रान्त थी. अभिलेखों के अनुसार अशोक के काल में 5 प्रान्त थे. प्रान्त का शासक 'राष्ट्रपाल' होता था.
- मौर्य प्रशासन में प्रान्त 'जिला' या स्थानीय में विभक्त था. जिला प्रशासन का प्रमुख 'स्थानिक' होता था. 800 गाँवों का समूह स्थानीय होता था. स्थानीय से छोटी इकाई 'द्रोणमुख' थी, जिसमें 400 गाँव सम्मिलित होते थे. द्रोणमुख से छोटी इकाई खार्वाटक थी, जो कि 200 गाँवों का समूह हुआ करती थी. संग्रहण में 100 गाँव होते थे. प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी. गाँव का मुखिया 'ग्रामिक' होता था.
- मौर्यकाल में लोग वर्णों के अनुसार व्यवसाय करते थे. ब्राह्मण राजा के मन्त्री, कानूनी सलाहकार, पुरोहित, शिक्षक के रूप में राज्य एवं प्रशासन कार्य में सहयोग देते थे. इन्हें करमुक्त भूमि दान दिया जाता था, जो 'ब्रह्मदेय' के नाम से जाना जाता था. क्षत्रिय सैनिक-वृत्ति प्रशासन एवं राजकाज में भागीदारी रखते थे. वैश्य कृषि, व्यापार, उद्योगों को संचालित करते थे. शूद्र वैश्यों के सहायक होते थे. ये स्वतन्त्र रूप से कृषि, शिल्पकला, व्यापार, पशुपालन का कार्य भी करते थे.
- मौर्यकाल में प्रतिलोम और अनुलोम विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न जातियों को अन्तवासिन (मिश्रित) कहा जाता था.
- इण्डिका के अनुसार भारतीय समाज में सात वर्ग थे.
- डायोडोरस, एरियन, स्ट्रेबो एवं मेगस्थनीज के अनुसार मौर्यकाल में दास प्रथा प्रचलित नहीं थी, लेकिन कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अनेक प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है. ये दास युद्ध बन्दी, बन्धक, जुर्माना नहीं चुकाने वाले होते थे. स्त्रीदास होने का उल्लेख भी मौर्यकाल में मिलता है.
- मौर्यकाल में संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित थी. इस काल में आठ प्रकार के विवाह होते थे. ब्रह्म, दैव, प्रजापत्य और आर्ष ये चार प्रकार के विवाह धर्म संगत थे. असुर, गान्धर्व, राक्षस एवं पिशाच ये चार अधार्मिक विवाह होते थे.
- मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था पशुपालन, कृषि एवं व्यापार पर आधारित थी. भूमि पर राजा का अधिकार होता था. इस भूमि पर दासों, कर्मकारों और कैदियों के द्वारा कृषिकार्य सम्पन्न होता था.
- मौर्यकाल में चाँदी की मुद्रा का प्रचलन था. ये आहत मुद्राएँ मयूर, पर्वत, अर्द्धचन्द्र से युक्त होते थी.
- मौर्यकालीन साम्राज्य में सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्कों का प्रचलन था. मौर्यकाल में चाँदी के चार प्रकार के सिक्के होते थे—

  1. माशक, 2. अर्द्धमाशक,
  3. काकणी, 4. अर्द्धकाकणी.
- मौर्यकाल में सड़कों की देखभाल एस्टिनोमोई नामक पदाधिकारी करते थे. पाटलिपुत्र से उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला और पूर्व में ताम्रलिप्ति तक फैले हुए प्रमुख राजमार्ग की लम्बाई 1300 मील थी.
- मौर्यकाल में शिल्पी दो प्रकार के होते थे—राजकीय शिल्पी एवं स्वतन्त्र शिल्पी. मिट्टी के बर्तन, लकड़ी का कार्य, वस्त्र बुनना, धातु, पत्थर एवं शीशे के सामान का निर्माण शिल्पकार्य के अन्तर्गत आते थे.
- मौर्यकाल में अशोक द्वारा निर्मित कलापूर्ण गुफाएँ निम्नलिखित थीं, जो बिहार के गया जिले के अन्तर्गत बाराबार (बराबर) की पहाड़ियों में निर्मित हैं—
  1. नयनग्रोथ गुहा या सुदामा गुहा
  2. विश्व झोपड़ी गुहा
  3. कर्ण चौपड़ गुहा
- दिल्ली-टोपरा, दिल्ली-मेरठ, लौरिया-अरेराज, लौरिया-नन्दनगढ़, रामपुरवा, कौशाम्बी, सारनाथ एवं अन्य 20 स्थलों पर अशोक द्वारा कला के नमूने के रूप में प्रस्तरस्तम्भ प्राप्त हुए थे. इनकी लम्बाई 40 फीट एवं वजन 50 टन के करीब था.
- मौर्यकालीन धार्मिक व्यवस्था में ब्राह्मण धर्म का अस्तित्व था. इस धर्म के अन्तर्गत ब्रह्मा, इन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, कार्तिकेय की पूजा की जाती थी. भद्रबाहु से प्रभावित होकर चन्द्रगुप्त मौर्य जैन धर्म का समर्थक बन गया था. मौर्यकाल में बौद्ध धर्म सर्वाधिक पल्लवित हुआ. अशोक का धम्म बौद्ध धर्म से पूरी तरह मिलता था. बौद्ध धर्म का श्रीलंका से मध्य एशिया तक प्रसार मौर्यकाल में ही हुआ था.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मगध साम्राज्य के स्थापना का श्रेय जाता है—
   (A) चन्द्रगुप्त मौर्य को (B) बिम्बिसार
   (C) बिन्दुसार (D) अशोक
2. कौटिल्य का अर्थशास्त्र कितने अधिकरणों एवं प्रकरणों में विभक्त है ?
   (A) 20 अधिकरणों एवं 185 प्रकरणों में
   (B) 10 अधिकरणों एवं 120 प्रकरणों में
   (C) 15 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में
   (D) 35 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में
3. विद्वानों ने सबसे पहले कौटिल्य के अर्थशास्त्र की जानकारी प्राप्त की—
   (A) 1905 ई. में (B) 1906 ई. में
   (C) 1917 ई. में (D) 1909 ई. में
4. किस अर्थशास्त्री के अनुसार अर्थशास्त्र की रचना मौर्य काल में हुई ?
   (A) यू. एन. घोषाल (B) स्मिथ
   (C) भण्डारकर (D) विण्टरनीज
5. जासूसी नाटक 'मुद्राराक्षस' का रचनाकार था—
   (A) कौटिल्य (B) विशाखादत्त
   (C) कीथ (D) इनमें से कोई नहीं
6. निम्नलिखित में से किसके अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य शूद्र एवं नीच कुल में उत्पन्न हुआ था ?
   (A) विष्णुपुराण (B) दिव्यावदान
   (C) दीपवंश (D) इनमें से कोई नहीं
7. 'कथासरित्सागर' कृति है—
   (A) क्षेमेन्द्र की (B) पतञ्जलि की
   (C) सोमदेव की (D) पाणिनी की
8. निम्नलिखित में से कौनसे तीन बौद्ध ग्रंथ हैं ?
   (1) दिव्यावदान (2) विष्णुपुराण
   (3) दीपवंश (4) महाभाष्य
   (5) मंजूश्रीमूलकल्प
   नीचे दिये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
   (A) 1, 3, 5 (B) 1, 2, 5
   (C) 1, 3, 4 (D) 2, 3, 4
9. किस ग्रन्थ में अशोक ने स्वयं को क्षत्रिय बताया था ?
   (A) दिव्यावदान (B) दीपवंश
   (C) अशोकावदान (D) महावंश
10. किस बौद्ध ग्रन्थ में मगध की सेना का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है ?
    (A) मिलिन्दपञ्हो (B) दीपवंश
    (C) अशोकावदान (D) महावंश
11. निम्नलिखित में से कौनसा एक जैन साहित्य नहीं है ?
    (A) स्थविरावलिचरित (B) कल्पसूत्र
    (C) मंजूश्रीमूलकल्प (D) परिशिष्ट पर्व
12. किस विदेशी यात्री ने मौर्यकालीन शासन की जानकारी पर आधारित पुस्तक 'इण्डिका' लिखी थी ?
    (A) डायोडोरस (B) मेगस्थनीज
    (C) डायोनिसस (D) एरियन
13. राजाज्ञाओं को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करने वाला पहला शासक था—
    (A) चन्द्रगुप्त मौर्य (B) अशोक
    (C) धनानन्द (D) इनमें से कोई नहीं
14. अशोक द्वारा स्थापित स्तम्भाभिलेखों की संख्या थी—
    (A) 5 (B) 4
    (C) 4 (D) 9
15. निम्नलिखित में से कौनसे अशोक के तीन गुहा अभिलेख हैं ?
    1. कर्ण चौपड़ गुहा, 2. राजुल मंदगिरि,
    3. नयनग्रोध, 4. विश्व झोपड़ी गुहा
    नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
    (A) 1, 2 एवं 3 (B) 2, 3 एवं 4
    (C) 1, 2 एवं 4 (D) 1, 3 एवं 4
16. भारत के 'मुक्तिदाता' की संज्ञा मौर्यकाल के किस शासक को दी गई थी ?
    (A) अशोक (B) चन्द्रगुप्त मौर्य
    (C) समुद्रगुप्त (D) इनमें से कोई नहीं
17. विष्णुपुराण के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की माता का नाम था—
    (A) सुमुखी (B) शल्या
    (C) मुरा (D) इनमें से कोई नहीं

18. चन्द्रगुप्त मौर्य के शूद्र होने के तर्क का खण्डन किया था—
(A) मामुलनार (B) सामदेव
(C) राधाकुमुद मुकर्जी (D) साण्ड्रोकोटस

19. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) मुद्राराक्षस	1. सोमदेव
(b) कथासरित्सागर	2. पाणिनी
(c) इण्डिका	3. विशाखादत्त
(d) अष्टाध्यायी	4. मेगस्थनीज

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	1	4	2
(C)	4	2	1	3
(D)	1	2	4	3

20. किस विद्वान् के अनुसार अर्थशास्त्र प्राक् मौर्य ग्रन्थ था ?
(A) जॉली (B) यू. एन. घोषाल
(C) फ्लीट (D) कौटिल्य

21. अशोक की जीवनी पर प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ था—
(A) दिव्यावदान (B) महाभाष्य
(C) मंजूश्रीमूलकल्प (D) इनमें से कोई नहीं

22. चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्दवंश के किस शासक को मारकर मौर्यवंश की नीव रखी थी ?
(A) भूतपाल (B) पंडुगति
(C) राष्ट्रपाल (D) धनानन्द

23. चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा मनोनीत सौराष्ट्र का शासक था—
(A) सेल्यूकस (B) अशोक
(C) पुष्यगुप्त (D) इनमें से कोई नहीं

24. चन्द्रगुप्त मौर्य और किस प्रतिद्वन्द्वी के मध्य सन्धि होकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गये थे ?
(A) अशोक (B) हर्षवर्द्धन
(C) सिकन्दर (D) सेल्यूकस

25. चन्द्रगुप्त मौर्य किस धर्म का समर्थक था ?
(A) बौद्ध धर्म (B) जैन धर्म
(C) ईसाई धर्म (D) इनमें से कोई नहीं

26. चन्द्रगुप्त को कैवल्य की प्राप्ति कहाँ हुई थी ?
(A) श्रवणबेलगोला में (B) बोधगया में
(C) कौशाम्बी में (D) इनमें से कोई नहीं

27. किस शासक का उपनाम 'अमित्रघात' था ?
(A) अजातशत्रु (B) चन्द्रगुप्त मौर्य
(C) बिन्दुसार (D) धनानन्द

28. अशोक महान् की माता का नाम था—
(A) मुरा (B) सुभद्रांगणी
(C) कलावती (D) इनमें से कोई नहीं

29. राजतरंगिणी में श्रीनगर का पहला सम्राट् किसे बताया गया है ?
(A) अशोक (B) चन्द्रगुप्त मौर्य
(C) बिन्दुसार (D) पुष्यगुप्त

30. किन अभिलेखों में अशोक ने 'धम्म' की परिभाषा व्यक्त की थी ?
(A) पहले एवं दूसरे
(B) पहले एवं तीसरे
(C) दूसरे एवं सातवें
(D) इनमें से कोई नहीं

31. 'देवानांप्रिय' की उपाधि किस शासक ने धारण की थी ?
(A) चन्द्रगुप्त मौर्य (B) बिन्दुसार
(C) अशोक (D) इनमें से कोई नहीं

32. अशोक के शासनकाल में न्यायिक अधिकारी होते थे—
(A) राजुक (B) महामात्र
(C) प्रादेशिक (D) इनमें से कोई नहीं

33. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) कश्मीर और गांधार	1. महाधर्म रक्षित
(b) महिषमण्डल	2. सोन
(c) स्वर्णभूमि	3. महादेव
(d) महाराष्ट्र	4. मंज्झतिक

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	4	1	2	3
(C)	2	1	3	4
(D)	4	1	2	3

34. निम्नलिखित में से कौनसा कार्य परिषद् का नहीं है ?
(A) राजा को मन्त्रणा देना
(B) विवादास्पद मामलों का फैसला करना
(C) अपराधियों की सजा निर्धारित करना
(D) राजाज्ञा को मनवाना

35. अशोककालीन प्रशासन में राज्य का प्रमुख पदाधिकारी एवं विभागाध्यक्ष होता था—
(A) मुख (B) राजुक
(C) महामात्र (D) पुरुष

36. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (पदों के नाम)	सूची-II (पदाधिकारियों के कार्य)
(a) युक्तक	1. यह लेखन कार्य को सँभालता था.
(b) लिपिकार	2. न्यायिक अधिकारी होता था जो राजस्व का कार्य भी देखता था.
(c) सायुक्त	3. न्याय प्रशासन एवं जनहित कार्यों का सम्पादन करना.
(d) राजुक	4. ग्राम प्रशासन से सम्बन्ध रखने वाला पदाधिकारी होता था.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	2	1	4	3
(C)	2	3	4	1
(D)	4	3	2	1

37. मौर्यकाल की न्यायिक प्रशासन का सर्वोच्च न्यायाधीश होता था—
(A) महामात्र (B) राजा
(C) राजुक (D) इनमें से कोई नहीं

38. निम्नलिखित में से कौन तीन अशोक के उत्तराधिकारी थे ?
1. पुष्यगुप्त, 2. देववर्मा,
3. महेन्द्र, 4. कुणाल,
5. तीवर
नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(A) 1, 2, 3 (B) 2, 3, 4
(C) 3, 4, 5 (D) 1, 3, 4

39. जैन ग्रन्थों और बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अशोक के बाद का शासक कौन बना ?
(A) दशरथ (B) महेन्द्र
(C) सम्प्रति (D) इनमें से कोई नहीं

40. राजा दशरथ के पिता थे—
(A) सम्प्रति (B) महेन्द्र
(C) जालौन (D) कुणाल

41. मौर्य वंश का अन्तिम शासक था—
(A) सम्प्रति (B) कुणाल
(C) वृहद्रथ (D) शतधनुप

42. मौर्य वंश का पतन का कारण निम्नलिखित में से कौनसा नहीं था ?
(A) धम्म विजय के कारण अशोक की सैन्य शक्ति कमजोर पड़ गई थी
(B) अशोक की कायरता एवं अव्यवस्थित स्थिति के कारण
(C) अशोक के सारे उत्तराधिकारी अयोग्य थे
(D) इनमें से कोई नहीं

43. अर्थशास्त्र के अनुसार मन्त्रिमण्डल एवं मन्त्रिपरिषद् के सदस्यों को वेतन दिया जाता था—
(A) 48,000 पण एवं 12,000 पण
(B) 50,000 पण एवं 13,000 पण
(C) 10,000 पण एवं 15,000 पण
(D) 20,000 पण एवं 12,000 पण

44. अर्थशास्त्र में सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक प्रशासन के नियन्त्रण के लिये अध्यक्षों की संख्या थी—
(A) 15 अध्यक्ष (B) 39 अध्यक्ष
(C) 30 अध्यक्ष (D) 25 अध्यक्ष

45. मौर्यकाल में पुलिस का प्रधान होता था—
(A) गूढ़ पुरुष (B) गुप्तचर
(C) दण्डपाल (D) इनमें से कोई नहीं

46. किसके अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना में 6,00,000 पैदल सैनिक, 30,000 घुड़सवार, 9,000 हाथी एवं 8,000 रथ थे ?
(A) कौटिल्य (B) मेगस्थनीज
(C) प्लिनी (D) डायोनिसस

47. मौर्यकाल में किसानों से उपज का कितना भाग भूमिकर के रूप में लिया जाता था ?
(A) 1/5 या 1/7
(B) 1/3 या 1/4
(C) 1/4 या 1/6
(D) इनमें से कोई नहीं

48. मौर्यकाल में राजस्व की देखभाल करने वाला कर्मचारी होता था—
(A) राजुक (B) महामात्र
(C) पुरोहित (D) सन्निधाता
(E) समाहर्ता

49. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (प्रान्त)	सूची-II (राजधानी)
(a) उत्तरापथ	1. तोसली
(b) अवन्तिरथ	2. सुवर्णगिरि
(c) दक्षिणापथ	3. तक्षशिला
(d) कलिंग	4. उज्जैन

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	4	2	1
(B)	3	2	1	4
(C)	3	4	2	1
(D)	2	1	3	4

50. मौर्यकाल में प्रान्त का शासक कहलाता था—
(A) पुरोहित (B) सन्निधाता
(C) राष्ट्रपाल (D) इनमें से कोई नहीं

51. कितने गाँवों का समूह स्थानीय होता था ?
(A) 500 (B) 400
(C) 300 (D) 800

52. मौर्यकाल में स्थानीय प्रशासन की सबसे छोटी इकाई होती थी—
(A) द्रोणमुख (B) गाँव
(C) खर्वटिक (D) इनमें से कोई नहीं

53. मौर्यकाल में किस वर्ण को करमुक्तभूमि का दान दिया जाता था, जो बह्मदेय के नाम से जाना जाता था—
(A) शूद्र को (B) क्षत्रिय को
(C) वैश्य को (D) ब्राह्मण को

54. मेगस्थनीज की इण्डिका के अनुसार भारतीय समाज में वर्ग थे—
(A) सात (B) छः
(C) पाँच (D) नौ

55. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (जाति)
(a) दार्शनिक
(b) अमात्य
(c) शिल्पी एवं कारीगर
(d) किसान

सूची-II (कार्य/टिप्पणी)
1. विभिन्न तरह के सामान तैयार करते थे.
2. यज्ञ, संस्कार एवं धार्मिक कार्य करते थे.
3. राजा के विश्वासपात्र थे. मन्त्री एवं अधिकारी इसी वर्ग के होते थे.
4. मुख्य व्यवसाय कृषि था.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	2	3	1
(B)	1	4	3	2
(C)	3	4	2	1
(D)	2	3	1	4

56. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कितने प्रकार के दास होते थे ?
(A) 8 (B) 7
(C) 9 (D) 6

57. मौर्यकाल में विवाह कितने प्रकार के होते थे ?
(A) 8 (B) 7
(C) 10 (D) 5

58. ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य ये चार प्रकार के विवाह होते थे—
(A) धार्मिक (B) अधार्मिक
(C) अन्तवासिन (D) इनमें से कोई नहीं

59. मौर्यकाल में भूमि पर किसका स्वामित्व होता था ?
(A) राजा का (B) दासों का
(C) कर्मकारों का (D) कृषकों का

60. मौर्यकाल में मुद्रा को जारी करने वाला कहलाता था—
(A) लक्षणाध्यक्ष (B) राजुक
(C) सन्निधाता (D) इनमें से कोई नहीं

61. मौर्यकाल में सड़कों की देखरेख करने वाले पदाधिकारी होते थे—
(A) राजुक (B) पुरोहित
(C) एस्टिनोमोई (D) इनमें से कोई नहीं

62. मौर्यकाल में व्यापार का नियन्त्रक होता था—
(A) एस्टिनोमोई (B) सन्निधाता
(C) पण्याध्यक्ष (D) इनमें से कोई नहीं

63. पाटलिपुत्र नगर अवस्थित था—
(A) यमुना नदी के तट पर
(B) काशी के पश्चिम में
(C) कुरु के दक्षिण में
(D) गंगा और सोन नदियों के संगम पर

64. पाटलिपुत्र नगर की लम्बाई थी—
(A) $10\frac{1}{2}$ मील (B) 11 मील
(C) $9\frac{1}{4}$ मील (D) $9\frac{1}{2}$ मील

65. पाटलिपुत्र नगर में कितने प्रवेश द्वार थे ?
(A) 72 (B) 71
(C) 64 (D) 65

66. चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार अशोक ने बुद्ध के अवशेषों पर कितने स्तूपों का निर्माण कराया था ?
(A) 84,000 (B) 13,000
(C) 50,000 (D) 30,000

67. सारनाथ व अन्य स्थलों पर अशोक द्वारा उत्कृष्टतम कला के नमूने के रूप में प्राप्त प्रस्तर स्तम्भ की ऊँचाई एवं वजन है—
(A) ऊँचाई 50 फीट एवं वजन 50 टन के करीब
(B) ऊँचाई 30 फीट एवं वजन 60 टन के करीब
(C) ऊँचाई 40 फीट एवं वजन 50 टन के करीब
(D) इनमें से कोई नहीं

68. मौर्यकालीन लोककला का साक्ष्य 'यक्ष की मूर्ति' कहाँ से प्राप्त हुई थी ?
(A) दीदारगंज (B) मथुरा (परखम)
(C) लोहानीपुर (D) पटना

69. मौर्यकाल के दार्शनिक जाति का कार्य था—
(A) मुख्य व्यवसाय कृषि था
(B) राजा को तरह-तरह की सूचनाएँ देते थे
(C) यज्ञ, संस्कार एवं धार्मिक कर्म करते थे
(D) इनमें से कोई नहीं

70. किससे प्रभावित होकर चन्द्रगुप्त मौर्य जैन धर्म का समर्थक बन गया था ?
(A) कौटिल्य (B) पुष्यगुप्त
(C) भद्रबाहु (D) इनमें से कोई नहीं

71. मौर्यकाल में किस धर्म का सर्वाधिक वर्चस्व था ?
(A) जैन धर्म (B) बौद्ध धर्म
(C) ब्राह्मण धर्म (D) इनमें से कोई नहीं

72. बौद्ध धर्म की तीसरी संगीति पाटलिपुत्र में किसकी अध्यक्षता में अशोक द्वारा सम्पन्न हुई थी ?
(A) कौटिल्य (B) पुष्यगुप्त
(C) मोग्गलिपुत्ततिस्स (D) इनमें से कोई नहीं

73. बौद्ध धर्म का प्रसार श्रीलंका से मध्य एशिया तक किस काल में हुआ था ?
(A) प्राक् मौर्य युग (B) नन्दवंश
(C) शिशुनाग वंश (D) मौर्यकाल

74. निम्नलिखित में से कौनसे तीन मौर्यकालीन चाँदी के सिक्के थे ?
(1) माशूक (2) कांकणी
(3) अर्द्धकांकणी (4) आपण
(5) माषक.
नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(A) 1, 2, 3 (B) 3, 4, 5
(C) 1, 3, 5 (D) 2, 3, 5

75. अन्तवासिन जातियों में से किन दो जातियों को मौर्य-काल में अछूत माना जाता था ?
(A) अम्बष्ट एवं वैदेहक
(B) रथकार एवं पारशव
(C) चांडाल एवं श्वापक
(D) मागध एवं सूत्र

76. मौर्यकाल में राजा के मन्त्री, कानूनी सलाहकार, पुरोहित होते थे—
(A) वैश्य (B) शूद्र
(C) ब्राह्मण (D) क्षत्रिय

77. निम्नलिखित में से किन तीन वर्णों को द्विज श्रेणी में रखा जाता है ?
(1) ब्राह्मण (2) क्षत्रिय
(3) शूद्र (4) अन्तवासिन
(5) वैश्य
नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(A) 1, 2, 4 (B) 1, 2, 5
(C) 1, 4, 5 (D) 2, 3, 4

78. मौर्यकाल में कृषि कर्म, व्यापार एवं उद्योग किस वर्ण द्वारा संचालित किया जाता था ?
(A) शूद्र (B) वैश्य
(C) ब्राह्मण (D) क्षत्रिय

79. मौर्यकालीन प्रशासन में द्रोणमुख में कितने गाँव सम्मिलित थे ?
(A) 400 (B) 200
(C) 100 (D) 800

80. मौर्यकालीन प्रशासन में उच्चाधिकारी के रूप में तीर्थ, महामात्र या अमात्य होते थे, जिनकी संख्या थी—
(A) लगभग 10 (B) लगभग 20
(C) लगभग 18 (D) लगभग 16

81. मौर्यकालीन मन्त्रिपरिषद् का मुख्य कार्य था—
(A) राजा को सलाह देना
(B) अपराधियों की सजा निर्धारित करना था
(C) मन्त्रिमण्डल के निर्णयों की क्रियान्विति करना था
(D) इनमें से कोई नहीं

82. मौर्य साम्राज्य की अव्यवस्थित परिस्थिति का लाभ उठाते हुए किस शासक ने मौर्य साम्राज्य पर अधिकार कर लिया था ?
(A) सेल्यूकस (B) वृहद्रथ
(C) पुष्यगुप्त (D) शंगु

83. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (पदाधिकारी)	सूची-II (पदाधिकारियों के अधिकार)
(a) पुरुष	1. राज्य का प्रमुख पदाधिकारी एवं विभागाध्यक्ष होता था
(b) वर्ग	2. अशोककालीन प्रशासन का सर्वोच्च पदाधिकारी था
(c) मुख	3. अशोक के शासन का सर्वाधिक प्रभावशाली कर्मचारी होता था.
(d) महामात्र	4. जनसाधारण एवं अधिकारी इस वर्ग में आते थे.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	2	1	3
(B)	2	3	4	1
(C)	1	4	3	2
(D)	2	4	1	3

84. मौर्यकालीन केन्द्रीय न्यायालय कितने भागों में वर्गीकृत था ?
(A) तीन (B) चार
(C) दो (D) इनमें से कोई नहीं

85. मौर्यकाल के गुप्तचर कितनी श्रेणियों में वर्गीकृत थे ?
(A) तीन (B) दो
(C) पाँच (D) इनमें से कोई नहीं

86. मौर्यकाल में 'सीताध्यक्ष' होता था—
(A) व्यापार देखने वाला प्रमुख
(B) धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख
(C) खजाने का प्रमुख
(D) राजकीय जमीन को देखने वाला

87. अशोकावदान के अनुसार किस स्थान को अशोक द्वारा देने पर परिषद् ने प्रतिबन्ध लगा दिया था ?
(A) पाटलिपुत्र (B) कुक्कटाराम
(C) कोशाम्बी (D) इनमें से कोई नहीं

88. निम्नलिखित में से किन चार क्षेत्रों में धम्म प्रचार मिशन अशोक द्वारा भेजे गये थे ?
1. कोशाम्बी, 2. चोल,
3. पाटलिपुत्र, 4. महाराष्ट्र,
5. पाण्ड्य, 6. सुमात्रा.
नीचे दिये गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(A) 2, 4, 5, 6 (B) 2, 3, 4, 6
(C) 1, 3, 4, 6 (D) 3, 4, 5, 6

89. किस मौर्यकालीन राजा का हृदय कलिंग युद्ध के पश्चात् परिवर्तित हो गया था ?
(A) चन्द्रगुप्त मौर्य (B) अजातशत्रु
(C) बिन्दुसार (D) इनमें से कोई नहीं

90. अशोक महान् के पिता थे—
(A) चन्द्रगुप्त (B) अजातशत्रु
(C) बिन्दुसार (D) पुष्यगुप्त

91. सम्राट् अशोक का पुत्र था—
(A) कुणालक (B) संप्रति
(C) महेन्द्र (D) इनमें से कोई नहीं

92. सीरिया के राजा अन्तिओक प्रथम ने किसको बिन्दुसार के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा था ?
(A) मेगस्थनीज (B) फाह्यान
(C) ह्वेनसांग (D) इनमें से कोई नहीं

93. किसके इतिहास के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य को दैवीय शक्ति की प्रेरणा से राज्यपद की प्राप्ति हुई थी ?
(A) डायोनिसस (B) मेगस्थनीज
(C) जस्टिन (D) इनमें से कोई नहीं

94. मौर्यकाल में 'सन्निधाता' से तात्पर्य है—
(A) उद्योग मंत्री (B) राजस्व मंत्री
(C) वित्तमंत्री (D) इनमें से कोई नहीं

95. निम्नलिखित में से कौनसा सही सुमेलित नहीं है ?
(A) महेन्द्र एवं संघमित्रा : श्रीलंका
(B) महादेव : हिमाचल प्रदेश
(C) रक्षित : वनवासी (उत्तरी कनाड़ा)
(D) महारक्षित : यूनानी प्रदेश

96. चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक हुआ था—
(A) 321 ई. पू. में (B) 324 ई. पू. में
(C) 320 ई. पू. में (D) इनमें से कोई नहीं

97. निम्नलिखित में से कौनसे तीन विन्दुसार के मन्त्री थे ?
(1) कौटिल्य (2) पुष्यगुप्त
(3) सुबंधु (4) राधागुप्त
(5) भद्रवाहु.
नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–
(A) 2, 3, 4 (B) 1, 3, 4
(C) 3, 4, 5 (D) 1, 4, 5

98. मौर्यकाल के गिरनार शिलालेख के खोजकर्त्ता थे–
(A) महाराणा रणजीत (B) कर्नल टॉड
(C) कैप्टन वर्ट (D) इनमें से कोई नहीं

99. "सभी मनुष्य मेरे पुत्र हैं"–यह कथन अशोक के कौनसे वृहद् अभिलेख में वर्णित है ?
(A) तृतीय वृहद् शिलालेख
(B) द्वितीय शिलालेख
(C) षष्ठ शिलालेख
(D) सप्तम शिलालेख

100. निम्नलिखित में से कौनसी वस्तु मौर्यकाल में आयात की जाती थी ?
(A) मसाले (B) वस्त्र
(C) चावल (D) ताँबे के वर्तन

उत्तरमाला

1. (B)	2. (C)	3. (D)	4. (B)	5. (B)
6. (A)	7. (C)	8. (A)	9. (A)	10. (A)
11. (C)	12. (B)	13. (B)	14. (D)	15. (D)
16. (B)	17. (C)	18. (C)	19. (B)	20. (B)
21. (A)	22. (D)	23. (C)	24. (D)	25. (B)
26. (A)	27. (C)	28. (B)	29. (A)	30. (C)
31. (C)	32. (A)	33. (A)	34. (C)	35. (D)
36. (B)	37. (D)	38. (C)	39. (C)	40. (D)
41. (C)	42. (B)	43. (A)	44. (C)	45. (C)
46. (C)	47. (C)	48. (E)	49. (C)	50. (C)
51. (D)	52. (B)	53. (D)	54. (A)	55. (D)
56. (C)	57. (A)	58. (A)	59. (A)	60. (A)
61. (C)	62. (C)	63. (D)	64. (D)	65. (C)
66. (A)	67. (C)	68. (B)	69. (C)	70. (C)
71. (B)	72. (C)	73. (D)	74. (D)	75. (C)
76. (C)	77. (B)	78. (B)	79. (A)	80. (C)
81. (C)	82. (C)	83. (D)	84. (C)	85. (B)
86. (D)	87. (B)	88. (A)	89. (D)	90. (C)
91. (C)	92. (D)	93. (C)	94. (C)	95. (C)
96. (A)	97. (B)	98. (B)	99. (C)	100. (B)

विगत वर्षों में आई.ए.एस. (प्री.) में पूछे गये प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौनसा एक अशोक का अभिलेख (Inscriptions) इशिला नामक प्राचीन नगर का उल्लेख करता है ?
   1. मास्की शिलालेख (Maski rock edict)
   2. पांगोरारिया
   3. उदेगोलम
   4. ब्रह्मगिरि

2. **कथन (A)** : प्रभावती गुप्त ने, जो चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थी, वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से विवाह किया.

   कथन (R) : चन्द्रगुप्त वाकाटक राजा से शकों के विरुद्ध सहायता चाहता था.

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
   1. सेंगुत्तुवन, जो इमयवरम्वन का पुत्र था, यज्ञ श्री सातकर्णी का समकालीन था.
   2. शिलप्पदिकारम् में सेंगुत्तुवन के महाकार्यों का विस्तृत विवरण मिलता है

   उपर्युक्त कथनों में से कौनसा/से सही है/हैं ?
   (A) केवल 1
   (B) केवल 2
   (C) 1 और 2 दोनों
   (D) न ही 1 और न ही 2

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
   1. अशोक के बारहवें शिलालेख में सातवाहनों का उल्लेख मिलता है.
   2. जैन परम्परा के अनुसार सिमुक ने बौद्ध एवं जैन दोनों प्रकार के मन्दिरों का निर्माण कराया.

   उपर्युक्त कथनों में से कौनसा/से सही है/ हैं ?
   (A) केवल 1
   (B) केवल 2
   (C) 1 और 2 दोनों
   (D) न ही 1 और न ही 2

5. सूची–I (अशोक के शिलालेख) को सूची–II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

   सूची-I (अशोक के शिलालेख)
   (a) प्रथम शिलालेख (b) तृतीय शिलालेख
   (c) पंचम शिलालेख (d) सप्तम शिलालेख

सूची-II (विवरण)
1. पशु बलियों की भर्त्सना
2. धर्म के सिद्धान्त
3. धर्म महामात्रों की नियुक्ति
4. अशोक की तीर्थयात्राएं

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	3	2	4
(B)	4	2	3	1
(C)	1	2	3	4
(D)	4	3	2	1

6. अशोक के अभिलेखों से किस एकमात्र (अभिलेख) लेखक का परिचय मिलता है ?
(A) हरिषेण (B) रविकीर्ति
(C) चापड (D) कृपाण चाम

7. कौटिल्य का अर्थशास्त्र मुख्यतः मौर्य साम्राज्य के किस तथ्य से सम्बन्धित था?
(A) ग्राम समुदाय (B) अर्थशास्त्रीय व्यवस्था
(C) कृषि व्यवस्था (D) राज्य

8. मौर्यकाल में किस प्रथा को विशेषकर नहीं देखा जाता था?
(A) जातीयता (B) आश्रम व्यवस्था
(C) दास व्यवस्था (D) पर्दा प्रथा

9. चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरु था—
(A) उपगुप्त (B) भद्रबाहु
(C) स्थूलशूद्र (D) नागसेन

10. अशोक का नाम प्रियदर्शी जिसमें वर्णित है—
(A) कांधार अभिलेख
(B) मास्की अभिलेख
(C) येरागुडी अभिलेख
(D) रुम्मिनदेई स्तम्भ अभिलेख

11. अर्थशास्त्र जिसने लिखा था—
(A) कौटिल्य (B) मेगस्थनीज
(C) कबीर (D) तुलसीदास

12. पाटलिपुत्र एक विशाल एवं सुन्दर शहर था, यह हमें बताता है—
(A) मेगस्थनीज (B) बीरसिंह
(C) सेल्यूकस (D) मुराद

13. चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री था—
(A) कौटिल्य (B) सेल्यूकस
(C) अब्दुल फजल (D) कालीदास

14. कौटिल्य के अनुसार सेना में किस वर्ण के सैनिक होते थे?
(A) क्षत्रिय
(B) क्षत्रिय एवं शूद्र
(C) क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र
(D) क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं ब्राह्मण

15. प्रथम तीन बौद्ध संगीति को किन तीन राजाओं ने संगठित किया?
(A) बिम्बसार, अशोक, दशरथ
(B) प्रसेनजित, बिम्बसार, अजातशत्रु
(C) अशोक, कनिष्क, हर्ष
(D) अजातशत्रु, कालाशोक, अशोक

16. बिन्दुसार के साम्राज्य के दौरान किस क्षेत्र के लोग अधिकारियों के अत्याचार से परेशान थे?
(A) तक्षशिला (B) पाटलिपुत्र
(C) तौसाली (D) उज्जैन

17. कौन अशोक के साम्राज्य में सम्मिलित नहीं था?
(A) कश्मीर (B) कर्नाटक
(C) कामरूप (D) गुर्जर

18. समाहर्ता पद्धति किस काल में व्यापक रूप से अपनाई गई थी?
(A) शुंग (B) मौर्य
(C) गुप्त (D) सातवाहन

19. निम्नलिखित में से किसने कहा था कि भारत में दास प्रथा नहीं थी ?
(A) स्ट्रेबो (B) मेगस्थनीज
(C) फाह्यान (D) ह्वेनसांग

20. निम्नलिखित में से किनका अशोक के अभिलेख में उल्लेख हुआ है ?
(A) चोल, चेर, पांड्य एवं पल्लव
(B) चोल, सत्यपुत्र, चेर एवं पांड्य
(C) पांड्य, सत्यपुत्र, आन्ध्र एवं चेर
(D) चोल, पांड्य, भोज एवं आन्ध्र

21. मौर्य शासन-व्यवस्था में रूपदर्शक नामक अधिकारी था—
(A) चाँदी तथा अन्य धातुओं का परीक्षक
(B) गणिकाओं का अध्यक्ष
(C) रंगमंच का प्रबन्धक
(D) सिक्कों का परीक्षक

22. निम्नलिखित अभिलेखों में से किसमें चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक दोनों के नाम का उल्लेख है ?
(A) शाहबाजगढ़ी शिलालेख
(B) मास्की लेख

(C) रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
(D) स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख

23. अशोक का समकालीन सीरिया का ग्रीक राजा, जिसका उसके अभिलेखों में उल्लेख मिलता है, था—
(A) एण्टियोकस द्वितीय थियॉस
(B) टॉलेमी द्वितीय
(C) एण्टीगोनस
(D) एलेक्जेंडर

24. मौर्यकाल में दुर्भिक्ष काल में राहत कार्य के लिए कोष्ठागारों के अस्तित्व का प्रमाण नामांकित से ज्ञात हुआ है—
(A) गिरनार का शिलालेख II
(B) स्तम्भ-लेख II
(C) सासाराम का लघु शिलालेख
(D) सोहगौरा पट्ट अभिलेख

25. ब्रह्मदेय शब्द प्रथम बार कहाँ मिलता है ?
(A) पूर्व वैदिक ग्रन्थों में
(B) पूर्व बौद्ध ग्रन्थों में
(C) गुप्त पूर्व अभिलेखों में
(D) गुप्तोत्तर अभिलेख में

26. ह्वेनसांग ने किस राज्य के जन्म की कथा वर्णित की है ?
(A) उड़ीसा (B) कश्मीर
(C) बंगाल (D) बिहार

27. निम्नलिखित में से मौर्य दरबार में राजदूत के रूप में मेगस्थनीज के बाद कौन आया ?
(A) हेगेजेण्डर (B) डायमेकस
(C) एथेनॉएस (D) निआर्कस

28. प्राचीन स्रोतों में निम्नलिखित में से किसके साथ श्रमण का युग्म बनता है ?
(A) आजीवक (B) सौगत
(C) ब्राह्मण (D) निर्ग्रंथ

29. निम्नलिखित में से कौन एक अर्थशास्त्र पर टीका है ?
(A) भुवनदेव कृत अपराजितपृच्छा
(B) भोजदेव कृत समरांगणसूत्रधार
(C) मेरुतुंग कृत प्रवन्धचिन्तामणि
(D) भट्टस्वामी कृत प्रतिपदा-पंचिका

30. यद्यपि अशोक के अनेक पुत्र थे, अभिलेखों में केवल एक ही उल्लिखित है, जिसका किसी अन्य स्रोत में उल्लेख नहीं मिलता है. वह है—
(A) कुणाल (B) तीवर
(C) महेन्द्र (D) जलौक

31. अर्थशास्त्र में पुर-विन्यास से स्पष्टतया निर्दिष्ट होता है कि औद्योगिक और व्यापारिक वर्गों को—
(A) बिल्कुल ध्यान में नहीं रखा गया था
(B) नगर में विशिष्ट आवास दिया गया था
(C) नगर के बाहर स्थान दिया गया था
(D) नगर के अन्दर और बाहर स्थान दिया गया था

32. मौर्य सिक्कों के बारे में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही है ?
(1) वे रजत एवं ताम्र आहत सिक्के थे.
(2) वे चलाने वाले राजाओं के नामों को धारण करते थे.
(3) उन पर भिन्न-भिन्न चिह्न समूह अंकित थे.
नीचे दिए गये कूट से उत्तर का चयन कीजिए—
(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2) एवं (3) (D) (1), (2) एवं (3)

33. कौटिल्य द्वारा प्रयुक्त 'धर्मस्थीय' शब्द का तात्पर्य था—
(A) शैक्षणिक संस्था (B) धार्मिक संस्था
(C) न्यायालय (D) राजस्व विभाग

34. समझा जाता है कि मौर्य स्तम्भों के लिए पत्थर निम्नांकित से प्राप्त किया जाता था—
(A) राजमहल पहाड़ियाँ (B) राजगृह
(C) चुनार (D) बराबर पहाड़ियाँ

35. अशोक के शासनकाल में कुमार निम्नांकित स्थानों में नियुक्त थे—
(A) तक्षशिला, तोसाली एवं उज्जयिनी
(B) तक्षशिला, उज्जयिनी एवं जूनागढ़
(C) तक्षशिला, तोसाली एवं सोपारा
(D) उज्जयिनी, मथुरा एवं येरगुडी

36. कहाँ से प्राप्त अपने अभिलेखों में अशोक का नाम से उल्लेख है ?
(A) केवल मास्की एवं गुजर
(B) केवल धौली एवं रूपनाथ
(C) निट्टूर, उदेगोलम, मास्की एवं गुर्जरा
(D) कंधार, बैराठ, येरागुडी एवं मास्की

37. निम्नलिखित में से कहाँ चन्द्रगुप्त सभा (चन्द्रगुप्त मौर्य की परिषद्) का उल्लेख है ?
(A) अर्थशास्त्र (B) मुद्रा राक्षस
(C) महाभाष्य (D) परिशिष्टपर्वन्

38. 'धम्म' शब्द से अशोक का निम्नलिखित में से क्या अभिप्राय था ?
(1) केवल अपने धर्म के प्रति दृढ़ भक्ति
(2) माता-पिता की सुश्रूषा

(3) जीवों के प्रति अहिंसा
(4) खर्च और बचत दोनों में मिताचार

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–

(A) केवल (1) (B) (1) एवं (3)
(C) (2), (3) एवं (4) (D) (1), (2), (3) एवं (4)

39. वह मौर्य राजा जो अमित्रघात नाम से भी जाना जाता था कौन था ?
(A) बिन्दुसार (B) दशरथ
(C) शालिशूक (D) बृहद्रथ

40. चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में सौराष्ट्र में सुदर्शन तड़ाग के निर्माण का श्रेय निम्नलिखित में से किसे है ?
(A) यवनराज तुसाष्प (B) पर्णदत्त
(C) पह्लव सुविशाख (D) वैश्य पुष्यगुप्त

41. अशोक ने कहाँ चोल, पाण्ड्य, केरलपुत्र और सत्यपुत्रों का अपनी पड़ोसी शक्तियों के रूप में उल्लेख किया है ?
(A) शिलालेख II (B) शिलालेख XIII
(C) स्तम्भ लेख VII (D) लघु शिलालेख

42. बिन्दुसार के शासनकाल में कहाँ पर विद्रोह हुआ था ?
(A) उज्जयिनी (B) पुष्कलावती
(C) तक्षशिला (D) राजगृह

43. किसके ग्रन्थ में चन्द्रगुप्त का विशिष्ट रूप से वर्णन हुआ है ?
(A) भास (B) विशाखादत्त
(C) अश्वघोष (D) भवभूति

44. मौर्यकाल में लक्षणाध्यक्ष कौन था ?
(A) पशुओं के लक्षणों का ज्ञान रखने वाला अधिकारी
(B) एक पेशेवर ज्योतिषी
(C) मार्ग के संकेतों का प्रभारी कर्मचारी
(D) टकसाल का प्रभारी कर्मचारी

45. "किसी को भी अपनी जाति से बाहर विवाह करने, एक व्यवसाय या व्यापार से दूसरे में परिवर्तन करने अथवा एक से अधिक कारोबार करने की अनुमति नहीं थी." यह टिप्पणी किसने की थी ?
(A) मेगस्थनीज (B) फाह्यान
(C) ह्वेनसांग (D) अलबेरूनी

46. स्तूप के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौनसा गलत है ?
(A) इसके ऊपर छत्र रहता था
(B) इसमें गर्भगृह होता था
(C) इसके साथ प्रदक्षिणा पथ रहता था
(D) इसके चारों ओर वेदिका रहती थी

47. मेगस्थनीज द्वारा डायोनिसस एवं हेरेक्लीज के रूप में वर्णित दो भारतीय देवताओं की क्रमशः पहचान किससे की गई है ?
(A) सूर्य एवं कार्त्तिकेय (B) शिव एवं कृष्ण
(C) इन्द्र एवं यम (D) अग्नि एवं वरुण

48. अशोक के अधिकांश लेख प्राकृत भाषा में हैं, क्योंकि यह–
(A) राज्य की भाषा थी
(B) अधिकांश लोगों द्वारा समझी जाती थी
(C) तथागत बुद्ध द्वारा प्रयोग में लाई गई थी
(D) उस समय की एकमात्र ज्ञात भाषा थी

49. निम्नलिखित में से कहाँ 'अशोक' का नाम मिलता है ?
(1) अशोक का निट्टूर अभिलेख
(2) समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख
(3) रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
(4) खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–

(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2) एवं (4) (D) (3) एवं (4)

50. अशोक के अभिलेखों में निम्नलिखित में से किस बात का ज्ञान नहीं होता ?
(A) उसने उच्च सरकारी पदों पर बौद्ध धर्म के अनुयायियों को नियुक्त किया
(B) उसने भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों को चेतावनी दी कि बौद्ध धर्म में संघभेद करने पर उन्हें दण्डित किया जाएगा
(C) उसने स्पष्ट रूप में बुद्ध, धर्म एवं संघ में आस्था व्यक्त की
(D) उसने पावन बौद्ध स्थानों की तीर्थयात्रा की

51. अशोक के अभिलेख किन लिपियों में लिखे मिलते हैं ?
(A) खरोष्ठी एवं ब्राह्मी
(B) खरोष्ठी, ब्राह्मी एवं ग्रीक
(C) खरोष्ठी, ब्राह्मी एवं अरेमिक
(D) खरोष्ठी, ब्राह्मी, ग्रीक एवं अरेमिक

52. मेगस्थनीज कहता है–"भारत में दास प्रथा नहीं थी." यह उक्ति इसलिए कही गई होगी, क्योंकि–
(A) भारत में दास प्रथा का अभाव था
(B) भारत में दास प्रथा उस पराकाष्ठा पर नहीं थी जैसा कि उसने ग्रीस में देखा था
(C) वह केवल राजा और संभ्रान्त लोगों के साथ राजधानी में घूमता था
(D) यह उसने जनश्रुति के आधार पर लिखा था

53. मौर्य साम्राज्य में पाटलिपुत्र के नगर शासन प्रबन्ध को जानने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत था—
(A) इण्डिका
(B) मुद्राराक्षस
(C) अशोक के अभिलेख
(D) अर्थशास्त्र

54. निम्नांकित में से मौर्यों का क्षत्रिय रूप में उल्लेख है—
(A) मुद्राराक्षस (B) ग्रीक लेखक
(C) अर्थशास्त्र (D) दिव्यावदान

55. "अन्य राष्ट्रों में लड़ाइयों में भूमि को नष्ट करने का चलन है, भारतीयों में भूमि जोतने वाले पड़ोस में लड़ाई चलते रहने के वावजूद कैसे भी संकट के भाव से उद्विग्न नहीं होते और उत्पीड़ित नहीं होते." यह वक्तव्य है ?
(A) ह्वेनसांग (B) हेरियोडोट्स
(C) मेगस्थनीज (D) फाह्यान

56. प्राचीन भारत के निम्नांकित शासकों में से कौन जैन धर्म के संरक्षक थे ?
(1) श्रेणिक बिम्बसार (2) चन्द्रगुप्त मौर्य
(3) खारवेल
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (1) एवं (2)
(C) (2) एवं (3) (D) (1) एवं (3)

57. निम्नलिखित में से कौनसे मौर्यकाल की भौतिक संस्कृति के आधार थे ?
(1) लोहे के अत्यधिक प्रयोग
(2) आहत सिक्कों का बाहुल्य
(3) उत्तरी काले पॉलिश वाले मृदभांडों की प्रचुरता
(4) पकी हुई ईंटों का प्रयोग
(5) वलय कूपों का प्रयोग
नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—
(A) (1), (2), (3) और (5)
(B) (1), (3) और (4)
(C) (2), (4) और (5)
(D) (1), (2), (3), (4) और (5)

58. निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है ?
(A) चौदह प्रमुख शिलालेख—धम्म के विभिन्न सिद्धान्त
(B) सात स्तम्भ शिलालेख—शिलालेखों के परिशिष्ट
(C) भावरू अभिलेख—अशोक का नवीन प्रशासन
(D) बारबर गुफा अभिलेख—अशोक की सहिष्णुता

59. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) रुद्रमल मन्दिर	1. खजुराहो
(b) कंदराम महादेव मन्दिर	2. भुवनेश्वर
(c) उदयेश्वर मन्दिर	3. कांचीपुरम
(d) लिंगराज मन्दिर	4. सिद्धपुर
	5. उदयपुर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	1	4	2
(B)	4	5	3	1
(C)	4	1	5	2
(D)	3	4	5	2

60. निम्नलिखित में से किसने पाटलिपुत्र के खोए हुए वैभव और गौरव का वर्णन किया है ?
(A) कॉसमास (B) फाह्यान
(C) ह्वेनसांग (D) मेगस्थनीज

61. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) कौटिल्य	1. गृहस्थ को दास से विवाद नहीं करना चाहिए.
(b) मनु	
(c) याज्ञवल्क्य	2. दास पन्द्रह प्रकार के होते हैं.
(d) नारद	3. कोई आर्य दास नहीं हो सकता
	4. किसी को उसकी सहमति के विना दास नहीं बनाया जा सकता.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	3	4	2
(B)	1	3	2	1
(C)	3	1	4	2
(D)	3	1	2	4

62. निम्नलिखित में से कौनसा भागवत धर्म का सबसे पहला ज्ञात यूनानी अनुगामी था ?
(A) डेमेट्रियस
(B) एन्टिअलकिडस
(C) हेलियोडोरस
(D) मिनेण्डर

63. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (गुप्तचरों के प्रकार)	सूची-II (उनके कार्य की प्रकृति)
(a) गूढ़पुरुषाः	1. गणिकाएं
(b) संस्थाः	2. भ्रमणशील गुप्तचर
(c) संचराः	3. गुप्त दूत
(d) रूपाजीवाः	4. स्थिर गुप्तचर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	1	2

64. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (प्रदेशों के नाम)	सूची-II (उनकी राजधानी)
(a) उत्तरापथ	1. तोसलि
(b) अवन्तिपथ	2. पाटलिपुत्र
(c) प्रासी	3. तक्षशिला
(d) कलिंग	4. उज्जयिनी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	2	1
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	1	2

65. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (अपने समकालिकों को उपहार देने वाले राजा)	सूची-II (उपहार)
(a) सैंडरोकोटस	1. मुद्रांकित चाँदी के 80 टैलेन्ट
(b) सेल्यूकस	2. एरियाना का एक बड़ा भाग
(c) आम्भि	3. मीठी मदिरा और सुखाये गये अंजीर
(d) एन्टिओकस (प्रथम सोटर)	4. 500 हाथी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	1	3
(B)	2	4	3	1
(C)	4	2	1	3
(D)	4	2	3	1

66. मौर्यकाल में प्रचलित विनिमय माध्यम था—
(A) कपद्दक पुराण (B) चूर्णि
(C) पण (D) दिनार

67. निम्नलिखित का सही कालानुक्रम क्या है ?
(1) टॉलेमी का भूगोल
(2) टेसिअस का भारत का वृत्तान्त
(3) कॉस्मास इन्डिकोप्लुस्टस का ईसाई स्थलाकृति विवरण
(4) प्लिनी का प्राकृतिक इतिहास
नीचे दिये गये कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए—
(A) (4), (2), (3) तथा (1)
(B) (2), (4), (1) तथा (3)
(C) (2), (4), (3) तथा (1)
(D) (4), (2), (1) तथा (3)

68. अपने वृत्तान्त में फाह्यान उल्लेख नहीं करता है–
(A) मध्य देश में शान्ति और व्यवस्था का
(B) दण्ड-न्याय की कठोरता का
(C) चाण्डालों का समाज-बहिष्कृत के रूप में
(D) आम लोगों में निरामिषता का

69. निम्नलिखित शासकों में से कौनसे एक ने उच्चाधिकारियों को भरण-पोषण के लिए भूमि अनुदान किया ?
(A) बिम्बिसार (B) चन्द्रगुप्त मौर्य
(C) अशोक (D) हर्षवर्धन

70. निम्नलिखित शासकों पर विचार कीजिए–
1. बिम्बिसार 2. चन्द्रगुप्त मौर्य
3. अशोक 4. रुद्रदामन
इनमें से कौन-कौनसे सुदर्शन झील से सम्बद्ध है ?
(A) 1 और 3 (B) 2 और 4
(C) 1, 2, 3 एवं 4 (D) 2, 3 एवं 4

71. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—

सूची-I	सूची-II
(a) सांची स्तूप	1. कनिष्क
(b) पुरुषपुर का पैगोडा	2. खारवेल
(c) हाथीगुम्फा अभिलेख	3. अशोक

(d) शिनकोट अभिलेख 4. मिनेण्डर
5. एंटिआल्किडस

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	3	1	2	4
(C)	4	1	5	2
(D)	5	3	2	4

72. निम्नलिखित कथनों में से कौनसा एक मेगस्थनीज की इण्डिका में नहीं मिलता ?
(A) "भारत में फल और अन्न का उत्पादन वर्ष में दो बार होता है."
(B) "भारतवासी अन्य लोगों पर आक्रमण नहीं करते न ही अन्य लोग भारतीयों पर आक्रमण करते हैं."
(C) "भारत में जनजातियों की संख्या 118 है."
(D) सोना खोदने वाली चींटियों की त्वचा चीते की त्वचा जैसी होती है.

73. वेदिका से घिरा वृक्ष प्रतीक मिलता है–
(A) हड़प्पा संस्कृति की मुद्राओं पर
(B) बौद्ध केन्द्रों से प्राप्त मृद्भाण्डों पर
(C) मौर्यकालीन आहत सिक्कों पर
(D) गुप्तवंश के ताम्र पत्रों पर

74. निम्नलिखित लिपियों पर विचार कीजिए–
1. ब्राह्मी 2. खरोष्ठि
3. ग्रीक 4. अरमी (अरेमिक)
अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त लिपियाँ हैं–
(A) 3 एवं 4 (B) 1 एवं 2
(C) 1, 2 एवं 3 (D) 1, 2, 3 एवं 4

75. वह मौर्यशासक जिसने यूनान से अपनी राजसभा के लिए एक दार्शनिक की माँग की–
(A) चन्द्रगुप्त (B) बिन्दुसार
(C) अशोक (D) कुणाल

76. निम्नलिखित में से कौनसा एक मूर्ति-शिल्प मौर्यकाल का नहीं है ?
(A) सारनाथ सिंह शीर्ष
(B) धौलि हस्ति
(C) मथुरा से प्राप्त खड़ी बुद्ध मूर्ति
(D) रामपुरवा वृषभ

77. यूनानी और अरमी (आरामाइक) भाषा में खुदा अशोक का एक द्विभाषी (Bilingual) उत्कीर्ण लेख मिलता है–
(A) मनसेरा में (B) पुष्कलवती में
(C) शाहबाजगढ़ी में (D) कन्धार में

78. सुदामा गुफा समर्पित (Dedicated) थी–
(A) जैन साधुओं को (B) बौद्ध भिक्षुओं को
(C) आजीवक संतों को (D) पाशुपत संतों को

79. निम्नलिखित में से कौनसे स्थल की पहचान, मौर्यों के एक प्रशासनिक केन्द्र स्थल से की जा सकती है?
(A) ब्रह्मगिरि (B) जौगादा (जोगड़)
(C) मास्की (D) उज्जैन

80. **कथन (A) :** चन्द्रगुप्त ने यूनानी क्षत्रपों (Greek Satraps) के विरुद्ध विद्रोह भड़काया.
कारण (R) : चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर का खेमा (Camp) देखा था.

81. सूची-I (पुरावशेष) को सूची-II (स्थान) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (पुरावशेष)	**सूची-II (स्थान)**
(a) प्रस्तर हाथी	1. साँची
(b) चतुष्पक्षीय सिंह	2. सारनाथ
(c) शुंग-कण्व नक्काशी	3. धौली
(d) भव्य प्रवेश द्वार	4. भरहुत

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	1	4
(B)	3	2	4	1
(C)	2	3	4	1
(D)	2	3	1	4

82. गद्यांश "जहाँ यवन राजा जिसका नाम अम्तियोग है, शासन करता है और अम्तियोग के राज्य के परे चार राजाओं, तूलमाया, औतेकिन, मक तथा अलिक्यशूदाल, का क्षेत्र है......" लिया गया है–
(A) अशोक के अभिलेख से
(B) दीर्घनिकाय से
(C) नियार्कस से (मेगस्थनीज द्वारा वर्णित प्राचीन भारत)
(D) स्टेबो के भूगोल से

83. अशोक के निम्नलिखित में से किस शिलालेख में एक ग्राम के भू-राजस्व में रियायत का उल्लेख है ?
(A) लुम्बिनी का स्तम्भ अभिलेख
(B) सारनाथ का स्तम्भ अभिलेख
(C) गिरनार का शिलालेख
(D) साँची का स्तम्भ अभिलेख

84. निम्नलिखित मौर्य शासकों पर विचार कीजिए–
1. अशोक 2. दशरथ
3. वृहद्रथ 4. कुणाल

इनमें से किसकी उपाधि देवानामपिय थी?

(A) केवल 1 की (B) 1 और 2 की

(C) 1, 2 और 3 की (D) 1, 2, 3 और 4 की

85. **कथन (A)** : मौर्यकालीन राजाओं ने धार्मिक आधारों पर गाँवों का दान नहीं किया.

कारण (R) : भूमि दान के विरुद्ध कृषकों ने विद्रोह किया.

86. मोक्ष के लिए मठवासीय रूप में जीवनयापन आवश्यक है–

(A) अशोक के धम्म के अनुसार

(B) जैन मतानुसार

(C) भगवद्गीतानुसार

(D) कठोपनिषद् के अनुसार

87. कौटिल्य अर्थशास्त्र को ज्ञान की ऐसी शाखा के रूप में परिभाषित करता है, जो शिक्षा देती है कि किस प्रकार–

(A) एक राज्य को प्राप्त (अथवा उसका निर्माण) करना चाहिए तथा सहेजना चाहिए

(B) योजनाबद्ध रूप से राजस्व, जिसमें भू-राजस्व सम्मिलित है, संग्रह करना चाहिए

(C) धन अर्जित करना चाहिए तथा अर्जन की विधि सीखनी चाहिए

(D) एक अर्थपूर्ण जीवन जीने की कला सीखनी चाहिए

88. निम्नलिखित को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए–

1. रुद्रदामन का जूनागढ़ शिला अभिलेख
2. शक सम्वत् का प्रारम्भ
3. तख्त-ए-बाही अभिलेख
4. विक्रम सम्वत् का प्रारम्भ

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए–

कूट :

(A) 1, 2, 3, 4 (B) 2, 3, 4, 1

(C) 3, 2, 1, 4 (D) 4, 3, 2, 1

निर्देश–आगामी प्रश्नों में दो वक्तव्य हैं, एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है. इन दोनों वक्तव्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कर इन प्रश्नांशों के उत्तर नीचे दिए हुए कूट की सहायता से चुनिए–

कूट :

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है

(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.

(C) A सही है, परन्तु R गलत है.

(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

89. **कथन (A)** : अशोक के अभिलेख उसके साम्राज्य में हर ओर अवस्थित पाए गए हैं, परन्तु इस सम्राट् का कोई भी अभिलेख देश के उत्तर-पूर्वी भाग में नहीं मिला है.

कारण (R) : ऐसा इसलिए है, क्योंकि देश का यह भाग उसके साम्राज्य का अंग नहीं था.

90. **कथन (A)** : अपने धम्म निर्देशों को आम जनता तक प्रचारित करने की इच्छा से अशोक ने साम्राज्य के उत्तर-पश्चिमी भाग में पाए जाने वाली राजाज्ञाओं में प्राकृत के साथ-साथ यवन तथा अरमाई का भी उपयोग किया.

कारण (R) : यवन तथा अरमाई भाषी लोग उत्तर-पश्चिम की आबादी का एक भाग थे.

उत्तरमाला

1. (D)	2. (A)	3. (C)	4. (D)	5. (C)
6. (C)	7. (D)	8. (D)	9. (B)	10. (D)
11. (A)	12. (A)	13. (A)	14. (C)	15. (D)
16. (A)	17. (C)	18. (B)	19. (B)	20. (B)
21. (C)	22. (C)	23. (A)	24. (D)	25. (B)
26. (B)	27. (B)	28. (C)	29. (D)	30. (B)
31. (B)	32. (B)	33. (C)	34. (C)	35. (A)
36. (A)	37. (A)	38. (C)	39. (A)	40. (D)
41. (A)	42. (C)	43. (B)	44. (D)	45. (A)
46. (B)	47. (B)	48. (B)	49. (B)	50. (A)
51. (D)	52. (B)	53. (A)	54. (D)	55. (C)
56. (A)	57. (D)	58. (C)	59. (C)	60. (C)
61. (C)	62. (C)	63. (C)	64. (B)	65. (C)
66. (C)	67. (B)	68. (B)	69. (D)	70. (D)
71. (B)	72. (C)	73. (C)	74. (D)	75. (B)
76. (C)	77. (D)	78. (C)	79. (D)	80. (B)
81. (B)	82. (A)	83. (A)	84. (B)	85. (C)
86. (B)	87. (D)	88. (D)	89. (A)	90. (A)

संकेत

3. सेंगुत्तुवन का काल दूसरी सदी ई. के अन्तिम चरण में था, जबकि श्री सातकर्णी का काल ई. पू. प्रथम सदी था.

8

मौर्योत्तर भारत : 200 ई.पू.-300 ई. तक समाज, जातियों का विकास, सातवाहनों का काल एवं प्रायद्वीप में राज्य निर्माण, भारत-यूनानी (इण्डो-ग्रीक) शक, पार्थियन, कुषाण, कनिष्क

(Post Mauryan India : Society between 200 B.C. -300 A.D., Evolution of Castes, The Satavahanas & Their State Formation in Peninsula, Indo-Greeks, Sakas, Parthians, Kushan, Kanishka)

मौर्यवंश के पतन हो जाने के बाद भारत में राजनीतिक एकता का ह्रास हो गया. एक विशाल साम्राज्य अनेक खण्डों में विभक्त हो गया. उत्तरी भाग पर विदेशी आक्रमणकारियों एवं दक्षिण भाग पर स्थानीय शासकों ने इस शिथिलतम व्यवस्था का लाभ उठाया. मौर्य साम्राज्य का विनाश पुष्यमित्र ने[1] 187 ई. पू. में अन्तिम शासक सम्राट् वृहद्रथ को मार कर किया.

तत्कालीन ऐतिहासिक स्रोत

(अ) साहित्यिक स्रोत

(1) **पतञ्जलि का महाभाष्य**–इसके अनुसार तत्कालीन भारत में यूनानियों ने अवध के 'साकेत' में एवं चित्तौड़ के माध्यमिका नगरी पर आक्रमण किया था. जिन्हें पुष्यमित्र ने पराजित कर दिया था.

महाभाष्य के अनुसार पुष्यमित्र के अश्वमेध के आचार्य स्वयं पतञ्जलि ही थे, जिन्होंने उस यज्ञ को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया था.

(2) **गार्गी संहिता**–इस साहित्यिक स्रोत के युग पुराण खण्ड के अनुसार जिस समय पुष्यमित्र मौर्य नरेश वृहद्रथ का सेनापति था, उस समय दुष्ट पराक्रमी यवनों ने पांचाल, मथुरा और साकेत पर विजय प्राप्त कर ली थी.

(3) **कालिदास का मालविकाग्निमित्रम्**–कालिदास द्वारा लिखित इस नाटक में कालिदास ने दूसरे यूनानी आक्रमण को चित्रित किया है. यह द्वितीय यूनानी युद्ध राजस्थान की कालीसिन्धु नदी के तट पर हुआ था. इसमें पुष्यमित्र का पोता वसुमित्र भाग ले रहा था. जिसने इस युद्ध में यूनानियों को पराजित किया था. इसका यूनानी आक्रमणकारी शासक 'डिमेट्रियस' था. अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ने के कारण यह युद्ध हुआ था. वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार इस दौरान यूनानी आक्रमणकारी मिनेन्द्र (मिनेण्डर) था. राधाकुमुद मुखर्जी, सुधाकर चट्टोपाध्याय, दिनेश चन्द्र सरकार एवं डॉ. के. के. शर्मा ने इसे 'डिमेट्रियस' ही माना है.

मालविकाग्निमित्रम् में वर्णित सिन्धु नदी की पहचान निश्चित नहीं हो पाई है. इसे काली सिन्धु, पंजाब की सिन्धु या दोआब की सिन्धु के रूप में अलग-अलग इतिहासकारों ने स्वीकार किया है, लेकिन मेरा दृष्टिकोण है कि यह पंजाब की सिन्धु नदी ही थी, इसकी विदिशा से पर्याप्त दूरी भी इसे सिद्ध करती है.

(4) **पुराण**–पुराणों में शुंगवंश के 10 राजाओं का उल्लेख मिलता है. पुष्यमित्र के अतिरिक्त अन्य नौ राजाओं ने शुंगवंश की उत्तराधिकारिता का निर्वहन किया था. पुराणों के अनुसार शुंगवंश के शासकों का शासनकाल एवं शासनक्रम निम्नवत् है–

(1) पुष्यमित्र (36 या 60 वर्ष)
(2) अग्निमित्र (8 वर्ष)
(3) सुज्येष्ठ (7 वर्ष)
(4) वसुमित्र (10 वर्ष)
(5) ओद्रक या आन्ध्रक (2 या 7 वर्ष)
(6) पुलिन्दक (3 वर्ष)
(7) घोष (3 वर्ष)
(8) वज्रमित्र (9 या 7 वर्ष)

---

1 विभिन्न विद्वानों का मानना है कि पुष्यमित्र शुंग ने 180 ई. पू. वृहद्रथ को मार दिया था, लेकिन शुंग वंश का शासन 185 या 187 ई. पू. प्रारम्भ हुआ था.

(9) भागवत (32 वर्ष)

(10) देवभूति (10 वर्ष)

पुराणों में प्रदर्शित उपर्युक्त शासकों की शासनावधि लगभग 120 वर्ष मानी जाती है, लेकिन पुराणों में 112 वर्ष (187 ई. पू. से 75 ई. पू. तक) तक शुंगवंश के शासन का वर्णन मिलता है.

(5) **वाणभट्ट का हर्षचरितम्**–इस साहित्यिक स्रोत में मौर्य साम्राज्य के अन्तिम शासक वृहद्रथ की हत्या के सम्बन्ध में साक्ष्य मिलते हैं. इसके अनुसार पुष्यमित्र वृहद्रथ का सेनापति था जिसने एक सेना के प्रदर्शन का आयोजन किया था, जिसमें बृहद्रथ भी आमंत्रित था. अवसर पाकर पुष्यमित्र ने धोखे से वृहद्रथ का वध कर दिया था.

(6) **बौद्ध महायान ग्रन्थ–दिव्यावदान**–इस बौद्ध महायान ग्रन्थ में पुष्यमित्र के व्यक्तित्व का चित्रण मिलता है. इसके अनुसार पुष्यमित्र शुंग वैदिक या ब्राह्मण धर्म का संरक्षक तथा उद्धारक एवं बौद्ध धर्म का उत्पीड़क था. उसने अपने शासनकाल में अशोककालीन बौद्ध विहारों को नष्ट करवाया तथा कई भिक्षुओं को मौत की नींद सुलाया. पुष्यमित्र की प्रसिद्ध घोषणा थी कि "वह प्रत्येक बौद्ध भिक्षु के सिर के बदले 100 स्वर्ण मुद्राएँ देगा."

अन्य ऐतिहासिक स्रोत

उपर्युक्त स्रोतों के अतिरिक्त अन्य कई साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक स्रोत तत्कालीन भारत की स्थिति का वास्तविक स्वरूप में चित्रण करते हैं. प्रमुख अन्य स्रोत निम्नलिखित हैं–

(अ) साहित्यिक स्रोत

(1) मेरूतुंग की 'थेरावली' (प्रसिद्ध जैन धर्मग्रन्थ)

(2) तिब्वतीय बौद्ध भिक्षु लामा तारानाथ का 'बौद्ध धर्म का इतिहास'

(3) विशाखादत्त का मुद्राराक्षस

(4) दण्डिन का मृच्छकटिकम्

(5) भारवि का किरातार्जुनीयम

(6) आर्यभट्ट का आर्यभट्टीय

(ब) पुरातात्त्विक स्रोत

(1) खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख

(2) धनदेव का अयोध्या अभिलेख

(3) भरहुत के सांची स्तूप

उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश

शुंग वंश

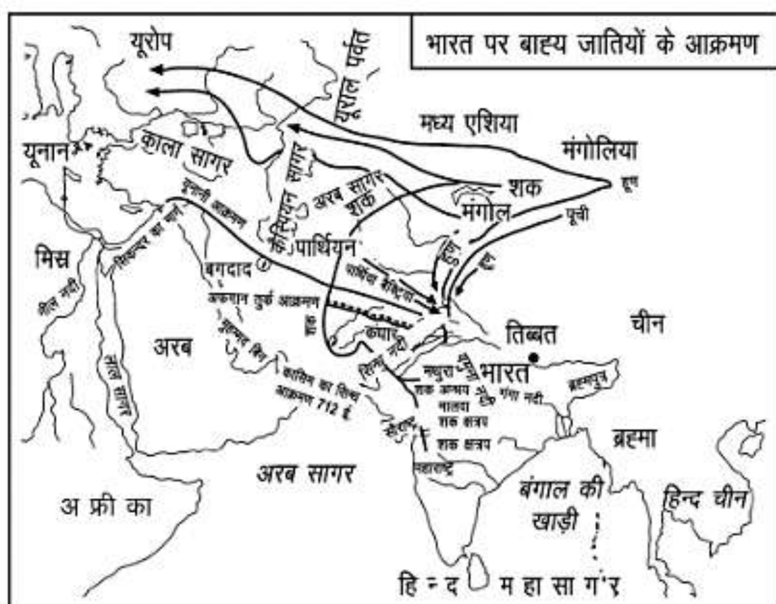
मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् मगध की सत्ता शुंगवंश के हाथों में आ गई. मौर्य साम्राज्य का अन्तिम शासक वृहद्रथ था, जिसका सेनापति पुष्यमित्र शुंग था, जिसने वृहद्रथ को मारकर 187 ई. पू. में मगध की सत्ता पर अधिकार कर लिया. मौर्य साम्राज्य का विनाशक एवं शुंगवंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था.

शुंगों की उत्पत्ति (The Origin of sungas)

शुंगों के किसी निश्चित वंश से सम्बद्ध होने के साक्ष्य नहीं मिलते. विभिन्न इतिहासकारों के अनुसार मत भिन्न-भिन्न हैं. प्रमुख मत निम्नलिखित हैं–

- 'दिव्यावदान' नामक बौद्ध ग्रन्थ के अनुसार पुष्यमित्र भले ही मौर्य साम्राज्य का विनाशकर्त्ता रहा हो, लेकिन वह स्वयं मौर्यवंशीय था.
- शुंगवंश के शासकों के पीछे 'मित्र' शब्द और ईरान में पूजा जाने वाला मित्र (सूर्य) में साम्यता होने के कारण शुंगों को ईरानी भी माना जाता है.
- इतिहासकार काशीप्रसाद जायसवाल के अनुसार पुष्यमित्र मौर्य वंश के राजपुरोहित का पुत्र था. अशोक की धार्मिक नीति से अप्रसन्न होकर राजपुरोहित एवं उनके वंशजों ने अशोक से अलग होकर सेना में नौकरी कर ली और इसी क्रम में आगे चलकर पुष्यमित्र वृहद्रथ का सेनापति बना.
- प्रसिद्ध व्याकरणकार एवं अष्टाध्यायी के रचनाकार पाणिनी के अनुसार शुंग भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण थे.
- महाकवि कालिदास ने अपनी नाट्य रचना 'मालविकाग्निमित्रम्' में पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र को बैविकवंशीय एवं काश्यप गौत्र से सम्बन्धित बताया है.
- तिब्वती बौद्ध यात्री, प्रसिद्ध इतिहासकार 'लामा तारानाथ' के अनुसार शुंग ब्राह्मण वंश से सम्बन्धित थे. पुष्यमित्र को वह ब्राह्मण राजा कहता था.
- शुंग निश्चित रूप से ब्राह्मण थे. बौद्ध विहारों को तोड़ने वाला या भिक्षुओं को मारने वाला पुष्यमित्र शुंग बौद्ध धर्म से जुड़ा हुआ होगा यह सोचना भी काल्पनिकता है. तत्कालीन समाज में किसी धर्म से सम्बन्धित होकर उसे नष्ट करना दुष्कर कृत्य था और पुष्यमित्र शुंग भी ऐसा नहीं करता. अब शुंग वंश को मौर्य वंश से जोड़ना और भी अधिक हास्यास्पद है. माना पुष्यमित्र शुंग मौर्य वंश का होता, तो वह कदापि उस वंश का विनाशक नहीं होता. वृहद्रथ को मारे बिना भी उसे आगे चलकर मौर्य साम्राज्य के किसी भी छोर के उत्तराधिकारी के रूप में सत्ता प्राप्त हो जाती. मात्र मित्र शब्द के आधार पर ईरानी कहना तर्कसंगत नहीं है. पुष्यमित्र शुंग ने एवं अन्य शुंगवंशीय राजाओं ने वैदिक धर्म या ब्राह्मण धर्म को प्रचारित-प्रसारित करने में महती भूमिका का निर्वहन किया. पुष्यमित्र शुंग द्वारा कराये गये अश्वमेध यज्ञ का वर्णन पतञ्जलि के महाभाष्य में प्राप्त होता है एवं अन्य साक्ष्यों के आधार पर भी उनके ब्राह्मण होने की परिकल्पना की पुष्टि हो जाती है.[1]

1. Ancient India : Dr. K. K. Sharma, page 205



पुष्यमित्र शुंग (Pushyamitra Sunga : 187-151 B.C.)

1. **वास्तविक नाम** — पुष्यमित्र शुंग
2. **सम्बन्धित वंश** — शुंग
3. **शासक** — शुंगवंश का संस्थापक
4. **पूर्व स्थिति**
   - (अ) मौर्य शासक बृहद्रथ का सेनापति था.
   - (ब) सेनापति के रूप में यवनों से संघर्ष किया (प्रो. वी. पी. सिन्हा के अनुसार)
5. **उल्लेखनीय तथ्य**
   - (1) शुंगवंश की स्थापना.
   - (2) विदर्भ के साथ संघर्ष एवं माधवसेन और यज्ञसेन के राज्यों पर अधिकार.
   - (3) यवनों के साथ पुष्यमित्र शुंग का युद्ध एवं विजय प्राप्ति.
   - (4) पंजाब में स्यालकोट एवं जालन्धर पर विजय प्राप्त की.
   - (5) अवन्ति (उज्जयिनी) पर अधिकार किया (मेरुतुंग के विवरण के अनुसार)
6. **अन्य सम्बन्धित विशिष्ट तथ्य**
   - (1) 36 वर्षों के शासन की अवधि में पुष्यमित्र ने मौर्य साम्राज्य को संगठित कर शुंग साम्राज्य बना दिया.
   - (2) विदेशी आततायियों पर अंकुश लगाया.
   - (3) अपने साम्राज्य की सीमा दक्षिण में नर्मदा नदी तक स्थापित की.
   - (4) बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, मगध, कौशल, शाकल, पंजाब के कुछ भाग मालवा एवं बरार पुष्यमित्र के साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे.
   - (5) शुंग वंश की पहली राजधानी पाटलिपुत्र थी एवं दूसरी राजधानी 'विदिशा' बनाई गई.
   - (6) कुछ विद्वानों के मतानुसार 'विदिशा' एक नगरी थी जिसका प्रान्तीय गवर्नर अग्निमित्र था.
7. **प्रशासनिक व्यवस्था**
   - (1) वायुपुराण के अनुसार पुष्यमित्र ने अपना साम्राज्य आठ पुत्रों में विभक्त कर दिया था, जो विभिन्न भागों पर सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे.
   - (2) पुष्यमित्र शुंग पाटलिपुत्र से ही समस्त साम्राज्य का नियन्त्रण रखता था.
   - (3) एक युवराज की परिषद् होती थी, जो आवश्यक विषयों पर सलाह देती थी.
   - (4) (i) कालिदास के अनुसार विदिशा में एक युवराज परिषद् विद्यमान थी.

(ii) पतञ्जलि के अनुसार विदिशा में पुष्यमित्र की राजपरिषद् विद्यमान थी.
(5) राजकुल के सदस्यों को प्रान्तीय प्रशासक के पद प्रदान किये गये थे.
(6) विदिशा में अग्निमित्र को गवर्नर का प्रभार दिया गया था.
(7) के. पी. जायसवाल के अनुसार शुंग वंशीय राज्य संघ राज्य नहीं था.

8. **धार्मिक व्यवस्था**
(1) ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान इसी काल में हुआ था.
(2) पुष्यमित्र के काल में बौद्ध धर्म की अपेक्षा वैदिक धर्म का अधिक प्रभुत्व स्थापित हो चुका था.
(3) पूजा, यज्ञ, वलि की प्रथा इस काल में पुनः अस्तित्व में आ गई थी.
(4) पुष्यमित्र ने विदर्भ युद्ध एवं यवनों पर विजय प्राप्त करने के अवसर पर अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था.
(5) धनदेव के अयोध्या अभिलेख से पुष्यमित्र द्वारा अश्वमेध यज्ञ किये जाने का उल्लेख मिलता है.
(6) पहला अश्वमेध यज्ञ मगध पर शासन का आरम्भ करने के काल में तथा दूसरा अश्वमेध यज्ञ यवनों पर विजय प्राप्त करने के दौरान किया गया.
(7) माना जाता है कि पुष्यमित्र शुंग के किसी एक यज्ञ में पुरोहित का कार्य पतञ्जलि ने किया था.
(8) बौद्ध धर्म के प्रति विरक्ति एवं ब्राह्मण धर्म के प्रति अनुरक्ति के कारण पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण धर्म का उद्धारक एवं बौद्ध धर्म के उत्पीड़क के रूप में जाना जाता था.

पुष्यमित्र शुंग के उत्तराधिकारी (The Successors of Pushyamitra Sunga)

- 151 ई. पू. में पुष्यमित्र शुंग की मृत्यु के पश्चात् शुंगों का संगठित शासन क्षीणतम हो गया था.
- विभिन्न पुरातात्त्विक एवं मुद्रा साक्ष्यों के आधार पर पुष्यमित्र की मृत्यु के वाद से ही शुंगों का राजनीतिक महत्त्व कमजोर हो गया था एवं उसकी मृत्यु के 100 वर्षों में ही सत्ता का अन्त हो गया.
- पुराणों के अनुसार शुंगवंश में 10 राजा हुए, जिन्होंने 112 से 120 वर्ष तक शासन किया. सर्वाधिक प्रतापी शासक पुष्यमित्र था, जिसने 36 वर्षों तक एवं उसके वाद नवाँ शुंग शासक भागवत ने 32 वर्षों तक शासन किया.
- मथुरा, पांचाल, अयोध्या एवं अन्य निकटवर्ती स्थानों पर मित्र एवं दत्त के नाम वाली मुद्राएँ एवं सिक्के अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं, जिन्हें कुछ विद्वान् शुंग वंश से सम्बन्धित मानते हैं एवं कुछ स्वतन्त्र राजाओं द्वारा प्रचलित सिक्कों के रूप में इन्हें स्वीकारते हैं.
- पुष्यमित्र शुंग की मृत्यु के पश्चात् पांचाल, अयोध्या, कौशाम्बी, मथुरा पर से शुंगों का राजनीतिक प्रभाव समाप्त हो चुका था. उस काल में यौधेय, अर्जुनायन औदुम्बरों एवं कुनिन्दों ने स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर ली थी.
- पुष्यमित्र शुंग की मृत्यु के पश्चात् मगध पर पांचालों ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था तथा शुंगों की सत्ता विदिशा के समीपवर्ती क्षेत्रों तक ही सीमित रह गई थी. इस काल तक पाटलिपुत्र भी अपना राजनीतिक महत्त्व खो चुका था.
- पुष्यमित्र के उत्तराधिकारी के रूप में शुंग देश के शासन को अग्निमित्र ने सँभाला था. पूर्व में विदिशा में उपराजा के रूप में अग्निमित्र को शासन का प्रभार सौंपा हुआ था.
- कालिदास द्वारा रचित नाट्यरचना मालविकाग्निमित्रम् में अग्निमित्र का उल्लेख मिलता है. अग्निमित्र इस नाट्य-रचना का नायक था.
- अग्निमित्र भोग विलास में लिप्त रहने वाला शासक था, जो अधिकांश सुरा-सुन्दरियों में व्यस्त रहता था. पंजाव के यूनानी शासकों से उसके मित्रतापूर्ण सम्बन्ध थे. अग्निमित्र ने आठ वर्षों तक शासन सँभाला. 143 ई. पू. में उसकी मृत्यु हो गई.
- अग्निमित्र के बाद शुंग वंश का शासन सुज्येष्ठ या ज्येष्ठमित्र ने सँभाला था, इसे अग्निमित्र के छोटे भाई के रूप में स्वीकारा गया है. साहित्यिक स्रोतों के अनुसार ज्येष्ठमित्र ने 7 वर्षों तक शुंग वंश के शासक के रूप में शासन किया था. राजनीतिक दृष्टि से अग्निमित्र का शासन महत्त्वहीन था. ज्येष्ठमित्र के सम्बन्ध में ऐतिहासिक स्रोतों में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं मिलती.
- ज्येष्ठमित्र के उत्तराधिकारी एवं चौथे शुंगवंशीय शासक के रूप में वसुमित्र ने शासन सँभाला था. वसुमित्र ने 136-126 ई. पू. के मध्य शासन किया था. वसुमित्र

प्रतापी एवं शक्तिशाली शासक था, जिसने राज्यभार स्वीकार करने से पूर्व ही यूनानियों को परास्त कर दिया था.

- वाणभट्ट के हर्षचरित के अनुसार मृतदेव या मूलदेव ने एक नाटक के प्रदर्शन के दौरान वसुमित्र की हत्या कर दी थी. मृतदेव या मूलदेव ने अयोध्या में स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की थी. इस आशय के साक्ष्य के रूप में अयोध्या में मूलदेव (मृतदेव) के सिक्के प्राप्त हुए हैं.
- भागवत पुराण के अनुसार वसुमित्र का उत्तराधिकारी शासक भद्रक था, जिसे ओद्रोक, आन्द्रक, अन्तक के रूप में भी पहचाना गया था. कुछ विद्वानों ने इसे पभोसा अभिलेख के शासक उदाक तथा बेसनगर के गरूड़ स्तम्भ में वर्णित काशीपुत्र भागभद्र के रूप में स्वीकारा है.
- पुराणों के अनुसार ओद्रक या भद्रक के बाद क्रमशः तीन शासक पुलिन्दक, घोष, वज्रमित्र ने शुंग शासन की उत्तराधिकारिता को ग्रहण किया था. पुलिन्दक ने 3 वर्ष, घोष ने 3 वर्ष एवं वज्रमित्र ने 7 वर्षों तक शुंगवंशीय शासन का कार्य भार सँभाला था. इन तीनों के विषय में इससे अधिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं मिलते.
- वज्रमित्र के बाद शुंगवंश का शासन भागवत ने सँभाला था. भागवत शुंगवंश का नवाँ शासक था. सम्भवतः साक्ष्यों के आधार पर पुष्यमित्र के पश्चात् शुंगवंश का सबसे श्रेष्ठ, प्रतापी एवं शक्तिशाली राजा भागवत था, जिसने लगभग 32 वर्षों तक शासन किया था.
- तक्षशिला के यूनानी शासक एण्टियलकिड्स का राजदूत हेलियोडोरस शुंगवंशीय शासक भागवत के काल में ही शुंग दरबार में आया था. यह भागवत के काल की एवं शुंग वंश के इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी.
- हेलियोडोरस ने वेसनगर (विदिशा) में भागवत के शासकाल में यूनानी होने के बावजूद भी गरुड़ध्वज को स्थापित किया था. इस पर खुदे अभिलेख में काशीपुत्र एवं भागभद्र का उल्लेख किया गया है.
- विदिशा के गरुड़ध्वज पर स्थापित अभिलेख में वर्णित शुंग शासक काशीपुत्र भागभद्र को प्रो. भण्डारकार एवं डॉ. के. के. शर्मा ने शुंग शासक भागवत के रूप में स्वीकार किया है.
- शुंग वंश का सबसे अन्तिम प्रतापी एवं शक्तिशाली शासक भागवत था, जिसका शासनकाल सभी अर्थों में महत्त्वपूर्ण रहा था
- शुंग वंश का अन्तिम शासक तरुण एवं अत्याचारी शासक देवभूति या देवभूमि था, जिसने लगभग 10 वर्षों तक शासन किया था. देवभूति या देवभूमि उसके स्वयं के अमात्य द्वारा 75 ई. पू. में मार दिया गया था. इस तरह शुंग शासन का अन्त हो गया था.
- शुंग वंश से मगध कण्वों के हाथों में चला गया, लेकिन आन्ध्रसातवाहनों के उदय होने तक मध्य भारत में शुंगों का ही न्यूनाधिक आधिपत्य रहा.

शुंग राज्य की महत्ता

मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् राजनीतिक एकीकरण एवं स्थायित्व को पुनर्स्थापित करने का श्रेय निश्चित रूप से शुंगवंशीय शासकों को देना ही श्रेयस्कर है. धर्म, कला की दृष्टि से भी शुंग शासनकाल महत्त्वपूर्ण रहा. शुंग शासन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन शुंग शासक पुष्यमित्र शुंग ने किया. मौर्य साम्राज्य के साक्ष्यों को पुनर्जीवित कर राज्य की स्थापना से भारतीय इतिहास को पुनर्जीवित करने का उल्लेखनीय कार्य शुंग शासक पुष्यमित्र का ही था. विदेशी आक्रान्ताओं से मध्यभारत की रक्षा, यूनानियों से मैत्री के फलस्वरूप साहित्य कला और धर्म के क्षेत्र में भारत को समृद्धता का सिंहासन प्राप्त हुआ था. वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने की उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन भी शुंगों ने किया था, जिससे साहित्यिक क्षेत्र में अद्वितीय प्रगति हुई. शुंग काल में ही श्रेष्ठतम स्मृति मनुस्मृति की रचना प्रारम्भ हुई, जो ब्राह्मणत्व को उभारने में सक्षम रही. विदिशा और उज्जैन के मध्य गोनर्द नामक स्थल पर पले बढ़े पतञ्जलि नामक प्रसिद्ध व्याकरणकार ने भी पाणिनी की अष्टाध्यायी पर महाभाष्य की रचना इसी काल में की थी, जो व्याकरण के साथ-साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है. मौर्यकालीन राज्यकला से शुंगकालीन लोक कला, भरहुत एवं साँची बोधगया के स्तूपों की वेदिकाओं का निर्माण शुंगकालीन कला की विशिष्टता एवं श्रेष्ठ उपलब्धि का परिचायक है. वस्तुतः शुंगकालीन भारतीय इतिहास को कला संस्कृति का स्वर्णयुग कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा.

संक्षिप्त में राजनीतिक पहलुओं को दरकिनार कर यदि शुंगकालीन साहित्य, संस्कृति, कला, व्यापार, वाणिज्य की समीक्षा की जाए, तो निष्कर्ष रूप से अपेक्षाकृत बेहतर परिणामों का ही प्रस्फुटन होगा.

कण्व वंश (The Kanva Dynasty 75 B.C. to 30 B.C.)

शुंगों के बाद मगध की सत्ता पर अल्पावधि के लिए कण्व वंश का आधिपत्य हो गया. अन्तिम शुंग शासक देवभूति या देवभूमि को उसके स्वयं अमात्य वासुदेव ने 75 ई. पू. हत्या कर शुंग वंश का अन्त कर कण्व वंश की स्थापना की. काण्वायन वंश इसी वंश का समानार्थक शब्द था. पुराणों के अनुसार कण्व वंश में चार राजाओं एवं उनके शासन काल का उल्लेख मिलता है.

पुराणों के अनुसार कण्ववंशी या कण्वायन ब्राह्मण थे. जिन्होंने 75 ई. पू. से 30 ई. पू. तक अर्थात् 45 वर्षों तक शासन किया.

पुराणों के अनुसार कण्ववंश के 45 वर्षों के शासनकाल में निम्नलिखित 4 शासक हुए, जिन्होंने नाममात्र के लिए शासन किया–

1. वसुदेव
2. भूमित्र या भूमिमित्र
3. नारायण
4. सुशर्मन

प्रसिद्ध इतिहासकार आर. पी. चन्दा के अनुसार अन्तिम शुंग शासक देवभूति या देवभूमि शुंग राज्यों के संघ का प्रधान था. जिसकी दासी की सहायता से हत्या कर वसुदेव ने मगध राज्य पर शासन किया, लेकिन अन्य शुंग राज्यों को पूर्ववत् चलते रहने दिया.

प्रो. भण्डारकर के अनुसार शुंगों एवं कण्वों ने एक अल्प अन्तराल तक संयुक्त रूप से शासन किया.

कण्वों के पतन एवं कुषाणों द्वारा मगध-विजय के सम्बन्ध में ऐतिहासिक स्रोत अनुपलब्ध है, तथापि सूत्रों के अनुसार कण्वों का उन्मूलन मित्र शासकों ने किया. इस काल में ब्रह्ममित्र, इन्द्राग्निमित्र, वृहस्पतिमित्र एवं अन्य शासकों के नाम बोधगया के पट्टी अभिलेखों एवं सिक्कों में प्राप्त होते हैं. कलिंगराज खारवेल का मगध पर आक्रमण इसी काल में बृहस्पतिमित्र के शासनकाल में हुआ था.

पुराणों में कण्व वंश के सम्बन्ध में, उसके शासन एवं शासनावधि के सम्बन्ध में निम्नलिखित भविष्यवाणी वर्णित है–

"वह (वसुदेव) अर्थात् काण्वायन 9 वर्षों के लिए राजा होगा. उसका पुत्र भूमिमित्र 14 वर्षों तक शासन करेगा. उसका पुत्र नारायण 12 वर्षों तक राज्य करेगा. उसका पुत्र सुशर्मन 10 वर्षों तक सिंहासनरूढ़ रहेगा. ये सभी शुंगभृत्य काण्वायन राजा के रूप में प्रसिद्ध है. इनके बाद पृथ्वी का राज्य आन्ध्रवंश के हाथों चला जायेगा."

मध्य एशिया और भारत

विभिन्न राजनीतिक अव्यवस्थाओं के फलस्वरूप भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर विदेशी आततायियों का आक्रमण हुआ. भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर सबसे पहले ईरानियों ने आक्रमण किया. इसके बाद सीमावर्ती राजनीतिक दुर्वलता के कारण सिकन्दर ने इस हिस्से पर आक्रमण किया. शुंगों के पतन के पश्चात् विदेशी आक्रमणकारियों ने इस भूमि पर आधिपत्य कर लिया. उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर सबसे पहले इन्डोग्रीक या वैक्ट्रियन ग्रीकों एवं इसके बाद क्रमशः शकों, हिन्द पार्थियन या पल्लवों तथा सबसे अन्त में कुषाणों ने आक्रमण किया. यूनानी और पल्लवों को भारत में राजनीतिक स्थायित्व का कोई विशेष लाभ प्राप्त नहीं हुआ. सारे आक्रमणकारियों में शक और कुषाणों ने राजनीतिक स्थायित्व एवं एक साम्राज्य की स्थापना की. भारत के यूनानी आक्रमण से अवश्य दोनों देशों को सांस्कृतिक दृष्टि से लाभ हुआ. कला, संस्कृति के उत्कृष्टतम समन्वयात्मक दृष्टिकोण का परिलाभ भारत एवं यूनान को समान रूप से आक्रमण से प्राप्त हुआ.

इण्डो-ग्रीक या वैक्ट्रियन ग्रीक
[The Indo-Greeks (Bactrian Greeks)]

मौर्योत्तर काल में सबसे पहले भारत पर विदेशी आक्रमण करने वालों में यूनानी, यवन, इण्डो-ग्रीक, हिन्द यूनानी या वैक्ट्रियन ग्रीक थे. तत्कालीन मध्य-एशिया की राजनीतिक दुर्वलता के कारण सभी आक्रमणकारियों का रुझान भारत की तरफ हुआ और उन्होंने भारत विजय की योजना को मूर्तरूप प्रदान किया. सिकन्दर की भारत विजय के पश्चात् उसकी मृत्यु हो जाने के वाद उसके सेनापति सेल्युकस ने मध्य एशिया के एक बड़े भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया. यह सेल्युकस का अपना स्वयं का, साम्राज्य वन गया था, जिसमें वैक्ट्रिया (उत्तरी अफगानिस्तान) एवं पार्थिया (ईरान) भी सम्मिलित थे.

वैक्ट्रिया की आर्थिक एवं सामरिक सुदृढ़ता के कारण सेल्यूकस का साम्राज्य महत्त्वपूर्ण बन गया. इसके साम्राज्य की सीमा पूर्व में पामीर एवं हिन्दुकुश पर्वत श्रेणियों, दक्षिण भाग में पैरोयेनिसड़ाई और आरकोशिया, पश्चिम क्षेत्र में पार्थिया एवं कैस्पियन सागर तथा उत्तरी परिक्षेत्र में जैक्जाटोज सर और आक्स नदियों से परिवद्ध थी. आर्थिक दृष्टि से भी इस क्षेत्र का अत्यधिक महत्त्व था. यह यूरोप और एशिया के मध्य व्यापारिक मार्ग पर स्थित था, अतः इस पर यवन सेनापतियों की हमेशा कुदृष्टि लगी रहती थी.

सेल्यूकस के वाद के उत्तराधिकारी राजनीतिक रूप से निर्वल थे. अतएव उनके हालात के फलस्वरूप उसका साम्राज्य भी क्षीण हो गया और वैक्ट्रिया तथा एशिया साम्राज्य से अलग हो गये. 250 ई. पू. में वैक्ट्रिया के गवर्नर डियोडोट्स प्रथम ने एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया, जिसे इण्डो-ग्रीक या इण्डो-वैक्ट्रियन राज्य के नाम से पहचाना गया. उस काल में अंटियोकस द्वितीय सीरिया का राजा था एवं डियोडोट्स उसका गवर्नर था. डियोडोट्स द्वितीय, यूथीडेमस आदि राजाओं ने यवनों की शक्ति का मध्य-एशिया में द्रुतगति से प्रचार-प्रसार किया.

इस काल में उस वंश के राजाओं में सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति यूथीडेमस था. जिसने डियोडोट्स द्वितीय को मारकर सत्ता पर अधिकार कर लिया. उस दौरान सीरिया

का शासक अंटियोकस तृतीय था, जिसने बैक्ट्रिया में यूथीडेमस की सत्ता को स्वीकार कर लिया. अंटियोकस तृतीय ने अपनी पुत्री का विवाह यूथीडेमस के पुत्र दमित्र से इस घटनाक्रम को मोड देने के उद्देश्य से किया. आरकोशिया, सीस्तान, पैरोपेनिसडाई यूथीडेमस के आधिपत्य में आ गये थे.

सीरिया के राजा अंटियोकस तृतीय ने हिन्दुकुश पर्वत श्रेणी को पार कर भारत पर आक्रमण कर लिया था, लेकिन राजा सुभागसेन के कारण वह आगे नहीं बढ़ा सका. सुभागसेन से मित्रता स्थापित कर वह भारत से वापिस लौट गया. इण्डोग्रीकों के आक्रमण के काल में ही सीथियनों ने मध्य-एशिया के तरफ आक्रामक रुख किये. उसी दौरान चीनी शासक शी-हुआंग-शी द्वारा चीन के विशाल दीवार के निर्माण से चीन की तरफ से सीथियन बैक्ट्रिया और पार्थिया की तरफ आक्रमण किया. सिकन्दर की शानदार विजय से भी इनकी भारत में आक्रमण करने की इच्छा का प्रादुर्भाव हुआ.

इण्डो-ग्रीकों का राजनीतिक इतिहास (Political History of Indo-Greeks)

डेमेट्रियस प्रथम (189-171 ई. पू.)

1. **वास्तविक नाम** — दमित्र या डेमेट्रियस प्रथम
2. **पिता** — यूथीडेमस (भारत पर पहला यवन आक्रमणकारी)
3. **उल्लेखनीय कार्य** —
   (1) बैक्ट्रिया में स्थिति सुदृढ़ करने के पश्चात् भारत विजय की योजना बनाई.
   (2) बैक्ट्रिया का राज्य अपने पुत्र को सौंपकर अपोलोडोट्स एवं मिणाण्डर नामक दो सेनापतियों के साथ भारत की तरफ प्रस्थान किया.
   (3) अपोलोडोट्स नामक सेनापति के साथ सिन्धु पर आक्रमण किया. चित्तौड़ के निकटवर्ती क्षेत्र माध्यमिका पर आधिपत्य किया.
   (4) मिणाण्डर के नेतृत्व में यवनों ने पंजाब से मथुरा पांचाल, साकेत, पाटलिपुत्र पर आधिपत्य किया.
   (5) अपनी राजधानी साकल (स्यालकोट, पाकिस्तान) को बनाई.
   (6) यूनानी और खरोष्ठि लिपि से युक्त अपने सिक्कों का प्रचलन किया.
4. **साहित्यिक स्रोत** — महाभाष्य, गार्गीसंहिता, महाभारत
5. **प्रबल विरोधी शासक** — शुंग शासक पुष्यमित्र ने यवनों को भारत में आक्रमण करने से रोका.
6. **स्थापित नगर** —
   (1) अफगानिस्तान और भारत में डेमिट्रियस ने अपने एवं पिता के नाम पर कई नगरों को स्थापित किया.
   (2) डेमेट्रियस पोलिस (आरकोशिया), दत्तमित्र (सौवीर), यूथीडेमिया (साकल) इत्यादि उसके द्वारा बसाये गये नगर थे.
7. **पराजित** — यूक्रेटाइडस के द्वारा बैक्ट्रिया में.
8. **अन्तिम काल** —
   (1) पश्चिमी पंजाब एवं सिन्ध ही डेमेट्रियस प्रथम के पास रह गये.
   (2) डेमेट्रियस के बाद भारत में यवनों की दो शाखाएँ हो गई–(i) यूथिडेमस और डेमेट्रियस की, (ii) यूक्रेटाइड्स की.

(i) यूथिडेमस वंश

(अ) अपोलोडोट्स

1. **वास्तविक नाम** — एपोलोडोट्स
2. **बड़ा भाई** — डेमेट्रियस
3. **भारत आगमन** — डेमेट्रियस एवं मिनेण्डर के साथ भारत विजय अभियान के समय.
4. **शासित प्रदेश** — गांधार, पंजाब, सिन्ध (पेरीप्लस के अनुसार)
5. **उल्लेखनीय तथ्य** — मिनेण्डर के सिक्कों के साथ एपोलोडोट्स के सिक्कों का प्रचलन बेरीगाजा (भड़ौच) के बाजार में था (पेरीप्लस के विवरण के आधार पर).

(ब) मिनेण्डर

1. **वास्तविक नाम** — मिनेण्डर (मिलिन्द के नाम से प्रसिद्ध)
2. **भारत आगमन** — डेमेट्रियस के सेनापति के रूप में भारत विजय अभियान के समय.
3. **विशेषता** —
   1. यूथीडेमस के वंशजों एवं हिन्द-यूनानी शासकों में सर्वाधिक लोकप्रिय शक्तिशाली शासक.
   2. यूनानी इतिहासकारों द्वारा प्रशंसनीय शासक.
4. **शासित एवं विजयी क्षेत्र** — मथुरा, पांचाल, साकेत एवं पाटलिपुत्र तथा सोन नदी का क्षेत्र.
5. **पराजय** — पुष्यमित्र शुंग द्वारा पराजित.

6. **साहित्यिक स्रोत** 1. महायान बौद्ध ग्रन्थ[1] –मिलिन्दपञ्हो
2. लामा तारानाथ का बौद्ध धर्म का इतिहास
3. क्षेमेन्द्र की अवदानकल्पलता
7. **पुरातात्विक साक्ष्य** 1. इलाहाबाद के पास रेह नामक स्थल पर एक अभिलेख प्राप्त हुआ.
2. काबुल से मथुरा एवं बुन्देलखण्ड तक सिक्के प्राप्त हुए.
8. **जन्म** अलसन्दा (अलेक्जेण्ड्रिया) से 200 योजन की दूरी पर कलसी नामक ग्राम में. (मिलिन्दपन्हो के आधार पर)
9. **राजधानी** साकल या स्यालकोट.
10. **उल्लेखनीय तथ्य** 1. टार्न के अनुसार मिनेण्डर यूथीडेमस के राजवंश से असम्बन्धित था.
2. स्ट्रेबो के अनुसार मिनेण्डर ने सिकन्दर से भी अधिक विजय प्राप्त की थी.
11. **अधीन राज्य** भारत की पश्चिमोत्तर सीमा, काबुल घाटी, सिन्ध, पंजाब, राजपूताना, आधुनिक उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्र.
12. **सम्बन्धित धर्म एवं धार्मिक कार्य** 1. पहला हिन्द-यूनानी शासक जिसने बौद्ध धर्म ग्रहण किया.
2. अशोक के समान ही उसने बौद्ध धर्म अपनाया था (मिलिन्दपन्हो के अनुसार).
13. **तुलना** रैप्सन ने कुरु शासक जनमेजय एवं विदेह के राजा जनक के समान मिनेण्डर को माना है.

(स) स्ट्रैटो प्रथम

1. **वास्तविक नाम** स्ट्रैटो प्रथम
2. **माता** एगाथोक्लिया (संरक्षक शासिका)
3. **पूर्वशासक** मिनेण्डर
4. **राज्याभिषेक** 145 ई. पू.
5. **शासनकाल** 145 ई. पू. से 90 ई. पू. तक
6. **उपाधि** 'सोटर' की उपाधि पूर्णशासक बनने पर धारण की.
7. **प्रतिद्वन्द्विता** यूक्रेटाइड्स वंश से.
8. **पराजय** 1. एण्टियलकिड्स एवं हेलियोक्लीज ने स्ट्रैटो प्रथम के राज्य के बड़े भाग पर आधिपत्य कर लिया.
2. हेलियोक्लीज ने स्ट्रैटो प्रथम को परास्त कर पैरोपेनिसडाई से झेलम नदी तक के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया.
3. शकों ने स्ट्रैटो को पूरी तरह से दुःखी बनाने का प्रयास किया.

(द) स्ट्रैटो द्वितीय

1. **वास्तविक नाम** स्ट्रैटो द्वितीय
2. **राज्याभिषेक काल** 90 ई. पू.
3. **पराजित** मथुरा के मित्र शासकों, औदुम्बरों, कुणिन्दों एवं अर्जुनायनों ने मथुरा से रावी नदी तक अधिकार कर यूनानी सत्ता को समाप्त कर दिया.
4. **अन्तिम काल** 1. रावी और झेलम के मध्य तक सत्ता सिमट गई.
2. 30 ई. पू. में शकों ने इस क्षेत्र पर आधिपत्य कर यूथीडेमस वंश का अन्त कर दिया.

(ii) यूक्रेटाइड्स

(अ) यूक्रेटाइड्स

1. **वास्तविक नाम** यूक्रेटाइड्स
2. **उल्लेखनीय तथ्य** 1. यूक्रेटाइड्स वंश की सत्ता का संस्थापक.
2. सीरिया के शासक एंटिओकस चतुर्थ का चचेरा भाई.
3. डेमेट्रियस से बैक्ट्रिया की सत्ता छीनकर साम्राज्य का विकास किया.
3. **विजय प्राप्ति** डेमेट्रियस पर विजय पाकर 171 ई. पू. में बैक्ट्रिया पर अधिकार किया.
4. **युद्ध कौशल** 1. यूक्रेटाइड्स एक वीर एवं शक्तिशाली योद्धा एवं शासक था.
2. सोग्डियाना (बुखारा) से युद्ध कर पराजित किया.
5. **विजित क्षेत्र** बैक्ट्रिया, कपिशा, पूर्वी गांधार.
6. **पराजय** पार्थिया के शासक मिथ्रिदेट्स द्वारा यूक्रेटाइड्स को पराजित कर बैक्ट्रिया के कुछ भागों पर अधिकार किया.
7. **मृत्यु** अपने पुत्र द्वारा.

---

1 बौद्ध ग्रन्थ 'मिलिन्दपञ्हो' शब्द को मिलिन्दपण्हो, मिलिन्दपन्हो एवं अन्य रूप में विभिन्न पुस्तकों में उल्लिखित किया गया है. मूल ग्रन्थ की अप्राप्ति के चलते हमें इसे सभी रूपों में स्वीकार करना होगा.

(ब) हेलियोक्लीज

1. **वास्तविक नाम** हेलियोक्लीज
2. **पिता** यूक्रेटाइड्स
3. **पूर्व शासक** पिता के साथ संयुक्त शासन किया था.
4. **सत्ता प्राप्ति** 159-158 ई. पू. में हेलियोक्लीज ने अपने पिता यूक्रेटाइडस को रथ के पहियों के नीचे कुचलकर सत्ता प्राप्त की थी (जस्टिन के विवरणानुसार).
5. **उल्लेखनीय तथ्य**
   1. यूथीडेमस वंश के शासकों पर विजय प्राप्त करने के पश्चात पार्थियनों एवं शकों से संघर्ष किया, जिससे वैक्ट्रिया छिन गया.
   2. पैरोपेनिसडाई से झेलम तक के क्षेत्र पर अधिकार किया.

(स) एंटिअलकिडस

1. **वास्तविक नाम** एंटिअलकिडस
2. **शासनाभिषेक** 125 या 112 ई. पू.
3. **उल्लेखनीय तथ्य**
   1. यूक्रेटाइड्स वंश का सबसे अन्तिम प्रतापी एवं शक्तिशाली शासक.
   2. कपिशा, पुष्कलावती, तक्षशिला एवं पश्चिमी-पूर्वी गांधार पर उसका अधिकार हो गया था.
   3. वेसनगर (विदिशा) से प्राप्त अभिलेख के अनुसार तक्षशिला निवासी हेलियोडोरस, जो एंटिअलकिड्स के कहने पर काशीपुत्र भागभद्र के दरबार में भारत आया था, जिसने गरुड़-स्तम्भ की स्थापना की थी.
   4. प्राप्त अभिलेख के अनुसार एंटिअलकिडस ने यूथीडेमस वंश के शासकों के विरुद्ध शुंगों से मैत्री की थी.

(द) लिसियस

1. **वास्तविक नाम** लिसियस
2. **उल्लेखनीय तथ्य**
   1. यूक्रेटाइड्स वंश का अन्तिम शासक.
   2. अपनी सुरक्षा के लिए उसने यूथीडेमस वंश के हिप्पोसट्रेटस की पुत्री कैलियो से विवाह किया था.
   3. कुषाण नेता कुजुलकदफिसस ने पहले हर्मियस की अधीनता स्वीकार की, लेकिन बाद में उस पर आक्रमण कर शासन का अन्त कर दिया.

भारतीय संस्कृति एवं समाज पर यूनानी सभ्यता का प्रभाव
(Influences of the Greek Civilization on Indian Culture & Society)

- यूनानी अपने देश को हेलास (Hellas) एवं अपने आपको हेलेनिज (Hellenese) कहते थे. अतः यूनानी सभ्यता को 'हेलेनिक' सभ्यता कहा गया. आगे चलकर इससे हेलेनिस्टक सभ्यता (Hellenistic Civilization) का विकास हुआ.
- सिकन्दर के समय में उसका साम्राज्य सीरिया, एशिया माईनर मिस्र, वेबीलोन में फैल गया. इन स्थानों पर यूनानियों ने बसकर अपनी संस्कृति के तत्त्वों को प्रसारित किया. यूनानियों द्वारा प्रसारित संस्कृति एवं स्थानीय तत्वों से युक्त नई सभ्यता को हेलेनिस्टक सभ्यता का नाम दिया गया.
- प्रसिद्ध इतिहासकार स्मिथ, टार्न इत्यादि भारतीय संस्कृति एवं समाज पर यूनानी सभ्यता के प्रभाव को स्वीकार नहीं करते.
- जे. एन. बनर्जी, बुडकॉक जैसे प्रसिद्ध विद्वान् भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर हेलेनिस्टक सभ्यता के प्रभाव को स्वीकार करते हैं.
- 'वृहत्कथामंजरी' के अनुसार यवन 'दक्ष शिल्पी' कहे जाते थे.
- उड़ाकू, यंत्रचालित घोड़ों, चिकित्सा, इंजिनियरिंग इत्यादि के क्षेत्र में भारतीयों को यूनानियों से अत्यधिक लाभ प्राप्त हुआ.
- सप्ताह का सात दिनों में विभाजन, कैलेण्डर का ज्ञान, ग्रहों का नामकरण यूनान के आधार पर ही भारत में हो पाया था. ग्रहों के आधार पर भविष्यवाणी करने की प्रथा का विकास यूनानी सभ्यता के सम्पर्क से ही हो पाया.
- गार्गी संहिता और बृहत्संहिता में यूनानियों के सम्बन्ध में अभिव्यक्त है–"यद्यपि यवन दुष्ट प्रकृति के हैं तथापि ज्योतिष के अपने ज्ञान के कारण वे प्राचीन ऋषियों की भाँति श्रद्धा पात्र है."
- 'पंचसिद्धान्तिका' में उल्लिखित रोमक, पौलस एवं सूर्य सिद्धान्त यूनानी प्रभाव से पूर्ण है. भारतीय त्रिकोणमिति भी यूनानी सिद्धान्त पर आधारित है.
- भारतीय ज्योतिष के राशिचक्र के संस्कृत नाम मूलतः ग्रीक भाषा के हैं या अनुवादित हैं. यथा–क्रिय (क्रियोस, मेष), ताकरि (तौरस, वृषभ), लेय (लियो, सिंह) इत्यादि.
- भारत में पूर्व में आहत सिक्के चलते थे, लेकिन यूनानियों ने राजा की आकृति से युक्त सोने, चाँदी एवं

ताँबे के सिक्कों का प्रचलन किया. ग्रीक शब्द 'द्रख्म' का अर्थ सिक्के होता है, जो भारत में द्रम्म एवं दाम के नाम से जाना जाता था.

- यवन शासक मिनेण्डर बौद्ध धर्मावलम्बी, मेरिड्रक थियोडोरस बौद्ध धर्म का समर्थक एवं हेलियोडोरस भागवत धर्म का समर्थक था.
- हेलियोडोरस ने बेसनगर में गरुड़ध्वज की स्थापना की थी.
- पाणिनी की यवनानी लिपि यूनानी प्रभाव के कारण थी.

शक वंश
(The Sakas)

- शकवंशियों को सीथियन भी कहा जाता था. ये मूल रूप से मध्य-एशिया के निवासी थे. 161 ई. पू. में एक मध्य एशियाई जाति 'यू ची' ने इन्हें सरदरिया नदी के पास से दूर भगा दिया था. इन्होंने मजबूरी में बैक्ट्रिया एवं पार्थिया पर अपना आधिपत्य कर लिया था.
- मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, हर्षचरित एवं सिक्कों में शकों के बारे में पूर्ण जानकारी मिलती है.
- हिन्द-यूनानी शासकों की कमजोरी को दृष्टिगत रखकर शकों ने संगठित होकर एरकोशिया (कन्दहार) एवं गेड्रोसिया (बलूचिस्तान) पर भी आधिपत्य स्थापित कर लिया.
- शकों का पह्लवों (पार्थियनों) से संघर्ष हुआ, जिसमें उन्हें असफलता प्राप्त हुई और इसके फलस्वरूप शक हेलमण्ड घाटी (शकस्तान-शकद्वीप) छोड़कर भारत में चले गये.
- भारत में शक वंश की दो शाखाएँ–सईवंग या मुरुण्ड एवं ईरानी आई. मुरुण्ड उत्तरी मार्ग से एवं ईरानी दक्षिण मार्ग से भारत में आये थे. भारत आते ही शकों में विभाजन हो गया.

तक्षशिला के शक : मउज या मोग

- सिन्ध और पंजाब में शक वंश को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका शक शासक मउज या मोग की रही थी.
- शक शासक मउज या मोग ने यवनों से गांधार एवं तक्षशिला लेकर तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया.
- मउज या मोग नामक शासक ने ई. पू. 1 से 20 तक शासन किया.
- मउज के क्षत्रपों ने मथुरा और पंजाब पर भी अधिकार कर लिया.
- शक शासक (तक्षशिला) के द्वारा चलाये गये बुद्ध, यूनानी देवता एवं शिव की आकृति के खुदाए हुए सिक्के मिलते हैं.
- तक्षशिला ताम्रपत्र अभिलेख में मउज या मोग को महाराज की उपाधि से विभूषित किया गया है.
- प्रसिद्ध इतिहासकार डी. सी. सरकार के अनुसार मोग ने विक्रम सम्वत् चलाया और उसकी शासनावधि 20 ई. पू. से 22 ई. पू. थी.

एजस

- पूर्वी पंजाब से यूनानियों को बाहर निकालने वाला दूसरा शक शासक, जिसने यमुना घाटी पर आक्रमण किया और 58 ई. पू. में विक्रम सम्वत की स्थापना की.
- प्रसिद्ध इतिहासकार मार्शल के अनुसार एजस मउज या मोग का वंशज नहीं था, अपितु पूर्वी ईरान के शासक वोनोनीज का वंशज था.
- इसके पश्चात् एजिलिसेस और एजेस द्वितीय ने संयुक्त रूप से शासन किया, लेकिन बाद में पह्लव शासक गोण्डोफर्नीज ने एजेस द्वितीय पर आक्रमण कर गांधार पर अधिकार कर शक वंश का अन्त कर दिया.

क्षत्रपीय व्यवस्था

- शक राज्य की स्थापना होते हुए शकों ने विभिन्न भागों में गवर्नर लगाए, जो क्षत्रपीय व्यवस्था कहलाई.
- प्रमुख रूप से कपिशी, पुष्पपुर, अभिसार के क्षत्रपों का उल्लेख विभिन्न अभिलेखों एवं मुद्राओं में मिलता है.
- प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. एच. सी. राय चौधरी के अनुसार कपिशी, पुष्पपुर एवं अभिसार के शासित क्षेत्र अशोक के अभिलेख में वर्णित योन, गांधार और कम्बोज थे. पंजाब और मथुरा के भी क्षत्रपों के अधीन होने के साक्ष्य मिलते हैं.
- मणिकियाला अभिलेख के अनुसार कपिशा का क्षत्रप ग्रणव्यहक का पुत्र, पुष्पकलावती का क्षत्रप पर्तीव्हण था.
- विजयमित्र के वंशज स्वातघाटी क्षेत्र पर, शिवसेना अभिसार प्रस्थ में, कुसुलुआ वंश या कुसुलक वंश पंजाब में, मनिगुल और उसके पुत्र जियोनिसेस या जिहोनिक और इन्द्रवर्मन का शासन होने के साक्ष्य मिलते हैं.
- अभिसार प्रस्थ के क्षत्रप शिवसेन का उल्लेख पंजाब से प्राप्त एक ताँबे की मुहर पर प्राप्त होता है.
- कुसुलक वंश के दो क्षत्रप-लियाक कुमुलुक एवं उसके पुत्र महादान पति पतिक का उल्लेख तक्षशिला ताम्रपत्र अभिलेख में मिलता है. ये चुक्ष (अटक, पाकिस्तान) के क्षत्रप थे.

- एजेस के काल में मनिगुल, जिहोनिक तथा इन्द्रवर्मन के वंश में इस्पवर्मन क्षत्रप थे, जो शक शासकों के अधीन थे. ऐजेस द्वितीय और पह्लव शासक गोंडोफर्नीज के काल में इस्पवर्मन ही क्षत्रप था.
- सबसे पहले मथुरा के क्षत्रप तक्षशिला के शक शासकों के अधीन थे, लेकिन बाद में स्वतन्त्र रूप से शासन करने लगे और महाक्षत्रप की उपाधि धारण की.
- मथुरा पर सबसे पहले हगान और हगामस क्षत्रप शासक थे. जिनका उल्लेख सिक्कों में मिलता है. इन्होंने मथुरा के स्थानीय शासक गोमित्र और रामदत्त को हराकर मथुरा में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था.
- मथुरा का दूसरा क्षत्रप शासक राजुल या राजुवुल था. जिसने महाक्षत्रप की उपाधि धारण की थी. राजुल के सिक्के मथुरा से पूर्वी पंजाब तक पाये गये हैं जिसके आधार पर पूर्वी पंजाब तक उसका प्रभुत्व होने की पुष्टि होती है. राजुवुल या राजुल का एक पुत्र खरोष्ठ तथा दूसरा सोडास था. खरोष्ठ असामयिक रूप से मारा गया तथा सोडास पहले क्षत्रप और महाक्षत्रप बना. सोडास के सिक्के और अभिलेख मथुरा से प्राप्त हुए हैं.
- सोडास के पश्चात मथुरा में क्षत्रपों की सत्ता कमजोर हो गई. विम कदफिसस ने मथुरा पर अधिकार कर क्षत्रपों की सत्ता समाप्त कर दी.

क्षहरात क्षत्रप (नासिक के क्षत्रप)

- पंजाब और पश्चिमोत्तर सीमा क्षेत्र में शकों के अन्त एवं पह्लवों के प्रादुर्भाव से शकों की कुछ शाखाएँ सौराष्ट्र और मालवा चली गई, इसे पश्चिम शाखा कहा जाता है.
- पश्चिम क्षेत्र में शकों की दो शाखाएँ–नासिक का क्षहरात वंश और उज्जयिनी का चष्टन वंश प्रमुख रूप से शासन करने वाले थे.
- विभिन्न इतिहासकारों ने पह्लवों को क्षहरात कहा है, लेकिन तक्षशिला ताम्रपत्र के अनुसार नियाक ही क्षहरात है. इस आधार पर क्षहरातों को शक मानना अधिक तर्क संगत है.
- भूमक और नहपान–ये दो नासिक के क्षत्रपों में प्रमुख शासक थे. गुजरात, काठियावाड एवं मालवा में भूमक के सिक्के पाये गये हैं. भूमक ने गुजरात, काठियावाड़, मालवा, पश्चिमी राजपूताना एवं सिन्ध पर अपना आधिपत्य स्थापित किया. विभिन्न अभिलेखों में भी भूमक का नाम मिलता है.

नहपान (125-119 ई. पू.)

- पेरिप्लस के अनुसार क्षहरात वंश का सबसे प्रतापी शासक नहपान (125-119 ई. पू.) हुआ. नहपान ने पहले स्वयं को क्षत्रप तथा बाद में महाक्षत्रप कहा. इसके शासन में दक्षिणी गुजरात, काठियावाड़, पश्चिमी मालवा, उत्तरी कोंकण तथा पूना इत्यादि आते थे. महाराष्ट्र का एक बड़ा हिस्सा सातवाहनों से नहपान ने जीत लिया था, लेकिन गौतमीपुत्र शातकर्णी ने उसे परास्त कर दक्षिण महाराष्ट्र पर अपना अधिकार कर लिया था. नहपान एवं उसके जामाता उष्वदात के अभिलेखों में राजपूताना तक उसके शासन क्षेत्र होने का उल्लेख मिलता है.

उज्जयिनी का शक वंश

- उज्जयिनी में शक वंश का स्वतन्त्र राजवंश था. जिसे यशोमतिक ने स्थापित किया था. कार्दमक क्षत्रप के नाम से इस वंश के शासकों को ख्याति प्राप्त हुई थी. चष्टन एवं रुद्रदामन इस वंश के प्रमुख शासक हुए थे. इस वंश के राजाओं द्वारा शक वंश का व्यवहार किये जाने का उल्लेख मिलता है.
- कई इतिहासकारों के अनुसार चष्टन ने ही सर्वप्रथम शक सम्वत का व्यवहार प्रारम्भ किया था.
- कुषाणों के प्रतिनिधि के रूप में चष्टन ने सिन्ध पर राज्य किया. सातवाहनों से कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर जीवन के अन्तिम वर्षों में अपने पुत्र जयदमन को क्षत्रप बनाया, जो शीघ्र ही मारा गया और रुद्रदामन ने शासन का भार सँभाला.
- अण्डु अभिलेख के अनुसार चष्टन ने रुद्रदामन के साथ संयुक्त रूप से शासन किया. चष्टन की मृत्यु 130 ई. पू. में हुई थी.

रुद्रदामन (130-150 ई. पू.) : विशिष्ट जानकारी

1. वास्तविक नाम	रुद्रदामन	
2. शासित वंश	शंक वंश (कार्दमक क्षत्रप से विख्यात)	
3. शासनकाल	130-150 ई. पू.	
4. अभिलेख	जूनागढ़ अभिलेख	
5. उपाधि	महाक्षत्रप	
6. शासित क्षेत्र	(i)	अवन्ति (पूर्वी और पश्चिमी मालवा)
	(ii)	अनुपनिर्वत (महिष्मती, मंधाता या माहेश्वर)
	(iii)	अनार्त (द्वारिका का निकटवर्ती क्षेत्र या उत्तरी काठियावाड़)
	(iv)	सौराष्ट्र (दक्षिणी काठियावाड़)
	(v)	श्वभ्र (साबरमती के पास का क्षेत्र)
	(vi)	मारू (मारवाड़)

(vii) कच्च (कच्छ)
(viii) सिन्धु-सौवीर (सिन्धु घाटी)
(ix) कुकुर (सिन्ध और पारिपात्र या उत्तरी काठियावाड़ का आनर्त के निकट का प्रदेश)
(x) अपरान्त (उत्तरी कोंकण)
(xi) निषाद (सरस्वती और पश्चिमी विन्ध्य का मध्यवर्ती क्षेत्र)

7. विजय
1. दक्षिणापथेश्वर या सातवाहन राजा को दो बार हराने का उल्लेख (जूनागढ़ अभिलेख).
2. वाशिष्ठ पुत्र पुलमावी को पराजित किया (प्रसिद्ध इतिहासकारों के अनुसार).
3. कुषाणों पर विजय प्राप्त कर सिन्धु-सौवीर क्षेत्र जीता.

8. विशेषताएँ
1. अन्तिम महान् शासक.
2. प्रजा को प्रसन्न रखने वाला शासक.
3. जूनागढ़ अभिलेख में भ्रष्टराज प्रति-स्थापक कहा गया है.
4. व्याकरण, संगीत, तर्कशास्त्र, गणित का ज्ञाता.

9. प्रशासनिक व्यवस्था
1. राज्य विभिन्न प्रान्तों में विभक्त था. जहाँ पर अमात्य गवर्नर के रूप में शासन करते थे.
2. राजा को प्रशासन में सहयोग के लिए मंत्री नियुक्त थे, जो दो प्रकार थे–
(अ) मतिसचिव और (ब) कर्मसचिव.

10. अन्य बातें
संस्कृत भाषा का सर्वाधिक विकास किया. सर्वप्रथम जूनागढ़ अभिलेख में शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रयोग किया.

- रुद्रदामन के बाद शकों की शक्ति क्षीण हो गई. शकों का अन्तिम राजा रुद्रसिंह द्वितीय था जिसको पराजित कर चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी क्षत्रपों के राज्य को गुप्त साम्राज्य में विलीन कर लिया.

शक शासन का महत्व
(Significance of the Saka Rule)

शक शासन का महत्त्व निम्नलिखित तथ्यों में दृष्टिगोचर होता है–

(1) शकों ने भारत में नये फैशन के वस्त्र यथा–पगड़ी, लम्बे कोट और घोड़ों के प्रचलन को बढ़ाया.

(2) विशिष्ट कला शैली का विकास किया. प्रथम भारतीय सूर्य मन्दिर को पुराणों में शकद्वीप से सम्बद्ध किया गया है.

(3) संस्कृत भाषा एवं ज्योतिष का विकास शकों के दौरान ही हुआ. उदाहरणार्थ मात्र रुद्रदामन के अभिलेख पूर्णतः शुद्ध संस्कृत में प्राप्त हुए हैं.

(4) संगीत और कला को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ.

(5) प्रशासनिक व्यवस्था में सत्ता का विकेन्द्रीकरण द्वैराज्य (सहशासन), यौवराज्य (युवराजों का शासन) की प्रणाली का आविर्भाव हुआ. क्षत्रपों में शासन कार्य को विभाग करने की प्रथा, राजा का स्वयं महाक्षत्रप बनने एवं रानियों द्वारा महादेवी, अग्निमहिषी की उपाधियों को धारण करने की प्रथा इन्हीं के द्वारा प्रारम्भ हुई.

(6) तक्षशिला, उज्जयिनी, प्रतिष्ठान आदि नगरों को व्यापारिक केन्द्र के रूप में इसी दौरान मान्यता प्राप्त हुई.

पार्थियन या पह्लव
(The Parthians or the Pahalvas)

- पार्थिया या ईरान के निवासी आक्रमणकारी प्रथम शताब्दी ई. पू. में उत्तर पश्चिम भारत में स्थापित हुए, जिन्हें पार्थियन या पह्लव कहा गया.
- पार्थियन यूनानी चंगुल से मुक्त हो गये थे. पार्थिया के शासक मिथ्रोडेटस ने युक्रेटाइड्स के काल में ही पंजाब और सिन्ध पर आक्रमण कर लिया था.
- सिक्के पार्थियन या पह्लवों के इतिहास का प्रमुख स्रोत थे. प्रमुख साक्ष्यों के अनुसार वोनोनीज पह्लवों का पहला शासक था.
- वोनोनीज पूर्वी ईरान में पार्थिया का गवर्नर था, लेकिन राजनीतिक परिस्थिति की विकृति को भाँपकर उसने स्वतन्त्र सत्ता को स्थापित कर लिया. दक्षिणी अफगानिस्तान एवं पूर्वी ईरान में उसका वर्चस्व अधिक रहा था.
- वोनोनीज के सिक्कों के अनुसार उसकी प्रशासन में सहायता के लिए तीन व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है, जोकि उससे रिश्ते में भाई-भतीजे के रूप में सम्बन्धित थे, तीन व्यक्ति निम्नलिखित थे–

1. स्पलराइसिस
2. स्पलहोरिस
3. स्पलगहम

- विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि स्पलहोरिस के नाम के साथ महाराजभृत्य, स्पलगहम के साथ स्पलहोरापुत्र की उपाधि लगाई जाती थी, जो वोनोनीज के सहायक होने की पुष्टि करता है.
- पार्थियन या पह्लवों में वोनोनीज के बाद स्पलराइसिस के राजा बनने के उल्लेख मिलते हैं. अयस या अय् नाम के उल्लेख से उसके सिक्के प्राप्त होते हैं. उसे तक्षशिला के

शासक एजेस प्रथम का समकालीन माना जाता है. स्पलराइसिस के महाराजभृत्य धर्मिस्य स्पलराइसिस एवं महाराजस महातक्ष स्पलराइसिस की उपाधि धारण करने के उल्लेख उसके सिक्कों में मिलता है.

गोण्डोफर्नीज : विशिष्ट जानकारी

1.	**नाम**	गोण्डोफर्नीज
2.	**शासक**	पह्लव वंश का सबसे प्रभावशाली शासक
3.	**अभिलेख**	तख्त-ए-वाही
4.	**प्रारम्भिक क्षेत्र**	पूर्वी ईरान में पार्थियन साम्राज्य का गवर्नर.
5.	**राज्य का विस्तार**	सिस्तान, सिन्ध, दक्षिण और पश्चिमी पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, दक्षिणी अफगानिस्तान उसके राज्य में सम्मिलित प्रान्त थे.
6.	**सम्भावित शासन तिथि**	19-45 ई. के मध्य.
7.	**अन्य तथ्य**	1. तक्षशिला के फ्रेओटीज से गोण्डोफर्नीज की पहचान की जाती है. 2. 43-44 ई. पू. में गोण्डोफर्नीज तक्षशिला गया, उस दौरान फ्रेओटीज वहाँ का शासक था (अपोलोनियस अरयाना के अनुसार).
8.	**प्रशासनिक सहायक**	गवर्नर या अधीनस्थ राजा अब्दगसेस अस्पवर्मन, सस सपेदन तथा सतवस्त्र उसके सहायक थे.
9.	**धर्मगुरु**	प्रसिद्ध ईसाई धर्मप्रचारक सन्त थॉमस
10.	**धर्म**	ईसाई धर्म सन्त थॉमस के सानिध्य में स्वीकार किया.

- गोण्डोफर्नीज के बाद अब्दगसिस, पकोरिस और सनबेरिस ने पह्लवों की सत्ता को सँभाला, लेकिन कुषाणों के बढ़ते प्रभाव से उन्हें असफलता हासिल हुई.
- कुषाण विजेता कुजुल कदफिसस पार्थियनों से मित्रता कर गोण्डोफर्नीस की मृत्यु के बाद गांधार प्रदेश से पह्लवों को खदेड़ कर स्वयं शासक बन गया. पह्लव अन्य आक्रमणकारियों यवन, शक, कुषाण की तरह अपना प्रभाव नहीं छोड़ सके.

कुषाण
(The Kushanas)

कुषाण मौर्योत्तर काल में भारत में आने वाली प्रमुख विदेशी जातियों में से एक थी. मूलतः कुषाण मध्य एशिया की 'यू-ची' जाति की एक शाखा थे.

चीन के प्रसिद्ध इतिहासकार सु मा चीन के अनुसार यह जाति दूसरी शताब्दी ई. पू. पश्चिमी चीन में निवास करती थी. कुई- शुआंग राज्य पर इनका अधिकार था. लगभग 163 ई. पू. हिंग-नू कबीले ने इन पर आक्रमण कर दिया. जिसमें इस कबीले का यू-ची राजा मर गया. इस कबीले के लोग विधवा रानी के नेतृत्व में पश्चिमी क्षेत्र में वु-सुन प्रदेश पर अधिकार कर सरदरिया से ताहिया पहुँचे. ताहिया एवं बैक्ट्रिया, सोग्दियाना पर उन्होंने आक्रमण कर लिया एवं कीन-ची को अपनी राजधानी बनाया.

206-220 ई. तक कुषाणों का इतिहास चीनी ग्रन्थों हान शू तथा हाउ-हान-शू में मिलता है. इन ग्रन्थों के अनुसार चू-ची की एक शाखा सोग्दियाना पहुँचने से पूर्व छोटी यूची प्रमुख शाखा से अलग होकर तिब्बत की तरफ चली गई. शेष पाँच शाखाओं–कुई-शुआंग या कुषाण, हीउ-यी शुआंग्मी, सितुन और तुमी को उनके एक सरदार क्यू-ज्यू-कियो या कुजुल कदफिसस कुई शुआंग या कुषाण समाज की अध्यक्षता में संगठित कर स्वयं सम्राट् बन गया.

कुषाणों का विस्तार

कुषाण वंश के दो प्रमुख राजाओं के द्वारा दो तरह से कुषाणों की शक्ति का विकास हुआ. कुजुल कदफिसस या कदफिसस प्रथम ने भारत में कुषाणों की सत्ता को स्थापित की तथा कनिष्क ने कुषाण राज्य को विस्तरित किया. इस रूप में कुषाण राजवंश को दो खण्डों में अध्ययन की दृष्टि से विभाजित करना श्रेष्ठ होगा–(i) कदफिसस ग्रुप, (ii) कनिष्क ग्रुप.

(अ) कदफिसस ग्रुप

(i) कुजुल कदफिसस

1.	**नाम**	कुजुल कदफिसस या कदफिसस प्रथम
2.	**स्थापना**	भारत में कुषाण राज्य की स्थापना
3.	**शासन अवधि**	15-65 ई. के मध्य
4.	**धर्मावलम्बी**	शैव या बौद्ध धर्मावलम्बी (सचधर्मनिष्ठ अभिलेख के अनुसार)
5.	**सत्ता का प्रसार**	बैक्ट्रिया से गांधार-तक्षशिला तक
6.	**सम्बन्धित साक्ष्य**	1. तक्षशिला (सिरकप) से उसके सिक्के प्राप्त हुए हैं. 2. सिक्कों पर यवन शासक हर्मियस की आकृति मिलती है. 3. महाराजाधिराज की उपाधि भी सिक्कों में प्राप्त होती है.

(ii) विम कदफिसस

1.	**नाम**	विम कदफिसस या कदफिसस II
2.	**पिता**	कुजुल कदफिसस

3. **राज्याभिषेक**	65 ई. पू. कुजुल कदफिसस की मृत्यु के पश्चात्.
4. **साम्राज्य विस्तार**	पूर्व में बनारस से लेकर पश्चिमोत्तर में पार्थिया की सीमा तक, अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, बुखारा, रूसी तुर्किस्तान (प्रो. बैजनाथ पुरी के अनुसार). बेग्राम, पेशावर, तक्षशिला, मथुरा, गोरखपुर, वाराणसी, इन्दौर (प्राप्त सिक्कों के अनुसार).
5. **उपाधियाँ**	महाराजा राजाधिराज, महीश्वर, सर्वलोकेश्वर इत्यादि (सिक्कों के अभिलेख के अनुसार).
6. **धर्म**	शैवधर्म.
7. **सिक्के**	ताँबे एवं सोने के
8. **विशेषताएँ**	इस काल में कुषाण साम्राज्य प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बन गया था.
9. **शासनकाल**	65-78 ई. पू.

(ब) कनिष्क ग्रुप

1. **कनिष्क नाम**	कनिष्क I.
2. **शासन**	कनिष्क ग्रुप का प्रथम शासक जो कदफिसस द्वितीय या विम कदफिसस के बाद कुषाणों का शासक बना.
3. **पूर्व स्थिति**	विम कदफिसस के पूर्वी भारतीय प्रान्त का प्रशासक.
4. **राज्याश्रयी धर्म**	बौद्ध धर्म.
5. **उल्लेखनीय बातें**	साम्राज्य निर्माता, महान् योद्धा एवं कला, धर्म तथा संस्कृति का संरक्षक था.
6. **तिथि के सम्बन्ध में विभिन्न मत**	1. विभिन्न विद्वानों के अनुसार प्रथम से तृतीय शताब्दी के मध्य का काल. 2. अनेक विद्वानों के अनुसार 78 ई. पू. शक संवत् को कनिष्क ने प्रारम्भ किया. 3. फ्लीट नामक इतिहासकार के अनुसार कनिष्क ने 58 ई. पू. विक्रम संवत् चलाया (कनिंघम, डॉउसन, फ्रिंक, कैनेडी इस मत के समर्थक हैं). 4. प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री एलन के अनुसार 78-81 एवं 98-117 ई. पू. के दौरान ही कनिष्क का समय है. इससे पूर्व होना असम्भव है. 5. मार्शल, स्टेन, कोनोव, स्मिथ आदि के अनुसार कनिष्क प्रथम 125 ई. या 144 ई. में गद्दी पर बैठा और ईसा की दूसरी शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक शासक बना रहा. 6. डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार कनिष्क 248 ई. में गद्दी पर बैठा. मजूमदार के अनुसार कनिष्क ने त्रैकुटक कलचुरि-चेदि सम्वत चलाया था. 7. डॉ. आर. जी. भण्डारकर के अनुसार 278 ई. कनिष्क की शासनावधि है. 8. आर. डी. बैनर्जी, रैप्सन, थॉमस जैसे विद्वान् कनिष्क की तिथि 78 ई. ही मानते हैं.
7. **प्रमुख विजय एवं साम्राज्य विस्तार**	1. कनिष्क ने कश्मीर पर अधिकार कर वहाँ पर कनिष्कपुर (वर्तमान कांजीपुर, श्रीनगर) की स्थापना की (राजतरंगिणी के अनुसार). 2. साकेत के राजा को पराजित किया (चीनी साहित्य के अनुसार). 3. कुमारलता का कल्पनामांडितिका के चीनी अनुवाद के अनुसार कनिष्क ने पूर्वी भारत पर विजय प्राप्त की थी. 4. अश्वघोष की जीवनी के चीनी रूपान्तरण के अनुसार कनिष्क ने मगध पर आक्रमण किया और वहाँ से गौतम बुद्ध का भिक्षा पात्र और स्वयं अश्वघोष को पेशावर ले जाना चाहा था. 5. मध्य एशिया में खोतान, काशगर एवं यारकन्द की विजय कनिष्क के इतिहास में प्रमुख सैनिक अभियान थे. 6. कनिष्क का साम्राज्य मध्य-एशिया के अराल समुद्र से लेकर गंगा की घाटी तक फैला हुआ था.
8. **प्रमुख प्राप्त अभिलेख**	1. पेशावर (राज्यकाल का प्रथम वर्ष) 2. कोशम (राज्यकाल का द्वितीय वर्ष) 3. सारनाथ (तृतीय वर्ष) 4. मथुरा (चतुर्थ वर्ष) 5. सूई विहार एवं जेद्दा (ग्यारहवाँ वर्ष) 6. मनिक्याला (18वाँ वर्ष) 7. साँची अभिलेख (22 वर्ष) 8. मथुरा (23वाँ वर्ष)
9. **उत्खनन से प्राप्त सिक्के**	बिहार में पाटलिपुत्र, बक्सर, चिराँद, वैशाली से कनिष्क के सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिन पर रोमन प्रभाव की झलक है.
10. **कनिष्क साम्राज्य में स्वतन्त्र राज्य**	1. सारनाथ 2. कौशाम्बी 3. अयोध्या

11. **कनिष्क की प्रशासनिक व्यवस्था**
1. साम्राज्य के अन्तर्गत दो राजधानियाँ थीं–पुरुषपुर एवं मथुरा.
2. मध्य-एशिया एवं उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों पर नियन्त्रण के लिए पुरुषपुर तथा पूर्वी भागों पर नियन्त्रण के लिए मथुरा राजधानी थी.
3. क्षत्रपीय शासन व्यवस्था प्रचलित थी.
4. खर पल्लन एवं वनस्पर उसके महाक्षत्रप एवं क्षत्रप थे (सारनाथ अभिलेख के अनुसार).
5. नहपान एवं चष्टन कनिष्क के सामन्त थे.

12. **उपाधि** देवपुत्र, कैसर.

13. **धार्मिक गतिविधियाँ**
1. बौद्ध धर्म का सबसे प्रबल समर्थक.
2. अश्वघोष एवं मातृचेर के सम्पर्क से बौद्ध धर्म को स्वीकार किया.
3. चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन पार्श्व की सलाह पर कश्मीर में कनिष्क ने किया. महायान की श्रेष्ठता का प्रतिपादन इसी दौरान हुआ था.
4. पुरुषपुर (पेशावर) में स्तूप का निर्माण किया.
5. धार्मिक सहिष्णु, उदार, निष्पक्षतावादी विचारों से कनिष्क सम्बन्धित था.
6. उसके सिक्कों पर सूर्य, हेरक्लीज, शिव, अग्नि के चित्र मिलते हैं, जो सर्वधर्म समभाव का प्रतीक है.

14. **साहित्य, कला एवं व्यापार**
1. पुरुषपुर का स्तूप, मथुरा का नाग मन्दिर एवं देवकुल कनिष्ककालीन महत्वपूर्ण स्थापत्य के उदाहरण हैं.
2. बुद्ध की प्रतिमाओं का विस्तृत पैमाने पर निर्माण तथा गांधार एवं मथुरा शैली का अत्यधिक विकास इसी काल के अन्तर्गत हुआ.
3. अश्वघोष, संघरक्षक, माध्र या मातृचेट कनिष्क के दरबारी विद्वान् थे.
4. अश्वघोष का बुद्धचरित एवं सौन्दरानन्द इसी समय संस्कृत भाषा में लिखे गये.
5. प्रसिद्ध आयुर्वेदशास्त्री चरक एवं यूनानी इंजीनियर एगिसिलेयस को कनिष्क ने आश्रय दिया था.
6. नागरी-सभ्यता का विकास किया. सिरकप एवं कनिष्कपुर की स्थापना कनिष्क ने की.
7. कनिष्क एक कुशल प्रशासक, महान् योद्धा, साहित्य, धर्म, कला-कौशल को प्रश्रय देने वाला था.

15. **मृत्यु** 101 या 102 ई. में[1] (युद्ध से तंग होकर मंत्रियों एवं सम्बन्धियों ने निद्रावस्था में हत्या कर दी)–

कनिष्क के उत्तराधिकारी शासक

नाम उत्तराधिकारी	कनिष्क से सम्बन्ध	राज्याभिषेक /शासनकाल	उल्लेखनीय बातें
1. वशिष्क	पुत्र	102-106 ई. पू.	1. कनिष्क के शासनकाल में मालवा का प्रान्तीय शासक था. 2. जुष्कपुर (श्रीनगर) को स्थापित किया. 3. मथुरा एवं सांची में वशिष्क के दो अभिलेख 24वें और 28वें राजधर्म के मिले हैं.
2. हुविष्क	पौत्र, कनिष्क II या शिष्क का पुत्र	106-138 ई. तक शासन किया	1. कश्मीर में हुष्कपुर की स्थापना की. 2. 41वें राजधर्म का आरा अभिलेख पेशावर में प्राप्त हुआ है. 3. बौद्ध धर्मानुयायी, धर्म सहिष्णु तथा व्यवस्थित प्रशासक था.
3. वासुदेव प्रथम		138 ई. में शासन सँभाला तथा 145 तक शासन किया.	1. कुषाणों का शासन मथुरा तक सीमित रह गया. 2. सिक्कों के अनुसार वह शैव-मतावलम्बी था. 3. उसके सिक्कों पर शिव-नन्दी का चित्र मिलता है. 4. वासुदेव I के बाद कुषाण वंश का पतन हो गया था.
4. कनिष्क तृतीय	145 ई. के बाद		पंजाब से बैक्ट्रिया एवं सीस्तान तक प्रसार रहा.

कनिष्क III के बाद वासुदेव द्वितीय तथा शापुर ने कुषाण शासन को सँभाला. इसके पश्चात् ससानी शासक अर्दशिर में बैक्ट्रिया सिन्धु नदी के पश्चिम में शकों ने, पंजाब

1 जनश्रुतियों के आधार पर ऐसा माना जाता है.

में यौधेयो, कुणिंदो, मालवो ने सत्ता पर अधिकार कर लिया. पूर्व में भारशिव नागों ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली और इस तरह कुषाण वंश पूरी तरह समाप्त हो गया.

कुषाणों के पतन के कारण

कुषाणों के विशाल साम्राज्य का पतन एक ही दिन में नहीं हुआ अपितु उसमें बहुत समय लगा. पतन के मूल में उत्तरदायी कारक अयोग्य उत्तराधिकारी, कमजोर अर्थव्यवस्था, प्रशासनिक दुर्बलताएँ एवं प्रतिस्पर्धी शक्तियों का उदय प्रमुख था, जिसके फलस्वरूप कुषाण वंश का अन्त हो गया.

कुषाणों की शासन व्यवस्था

राजा की स्थिति

- शासन प्रणाली राजतन्त्रात्मक थी.
- राजा महाराज, राजाधिराज, शाओनानोसाओ (शाहानुशाही) महीश्वर, सर्वलोकेश्वर जैसी उपाधियाँ धारण करता था.
- प्रो. रामशरण के अनुसार कुषाणकालीन उपाधियाँ सामन्ती व्यवस्था को प्रदर्शित करती है.
- मृत राजा की पूजा की जाती थी, इसके लिए देवकुल की स्थापना की गई थी.
- राजा स्वयं को देवपुत्र के रूप में प्रस्तुत करता था.
- राजा प्रजावत्सल था तथा प्रजा के प्रति उसका नजरिया अच्छा था.

क्षत्रपीय व्यवस्था

- प्रो. बैजनाथपुरी के अनुसार कुषाण साम्राज्य पाँच या सात भागों में विभक्त था.
- साम्राज्य अनेक प्रान्तों में विभाजित था, जहाँ पर कुषाणों की अधिसत्ता स्वीकारी जाती थी. वहाँ क्षत्रपीय शासन व्यवस्था विद्यमान थी.
- एक ही क्षेत्र में दो शासकों की प्रथा का प्रारम्भ कुषाणों ने ही किया था.
- कनिष्क के सारनाथ अभिलेख में वनस्पर एवं खरपल्लन नामक दो क्षत्रपों के एक साथ शासन करने का उल्लेख मिलता है.
- क्षत्रप राजपरिवार, विजित शासक, सरदार होता था, जो सैनिक और नागरिक दोनों का कार्य करता था.

प्रशासनिक इकाइयाँ

- कुषाणों के काल में प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसका प्रधान ग्रामिक होता था. ग्रामिक का मुख्य कार्य राजस्व वसूली था.
- पद्रपाल गाँव की ऊसर जमीन की देखभाल के लिए होता था.
- नगर प्रशासन में श्रेणी तथा निगम की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी.
- पदाधिकारियों में क्षत्रप, महाक्षत्रप, दण्डनायक, महादण्डनायक का उल्लेख मिलता है.
- दण्डनायक, महादण्डनायक अर्द्धसैनिक अधिकारी थे, जो क्षत्रपों को प्रशासनिक सहयोग देते थे.

कुषाणों की देनें

सांस्कृतिक

- कुषाणों को भारतीय समाज में द्वितीय श्रेणी के क्षत्रपों के रूप में समाविष्ट कर लिया गया था. इस स्थिति में उनका सांस्कृति मेल-जोल पूरी तरह भारतीय और कुषाणों में होने लगा था.
- कुषाणों से भारतीयों ने लगाम, घुड़सवारी, जीन, पगड़ी, कुरती, पतलून, लम्बे कोट, शिरस्त्राण, बूट आदि का व्यवहार सीखा था.
- कुषाणों के प्रभाव से गांधार एवं मथुरा शैली का विकास हुआ. संस्कृत भाषा और साहित्य इसी काल में अत्यधिक विकसित हुआ था.
- मथुरा का देवकुल और पेशावर का स्तूप कनिष्क द्वारा निर्मित किया गया था, जो स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने हैं.
- बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रचार इसी काल में अधिक हुआ था.

राजनीतिक

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद छिन्न-भिन्न उत्तरी-भारत को कुषाणों ने एकछत्र साम्राज्य स्थापित कर राजनीतिक एकता का सूत्रपात किया.
- राजत्व के दैवीय सिद्धान्त को कुषाणों ने लागू किया.
- द्वैध शासन प्रणाली, क्षत्रप व्यवस्था का प्रारम्भ कुषाणों द्वारा ही किया गया था.

आर्थिक

- उत्तरापथ और रेशम मार्ग कुषाणों के साम्राज्य से ही निकलते थे. इन मार्गों की शांति और सुरक्षा व्यवस्था ने मध्य-एशिया एवं भूमध्यसागरीय क्षेत्र को भारत के व्यापारिक सम्पर्कों में करीब ला दिया था.
- मौद्रिक अर्थव्यवस्था कुषाणों की ही देनें है. ताँबे और सोने के सिक्कों के बड़े पैमाने पर ढलवाने के इस दौरान के साक्ष्य मिलते हैं.

- मथुरा से प्राप्त कुषाणकालीन अभिलेखों में लोहार, गंधिक, सुवर्णकार, मणिकार इत्यादि शिल्पियों का उल्लेख मिलता है.
- तक्षशिला (सिंहमुख), मथुरा, श्रावस्ती, पुरुषपुर, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र, वाराणसी, वैशाली आदि नगरों का अभ्युदय कुषाणकाल में ही हुआ था.
- प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. रामशरण शर्मा कुषाणकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहते हैं.

अंधकार युग
(The So called—Dark Age)

- कुषाण वंश के पतन एवं गुप्त शासकों के उदय के काल को अर्थात् 176 ई. से 275 ई. के काल को वी. ए. स्मिथ ने **'अंधकार युग'** कहा है.
- अस्पष्ट इतिहास, केन्द्रीयकृत राजनीतिक शक्ति का अभाव, साक्ष्य अभिलेखीय प्रमाणों के अभाव के कारण इस काल को अंधकार युग कहा गया.

अंधकार युग के प्रमुख राजतन्त्रात्मक राज्य

- वस्तुतः यह समय राजनीतिक प्रतिस्पर्धाओं का युग था. इस दौर में अनेक राजनीतिक शक्तियों का उदय हुआ. जिसका लाभ उठाकर ही गुप्त साम्राज्य विस्तृत साम्राज्य के रूप में उभर सका. अंधकार युग (Dark age) के राजतन्त्रात्मक राज्य निम्नलिखित थे–

कौशाम्बी का माघ वंश

- कुषाणों के शासन काल के दौरान उनकी परिस्थिति से अवगत होकर कौशाम्बी में भीमसेन (वाशिष्ठीपुत्र) ने एक स्वतन्त्र राजवंश की स्थापना की, जिसे माघ वंश कहा गया. इलाहाबाद के पास 130 ई. के गिरजा अभिलेख के अनुसार कुषाण शासक हुविष्क के दौरान ही भीमसेन ने माघवंश स्थापित किया था. बंधोगढ़ अभिलेख से भी यह जानकारी मिलती है कि भीमसेन 'महाराज' की उपाधि धारण करता था.
- भीमसेन के पश्चात् कौटसीपुत्र महाराज पोठसिरी ने उत्तराधिकारिता ग्रहण की थी. अल्टेकर के अनुसार इसका शासनकाल 140–166 ई. के मध्य है.
- पोठसिरी के पश्चात् भद्रमाघ ने माघवंश की सत्ता ग्रहण की. इस वंश के अन्य शासकों में शिवमाघ, वैश्रवण, भीमवर्मन, सतमाघ, विजयमाघ, पूर्णमाघ, युगमाघ इत्यादि का उल्लेख मिलता है.
- कौशाम्बी के माघवंश का अन्तिम शासक रूद्रदेव था.

शक-मुरूण्ड

- टॉलेमी के 'भूगोल' के अनुसार ईसा की दूसरी शताब्दी के मध्य अयोध्या में मुरुण्डों का शासन था. अयोध्या से इसी काल के नामधारी मित्र शासकों आर्यमित्र, सत्यमित्र, कुमुदसेन, अजवर्मन इत्यादि के सिक्के प्राप्त होते हैं. माना जाता है कि ये कुषाणों के अधीनस्थ थे. जब कनिष्क के बाद के अयोग्य उत्तराधिकारी सत्ता की कमजोरी का कारण बने तो मुरुण्डों ने इस क्षेत्र पर आक्रमण कर लिया.
- मुरुण्ड शक क्षत्रप थे. गंगा, गण्डक और सरयू के क्षेत्रों को मुरुण्डों का शासन क्षेत्र माना जाता था. चीनी साहित्य, पुराणों, जैन ग्रन्थों में पाटलिपुत्र में मुरुण्डों के शासन होने का उल्लेख मिलता है.
- प्रभावकचरितम्, आवश्यक वृहद्वृत्ति में मुरुण्ड शासकों का उल्लेख मिलता है. मगध पर 230 ई. तक मुरुण्डों ने शासन किया. ऐसा अनुमान है. इसके बाद कोट वंश के राजाओं ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली.

भारशिव नाग

- नागवंशीय शासक भारशिव कुषाणों के पतन के बाद उत्तरी भारत के शासक बने. डॉ. के. पी. जायसवाल के अनुसार कुषाणों की उत्तरी भारत में सत्ता समाप्त करने का श्रेय भारशिव नागों को ही जाता है. गुप्त, वाकाटक पल्लव भारशिवों के अन्तर्गत सामन्त या सेनापति थे जिन्होंने आगे चलकर स्वतन्त्र राजवंश की स्थापना की.
- विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर तृतीय या चतुर्थ शताब्दी में पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं पास के अधिकांश क्षेत्रों पर नागवंशीय राजाओं का शासन था.
- पुराणों के अनुसार नागों की शक्तियों के चार प्रमुख केन्द्र निम्नलिखित थे–

1. पद्मावती	2. मथुरा
3. विदिशा	4. कान्तिपुर.

- मुद्रासाक्ष्यों एवं अभिलेखीय प्रमाणों के अनुसार निम्नलिखित नाग शासकों के नाम मिलते हैं–

(i) भीमनाग	(ii) विभुनाग
(iii) प्रभाकरनाग	(iv) स्कन्दनाग
(v) वृहस्पतिनाग	(vi) व्याघ्रनाग
(vii) वसुनाग	(viii) देवनाग
(ix) भवनाग	(x) गणपतिनाग.

- वाकाटक और गुप्त अभिलेख (प्रयाग प्रशस्ति) में भवनाग एवं गणपतिनाग का उल्लेख मिलता है. प्रशस्ति में नागसेन एवं नागदत्त नामक शासकों का भी उल्लेख मिलता है.

- हर्षचरित (बाणभट्ट कृत) में पद्मावती के शासक नागसेन का उल्लेख मिलता है.

पद्मावती के भारशिव नाग

- नागों में सबसे महत्वपूर्ण पद्मावती (पद्मपाया, ग्वालियर) के नागवंशीय शासक थे, जिन्हें भारशिव के नाम से जाना जाता था. इन्हें मूलतः बघेलखण्ड का निवासी माना जाता था.
- पुराणों के अनुसार गुप्त सम्राटों के उदय के पूर्व पद्मावती पर नौ नागराजाओं ने शासन किया. नागशासकों में भवनाग का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है.
- भारशिव वंश की मुद्राओं पर अंकित त्रिशूल एवं नंदी के चित्र प्राप्त होने की स्थिति में उन्हें शैव माना जाता था.
- पद्मावती में नागों की शक्ति दूसरी शताब्दी के उत्तरार्द्ध या तीसरी शताब्दी के प्रारम्भ में स्थापित हुई. पद्मावती का अन्तिम नाग शासक नागसेन माना जाता था.

मथुरा के नाग, कान्तिपुर एवं विदिशा के नाग

- नागों का तीसरा केन्द्र कान्तिपुर था, जिसके साक्ष्य विष्णुपुराण में प्राप्त होता है.
- पद्मावती के बाद नागों का सर्वाधिक प्रबल केन्द्र मथुरा था, जहाँ पर गुप्त सम्राटों के आविर्भाव से पूर्व सात नाग शासकों ने राज किया था. मथुरा में नागवंशीय शासन तृतीय शताब्दी के मध्य स्थापित हुआ था.
- नागों के तीसरे केन्द्र कान्तिपुर को डॉ. के. पी. जायसवाल मिर्जापुर जिले का कान्तित तथा डॉ. राय चौधरी विदिशा के पास का क्षेत्र मानते हैं.
- विदिशा के नाग शासकों के पुराणों में उल्लिखित शासक निम्नलिखित हैं–

  1. शेष 2. भोगी
  3. सदाचन्द्र 4. चद्रांश.
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का विवाह कुबेरनागा नामक राजकुमारी से हुआ था.
- कुषाणों को पराजित करने, ब्राह्मण धर्म को आश्रय देने के कारण नागों को भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण माना गया है.
- कुषाणों की सत्ता समाप्त होते ही राजपूताना एवं पंजाब में गणराज्यीय शासन था. गुप्तों के उदय से पूर्व तक निम्नलिखित गणराज्यों का अस्तित्व था–

  (अ) यौधेयगण–पूर्वी पंजाब से उत्तरी राजपूताना तक
  (ब) अर्जुनायन–दिल्ली-जयपुर-आगरा क्षेत्र
  (स) मालवगण–राजस्थान-अजमेर-टोंक-मेवाड़ क्षेत्र
  (द) मद्र–चेनाब (चिनाव) और रावी नदी के मध्य
  (य) कुणिन्द–सतलज और व्यास नदियों की घाटी में.

दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश
(Major States of South India)

मगध में शुंग और कण्वों की तरह दक्षिण भारत में दक्षिणापथ या उत्तर-पश्चिम दक्षिण में आन्ध्र-भृत्यों या सातवाहनों का राज्य तथा दूसरा कलिंग का चेत या चेदि राजवंश था. वाकाटकों का उदय भी इसी दौरान हुआ था.

आन्ध्र सातवाहन
(The Andhra-Satavahanas)

उत्पत्ति

- साक्ष्यों के अनुसार सातवाहन शक्ति का केन्द्र पैठन या प्रतिष्ठान था, जो एक व्यापारिक नगर था.
- आन्ध्र प्रदेश सातवाहनों का उद्गम क्षेत्र माना जाता है, जहाँ से वे गोदावरी नदी के तट के साथ आगे बढ़ते हुए पश्चिम में आ गये. मौर्य साम्राज्य की बदतर हालात को देखकर साम्राज्य स्थापित कर लिया, इसी तरह इन्हें आन्ध्र-सातवाहन कहा गया.
- दक्षिणाधिपति, त्रिसमुद्रापति, त्रिसमुदतोयपीत वाहन के नाम से सातवाहन शासक विख्यात थे. पुराणों में सातवाहन शासकों को आन्ध्र-भृत्य कहा जाता था.
- के. पी. जायसवाल अशोक के अभिलेख में वर्णित सत्तियपुत्त को सातवाहन मानते हैं.
- डॉ. सुखठणकर के अनुसार सातवाहन आन्ध्र प्रदेश के पश्चिम भाग के थे और उनकी राजधानी पैठन थी.
- डॉ. जी. याजदानी के अनुसार आंध्र उनकी जाति थी एवं सातवाहन उनका कुल नाम था.
- कथासरित्सागर के अनुसार सातवाहन की उत्पत्ति सात नामक यक्ष से हुई है.
- अभिधम्म चिन्तामणि के अनुसार सातवाहन का अर्थ 'जिसे सुखदायक वाहन प्राप्त हो' है.
- डॉ. भण्डारकर के अनुसार सातवाहन क्षत्रियों में आते थे.
- मत्स्य पुराण के अनुसार 450 वर्षों तक 30 राजाओं ने शासन किया.
- वायु पुराण के अनुसार सातवाहन के 19 शासकों ने ही 300 वर्ष तक शासन किया.
- पुराणों के अनुसार कण्वों के पतन के मूल में सातवाहन जिम्मेदार थे.

प्रमुख सातवाहन शासक

क्र. सं.	सातवाहन शासक	शासनकाल	साहित्यिक/ऐतिहासिक स्रोत	शासन के सम्बन्ध में जानकारी	अन्य उल्लेख
1.	सिमुक	60-37 ई. पू.	जैन ग्रन्थ, पुराण	राजधानी प्रतिष्ठान या पैठन थी. सातवाहनों की शक्ति को स्थापित करने वाला प्रथम शासक था. पुराणों के अनुसार शुंग कण्व शासन का विनाशक. जैन एवं बौद्ध मन्दिरों, चैत्यों का निर्माण कराया. 60 ई. पू. कण्व शासक सुशर्मन को पराजित किया.	अत्याचारी और दुष्टता आ जाने के कारण 23 वर्ष बाद मार दिया गया.
2.	कृष्ण या कान्ह	37-27 ई. ज्ञात तिथि	नासिक, पुराणों अभिलेख	वह सिमुक का भाई था. उसने सातवाहन शक्ति का विस्तार किया था. नासिक की एक गुफा इसी दौरान खुदवाई गई थी.	साम्राज्य का विस्तार पश्चिम में किया था.
3.	शातकर्णी प्रथम	27-17 ई.	नयनिका अभिलेख, पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी, सांची अभिलेख एवं पुराण	वह सिमुक का पुत्र या भतीजा था. दक्षिणापथ का सबसे शक्तिशाली राजा था. राज्य विस्तार के लिए अमिय वंश की राजकुमारी नयनिका से शादी की तथा पश्चिमी मालवा, अनूप प्रदेश और विदर्भ पर अधिकार किया. खारवेल कलिंग शासक से युद्ध किया. अप्रतिहत चक्र एवं दक्षिण पथपति के नाम से जाना जाता था.	दो अश्वमेध एवं राजसूय यज्ञ किये. ऊपरी दक्कन, मध्य एवं पश्चिमी-भारत, उत्तरी कोंकण काठियावाड़ उसके साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे.
4.	वेदिसिरी तथा सतिसिरी	17 ई. के बाद	पुराण	शातकर्णी प्रथम के नाबालिग पुत्र थे. शासन माता नयनिका ने किया, जो सातवाहन वंश का पतन का कारण बना.	
5.	शातकर्णी द्वितीय लम्बोदर, अपिलक कुंतल शातकर्णी	शातकर्णी प्रथम के पुत्रों के पश्चात् इनके द्वारा शासन किए जाने का उल्लेख मिलता है	पुराण	सभी नाममात्र के शासक थे. इनके काल में शकों ने कोंकण मालवा एवं काठियावाड़ पर अधिकार कर लिया था.	महाक्षत्रप नहपान ने सात-वाहनों की शक्ति का अन्त किया था.
6.	हाल	20-24 ई.	पुराण	सातवाहनों का 17वाँ शासक. प्रसिद्ध साहित्यकार विद्वान् एवं कवि बृहत्कथा का रचयिता गुणाढ्य का समकालीन.	हाल ने प्राकृत में ग्राम्य जीवन पर गाथा-सप्तशती की रचना की थी. नहपान और ऋषभदेव शक महाक्षत्रपों ने सातवाहन वंश की शक्ति को नष्ट कर दिया था.
7.	गौतमी पुत्र शातकर्णी	106-130 ई.	नासिक प्रशस्ति जोगलथम्बी से प्राप्त मुद्राएँ एवं गौतमी वनश्री के अभिलेख	सातवाहन वंश का पुनर्संस्थापक एवं क्षहरात वंश का विनाशक. सातवाहन वंश का 23वाँ शासक. माता के नाम से पहचाना जाने वाला शासक. पश्चिम के मालिक एवं प्रतिष्ठान के मालिक की उपाधियाँ धारण कीं.	नहपान को पराजित कर महाराष्ट्र एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में सातवाहन सत्ता स्थापित की. असिक (गोदावरी और कृष्णा का. मध्यवर्ती क्षेत्र) असक, मूलक, सुरथ कुकुर, पारियात्र अपरान्त, अनूप विदर्भ और अवन्ति उसके साम्राज्य में आते थे.
8.	वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी (पुनुमायी)	130-154 ई.	टॉलेमी का विवरण पुराण, नासिक, कार्ले एवं अमरावती अभि-लेख, गोदावरी एवं गुंटूर से प्राप्त सिक्के.	गौतमीपुत्र शातकर्णी का पुत्र. नवकार या नपगर की स्थापना की. शकों के साथ मधुरता बनाने के लिए रुद्रदामन प्रथम की पुत्री से विवाह किया. आन्ध्र राज्य का प्रथम शासक.	रुद्रदामन ने पुलुमावी को दो बार पराजित किया. महाराज एवं दक्षिणपथेश्वर की उपाधि धारण की. अमरावती के स्तूप का विस्तार किया.

पुलुमावी[1] के उत्तराधिकारी एवं सातवाहन साम्राज्य का विघटन

पुलुमावी के पश्चात् शिव श्री पुलोमा तथा शिवस्कन्द शातकर्णी ने दस वर्षों तक नाममात्र का शासन किया. सातवाहनों का अन्तिम शासक यज्ञ श्री शातकर्णी था, जिसने 165 ई. में सातवाहनों की सत्ता पर अधिकार किया. 195 ई. तक यज्ञश्री शातकर्णी ने शासन किया. यज्ञश्री शातकर्णी ने रुद्रदामन के उत्तराधिकारियों के साथ संघर्ष जारी रखा. उनसे उसने उत्तरी कोंकण, महाराष्ट्र, आन्ध्र अपने अधिकार में ले लिए. कर्दमक शकों से भी उसने अपरान्त एवं नर्मदाघाटी छीन ली. बंगाल की खाड़ी से अरब-सागर तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया था. इसके पश्चात् विजयचण्ड श्री, पुलुमावी चतुर्थ सातवाहन शासक हुए, जो नाममात्र के शासक थे. उनकी स्थिति से परिचित होकर उत्तर-पश्चिम में आभीर, दक्षिण में चुट्टू, आन्ध्र में इक्ष्वाकुओं का आविर्भाव हुआ. दक्षिण-पूर्व में पल्लवों, मध्य प्रदेश में वाकाटकों ने अपनी सत्ता को स्थापित किया. आभीरों ने उत्तरी-पश्चिमी महाराष्ट्र सातवाहनों से छीन लिया. इससे बरार, पूर्वी दक्षिण, कन्नड़ प्रदेश तक ही सातवाहन शेष रह गये. तीसरी शताब्दी के मध्य तक इक्ष्वाकुओं और पल्लवों ने सातवाहनों का पूर्णतः विनाश कर दिया.

वाकाटक राजवंश

सातवाहनों के पतन एवं चालुक्यों के आविर्भाव के मध्य दक्कन में सर्वाधिक प्रबल राजवंश के रूप में वाकाटक राजवंश उभरा. वाकाटकों ने तीसरी से छठी शताब्दी तक शासन किया. पुराणों के अनुसार विन्ध्यशक्ति वाकाटकों का संस्थापक था. विन्ध्यशक्ति की प्रारम्भिक राजधानी पुरिका (बरार) में थी. वाकाटकों के प्रमुख शासक निम्नलिखित थे–

1. विन्ध्यशक्ति

- वाकाटक राज्य का संस्थापक राजा विन्ध्यशक्ति ने 255-275 ई. के मध्य शासन किया. उसे सातवाहन वंश का कोई अधीनस्थ पदाधिकारी माना जाता था.
- विन्ध्यशक्ति की तुलना इन्द्र और विष्णु से अजंता के अभिलेखों में की गई है. उसका गोत्र विष्णुवृद्धि था.

प्रवरसेन प्रथम

- प्रवरसेन प्रथम विन्ध्यशक्ति का पुत्र था, जिसने 275-335 ई. तक शासन किया. उसने महाराजा की उपाधि धारण की थी तथा दो अश्वमेध यज्ञ किये थे.
- नागवंशों से मधुर सम्बन्ध बनाने के लिए प्रवरसेन ने अपनी पुत्री का विवाह नागवंशीय शासक भवनाग से किया था. प्रवरसेन ने अपने राज्य को दो पुत्रों में विभाजित कर दिया था–
  1. गौत्तमी पुत्र के लिए जिसका केन्द्र नन्दिवर्धन (नागपुर) था.
  2. सर्वसेन के लिए जिसका केन्द्र, वत्सगुल्म (बरार) था.

रुद्रसेन प्रथम

रुद्रसेन प्रथम प्रवरसेन के बड़े पुत्र गौतमीपुत्र का पुत्र था, जिसने प्रवरसेन के बाद 335-360 ई. तक शासन किया था. शासन के लिए रुद्रसेन प्रथम ने अपने नागवंशीय शासक नाना भवनाग की सहायता ली थी. समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति में दक्षिण के राज्यों में वाकाटकों का उल्लेख नहीं मिलता है.

पृथ्वीसेन प्रथम

रुद्रसेन प्रथम के उत्तराधिकारी के रूप में पृथ्वीसेन प्रथम ने 360 ई. में राज्यभार ग्रहण किया और 385 ई. तक शासन किया. गुप्तों के प्रभाव को देखते हुए पृथ्वीसेन ने गुप्तों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे. पृथ्वीसेन ने अपने पुत्र रुद्रसेन द्वितीय का विवाह गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त से किया था.

रुद्रसेन द्वितीय

- पृथ्वीसेन के पुत्र एवं चन्द्रगुप्त के दामाद रुद्रसेन ने 385 ई. से 390 ई. तक शासन किया. पत्नी के कारण उसने बौद्ध धर्म त्यागकर वैष्णव धर्म स्वीकार कर लिया था. शासन के 5 वर्ष पश्चात् उसकी अकाल मृत्यु हो गई थी.
- रुद्रसेन की मृत्यु के बाद दिवाकर सेन एवं दामोदर सेन दो नाबालिग पुत्रों की संरक्षिका के रूप में 390 से 410 ई. तक प्रभावती ने शासन किया.

प्रवरसेन द्वितीय

साहित्यिक और कलात्मक गतिविधियों से जुड़ा हुआ शासक प्रवरसेन द्वितीय प्रारम्भ में दामोदरसेन के नाम से जाना जाता था. उसने 410-440 ई. तक शासन किया. यह वाकाटक वंश की मुख्य शाखा का अन्तिम शासक था. वैष्णवधर्म को मानने वाले प्रवरसेन ने 'सेतुबन्धकाल' की रचना की थी. प्रवरपुर राजधानी उसी ने बनायी थी. उसने कुंतलों से वैवाहिक सम्बन्ध सौहार्द की दृष्टि से स्थापित किये थे. प्रवरसेन के बाद नरेन्द्रसेन ने (440-460) ई. तक शासन किया. वाकाटक वंश का अन्तिम शासक पृथ्वीसेन द्वितीय (460-480) ई. था. पाँचवीं शताब्दी में वाकाटक वंश की मुख्य शाखा पर वाकाटकों की बेसिम शाखा ने अधिकार कर लिया.

1 पुलुमावी के लिए पुलुमायी शब्द भी प्रयुक्त होता है.

वाकाटकों की वेसिम शाखा

प्रवरसेन का पुत्र सर्वसेन वाकाटकों की वेसिम शाखा का संस्थापक था. प्रारम्भ में प्रवरसेन ने उसे उत्तरी हैदराबाद एवं बरार का शासक बनाया था. विन्ध्यसेन, प्रवरसेन, देवसेन, हरिषेण इस शाखा के प्रमुख शासक थे. 515-550 ई. के मध्य वाकाटकों की सत्ता का अन्त हो गया था.

कलिंग का चेदि वंश

दक्कन में सातवाहन वंश के उदय के दौरान कलिंग (उड़ीसा) में चेदिवंश का उदय हुआ. मिलिन्दपन्हों एवं वेसन्तर जातक में इस वंश के शासकों का उल्लेख मिलता है. इस वंश के शासक खारवेल का नाम इतिहास में प्रसिद्ध है.

खारवेल : संक्षिप्त परिचय

1. **नाम**	खारवेल
2. **राजवंश**	चेदिवंश
3. **ऐतिहासिक स्रोत**	हाथीगुम्फा अभिलेख
4. **बचपन**	खेलकूद, राजोचित शिक्षा में व्यतीत हुआ.
5. **राज्याभिषेक**	16 वर्ष की उम्र में (युवराज के रूप में)
6. **शासन ग्रहण**	24वें वर्ष में महामेघवाहन की मृत्यु के पश्चात्
7. **राज्यारोहण तिथि**	28 ई. पू.
8. **उपाधि**	कलिंग चक्रवर्ती, कलिंगाधिपति
9. **विवाह**	हत्थिसिंह या हत्यकसिंह के पौत्र ललाक की पुत्री से
10. **विजय अभियान**	1. विद्याधर की राजधानी पर 2. भोजकों और रथिकों पर अधिकार 3. यवनराज दमित्र पर
11. **निर्माण कार्य**	1. मगधराज नन्दराज द्वारा खुदाई नहर का विस्तार तनसुलि से कलिंग तक किया था. 2. प्राची नदी के दोनों तरफ महाविजय प्रासाद का निर्माण कराया. 3. ब्रह्माण्ड पुराण की उड़िया प्रति के अनुसार खारवेल ने भुवनेश्वर में एक मन्दिर का निर्माण कराया था. (प्रो. राधाकृष्ण चौधरी के अनुसार)
12. **अन्तिम समय**	धर्म प्रचारक के रूप में अन्तिम काल व्यतीत किया.

गुप्तकाल से पूर्व की व्यापारिक परिस्थितियाँ

विदेशी आक्रमणकारियों के भारत में आगमन से पूर्व मध्य एशिया और भारत के मध्य स्थायी रूप से व्यापारिक सम्बन्ध थे. पश्चिमी एशिया और अफगानिस्तान से भी भारत के व्यापारिक सम्बन्ध प्रबल थे. उस दौरान बौद्ध धर्म जोरों पर था. अतः बौद्ध धर्म प्रचारकों ने व्यापार को विकसित करने में महती भूमिका का निर्वहन किया. गुप्तकाल से पूर्व व्यापारिक परिस्थितियाँ निम्नलिखित थीं–

- व्यापारिक यात्राएँ वर्षा ऋतु में नहीं की जातीं. अतः वर्षा ऋतु में व्यापारिक गतिविधियाँ प्रायः बन्द ही रहती थीं.
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार घनी आबादी वाले एवं कीमती खनिज पदार्थ जहाँ पर उपलब्ध हो ऐसे स्थान पर होकर व्यापारिक काफिलों को गुजरना पड़ता था.
- गधे, बैल एवं खच्चर जैसे पशुओं की पीठ पर लादकर व्यापार किया जाता था. व्यापारिक यात्राएँ अत्यधिक लम्बी दूरी की होती थी.
- इस समय तटीय जहाजरानी का प्रयोग व्यापार के लिए किया जाता था.
- जल मार्ग से भी उस समय व्यापार होने लगा था. मिस्र, सीरिया, रोम के साथ जल मार्ग से व्यवसाय सम्पन्न होता था.
- संगम प्रदेश पूरी तरह उस समय जलमार्गीय व्यवसाय पर आश्रित था. तत्कालीन प्रदेश में समुद्र में समुद्री डाकुओं से ही सुरक्षा प्रदान करने की सुविधा थी.

व्यापारिक विवरण

- भारत के व्यापार को सुदृढ़ करने की दिशा में भारत की नदियाँ अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुईं. पश्चिम से भारत में नमक का व्यापार होता था. तत्कालीन परिस्थितियों में जहाज निर्माण का व्यवसाय भी जोरों पर था.
- लाल सागर परिभ्रमण ग्रन्थ के अनुसार जरी, मूँगा, लोवान, काँच के बर्तन, मदिरा एवं मुद्राएँ पश्चिमी देशों से आयात होती थीं.
- लोवान का अरब एवं काँच के सामान का आयात रोम से किया जाता था.
- समुद्री मार्गों के द्वारा दक्षिण-पूर्वी देशों से भारत का व्यापार होता था.
- मिलिन्दपञ्हों के अनुसार गुप्तकाल से पूर्व अन्तर्देशीय व्यापार भी प्रचलन में था.
- गुप्तकाल से पूर्व सामूहिक व्यापार संगठन, बेईमानों को दण्डित करना प्रचलित था.
- तत्कालीन राजा व्यापारिक कर का निर्धारण निम्न-लिखित तरीके से करता था–
  1. कर निर्धारण एक साथ न होकर किश्तों में प्रदान करने की सुविधा थी.
  2. प्रजा एवं व्यापारियों की अच्छी स्थिति होने पर ही पैदावार के हिसाब से कर लगाया जाता था.
  3. व्यापारिक स्थिति एवं क्षमता के आधार पर ही कर का निर्धारण होता था.

- राजघराने से जिन वस्तुओं का निर्यात होता था उसका मूल्य निर्धारण मूल्यांकक द्वारा ही किया जाता था.
- उज्जैन, बंगाल में तामलुक तथा चन्द्रकेतुगढ़, वाराणसी, मथुरा, कौशाम्बी उस समय के प्रमुख व्यापारिक नगर थे.
- वस्त्र उत्पादन, हाथीदाँत का व्यवसाय वाराणसी में बहुत बड़े पैमाने पर होता था.
- गांधार का तक्षशिला प्रदेश मूर्ति व्यवसाय का केन्द्र था, जो बौद्ध मठों के द्वारा प्रकाश में आया. मथुरा और अमरावती भी अन्य मूर्ति कला के प्रमुख केन्द्र थे.
- 'अनाथपिण्डक' के अनुसार जेतवन उद्यान की सम्पूर्ण भूमि को सोने की मुहरों से ढककर खरीदा था और उसे महात्मा बुद्ध को सौंप दिया गया था.
- वैजयन्ती के एक व्यापारी ने कार्ले की एक चैत्यगुफा का निर्माण कराया था.
- गुप्तकाल से पूर्व व्यवसाय एवं वाणिज्य वैश्यों के हाथों में था, लेकिन आगे चलकर यह ब्राह्मणों के हाथों में भी आ गया था.
- मनुस्मृति, भूरिदत्त जातक, सुत्तनिपात, महासुतसोम जातक एवं अन्य साक्ष्यों के आधार पर पूर्व गुप्तकाल में ब्राह्मणों के व्यवसाय करने का उल्लेख मिलता है.
- व्यवसाय एवं शिल्प के आधार पर ही समाज का वर्गीकरण होता था. वर्ण व्यवस्था जोरों पर अवश्य थी, लेकिन समाज वर्गीकरण वाणिज्य, व्यवसाय पर आधारित था.
- व्यापारियों की आर्थिक स्थिति अच्छी थी. श्रेष्ठि के रूप में तक्षशिला, वाराणसी, राजगृह, श्रावस्ती, मिथिला आदि व्यापारिक नगरों में व्यवसायी निवास करते थे.
- उधार एवं ब्याज लेने-देने की परम्परा प्रारम्भ हो चुकी थी.
- व्यापारी अपना नेता चुनते थे, जिसे सार्थवाह कहा जाता था.
- गुप्तकाल से पूर्व व्यापारियों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता था–
  1. सार्थवाह–व्यापारियों का मुखिया
  2. सेठी–धन देने वाला
  3. वणिक–सामान्य व्यवसायी

गुप्तकालीन वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक स्थिति

- गुप्तकाल में व्यवसायी और व्यापारी निगमों एवं श्रेणी में संगठित थे. जुलाहे, तेली, श्रेष्ठियों एवं सार्थवाहों के निगम बने हुए थे.
- व्यवसायी ईमानदार होते थे. सूद, उधार देने की परम्परा जोरों पर थी. बन्धक ऋण की व्यवस्था थी. ब्याज की दर 15 प्रतिशत थी.
- निगमों एवं श्रेणियों का एक मुखिया होता था, जो चार सहयोगियों की सहायता से निगम एवं श्रेणी का संचालन करता था.
- मृर्त्तिकार, कुम्भकार, शिल्पकार, वणिक, तैलिक, पटकारों की श्रेणी एवं निगम के साक्ष्य प्राप्त होते हैं.
- 'श्रेष्ठी सार्थवाहकुलिक निगम' की 274 मिट्टी की मोहरें उत्खनन के दौरान वैशाली से प्राप्त होने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.
- नारद स्मृति में व्यवसायियों की श्रेणी, संगठन एवं मुखियाओं के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है. श्रेणियों का मुखिया आचार्य होता था और शार्गिद या अन्तेवासी उसका अधीनस्थ कर्मचारी होता था.
- नारद स्मृति के अनुसार–"श्रेणी का मुखिया आचार्य अन्तेवासी के साथ पुत्र जैसा व्यवहार करें. घर से खाने की व्यवस्था बिना अतिरिक्त कार्य कराये हुए करें."
- गुप्तकाल में भड़ौंच पश्चिमी समुद्र तट पर एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह तथा समुद्री नगर था, जो प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था. पाटलिपुत्र से कौशाम्बी और उज्जयिनी होते हुए एक मार्ग भड़ौंच तक पहुँचता था. रोम, मिस्र, यूनान, ईरान तथा अरब देशों को सामान पहुँचाने का सर्वाधिक सुगम मार्ग भड़ौंच से ही था. कल्याण, चौल तथा कैम्बे भी बड़े बन्दरगाह थे.
- ताम्रलिप्ति भी एक बड़ा बन्दरगाह था, जो पूर्वी समुद्र तट पर बंगाल की खाड़ी के तट पर अवस्थित था. ताम्रलिप्ति से भारतीय व्यापारी जावा, सुमात्रा, बर्मा, चीन एवं सुदूर पूर्व के देशों में अपने सामान का निर्यात करते थे एवं गर्म मसाले मँगाते थे. दक्षिणी पूर्वी देशों से गुप्तों ने अपने सर्वाधिक व्यापार सम्बन्ध स्थापित किये थे. घंटशाली, कावेरीपट्टम, तोंदई, कोरकई तथा कदूर आदि दक्षिण पूर्व के महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह थे.
- अन्तर्देशीय व्यापार भी प्रचलित था, जो नदियों एवं थल मार्ग द्वारा होता था. प्रमुख अन्तर्देशीय व्यापारिक केन्द्र–पेशावर, मथुरा, अहिच्छत्र एवं भड़ौंच थे.
- गुप्तकाल में भी निगम, संगठन की प्रथाएँ प्रचलित थीं. श्रेष्ठी और सार्थवाह ये दो व्यापारियों की श्रेणी थी. सार्थवाह व्यापारिक मार्ग, व्यवस्था, खानपान के निर्देशन के लिए होते थे तथा श्रेष्ठी व्यवसाय करते तथा उधार धन देते थे.

गुप्तकालीन आयातित वस्तुएँ

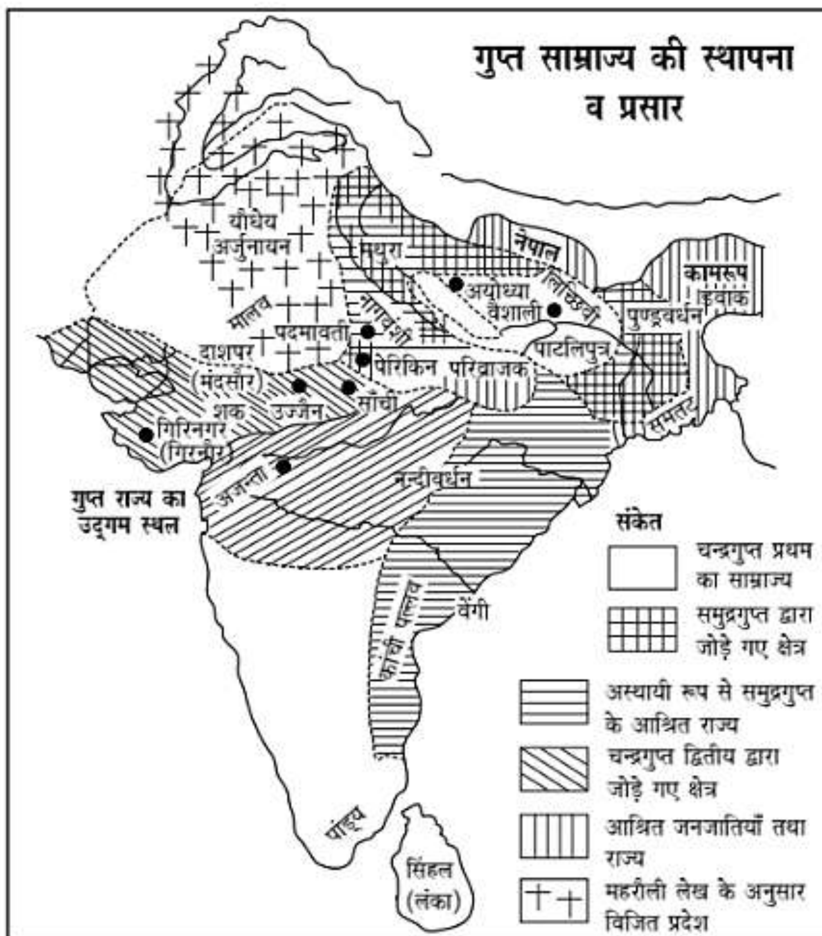
नाम देश	आयातित वस्तुएँ
चीन	रेशम
इथोपिया	हाथीदाँत
अरब	अच्छी नस्ल के घोड़े
ईरान	अच्छी नस्ल के घोड़े
बैक्ट्रिया	अच्छी नस्ल के घोड़े
श्रीलंका	नीलम, चाँदी
भूमध्यसागरीय प्रदेश	ताँबा
अफगानिस्तान	चाँदी

- खजूर, सोना, जस्ता, टीन, कपूर, मूँगा का आयात भी गुप्तकाल में भारत करता था.
- साधारण वस्तुओं की खरीद कौड़ियों के द्वारा होती थी.

गुप्तकालीन निर्यातित वस्तुएँ

- गुप्तकाल में कालीमिर्च और रेशम का निर्यात रोम को किया जाता था, जिसके बदले सोने का आयात किया जाता था. इतिहासकार प्लिनी के अनुसार रोम की दयनीय अवस्था के फलस्वरूप उस समय सोने में मिलावट के अवशेष साक्ष्य स्वरूप प्राप्त होते हैं.
- कास्मास के अनुसार गुप्तकाल में भारत का व्यापार इथोपिया, अरब और ईरान के साथ होता था. इन देशों को भारत द्वारा मणियाँ, मोती, कपड़ा, सुगन्धित पदार्थ, नारियल, हाथीदाँत, मसाले, धूप, नील, औषधियाँ इत्यादि भेजे जाते थे.
- गुप्तकाल में कपड़े का व्यवसाय सर्वाधिक होता था. पश्चिमी भारत में रेशम तैयार किया जाता था और चीन से भी रेशम का आयात होता था.

निष्कर्ष–प्राक् गुप्तकाल एवं गुप्तकालीन समय में देश का व्यापारिक विकास जितना हुआ, उतना किसी युग में नहीं हुआ. भारत की समृद्धता सम्पन्नता का एकमात्र कारक तत्कालीन व्यापार था. कालीमिर्च, रेशम, कपड़े, मसाले, सुगन्धित द्रव्यों को भारत से निर्यात किया जाता था और आवश्यक चीजें सोना, नीलम, ताँबा, चाँदी का आयात किया जाता था. ऐतिहासिक स्रोतों में कुछ विवरणों में रोम द्वारा की जाने वाली धोखाधड़ी का उल्लेख मिलता है, अन्यथा तत्कालीन व्यावसायिक उत्कर्ष का ही विवरण प्राप्त होता है. वस्तुतः इस काल को व्यावसायिक सन्दर्भ में श्रेष्ठ व्यापारिक युग कहना तर्कसंगत होगा.



गुप्तकाल के बाद की भू-सम्पदा व्यवस्था

- वैदिककालीन संस्कृति से ही राज्य की आय का सर्वोच्च साधन भूमि राजस्व रहा है. राज्य की अर्थव्यवस्था का एकमात्र स्रोत भूमि से होने वाली उपज, कर इत्यादि रहा है. मौर्य साम्राज्य के दौरान से अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हुआ और अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्देशीय व्यापार राज्य की आय में वृद्धिकारक सिद्ध हुआ. इस दौरान व्यापारिक यूरोपीय देशों से भारतीय राजाओं के सम्बन्ध मधुरतम् रहे. गुप्तकाल के प्रारम्भ में विशिष्ट परिस्थितियों के चलते पश्चिमी देशों से भारत का व्यापार कम हो गया जिससे सीधा असर राज्य की आय पर पड़ा. इस स्थिति को सुदृढ़ बनाने की दिशा में गुप्त राजाओं ने दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से सम्बन्ध बनाकर व्यापारिक क्षेत्र को उन्नत किया. यह हालत अधिक दिनों तक नहीं रही और गुप्तोत्तर काल में पुनः व्यापारिक स्थिति डाँवाडोल हो गई और राज्य की आर्थिक स्थिति पूर्णतः भूमि पर आश्रित होकर रह गई.

भूमि का वर्गीकरण

- गुप्तकालीन अभिलेखों में भूमि के कई प्रकार के वर्गीकरण किये गये हैं. अमरसिंह द्वारा रचित अमरकोष में 12 प्रकार की भूमियों का उल्लेख किया गया है. आर्थिक दृष्टि से भूमि को निम्न तरह से वर्गीकृत किया गया था–
  (1) **क्षेत्र**–खेती के लिए उपयुक्त भूमि.
  (2) **वास्तु**–निवास करने के उपयुक्त भूमि.
  (3) **खिल**–जिस भूमि को जोता नहीं जाता.
  (4) **चरागाह**–पशुओं के चराने योग्य भूमि.
  (5) **अप्रहत**–बिना जोती गई जंगली भूमि.
  (6) **वाहीत**–भूमि जिसमें बोया जाता हो.
  (7) **अकृष्ट**–जिसमें खेती नहीं की गई हो.
  (8) **ऊसर**–जहाँ बीज न उगता हो.
- इस दौरान स्वामित्व की दृष्टि से भूमि को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया था–
  (1) परती भूमि–प्रत्यक्ष रूप से राज्य के लिए अधिकृत भूमि.
  (2) राज्य द्वारा गृहित भूमि–ऐसी भूमि जो राजा दान कर सकता था.
  (3) निजी स्वामित्व की भूमि–ऐसी भूमि जिस पर किसान का स्वयं का हक होता था.
- नारदस्मृति के अनुसार गुप्तोत्तरकालीन भूमि को निम्न-लिखित चार भागों में वर्गीकृत किया गया था–
  (1) उर्वर
  (2) बंजर (इरिण)
  (3) खिल
  (4) मरु
- गुप्तोत्तरकालीन भूमि-वर्गीकरण में स्वामित्त्व की दृष्टि से एक वर्गीकरण निम्नलिखित भी मिलता है–
  (1) कौटुम्बिक–कृषक परिवार के स्वामित्त्व वाली भूमि.
  (2) साक्त–व्यक्तिगत स्वामित्त्व वाली भूमि.
  (3) प्रकृष्ट (कृष्ट)–विभिन्न किसानों द्वारा जोती जाने वाली भूमि.
- जिन भूभागों को निःशुल्क, बिना कुछ लिए हुए अनुदान दिया जाता था, उनको चतुर्वेयग्राम, आप्रद, शासन, ब्रह्मदेय ग्राम के नाम से जाना जाता था.
- सिद्धान्ततः जलाशय, घास और चरागाह, उपवन, बंजर भूमि एवं साधारण भूमि पर स्वामित्व अनुदान प्राप्त करने वालों का माना जाता था.

भूमिदान परम्परा

- गुप्तोत्तर काल में भूमिदान प्रथा बड़े जोरों पर चलने लगी थी. इसका एकमात्र कारण राजाओं के पास मुद्रा की कमी थी.
- मिताक्षरा के अनुसार भूमिदान का अधिकार केवल राजा को ही था. यह अधिकार सेवा के बदले सम्पत्ति प्राप्त करने वाले को नहीं सौंपा गया था.
- मनुस्मृति में भूमिदान द्वारा राज्य कर के भुगतान के सम्बन्ध में लेख मिलता है.
- मेधातिथि के अनुसार राजा भू-स्वामी था और यह अधिकार सफाई करके कृषि योग्य भूमि बनाने वाले को भी प्राप्त था.
- भूमि अनुदानों को गुप्तोत्तरकाल में आज्ञापत्र के नाम से जाना जाता था.
- गुप्तोत्तरकाल में ब्राह्मणों को दान में एवं सामन्तों को जागीर में प्राप्त होने वाली भूमि पर शूद्र कृषक् बँटाई पर खेती करते थे.
- ब्राह्मणों को दान में भूमि का देना अग्रहार कहलाता था और उसको ग्रहण करने वाला गृहिता होता था. यह भूमि करमुक्त होती थी. यह भूमि ग्रहिता की पैतृक सम्पत्ति बन जाती थी. ग्रहिता से नाराज होने पर राजा उससे यह भूमि वापस ले सकता था.

- अधिकारियों को उनके वेतन के बदले भूमिदान देने की प्रथा इस समय विद्यमान थी; इससे सामन्तवादिता का उदय हुआ था.

गुप्तोत्तरकालीन सिंचाई व्यवस्था

- अग्निपुराण के अनुसार कृषि वृद्धि के लिए सिंचाई के साधनों को जुटाना राजा के आठ कर्त्तव्यों में से प्रमुख एक माना जाता था.
- संस्कृत ग्रन्थों में अरघट्ट और अरघट्ट खींचने वाले (अगरगृट्टीयनर) का उल्लेख मिलता है. रहट से सिंचाई होने के साक्ष्य मिलते हैं.
- सिंचाई के लिए चन्देल एवं परमार राजाओं ने झीलों एवं तालावों का निर्माण कराया था. यह उल्लेख प्राप्त होता है.
- हर्षचरित के बाणभट्ट ने सिंचाई की विधियों का उत्कृष्टतम् स्वरूप में वर्णन अपनी कृति में किया है.
- भूमि व्यवस्था के विरोध करने के लिए इस काल में लिंगायत सम्प्रदाय का आविर्भाव हुआ था.
- वर्षा का पानी पोखरों में जमा कर सिंचाई करने के गुप्तोत्तरकालीन साक्ष्य मिलते हैं.

गुप्तोत्तरकालीन भूमिकर व्यवस्था

- गुप्तोत्तरकाल में भूमि कर जमीन की उत्पादन क्षमता एवं वास्तविक उत्पादन के आधार पर 1/12 से लेकर 5/6 भाग तक निर्धारित होता था. गाँव का मुखिया 'ग्रामपट्टक' करों का संग्रह करता था. संन्यासी, ब्राह्मण एवं विद्वानों पर कर नहीं लगाया जाता था.
- गुप्तोत्तरकालीन प्रमुख कर निम्नलिखित थे–

  (1) **भाग**–यह प्रमुख कर था. पैदावार के आधार पर लिया जाने वाला 1/6 हिस्सा 'भाग' कर कहलाता था.

  (2) **भोग**–कृषक फल-फूल, सब्जी, लकड़ी एवं अन्य चीजें उपहार के रूप में राजा को प्रदान करते थे जिसे 'भोग' कर कहा जाता था.

  (3) **हिरण्य**–नकद रूप में वसूल किया जाने वाला कर 'हिरण्य' कहलाता था. यह खदानों के लिए वसूला जाता था.

  (4) **प्रत्यय**–चुँगी कर को प्रत्यय कर कहा जाता था.

  (5) **प्रस्थ**–ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों को प्रदान की जाने वाली राशि प्रस्थ कहलाती थी.

  (6) **उपरिकर**–अस्थायी कृषकों को जो कर देना पड़ता था, उसे उपरिकर कहा जाता था.

  (7) **उद्रंग**–स्थायी किसानों पर लगाया जाने वाला कर उद्रंग कहलाता था.

  (8) **शुल्क**–नावों से निर्मित पुलों पर जो चुँगी वसूल की जाती थी, उस चुँगीकर को 'शुल्क' कहा जाता था.

  (9) **बलि**–धार्मिक कृत्यों के लिए दिया जाने वाला कर बलि कहलाता था.

गुप्तोत्तरकालीन भूमि की माप प्रणाली

- गुप्तोत्तरकाल में भूमि को मापने के लिए विभिन्न प्रकार की मापक प्रणालियाँ प्रचलित थीं. बंगाल से प्राप्त अभिलेखों में द्रोणवाद या कुलयावाप का उल्लेख मिलता है. गुप्तोत्तरकाल में भूमि की निम्नलिखित माप प्रणालियाँ विद्यमान थीं–

(1) निर्वतन	(2) पट्टिकहल
(3) पातक	(4) खरिवाप
(5) कूल्यवाम	(6) द्रोणवाय
(7) आढ़वाय	(8) खण्डूकवाप
(9) नालिकवाप.	

उत्तर-गुप्तकालीन पैदावार

- गुप्तोत्तरकाल में जौ, गेहूँ, चना, धान एवं विभिन्न प्रकार की दालें इस काल में पैदा होने के उल्लेख साक्ष्य रूप में प्राप्त हुए है. गन्ना, फलों एवं फूलों की कृषि भी होती थी. 'नीतिवाक्यामृत' के अनुसार गुप्तोत्तरकाल में पैदा होने वाले धान का संग्रह भी किया जाता था.
- गुप्तोत्तरकालीन भूमि के सम्बन्ध में ह्वेनसांग ने लिखा है–"राजकीय भूमि के चार भाग थे. एक भाग धार्मिक कृत्यों तथा सरकारी कामों में खर्च होता था. दूसरा बड़े-बड़े सार्वजनिक कार्यों व अधिकारियों पर खर्च होता था. तीसरा विद्वानों को पुरस्कार और वृत्ति देने के लिए था तथा चौथा भाग दान-पुण्य आदि के काम आता था."

भूमि व्यवस्था एवं सामाजिक जीवन

- भूमि तत्कालीन अर्थव्यवस्था का सर्वस्व कारक थी, अतः सामाजिक जीवन में परिवर्तन होना स्वाभाविक था. गुप्तोत्तर काल में भूमि व्यवस्था के फलस्वरूप दास प्रथा एवं सामन्ती प्रथा का जन्म हुआ था. स्त्रियाँ दास होने के उल्लेख वात्सायन के कामसूत्र में मिलता है. कामसूत्र के अनुसार खेती का कार्य करने वाली स्त्री दासों का उनके स्वामियों द्वारा उत्पीड़न किया जाता था. उन्हें श्रम के बदले पैदावार के पाँचवें भाग देने का रिवाज प्रचलित था.

- सामन्ती व्यवस्था अत्यधिक प्रबल थी. सामन्त राजा के अधीन होते थे. सामन्तों को अपनी पुत्री राजा को शादी में देनी पड़ती थी.
- गुप्तोत्तर काल में ग्रामों का निम्नलिखित भागों में वर्गीकरण हो गया था–
  (1) **अग्रहा**–ग्राम के सारे लोग ब्राह्मण होते थे, जिन्हें भूमि दान में मिली होती थी, जो कर मुक्त होती थी.
  (2) **ब्रह्मदेय**–एक ब्राह्मण या ब्राह्मण समूह के अन्तर्गत सम्पूर्ण भूमि पर स्थापित गाँव ब्रह्मदेय गाँव कहलाता था.
  (3) **अन्तर्जातीय गाँव**–भू-राजस्व के रूप में कर देने वाली विभिन्न जातियों के गाँव अन्तर्जातीय गाँव कहलाते थे.

गुप्तकालीन भूमि का क्रय-विक्रय

- गुप्तोत्तरकाल में बंगाल क्षेत्र में भूमि का स्वामी भूमि को ब्राह्मणों को बेचने के लिए स्वतन्त्र होता था.
- मध्य भारत में सामन्तों को भूमि-दान देने से पूर्व राजा से अनुमति लेना अनिवार्य था.
- ब्राह्मणों को दान में दी जाने वाली भूमि उनकी पैतृक सम्पत्ति हो जाती थी. कई मायनों में राजा नाराज होने पर ब्राह्मणों से यह जमीन वापस ले सकता था.
- बंगाल से प्राप्त पाँचवीं एवं छठी शताब्दी के ताम्रलेखों के अनुसार जब भी दान के लिए भूमि को खरीदा जाता था. उससे पूर्व प्रान्त और जिला के प्रशासनिक अधिकारियों को प्रार्थना-पत्र देना पड़ता था.
- गुप्तोत्तरकाल में ग्राम-सभा और राज्य संयुक्त रूप से भूमि का स्वामित्व रखते थे. क्रय और विक्रय से पूर्व ग्राम-सभा और राज्य से अनुमति लेना अनिवार्य होता था.
- जमीदारों की जमीन किसानों को जोतने के लिए देने की अनुमति थी, लेकिन बेचने के समय परिषद् से अनुमति लेना अनिवार्य था.
- बंजर जमीन का स्वामित्व राजा के पास होता था, लेकिन इसके उपयोग के लिए गाँव की पंचायत से अनुमति लेनी पड़ती थी. दान में दी गई भूमि का पट्टा दे दिया जाता था.

गुप्तोत्तरकालीन शब्दावली (भूमि व्यवस्था के सन्दर्भ में)

1. **क्षेत्र** — कृषि कार्य के योग्य भूमि.
2. **परती** — राजा के स्वामित्व वाली भूमि.
3. **बलि** — धार्मिक कर.
4. **भोग** — फल-फूल, सब्जी के रूप में दिया जाने वाले उपहार.
5. **अनुगृहीता** — वेतन के बदले में जमीन लेने वाला अधिकारी.
6. **अग्रहार** — ब्राह्मणों को दान में दी जाने वाली भूमि.
7. **अराघाट** — कुओं से रहट प्रणाली से पानी निकालना.
8. **विष्टी** — शिल्पी, श्रमिकों को दी जाने वाली बेगार.
9. **अपरहत** — खेती के अयोग्य भूमि.
10. **ग्रहिता** — दान ग्रहण करने वाला.
11. **ग्रामपट्टक** — ग्राम का राजस्व जमा करने वाला.
12. **इरिण** — बंजर जमीन
13. **हल-दण्ड** — हलों पर लगाया जाने वाला कर.
14. **वार्ता** — कृषि, पशुपालन, व्यापार का संयुक्त नाम.
15. **अर्धिक** — फसल काटने वाली जाति.
16. **मेलवार** — मन्दिरों को राज्य द्वारा सौंपे गाँवों से प्राप्त आय.
17. **हिरण्य** — खदानों पर लगने वाला कर.
18. **मुक्ति** — प्रान्त
19. **एरीहट्टी** — दान में दी गई भूमि का जारी किया गया पट्टा.
20. **विषय** — जिला
21. **पंचकुल समिति** — राज्य का राजस्व एकत्र करने वाली संस्था.
22. **भूमि छिद्र न्याय** — भूमि को सबसे पहले जोतने वाला अधिकार.
23. **एरीयत्ती** — दक्षिण भारत की विशेष भूमि.

निष्कर्ष–गुप्तकाल को स्वर्ण युग कहना अतिशयोक्ति नहीं है, लेकिन प्राक्गुप्त काल की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि उसी के फलस्वरूप व्यापारिक, साहित्यिक, सामाजिक परम्पराओं को श्रेष्ठ स्वरूप में विकसित किया जा सका. अतः यदि गुप्तकाल स्वर्ण युग है, तो प्राक् गुप्तकाल 'रजत युग' निश्चित रूप से होगा.

प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन

- प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार वर्ण व्यवस्था थी. ऋग्वैदिक काल में समाज आर्य और अनार्य में बँट गया था.
- समय के चलते आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ बदल गई थीं और समाज वर्ण-विहीन नहीं रह गया था. वर्ण एवं कर्म के अनुसार आर्यों का समाज भी निम्न-लिखित तीन वर्गों में विभक्त हो गया था–
  1. ब्राह्मण
  2. क्षत्रिय
  3. वैश्य.
- ब्राह्मण एवं क्षत्रिय को राजन्य कहा गया. सामान्य जन वैश्य के अन्तर्गत आते थे. उत्तर वैदिक काल में अनार्यों को सामाजिक वर्ग में शामिल कर चौथा वर्ण शूद्र बनाया गया. इस तरह ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के नाम से चार वर्ण प्रसिद्ध हुए.

- ऋग्वेद के दसवें मण्डल के अनुसार ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य एवं पैर से शूद्र का आविर्भाव हुआ. शूद्र की श्रेणी में अनार्यों को रखा गया था.
- वर्ण व्यवस्था कठोर नहीं थी और इस दौरान उसका आधार व्यवसाय था. इस सन्दर्भ में ऋग्वेद में एक उद्धरण है–"मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं, मेरी माँ पत्थर की चक्की चलाती है. धन की कामना करने वाले नाना कर्मों वाले हम एक साथ रहते हैं."

इस तरह सामाजिक व्यवस्था का यह प्रारम्भिक चरण था. जिसमें समाज, वर्ग, वर्ण, परम्पराएँ सभी शुरूआती दौर में थीं. अनवरत परिस्थितियों के अनुसार समाज की संरचना में, संस्कृति में परिवर्तन आता रहा.

सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न चरण

ऋग्वैदिककालीन सामाजिक स्थिति

- वर्ण व्यवस्था का प्रारम्भ हो चुका था, लेकिन ऋग्वैदिक काल में उसका आधार जन्मजात नहीं था तथा कर्म पर आधारित था. प्रारम्भ में तीन वर्ण थे–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य. उत्तर वैदिक काल में शूद्र वर्ण में अनार्यों को शामिल कर चतुर्थ वर्ण की व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ था.
- आर्यों का समाज पितृ सत्तात्मक था. समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार होता था. परिवार का सबसे प्रधान एवं नियन्त्रक कुलपति होता था. परिवार में पितृसत्तात्मक प्रधानता होते हुए भी स्त्रियों को यथोचित सम्मान एवं आदर प्रदान किया जाता था.
- ऋग्वैदिक काल में स्त्रियाँ विद्वता के लिए प्रसिद्ध थीं. विश्वतारा, विश्पला एवं घोषा इस काल की प्रमुख विदुषी महिलाएँ थीं.
- ऋग्वैदिक समाज में दास एवं दस्युओं का उल्लेख मिलता है. धनी वर्ग घरेलू दास रखते थे, लेकिन आर्थिक उत्पादन में दास का उपयोग नहीं होता था.
- ऋग्वैदिक काल में आर्य अनाज, दूध, दूध से बनी वस्तुएँ, फल, माँस, सुरा, सोमरस का प्रयोग करते थे.
- स्त्री पुरुष 'वास' (कमर के नीचे), अधिवास (कमर के ऊपर) वस्त्र पहनते थे. स्त्रियाँ नीवी (कंचुकी) भी पहनती थी. सूती, ऊनी वस्त्र पहने जाते थे. वस्त्र को रंगने, कशीदाकारी की कला का प्रचलन था.
- बाल संवारने, कुण्डल, हार, नुपूर जैसे आभूषण एवं द्यूत क्रीडा, नृत्य-गान, रथदौड़ मनोरंजन के प्रमुख साधन थे.
- आर्यों का निवास स्थान फूस, बाँस एवं लकड़ी से बनाया जाता था. ईंटों के बारे में नहीं जानते थे.
- ब्राह्मण शिक्षक होते थे, गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की जाती थी. मृतकों के दाह संस्कार की प्रथा प्रचलित थी. नियोग प्रथा एवं विधवा विवाह का प्रचलन था.

उत्तर-वैदिककालीन समाज

- उत्तर-वैदिककाल में सामाजिक व्यवस्था जटिल हो गई थी. वर्ण कर्म के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर हो गये थे. ब्राह्मण एवं क्षत्रिय समाज के सर्वश्रेष्ठ एवं पुरोधा बन चुके थे. वे उत्पादन के नियन्त्रक हो गये थे.
- उत्तर-वैदिककाल में वैश्य और शूद्र सुविधाविहीन वर्ग बन चुका था. सभी वर्णों के खान-पान विवाह सम्बन्धी नियम भी भिन्न-भिन्न थे. शूद्रों का उपनयन संस्कार निषेध था. पुलिन्द, आन्ध्र, पुण्ड्र, शबर, बाल, निषाद आदि वर्ण व्यवस्था में शामिल नहीं थे. शूद्र धार्मिक कर्मकाण्डों में भाग नहीं ले सकते थे.
- उत्तर-वैदिककालीन समाज में पुत्रियों को अभिशाप एवं पुत्रों को सुख का कारण माना जाता था. 'ऐतरेय ब्राह्मण' में पुत्र को परिवार का रक्षक एवं पुत्रियों को दुःख का कारण बताया गया है.
- उत्तर-वैदिककाल में विवाह एकात्मक होते थे. उच्च वर्णों में बहु विवाह की प्रथा प्रचलित थी. कन्याओं को बेचने, दहेज लेने, नियोग, विधवा विवाह का प्रचलन था.
- आश्रम व्यवस्था का उदय उत्तर-वैदिककालीन समाज में हुआ था. 100 वर्ष की औसतन आयु मानकर चार आश्रमों में जीवन विभक्त कर दिया गया था. चार आश्रम निम्नलिखित थे–

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम**–जीवन का पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम था, जीवन के प्रथम 25 वर्षों में इस आश्रम के नियमों का निर्वहन करना पड़ता था. अनुशासित रहना, तपस्या करना, गुरुकुल में रहकर विद्या प्राप्त करना प्रमुख नियम थे.
2. **गृहस्थाश्रम**–गृहस्थाश्रम जीवन का दूसरा चरण होता था. 25 से 50 वर्ष तक का समय इस आश्रम के अन्तर्गत आता था. विवाह करना, पुत्र पैदा करना, धन कमाना, अतिथि-सत्कार करना इस आश्रम के प्रमुख नियम थे.
3. **वानप्रस्थाश्रम**–वानप्रस्थाश्रम जीवन का तीसरा चरण होता था. 50 से 75 वर्ष की उम्र में वानप्रस्थाश्रम के नियमों का पालन करना पड़ता था. इस काल में सांसारिक जीवन से विरक्त होने, त्याग एवं तपस्या से जीवन व्यतीत करने तथा ब्रह्मचारियों को शिक्षा देने का नियम होता था.
4. **संन्यासाश्रम**–यह जीवन का अन्तिम आश्रम होता था. 75 से 100 वर्ष की उम्र संन्यास लेकर मोक्ष की प्राप्ति के लिए ईश्वर की आराधना करते हुए व्यतीत करनी पड़ती थी. उन्हें घूम-घूमकर उपदेश देने के कारण परिव्राजक कहा जाता था.

चार पुरुषार्थ

- उत्तर वैदिक काल में चार आश्रमों के साथ चार पुरुषार्थों की सर्वोपरि महत्ता थी. चार ऋण–देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण, मानवीय ऋण तथा चार पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के लिए हरपल प्रयासरत रहना पड़ता था, लेकिन यह व्यवस्था मात्र उच्चवर्ण तक ही सीमित थी.

बौद्धकालीन समाज

- छठी शताब्दी ई. में बौद्धकालीन समाज में वर्ण व्यवस्था जटिल हो गई थी. इस समय भी ब्राह्मणग्रन्थों में पूर्व वर्णित चार वर्ण थे, जो जन्म के आधार पर ही थे. पालि साहित्य के अनुसार इस काल में ब्राह्मणों से अधिक क्षत्रियों को श्रेष्ठ माना जाने लगा था. ब्राह्मणों की दो श्रेणियाँ हो गई थीं–वास्तविक ब्राह्मण एवं सांसारिक ब्राह्मण. सांसारिक ब्राह्मण पशुपालन एवं खेती करते थे तथा वास्तविक ब्राह्मण धर्म के ऊपर आश्रित रहते थे. क्षत्रिय एवं ब्राह्मण प्रतिद्वन्द्वी वन गये थे. शूद्रों की स्थिति दयनीय हो गई थी. व्यापार व्यवसाय के कारण वैश्यों की स्थिति सुदृढ़ हो गई थी. न्याय एवं दण्ड भी वर्ण के अनुसार निर्धारित होता था.
- नागरी-सभ्यता का विकास होने लगा था. मकान में पक्की ईंटों का प्रयोग होने लगा था.
- भोज्य पदार्थों में चावल, गेहूँ, साग-सब्जी, फल, दूध, मांस, मदिरा का प्रयोग किया जाने लगा था.
- स्त्रियों की दशा ठीक नहीं थी. स्त्रियों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से कम उम्र में शादी की जाती थी. स्त्रियाँ स्वतन्त्र नहीं थीं. उच्च वर्ग में वहु-विवाह होता था. गणिकाओं का वर्ग पैदा हो चुका था. गान्धर्व विवाह और स्वयंवर का प्रचलन राजपरिवारों में होने लगा था.

मौर्यकालीन समाज

- मौर्यकालीन समाज में भी चारों वर्णों का अस्तित्व पूरी तरह सुरक्षित था. ब्राह्मण विशिष्ट स्थान रखते थे. समाज के बौद्धिक एवं धार्मिक नेता पुरोहित, शिक्षक, मंत्री, सलाहकार के रूप में ब्राह्मणों को वरीयता दी जाती थी. ब्राह्मणों को करमुक्त भूमि भी प्रदान की जाती थी. क्षत्रिय राजकाज, सैनिक वृत्ति एवं प्रशासन से सम्बद्ध हो गया था. कृषि कार्य और व्यापार का कार्य वैश्य किया करते थे. शूद्र सेवावृत्ति, शिल्पकला, व्यापार, कृषि, पशु-पालन एवं वैश्यों के सहायक के रूप में कार्य करते थे.
- वर्णों के अतिरिक्त समाज में कई जातियाँ होने के उल्लेख मिलते हैं. कौटिल्य ने 15 मिश्रित जातियों का उल्लेख किया है. उन्हें 'अन्तवासिन' कहा गया है. अर्थशास्त्र में वर्णित प्रमुख अन्तवासिन–निषाद, अम्बस्ट, पार्श्व, रथकार, माद्राध, वैदेहक, सूत, श्वापक, चाण्डाल इत्यादि प्रमुख हैं.
- मेगास्थनीज की 'इण्डिका' के अनुसार मौर्यकालीन समाज निम्नलिखित सात जातियों में विभक्त था–

नाम जाति

1. दार्शनिक
2. किसान
3. शिकारी एवं किसान
4. शिल्पी एवं कारीगर
5. यौद्धा एवं सैनिक वर्ग
6. निरीक्षक या गुप्तचर वर्ग
7. अमात्य एवं सभासद वर्ग

(इण्डिका में वर्णित ये जातियाँ वर्ण व्यवस्था पर आधारित जातियाँ नहीं थीं, अपितु व्यवसाय-व्यापार से सम्बन्धित थीं.)

- दास, स्त्रीदासी, गणिकाओं, वैश्याओं का अस्तित्व मौर्यकालीन समाज में था.
- विवाह एकात्मक होते थे. वहु-विवाह होने के उदाहरण भी मिलते हैं.

विवाह के प्रकार

- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख मिलता है. ब्रह्म, देव, आर्ष, प्रजापत्य–धर्मसंगत एवं आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच विवाह अधार्मिक होता था. अनुलोम, प्रतिलोम विवाह, पुनर्विवाह, नियोग की प्रथा प्रचलित थी.

आठ प्रकार के विवाहों का वर्णनात्मक उल्लेख निम्नांकित पंक्तियों में अभिव्यक्त है–

1. **ब्रह्म विवाह**–पिता द्वारा शीलवान वर से दहेजादि देकर विधिवत् कन्या का विवाह करना.
2. **देव विवाह**–यज्ञ के पुरोहित के साथ पिता द्वारा कन्या का विवाह करने की रीति.
3. **आर्ष विवाह**–कन्या के पिता द्वारा किसी ऋषि से वर को कन्या देने के बदले एक गाय और बैल लेकर शादी करना.
4. **प्रजापात्य विवाह**–वर-वधु धर्माचरण करते हुए विवाह करते हैं, जिसमें कन्या का पिता धार्मिक कर्त्तव्यों के निर्वहन की शिक्षा देता है.
5. **आसुर विवाह**–वर पक्ष से कन्या के पिता द्वारा पैसे लेकर विवाह करना.
6. **गान्धर्व विवाह**–वर-वधु द्वारा प्रेम विवाह करना.
7. **राक्षस विवाह**–बलपूर्वक कन्या का अपहरण कर विवाह करना.
8. **पैशाच विवाह**–निद्रावस्था में होने पर कन्या के साथ संभोग करना.

- ब्रह्म, देव, आर्ष, प्रजापत्य, ब्राह्मण वर्ग के लिए, पैशाच, राक्षस, गान्धर्व, आसुर क्षत्रियों के लिए तथा आसुर, गान्धर्व, पैशाच विवाह शूद्र एवं वैश्यों के लिए निर्धारित थे.
- स्त्रियों को पुनर्विवाह, तलाक, सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार प्राप्त हो गये थे. स्त्री-स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध था. स्त्रियाँ रूपाजीवा (वेश्या) एवं गणिकाएँ होती थीं. स्त्रियाँ गुप्तचर भी होती थीं.
- चावल मुख्य भोजन होता था. मांस, मछली, मदिरा का प्रयोग किया जाता था. शतरंज, गेंद, गायन, नाटक, आखेट मनोरंजन के साधन थे.

गुप्तकालीन समाज

- गुप्तकालीन समाज की व्यवस्था मूलतः परम्परागत वर्ण-व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था पर ही आधारित थी. बौद्ध काल में जो ब्राह्मणत्व का पतन हुआ था उसे सातवाहन एवं शुंग शासकों ने उभारा और ब्राह्मण धर्म पुनर्स्थापित हुआ. यज्ञ और वलि की प्रथा पुनः प्रारम्भ हो गई थी. ब्राह्मणत्व प्रवल हो गया, जिससे क्षत्रियों का राजकार्य भी उन्होंने ही करना प्रारम्भ कर दिया था. शूद्र शिल्पकार एवं कारीगर वन गये थे. वैश्य और शूद्र आर्थिक रूप में समानान्तर वन गये थे.
- शूद्रों को तीन उच्च वर्गों की सेवा करना आवश्यक हो गया था. इन वर्गों को क्षति पहुँचाने पर शूद्रों को दण्ड देने का प्रावधान था. वर्णसंकर की परिकल्पना मौर्योत्तर काल में पूर्ण हो चुकी थी.
- स्त्रियों की अवस्था दयनीय हो गई थी. स्त्रियों को पुरुषों के संरक्षण में रहने के लिए बाध्य किया जाता था. बाल-विवाह, बहुविवाह, अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन था. स्त्री शासन करने लगी थी. भारतीयों ने पगड़ी, लम्वे कोट, पतलून, कुर्ता आदि पहनना प्रारम्भ कर दिया था.
- गुप्तकाल में आवास, न्याय, दण्ड एवं उत्तराधिकार सम्वन्धी नियम वना दिये गये थे. 'वृहत्संहिता' के अनुसार ब्राह्मण के घर में पाँच, क्षत्रियों के चार, वैश्यों के तीन एवं शूद्रों के घरों में सिर्फ दो कमरे होने चाहिए.
- वृहस्पति के अनुसार संकटकाल में ब्राह्मण दासों और शूद्रों का भी अन्न ग्रहण कर सकता था.
- संकटकाल में एक-दूसरे को व्यवसाय वदलने की अनुमति थी. इन्दौर से स्कन्द गुप्तकालीन अभिलेख के अनुसार क्षत्रिय वैश्य का भी कार्य करते थे.
- अस्पृश्यता तेजी पर थी. अछूतों को स्पर्श करना वर्जित था. फाह्यान के अनुसार अछूत वस्तियों से वाहर रहते थे एवं निकृष्ट कर्म करते थे.
- स्त्री शिक्षा, गणिकाओं, वेश्याओं का अस्तित्व था.
- शूद्र सेवावृत्ति के अतिरिक्त सैनिक कार्य, शिल्प, वाणिज्य व्यवसाय करने के लिए स्वतन्त्र थे.
- वाकाटक और कदम्व राजवंश ब्राह्मणों द्वारा स्थापित राजवंश थे.

गुप्तोत्तरकालीन समाज

- गुप्तोत्तरकाल में भी समाज जाति प्रथा एवं वर्ण के आधार पर ही संगठित था. ब्राह्मण धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करते थे. क्षत्रिय राजन्य वर्ग के थे, जिनका स्वभाव दयालुता से परिपूर्ण होता था. वैश्य व्यापार करते थे. शूद्र शिल्प, सेवा कार्य के अतिरिक्त कृषि का कार्य भी देखते थे. गुप्तोत्तरकाल में कुछ राज्यों में शूद्रों का शासन भी देखा गया था.
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार मतिपुर का राजा शूद्र था. निषाद, पार्श्व, पुक्कुस इत्यादि तत्कालीन शूद्रों की जातियाँ थीं.
- अस्पृश्यता जोरों पर थी. ह्वेनसांग के अनुसार चांडाल, मेहत्त तथा अछूतों को नगर के वाहर विशेष चिह्नों से युक्त मकान में रहना पड़ता था.
- सजातीय विवाह होते थे. अन्तर्जातीय विवाहों पर प्रतिवन्ध था. प्रतिलोम, अनुलोम विवाहों का प्रचलन था. स्त्री शिक्षा का प्रचलन था. पर्दा प्रथा नहीं थी. वैश्य और शूद्र स्त्रियाँ पुनर्विवाह करने के लिए स्वतन्त्र थी.
- विधवाओं को सफेद वस्त्र धारण करने पड़ते थे. गणिकाओं का गुप्तोत्तरकाल में भी अस्तित्व था.
- ह्वेनसांग के अनुसार कश्मीर निवासी धोखेवाजी एवं कायरता के लिए, मथुरा विद्वता एवं नैतिक आचरण के लिए, थानेश्वर अभिचार क्रिया तथा कन्नौज परिष्कृत जीवन के लिए प्रसिद्ध था. मालवा के लोग विद्वान् एवं नम्र स्वभाव वाले, मगधवासी विद्वानों को सम्मान देने वाले, कामरूप के लोग उग्र एवं ईमानदार थे.
- गुप्तोत्तरकाल में मृतकों का शवदाह, जल-विसर्जन और खुले छोड़ देने की प्रथा थी.
- दूध, घी, मक्खन, शक्कर, चावल, रोटी, मांस, मदिरा, लहसुन, प्याज का उपयोग भोजन में किया जाता था.

निष्कर्ष–परिवर्तन विकास का मूल है. प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था में भी प्रतिपल परिवर्तन हुए. प्राचीन समाज में वर्ण व्यवस्था का स्वरूप व्यवसाय पर आधारित था, जो क्रमशः जटिलतम परम्पराओं के साथ जन्मगत बनकर रह गया था. विभिन्न कालक्रमों में वर्ण व्यवस्था का स्वरूप विकृत अवश्य हुआ, लेकिन अन्त तक विद्यमान रहा. जातिगत विषमताओं में सर्वाधिक मार शूद्र वर्ग को झेलनी पड़ी. तुलनात्मक दृष्टि से प्राचीन भारत की मौलिक समाज संरचना के तत्त्व गुप्तोत्तरकाल ही नहीं अपितु वर्तमानकालिक समाज तक व्याप्त है.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

1. गुप्तकालीन शासक

क्र.सं.	नाम शासक	शासनकाल	सम्बन्धित जानकारी
1.	श्रीगुप्त	275-300 ई.	गुप्तवंश का संस्थापक एवं प्रथम राजा था. गुप्त नाम था और श्री उपाधि धारण करता था, ऐसा एलन फ्लीट, जायसवाल आदि विद्वानों का मानना है. प्रारम्भ में मुरुण्डों का अधीनस्थ शासक था. महाराजा की उपाधि धारण की. चीनी यात्री इत्सिंग का विवरण ऐतिहासिक स्रोत है. बनारस में प्राप्त मुद्राओं पर 'गुप्तस्य' और 'श्री गुप्तस्य' अंकित है. सारनाथ के पास चीनी यात्रियों के मन्दिर निर्माण एवं 24 गाँव दान देने का उल्लेख मिलता है. बिलसंद स्तम्भ लेख, भीतरी स्तम्भ लेख, जैन परम्पराएँ, पुराण, मुद्राएँ प्रमुख स्रोत हैं.
2.	घटोत्कच	300 से 314-20 ई.	श्री गुप्त का उत्तराधिकारी था. महाराज की उपाधि धारण करता था. सुपिया अभिलेख में (स्कन्दगुप्तकालीन) घटोत्कच को गुप्त वंश का संस्थापक बताया है. बसाढ़ से मिली मुद्रा पर 'श्री घटोत्कच गुप्तस्य' लिखा है. प्रभावतीपूना ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार गुप्तों का आदिराज घटोत्कच था. प्रयाग प्रशस्ति में घटोत्कच को गुप्तवंश का दूसरा राजा बतलाया है.
3.	चन्द्रगुप्त प्रथम	319-20-330 ई.	गुप्तवंश का सबसे शक्तिशाली एवं महान् शासक. महाराजाधिराज की उपाधि धारण की. लिच्छिवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये. लिच्छवी राजकुमारी कुमारी देवी से चन्द्रगुप्त का विवाह हुआ था, जिससे समुद्र गुप्त का जन्म हुआ था. चन्द्रगुप्त के वैवाहिक सम्बन्धों के साक्ष्य चन्द्रगुप्त कुमारदेवी प्रकार नामक सिक्कों में मिलता है जिन पर चन्द्रगुप्त और कुमारदेवी के चित्र हैं. कौमुदी महोत्सव के चन्द्रसेन को भी चन्द्रगुप्त प्रथम माना गया है. कुमारदेवी को महादेवी कहा गया था. वायुपुराण के अनुसार अनुगंगा, प्रयाग, साकेत और मगध चन्द्रगुप्त के राज्य की सीमाएँ थी. प्रो. गोयल के अनुसार समस्त विहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, मगध, वैशाली, वत्स, कोशल चन्द्रगुप्त I के साम्राज्य के हिस्से थे. गुप्त संवत् का आरम्भ चन्द्रगुप्त प्रथम ने ही किया था. फ्लीट के अनुसार प्रयाग प्रशस्ति, एरण, ऋद्धपुर अभिलेख प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत थे.
4.	समुद्रगुप्त पराक्रमाङ्क	330-380 ई., कुछ विद्वानों के अनुसार 335-380 ई. है.	महान् विजेता एवं पराक्रमी शासक के रूप में विख्यात. 'भारतीय नेपोलियन' के नाम से प्रसिद्ध. गुप्त राज्य की वृद्धि कर साम्राज्य का निर्माण किया. हरिषेण के प्रयाग प्रशस्ति से उसके गुणों पर प्रकाश पड़ता है. कई विद्वानों के अनुसार समुद्रगुप्त का नाम 'काच' था या फिर 'काच' उसका बड़ा भाई था. एरण अभिलेख, समुद्रगुप्त की मुद्राएँ, रघुवंश, आर्यमंजूश्रीमूलकल्प प्रमुख साहित्यिक स्रोत थे. आर्यावर्त से सैनिक अभियान प्रारम्भ किया. अच्युत, नागसेन, गणपति, नाग कोतकुल इत्यादि राजाओं को पराजित किया. रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, नंदी एवं बलवर्मन की भी समुद्रगुप्त के द्वारा पराजय का उल्लेख मिलता है. आटविकों के 18 राज्यों पर विजय, दक्षिण के 12 राजाओं पर विजय. गरुड़ प्रकार, बाघ, नदी प्रकार, चन्द्रगुप्त कुमार देवी प्रकार तथा अश्वमेध प्रकार प्रमुख सिक्के थे. अप्रतिवार्यवीर, पराक्रमाङ्क, अजित, अजितराज जेताजित प्रमुख उपाधियाँ थीं.
5.	रामगुप्त	समुद्रगुप्त के पश्चात्	रामगुप्त के सन्दर्भ में विवादास्पद स्थिति थी. विशाखादत्त विरचित देवीचन्द्र गुप्तम् नाटक के द्वारा रामगुप्त के चन्द्रगुप्त II से पूर्व शासक होने का उल्लेख मिलता है. अत्यधिक कायर एवं दुष्ट शासक. हर्षचरित, राजशेखर की काव्यमीमांसा के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय ने रामगुप्त की हत्या कर उसकी पत्नी ध्रुवदेवी से शादी कर ली थी. राष्ट्रकूट अभिलेख में रामगुप्त का उल्लेख मिलता है. रामगुप्त चन्द्रगुप्त द्वितीय का बड़ा भाई था.

6.	चन्द्रगुप्त II 'विक्रमादित्य'	380 से 414-15 कुछ विद्वानों के अनुसार 375-76 उसकी राज्यारोहण तिथि है	समुद्रगुप्त के उपरान्त गुप्तवंश का श्रेष्ठतम शासक. दूसरा नाम देवराज या देवगुप्त था. शासक बनने के बाद 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की. मेहरौली लौह स्तम्भाभिलेख सर्वाधिक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत. उदयगिरि गुहालेख, गढ़वा शिलालेख, साँची अभिलेख, मथुरा का स्तम्भ अभिलेख महत्वपूर्ण अभिलेख है. नाग राजकुमारी कुबेर नागा से विवाह किया. जिससे एक पुत्री प्रभावती गुप्त का जन्म हुआ, जिसका विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय से हुआ. विष्णुपुराण, वायुपुराण के अनुसार कोशल, ओड्र, पुंड्र, ताम्रलिप्ति, पुरी तक उसने साम्राज्य का विस्तार किया. शकों को पराजित कर उसने शकारि की उपाधि धारण की. धनुर्धर, पर्यंक सिंहनिहन्ता, अश्वारोही, छत्र उसके प्रमुख सिक्कों का प्रकार था. कालिदास उसके दरबारी कवि थे. इसी समय बौद्ध ग्रन्थों की खोज में फाह्यान भारत आया था, जो 399-411 ई. तक भारत में रहा.
7.	कुमारगुप्त प्रथम	415-55 ई.	चन्द्रगुप्त II के पश्चात् कुमारगुप्त प्रथम. महेन्द्रादित्य शासक बना. मंदसौर अभिलेख के अनुसार चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी ध्रुवदेवी का पुत्र गोविन्दगुप्त था. मंदसौर अभिलेख के अनुसार कुमारगुप्त चारों समुद्रों की चंचल लहरों से घिरी हुई पृथ्वी का शासक बतलाया गया है. कुमारगुप्त के सिक्के एवं अभिलेख बंगाल से सौराष्ट्र एवं हिमालय से नर्मदा तक प्राप्त हुए है. पुण्ड्रवर्धन भुक्ति में चिरातदत्त, एरण में घटोत्कचगुप्त तथा बन्धुवर्मन दशपुर में कुमार गुप्त के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे. इसी समय नालन्दा बिहार की स्थापना हुई थी. अन्त में कुमारगुप्त ने अपने पुत्रों के लिए राज का परित्याग कर दिया था.
8.	स्कन्दगुप्त	455-68 ई.	गुप्तवंश का अन्तिम महान् शासक था. भितरी अभिलेख प्रमुख अभिलेख था. हूण आक्रमण प्रमुख सैनिक अभियानों में से एक है. अभिलेख और सिक्कों के आधार पर पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में गुजरात काठियावाड़ तक का सम्पूर्ण इलाका, उत्तर प्रदेश की पश्चिमी सीमा तथा उत्तर में हिमालय से दक्षिण में नर्मदा नदी तक का क्षेत्र स्कन्दगुप्त के साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे. उसने शकादित्य की उपाधि धारण की थी. आर्यमंजूश्रीमूलकल्प के अनुसार–"स्कन्दगुप्त अधम युग में शासन करने वाला श्रेष्ठ, बुद्धिमान एवं धर्मवत्सल शासक था."
9.	पुरुगुप्त	468-469 ई.	स्कन्दगुप्त का सौतेला भाई था. वृद्धावस्था में गद्दी पर बैठा था. मुद्राओं पर प्रकाशदित्य एवं श्रीविक्रम लेख मिलते हैं. इसके काल से ही गुप्त शासन का पतन होने लगा था.
10.	बुद्धगुप्त I	477-500 ई.	पुरुगुप्त एवं रानी चन्द्रदेव का पुत्र था. उसका साम्राज्य काठियावाड़ से पूर्वी बंगाल तक और दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैला हुआ था. सारनाथ दामोदरपुर, पहाड़पुर ताम्रपत्र, एरण स्तम्भाभिलेख प्रमुख अभिलेख थे. सुरश्मि चन्द्र, नायक उपरिक, महाराज ब्रह्मस्त, मातृ विष्णु उसके प्रमुख प्रतिनिधि शासक थे. बौद्ध धर्म को मानने वाला था.
11.	नरसिंह गुप्त बालादित्य II	बुद्धगुप्त के पश्चात्	नरसिंहगुप्त बालादित्य II बुद्धगुप्त का भाई था. उसके शासक बनते ही गुप्त साम्राज्य पूरी तरह कई खण्डों में विभक्त होकर कई स्वतन्त्र राज्यों का रूप ले चुका था. बौद्ध धर्म के संरक्षक के रूप में ख्याति प्राप्त था.
12.	कुमारगुप्त II, कुमारगुप्त III, बुद्धगुप्त II		अत्यन्त दुर्वल शासक थे. अत्यधिक विद्रोहों के फलस्वरूप 570 ई. के आसपास गुप्त साम्राज्य का अन्त हो गया. बुद्धगुप्त गुप्त वंश का अन्तिम शासक था.

2. गुप्तकालीन व्यवसायी वर्ग

1. **अन्तपीलक** – तेली
2. **छिप्प** – छीपा वर्ग
3. **श्रेणी** – समान व्यापारियों का संगठन
4. **मृत्तिकार** – कुम्हार
5. **आचार्य** – श्रेणी का प्रमुख
6. **अन्तेवासी** – आचार्य का अधीनस्थ कर्मचारी
7. **गुआर** – पशुओं को चराने वाला ग्वाला
8. **सीवग** – दर्जी, वस्त्र सिलने वाला

9. **कंकार**	–	बर्तन गढ़ने वाला कसेरा
10. **सूपकार**	–	रसोई बनाने वाला पदार्थ
11. **गन्धक**	–	सुगन्धित द्रव्यों को बनाने वाले
12. **साहुकार**	–	पैसे उधार देने वाला
13. **निगम**	–	शिल्पकारों का संगठन
14. **पटकार**	–	जुलाहे
15. **कासवान**	–	नाई, बाल काटने वाला
16. **भिल्ल**	–	शिकारी
17. **चम्मचह**	–	मोची

- प्लिनी के अनुसार गुप्तकाल में भारतीय 75 टन का जलयान बनाते थे, जिसमें 300 से 700 तक यात्री यात्रा करते थे.

3. प्रसिद्ध गुप्तकालीन साहित्यकार

नाम साहित्यकार	रचनाएँ
1. **कालिदास**	विक्रमोर्वशीयम, मेघदूतम्, रघुवंशम्, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कुमारसम्भवम्, ऋतुसंहारम्
2. **आर्यभट्ट**	आर्यभट्टीय, सूर्यसिद्धान्त
3. **दण्डिन**	दशकुमारचरितम्, काव्यदर्शन
4. **भारवि**	किरातार्जुनीयम्
5. **विशाखादत्त**	मुद्राराक्षसम्, देवीचन्द्रगुप्तम् (नाटक)
6. **विष्णु शर्मा**	पंचतन्त्र
7. **वराहमिहिर**	वृहज्जातक, लघुजातक, वृहत्संहिता, पंचसिद्धान्तिका
8. **बाणभट्ट**	अष्टांग

4. गुप्तकालीन अन्य साहित्यकारों की रचनाएँ

नाम साहित्यकार	रचनाएँ
1. असंग	योगाचार
2. शूद्रक	मृच्छकटिकम्
3. भास	स्वप्नवासवदत्ता, चारुदत्ता, अरुभंग
4. बाण	हर्षचरित, कादम्बरी
5. हर्ष	नागानन्द, प्रियदर्शिका, रत्नावली
6. वात्सायन	कामसूत्रम्
7. चरक	चरक संहिता
8. कामन्दक	नीतिशास्त्र
9. सिद्धसेन	नीतिशास्त्र
10. अमरसिंह	अमरकोष
11. वत्सभहि	रावण वध
12. चन्द्रगोमी	चन्द्रव्याकरण
13. बुद्धघोष	विसुद्धिमग्ग

- गुप्तकाल की भूमियाँ निम्न प्रकार की थीं–

1. **क्षेत्र**	–	खेती के लिए उपयुक्त भूमि
2. **वास्तु**	–	निवास योग्य भूमि
3. **अप्रहत**	–	जंगली भूमि
4. **चरागाह**	–	पशुओं के चराने योग्य
5. **खिल**	–	जिस भूमि को जोता नहीं जाता

5. गुप्तकालीन प्रमुख अधिकारी

अधिकारी	विभाग
1. महादण्डनायक	न्यायाधीश
2. महाबलाधिकृत	सेना का अधिकारी
3. दण्डपाशिक	पुलिस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
4. विनयस्थिति संस्थापक	शिक्षा अधिकारी
5. सन्धिविग्रहिक	युद्ध मन्त्री
6. महाप्रतिहार	राजप्रासाद की देखरेख करने वाला अधिकारी
7. भाण्डागाराधिकृत	राजकोष का अधिकारी
8. महाअक्षपटलिक	लेखा विभाग का सर्वोच्च अधिकारी
9. युक्तपुरुष	युद्ध से प्राप्त सामग्री का लेखाजोखा रखने वाला अधिकारी
10. अग्रहारिक	दान विभाग का प्रधान
11. ध्रुवाधिकरण	कर वसूली विभाग का प्रमुख
12. सर्वाध्यक्ष	केन्द्रीय सचिवालय का अध्यक्ष

6. गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख

सम्बन्धित शासक	अभिलेख
1. समुद्रगुप्त	एरण प्रशस्ति, प्रयाग प्रशस्ति, नालन्दा, गया ताम्र शासनलेख
2. चन्द्रगुप्त द्वितीय	उदयगिरी का प्रथम एवं द्वितीय अभिलेख, मथुरा स्तम्भलेख, गढ़वा का प्रथम शिलालेख, मेहरौली प्रशस्ति, साँची शिलालेख.

3.	कुमारगुप्त प्रथम	विलसाड़ स्तम्भलेख, गढ़वा का द्वितीय शिलालेख, गढ़वा का तृतीय शिलालेख, उदयगिरी का तृतीय शिलालेख, धनदेह ताम्रलेख, मथुरा का जैन मूर्तिलेख, तुमैन शिलालेख, मन्दसौर शिलालेख, कर्मदण्डा लिंगलेख, कुलाईकुटी ताम्रलेख, दामोदरपुर प्रथम और द्वितीय ताम्रलेख, बैग्राम ताम्रलेख, मान कुँवर बुद्धमूर्ति लेख.
4.	स्कन्दगुप्त	भितरी स्तम्भलेख, इन्दौर ताम्रलेख, सुपिया स्तम्भलेख, कहौंव स्तम्भलेख, जूनागढ़ प्रशस्ति.
5.	कुमार गुप्त द्वितीय	सारनाथ बुद्धमूर्ति लेख
6.	पुरूगुप्त	विहार स्तम्भलेख
7.	बुद्धगुप्त	नन्दपुर ताम्रलेख, एरण स्तम्भलेख, चतुर्थ दामोदरपुर ताम्रलेख, दामोदरपुर ताम्रलेख, सारनाथ बुद्धमूर्ति अभिलेख, पहाड़पुर ताम्रलेख, राजघाट (वाराणसी) ताम्रलेख.
8.	विनयगुप्त	गुनईधर (टिपरी) ताम्रलेख
9.	भानुगुप्त	एरण स्तम्भ लेख
10.	विष्णुगुप्त	पंचम दामोदरपुर ताम्रलेख

7. गुप्तों की उत्पत्ति एवं मूलनिवास से सम्बन्धित विभिन्न मत

- गुप्त शब्द का उल्लेख महाभाष्य, मृच्छकटिकम्, दिव्यावदान, महावंश, नासिक अभिलेख, भरहुत स्तम्भ अभिलेख में मिलता है.
- प्रो. हेमचन्द्र राय चौधरी के अनुसार गुप्त 'धारण' गौत्र के ब्राह्मण थे एवं शुंग सम्राट् अग्निमित्र की पत्नी जारिणी के वंशज थे. प्रो. गोयल इस मत से असहमत थे.
- एलन महोदय के अनुसार गुप्तों को शूद्र मानना तर्कसंगत है. काशी प्रसाद जायसवाल, वी. जी. गोखले भी गुप्तों को शूद्र मानते हैं.
- कौमुदी महोत्सव में चन्द्रगुप्त प्रथम को 'कारस्कर' कहा है जिसे नीच मानकर राजगद्दी के अयोग्य माना गया है.
- मंजूश्रीमूलकल्प के अनुसार गुप्त जाट थे.
- दीघनिकाय के अनुसार गुप्त क्षत्रिय थे.
- अल्टेकर, आयंगर, निराशी गुप्तों को वैश्य मानते थे.

8. गुप्तों का मूलनिवास : विभिन्न मत

नाम इतिहासकार	मूलनिवास
1. डॉ. के. पी. जायसवाल	मगध
2. एस. आर. गोयल	पूर्वी उत्तर प्रदेश
3. सिक्के और अभिलेखों के अनुसार	उत्तर प्रदेश

9. गुप्तकाल के प्रमुख मंदिर

	स्थान	मन्दिर/स्तुप
1.	देवगढ़ (झाँसी)	दशावतार मन्दिर
2.	शिरपुर	लक्ष्मणमन्दिर (ईंटों का मन्दिर)
3.	भूमरा (नागोद)	शिवमन्दिर
4.	तिगवा (जवलपुर)	विष्णुमन्दिर
5.	उदयगिरि	विष्णुमन्दिर
6.	सारनाथ	धमेख स्तूप (ईंटों से बना हुआ)
7.	भीतरी	ईंटों का मन्दिर
8.	खोह (नागोद)	शिव मन्दिर
9.	नालन्दा	बौद्ध विहार
10.	भीतरगाँव (कानपुर)	ईंटों से बना मन्दिर

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

गुप्तोत्तरकालीन प्रमुख राजवंश

1. थानेश्वर के पुष्यभूति या वर्द्धन वंश के प्रमुख शासक

क्र.	नाम शासक	शासन अवधि	सम्बन्धित जानकारी
1.	पुष्यभूति	450 ई. (अनुमानित)	वर्द्धन या पुष्यभूति वंश का संस्थापक. बाणभट्ट के हर्षचरित में पुष्यभूति द्वारा वर्द्धन वंश की स्थापना का उल्लेख किया गया है. पुष्यभूति गुप्तों का अधीनस्थ सामंत था. पूर्वी पंजाब (हरियाणा) में गुप्तों की कमजोरी का लाभ उठाकर सत्ता स्थापित की तथा थानेश्वर को राजधानी बनाया. शैव मतावलम्बी था. भैरवाचार्य शैव संन्यासी का प्रभाव था. हर्ष के अभिलेखों में उल्लेख नहीं मिलता. मधुवन, बाँसखेड़ा अभिलेख में उल्लेख नहीं किया गया है.
2.	नरवर्द्धन	505-530 ई.	हर्ष के बाँसखेड़ा एवं मधुबन अभिलेखों में उनकी रानी वज्रिणी देवी का भी उल्लेख मिलता है. महाराज की उपाधि धारण की थी. सूर्य उपासक थे.
3.	राज्यवर्द्धन प्रथम	530-555 ई.	हर्ष के बाँसखेड़ा एवं मधुबन अभिलेखों के अनुसार अप्सरा देवी उनकी रानी का नाम था. सूर्य के उपासक थे. अधिक जानकारी ऐतिहासिक स्रोतों में उपलब्ध नहीं हैं.
4.	आदित्यवर्द्धन	555-580 ई.	इस शासक ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए गुप्त राजकुमारी महासेनगुप्त देवी से विवाह किया था. बाँसखेड़ा एवं मधुवन अभिलेख में वर्णन मिलता है.
5.	प्रभाकरवर्द्धन	600-605 ई.	पुष्यभूति या वर्द्धनवंश की शक्ति एवं प्रतिष्ठा को स्थापित करने वाला शासक. परमभट्टारक, महाराजधिराज उसकी उपाधियाँ थी. हर्षचरित में बाणभट्ट ने उसे हूणहरिण केसरी, सिन्धुराजज्वरः गुर्जर प्रजागरः, गांधाराधिपंगधद्विप कूट हस्तिज्वरो, लाटपाट व पाटच्चरो तथा मालवलक्ष्मीलतापरशु अलकांरिक रूप में वर्णित किया गया है. प्रतापशील के नाम से जाना जाता था. मधुवन और बाँसवाड़ा अभिलेख में श्रेष्ठ शासक के रूप में वर्णित. शासन को सुदृढ़ करने के लिए अपनी पुत्री राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरी शासक ग्रहवर्मन के साथ किया. यशोवती उसकी रानी थी और वह सूर्य उपासक था. 606 ई. में उसकी मृत्यु हो गई. राज्यवर्द्धन II एवं हर्षवर्द्धन उसके पुत्र थे.
6.	राज्यवर्द्धन II	605-606 ई.	पश्चिमोत्तर सीमा के हूणों से युद्ध करने में अधिकांश समय व्यतीत किया. अपने बहनोई ग्रहवर्मन की मृत्यु से दुःखी होकर शासन सँभाला. देवगुप्त (मालवा का शासक) एवं शशांक ने धोखे से राज्यवर्द्धन II को मार दिया.
7.	हर्षवर्द्धन	606-647 ई.	हर्षचरित, ह्वेनसांग का यात्रा विवरण (630-644 ई. तक), ह्वेनसांग की पुस्तक सी-यू-की, हुईली की 'ह्वेनसांग की जीवनी', रत्नावली, प्रियदर्शिका, नागानन्द-हर्षवर्द्धन के प्रमुख नाटक, अलबेरूनी के तहकीक-ए-हिन्द, दण्डिन का दशकुमाचरित, आर्यमंजूश्री मूलकल्प, मधुवनी आजमगढ़ (उ.प्र.) तथा बाँसखेड़ा (शाहजहाँपुर, उ.प्र.) अभिलेख, नालंदा और सोनपत से प्राप्त मुद्राएँ, रविकीर्ति का एहोल अभिलेख इत्यादि हर्ष के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने वाले प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत हैं.

हर्षवर्द्धन : सम्पूर्ण परिचय

1. **वास्तविक नाम** — हर्षवर्द्धन, शिलादित्य के नाम से प्रसिद्ध.
2. **जन्म** — 590 ई. में.
3. **राज्याभिषेक** — 16 वर्ष की उम्र में (606 ई. में)
4. **पिता** — प्रभाकरवर्द्धन
5. **माता** — यशोमति या यशोवती
6. **वंश** — थानेश्वर का पुष्यभूति या वर्द्धनवंश
7. **बड़ा भाई** — राज्यवर्द्धन II

8. बहिन	—	राज्यश्री
9. बहनोई	—	मौखरी शासक ग्रहवर्मन
10. मित्रता	—	कामरूप के राजा भास्कर वर्मन ने.
11. राजधानी	—	प्रारम्भ में थानेश्वर थी, बाद में कन्नौज बना दी गई.
12. साम्राज्य के पूर्वी अभियान के राज्य	—	(1) अयोध्या, (2) हयमुख, (3) प्रयाग, (4) कौशाम्बी, (5) विशोक, (6) श्रावस्ती, (7) कपिलवस्तु, (8) रामग्राम, (9) कुशीनगर, (10) वाराणसी, (11) चंचु, (12) वैशाली, (13) वज्जि, (14) मगध, (15) हिरण्यपर्वत, (16) चम्पा, (17) कजांगल (आर्य मंजूश्री मूलकल्प के अनुसार).
13. अधीनस्थ शासक	—	(1) भास्करवर्मन, (2) पूर्णवर्मन, (3) माधवगुप्त.
14. पश्चिमी अभियान के प्रमुख राज्य	—	चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार पश्चिमी विजय अभियान के हर्ष के प्रमुख राज्य निम्नलिखित थे–(1) कपिशा (संकिशा), (2) अंतरजीखेडा, (3) अहिच्छत्र, (4) गोवीसान, (5) ब्रह्मपुर, (6) श्रुघ्न (शुग), (7) मतिपुर (भण्डावर), (8) स्थानीश्वर, (9) मथुरा, (10) परिमात्र (जयपुर के निकट), (11) शतद्रु (सरहिन्द), (12) कुलट (कल्लू), (13) जालन्धर, (14) हक्क (प. पंजाब), (15) चीन मूति (पूर्वी पंजाब).
15. हर्षवर्धन के अन्य विजय अभियान	—	(1) सिन्ध पर विजय, (2) बंगाल विजय, (3) वल्लभी विजय, (4) मध्य भारत, काश्मीर, नेपाल, उड़ीसा पर विजय.
16. हर्षवर्धन के साम्राज्य की सीमा	—	1. के. एम. पणिक्कर के अनुसार असम से कश्मीर तथा हिमालय से विन्ध्याचल तक तथा सम्पूर्ण उत्तरी भारत उसका साम्राज्य था. 2. प्रो. नीहाररंजन, डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार मध्य भारत पर उसका अधिकार था, लेकिन पश्चिम में जालन्धर से पूर्व में असम, दक्षिण में नर्मदा नदी की घाटी एवं वल्लभी से उड़ीसा में गंजाम तक का क्षेत्र तथा उत्तर में नेपाल और कश्मीर उसके क्षेत्र में थे. 3. एहोल प्रशस्ति के अनुसार हर्ष सकलोत्तरा पथेश्वर (तक्षशिला से श्रावस्ती तक के क्षेत्र का मालिक) था. 4. ह्वेनसांग के अनुसार ये 19 राज्य उसके साम्राज्य के अन्तर्गत थे– (1) मथुरा, (2) थानेश्वर, (3) श्रुहण (सुंधगाँव), (4) ब्रह्मपुर, (5) गोविन्दशान (रामपुर और पीलीभीत), (6) अहिच्छत्र, (7) अंतरजीखेड़ा, (8) संकिशा, (9) अयोध्या, (10) अयोमुख, (11) प्रयाग, (12) कौशाम्बी, (13) विशोक, (14) श्रावस्ती, (15) रामग्राम, (16) कुशीनगर, (17) वाराणसी, (18) बसाढ़, (19) वज्जि.
17. प्रयाग सम्मेलन में सम्मिलित राज्यों के शासक	—	(1) हिरण्य पर्वत (मुंगेर), (2) चम्पा, (3) कजांगल (राजमहल), (4) पुण्ड्रवर्धन, (5) समतट, (6) ताम्रलिप्ति, (7) कर्णसुवर्ण, (8) कामरूप, (9) ओद्र, (10) नेपाल, (11) कपिशा, (12) उत्थान, (13) कश्मीर, (14) टक्क, (15) चीन भुक्ति, (16) जालन्धर, (17) कुलुट, (18) शतद्रु, (19) पारियात्र, (20) मथुरा.
18. हर्ष की उपाधियाँ	—	(1) परमभट्टारक, (2) महाराजधिराज, (3) सकलोत्तरापथेश्वर, (4) एकाधिराज, (5) चक्रवर्ती, (6) सार्वभौम, (7) परमेश्वर, (8) शिलादित्य.
19. हर्ष के अधीनस्थ शासकों की उपाधियाँ	—	1. भूपाल, 2. कुमार, 3. लोकपाल, 4. नृपति, 5. नरपति, 6. सामन्त, 7. महासामन्त, 8. महाराजा.

20. **हर्ष के प्रमुख अधीनस्थ शासक** — (1) वल्लभी का ध्रुवसेन द्वितीय, (2) कामरूप का भास्करवर्मन, (3) मगध का पूर्ववर्मन, (4) जालन्धर का उदित, (5) उत्तर गुप्त शासक माधवगुप्त.

21. **हर्ष के अधिकारीगण** — हर्ष के अभिलेखों एवं हर्षचरित में निम्नलिखित अधिकारी थे–

(1) महासंधिविग्रहाधिकृत, (2) संधिविग्रहिक, (3) महाबलाधिकृत, (4) बलाधिकृत, (5) सेनापति, (6) वृहदश्ववार, (7) कटुक, (8) पात्ती, (9) चट्ट-भट्ट, (10) राजस्थानीय, (11) कुमारामात्य, (12) दूत, (13) यमचेट्टी, (14) यमरिक, (15) महाप्रतिहार, (16) चामर ग्राहिणी, (17) ताम्बूलकरणकवाहिणी.

22. **स्वरचित साहित्य** — (1) प्रियदर्शिका, (2) नागानन्द, (3) रत्नावली

23. **सैनिक संगठन** — 60,000 गजसेना, 1,00,000 घुड़सवार, 50,000 पैदल सैनिक थे–ह्वेनसांग के अनुसार.

2. मौखरी राजवंश के प्रमुख शासक

क्र. सं.	नाम शासक	शासनकाल	सम्बन्धित जानकारी
1.	मुखर		मौखरी वंश का संस्थापक. मूलवंश कन्नौज में था, लेकिन बिहार (गया), राजस्थान में शाखाएँ फैली हुई थी. पतञ्जलि के महाभाष्य में मौखरी शब्द का उल्लेख हुआ है. ऐतिहासिक उल्लेख नहीं मिलता.
2. 3. 4.	यज्ञ वर्मा शार्दूल वर्मा अनन्त वर्मा		गया के पास बाराबार एवं नागार्जुनी गुफाओं में मौखरी वंश के तीन आरम्भिक शासकों का उल्लेख किया गया है. ये सम्भवतः अधीनस्थ शासक या सामन्त थे. सामन्त, सामन्त चूड़ामणि इनकी उपाधियाँ थीं. गया के पास के क्षेत्रों पर शासन करते थे. ऐतिहासिक स्रोतों में उल्लेख नहीं हुआ है.
5. 6. 7.	हरिवर्मा आदित्यवर्मा ईश्वरवर्मा		कन्नौज की मूल शाखा से सम्बद्ध शासक. गुप्तों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये. नालन्दा अभिलेख में इनका वर्णन मिलता है. सभी महाराज की उपाधि धारण करते थे.
8.	ईशानवर्मन	550-576 ई. (आर.सी. मजूमदार) के अनुसार	मौखरी वंश का शक्तिशाली एवं प्रथम श्रेष्ठ शासक. महाराजाधिराज की उपाधि धारण की. हरहा (बाराबंकी उ. प्र.) में अभिलेख प्राप्त हुआ है. गौडों, आन्ध्रों एवं सुलिकों पर विजय प्राप्त की. मगध पर भी प्रभाव स्थापित किया था.
9.	सर्ववर्मन	576-580 ई.	मौखरी वंश का दूसरा शक्तिशाली शासक. महाराजाधिराज की उपाधि धारण की. उत्तरगुप्तराजा महासेनगुप्त समकालीन शासक था. देव बारनक एवं नालन्दा अभिलेख में सर्ववर्मन का उल्लेख हुआ है. पुष्यभूतियों से मिलकर हूणों पर विजय प्राप्त की थी.
10.	आवंतिवर्मन	580-600 ई.	मौखरियों का अन्तिम शक्तिशाली राजा. वर्द्धनवंश के शासकों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये. हर्षचरित में बाण ने इस काल के मौखरी वंश शासकों की प्रशंसा की है.
11.	ग्रहवर्मन	600-605 ई.	मौखरी वंश का अन्तिम शासक. अवंतिवर्मन का पुत्र (नालन्दा अभिलेख के अनुसार), पूर्व में मगध का प्रशासक था. अवंतिवर्मन की मृत्यु के बाद कन्नौज का शासक बना था. प्रभाकरवर्द्धन की पुत्री राज्यश्री से विवाह हुआ था. रोहतासगढ़ से एक मुद्रा प्राप्त हुई है. ग्रहवर्मन के कोई संतान नहीं थी. अतः 605 ई. में उसकी मृत्यु के साथ ही मौखरी वंश का पतन हो गया था.

दक्षिण भारतीय राजवंश

पाण्डय, चोल, चेर राजवंशों के पतन के बाद छठी शताब्दी में दक्षिण भारत में चालुक्यों का राजनीति में आगमन हुआ. इनकी शक्ति का केन्द्र बादामी या वातापी (बीजापुर) था. इसके फलस्वरूप इन्हें बादामी के चालुक्य कहा जाने लगा. बादामी,वातापी या पश्चिमी चालुक्य के शासक निम्नांकित थे–

(1) जयसिंह (प्रथम शासक)
(2) रणराग
(3) पुलकेशी प्रथम (535-567 ई.)
(4) कीर्तिवर्मन प्रथम (567-597 ई.)
(5) मंगलेश (597-608 ई.)
(6) पुलकेशी द्वितीय (608-642 ई.)
(7) विक्रमादित्य प्रथम (655-680 ई.)
(8) विनयादित्य (680-690 ई.)
(9) विजयादित्य (696-733 ई.)
(10) विक्रमादित्य II (733-747 ई.)
(11) कीर्तिवर्मन II (747 से 752 ई.)

वेंगी के चालुक्य शासक

पुलकेशी II के भाई विष्णुवर्द्धन ने पूर्वी या वेंगी के चालुक्य वंश को स्थापित किया था. इनकी राजधानी पिष्टुपुर, वेंगी और राजमुंदरी बनी. प्रमुख शासक निम्नलिखित थे–

(1) विष्णुवर्द्धन (615-633 ई.)
(2) जयसिंह प्रथम (633-633 ई.)
(3) विजयादित्य प्रथम (746-764 ई.)
(4) विष्णुवर्द्धन चतुर्थ (764-799 ई.)
(5) विजयादित्य II (799-847 ई.)
(6) विजयादित्य III (848-892 ई.)
(7) भीम प्रथम (892-922 ई.)

इन शासकों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक स्रोतों से क्षणिक जानकारी मिलती है.

कल्याणी के चालुक्य शासक

कल्याण या कल्याणी में 10वीं शताब्दी के अन्तिम में चालुक्य वंश का उदय हुआ, जो कल्याणी का चालुक्य वंश कहलाया. इसके संस्थापक तैलप द्वितीय (933-997 ई.) थे. प्रमुख शासक निम्नलिखित थे–

(1) तैलप द्वितीय (933-997 ई.)
(2) सत्याश्रय (997-1008 ई.)
(3) जयसिंह II (1015-1043 ई.)
(4) सोमेश्वर प्रथम (1043-1068 ई.)
(5) विक्रमादित्य VI (1076-1126 ई.)
(6) सोमेश्वर चतुर्थ (1181-1189 ई.)

दक्षिण भारत के प्रमुख मंदिर एवं निर्माणकर्त्ता

नाम मन्दिर	स्थान	काल	निर्माणकर्त्ता
1. शोर मन्दिर	महाबलीपुरम् में	सातवीं शताब्दी	पल्लव शासक
2. रथ मन्दिर	महाबलीपुरम्	सातवीं शताब्दी	पल्लव शासक
3. वृहदेश्वर मन्दिर	तन्जावूर	1000 ई.	चोल शासक
4. कैलाश मन्दिर	आठवीं शताब्दी में	एलोरा गुफा में	कृष्ण I
5. होयसलेश्वर मन्दिर	हेलविड	12वीं शताब्दी	होयसल शासक
6. चेन्नाकेश्वर मन्दिर	बेल्लूर	12वीं शताब्दी	होयसल शासक

- गुप्तोत्तरकालीन अलवार सन्त निम्नलिखित थे–
  1. तिरुमंगाई, 2. पेरिय अलवार,
  3. आंदाल, 4. नाम्मालवार,
  5. मधुरकवि, 6. कुलशेखर,
  7. तिरुप्पान, 8. भूतयोगी,
  9. महायोगी, 10. सरोयोगी.
- गुप्तोत्तरकाल में राजपूत शब्द लड़ाकू जातियों एवं सामन्त वर्ग के लिए प्रयुक्त होता था.
- हर्ष के काल में चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग 629 ई. से 645 ई. तक भारत में रहा.
- गुप्तोत्तर काल में सूर्य पूजा का प्रमुख केन्द्र मुल्तान में था. इस आशय का उल्लेख ह्वेनसांग, आबूजहद, अलमसूदी, अलबेरूनी ने किया था.
- पल्लव वास्तुकला की समस्त विशेषताएँ काँची के कैलाशनाथ मन्दिर में देखी जा सकती है. ये द्रविड़ शैली का मन्दिर था.
- सीरिन ऐसे किसानों को कहा जाता था, जो बँटाई पर कृषि कार्य करते थे.
- हर्ष का दूसरा नाम शिलादित्य था.
- खजुराहो में निर्मित मन्दिर चन्देल शासकों ने 950-1050 ई. के मध्य बनवाए थे.
- ऐहोल अभिलेख में पुलकेशिन को उत्तरी-भारत के स्वामी श्री हर्ष का विजेता कहा गया है.
- ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष के शासनकाल के दौरान बौद्ध विहारों की संख्या 5,000 थी एवं उसमें 2,00,000 बौद्ध भिक्षु निवास करते थे.
- ह्वेनसांग ने चीन में लौटकर सी-यू-की नामक पुस्तक लिखी थी.
- महत्तर गाँव का सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति होता था, जो अवैतनिक कर्मचारी होता था.
- "जिस कुशलता से वह तलवार पकड़ सकता था, उसी हाथ से कलम" ये शब्द आर. सी. मजूमदार ने हर्ष के लिए कहे थे.

- गुजराती कवि सोड्ढ़स ने हर्ष की तुलना विक्रमादित्य मुंज एवं भोज से की थी.
- इत्सिंग के अनुसार हर्ष ने नागानन्द की रचना कर राजदरबार में उस नाटिका का अभिनय कराया था.
- ह्वेनसांग को 'यात्रियों का राजकुमार', विधि का पूर्ण ज्ञाता तथा वर्तमान शाक्यमुनि के नाम से जाना जाता था.

निष्कर्ष–गुप्तोत्तरकालीन शासन व्यवस्था पूर्णतः अस्थिर थी और इसका परिणाम अर्थव्यवस्था पर भी व्यापक रूप से हुआ. व्यापारिक परिस्थितियाँ विकृत होती गईं और अन्ततः भू-सम्पदा से प्राप्त होने वाली आय सर्वोपरि हो गई. यद्यपि इससे प्रशासन, सैन्य व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्थाओं पर दुष्प्रभाव पड़ा हो तथापि भू-सम्पदा के ऊपर निर्भर रहने के फलस्वरूप कई प्रयोग हुए. सिंचाई व्यवस्था, सामन्ती व्यवस्था, दास व्यवस्था इसी से प्रादुर्भूत हुई. निष्कर्ष रूप में गुप्तोत्तरकाल के सम्पूर्ण कालक्रम को 'अव्यवस्थित कालक्रम' कहा जाए, तो तर्कसंगत होगा.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

- **चार वर्ण**–

1. ब्राह्मण	2. क्षत्रिय
3. वैश्य	4. शूद्र.

- **चार पुरुषार्थ**–

1. धर्म	2. अर्थ
3. काम	4. मोक्ष.

- **तीन ऋण**–

1. देव ऋण	2. ऋषि ऋण
3. पितृ ऋण.	

- **चार आश्रम**–
  1. ब्रह्मचर्य (प्रथम 25 वर्ष)
  2. गृहस्थाश्रम (25 से 50 वर्ष)
  3. वानप्रस्थाश्रम (50 से 75 वर्ष)
  4. संन्यासाश्रम (75 से 100 वर्ष)
- **पंच महायज्ञ**–
  1. **भूतयज्ञ**–पृथ्वी के जीवों एवं प्राणियों की शुभकामनार्थ.
  2. **अतिथियज्ञ**–अतिथियों की सेवार्थ सम्पादित किया जाने वाला यज्ञ.
  3. **ऋषि यज्ञ**–स्वाध्याय एवं ज्ञानार्जन के लिए सम्पादित किया जाने वाला यज्ञ.
  4. **देवयज्ञ**–देव सन्तुष्टि के लिए अग्नि में आहुति देना.
  5. **पितृयज्ञ**–पितरों के तर्पण, श्राद्ध के लिए किया गया यज्ञ.
- **षोड़श संस्कार**–

1. गर्भाधान संस्कार	2. पुंसवन संस्कार
3. सीमन्तोन्नयन संस्कार	4. जातकर्म संस्कार
5. नामकरण संस्कार	6. निष्क्रमण संस्कार
7. अन्नप्राशन संस्कार	8. चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार
9. कर्णवेध संस्कार	10. विद्यारम्भ संस्कार
11. उपनयन संस्कार	12. वेदारम्भ संस्कार
13. केशान्त संस्कार	14. समावर्तन संस्कार
15. विवाह संस्कार	16. अन्त्येष्टि संस्कार.

मीमांसा दर्शन धारा के अनुसार संस्कार का आशय विधिवत् शुद्धि से था. गौतम के अनुसार संस्कारों की संख्या 40 है.

- **धर्म के चार अंग**–

1. तप	2. शौच
3. दया	4. सत्य.

- **मनु के अनुसार धर्म के चार आधार**–

1. श्रुति	2. स्मृति
3. सदाचार	4. आत्मतुष्टि.

- **गृहस्थ के चार भेद**–

1. वार्तावृत्ति वाला	2. शालीन
3. यायावर	4. घोराचारिक.

- सांख्य दर्शन के अनुसार समस्त प्रकृति तीन प्रकार के मूल अणुओं सत्व, रज तथा तम परमाणुओं का कारण है.
- वैश्य और शूद्र शब्द का उल्लेख ऋग्वेद के पुरुष सुक्त में हुआ है.
- सती होने का सर्वप्रथम अभिलेखीय प्रमाण 510 ई. के एरण स्तम्भ में मिलता है.
- उत्तर-वैदिककाल से गौत्र प्रथा का आविर्भाव हुआ था.
- मनुस्मृति के अनुसार विवाह के निम्नलिखित चार उद्देश्य थे–
  1. सन्तानोत्पत्ति
  2. धर्मकार्य एवं याज्ञिक अनुष्ठान के लिए
  3. कामार्थ
  4. पितृ ऋण मुक्ति के लिए.
- उत्तर-वैदिक-साहित्य में साठ वर्णसंकर जातियों का उल्लेख है. ब्रह्मवैवर्त पुराण में 100 से अधिक एवं मनुस्मृति में 61 वर्णसंकर जातियों का उल्लेख किया गया है.
- 'रूपाजीवा' स्वतन्त्र रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली महिलाओं को कहा जाता था.
- महाभारत में सती प्रथा का उल्लेख किया गया है.
- परवर्ती काल में नियोग को अवांछित विगर्हित एवं पशुधर्म के रूप में निन्दनीय माना गया है.
- मिताक्षरा एवं दायभाग के अनुसार मृत पति की सम्पत्ति का स्वामित्व उसकी पत्नी का होता था.

- सती प्रथा का प्रादुर्भाव चौथी सदी ई. पू. के बाद हुआ था. कथासरित्सागर एवं राजतरंगिणी में सती प्रथा का उल्लेख मिलता है.
- याज्ञवल्क्य के अनुसार स्त्रियाँ उपनयन और वेदाध्ययन के अयोग्य होती थी.
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में चारों वर्णों एवं उनसे सम्बन्धित नियमों का उल्लेख किया गया है.
- ऋग्वेद, महाभारत, मनुस्मृति एवं पुराणों में वर्ण-व्यवस्था को दैवीय उत्पत्ति का सिद्धान्त माना गया है.
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार किसी पुरुष के पुत्र नहीं होने पर सम्पूर्ण सम्पत्ति की हकदार उसकी पुत्री होती थी.
- मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति में संकटकाल में ब्राह्मणों को भी शूद्र के व्यवसाय करने की अनुमति प्रदान की गई थी.
- ऋग्वैदिककालीन समाज कबीलाई समाज में विभक्त था. योद्धा, पुरोहित एवं सामान्य जन इस काल के तीन वर्ग थे.
- तैत्तिरीय संहिता में वैश्यों के मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन बताया गया है.
- ब्रह्मवादिनी एवं सद्योद्वाहा महिला छात्राओं के दो वर्ग थे.
- आठ प्रकार के विवाहों में ब्रह्म विवाह को श्रेष्ठ विवाह माना गया था.
- वैदिककाल में शूद्रों में आर्य एवं अनार्य दोनों वर्ग शामिल थे.
- आपस्तम्बसूत्र के अनुसार शूद्र द्वारा स्पर्श किया गया अन्न ब्राह्मण को नहीं खाना चाहिए.
- जीवनपर्यन्त गुरु के पास रहकर विद्याध्ययन करने वाले को नैष्ठिक या अन्तेवासी कहा जाता था.
- ब्रह्मवादिनी विदुषी स्त्रियों को कहा जाता था.
- कायस्थ शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग गुप्तकाल में हुआ था.
- क्षत्रिय का व्यवसाय करने वाले ब्राह्मण वारेन्द्र ब्राह्मण कहलाते थे.
- मनुस्मृति के अनुसार भूर्जकंटक और आवन्त्य ब्राह्मणों की सन्तान थे और मल्ल, झल्ल तथा लिच्छवियों की उत्पत्ति व्रात्य क्षत्रियों से हुई थी. कारूष और सात्वत वैश्यों की सन्तान थे. वैश्य और क्षत्रियों के सम्मिश्रण से मागध और वैश्य तथा ब्राह्मणों के सम्मिश्रण से वैदेह लोगों की उत्पत्ति हुई थी.
- मेगस्थनीज की इण्डिका में सात प्रकार की जातियों का उल्लेख मिलता है, जो व्यावसायिक आधार पर मानी गयी है.
- ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्रों को सुखों का मूल एवं परिवार का संरक्षक तथा पुत्रियों को दुःख का कारण बतलाया गया है.
- ऋग्वैदिककाल में स्त्रियाँ नीवी (कंचुकी) पहनती थी.

गुप्तकालीन प्रमुख शासक एवं उनके अभिलेख

क्र.सं.	नाम शासक	सम्बन्धित अभिलेख
1.	समुद्रगुप्त	प्रयाग प्रशस्ति, एरण प्रशस्ति, नालंदा, गया ताम्र शासनलेख
2.	चन्द्रगुप्त द्वितीय	मथुरा स्तम्भलेख, उदयगिरि का प्रथम और द्वितीय गुहालेख, गढ़वा का प्रथम शिला-लेख, साँची शिलालेख, मेहरौली प्रशस्ति
3.	कुमारगुप्त	बिलसड़ स्तम्भलेख, गढ़वा का द्वितीय शिलालेख, गढ़वा का तृतीय शिलालेख, उदयगिरी का तृतीय गुहालेख, धनदेह अभिलेख, मथुरा का जैन मूर्ति लेख, तुमैन शिलालेख, मंदसौर शिलालेख, कर्मदण्डा लिंगलेख, कुलाईकुरी ताम्रलेख, दामोदरपुर प्रथम एवं द्वितीय ताम्र लेख, बैग्राम ताम्रलेख, मानकुँवर बुद्धमूर्ति लेख
4.	स्कन्दगुप्त	जूनागढ़ प्रशस्ति, कहौंव स्तम्भलेख, सुपिया स्तम्भलेख, इन्दौर ताम्रलेख, भितरी स्तम्भलेख
5.	कुमारगुप्त द्वितीय	सारनाथ बुद्धमूर्ति लेख
6.	पुरुगुप्त एवं उसका पुत्र	बिहार स्तम्भलेख
7.	बुद्धगुप्त	सारनाथ बुद्धमूर्ति लेख, पहाड़पुर ताम्रलेख, राजघाट (वाराणसी), स्तम्भलेख, दामोदरपुर ताम्रलेख, चतुर्थ दामोदरपुर ताम्रलेख, एरण स्तम्भलेख, नन्दपुर ताम्रलेख
8.	वैन्यगुप्त	गुनईधर (टिपरा) ताम्रलेख
9.	भानुगुप्त	एरण स्तम्भलेख
10.	विष्णुगुप्त	पंचगुप्त दामोदरपुर ताम्रलेख

समुद्रगुप्त के सिक्के

1. गरुड़ प्रकार
2. वाघ एवं नदी प्रकार
3. चन्द्रगुप्त कुमारदेवी प्रकार
4. अश्वमेध प्रकार
5. वीणावादन प्रकार
6. व्याघ्रहनन प्रकार
7. धनुर्धारी प्रकार
8. परशु प्रकार
9. युद्धक कुल्हाड़ी आकृति वाले सिक्के

गुप्तकालीन साहित्य एवं साहित्यकार

साहित्य	साहित्यकार
1. मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
2. देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त
3. अमरकोश	अमरसिंह
4. पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
5. आर्यभट्टीय	आर्यभट्ट
6. वृहत्संहिता	वराहमिहिर
7. न्यायावतार	सिद्धसेन
8. महायान सूत्रालंकार	असंग

आर्यावृत्त के द्वितीय अभियान में समुद्रगुप्त द्वारा पराजित नौ राजा

1. कौशाम्बी का राजा रुद्रदेव
2. मतिल-अन्तर्वेदी का नागवंशीय शासक
3. मथुरा का शासक नागदत्त
4. पोखरण का शासक चन्द्रवर्मा
5. विदिशा का शासक गणपतिनाग
6. मथुरा का शासक नागसेन
7. अहिच्छत्र का शासक अच्युत
8. विदिशा का शासक नन्दि
9. कामरूप का शासक बल वर्मा

हरिषेण द्वारा वर्णित पश्चिमी सीमान्त प्रदेश के 9 गणराज्य

1. मालव
2. अर्जुनायन (मगध भारत एवं पूर्वी पंजाब के मध्य)
3. यौधेव (वर्तमान रोहतक जिला)
4. मदुर (पंजाब)
5. आभीर (पश्चिमी राजपूताना)
6. प्रार्जुन (मध्य प्रदेश)
7. सनकानिक (मध्य प्रदेश)
8. काक (मिलसा के समीप)
9. खरपरिक (दमोह जिला म. प्र.)

गुप्तकालीन प्रमुख पदाधिकारी एवं उनके कार्य

1. **पुस्तपाल** – जमीन का लेखा-जोखा रखने वाला
2. **दण्डपाशिक** – पुलिस विभाग का प्रमुख
3. **रणभाण्डागारिक** – सैनिकों की आवश्यकताएं पूर्ण करने वाला अधिकारी
4. **अग्रहारिक** – दान विभाग का प्रमुख
5. **महाप्रतिहार** – राजप्रसाद का मुख्य सुरक्षाधिकारी
6. **ध्रुवाधिकरण** – कर वसूली विभाग का प्रमुख
7. **महाबलाधिकृत** – सैनिक अधिकारी
8. **महासंधिक विग्रहिक** – युद्ध एवं शान्ति तथा विदेश विभाग का प्रमुख
9. **सर्वाध्यक्ष** – केन्द्रीय सचिवालय का प्रमुख
10. **विनयस्थिति स्थापक** – शान्तिव्यवस्था का प्रधान
11. **महाभण्डागाराधिकृत** – राजकीय कोष का प्रधान
12. **महाअक्षपटलिक** – अभिलेख विभाग का प्रमुख
13. **महादण्डनायक** – युद्ध एवं न्याय विभाग का प्रमुख

गुप्तोत्तरकालीन कर प्रणाली

1. **कर** – सामान्य कर
2. **भोग** – किसानों एवं अधीनस्थों से लिया जाने वाला कर
3. **उद्रंग** – स्थायी एवं पूर्णकालिक कृषकों से लिया जाने वाला कर
4. **भाग** – राजा द्वारा स्वयं के लिए लिया जाने वाला कर
5. **हिरण्य** – खदानों पर लगाया जाने वाला कर
6. **हलदण्ड** – हलों पर लगाया जाने वाला कर
7. **उपरिकर** – अस्थायी कृषकों के ऊपर भूराजस्व के अतिरिक्त लगाया जाने वाला कर

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- गुप्तकाल में कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न समाज था.
- अमरसिंह द्वारा रचित अमरकोष में 12 प्रकार की गुप्तकालीन भूमि का उल्लेख मिलता है.
- स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में सिंचाई के उदाहरण मिलते हैं.
- वृहत्संहिता में तीन प्रकार की फसलों का विवरण दिया गया है. फसलें वर्षा पर ही निर्भर करती थीं.
- गुप्तकाल की फसलों के सम्बन्ध में कालिदास ने ईख तथा धान एवं इत्सिंग ने चावल और जौ की खेती होने का उल्लेख किया है.
- गुप्तकाल के सम्बन्ध में प्रसिद्ध इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने कहा था–"चौथी सदी में प्रकाश का पुनः आगमन होता है. अन्धकार का पर्दा हट जाता है और भारतीय इतिहास में पुनः एकता तथा अभिरूचि उत्पन्न होती है."
- गुप्तकाल में मगध में सुगन्धित चावल पैदा होने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.
- पाराशर स्मृति के अनुसार 'आर्धीक' एक जाति का नाम था, जो फसल बँटाई का कार्य करती थी तथा वैश्य कुसीद वृत्ति किया करते थे.
- गुप्तकालीन नाटक सुखान्त एवं प्रेम प्रधान होते थे.
- खोह अभिलेख के अनुसार ग्राम समूह की छोटी इकाई को 'पेठ' कहा जाता था.

- वी.ए. स्मिथ ने गुप्त शासक समुद्रगुप्त को उसकी योग्यता, विद्वता एवं श्रेष्ठ कार्यशैली के कारण 'भारत का नेपोलियन' कहा था.
- गुप्तों को कुषाणों के सामन्त के रूप में माना जाता था.
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजा को भूमि का अधिपति कहा गया है.
- साहूकारी से प्राप्त धन को गुप्तकाल में काला धन माना जाता था, जो वैश्यों और शूद्रों का पेशा था.
- गुप्तकाल में ब्राह्मण शूद्रों का अन्न ग्रहण नहीं करते थे, क्योंकि उनका मानना था कि इससे आध्यात्मिक बल घटता है.
- गुप्तकाल में ब्राह्मण के निम्नलिखित 6 कर्त्तव्य माने जाते थे–

1. अध्ययन	2. अध्यापन
3. यज्ञ करना	4. दान देना
5. दान लेना	6. परोपकार करना.

- नारदस्मृति में गुप्तकाल में 15 प्रकार के दासों का उल्लेख किया गया है.
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् में 'अनुसूया' को इतिहास का ज्ञाता कहा गया है.
- अमरकोष में स्त्री शिक्षिकाओं के लिए आचार्या, उपाध्यायीय और उपाध्याया शब्दों का प्रयोग किया है, जो गुप्तकालीन स्त्री शिक्षा एवं विद्वता का श्रेष्ठ साक्ष्य है.
- कामसूत्र, मुद्राराक्षस में गणिकाओं, वेश्याओं तथा मेघदूतम् में उज्जयिनी के महाकाल मन्दिर में कार्यरत् देवदासियों का उल्लेख मिलता है.
- ऐरण अभिलेख 510 ई. में सती प्रथा के उल्लेख मिलते हैं.
- षड्दर्शन का गुप्तकाल में ही विकास हुआ था. सांख्य शास्त्र, न्याय भाष्य, न्याय कार्तिक, जैमिनी सूत्र इसी काल में लिखी गई प्रमुख रचना थी. असंग, बसुबन्धु, दिङ्नाग इसी काल के प्रमुख दार्शनिक थे.
- आर्यभट्ट गुप्तकाल का सबसे महान वैज्ञानिक, गणितज्ञ एवं ज्योतिषविद् था. फलित ज्योतिष पर कल्याणवर्मन ने गुप्तकाल में ही सारावली लिखी, जो ज्योतिष शास्त्र की श्रेष्ठ कृति के रूप में उभरी.
- गुप्तकाल में 313 ई. में मथुरा तथा 453 ई. में वल्लभी में दो जैन सभाएँ होने का उल्लेख मिलता है जिनमें जैनग्रन्थों का सम्पादन हुआ था.
- गुप्तकाल में चीनी यात्री फाह्यान (399-411 ई.) आया था, जो गोबी, मरुदेश, खोतान, पामीर एवं स्वात होकर गांधार पहुँचा और वहाँ से पेशावर होते हुए पंजाब पहुँचा था. मथुरा, कन्नौज, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, वैशाली, पाटलिपुत्र, बनारस इत्यादि नगरों में फाह्यान ने बौद्ध धर्म का अध्ययनार्थ भ्रमण किया था.
- मौर्य साम्राज्य का अन्त 180 ई. पू. में वृहद्रथ को मारकर पुष्यमित्र ने किया था.
- पतञ्जलि का महाभाष्य, गार्गीसंहिता, मालविकाग्निमित्रम्, पुराण, बाणभट्ट का हर्षचरित, दिव्यावदान प्रमुख रूप से गुप्तकाल से पूर्व यूनानी आक्रमणकारियों के इतिहास के स्रोतों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है.
- मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् मगध की सत्ता शुंगवंश के हाथों में आ गई. शुंगवंश का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था, जो मौर्य साम्राज्य के अन्तिम शासक बृहद्रथ का सेनापति था.
- प्रसिद्ध इतिहासकार तिब्बत बौद्ध यात्री लामा तारानाथ शुंग शासकों को ब्राह्मण मानते थे.
- अष्टाध्यायी के रचनाकार पाणिनी भी शुंगों को भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण के रूप में स्वीकारते थे.
- पुष्यमित्र का शासनकाल 187-151 ई. पू. तक माना जाता है. 36 वर्ष के शासनकाल में पुष्यमित्र ने मौर्य साम्राज्य को संगठित कर शुंग साम्राज्य का निर्माण किया था.
- शुंगवंश का अन्तिम शासक देवभूति या देवभूमि था, जो अत्यधिक अत्याचारी तरुण शासक था. उसे 75 ई. पू. उसके स्वयं के अमात्य द्वारा मार दिया गया.
- शुंगवंश के पश्चात् कण्व वंश का उदय शुंगवंशीय शासक के अमात्य वासुदेव ने 75 ई. पू. में किया.
- पुराणों के अनुसार कण्ववंशी या कण्वायन ब्राह्मण थे, जिसके 4 शासकों ने 45 वर्षों तक शासन किया था.
- मौर्योत्तर काल में भारत पर सबसे पहले आक्रमण यूनानी, यवन, इण्डोग्रीक, हिन्द-यूनानी एवं बैक्ट्रियन ग्रीकों द्वारा किया गया.
- भारत में इण्डोग्रीकों का सबसे पहला शासक डेमेट्रियस प्रथम (189-171 ई. पू.) था, जो यूथीडेमस (प्रथम यवन आक्रमणकारी) का पुत्र था.
- यूथीडेमस वंश के शासक मिणाण्डर ने सर्वप्रथम बौद्ध धर्म अपनाया था, जो हिन्द-यूनानी शासकों में सबसे पहला बौद्धानुयायी थी.
- यवनों की द्वितीय शाखा यूक्रेटाइड्स वंश का प्रथम शासक यूक्रेटाइड्स था, जिसे स्वयं के पुत्र ने मार दिया था.
- यूनानी सभ्यता को हेलेनिक सभ्यता कहा जाता था, जिससे हेलेनिस्टिक सभ्यता का विकास हुआ.
- शंकवंशियों को 'सीथियन' के नाम से भी पुकारा जाता था.
- शंकवंश की दो शाखाएँ–सईवंग या मुरुण्ड तथा ईरानी भारत में आई थी.
- मउज या मोग ने सिन्ध और पंजाब में सबसे पहले शकवंश को स्थापित किया था.
- डी. जी. सरकार के अनुसार विक्रम संवत् मोग या मउज ने प्रारम्भ किया था. उसका काल उनके अनुसार 20-22 ई. पू. था.
- विभिन्न भागों में गवर्नर स्थापित करना शक शासनकाल में **'क्षत्रपीय व्यवस्था'** कहलाई.
- मथुरा का सबसे पहला क्षत्रप शासक हगान या हगामस था.

- पश्चिम क्षेत्र में शकों की दो शाखाएँ थीं–नासिक का क्षहरात वंश एवं उज्जयिनी का चष्टन वंश.
- रुद्रदामन (130-150 ई. पू.) शकवंशीय अन्तिम महान् शासक था.
- ईरान या पार्थिया के निवासी प्रथम शताब्दी ई. पू. में भारत में आक्रमणकारी के रूप में आये, उन्हें पार्थियन या पह्लव कहा गया.
- गोण्डोफर्नीज (19-45 ई. के मध्य) पह्लवों का सबसे शक्तिशाली शासक था.
- कुषाण मूल रूप से मध्य एशिया की 'यू-ची' नामक एक जाति की शाखा थे. कुजुल कडफिसस ने भारत में कुषाणों की सत्ता को स्थापित किया था तथा कनिष्क ने विस्तारित की थी.
- शक संवत् को प्रारम्भ करने वाला कुषाण शासक कनिष्क था, जिसने 78 ई. में शक संवत् प्रारम्भ किया था
- सारनाथ, कौशाम्बी, अयोध्या कनिष्क के समय में स्वतन्त्र राज्य थे.
- कनिष्क तृतीय कुषाणों का अन्तिम शासक था.
- कुषाण वंश के पतन एवं गुप्त शासकों के उदय से पूर्व (176-275 ई.) इतिहास के प्रमाण उपलब्ध नहीं होने के कारण इसे 'अन्धकार युग' कहा गया है.
- अन्धकार युग के राजतन्त्रात्मक राज्य निम्नलिखित हैं–

  1. कौशाम्बी का माघ वंश 2. शक-मुरूण्ड
  3. भारशिव नाग 4. पद्मावती के भारशिव नाग
  5. मथुरा के नाग 6. कान्तिपुर एवं विदिशा के नाग.
- आन्ध्र सातवाहन शक्ति का प्रमुख केन्द्र प्रतिष्ठान या पैठान था. सातवाहन वंश का प्रथम शासक सिमुक था, जिसने 60-37 ई. पू. तक शासन किया था.
- सातवाहन के बाद वाकाटक वंश का उदय हुआ, जो सर्वाधिक शक्तिशाली वंश था, जिसका संस्थापक विन्ध्य शक्ति (255-275 ई.) था. 510-550 ई. के मध्य सातवाहनों का अन्त हो गया था.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सातवाहनों का सम्बन्ध था–
   (A) कर्नाटक (B) आन्ध्र प्रदेश
   (C) उड़ीसा (D) तमिलनाडू
2. शक सम्वत का प्रचलन माना जाता है–
   (A) 57 B.C. (B) 78 A.D.
   (C) 319 A.D. (D) 606 A.D.
3. कनिष्क प्रथम का बौद्ध धर्म की किस शाखा से सम्बन्ध था ?
   (A) हीनयान (B) महायान
   (C) सहजयान (D) वज्रयान
4. किस सातवाहन शासक ने दो बार अश्वमेध यज्ञ किया था ?
   (A) गौत्तमी पुत्र शातकर्णी ने
   (B) यज्ञश्री शातकर्णी ने
   (C) वाशिष्ठीपुत्र पुलमायी ने
   (D) हाल ने
5. सातवाहन शासक किस धर्म के अनुयायी थे ?
   (A) बौद्ध (B) जैन
   (C) ब्राह्मण (D) ब्राह्मण एवं बौद्ध
6. निम्नलिखित में से कौनसे सुमेलित नहीं हैं ?
   (A) कनिष्क प्रथम – बौद्ध धर्म
   (B) विम कदफिसस – शैव धर्म
   (C) हेलियोडोरम – ईसाई धर्म
   (D) खारवेल – जैन धर्म
7. मौर्योत्तर काल में नलवंशीय शासकों का सम्बन्ध था–
   (A) उत्तर प्रदेश से (B) मध्य प्रदेश से
   (C) राजस्थान से (D) गुजरात से
8. क्षहरात क्षत्रप के रूप में जाने जाते थे–
   (A) भूमक एवं नहपान
   (B) भूमक एवं रुद्रदामन
   (C) चष्टन और रुद्रदामन
   (D) नहपान और रुद्रदामन
9. अजन्ता की गुफा संख्या 9-10 का निर्माण हुआ था–
   (A) शुंग सातवाहन काल में
   (B) गुप्त काल में
   (C) मौर्य काल में
   (D) गुप्तोत्तर काल में
10. भारत में भूमिदान की प्रथा प्रारम्भ हुई थी–
    (A) मौर्य युग में (B) सातवाहन युग में
    (C) गुप्त युग में (D) गुप्तोत्तर युग में
11. गांधिकों वाले सिक्कों का प्रचलन था–
    (A) तक्षशिला (B) कौशाम्बी
    (C) अरिकामेडू (D) वाराणसी
12. मुद्राराक्षस का लेखक था–
    (A) विशाखादत्त (B) कालिदास
    (C) दण्डिन (D) बाणभट्ट
13. पतञ्जलि समकालिक था–
    (A) चन्द्रगुप्त II (B) पुष्यभूति शुंग
    (C) स्कन्द गुप्त (D) कुमार गुप्त
14. स्वप्नवासवदत्ता नाटक का लेख था–
    (A) भास (B) वाणभट्ट
    (C) कालिदास (D) दण्डिन
15. सातवाहन युग का व्यापारिक केन्द्र प्रतिष्ठान या पैठान किस नदी के तट पर अवस्थित था ?
    (A) कृष्णा (B) कावेरी
    (C) तुंगभद्रा (D) गोदावरी
16. सातवाहन वंश के किस / किन नरेशों के सिक्कों पर दो पतवारों वाले जहाज के चित्र मिलते हैं ?
    (1) शातकर्णी प्रथम
    (2) गौत्तमी पुत्र शातकर्णी
    (3) वाशिष्ठी पुत्र पुलुमापी
    (4) हाल
    (5) सिमुक
    कूट :
    (A) 1, 2 (B) 2, 3
    (C) 3, 4 (D) 4, 5
17. दक्षिण भारत का सबसे मशहूर चैत्य है–
    (A) कार्ले (B) भाजा
    (C) कन्हेरी (D) अमरावती
18. गुप्त साम्राज्य का स्वतन्त्र संस्थापक माना जाता है–
    (A) श्रीगुप्त (B) घटोत्कच
    (C) चन्द्रगुप्त I (D) समुद्रगुप्त

19. चन्द्रगुप्त II का शासनकाल माना जाता है–
(A) 319-350 A.D. (B) 350-375 A.D.
(C) 375-415 A.D. (D) 415-465 A.D.

20. रामगुप्त की ऐतिहासिकता पर प्रकाश पड़ता है–
1. देवीचन्द्रगुप्तम् नाटक से
2. हर्षचरित से
3. काव्यमीमांसा से
4. राष्ट्रकूटकालीन अभिलेखों से
कूट :
(A) 1 (B) 1, 2
(C) 1, 2, 3 (D) 1, 2, 3, 4

21. आर्यावर्त के प्रथम युद्ध में कौन शक्ति शामिल नहीं थी ?
(A) यौधेय (B) अच्युत
(C) नागसेन (D) केतकुलज

22. चीनी यात्री फाह्यान समकालीन था–
(A) सम्राट अशोक (B) समुद्रगुप्त
(C) चन्द्रगुप्त II (D) हर्षवर्धन

23. गुप्त सम्राट् के सर्वाधिक अभिलेख प्राप्त हुए हैं–
(A) चन्द्रगुप्त I (B) समुद्रगुप्त
(C) चन्द्रगुप्त II (D) कुमारगुप्त

24. मन्दसौर का प्राचीन नाम था–
(A) दशपुर (B) मत्स्य
(C) वैराट (D) कलिंग

25. समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा है–
(A) वी. ए. स्मिथ (B) रोमिला थापर
(C) रामशरण (D) आर. सी. मजूमदार

26. समुद्रगुप्त का समकालीन पल्लववंशीय शासक था–
(A) विष्णुगोप (B) महेन्द्रवर्मन
(C) नरसिंहवर्मन (D) नन्दिवर्मन

27. प्रयाग प्रशस्ति मूलतः स्तम्भ था–
(A) अशोक (B) समुद्रगुप्त
(C) चन्द्रगुप्त (D) हर्षवर्धन

28. वाकाटक राजवंश की स्थापना की थी–
(A) पुष्यभूति (B) विन्ध्यशक्ति
(C) सिमुक (D) मयूरशर्मन

29. महाकवि कालिदास किसके उपासक थे ?
(A) विष्णु (B) शिव
(C) ब्रह्मा (D) दुर्गा (काली माँ)

30. गुप्तकाल में सेनापति कहलाता था–
(A) महाबलाधिकृत (B) महादण्डनायक
(C) दण्डपाशिक (D) महापीलूपायी

31. गुप्तकाल में प्रान्त को कहा जाता था–
(A) भुक्ति (B) विषम
(C) पेठ (D) मण्डल

32. प्रथम हूण आक्रमण किसके समय हुआ था ?
(A) कुमारगुप्त I (B) स्कन्दगुप्त
(C) भानुगुप्त (D) पुरुगुप्त

33. गुप्तकाल में मन्त्रिपरिषद् होने का उल्लेख किया है–
(A) कामन्दक (B) कालिदास
(C) बाण (D) उपर्युक्त सभी

34. दैवीय उत्पत्ति राज्य को अस्वीकार करता है–
(A) मनु (B) कौटिल्य
(C) कामन्दक (D) बाणभट्ट

35. अट्ठारह बार जिसने अश्वमेध किया था–
(A) पुष्यभूति शुंग (B) प्रवरसेन प्रथम
(C) मयूरशर्मन (D) समुद्रगुप्त

36. कौनसा नाटक नहीं है ?
(A) मुद्राराक्षस (B) मृच्छकटिकम्
(C) मालविकाग्निमित्रम् (D) कुमारसंभवम्

37. कौनसी स्मृति गुप्तकालीन नहीं है ?
(A) नारद स्मृति (B) मनुस्मृति
(C) कात्यायन स्मृति (D) पाराशर स्मृति

38. मन्दिर निर्माण कला का भारत में जन्म हुआ–
(A) सैन्धवकाल में (B) वैद्धिककाल में
(C) मौर्यकाल में (D) गुप्तकाल में

39. चन्द्रव्याकरण के रचयिता थे–
(A) अमरसिंह (B) चन्दगोमी
(C) वात्स्यायन (D) पाणिनी

40. मिलिन्दपञ्हो ग्रन्थ में कितने व्यवसायों का उल्लेख मिलता है ?
(A) 36 (B) 60
(C) 75 (D) 83

41. बौद्ध धर्म का विश्वकोष कहलाता है–
(A) महाविभाषशास्त्र (B) महाभाष्य
(C) गार्गी संहिता (D) मिलिन्दपञ्हो

42. यू-ची जाति का सम्बन्ध था–
(A) शक (B) कुषाण
(C) पल्लव (D) इण्डोग्रीक

43. पार्थिया में हुए विद्रोह का नेता था–
(A) डियोडोटस (B) यूथीडेमस
(C) यूकेटाइडीज (D) आर्जेकीज

44. शकों पर जिस गुप्त शासक ने विजय प्राप्त की थी–
(A) चन्द्रगुप्त I (B) समुद्रगुप्त
(C) चन्द्रगुप्त II (D) स्कन्दगुप्त

45. हैलेनिक सभ्यता कहा जाता है–
(A) वैदिक सभ्यता को (B) आर्यसभ्यता को
(C) यूनानी सभ्यता को (D) उपर्युक्त सभी को

46. सीथियन कहा जाता है–
(A) कुषाणों को (B) शकों को
(C) ग्रीकों को (D) सभी को

47. शुंग भारद्वाज गौत्रीय ब्राह्मण थे, यह मानना था–
(A) पतञ्जलि का (B) पाणिनी का
(C) वात्स्यायन का (D) शुद्रक का

48. सिंचाई के उदाहरण जिस अभिलेख में मिलते हैं–
(A) रुद्रदामन के अभिलेख में
(B) मेहरोली लौह स्तम्भ में
(C) स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख में
(D) सभी में

49. गुप्तकाल में सुगन्धित चावल मिलते थे–
(A) पटना में (B) विहार में
(C) विदर्भ में (D) मगध में

50. गुप्तकालीन व्यावसायिक वर्ग में पटकार थे–
(A) नाई (B) जुलाहा
(C) तेली (D) छीपा

51. प्रसिद्ध इतिहासकार एस. आर. गोयल के अनुसार गुप्तों का मूल निवास था–
(A) पूर्वी उत्तर प्रदेश (B) मगध
(C) उत्तर प्रदेश (D) मध्य प्रदेश

52. किस ग्रन्थ के अनुसार गुप्त 'जाट' थे ?
(A) दीघ निकाय (B) अर्थशास्त्र
(C) मंजूश्रीमूलकल्प (D) पुराण

53. गुप्तकाल में कर वसूली विभाग का प्रमुख था–
(A) ध्रुवाधिकरण (B) सर्वाध्यक्ष
(C) महाप्रतिहार (D) दण्डपाशिक

54. रावण वध का लेखक था–
(A) वाणभट्ट (B) वत्सभट्टि
(C) वात्स्यायन (D) चन्द्रगोमी

55. निम्नलिखित में से हर्ष की रचना नहीं है–
(A) नागानन्द (B) प्रियदर्शिका
(C) रत्नावली (D) हर्षचरितम्

56. गुप्तवंश का अन्तिम शासक था–
(A) कुमारगुप्त II (B) बुद्धगुप्त
(C) स्कन्दगुप्त (D) पुरुगुप्त

57. जिसका नाम देवराज या देवगुप्त था–
(A) चन्द्रगुप्त II 'विक्रमादित्य'
(B) कुमारगुप्त
(C) स्कन्दगुप्त
(D) पुरुगुप्त

58. गुप्तवंश की स्थापना से पूर्व श्रीगुप्त था–
(A) शकों का अधीनस्थ शासक
(B) मुरुण्डों का अधीनस्थ शासक
(C) लिच्छिवियों का अधीनस्थ शासक
(D) कुषाणों का अधीनस्थ शासक

59. घटोत्कच को गुप्तवंश का संस्थापक कहा गया था–
(A) सुपिया अभिलेख में
(B) जूनागढ़ अभिलेख में
(C) रुद्रदामन के अभिलेख में
(D) सारनाथ स्तम्भ पर

60. चन्द्रगुप्त प्रथम का विवाह कुमारी देवी से हुआ था, जो किस वंश से सम्बन्धित थी–
(A) कुषाण वंश से (B) लिच्छवि वंश से
(C) शक वंश से (D) पार्थियन वंशों से

61. "श्रेणी का मुखिया आचार्य अन्तेवासी के साथ पुत्र जैसा व्यवहार करें" यह कहा है–
(A) नारद स्मृति में (B) याज्ञवल्क्य स्मृति में
(C) मनुस्मृति में (D) रावण स्मृति में

62. गुप्तकाल में ब्याज की दर थी–
(A) 2 प्रतिशत (B) 7 प्रतिशत
(C) 15 प्रतिशत (D) 20 प्रतिशत

63. कार्ले की चैत्य गुफा का निर्माण कराया था–
(A) वैजयन्ती के व्यापारी ने
(B) समुद्रगुप्त ने
(C) मगध के व्यापारी ने
(D) विदर्भ के शासक ने

64. राजघराने से वस्तुओं के निर्यात के मूल्य का आकलन करता था–
(A) सार्थवाह (B) श्रेणी
(C) मूल्यांकक (D) राजा

65. खारवेल का सम्बन्ध जिस वंश से था–
(A) चेदिवंश (B) शक वंश
(C) कुषाण वंश (D) मौर्य वंश

66. वाकाटकों की वेसिम शाखा का संस्थापक था–
(A) युद्धगुप्त (B) पुरुगुप्त
(C) सर्वसेन (D) पृथ्वीसेन

67. 453 ई. में आयोजित वल्लभी जैन सभा का सभापति कौन था ?
(A) भद्रबाहु (B) क्षमाश्रमण
(C) सिहसेन (D) सर्वनन्दी

68. हर्ष का राजकवि बाणभट्ट था–
(A) कवि (B) नाटककार
(C) गद्यकार (D) संगीतज्ञ

69. निम्नलिखित में से कौन हर्ष की रचना नहीं है ?
(A) हर्षचरित (B) प्रियदर्शिका
(C) रत्नावली (D) नागानन्द

70 किसने सूर्य और चन्द्र वंश क्षत्रियों का उल्लेख किया है ?
(A) बाणभट्ट (B) कालिदास
(C) नारद (D) वृहस्पति

71. वर्तमान में वातापी स्थित है–
(A) लातूर (महाराष्ट्र)
(B) बीजापुर (कर्नाटक)
(C) हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
(D) रायपुर (म. प्र.)

72. वातापी के चालुक्य वंश का संस्थापक कौन था ?
(A) पुलकेशिन I (B) मंगलेश
(C) पुलकेशिन II (D) कीर्तिवर्मन

73. कालाभ्र किस धर्म के अनुयायी थे ?
(A) बौद्ध धर्म (B) जैन धर्म
(C) आजीवक सम्प्रदाय (D) आलवार

74. एहोल अभिलेख किस भाषा में उत्कीर्ण है ?
(A) संस्कृत में (B) कन्नड़ में
(C) प्राकृत में (D) तमिल में

75. प्रसिद्ध जोगेश्वरी मन्दिर अवस्थित है–
(A) एलोरा (B) एलिफेंटा
(C) साल्सेट (D) पड़क्कल

76. कौनसा चीनी यात्री पल्लवकाल में आया था ?
(A) फाह्यान (B) ह्वेनसांग
(C) निकितन (D) अलबेरूनी

77. कैलाश नाथ मन्दिर के निर्माण में किस महिला ने रुचि प्रदर्शित की थी ?
(A) शील भट्टारिका (B) रंगपताका
(C) नागनिका (D) रानी दिद्दा

78. पड़क्कल का सर्वाधिक सुन्दर मन्दिर है–
(A) संगमेश्वर मन्दिर (B) पापनाथ का मन्दिर
(C) विरुपाक्ष का मन्दिर (D) लाढ़ खाँ का मन्दिर

79. वर्द्धन राज्य की प्रारम्भिक राजधानी थी–
(A) कन्नौज (B) थानेश्वर
(C) दिल्ली (D) अन्हिलवाड़

80. हर्षकालीन प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था–
(A) नालन्दा विश्वविद्यालय
(B) तक्षशिला विश्वविद्यालय
(C) विक्रमशिला विश्वविद्यालय
(D) काँची विश्वविद्यालय

81. महाबलीपुरम् नगर को किस पल्लव शासक ने बसाया था ?
(A) सिंहवर्मन (B) महेन्द्रवर्मन
(C) नरसिंहवर्मन I (D) नन्दिवर्मन

82. हर्ष ने हर्ष सम्वत् का प्रवर्त्तन किया था–
(A) 600 ई. में (B) 606 ई. में
(C) 612 ई. में (D) 647 ई. में

83. चालुक्य सम्राट् सिद्धान्ततः थे–
(A) धर्मनिरपेक्ष (B) धर्मसहिष्णु
(C) असहिष्णु (D) उपर्युक्त सभी

84. हर्ष का बहनोई ग्रहवर्मन कहाँ का शासक था?
(A) थानेश्वर (B) कन्नौज
(C) दिल्ली (D) अजमेर

85. हर्षवर्द्धन का दूसरा नाम क्या था ?
(A) शिलादित्य (B) विक्रमादित्य
(C) आदित्य (D) पराक्रमाङ्क

86. कौनसा कर ग्रामीणों द्वारा अधिकारियों को प्रदान करना पड़ता था ?
(A) हिरण्य (B) उद्रंग
(C) प्रस्थ (D) भोग

87. गुप्तोत्तरकालीन भू के सन्दर्भ में 'खिल' शब्द का आशय था–
(A) जिस भूमि को जोता नहीं जाता
(B) राज्य के स्वामित्व वाली भूमि
(C) दान में प्रदान की गई भूमि
(D) जहाँ बीज नहीं उगता हो

88. ब्राह्मणों को दान में दी गई भूमि नाराज होने पर राजा–
(A) ब्राह्मण से पुनः ले सकता था
(B) ब्राह्मण की निजी सम्पत्ति हो जाती थी
(C) शूद्रों को दे दी जाती थी
(D) उपर्युक्त सभी

89. गुप्तोत्तरकालीन 'विषय' शब्द का अर्थ होता था–
(A) ग्राम (B) जिला
(C) प्रान्त (D) राष्ट्र

90. हर्ष के अभिलेखों में जिसका नाम नहीं मिलता–
(A) पुष्यभूति (B) नरवर्द्धन
(C) हर्षवर्द्धन (D) राज्यवर्द्धन I

91. राज्यश्री का हर्षवर्द्धन से सम्बन्ध था–
(A) भाई-बहिन (B) पिता-पुत्री
(C) पति-पत्नी (D) कोई नहीं

92. निम्नलिखित में से किसमें 'मौखरी' शब्द का उल्लेख हुआ है ?
(A) महाभाष्य में (B) उत्तररामचरित में
(C) सी-यू-की में (D) दशकुमारचरित में

93. कल्याणी के चालुक्य वंश का संस्थापक था–
(A) तैलप II (B) विक्रमादित्य I
(C) सत्याश्रय (D) हर्षवर्द्धन

94. किसे यात्रियों का राजकुमार कहा जाता था ?
(A) इत्सिंग को (B) फाह्यान को
(C) ह्वेनसांग को (D) सभी को

95. गुप्तोत्तरकाल में भूमि अनुदान को कहा जाता था–
(A) आज्ञापत्र (B) दानपत्र
(C) पट्टा (D) सात्त

96. कौनसी नदी के तट पर पुलकेशिन II ने हर्षवर्द्धन को हराया था ?
(A) गोदावरी (B) गंडक
(C) नर्मदा (D) गंगा

97. नारद स्मृति में दासों की संख्या बतलाई गई है–
(A) 4 (B) 8
(C) 7 (D) 15

98. गुप्तोत्तर काल के किस भाष्यकार के अनुसार–"शूद्र का उच्चवर्णों की सेवा करना अनिवार्य कर्त्तव्य नहीं है ?"
(A) मेघातिथि (B) देवणभट्ट
(C) विश्वरूप (D) जीमूतवाहन

99. प्राचीनकाल में अध्यापिकाओं को कहा जाता था–
(A) आचार्या (B) उपाध्याया
(C) विदुषी महिला (D) ब्रह्मवादिनी

100. जुष्कपुर की स्थापना किसने की थी?
(A) वशिष्क (B) हुविष्क
(C) कनिष्क (D) विम कैडफिसेज

101. सर्वप्रथम दासों को कृषि कार्य में कब लगाया गया ?
(A) वैदिककाल में (B) मौर्यकाल में
(C) गुप्तकाल में (D) पूर्वमध्यकाल में

102. निम्नलिखित में से कौन प्राचीनकाल की प्रसिद्ध वेश्याएँ थीं ?
(1) आम्रपाली (2) सालवती
(3) वसन्तसेना (4) नागनिका
(A) 1, 2 (B) 2, 3
(C) 3, 4 (D) 1, 4

103. गुप्तकाल में चाण्डालों को कहा जाता था–
(A) प्लव (B) दिवाकीर्ति
(C) जनंगम (D) उपर्युक्त सभी

104. बौद्ध ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ कहा गया था–
(A) ब्राह्मणों को (B) क्षत्रिय को
(C) वैश्यों (D) शूद्रों को

105. निम्नलिखित में से अनुलोम विवाह का उदाहरण है–
(A) वर क्षत्रिय एवं कन्या ब्राह्मण हो
(B) वर वैश्य एवं कन्या क्षत्रिय हो
(C) वर वैश्य एवं कन्या शूद्र हो
(D) वर शूद्र एवं कन्या ब्राह्मण हो

106. किसका विवाह अनुलोम विवाह था ?
(A) च्यवन से सुकन्या का विवाह
(B) श्यावस्य से रथवीति का विवाह
(C) अगस्त्य का लोपामुद्रा से विवाह
(D) उपर्युक्त सभी

107. शैक्षिक संस्कार के अन्तर्गत नहीं आता–
(A) विद्यारम्भ (B) उपनयन
(C) वेदारम्भ (D) कर्णवेधन

108. शूद्रों के लिए वर्जित संस्कार था–
(A) पुंसवन संस्कार (B) नामकरण संस्कार
(C) उपनयन संस्कार (D) विवाह संस्कार

109. महाभारत और मनुस्मृति के अनुसार क्षत्रियों के लिए उपयुक्त विवाह माना गया था–
(A) गान्धर्व विवाह (B) राक्षस विवाह
(C) असुर विवाह (D) पैशाच विवाह

110. प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचना में 'अनिरवसित' सम्बन्धित था–
(A) स्त्रियों एवं शूद्रों से
(B) केवल शूद्रों से
(C) केवल स्त्रियों से
(D) क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र से

111. सही कालक्रम है–
(A) मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, देवलस्मृति
(B) मनुस्मृति, देवलस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति
(C) याज्ञवल्क्यस्मृति, मनुस्मृति, देवलस्मृति
(D) देवलस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, मनुस्मृति

112. किसको वर्णसंकर समझा जाता था ?
(A) विधवा से उत्पन्न संतान
(B) वर्ण की सीमाओं का अतिक्रमण
(C) वर्णाश्रम धर्म का समर्थन
(D) शूद्रों की सन्तान हो

113. निस्सय पद्धति का सम्बन्ध है–
(A) वैदिक शिक्षा से (B) बौद्ध शिक्षा से
(C) जैन शिक्षा से (D) उपर्युक्त सभी से

114. कण्व ऋषि का आश्रम अवस्थित था–
(A) गंगा तट पर (B) यमुना तट पर
(C) नर्मदा तट पर (D) सरयू तट पर

115. पाँचवीं शताब्दी ई. पू. में भारतीय प्रान्त निम्नलिखित में से किसको 320 टैलेन्ट स्वर्ण वार्षिक कर के रूप में देता था ?
(A) द. पू. एशिया को (B) चीन को
(C) फारस को (D) यूनान को

116. "यदि यह सिद्ध हो जाये कि वैश्य और शूद्रों ने वेद पाठ सुना है, तो ब्राह्मण उन्हें न्यायाधीश के पास ले जाते हैं और उनकी जीभ काट दी जाती है." यह किसने लिखा था ?
(A) ह्वेनसांग (B) मेगस्थनीज
(C) अलबेरूनी (D) मार्कोपोलो

117. किन परिस्थितियों में स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरा विवाह कर सकती थी ?
(A) नपुंसक होने पर (B) पतित होने पर
(C) संन्यासी होने पर (D) उपर्युक्त सभी

118. "यदि कोई व्यक्ति भूमि का भोग कर रहा हो, किन्तु उसके पास लिखित में कोई प्रमाण न हो, तो वह व्यक्ति तस्कर होता है." यह कथन है–
(A) नारद का (B) बृहस्पति का
(C) मनु का (D) गौतम का

119. निम्नलिखित में से ब्राह्मणों को शस्त्र ग्रहण करने की अनुमति दी थी–
(A) मेधातिथि ने (B) पाराशर ने
(C) माघ ने (D) भट्ट-भुवन देव ने

120. "राजद्रोह और वर्ण व्यवस्था को भंग करने वाले को समान दण्ड देना चाहिए." यह कथन किस ग्रन्थ में उल्लिखित है ?
(A) रामायण में (B) महाभारत में
(C) रघुवंश में (D) हर्षचरित में

121. जिनकी माताएँ चाण्डाल होती थीं, उनको कहा जाता था–
(A) सायाक (B) निषाद
(C) आयोगव (D) करण

122. सामन्तों की नौ श्रेणियों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के घटों का उल्लेख मिलता है–
(A) अपराजित पृच्छा में (B) शिशुपाल वध में
(C) कथाकोष में (D) पद्मपुराण में

123. स्वामित्व के लक्षण का उल्लेख सर्वप्रथम किसने किया था ?
(A) गौतम ने (B) हारित ने
(C) कुमारिल ने (D) सवर स्वामी ने

124. "चल और अचल दोनों प्रकार की सम्पत्ति का स्वामी राजा होता है." यह उल्लेख हुआ है–
(A) इण्डिका में (B) सी-यू की में
(C) वृहद्कल्पभाष्य में (D) बृहस्पतिस्मृति में

125. जीवन के चार आश्रमों का वर्णन मिलता है–
(A) ऐतरेय ब्राह्मण में (B) शतपथब्राह्मण में
(C) जाबोलोपनिषद् में (D) बृहदारण्यकोपनिषद में

126. मनु के अनुसार नियोग से उत्पन्न सन्तान को कहा जाता था–
(A) औरस (B) दत्तक
(C) क्षेत्रज (D) नियोगज

127. निष्क्रमण के बाद और समावर्तन के पहले कितने संस्कार सम्पन्न होते थे ?
(A) तीन (B) चार
(C) पाँच (D) छः

128. सती होना आत्महत्या है. इसका उल्लेख जिस टीकाकार ने किया था–
(A) अंगिरा ने (B) मेधातिथि ने
(C) भट्टस्वामी ने (D) शूद्रक ने

129. एरण के अभिलेख में किसके सती होने का उल्लेख है ?
(A) गोपराज की पत्नी (B) देकब्बे
(C) अनन्तराज की पत्नी (D) राज्यश्री

130. नारी के लिए कौनसा आश्रम अनिवार्य नहीं था ?
(A) ब्रह्मचर्य (B) गृहस्थ
(C) वानप्रस्थ (D) उपर्युक्त सभी

131. नियोग प्रथा में नियुक्त देवर या सपिंड पुरुष कहलाता था–
(A) क्षेत्रिक (B) क्षेत्र
(C) बीजी (D) नियोगी

132. चार पुरुषार्थों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है–
(A) धर्म को (B) अर्थ को
(C) काम को (D) मोक्ष को

133. महाभारत के अनुसार वैश्य का स्वाभाविक कर्म था–
(A) कृषि (B) गोरक्षा
(C) वाणिज्य (D) उपर्युक्त सभी

134. चाण्डाल की निषाद से उत्पन्न सन्तान कहलाती थी–
(A) पाण्डुसौपाक (B) आयोगव
(C) सूत (D) वैदेहक

135. गुप्तकाल में एक नयी जाति जो लेखक या लिपिक का कार्य करती थी, अस्तित्व में आयी, उस जाति का नाम था–
(A) भट (B) कायस्थ
(C) कुशीलव (D) मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय

136. समाज में शूद्रों के अतिरिक्त एक और वर्ग था, जो अत्यन्त हीन और अस्पृश्य जीवन जीता था–
(A) कुशीलव (B) कैवर्त
(C) अन्त्यज या चाण्डाल (D) करण

137. किस अभिलेख में ब्राह्मण का घोड़े के व्यापारी के रूप में उल्लेख है ?
(A) पेहोवा अभिलेख में
(B) एरण अभिलेख में
(C) निगलीवा अभिलेख में
(D) एर्रागुड्डी अभिलेख में

138. गौतम के अनुसार संस्कारों की संख्या थी–
(A) 40 (B) 20
(C) 15 (D) 8

139. इण्डिका में वर्णित दार्शनिक जाति के अन्तर्गत आते थे–
(A) ब्राह्मण एवं शूद्र (B) ब्राह्मण एवं श्रमण
(C) क्षत्रिय एवं वैश्य (D) शूद्र एवं वैश्य

140. यशोमती कौन थी ?
(A) प्रभाकर वर्धन की माँ
(B) पुष्यभूति की पत्नी
(C) हर्षवर्धन की माँ
(D) राज्यवर्धन की बेटी

141. ऋग्वैदिककालीन आर्यों के मकानों में प्रयोग नहीं होता था–
(A) पक्की ईंट (B) घास-फूस
(C) लकड़ी (D) बाँस

142. किस ग्रन्थ में पुत्र को परिवार का रक्षक तथा पुत्रियों को दुःख का कारण बताया है ?
(A) ऐतरेय ब्राह्मण में (B) कठोपनिषद में
(C) मण्डूकोपनिषद में (D) वाल्मिकी रामायण में

143. आर्यों का समाज था–
(A) मातृसत्तात्मक
(B) पितृसत्तात्मक
(C) मातृ एवं पितृसत्तात्मक
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

144. गोत्र प्रथा का आविर्भाव हुआ–
(A) उत्तर-वैदिककाल में (B) ऋग्वैदिककाल में
(C) गुप्तकाल में (D) मौर्यकाल में

145. कश्मीरवासी धोखेबाज एवं कायर होते थे. यह कहा था–
(A) ह्वेनसांग ने (B) फाह्यान ने
(C) निकितन ने (D) मेगस्थनीज ने

146. वाकाटक और कदम्ब राजवंश के संस्थापक थे–
(A) ब्राह्मण (B) क्षत्रिय
(C) वैश्य (D) शूद्र

उत्तरमाला

1. (B)	2. (B)	3. (B)	4. (A)	5. (C)
6. (C)	7. (B)	8. (A)	9. (A)	10. (B)
11. (B)	12. (A)	13. (B)	14. (A)	15. (D)
16. (B)	17. (A)	18. (C)	19. (C)	20. (D)
21. (A)	22. (C)	23. (D)	24. (A)	25. (A)
26. (A)	27. (B)	28. (B)	29. (D)	30. (A)
31. (A)	32. (B)	33. (D)	34. (D)	35. (C)
36. (D)	37. (B)	38. (D)	39. (B)	40. (C)
41. (A)	42. (B)	43. (D)	44. (C)	45. (C)
46. (B)	47. (B)	48. (C)	49. (D)	50. (B)
51. (A)	52. (C)	53. (A)	54. (B)	55. (D)
56. (B)	57. (A)	58. (B)	59. (A)	60. (B)
61. (A)	62. (C)	63. (A)	64. (C)	65. (A)
66. (C)	67. (B)	68. (C)	69. (A)	70. (A)
71. (B)	72. (A)	73. (A)	74. (A)	75. (C)
76. (B)	77. (B)	78. (C)	79. (B)	80. (A)
81. (C)	82. (B)	83. (B)	84. (B)	85. (A)
86. (C)	87. (A)	88. (A)	89. (B)	90. (A)
91. (A)	92. (A)	93. (A)	94. (C)	95. (A)
96. (C)	97. (D)	98. (A)	99. (A)	100. (A)
101. (B)	102. (A)	103. (D)	104. (B)	105. (C)
106. (D)	107. (D)	108. (C)	109. (D)	110. (B)
111. (A)	112. (B)	113. (B)	114. (D)	115. (C)
116. (C)	117. (D)	118. (A)	119. (A)	120. (B)
121. (A)	122. (A)	123. (A)	124. (D)	125. (B)
126. (C)	127. (D)	128. (B)	129. (A)	130. (C)
131. (C)	132. (A)	133. (D)	134. (A)	135. (B)
136. (C)	137. (A)	138. (A)	139. (B)	140. (C)
141. (A)	142. (A)	143. (B)	144. (A)	145. (A)
146. (A)				

नोट–जैन, बौद्ध, शैव एवं भागवत धर्म के लिए अध्याय 7 का अवलोकन करें एवं संगम युग की पाठ्य सामग्री अगले पृष्ठों पर वर्णित हैं.

विगत वर्षों में आई.ए.एस. (प्री.) में पूछे गये प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किन दो विद्वानों ने कनिष्क के समय में बुलाई गयी बौद्ध धर्मसंगीति में भाग लिया था ?
   1. वसुमित्र   2. अश्वघोष
   3. उपालि   4. कात्यायन
   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–
   (A) 1 तथा 2   (B) 1 तथा 3
   (C) 2 तथा 3   (D) 2 तथा 4
2. किसकी राजसभा में हीलियोडोरस एक राजदूत के रूप में था ?
   (A) पुष्यमित्र शुंग   (B) काशिपुत्र भागभद्र
   (C) चन्द्रगुप्त मौर्य   (D) शक रुद्रदामन
3. किसने स्वर्ण मुद्राओं पर बुद्ध की आकृति के साथ लेख 'बोद्दो' तथा ताम्र मुद्राओं पर लेख 'सक्कमानो बोद्दो' का चलन प्रारम्भ किया ?
   (A) दिमित्रियस ने   (B) हुविष्क-I ने
   (C) कनिष्क ने   (D) विमा कडफिस ने
4. मृच्छकटिकम् किसने लिखी थी?
   (A) विशाखादत्त   (B) कृपाण
   (C) शूद्रक   (D) कालिदास
5. सप्तशतक (सत्तसई) का लेखक कौनसा सातवाहन शासक था-
   (A) सिमुक   (B) शातकर्णी गौतमी पुत्र
   (C) हाल   (D) यज्ञश्री शातकर्णी
6. प्राक्-गुप्तकाल के सम्बन्ध में व्यापारिक, वाणिज्यिक स्थिति को निम्न में से नहीं जाना जा सकता–
   (A) मैगस्थनीज के विवरण से
   (B) कौटिल्य के अर्थशास्त्र से
   (C) जातकों से
   (D) पुराणों से
7. किरातार्जुनीयम् जिसने लिखा था–
   (A) मही   (B) भारवि
   (C) माघ   (D) कालिदास
8. हर्ष के काल में शिक्षा का भारत में उत्कृष्टतम स्तर था. यह किस इतिहासकार का मानना था?
   (A) डॉ. आर. एस. त्रिपाठी
   (B) आर. सी. मजूमदार
   (C) डॉ. के. एम. पणिक्कर
   (D) डॉ. एस. रॉय
9. आश्रम व्यवस्था बनी रही–
   (A) केवल वैदिक काल तक
   (B) मौर्यकाल तक
   (C) गुप्तकाल तक
   (D) सम्पूर्ण कालों में
10. गुप्त मंदिर पाये गये–
   (1) बिटेरगाँव   (2) नागरा
   (3) देवगढ़   (4) भितरी
   (A) 1 व 2   (B) 2 व 3
   (C) 1, 3, व 4   (D) 1, 2 व 4
11. वाकाटक शासक अधिकांशतः अनुयायी थे–
   (A) शैव धर्म के   (B) भागवद् धर्म के
   (C) बुद्ध धर्म के   (D) जैन धर्म के
12. 'दीपावंश' किसमें लिखा गया है?
   (A) प्राकृत में   (B) पालि में
   (C) तमिल में   (D) संस्कृत में
13. गुणोत्तरकाल में भूमि पर स्वामित्व था–
   (A) राज्य का   (B) व्यक्ति विशेष का
   (C) परिवार का   (D) गाँव का
14. निम्नलिखित में से वैदिककाल में नहीं था–
   (A) बाल विवाह
   (B) वर्णजनित व्यवसाय
   (C) विधवाओं का पुनर्विवाह
   (D) कोई नहीं
15. दास प्रथा
   (A) मौर्यकाल में विद्यमान नहीं थी
   (B) गुप्तकाल में विद्यमान नहीं थी
   (C) हर्षकाल में विद्यमान नहीं थी
   (D) सम्पूर्ण प्राचीन भारत में चलती थी
16. सातवाहन वंश के सिक्के निर्मित थे–
   (A) सोना, चाँदी, ताँबा
   (B) ताँबा, सीसा, चाँदी, पोटीन
   (C) पोटीन, सोना, ताँबा, चाँदी
   (D) केवल सोना, चाँदी से
17. समाहर्त्ता प्रथा किस काल में व्यापक रूप से जानी गई?
   (A) शुंग   (B) मौर्य
   (C) गुप्त   (D) सातवाहन
18. विदिशा किस नदी के किनारे पर स्थित था?
   (A) चम्बल   (B) गंगा
   (C) यमुना   (D) गोदावरी

19. कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार सैनिक हो सकते थे–
(A) क्षत्रिय
(B) क्षत्रिय एवं शूद्र
(C) क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र
(D) क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं ब्राह्मण

20. वधु के बदले कन्या का पति एक गाय प्राप्त करता था, यह विवाह कहलाता था–
(A) राक्षस विवाह (B) आर्ष विवाह
(C) दैव विवाह (D) पैशाच विवाह

21. प्राचीन धर्मग्रन्थों के अनुसार जीवन चार आश्रमों में विभक्त था. निम्नलिखित में से आश्रमों का सही क्रम था–
(A) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यास, वानप्रस्थ
(B) संन्यास, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ
(C) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
(D) वानप्रस्थ, गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, संन्यास

22. निम्नलिखित में से दीघ निकाय पर टीका है–
(A) दीपवंश (B) ललित विस्तार
(C) नेत्ति प्रकरण (D) सुमंगल-विलासिनी

23. प्राचीनतम भारतीय सिक्के निम्नांकित से पहले के नहीं हैं–
(A) सातवीं शताब्दी ई. पू.
(B) पाँचवीं शताब्दी ई. पू.
(C) तृतीय शताब्दी ई. पू.
(D) द्वितीय शताब्दी ई.

24. नगर प्रशासन के प्रसंग में नगर श्रेष्ठी एवं सार्थवाह का उल्लेख निम्नांकित स्थान से प्राप्त गुप्त अभिलेखों से हुआ है–
(A) अवन्ति (B) मध्य प्रदेश
(C) पुण्ड्रवर्धन (D) सौराष्ट्र

25. गुप्त स्वर्ण एवं रजत सिक्के मूलतः निम्नांकित के सिक्कों पर आधारित थे–
(A) रोमन और शक क्षत्रप
(B) कुषाण और यौधेय
(C) कुषाण और शक क्षत्रप
(D) रोमन और कुषाण

26. हर्षवर्द्धन के काल में घाटीयन्त्र से सिंचाई होती थी. यह किसके लेखों से जाना जाता है?
(A) ह्वेनसांग (B) वाण
(C) सुवन्धु (D) दण्डिन

27. गुप्तोत्तर काल में सिंचाई के लिए प्रयुक्त होता था–
(1) अरघट्ट (2) वाणी
(3) तड़ाग (4) प्रणाली
(A) 1, 2, 3 (B) 1, 3
(C) 2, 4 (D) 1, 2, 3, 4

28. निम्नलिखित में से वर्णसंकर समझा जाता था–
(A) अवैध सन्तान का जन्म
(B) वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध आन्दोलन
(C) शादी के लिए वर्ण व्यवस्था को खत्म करना
(D) वर्णाश्रम धर्म को स्थापित करना

29. प्राचीन भारतीय समाज में अनिर्वासित का सम्बन्ध था–
(A) ब्राह्मण एवं क्षत्रियों से
(B) वैश्य एवं शूद्रों से
(C) शूद्रों से
(D) वर्ण व्यवस्था से परे लोग

30. शाही उपाधि 'कैसर' किससे सम्बन्धित थी ?
(A) फारसी (B) सीथियन
(C) चीनी (D) रोमन

31. निम्नलिखित अभिलेखों में से किस एक में सती का प्राचीनतम पुरालेखीय साक्ष्य मिलता है ?
(A) हुविष्क के मथुरा अभिलेख से
(B) समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख से
(C) स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख से
(D) भानुगुप्त के एरण गुप्त अभिलेख से

32. मातृदेवी उमा का नाम किसके सिक्कों पर मिलता है ?
(A) कुणिन्द (B) हिन्द-यवन
(C) कुषाण (D) गुप्त

33. गुप्तोत्तर काल में अन्तिम रूप से भूमि पर स्वामित्त्व होता था–
(A) कृषक का (B) ग्राम समुदाय का
(C) राजा का (D) संयुक्त परिवार का

34. प्रारम्भिक भारत में घाटीयन्त्र का प्रयोग किया जाता था–
(A) धातुओं के उत्पादन में
(B) कुओं से सिंचाई करने में
(C) प्रशासन चलाने में
(D) अस्त्र बनाने में

35. स्वयंवर जिसकी विशिष्ट अवस्था थी–
(A) गान्धर्व विवाह (B) पैशाच विवाह
(C) राक्षस विवाह (D) ब्रह्म विवाह

36. निम्नलिखित में से किन राजशक्तियों के अभिलेख में स्कन्द की पूजा का अभिलेख है ?
(1) सातवाहन (2) यौधेय
(3) इक्ष्वाकु (4) चेदि

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर बताइए–
(A) 1, 2 (B) 1, 3
(C) 2, 3 (D) 3, 4

37. निम्नलिखित में से वे कुषाण राजा कौन थे, जिनके सिक्कों पर शिव अथवा शिव एवं नन्दी अथवा शिव का कोई आयुध अंकित था ?
(1) हुविष्क (2) कनिष्क
(3) कुजुल कदफिसस (4) विम कदफिसस
कूट से सही उत्तर चुनिए–
(A) 1, 2, 3 (B) 1, 2, 3, 4
(C) 1, 3, 4 (D) 1, 2, 4

38. कला एवं साहित्य में गोपियाँ कृष्ण कथा की प्रमुख अंग कब बनीं ?
(A) शुंग काल में (B) कुषाण काल में
(C) गुप्त काल में (D) पूर्व मध्य काल में

39. नीचे प्रस्तुत चार राजवंशों में से किसने सीसे के सिक्के चलाए थे ?
(1) मौर्य (2) सातवाहन
(3) पश्चिमी क्षत्रप (4) गुप्त
(A) 1, 2 (B) 1, 2, 4
(C) 2, 3, 4 (D) 3, 4

40. पेरीप्लस के अनुसार भारत में समुद्र यात्राएँ एपिली या निम्नलिखित माह में की जाती थी–
(A) अक्टूबर (B) जुलाई
(C) जून (D) दिसम्बर

41. भारत में नारियल की खेती कब से ज्ञात है ?
(A) मौर्यकाल से
(B) सातवाहन एवं क्षत्रपों के काल से
(C) गुप्तकाल से
(D) पल्लव एवं पश्चिमी गंगकाल से

42. किस विवाह में वधू पक्ष को वर द्वारा पैसे दिये जाते थे ?
(A) ब्रह्म विवाह (B) राक्षस विवाह
(C) पैशाच विवाह (D) असुर विवाह

43. निम्नलिखित में से जिसे अस्पृश्य समझा जाता था–
(1) चर्मकार (2) स्वर्णकार
(3) परैयार (4) रथकार
(A) 1, 2 (B) 1, 3
(C) 1, 4 (D) 3, 4

44. महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र प्रतिष्ठान किस नदी के किनारे पर अवस्थित था ?
(A) कावेरी (B) कृष्णा
(C) गोदावरी (D) नर्मदा

45. गुप्तकाल में पूर्वी भारत में ग्रामीण काश्तकारों के लिए निम्नलिखित में से किन शब्दों का प्रयोग किया जाता था?
(1) अग्रहारिन् (2) कुटुम्बन्
(3) महत्ता (4) भोगिक
कूट :
(A) 1, 2 (B) 3, 4
(C) 1, 4 (D) 2, 3

46. मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैद्य हैं एवं मेरी माँ पत्थर की चक्की चलाती है. यह उद्‌धृत है–
(A) ऋग्वेद से (B) यजुर्वेद से
(C) धम्मपद से (D) मृच्छिकटिकम् से

47. किसी को भी अपनी जाति से बाहर शादी करने की अनुमति नहीं थी, एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय बदलने की या एक से अधिक व्यवसाय करने की अनुमति नहीं थी. यह उल्लेख किया था–
(A) मेगस्थनीज ने (B) फाह्यान ने
(C) ह्वेनसांग ने (D) अलबरूनी ने

48. 'अन्याव्रत' का उल्लेख ऋग्वेद में किसके लिए हुआ है ?
(A) दासों के लिए (B) दस्युओं के लिए
(C) मलेच्छों के लिए (D) यदुओं के लिए

49. निम्नलिखित में से किन राजाओं ने सुदर्शन सरोवर का उल्लेख करने वाले लेख छोड़े हैं ?
(1) अशोक (2) रुद्रदामन
(3) समुद्रगुप्त (4) स्कन्दगुप्त
कूट :
(A) 1, 2 (B) 1, 3
(C) 2, 3 (D) 2, 4

50. कौनसा युग्म सुमेलित नहीं है ?
(A) प्लिनी – प्राकृतिक इतिहास
(B) टॉलेमी – भूगोल
(C) स्ट्रेबो – पेरीप्लस ऑफ द ऐरीथ्रियन सी
(D) कॉसमॉस – क्रिश्चियन स्थान वर्णन

51. गुप्तकाल में भारत का जिससे घनिष्ठतम सम्बन्ध था–
(A) दक्षिण पूर्व एशिया (B) मध्य एशिया
(C) ईरान (D) पश्चिमी एशिया

52. श्रेणी शब्द की सर्वाधिक उपयुक्त व्याख्या है–
(A) समान व्यवसाय करने वालों का संगठन
(B) अलग व्यवसाय करने वालों का संगठन
(C) एक से अधिक जाति का संगठन
(D) विभिन्न जातियों का अलग व्यवसायियों का संगठन

53. सुमेलित कीजिए तथा कूट द्वारा उत्तर दीजिए–
(a) व्यापारी 1. जेट्ठक
(b) शिल्पी 2. सेट्ठी

(c) श्रेणियों का संघ — 3. सत्थवाह
(d) कारवाँ का सरदार — 4. भाण्डागारिक

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	1	4	3
(B)	2	1	3	4
(C)	1	2	3	4
(D)	1	2	4	3

54. गुप्तोत्तर काल में भूमि राजस्व था–
(A) 1/5 से 1/6 भाग उत्पादन का
(B) उत्पादन का 1/4 भाग
(C) उत्पादन का 1/3 भाग
(D) उत्पादन का 1/2 भाग

55. मान्यखेत से कल्याणी को चालुक्य ने राजधानी बनायी थी–
(A) सोमेश्वर I ने (B) विक्रमादित्य VI ने
(C) पर्मा जगदेकमल्ला ने (D) तैलप्प III ने

56. मेगस्थनीज ने कहा है–"भारत में दास प्रथा नहीं थी." यह वक्तव्य दिया गया होगा, क्योंकि–
(A) भारत में दास प्रथा का अभाव होगा
(B) यूनान में जिस सीमा तक दास प्रथा थी, उस सीमा से अधिक भारत में नहीं थी
(C) अपनी स्वेच्छा से लिखा था
(D) राजा के साथ रहने से उसे आभास नहीं हुआ होगा

57. कई बौद्ध ग्रन्थों में वर्णों को वर्णित किया है–
(A) वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय, ब्राह्मण
(B) शूद्र, वैश्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय
(C) क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र
(D) वैश्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र

58. चार वर्णों का सर्वप्रथम उल्लेख हुआ है–
(A) पृथिवी सूक्त में (B) पुरुष सूक्त में
(C) तैत्तिरीय संहिता में (D) वाजसनेयी संहिता में

59. गुप्तकाल में भगकर से तात्पर्य था–
(A) भूमि कर (B) बिक्री कर
(C) बंजर भूमि कर (D) खदानों पर कर

60. जिस स्थान पर प्रथम सती स्तम्भ 510 ई. पाया गया है, वह है–
(A) एरण (B) छोटे गाँव
(C) लोथल (D) डांगवाड़ा

61. ज्योतिष वेदांग तथा सूर्य प्रज्ञाप्ति जैसे ग्रन्थों को किस श्रेणी में रखा जाता है ?
(A) ब्रह्माण्ड-विज्ञान (B) ज्योतिष
(C) खगोलविज्ञान (D) जन्मकुण्डलीय शास्त्र

62. पाटलिपुत्र के खोये वैभव का वर्णन किया है–
(A) कॉसमास ने (B) फाह्यान ने
(C) ह्वेनसांग ने (D) मेगस्थनीज ने

63. संस्कृत का प्राचीनतम अभिलेख प्राप्त हुआ है–
(A) साँची में (B) गिरनार में
(C) लुम्बिनी में (D) सारनाथ में

64. सुमेलित कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) अजन्ता	1. चन्देल शासकों द्वारा बनाया गया मंदिर
(b) एलौरा	
(c) खजुराहो	2. गुफा चित्र
(d) एलिफेन्टा	3. कैलाश मन्दिर
	4. ब्रह्मनीय स्थापत्य

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	1	4
(B)	2	4	1	3
(C)	1	3	4	2
(D)	3	2	1	4

65. अपने वृत्तान्त में फाह्यान उल्लेख नहीं करता–
(A) मध्य प्रदेश में शांति और व्यवस्था का
(B) दण्ड न्याय की कठोरता की
(C) चाण्डाल का समाज-हिष्कृत रूप में
(D) आम लोगों में निरामिषता का

66. सुमेलित कीजिए–

सूची-I (प्रदेश)	सूची-II (राजधानी)
(a) उत्तरापथ	1. तोसलि
(b) अवन्तिरथ	2. पाटलिपुत्र
(c) प्राची	3. तक्षशिला
(d) कलिंग	4. उज्जयिनी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	2	1
(C)	4	3	2	1
(D)	3	4	1	2

67. पुरुष सूक्त के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौनसा एक कथन गलत है ?
(A) यह ऋग्वेद के सातवें मण्डल में आया है
(B) इसमें ब्राह्मण का आद्यपुरुष के मुख से निस्सृत होने का उल्लेख है
(C) यह श्रेणीबद्धता के उदय को प्रकट करता है
(D) यह उस समय उद्भूत होती हुई सामाजिक संरचना का धार्मिक अनुमोदन करता है

68. वैश्य का लक्षण दूसरे को बलि देने वाला (अन्यस्य बलिकृत) और दूसरे के द्वारा भोज्य या उपभोग में आने वाला (अन्यस्याद्य) बताया गया है–
(A) वाजसनेयी संहिता में (B) ऐतरेय ब्राह्मण में
(C) अथर्ववेद में (D) शतपथ ब्राह्मण में

69. निम्नलिखित में से कौनसा एक ऋग्वेद में स्त्रियों के विषय में सही नहीं है ?
(A) वे सभा की कार्यवाही में भाग लेती थीं
(B) वे यज्ञ का अनुष्ठान करती थीं
(C) वे युद्धों में सक्रिय भाग लेती थीं
(D) उनका विवाह यौवनारम्भ से पूर्व हो जाता था

70. दक्षिण भारत के साथ रोम के व्यापार के प्रमाण मिले हैं–
(A) अरिकमेदु एवं कन्याकुमारी के उत्खनन से
(B) अलंगगुलम, अरिकमेदु तथा कोडुंगल्लूर के उत्खनन से
(C) अरिकमेदु एवं अलंगगुलम के उत्खनन से
(D) कन्याकुमारी एवं कोडुंगल्लूर के उत्खनन से

71. मौर्योत्तर काल में वाणिज्यिक माल के उत्पादन से जुड़ी कुछ विशिष्टताओं के विषय में निम्नलिखित कथनों में कौनसा एक सही नहीं है ?
(A) वाणिज्यिक माल के उत्पादन में उल्लेखनीय तकनीकी विकास हुआ था
(B) वाणिज्यिक माल का उत्पादन एवं वितरण श्रेणियों द्वारा प्रभावकारी ढंग से व्यवस्थित था
(C) उत्पादक राज्य के कठोर नियन्त्रण में कार्य करते थे
(D) श्रेणियाँ उत्पादन में भाड़े के श्रमिकों का उपयोग करती थी

72. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) वेरिगाजा	1. मालाबार तट
(b) मुजिरिस	2. वर्तमान मुम्बई का तट
(c) सोपारा	3. भारत का पूर्वी तट
(d) सुवर्णभूमि	4. नर्मदा नदी के मुहाने पर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	2	1	3
(B)	1	3	4	2
(C)	3	1	4	2
(D)	4	1	2	3

73. सूची-I में विद्वानों के नाम हैं तथा सूची-II में उनमें से प्रत्येक के द्वारा तमिल संगम साहित्य का प्रस्तावित कालानुक्रम है. दोनों सूचियों को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I
(a) एस. वैयपुरी पिल्लई
(b) के. ए. नीलकण्ठ शास्त्री
(c) वी. आर. रामचन्द्र दीक्षितार
(d) एन. सुब्रह्मण्यम्

सूची-II
1. 300 ई. पू. से 300 ई.
2. 500 ई. पू. से 500 ई.
3. 300 ई. से 500 ई.
4. 1 ई. से 300 ई.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	4	2	1
(B)	1	3	2	4
(C)	4	3	1	2
(D)	3	1	2	4

74. तमिल काव्य में आगम वर्ग की कविताएँ–
(A) प्रेम सम्बन्धी है
(B) राजाओं की प्रशंसा में है
(C) प्रकृति की प्रशंसा में है
(D) भगवान् शिव की प्रशंसा में है

75. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) शैलकृत रथ	1. एलोरा
(b) कैलाश मन्दिर	2. महाबलीपुरम्
(c) बृहदीश्वर मन्दिर	3. नचनाकुठार
(d) पार्वती मन्दिर	4. तंजौर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	4	3
(B)	1	4	2	3
(C)	2	4	3	1
(D)	2	1	4	3

76. हर्ष के वे अभिलेख जो धार्मिक संस्थाओं को दिये गए भूमिदानों का उल्लेख करते हैं, वे हैं–

(1) नालन्दा (2) गया

(3) बाँसखेड़ा (4) दामोदर

कूट :

(A) 1, 2, और 4 (B) 2 और 3

(C) 1 और 3 (D) 2 और 4

77. 'द पेरिप्लस ऑफ एरिथ्रियन-सी' जोकि ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में भारत के व्यापार पर प्रकाश डालती है, लेखक था–

(A) टॉलेमी (Ptolemy)

(B) अज्ञात (An unknown author)

(C) प्लिनी (Pliny)

(D) स्ट्राबो (Strabo)

78. निम्नलिखित चीनी यात्री भारत आए–

(1) इत्सिंग (I'tsing)

(2) फाह्यान (Fahean)

(3) वांगह्वेनत्से (Wang-Hieun-Tse)

(4) ह्वेनत्सांग (Huen Tsang)

इनकी यात्रा का सही कालानुक्रम है–

(A) 2, 4, 1, 3 (B) 4, 2, 3, 1

(C) 4, 2, 1, 3 (D) 2, 4, 3, 1

79. निम्नलिखित अभिलेखों (Inscriptions) में से किस एक में स्कन्दगुप्त के राज्यकाल में हूणों के आक्रमण का उल्लेख है ?

(A) मथुरा (B) भीतरी

(C) जूनागढ़ (D) साँची

80. लेखयुक्त और रूपचित्रांकित सिक्के (Coins with legends and Portraits) सर्वप्रथम भारत में जारी किए गए थे–

(A) शुंगों द्वारा

(B) शकों द्वारा

(C) हिन्द-यूनानियों (Indo-Greeks) द्वारा

(D) सातवाहनों द्वारा

81. निम्नलिखित में से किस एक क्षेत्र में रोमन सिक्कों (Roman Coins) का अत्यधिक संख्या में पता लगा है?

(A) पूर्वी भारत (B) उत्तर-पश्चिमी भारत

(C) दक्षिण भारत (D) पश्चिमी भारत

82. निम्नलिखित पर विचार कीजिए–

1. दास 2. वस्त्र

3. मसाले 4. धातु वस्तुएँ

इनमें से कौन-कौनसी, प्रारम्भिक ईसवी शताब्दियों में भारतीय बन्दरगाहों से निर्यात (Export) होने वाली महत्वपूर्ण सामग्रियाँ थी?

(A) 3 और 4 (B) 2 और 3

(C) 1, 2 और 3 (D) 2, 3 और 4

83. सूची–I (राजाओं के नाम) को सूची–II (कृतियों) से सुमेलित कीजिए और दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची–I

(a) गृहवर्मन

(b) पुष्यमित्र

(c) ललितादित्य मुक्तापीड

(d) चन्द्रगुप्त मौर्य

सूची–II

1. राजतरंगिनी 2. मुद्राराक्षस

3. हर्षचरित 4. मालविकाग्निमित्रम

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	2	1
(B)	3	4	1	2
(C)	4	3	1	2
(D)	3	1	4	2

84. गुप्तकाल में भारत का सर्वाधिक व्यापार सम्पर्क था–

(A) रोमन साम्राज्य के साथ

(B) मध्य एशिया के साथ

(C) दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ

(D) चीन के साथ

85. गुप्त काल समान (Identical) है–

(A) कलचूरि युग के (B) काली युग के

(C) सप्तर्षि युग के (D) वलभी युग के

86. निम्नलिखित राजाओं पर विचार कीजिए–

1. भानुगुप्त 2. बुधगुप्त

3. कच 4. पुरुगुप्त

इनके शासन का सही कालानुक्रम (Chronological order) है–

(A) 4, 3, 1, 2 (B) 4, 3, 2, 1
(C) 3, 4, 2, 1 (D) 3, 4, 1, 2

87. प्राकृतिक कविताओं के संग्रह गाथा-सप्तशती में मिलता है–
(A) प्रेम गाथाओं का वर्णन
(B) पूजा अनुष्ठानों का वर्णन
(C) ज्योतिषशास्त्र का वर्णन
(D) राजाओं के ऐतिहासिक जीवन-चरित्र का वर्णन

88. उत्तर-पश्चिमी भारत में यवनों के शासनकाल में उपस्थित नहीं था–
(A) सुदूर व्यापार
(B) कला तथा शिल्प उत्पाद का विस्तार
(C) विस्तृत भू-अनुदान
(D) स्वर्ण मुद्राओं की प्रचुर उपलब्धता

89. निम्नलिखित राजवंशों में से किसके द्वारा शासित क्षेत्र में राज्य संरचना का वर्णन एक गौण राज्य के रूप में मिलता है ?
(A) सातवाहन (B) गंग
(C) चालुक्य (D) राष्ट्रकूट

90. **कथन (A)** : शुंगों के शासनकाल के दौरान कुछ यवन (यूनानी) वैष्णव सम्प्रदाय में परिवर्तित हुए.

कारण (R) : भागवत ने बेसनगर में गरुड़स्तम्भ खड़ा किया.

91. **कथन (A)** : कुषाणों का उद्‌गम मध्य एशिया है.

कारण (R) : वे यू-ची जनजाति का एक व्युत्पन्न थे.

92. **कथन (A)** : हिन्द-यूनानी शासक मिनांडर ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया.

कारण (R) : बौद्ध दार्शनिक नागसेन ने उसे ऐसा करने के लिए बाध्य किया.

93. प्रयाग स्तम्भ अभिलेख के अनुसार निम्नलिखित में से किस प्रकार का व्यवहार समुद्रगुप्त द्वारा दक्षिण-भारत के राजाओं के साथ किया गया ?
(A) उनका हिंसक उन्मूलन
(B) बन्दी बनाकर मुक्त कर देना
(C) उनकी स्थायी परतन्त्रता
(D) उनके सम्पूर्ण विस्थापन के पश्चात् उनके राज्य का अधिग्रहण

94. मत्त-विलास-प्रहसन नामक नाटक के रचयिता थे–
(A) हर्ष (B) राज राजेन्द्र
(C) जयदेव (D) महेन्द्रवर्मन

95. सूची-I (तिणै) को सूची-II (भू-दृश्य) से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची–I (तिणै)	सूची–II (भू-दृश्य)
(a) कुरिंसि	1. चारागाह
(b) मरुतम	2. समुद्र तटवर्ती
(c) मुल्लै	3. पहाड़ियाँ
(d) नेयतल	4. समतल मैदान

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	1	4
(B)	1	4	3	2
(C)	3	4	1	2
(D)	1	2	3	4

96. कुषाणों का काल धर्म, साहित्य, कला तथा विदेशी व्यापार तथा सम्बन्धों में महत्वपूर्ण विकास का प्रत्यक्षदर्शी है. इस कथन के प्रकाश में निम्न में से कौनसा एक युग्म कुषाण काल से सम्बद्ध नहीं है?
(A) महायान बौद्धमत–गांधार कला
(B) नागषेण–मिलिन्दपन्ह
(C) चरक संहिता–नागार्जुन
(D) उत्तर-पश्चिमी रेशम मार्ग–कश्यप मातंग

97. निम्न में से कौनसा एक अभिलेख लकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय पर प्रकाश डालता है?
(A) समुद्रगुप्त का ऐरण अभिलेख
(B) चन्द्रगुप्त द्वितीय का मथुरा अभिलेख
(C) कुमारगुप्त प्रथम का मंदसौर अभिलेख
(D) स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भ अभिलेख

98. कुषाण राजाओं ने 'देवपुत्र कुषाण' जैसी पदवियाँ धारण कीं. कनिष्क के पूर्ववर्ती राजाओं ने भी 'सर्वलोक ईश्वर महीश्वर' जैसी पदवियाँ धारण कीं. यह दर्शाता है कि कुषाण राजा–
(A) प्रभु शिव के भक्त थे
(B) बड़ी-बड़ी पदवियाँ धारण करते थे जो शक्ति तथा ख्याति का प्रतीक थीं
(C) दैवीय राजतन्त्र में विश्वास रखते थे
(D) अपने सिक्कों पर संस्कृत में लेख लिखवाते थे

99. निम्न में से कौनसा द्रविड़ शैली का प्रसिद्ध मंदिर पल्लव शासक नृसिंह वर्मन-द्वितीय द्वारा बनवाया गया था?
(A) महाबलीपुरम् समूह
(B) कैलाशनाथ मंदिर, काँची
(C) शिव मंदिर, तिरूवडी
(D) उकलेश्वर मंदिर, काँची

100. समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, जिसमें कामरूप का उल्लेख एक सीमावर्ती राज्य के रूप में है, अंकित करती है कि–

1. उस समय कामरूप एक वृहद् राज्य था.
2. कामरूप के राजा ने गुप्त सम्राटों के नामों का प्रवर्तन किया था.
3. कामरूप के राजा द्वारा सम्राट् को व्यक्तिगत सम्मान अर्पित किया गया था.
4. कामरूप का राजा उसको (सम्राट् को) हर प्रकार के कर अदा करता था.

इनमें से कौनसे सही हैं?

(A) 1 व 2 (B) 2 व 3
(C) 3 व 4 (D) 1 व 4

निर्देश–आगामी प्रश्न 101-102 में दो वक्तव्य हैं. एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है. इन दोनों वक्तव्यों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कर इन प्रश्नांशों के उत्तर नीचे दिए हुए कूट की सहायता से चुनिए–

कूट :

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है
(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.
(C) A सही है, परन्तु R गलत है.
(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

101. **कथन (A)** : हिन्द-ग्रीक इतिहास की पुनर्सरचना मूलतः सिक्कों के साक्ष्य के आधार पर की जा सकती है

कारण (R) : हिन्द-ग्रीक शासकों के भारतीय संस्कृति में प्रमुख अवदान सिक्का-ढलाई के क्षेत्र में थे.

102. **कथन (A)** : गुप्तकाल से लेकर आगे तक स्वतन्त्र रूप से निर्मित मंदिर भारतीय स्थापत्य का एक लक्षण बन गए थे.

कारण (R) : मूर्ति पूजा का विकास इस काल का एक प्रमुख चिह्न था.

उत्तरमाला

1. (A)	2. (B)	3. (C)	4. (C)	5. (C)
6. (D)	7. (B)	8. (C)	9. (D)	10. (B)
11. (A)	12. (A)	13. (A)	14. (A)	15. (C)
16. (A)	17. (B)	18. (A)	19. (C)	20. (B)
21. (C)	22. (A)	23. (C)	24. (B)	25. (C)
26. (A)	27. (A)	28. (A)	29. (C)	30. (A)
31. (D)	32. (B)	33. (C)	34. (B)	35. (A)
36. (A)	37. (B)	38. (D)	39. (C)	40. (C)
41. (A)	42. (D)	43. (B)	44. (C)	45. (B)
46. (A)	47. (A)	48. (B)	49. (D)	50. (C)
51. (D)	52. (A)	53. (A)	54. (A)	55. (A)
56. (B)	57. (B)	58. (B)	59. (A)	60. (A)
61. (C)	62. (B)	63. (B)	64. (A)	65. (D)
66. (B)	67. (A)	68. (B)	69. (D)	70. (C)
71. (C)	72. (D)	73. (A)	74. (D)	75. (D)
76. (C)	77. (B)	78. (D)	79. (B)	80. (C)
81. (C)	82. (D)	83. (B)	84. (D)	85. (B)
86. (C)	87. (A)	88. (C)	89. (B)	90. (B)
91. (A)	92. (A)	93. (B)	94. (D)	95. (C)
96. (B)	97. (B)	98. (C)	99. (B)	100. (C)
101. (A)	102. (A)			

संकेत

2. हीलियोडोरस यूनानी शासक अंतालकि दास का राजदूत था.

96. नागसेन–मिलिन्दपञ्हो का युग्म ग्रीक राजा मिनेन्डर के काल का है.

9

संगम साहित्य सम्बन्धित ग्रन्थ एवं तत्कालीन समाज

(Sangam Texts and Sangam Society)

पाषाण युग के बाद दक्षिण भारत में महापाषाण संस्कृति (Megaliths) का आविर्भाव हुआ.

महापाषाण काल में प्राप्त कब्रग्राहों के तीन प्रकार थे–

1. कब्रविहीन स्मारक
2. कक्षरहित कब्र
3. कक्षयुक्त कब्र

महापाषाण संस्कृति के सम्बन्ध में विशिष्ट जानकारी संगम साहित्य से प्राप्त होती है.

महापाषाणकालीन लोगों का प्रमुख देवता मुरुगन था. वे कृषि, सिंचाई एवं लोहे के प्रयोग से परिचित थे. महापाषाण संस्कृति के लोग काले एवं लाल रंग के मिट्टी के बर्तनों को व्यवहार में लाते थे. सुदूर दक्षिण में विभिन्न राज्यों का उदय इन्हीं महापाषाण संस्कृति के स्थलों के फलस्वरूप हुआ था.

संगम साहित्य

संगम साहित्य की रचना कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के दक्षिण प्रदेश 'तमिलकम' में प्रथम शताब्दी से तृतीय शताब्दी (100–250 ई.) के मध्य हुई थी.

संगम विद्वानों की एक सभा या मण्डली थी, जिसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था, तमिल लेखकों/ कवियों की रचनाओं का संग्रह एवं श्रेणीबद्धता का कार्य संगम द्वारा हुआ था. अतः ये संगम साहित्य कहलाते थे. तमिल भाषा का अत्यधिक पुराना अंश संगम साहित्य माना गया है.

चेर, पाण्ड्य, चोल राज्यों के योगदान से ही संगम साहित्य पल्लवित हुआ था.

पाण्ड्यों के संरक्षण में उनकी राजधानी मदुरै में संगम का गठन हुआ था. विभिन्न स्रोतों से कवियों के तीन संगमों का उल्लेख मिलता है–

प्रथम संगम

प्रथम संगम मदुरै में पांड्यों के प्रतिनिधित्व एवं संरक्षण में सम्पन्न हुआ था.

दक्षिण भारत में आर्य संस्कृति के प्रसारक अगस्त्य ऋषि प्रथम संगम के अध्यक्ष थे. 4400 वर्षों तक प्रथम संगम चलता रहा था. प्रथम संगम को 89 पांड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया था. पौराणिक देवताओं एवं ऋषियों ने इसमें भाग लिया था.

इस संगम का कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हो सका. लगभग 4499 विद्वानों को प्रथम संगम के सम्पूर्ण काल में अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने की अनुमति प्राप्त हुई थी.

प्रथम संगम के प्रमुख सदस्य निम्नलिखित थे–

1. मुरुगवल
2. मुदिनागरायर
3. तिरिपुरमेरिथ

समुद्र में बाढ़ के आने से मदुरै समाप्त हो गया, जिससे वहीं प्रथम संगम का अन्त हो गया था.

प्रथम संगम में रचित प्रमुख ग्रन्थ निम्न थे–

1. अक्कतियम
2. मुदुनरै
3. परिपदल

द्वितीय संगम

द्वितीय संगम पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में अलैवे या कपाटपुरम् में सम्पन्न हुआ था.

प्रारम्भ में द्वितीय संगम के अध्यक्ष अगस्त्य एवं इसके बाद उनके शिष्य तोलकप्पियर थे. 3700 वर्षों तक द्वितीय संगम चला था, जिसमें 3700 लेखकों/कवियों को रचनाएँ प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की गई थी.

59 पाण्ड्य शासकों ने द्वितीय संगम को संरक्षण प्रदान किया था, जिसमें लगभग 49 विद्वान् सम्मिलित हुए थे.

द्वितीय संगम की प्रसिद्ध पुस्तक तमिल व्याकरण 'तोलकप्पियम' थी, जिसे अगस्त्य ऋषि के शिष्य तोलकप्पियर ने लिखा था, यही एक पुस्तक वर्तमान में उपलब्ध है.

द्वितीय संगम के प्रमुख सदस्य निम्नलिखित थे–

1. वेल्लुर काप्पियन
2. कुरुनगोलिमोसी

द्वितीय संगम में निम्नलिखित ग्रन्थों की रचना हुई थी–

1. व्यालमलय	2. तोलकप्पियम
3. भूतपुरानम्	4. अकत्तियम
5. मापुरानम्	

तृतीय संगम

- कपाटपुरम् के जल में विलीन हो जाने के फलस्वरूप तृतीय संगम का आयोजन उत्तरी मदुरै में हुआ था.
- तृतीय संगम लगभग 1850 वर्षों तक चला जिसमें 449 विद्वानों को अपनी कृतियों को प्रकाशन करने की अनुमति प्रदान की थी.
- तृतीय संगम की अध्यक्षता नक्कीरर ने की जिसे 49 पांड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया था. तृतीय संगम में 49 विद्वानों ने भाग लिया था.
- तृतीय संगम के प्रमुख सदस्य निम्नलिखित थीं–
  1. कपिलर
  2. पाण्ड्य शासक उग्र
  3. इरैयनार

तृतीय संगम की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित थे–

1. परिपादल	2. पदिलुटपतु
3. नेडुण्थोकै	4. कुरुन्थोकै

प्रथम द्वितीय एवं तृतीय–इन तीनों संगमों का उल्लेख 'इरैयनार अग्गपोरुल' नामक ग्रन्थ में किया गया है, जिसका रचनाकाल 8वीं शताब्दी था.

- 'इरैयनार अग्गपोरुल' नामक ग्रन्थ के अनुसार तीनों संगमों की अवधि लगभग 9,900 वर्ष तक रही. इन तीन संगमों को 197 पाण्ड्य शासकों ने संरक्षण प्रदान किया था.
- तीनों संगमों में 8598 विद्वानों ने अपनी साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित की थीं..

संगम साहित्य के लगभग 473 विद्वानों की विभिन्न रचनाएँ लगभग 2289 की संख्या में उपलब्ध हैं, जिनमें संक्षिप्त कविताएँ एवं काव्य समाहित है.

संगम साहित्य में 20,000 कविताओं की पंक्तियाँ थीं, जो आठ कविता संग्रहों में संकलित थी.

पदिनेंकिलकण्क्कु एवं पत्तु-पत्तु (पदु-पदु) इनकी दो प्रमुख श्रेणियाँ हैं. पदिनेंकिलकण्क्कु में अठारह लघु गीत हैं एवं पत्तु-पत्तु (पदु-पदु) में दश गीतों का संकलन है.

पत्तुपत्तु में प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित थीं–

1. मलैपदुदकाम	6. कुरिन्जिप्पातु
2. मुल्लैप्पातु	7. कात्रुप्पदै
3. तिरुमुहकात्रुप्पदै	8. पत्तिनप्पलै
4. पेरुम्पनत्रुप्पदे	9. पोरुनशत्रुप्पदै
5. सिरुपानात्रुप्पदै	10. मदुरैकांचि

ये गीत चोल, पाण्ड्य एवं मुरुगन की प्रशंसा में लिखे गए थे. प्रेम-विरह, ग्राम्य जीवन, शासन प्रणाली एवं विदेशी व्यापार से सम्बन्धित कथानक भी इन गीतों में सन्निहित था.

पदिनेंकिलकण्क्कु में प्रेम, युद्ध-नीति एवं चेर-चोल के राजनीति सम्बन्ध 18 लघु गीतों का संग्रह है. पदिनेकिल-कण्क्कु की उल्लेखनीय निम्नलिखित रचनाएँ थीं–

1. नलदियर	2. कुरल
3. इन्नारपथु	4. करनारपथु
5. नन्मणिक्कदैके	

संगम साहित्य आख्यान एवं उपदेशात्मक दो श्रेणियों में वर्गीकृत था. आख्यान सम्बन्धी ग्रन्थ को 'मेलकन्नक्कु' या अट्ठारह प्रमुख ग्रन्थ तथा उपदेशात्मक ग्रन्थों को 'किल्कक्कु' कहा जाता है.

संगम साहित्य का वृहत रूप आठ खण्ड या एत्तुतोकै जिसमें 200 कवियों की 2282 कविताएँ हैं. एतुतोकै में निम्न रचनाएँ आती थीं–

1. पदिरुप्पतु	5. अहनानुरु
2. कुरुन्दोगई	6. कलित्तोगई
3. एंगरुन्नरु	7. परिपादल
4. नरिणई	8. पुरनानुरू

आठ ग्रन्थों में तमिल प्रदेश की भौगोलिक विशेषताएँ, शृंगारिक एवं प्रेममयी, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलू समाहित थे.

तमिल के महाकाव्यों में प्रमुख निम्न हैं–

1. शिलप्पदिकारम
2. मणिमैकलै

शिलप्पदिकारम के रचनाकार इलांगो आदिगल एवं मणिमैकले (मणिमेखलै) के रचनाकार सीतलै सत्तनार थे.

'शिलप्पदिकारम' में तमिल प्रदेश के विदेशी व्यापार एवं सामाजिक जीवन का वर्णन किया गया है तथा मणिमैकले (मणिमेखलै) में तमिल प्रदेश का सामाजिक वर्णन किया गया है.

तोलकप्पियम

ऋषि अगस्त्य के बारह शिष्यों में से एक तोलकाप्पियर ने प्रसिद्ध तमिल व्याकरण 'तोलकप्पियम' की रचना की थी.

तोलकप्पियम के तीन खण्ड हैं. प्रत्येक खण्ड में 9 अध्याय हैं. तीन खण्ड नी इयलों में विभक्त हैं. तोलकप्पियम में कुल 1,16,172 सूत्र हैं.

तोलकप्पियम में अगम या अहम (प्रेम), पुरम (युद्ध, सरकार), रीतियाँ, सामाजिक विचारधाराएँ निर्माण चारों पुरुषार्थ एवं वर्ण व्युत्पत्ति तथा पदार्थ के सम्बन्ध में वृहद् वर्णन प्रस्तुत किया गया है.

'तमिल भूमि की बाइबिल' के नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थ तिरुक्कुरल है जिसके रचनाकार तिरुवल्लुवर थे.

मणिमैकलै की रचना मदुरै के कवि सत्तनार ने की. संगमयुग के अकेले इस ग्रन्थ में ललित कला का वर्णन मिलता है. राजकुमार उदय कुमारन एवं मणिमेकलै के प्रेम का इसमें वर्णन किया गया है.

तमिल रामायण

तमिल में रामायण 'कम्बन' द्वारा लिखी गई थी. इसमें 9वीं शताब्दी में आर्यों के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है. कम्बन ने इसे वाल्मीकि रामायण से अनुवाद कर अलग स्वरूप में प्रस्तुत किया है. कम्बन की रामायण में रावण को महानायक बताकर राम से श्रेष्ठतम् सिद्ध किया है.

ऐतिहासिक स्रोत

संगम युग से सम्बन्धित ऐतिहासिक स्रोत निम्न थे–

1. खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
2. अशोक का द्वितीय एवं तेरहवाँ अभिलेख
3. संगम साहित्य

संगम युग का राजनीतिक इतिहास

विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार संगम युग में आर्यों का प्रसार सुदूर दक्षिण में महर्षि अगस्त्य ने किया था

संगम साहित्य एवं अन्य स्रोतों में चेर, चोल, पाण्ड्य एवं क्षेत्रीय राज्यों का वर्णन किया गया है.

संगम कवियों / लेखकों के मतानुसार चेर, चोल, पाण्ड्य की अवधि महाभारत युद्ध के आसपास की थी.

प्राचीनतम ज्ञात तमिल साहित्य में संगम शब्द का प्रयोग एक शैवसंत तिरुननक्कारासु नयनार ने किया था.

चेर राज्य

चेर, चोल, पाण्ड्य में सबसे पुराना साम्राज्य चेर था, जिसमें सर्वाधिक राजा होने की जानकारी प्राप्त होती है.

उदियनजेरल 130 ई.

चेर राज्य का सबसे पहला शासक उदियनजेरल था, संगम साहित्य के अनुसार उदियनजेरल ने महाभारत के सैनिकों को भोजन करवाया था. उदियनजेरल का सम्भावित काल 130 ई. है. महाभारत में भोजन कराने के कारण उसे 'भोजन कराने वाला उदियनजेरल' (UdiyanJeral of the great feeding) कहा गया था.

नेदुनजेरल आदन

चेर राज्य का दूसरा शासक नेदुनजेरल आदन था. यह उदियनजेरल का पुत्र था. नेदुनजेरल आदन की राजधानी मरन्दै थी. उसने सात राजाओं को परास्त कर 'अधिराज' की उपाधि धारण की थी. आदन ने समस्त भारत पर विजय प्राप्त कर हिमालय पर चेक राज्य का चिह्न 'धनुष' अंकित किया था, उसे 'इमयवरम्बन' कहा जाता था. जिसकी सीमा हिमालय तक होती थी, उस शासक को इमयवरम्बन कहा जाता था.

आदन अपने समकालीन चोल शासक से युद्ध में मारा गया था और उसकी पत्नी सती हो गई थी. नेदुनजेरल आदन ने अपना अधिकांश समय सैनिक शिविरों में व्यतीत किया था. मालाबार तट पर उसने अपने स्थानीय शत्रु को परास्त किया था.

कुट्टवन

उदियनजेरल का दूसरा बेटा एवं नेदुनजेरल आदन का भाई कुट्टवन चेर राज्य का तीसरा शासक था. कुट्टवन ने 'कोन्गु' के युद्ध में विजय प्राप्त कर चेर राज्य का विस्तार पश्चिम से पूर्वी समुद्र के तट तक किया था. अनेक हाथियों वाले के नाम से यह विख्यात था.

कुट्टवन के बाद चेर राज्य का शासक नेदुनजेरल आदन का पहला पुत्र बना जिसे 'चेर-कलंगै' के नाम से जाना जाता था. यह सात मुकुटों की माला पहनता था एवं अधिराज की उपाधि धारण करता था. तगदुर के आदिगैमान सरदार आंजी को इसने हराया था एवं मालाबार के उत्तर तुलू देश में नन्नान के साथ सैनिक विद्रोह भी किया था.

शेनगुट्टवन

नेदुनजेरल आदन का दूसरा पुत्र शेनगुट्टवन चेर राज्य का अगला शासक था, जिसका काल 180 ई. माना गया है. कण्णगी या पत्तिनी पूजा (आदर्श पत्नी) की प्रथा सम्पूर्ण तमिल प्रदेश में शेनगुट्टवन के काल से प्रारम्भ हुई थी. पदिरुपतु नामक संगम साहित्य में उदियनजेरल वंश के इन शासकों का वर्णन प्राप्त होता है. शेनगुट्टवन दुर्ग की घेराबन्दी, घुड़सवारी एवं हाथी की सवारी करने वाला महान योद्धा था. जलवेड़ा से इसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी, इसे 'लाल चेर' कहा जाता था.

पदिरुप्पतु नामक संगम साहित्य के अनुसार उदियन-जेरल वंश के पाँच शासकों ने 201 वर्षों तक शासन किया था.

चेर (केरल) राज्य एक कुल संघ के समान था जिसमें प्रशासनिक मामलों में राजपरिवार के सदस्य भागीदार होते थे.

चेर राज्य के अन्य शासक

उदियनजेरल वंशीय शासकों के अतिरिक्त चेर राज्य में अन्य राजाओं ने भी शासन किया था. इन शासकों में अन्दुवन एवं उसका पुत्र शेलवक्क डुंगोवाली आदन प्रमुख था. अन्दुवन को विद्वान् एवं शेलवक्कडुंगोवाली आदन को संगम साहित्य में धार्मिक यज्ञकर्त्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है.

नीलकांत शास्त्री के अनुसार, "संगम साहित्य में वर्णित आय कोई शासक नहीं अपितु वंश था."

वेल का सम्बन्ध अगस्त्य एवं विष्णु से बतलाया गया है. पारि शासक कपिलार नामक कवि का मित्र एवं संरक्षक था. 190 ई. में दो चेर शासक थे–पेरुजेरुल इंरपोरई एवं नदुमान अंजि.

दक्षिण में ईख की खेती प्रारम्भ कराने का श्रेय नदुमान अंजि को जाता है.

चेर वंश का अन्तिम शासक कुडुकोइलनजेराल इरम्पोरई था, जिसकी राजधानी करुपुर या वंगी थी.

चेर राजा 'शेय' को हाथी की आँख वाला' कहा जाता था. ईसा की दूसरी शती के बाद चेर शक्तिक्षीण हो गया एवं आठवीं शती तक इनका कोई उल्लेख नहीं मिलता.

चोल राज्य

चोल साम्राज्य को 'चोलमण्डलम्' के नाम से भी जाना जाता था. पन्नार एवं वेलार नदियों के मध्य में चोल साम्राज्य अवस्थित था. चोलों की राजधानी 'उरैयुर' थी. चेर, चोल, पाण्ड्यों में सर्वाधिक शक्तिशाली चोल थे. चोलों का राजकीय प्रतीक शेर था. चोल के प्रमुख राजाओं का उल्लेख संगम साहित्य में प्राप्त होता है.

करिकाल-(190 ई.)

चोल शासकों का प्रमुख शासक करिकाल था, जिसका काल 190 ई. माना जाता है. करिकाल 'जले हुए पैरों वाला' (The man with the charred leg) के नाम से ख्यात था. शिलप्पदिकारम् में करिकाल के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है. करिकाल का समकालिक कांचीपुरम का राजा तोण्डैमान इलैन्दिरैमन था. उसने पुहार नामक नगर और कावेरी नदी के साथ 160 किमी लम्बे तटबन्ध का निर्माण कराया था.

तंजोर के पास वेण्णि नामक युद्ध में चेर और पाण्ड्य तथा अन्य ग्यारह शासकों को करिकाल ने परास्त किया था. वाहैप्परं दलई के युद्ध में करिकाल ने नौ राजाओं को पराजित कर तमिल पर अधिकार किया था. 11-12वीं शताब्दी के अभिलेखों में करिकाल के सम्बन्ध में विवरण मिलता है. कावेरीपट्टनम चोल राज्य की दूसरी राजधानी थी.

संगम कवि कोवुर किलार के अनुसार नलन्गिल्ली एवं नेदुन्गिल्ली का गृहयुद्ध करिकाल के बाद हुआ था, जिससे चोल शक्ति क्षीण हो गई थी.

अन्य चोल शासक

संगम साहित्य के अनुसार करिकाल के बाद शेंगनान नामक शिवभक्त शासक का उल्लेख मिलता है जिसने लगभग 70 शिव मंदिरों का निर्माण कराया था.

पोर के युद्ध में शेंगनान ने चेर के राजा कण्णिकास इरम्पोरई को हराया था. नीलकांत शास्त्री इस शासक का समय 4 या 5वीं शताब्दी मानते हैं.

पाण्ड्य राज्य

मेगस्थनीज ने पाण्ड्यों का सबसे पहले उल्लेख किया. उसके अनुसार उस दौरान पाण्ड्य की शासक एक महिला थी. सात वर्ष की छोटी उम्र की माताएँ होने का मेगस्थनीज ने उल्लेख किया है. पाण्डवों की राजधानी मदुरै थी एवं यह राज्य भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग में फैला हुआ था. मेगस्थनीज के अनुसार पाण्ड्य समाज मातृसत्तात्मक था. पाण्ड्य राज्य मोतियों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध था.

नेडियोन

पहला पाण्ड्य शासक 'नेडियोन' था जिसने पहरुली नदी का निर्माण एवं समुद्र की पूजा की परम्परा का प्रारम्भ किया था. संगम साहित्य में नेडियोन का नाम सबसे पहले वर्णित किया है.

पल्लशालई मुदुकुडुमी

विभिन्न संगम कविताओं में पल्लशालई मुदुकुडुमी को पहला ऐतिहासिक पाण्ड्य राजा वर्णित किया है. वह पल्लशालै (अनेक यज्ञशाला बनवाने वाला) की उपाधि धारण करता था. विजित राज्यों के प्रति कठोरता उसकी कमजोरी थी.

नेडुजेलियन

नेडुजेलियन नाम का संगम शासक अत्यन्त विख्यात शासक था. उसे तलैयानंगानम् नामक युद्ध में विजय प्राप्ति के बाद प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी. नेडुजेलियन का काल 210 ई. निश्चित किया है. युद्ध के दौरान नेडुजेलियन ने शेप नामक शासक को बन्दी बना लिया था. वीर विजेता एवं कुशल प्रशासक के रूप में संगम साहित्य में उसका वर्णन हुआ है.

नेडुजेलियन के पश्चात् नलियकोड्डान नामक पाण्ड्य शासक का नाम आता है, जो दक्षिण अर्काट का शासक था. इसकी शासनारोहण तिथि 275 ई. मानी है. नलियकोड्डान के सम्बन्ध में जानकारी शिरुपान अरुपड्डई कविताओं में प्राप्त होती है जिसके लेखक नदत्तनार थे.

नदत्तनार ने शिरूपान-अरुयड्डई में चेर, चोल, पाण्ड्य की राजधानियों वंजी, उरैयुर एवं मदुरै के पतन की आशंका भी व्यक्त की थी.

संगमकालीन प्रशासन

संगम साहित्य के अनुसार चेर, चोल एवं पाण्ड्य राज्यों की शासन प्रणाली राजतन्त्रात्मक थी, जिसका स्वरूप कुल संघ के समान था, जिसमें राजवंशीय पुरुष ही राजकार्य में भाग लेते थे.

राजपद वंशानुगत एवं उत्तराधिकारी युद्ध पर आधारित था. विभिन्न संगम साहित्य के अनुसार चोल राजवंश में उत्तराधिकार युद्ध का प्रचलन था, जिसमें चेरों का हस्तक्षेप भी होता था. संगमकालीन प्रशासन में राजा सर्वशक्तिमान एवं निरंकुश होता था, लेकिन स्वेच्छाचारी नहीं होता था. ब्राह्मण मंत्रियों, विद्वानों, मित्रों एवं परम्पराओं के आधार पर राजा अपने कार्यों का निष्पादन करता था. राजा विजेता राजा का अनुसरण करता था. प्रत्येक राजा सात राजाओं को परास्त कर मुकुट की माला पहनकर अधिराज की उपाधि धारण करता था. राजा का प्रतिवर्ष जन्मदिन मनाया जाता था, जिसे 'पेरुनल' कहा जाता था.

राजा की एक परिषद् होती थी, जो विभिन्न गतिविधियों में राजा को सलाह देती थी. राजा की परिषद् के गठन में निम्न उत्तरदायी होते थे–

1. पुरोहित
2. ज्योतिषी
3. वैद्य
4. राजकुल के सदस्य
5. सामंत

सर्वोच्च न्यायालय एवं प्रशासनिक विषयों पर राजधानी में एक परामर्शी संस्था 'सभा' होती थी.

मनरम गाँव की संस्था होती थी, जो ग्रामीण समस्याओं पर विचार कर समाधान प्रस्तुत करती थी. 'मनरम' की बैठक पेड़ के नीचे होती थी.

न्याय व्यवस्था

सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी 'राजा' होता था, जो सभा की सहायता से न्याय करता था. अंग-भंग एवं कठोर शारीरिक दण्डों की व्यवस्था थी. संगमकालीन प्रशासन में फौजदारी एवं दीवानी मुकदमे दोनों होते थे.

सैनिक व्यवस्था

संगमकालीन सैन्य व्यवस्था सुदृढ़ थी. चोल, चेर, पाण्ड्य तीनों राज्यों के शासक सुसज्जित सेना एवं अच्छे सैनिक रखते थे. 'इनाडी' सेना का प्रमुख सेनापति था. चोल राजाओं के पास नौ सेना होने के साक्ष्य मिलते हैं. पैदल, रथ, हाथी, घोड़ों युक्त चतुरंगिणी सेना तमिल राज्यों में थी. रथ में घोड़ों के स्थान पर बैल प्रयुक्त होते थे.

'कलावली' नामक संगम साहित्य के अनुसार संगमकाल में युद्ध के प्रमुख अस्त्र-शस्त्र निम्न होते थे–

1. धनुष-बाण
2. तलवार
3. भाले
4. बर्छे
5. ढाल
6. बाघ के चमड़े का कवच

राजा एवं प्रधान सेनापति के पास एक नगाड़ा होता था, जिसकी पूजा की जाती थी. सैनिक जूते पहने थे, जो चमड़े से निर्मित होते थे. स्त्री सैनिकों के युद्ध में भाग लेने के साक्ष्य संगम साहित्य से प्राप्त होते हैं. राजा की सुरक्षा का काम शस्त्रधारी महिलाओं को ही सौंपा जाता था.

रणभेरी के रूप में शंख और नगाड़ा बजाने की प्रथा थी. सैनिक शिविर होते थे, जिनमें समय जलघड़ी से देखा जाता था. संगमकाल में युद्ध में मृत्यु होना अत्यधिक गौरव की बात थी. युद्ध में मरे सैनिकों के लिए स्मृति पत्थर लगाने की प्रथा थी. संगमकाल में 'वीर स्वर्ग' के नाम से एक प्रथा प्रचलित थी, जिसमें युद्ध से बाहर मृत शरीर पर तलवार से वार कर स्वर्ग की कामना की जाती थी.

सैनिकों, सरदारों एवं राजपरिवारों में संगमकालीन समाज में शान्तिपूर्ण मौत घृणास्पद थी.

राज्य की आमदनी

राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी. भूमि कर एवं व्यापार से राज्य को आय होती थी. भूमि कर को 'करै' कहा जाता था. भू-राजस्व की दर उत्पादन का 1/6 भाग था.

राजा को कर देने की प्रथा 'पाडु' या 'कडमै' कहलाती थी. सीमा-शुल्क भी वसूली जाती थी जिसे संगम या उल्गुक नाम से सम्बोधित किया जाता था.

युद्ध में लूटपाट से प्राप्त सम्पत्ति एवं चुंगी भी राज्य की आय के प्रमुख स्रोत थे. राजस्व से प्राप्त आय को सैनिकों, कवियों, ललित कलाओं एवं विद्वानों पर खर्च कर दिया जाता था.

संगम साहित्य के अनुसार 'करिकाल' (190 ई.) नामक चोल राजा ने 1600000 सोने की मुहर' पट्टिनयालै नामक संगम काव्य के कवि को प्रदान की थी.

संगमकालीन राजतन्त्र में जनजातियों का अस्तित्व भी था.

'मरवा' नामक जनजाति में गौहरण की प्रथा का उल्लेख संगम साहित्य में मिलता है.

संगमकालीन समाज

संगमकालीन समाज वर्णव्यवस्था एवं वर्गव्यवस्था पर आधारित था, जिस पर आर्य संस्कृति का पूर्ण प्रभाव था. इस काल में जातियों को 'कुडि' कहा जाता था.

'पुरुन्नानुरू' नामक संगम साहित्य के अनुसार संगम समाज में निम्न चार जातियाँ थीं–

1. तुड़ियन
2. पाणन
3. परैयम
4. कडम्बन



संगमकालीन महापाषाण कब्र

संगम की जातियों की तुलना चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) से की गई थी.

मूलतः समाज के निम्न चार वर्ग थे–

1. ब्राह्मण	2. शासक
3. वणिक	4. कृषक

संगम साहित्य के अनुसार संगम समाज में निम्न व्यावसायिक वर्ग थे–

1. वेलालार (किसान)	2. एनियर (शिकारी)
3. पुलैयन (रस्सी निर्माता)	4. पेशेवर सैनिक
5. चरवाहे	6. भलवर (डाकू)

समाज के प्रमुख राजा एवं शासक होते थे, जो मद्यपान, स्त्री संयोग करते थे एवं खाली समय में नृत्य-गान देखते थे.

ब्राह्मण की प्रतिष्ठा संगम समाज में उत्कृष्टतम थी. ब्राह्मण राजा का कवि, सलाहकार होता था एवं यज्ञ सम्पादन, धार्मिक कृत्यों में उसकी भूमिका प्रमुख होती थी.

राजा ब्राह्मण को सोने की मुहरें, रथ, भूमि, हाथी-घोड़े दान में देता था.

किसानों को वेलालार कहते थे, जिनका मुखिया 'वेलिर' होता था.

किसानों के दो वर्ग थे–

1. धनी किसान
2. गरीब किसान

गरीब किसान स्वयं खेती करते थे, भूमिहीन कृषक मजदूर की तरह थे एवं उनकी हालत दयनीय थी.

धनी किसान सम्माननीय होते थे, जो आधुनिक उपकरणों से मजदूरों के द्वारा खेती कराते थे. धनी किसानों को सेना के प्रतिष्ठित पद प्राप्त होते थे.

धनी किसान राजा के साथ शिकार, युद्ध, मनोरंजन में भाग लेते थे एवं राजपरिवार से उनके वैवाहिक सम्बन्ध भी थे.

वणिक या व्यापारी वर्ग की स्थिति अच्छी थी, उन्हें मदुरै में सैनिक, पुलिसकर्मी एवं महलों के रक्षक नियुक्त किए जाते थे.

आवास

संगमकालीन समाज में धनवान लोग चूने एवं ईंट के मकान में रहते थे. मकानों की दीवारों पर देवताओं एवं पशुओं के चित्र बने हुए होते थे. फव्वारे, कुएँ, तालाब एवं बाग बगीचे धनी वर्ग के मकानों के चारों ओर लगे होते थे.

निर्धन वर्ग झोपड़ी में निवास करते थे. झोपड़ी के बाहर मछली पकड़ने के जाल एवं बाँस लगे होने के साक्ष्य मिलते हैं.

स्त्रियों की सामाजिक स्थिति

संगमकालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी. उच्चवर्गीय महिलाएँ, ललितकला, शिक्षा, संगीत एवं साहित्य से सम्बन्ध रखती थी.

तोलकप्पियर की रचना तोलकाप्पियम के अनुसार संगम समाज में विवाह एक संस्कार था. विवाह के आठों प्रकार संगम समाज में प्रचलित थे. पतिव्रता स्त्री सम्माननीय थी एवं आदर्श पत्नी को 'कण्णगी' के समकक्ष माना जाता था.

संगमकालीन समाज में जो स्त्रियाँ परपुरुष से सहवास में संलिप्त होती थीं, उन्हें व्यभिचारिणी मानकर कन्याकुमारी में स्नान करने के लिए बाध्य किया जाता था.

विधवाओं की स्थिति संगम समाज में दुःखद थी, उन्हें बाल मुँडवाने पड़ते थे एवं आभूषण नहीं पहनने दिया जाता था. सती प्रथा का प्रचलन था. जिनके पतियों की मृत्यु युद्ध में होती थी वे विधवाएँ पान, हरी सब्जी एवं ठण्डे पानी का निषेध करती थीं.

गणिकाओं के सम्बन्ध में वात्स्यायन के कामसूत्र एवं मणिमेकलै में पर्याप्त साम्यता है. संगमकालीन समाज में वेश्याओं एवं गणिकाओं का अस्तित्व था, जिन्हें नृत्य संगीत, ललित कला एवं अन्य विषयों की विशेष शिक्षा दी जाती थी.

गणिकाएँ एवं वेश्याओं को परिवार में विघटन का स्रोत माना जाता था. शिलप्पदिकारम् के अनुसार वेश्याओं को अपने पेशे के अतिरिक्त कार्य करने पर दण्डित किया जाता था, जिसमें उन्हें सार्वजनिक रंगमंच के चारों ओर सिर पर सात ईंटें रखकर परिक्रमा लगानी पड़ती थी.

आभूषण

संगमकालीन लोग आभूषण एवं रेशमी तथा सूती वस्त्र पहनते थे.

तमिलों के आभूषण निम्नलिखित थे–

1. अँगूठी	2. हार
3. कमरधनी	4. कान की बाली

भोजन एवं खाद्य सामग्री

संगमकालीन उच्चवर्गीय तमिलवासियों का भोजन निम्न व्यंजनों युक्त होता था–

1. चावल एवं दूध का उप्पम
2. भेड़ का नरम मांस
3. घी
4. दही
5. कछुए का मांस
6. सुअर का मांस
7. पकी मछलियाँ

8. मुन्निर (अधपके नारियल का दूध)

9. मद्य (ताड़ी एवं गन्ने के रस की शराब)

संगमकाल में बाँस के पीपों में शराब को सड़ाया जाता था. पुरुष एवं स्त्री दोनों शराब पीते थे.

संगम साहित्य में उल्लिखित तमिलवासियों जीवन में आर्यकालीन एवं आर्येतर संस्कृति के समन्वित तथ्य प्रस्फुटित होते हैं.

मनोरंजन सामग्री

मनोरंजन में नृत्य की दो शैलियाँ मार्ग एवं देशी प्रचलित थी. थाल और नगाड़े इस काल के प्रमुख वाद्य यन्त्र थे.

तमिलवासियों के मनोरंजन के साधन निम्नलिखित थे–

1. मल्ल युद्ध
2. मुष्टिका युद्ध
3. पिकनिक मनाना
4. जल क्रीड़ा करना
5. स्त्री के साथ केलि क्रीड़ा करते हुए स्नान करना
6. पासा खेलना
7. नृत्य एवं संगीत
8. कुत्तों का शिकार
9. खरहों का शिकार
10. सह-नृत्य (स्त्री-पुरुष का एक साथ नृत्य)

प्रमुख मान्यताएँ

संगमकालीन समाज में पराकाष्ठा तक अन्धविश्वास व्याप्त था. ज्योतिष, टोने-टोटके, तावीज, कौवे की बोली, आँख फड़कने, बाल मुड़े हुए स्त्री के दर्शन, ग्रहण, आदि के सम्बन्ध में अन्धविश्वास विद्यमान था.

बरगद का पेड़ को ईश्वर का निवास माना जाता था. मणिमेकलै के अनुसार मृतकों की समाधियाँ, दाह संस्कार एवं दफनाने की प्रथाएँ प्रचलित थीं.

संगमकालीन अर्थव्यवस्था

कृषि, पशुपालन, उद्योग एवं व्यापार संगमकालीन अर्थव्यवस्था के मौलिक आधार थे.

निम्न वर्ग की स्त्रियाँ जिन्हें 'कदैसियर' कहा जाता था. कृषि कार्य में भाग लेती थीं.

संगम साहित्य के अनुसार कालीमिर्च, कटहल, हल्दी के लिए चेर (केरल) राज्य विख्यात था.

चोल राज्य में सिंचाई की व्यवस्था कावेरी नदी से होती थी. चरवाहों, शिकारियों, मछुआरों का भी संगमकालीन अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान था.

संगम साहित्य के अनुसार अकेले पाटी राज्य में कटहल, धान, वली एवं पर्याप्त मधु पैदा होता था.

एक वेली जमीन में एक हजार 'कलाम' धान पैदा होता था.

रागी, गन्ने की खेती, फसल काटने, अनाज सुखाने, ईख बनाने की प्रक्रिया के साक्ष्य संगम साहित्य में प्राप्त होते हैं. तमिल प्रदेश से मसालों का निर्यात किया जाता था. संगमकाल में आन्तरिक व्यापार नमक, अनाज, मसालों, मछली, तेल, जड़ीबूटी, गन्ना, घी, कपड़ों का होता था, जो विनिमय के आधार पर होता था.

'मुसिरी' में अनाज के बदले मछली के विनिमय का उल्लेख भी मिलता है.

विदेशी व्यापार

पुहार (कावेरीपत्तनम्) विदेशी व्यापार का सबसे प्रमुख केन्द्रीय बन्दरगाह था, जो चोलों के अधीन था. 'शिलप्पदिकारम्' नामक संगम साहित्य में इसका वर्णन प्राप्त होता है. यहाँ पर सोने से भरे जहाज आते थे.

चेर राज्य का बन्दर एवं पाण्ड्य राज्य का शालियूर बन्दरगाह से भी विदेशी व्यापार होता था.

'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' नामक ग्रन्थ के अनुसार भारत एवं रोमन साम्राज्य के मध्य सर्वाधिक व्यापार होता था.

पश्चिमी तट के प्रमुख बन्दरगाह 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' के अनुसार निम्नलिखित थे–

1. तोण्डी (पोन्नानी) 2. मुसिरी
3. नीरा (किन्नानोर) 4. नेलिसण्डा

भारत से विदेशों को निम्न वस्तुएँ निर्यात होती थीं–

1. विभिन्न मसाले 2. कालीमिर्च
3. मोती 4. मलमल
5. हाथीदाँत 6. बहुमूल्य रत्न
7. रेशमी-वस्त्र 8. नीलम
9. हीरे.

संगमकाल में भारत निम्नलिखित वस्तुओं को विदेशों से आयात करता था–

1. बर्तन 2. कपड़े
3. रत्न 4. शराब
5. सोना

रोमन से आयात के साक्ष्य के रूप में रोमन सिक्के और बर्तन निम्नलिखित स्थलों से प्राप्त हुए हैं–

1. उरैयुर 2. करूर
3. कावेरीपत्तनम् 4. अखिमिडु
5. काँचीपुरम्.

हिप्पालस के द्वारा मानसून की खोज करने से विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई थी.

प्रचुर सोने की प्राप्ति भारत को विदेशी व्यापार से ही हुई थी.

संगमकालीन धर्म

संगम समाज में धर्म प्राचीन मान्यताओं एवं आर्यों की धारणाओं से समन्वित था.

तमिल प्रदेश के धर्म में ऋषि अगस्त्य और कौंडिण्य का प्रभाव सर्वाधिक दृष्टिगत होता है.

अगस्त्य ऋषि के नाम पर अगस्त्येश्वर मंदिर, अगस्त्यगौत्र एवं अनेक पौराणिक आख्यायन दक्षिण में चालू किए गए. ठीक इसी तरह कौंडिण्य ऋषि का भी नाम था.

संगमकाल का प्रमुख देवता मुरुगन या सुब्रह्मण्यम था, जिसे स्कन्द-कार्तिकेय माना गया था.

मुरुगन या सुब्रह्मण्यम का प्रतिनिधि कुक्कुट, अस्त्र वर्छा था, विभिन्न कामनाओं के लिए उसकी पूजी की जाती थी. मुरुगन देवता का प्रतियोगी त्योमल या तिरुमल था.

मुरुगन के अतिरिक्त तमिलों के अन्य देवता निम्नलिखित थे–

1. बलराम
2. शिव
3. अनन्तशय्यायी विष्णु
4. अर्द्धनारीश्वर शिव
5. इन्द्र
6. ग्राम्य देवता
7. कृष्ण

पदरुप्पतु नामक संगम साहित्य में विष्णु की पूजा में तुलसी एवं घण्टी के प्रयोग का उल्लेख मिलता है.

मणिमैकले में कापालिक एवं सरस्वती के मन्दिर का उल्लेख मिलता है. व्रत, उपवास, संन्यास यज्ञों पर तमिलवासियों को अत्यधिक विश्वास था.

पशुवलि एवं देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नृत्य संगीत का प्रचलन था.

शैवमत के लोग कई सम्प्रदायों में विभक्त थे. मरियम्मा (परशुराम की माता) चेचक से सम्बन्धित शीतला माता के रूप में पूजी जाती थी.

नारायण, शिव, कृष्ण, बलराम एवं इन्द्र के लिए देवस्दान शब्द का प्रयोग किया जाता था.

संगमकाल में मृत्यु का देवता कुर्रम था एवं कौमार्य की देवी कन्नगी मानी जाती थी.

वरुण, इन्द्र, कुबेर, यज्ञ को लोकपाल माना जाता था.

प्राचीन तमिलों ने अपने क्षेत्र के निम्नलिखित विभाग किए थे–

1. कुरिंजी – पर्वतवाला क्षेत्र
2. नेयदल – समुद्री किनारा
3. पलाई – मरुस्थल क्षेत्र
4. मरुदम – नदी घाटियाँ
5. मुल्लई – ऊँची एवं निचली भूमि के मध्य का वनयुक्त क्षेत्र

निष्कर्ष–तमिल प्रदेश वस्तुतः सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहा. आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक पक्ष के सशक्त होने के फलस्वरूप ही इतने समय तक इनका अस्तित्व रहा. मौर्यकाल तक तमिल प्रदेश में वैदिक धर्म के साथ बौद्ध एवं जैन धर्म ने प्रवेश कर लिया था. उत्तराधिकार युद्ध की प्रवृत्ति ही तमिल प्रदेशों के पतन के मूल में पूर्णतः उत्तरदायी घटक रहा.

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- पाषाण युग के बाद दक्षिण भारत में महापाषाण संस्कृति (Megaliths) का आविर्भाव हुआ.
- महापाषाणकालीन लोगों का प्रमुख देवता मुरुगन था.
- संगम साहित्य की रचना तमिलकम् प्रदेश में प्रथम से तृतीय शताब्दी के मध्य हुई थी.
- विद्वानों की सभा, परिषद या मण्डली संगम था, जिसे राजकीय संरक्षण प्राप्त था.
- तमिल भाषा का अत्यन्त पुराना अंश संगम साहित्य माना गया है.
- संगम का गठन पाण्ड्यों के संरक्षण में उनकी राजधानी मदुरै में हुआ था.
- विभिन्न स्रोतों से तीन संगमों का उल्लेख मिलता है.
- प्रथम संगम 89 पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में मदुरै में सम्पन्न हुआ. अगस्त्य ऋषि प्रथम संगम के अध्यक्ष थे.
- प्रथम संगम 4400 वर्षों तक चलता रहा. मदुरै में बाढ़ आ जाने से प्रथम संगम का अन्त हो गया था.
- 59 पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में द्वितीय संगम अलैवै या कपाटपुरम् में सम्पन्न हुआ, जिसमें 49 विद्वान् सम्मिलित हुए थे.
- प्रारम्भ में द्वितीय संगम के अध्यक्ष अगस्त्य ऋषि थे एवं बाद में इन्हीं के शिष्य तोलकप्पियर द्वितीय संगम के अध्यक्ष बने.
- 49 पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में तृतीय संगम का आयोजन उत्तरी मदुरै में हुआ, जिसकी अध्यक्षता नक्कीरर ने की थी.
- तृतीय संगम में 49 विद्वानों ने भागीदारी निभाई थी.

- 'इरैयनार अग्गपोरूल में' तीनों संगमों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है.
- तीनों संगमों का काल 9900 वर्ष था, जिसे 197 पाण्ड्य शासकों ने संरक्षण दिया.
- तीनों संगमों में 8598 विद्वानों ने साहित्यिक रचनाएँ की थीं.
- संगम साहित्य में लगभग 473 विद्वानों की विभिन्न रचनाएँ लगभग 2289 की संख्या में उपलब्ध हैं.
- संगम साहित्य में आठ कविता संग्रहों में लगभग 20,000 कविताओं की पंक्तियाँ रची गई थीं.
- पादिनेकिलकण्क्कु एवं पत्तु-पत्तु संगम साहित्य की दो प्रमुख श्रेणियाँ हैं.
- पत्तु-पत्तु में चोल, पाण्ड्य एवं मुरुगन की प्रशंसा में गीत लिखे गए हैं.
- पादिनेकिलकण्क्कु प्रेम, युद्ध, नीति एवं चेर-चोल के राजनीति से सम्बन्धित गीतों का संग्रह है.
- संगम साहित्य आख्यान एवं उपदेशात्मक दो श्रेणियों में वर्गीकृत है.
- संगम साहित्य का वृहत् रूप आठ-खण्ड या एत्तुतोकै जिसमें 200 कवियों की 2282 कविताएँ हैं.
- एत्तुतोकै के आठ ग्रंथों में तमिल प्रदेश के विभिन्न पहलू समाहित हैं.
- तमिल के महाकाव्य शिल्पदिकारम के रचनाकार 'इलांगो आदिगल' और मणिमेकलै के रचनाकार 'सत्तनार' थे.
- 'तोलकप्पियम' ऋषि अगस्त्य के शिष्य तोलकप्पियर की रचना है. 'तोलकप्पियम' तमिल व्याकरण की रचना है.
- तोलकप्पियम के तीन खण्ड हैं और इसमें 1,16,172 सूत्र हैं.
- तिरुक्कुरल "तमिल भूमि की बाइबल' के नाम से प्रसिद्ध है.
- 'मणिमेकलै' ग्रन्थ में ललित कला का वर्णन किया गया है.
- तमिल रामायण 'कम्बन' द्वारा लिखी गई थी. कम्बन की रामायण में रावण को महानायक बताकर राम से श्रेष्ठ सिद्ध किया गया है.
- संगम युग में आर्यों का प्रसार सुदूर दक्षिण में महर्षि अगस्त्य ने किया था.
- संगम साहित्यों एवं अन्य स्रोतों-अभिलेखों में चेर, चोल, पाण्ड्य तथा क्षेत्रीय राज्यों का वर्णन किया गया है.
- चेर, चोल, पाण्ड्य में सबसे पुराना साम्राज्य चेर था, चेर राज्य का प्रथम शासक उदियनजेरल था.
- चेर राज्य का दूसरा शासक 'नेदुनजेरल आदन' था उसे 'इमयवरम्बन' भी कहा जाता था.
- उदियनजेरल का दूसरा पुत्र कुट्टवन चेर राज्य का तीसरा शासक बना, जो अनेक हाथियों के नाम से विख्यात था.
- कुट्टवन के बाद 'नेदुनजेरल आदन' का पहला पुत्र, जिसे 'चेरकलंगै' के नाम से जाना जाता था, शासक बना.
- नेदुनजेरल के दूसरे पुत्र शेनगुट्टवन चेर राज्य का अगला शासक था, जिसके काल में कण्णगी या पत्तिनी पूजा (आदर्श पत्नी) की प्रथा प्रारम्भ हुई.
- चेर (केरल) राज्य एक कुल संघ के समान था.
- उदियनजेरल वंशीय शासकों के अतिरिक्त अन्य शासकों में अन्दुवन एवं उसका पुत्र शेलवक्क डुंगोवाली आदन प्रमुख थे.
- संगम साहित्य में चेर राज्य के अन्य समकालीन सरदारों में 'आय' एवं 'पारि' का उल्लेख मिलता है.
- दक्षिण में ईख की खेती का प्रारम्भ करने का श्रेय नदिमान अंजि को दिया जाता है.
- चेर वंश का अन्तिम शासक कुडुको इलनजेराल इरम्पोरई था.
- चोल साम्राज्य को 'चोलमण्डम' के नाम से भी जाना जाता था, जिसकी राजधानी 'उरैयुर' थी.
- चोल शासकों का प्रमुख शासक करिकाल था, जो 'जले हुए पैरों वाला' नाम से विख्यात था.
- कावेरीपट्टनम चोल राज्य की दूसरी राजधानी थी.
- करिकाल के बाद शैंगनान नामक शिव भक्त शासक का उल्लेख संगम साहित्य में मिलता है, जिसने लगभग 70 मन्दिरों का निर्माण कराया था.
- पाण्ड्यों की राजधानी मदुरै थी, एवं यह राज्य भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग में फैला हुआ था.
- पहला पाण्ड्य शासक 'नेडियोन' था.
- विभिन्न संगम साहित्यों में पल्लशालई मुदुकुडुमी को पहला ऐतिहासिक पाण्ड्य राजा वर्णित किया है.
- 'नेदुजेलियन' नाम का संगम शासक अत्यन्त विख्यात शासक था, जिसका काल 275 ई. माना गया है.
- पाण्ड्य राज्य मोतियों के लिए प्रसिद्ध था.
- शिरुयान अरुपड्डई में संगमकालीन राज्यों के पतन का उल्लेख मिलता है.
- पुहार (कावेरीपत्तनम्) का निर्माण करिकाल ने कराया था.
- चेर राज्य का चिह्न 'धनुष' था.
- तिरुननक्कारासु नयनार ने सर्वप्रथम संगम शब्द का उल्लेख किया था.
- पाण्ड्यों का सबसे पहले उल्लेख मेगस्थनीज ने किया था.
- चेर, चोल, पाण्ड्य राज्यों की शासन प्रणाली राजतन्त्रात्मक थी एवं उनका स्वरूप कुलसंघ के समान था.
- संगमकालीन राजपद वंशानुगत एवं उत्तराधिकार युद्ध पर आधारित था.
- संगमकालीन राजा शक्तिमान एवं निरंकुश होता था, लेकिन स्वेच्छाचारी नहीं होता था.
- राजा का प्रतिवर्ष जन्मदिन मनाया जाता था जिसे पेरुनल कहा जाता था.
- राजा को परामर्श देने के लिए एक परिषद् होती थी.

- सर्वोच्च न्यायालय एवं परामर्शी संस्था के रूप में एक 'सभा' राजधानी में कार्यरत होती थी.
- गाँव की 'मनरम्' नामक संस्था होती थी, जो ग्रामीण समस्याओं पर विचार करती थी.
- सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी राजा होता था.
- सेना का प्रमुख सेनापति संगमकाल में 'इनाडी' होता था.
- संगमकालीन राज्यों में चतुरंगिणी सेना होती थी, घोड़े के स्थान पर रथ में बैल जोड़े जाते थे.
- राजा की सुरक्षा का कार्य शस्त्रधारी महिलाएँ करती थीं.
- युद्ध में मरे हुए सैनिकों के लिए स्मृति पत्थर लगाने की प्रथा थी.
- संगमकाल में भूमि-कर को 'करै' कहा जाता था. उस काल में भू-राजस्व की दर उत्पादन का 1/6 भाग था.
- सीमा शुल्क को संगम या उल्गुक कहा जाता था. राजा को कर देने की प्रथा पाडु या कडमै कहलाती थी.
- पट्टिनपालै नामक काव्य के कवि को चोल राजा करिकाल ने 16,00,000 सोने की मुद्राएँ भेंटस्वरूप प्रदान की थीं.
- संगम साहित्य के अनुसार मरवा नामक जनजाति में गौ-हरण की प्रथा विद्यमान थी.
- संगमकालीन समाज में जातियों को कुड़ि कहा जाता था.
- संगमकाल में उत्कृष्ट एवं प्रतिष्ठित वर्ग ब्राह्मण था, जो राजा का कवि एवं सलाहकार होता था.
- किसानों को वेल्लार एवं उसके मुखिया को 'वेलिर' कहते थे.
- धनी किसान राजा के साथ वैवाहिक सम्बन्ध, शिकार, युद्ध एवं मनोरंजन में भाग ले सकता था.
- संगमकाल में व्यापारी वर्ग को मदुरै में पुलिसकर्मी, सैनिक एवं महलों का रक्षक नियुक्त किया जाता था.
- संगमकाल में धनी लोग चूने एवं पत्थर के सुसज्जित मकान में एवं गरीब लोग झोपड़ियों में निवास करते थे.
- संगमकालीन समाज में स्त्रियों की सम्माननीय स्थिति थी. पतिव्रता स्त्री की तुलना कण्णगी से की जाती थी.
- विधवाओं को सिर मुंड़ाना पड़ता था एवं प्रतिबन्धित जीवन जीने को बाध्य होना पड़ता था.
- संगमकाल में गणिकाओं एवं वेश्याओं का भी अस्तित्व था.
- व्यभिचारी स्त्री को पाप से मुक्त होने के लिए कन्याकुमारी में स्नान करना पड़ता था.
- संगमकाल में आठ प्रकार के विवाहों का प्रचलन था.
- संगमकालीन लोग आभूषण एवं रेशमी तथा सूती वस्त्र पहनते थे.
- तमिलवासी उच्चवर्ग मद्यपान (ताड़ी एवं गन्ने की रस की शराब) पुरुष एवं स्त्री दोनों पीते थे.
- संगमकाल में मार्ग एवं देशी नृत्य की दो शैलियाँ थीं.
- संगमकालीन तमिलवासी विभिन्न अंधविश्वासों को मानते थे. उनके अनुसार बरगद के पेड़ में भगवान् का निवास होता था.
- दाह संस्कार, दफनाने एवं मृतकों का दाह-संस्कार करने के बाद स्मृति-पत्थर या समाधि बनाने का प्रचलन था.
- कृषि कार्य निम्नवर्गीय महिलाएँ सँभालती थीं, जिसे कदैसियर कहा जाता था.
- चेर राज्य कटहल, कालीमिर्च एवं हल्दी के लिए विख्यात था.
- संगमकाल में आयात-निर्यात एवं विदेशी व्यापार से तमिल राज्यों की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो चुकी थी.
- संगमकाल में विदेशी व्यापार का केन्द्रीय बन्दरगाह 'कावेरीपत्तनम्' था.
- तमिल प्रदेश के धर्म में ऋषि अगस्त्य एवं कौण्डिण्य का प्रभाव परिलक्षित होता था.
- संगमकाल का प्रमुख देवता मुरुगन या सुब्रह्मण्यम् माना जाता था जिसका प्रतियोगी देवता त्योमल था.
- वरुण, कुबेर, इन्द्र, यम को संगमकाल में यम कहा जाता था.
- संगमकाल में 'कुर्रम' मृत्यु का देवता एवं 'कन्नगी' कौमार्य की देवी मानी जाती थी.

विशिष्ट स्मरणीय तथ्य

संगमकालीन शब्दों के अर्थ

1.	उर	— कस्बा
2.	पेरूर	— बड़ा गाँव
3.	करै	— भूमि कर
4.	इरै	— युद्ध की लूटपाट
5.	पट्टिणम	— तटीय कस्बा
6.	इरावु	— उपहार
7.	संगम	— सीमाकर
8.	अवाई	— राजधानी नगर का न्यायालय
9.	सलाई	— राजमार्ग
10.	कदैसियर	— निम्नवर्गीय कृषि करने वाली स्त्री
11.	वेल्लार	— किसान
12.	वेलिर	— किसानों का प्रधान
13.	एनियर	— शिकारी
14.	मलवर	— डाकू
15.	कुड़ि	— जाति
16.	उल्गुक	— सीमा शुल्क
17.	पाडु या कडमै	— कर देने की प्रथा
18.	इनाडी	— सेना का प्रमुख सेनापति
19.	पेरुनल	— राजा का जन्म-दिन

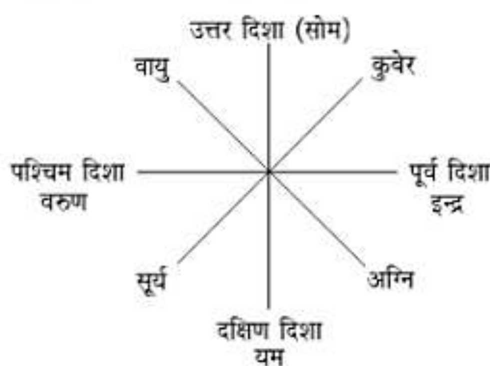
20. वेला — धनी किसानों की उपाधि (चोल राज्य में)
21. मरियम्मा — शीतला माता
22. ओररि — जासूस
23. चेरि — गाँव

संगम वंशों की राजधानियाँ

क्र. सं.	वंश	राजकीय प्रतीक	राजधानी (प्रथम)	राजधानी द्वितीय
1.	चेर	शेर	उरैयुर	कावेरीपत्तनम्
2.	चोल	धनुष	वाजी	करूर
3.	पाण्ड्य	मछली	मदुरै	कपाटपुरम/अल्लोराई या अलैवे

संगमकाल के विभिन्न देवता एवं देवियाँ

1. मुरुगन – शिकारियों का देवता
2. तिरुमल या त्योमल – विष्णु के समानान्तर ग्वालों का देवता
3. इन्द्र – कृपकों का देवता
4. वरुण – मछुआरों का देवता
5. कुर्रम – मृत्यु का देवता
6. कन्नगी – कौमार्य की देवी
7. मरियम्मा – चेचक की माता



दिशाओं के अधिपति

संगमकाल की निर्यातित वस्तुएँ

1. विभिन्न मसालें
2. काली मिर्च
3. मोती
4. मलमल
5. हाथीदाँत
6. वहुमूल्य रत्न
7. रेशमी वस्त्र
8. नीलम
9. हीरे

संगमकालीन आयातित वस्तुएँ

1. रोम की मुद्राएँ
2. रोम के वरतन
3. कपड़े
4. रत्न
5. शराव
6. सोना

संगम समाज के व्यावसायिक वर्ग

1. वेल्लार (किसान)
2. एनियर (शिकारी)
3. पुलैयन (रस्सी निर्माता)
4. पेशेवर सैनिक
5. चरवाहे
6. मलवर (डाकू)

संगम साहित्य की प्रसिद्ध रचनाएँ एवं रचनाकार

रचना	रचनाकार
1. तमिल रामायण	कम्वन
2. तोलकप्पियर	तोलकप्पियम्
3. तिरुक्कुरल	तिरुवल्लुवर
4. शिलप्पदिकारम्	इलांगो आदिगल
5. मणिमैकलै	सीतले सत्तनार
6. शिरुयान अरुपड्डई	नदत्तनार

संगमकालीन प्रमुख शासक

क्र. सं.	प्रमुख शासक	वंश	उपाधि	अर्थ
1.	उदियन जेरल	चेर	भोजन कराने वाला उदियन जेरल	महाभारत में भोजन कराने के कारण
2.	नेदुनजेरल आदन	चेर	इमयवरम्बन	हिमालय तक राज्य सीमा वाला
3.	कुट्टवन	चेर	अनेक हाथियों वाला	अधिक हाथियों का मालिक
4.	शेन गुट्टवन	चेर	लाल चेर	–
5.	शेप	चेर	हाथी की आँख वाला	वड़ी आँखों वाला
6.	करिकाल	चोल	जले हुए पैरों वाला	विकृत पाँवों वाला
7.	मुदुकुडुमी	पाण्ड्य	पल्सशाले	अनेक यज्ञशाला बनाने वाला

नोट–गुप्त शासक एवं उनके उत्तराधिकारी (750 ई. तक) साम्राज्य के राजनैतिक संगठन में परिवर्तन अर्थ-व्यवस्था एवं समाज, साहित्य एवं विज्ञान कला के लिए मौर्योत्तर भारत वाले पूर्व अध्याय में अवलोकन करें.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दक्षिण भारत में पाषाण संस्कृति के बाद जिस संस्कृति का उदय हुआ–
   (A) वैदिक संस्कृति
   (B) हड़प्पा संस्कृति
   (C) चित्रित धूसर मृदुभाण्ड संस्कृति
   (D) महापाषाण संस्कृति
2. महापाषाणकालीन लोगों का प्रमुख देवता था–
   (A) इन्द्र (B) वरुण
   (C) मुरुगन (D) यम
3. संगम साहित्य की रचना हुई–
   (A) तमिलकम प्रदेश में (B) ब्रह्मार्षि प्रदेश में
   (C) मध्यदेश में (D) आर्यावर्त्त में

टिप्पणी–कृष्णा एवं तुंगभद्रा के दक्षिण भाग में तमिलकम स्थित था.

4. संगम था–
   (A) राजनीतिक संगठन (B) विद्वानों की सभा
   (C) साहित्यिक ग्रन्थ (D) उपरोक्त सभी
5. प्रथम संगम का गठन हुआ–
   (A) मदुरै में (B) कपाटपुरम में
   (C) अलैवे में (D) पुहार नगर में
6. संगम का गठन जिसके संरक्षण में हुआ–
   (A) पाण्ड्य शासकों के (B) चेर शासकों के
   (C) पल्लव शासकों के (D) चोल शासकों के
7. सम्पन्न हुए संगमों की संख्या है–
   (A) 5 (B) 6
   (C) 4 (D) 3
8. तृतीय संगम की अध्यक्षता की थी–
   (A) अगस्त्य ऋषि ने (B) तोलकप्पियर ने
   (C) कपिल ऋषि ने (D) नक्कीरर ने
9. द्वितीय संगम सम्पन्न हुआ–
   (A) मदुरै में (B) कपाटपुरम् में
   (C) उत्तरी मदुरै में (D) पुहार नगर में
10. तोलकप्पियर का अगस्त्य के साथ सम्बन्ध था–
    (A) गुरु का (B) शिष्य का
    (C) भाई का (D) पिता का
11. तोलकप्पियर का तोलकप्पियम था–
    (A) कविता संग्रह (B) प्रेम गाथा
    (C) तमिल व्याकरण (D) धार्मिक ग्रन्थ
12. तीनों संगमों के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है–
    (A) परिपादस (B) इरैयनार अग्गपोरुल
    (C) पत्तुपात्तु (D) शिलाप्पदिकारम्
13. तीनों संगमों को संरक्षण देने वाले पाण्ड्य शासकों की संख्या थी–
    (A) 190 (B) 197
    (C) 127 (D) 200
14. एतुतोकै नामक संगम साहित्य में कितने कवियों की रचना है ?
    (A) 115 (B) 17
    (C) 20 (D) 200
15. इलांगो आदिगल की रचना है–
    (A) मणिमेकलै (B) शिलाप्पदिकारम्
    (C) पत्तुपात्तु (D) परिपादल
16. मणिमेकलै के रचनाकार थे–
    (A) सीतले सत्तनार (B) अदनार
    (C) तोलकप्पियर (D) महर्षि अगस्त्य
17. तोलकप्पियम में सूत्रों की संख्या हैं–
    (A) 10667 (B) 150
    (C) 27 (D) 116172

टिप्पणी–तोलकप्पिय तमिल व्याकरण ग्रन्थ है, जिसमें तीन खण्ड प्रत्येक खण्ड में 9 अध्याय एवं तीन खण्ड नौ इयलों में विभक्त है, जिसे तोलकप्पियर अगस्त्य ऋषि के शिष्य ने लिखा था.

18. कौनसी संगम रचना 'तमिल भूमि की बाइबिल' कही जाती है ?
    (A) तिरुक्कुरल (B) पत्तुपत्तु
    (C) शिलाप्पदिकारम् (D) तोलिकप्पयम

टिप्पणी–तिरुक्कुरल के रचनाकार तिरुवल्लुवर थे.

19. रामायण को जिसने तमिल भाषा में लिखा था–
    (A) कौडिण्य ने (B) कम्बन ने
    (C) तोलकप्पियर ने (D) अगस्त्य ऋषि ने

20. संगम युग में आर्यों का प्रसार दक्षिण में किया–
(A) कपिल ऋषि ने (B) गौतम ऋषि ने
(C) अगस्त्य ऋषि ने (D) वाल्मीकि ने

21. संगम शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया–
(A) करिकाल ने (B) मुदुकुडुमी ने
(C) तिरुननक्कारासु ने (D) तिरुनल्लुवर

टिप्पणी–तिरुननक्कारासु नयनार एक शैव संत थे.

22. चेर राज्य का सबसे पहला शासक था–
(A) उदियन जेरल (B) आदन
(C) कुट्टवन (D) शेनगुट्टवन

23. संगमकाल में प्रयुक्त शब्द 'इमयम्वरन' का अर्थ था–
(A) हिमालय तक सीमा वाला
(B) हाथी की आँख वाला
(C) जले पैर वाला
(D) भोजन कराने वाला

24. चेर शासक शेन गुट्टवन का काल था–
(A) 150 ई. (B) 180 ई.
(C) 130 ई (D) 103 ई.

25. आदर्श पत्नी (कण्णगी) की प्रथा का प्रवर्त्तक था–
(A) आदन (B) उदियन जेरल
(C) शेनगुट्टवन (D) कुट्टवन

26. संगम साहित्य में वर्णित 'आय' कोई शासक नहीं अपितु वंश था–यह किस विद्वान् का मत है ?
(A) डॉ. राजपलि पाण्डेय (B) नीलकांत शास्त्री
(C) रोमिला थापर (D) सर ह्वीलर

27. दक्षिण में ईख की खेती प्रारम्भ करने वाला था–
(A) नदुमान अंजि (B) कुट्टवन
(C) शेनगुट्टवन (D) आदान

28. चोलमण्डलम् या कोरमण्डलम के नाम से जाना जाता था–
(A) पल्लव साम्राज्य (B) चेर साम्राज्य
(C) चोल साम्राज्य (D) पाण्ड्य साम्राज्य

29. चोलों की राजधानी थी–
(A) उरैयुर (B) कपाटपुरम्
(C) मदुरै (D) कावेरीपत्तनम्

30. 'वाहिप्परदलई' नामक युद्ध में करिकाल ने कितने राजाओं को परास्त किया ?
(A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 10

31. पुहार नामक नगर का निर्माण कराया–
(A) आदन (B) करिकाल
(C) शेप (D) कुट्टवन

32. पाण्ड्यों का सबसे पहले उल्लेख किया था–
(A) मेगस्थनीज (B) अगस्त्य ऋषि
(C) प्रो. रामशरण (D) फाह्यान

33. पाण्ड्य प्रसिद्ध था–
(A) हीरों के लिए (B) मोतियों के लिए
(C) नीलम के लिए (D) पन्ना के लिए

34. शिरुयान अरुपड्डई में चेर, चोल एवं पाण्ड्य के पतन का वर्णन है जिसे लिखा था–
(A) नदत्तनार ने (B) अगस्त्य ऋषि ने
(C) मुदुकुडुमी ने (D) मेगस्थनीज ने

35. संगम शासन प्रणाली थी–
(A) वंशानुगत (B) राजतन्त्रात्मक
(C) लोकतन्त्रात्मक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

36. राजा का प्रतिवर्ष जन्म-दिन मनाया जाता था जिसे कहते हैं–
(A) पेरुनल (B) चेरि
(C) ओररि (D) कुड़ि

37. 'इनाडी' संगमकाल में कहा जाता है–
(A) राजा को (B) सेनापति को
(C) सीमा कर को (D) भूमि कर को

38. 'मनरम' गाँव की संस्था थी, जिसकी बैठक होती थी–
(A) पंचायत भवन में (B) पेड़ के नीचे
(C) बरामदे में (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

39. भू-राजस्व की दर थी–
(A) उत्पादन का 1/3 भाग
(B) उत्पादन का 1/4 भाग
(C) उत्पादन का 1/5 भाग
(D) उत्पादन का 1/6 भाग

40. संगमकालीन 'उल्गुक' था–
(A) सीमा कर (B) भूमि कर
(C) राजस्व कर (D) युद्ध कर

41. राजा को कर देने की प्रथा को कहा जाता था–
(A) उल्गुक (B) करै
(C) पाडु (D) संगम

42. संगमकालीन 'कुड़ि' शब्द का अर्थ था–
(A) वर्ण (B) जाति
(C) धर्म (D) वर्ग

43. संगमकाल में आदर्श स्त्री को समझा जाता था–
(A) कण्णगी (B) गार्गी
(C) कात्यायनी (D) सीता

44. संगम समाज में विधवाओं की स्थिति थी–
(A) प्रशंसनीय (B) दुःखद
(C) सुखद (D) सन्तोषजनक

45. व्यभिचारिणी स्त्री को स्नान करना होता था–
(A) कन्याकुमारी में (B) गंगा में
(C) यमुना में (D) सरस्वती में

46. संगमकालीन लोगों में बरगद के पेड़ के सम्बन्ध में मान्यता थी–
(A) उसमें ईश्वर का निवास होता है
(B) उसमें भूत का निवास होता है
(C) उसमें अच्छे फल लगते हैं
(D) उससे अच्छी हवा आती है

47. चेर राज्य प्रसिद्ध था–
1. कटहल के लिए 2. हल्दी के लिए
3. भैंस के लिए 4. कालीमिर्च के लिए
(A) केवल 1, 2, 3 (B) 1, 2, 3 व 4
(C) 2, 3, व 4 (D) 1, 3 व 4

48. चेर राज्य का प्रमुख बन्दरगाह था–
(A) बन्दर (B) शालियूट
(C) कावेरीपत्तनम् (D) नेलिसण्डा

49. कौनसा स्थल रोमन साक्ष्य से सम्बन्धित नहीं है ?
(A) उरैयुर (B) करूर
(C) कावेरीपत्तनम् (D) मदुरै

टिप्पणी–मदुरै के अतिरिक्त उपर्युक्त सभी स्थलों से रोमन के सिक्के एवं बर्तन उत्खनन से प्राप्त हुए हैं.

50. मरियम्मा थी–
(A) शीतलामाता (B) पार्वती
(C) सीता (D) कौमार्य की देवी

51. मुरुगन का प्रतियोगी देवता था–
(A) तिरुमल (B) इन्द्र
(C) विष्णु (D) वरुण

52. सरस्वती के मन्दिर होने का उल्लेख जिस संगम साहित्य में प्राप्त होता था–
(A) शिलप्पदिकारम् में (B) मणिमैकलै में
(C) कम्बन रामायण में (D) तिरुक्कुरल में

53. मुरुगन देवता का प्रतिनिधि था–
(A) कुक्कुट (B) मयूर
(C) चिड़िया (D) बतख

54. कौमार्य की देवी थी–
(A) सीता (B) सावित्री
(C) कण्णगी (D) मरियम्मा

55. दक्षिण दिशा का अधिपति था–
(A) इन्द्र (B) यम
(C) वरुण (D) मुरुगन

56. संगमकाल में 'मृत्यु का देवता' था–
(A) कुर्रम (B) तिरुमल
(C) यम (D) कन्नगी

57. पाण्ड्य का राजकीय प्रतीक था–
(A) मछली (B) धनुष
(C) बाघ (D) शेर

58. संगमकाल में कृषकों का देवता था–
(A) वरुण (B) मरुगन
(C) इन्द्र (D) मरियम्मा

59. चोल राज्य की दूसरी राजधानी थी–
(A) वाजी (B) कावेरीपत्तनम्
(C) उरैयुर (D) मदुरै

60. मछुआरों का देवता था–
(A) वरुण (B) यम
(C) इन्द्र (D) शिव

उत्तरमाला

1. (D)	2. (C)	3. (A)	4. (B)	5. (A)
6. (A)	7. (D)	8. (D)	9. (B)	10. (B)
11. (C)	12. (B)	13. (B)	14. (D)	15. (B)
16. (A)	17. (D)	18. (A)	19. (B)	20. (C)
21. (C)	22. (A)	23. (A)	24. (B)	25. (C)
26. (B)	27. (A)	28. (C)	29. (A)	30. (C)
31. (B)	32. (A)	33. (B)	34. (A)	35. (B)
36. (A)	37. (B)	38. (B)	39. (D)	40. (A)
41. (A)	42. (B)	43. (A)	44. (B)	45. (A)
46. (A)	47. (B)	48. (A)	49. (D)	50. (A)
51. (A)	52. (B)	53. (A)	54. (C)	55. (B)
56. (A)	57. (A)	58. (C)	59. (B)	60. (A)

विगत वर्षों में पूछे गये प्रश्न

1. संगमकाल में उरैयुर निम्नलिखित में से किस एक की राजधानी थी ?
(A) पांड्य शासकों की (B) पल्लव शासकों की
(C) चालुक्य शासकों की (D) चोल शासकों की

2. तोल्कप्पियम सम्बन्धित है–
(A) प्रथम संगम काल से
(B) द्वितीय संगम काल से
(C) तृतीय संगम काल से
(D) उत्तर-तृतीय संगम काल से

3. निम्न में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) कपिलार–पारि
(B) पिसिरंथैयार–कोप्पेरुनचोलन
(C) उवैयार–अदिकैमान
(D) तोल्कप्पियम–पत्तिनप्पलै

उत्तरमाला

1. (D) 2. (B) 3. (D)

संकेत

3. सही मेल है–
तोल्काप्पियम – तोलकाप्पियर

10

इतिहास के चुने हुए उद्धरण/प्रसंग

(Selected References of History)

इतिहास के चुने हुए उद्धरण/प्रसंग

1. हे नारी ! इस मृत पति को त्याग कर पुनः जीवितों के समूह में पदार्पण करो. तुमसे विवाह के लिए इच्छुक जो तुम्हारा भावी पति है, उसे स्वीकार करो.

   –ऋग्वेद 10/18/08

2. यदि मैं आपके साथ झूँठ का व्यवहार करूँ, तो मेरे धार्मिक कार्य, दान, अच्छे कार्य, स्थान, जीवन व सन्तति भी नष्ट हो जावे. –ऐतरेय ब्राह्मण

3. भारत का इतिहास आर्यों का ही इतिहास समझा जाता है. –राधाकुमुद मुखर्जी

4. आर्यों के मूल स्थान या निवास स्थान की विवेचना जानबूझकर नहीं की गई है, क्योंकि इस विषय पर कोई भी धारणा स्थापित नहीं हो सकी है. –डॉ. वी.ए. स्मिथ

5. यदि राजा एक दण्डनीय अपराध के लिए दण्ड नहीं देता है, तो उसे भी अपराधी समझना चाहिए.

   –आपस्तम्बसूत्रम्

6. अब आर्यों के आक्रमण और भारत के मूल निवासियों के साथ उनके संघर्ष की परिकल्पना को धीरे-धीरे त्याग दिया जा रहा है. –राधाकुमुद मुखर्जी

7. छठी शताब्दी ई. पू. मानव इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल है. यह असाधारण मानसिक तथा आध्यात्मिक अशान्ति का युग था. –डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी

8. मैं कवि हूँ, मेरा पिता भिषग है और मेरी माता अन्न पीसती है. –ऋग्वेद (I.A.S. Pre. 1996)

9. धर्म का रूप ग्रहण करने में बौद्ध धर्म ने उस समय की सभी लोक प्रचलित आस्थाओं से कुछ प्राप्त किया तथा उसकी अनुरूपता ग्रहण की. –प्रो. ए. एल. वाशम

10. देवी मैं क्षत्रिय हूँ, प्याज कैसे खा सकता हूँ ?

    –सम्राट् अशोक महान् (रानी तिष्यरक्षिता से)

11. अन्य राष्ट्रों की लड़ाइयों में भूमि को नष्ट करने का चलन है. भारतीयों में भूमि जोतने वाले पड़ोस में लड़ाई चलते रहने के बावजूद कैसे भी संकट के भाव से उद्विग्न नहीं होते और उत्पीड़ित नहीं होते.

    –मेगस्थनीज (I.A.S. Pre., 1997)

12. जिस प्रकार एक माँ अपने शिशु को एक कुशल धाय को सौंपकर निश्चिंत हो जाती है कि कुशल धाय संतान का पालन-पोषण करने में समर्थ है, उसी प्रकार मैंने भी अपनी प्रजा के सुख और कल्याण के लिए राजुकों की नियुक्ति की है.

    –सम्राट अशोक महान् (कलिंग अभिलेख में)

13. हर क्षण और स्थान पर चाहे वह रसोईघर में हो, अंतःपुर में हो अथवा उद्यान में–मेरे प्रतिवेदक मुझे प्रजा के कार्यों के सम्बन्ध में सूचित करे. मैं जनता का कार्य करने से कभी नहीं अघाता. मुझे प्रजा के हित के लिए कार्य करना चाहिए.

    –सम्राट् अशोक महान् (षष्ठ शिलाभिलेख में)

14. मैं वज्जियों का उन्मूलन कर दूँगा, चाहे वे कितने ही बली व ताकतवर क्यों न हों. मैं इन वज्जियों को उखाड़ दूँगा. मैं इन्हें नष्ट कर दूँगा.

    –अजातशत्रु (लिच्छिवियों को परास्त करने के संदर्भ में घोषणा)

15. चौथी सदी में प्रकाश का पुनः आगमन होता है. अंधकार का पर्दा हट जाता है और भारतीय इतिहास में पुनः एकता तथा अभिरुचि उत्पन्न होती है.

    –वी. ए. स्मिथ

16. राजकीय भोजों के अवसर पर राजा और उसके दरबार में चार मंत्री राजसिंहासन के नीचे खड़े होकर सलाम करते हैं. इसके उपरान्त वहाँ उपस्थित सभी लोग संगीत, गीत, नृत्य आरम्भ कर देते हैं. राजा मदिरा पान नहीं करता, परन्तु माँस भक्षण करता है और देश की परम्परा

के अनुसार सूती वस्त्र धारण करता है तथा आटे की रोटियाँ खाता है. अपनी टेबुल के लिए तथा अनुरक्षक के रूप में काम करने के लिए उसने हजारों नाचने वाली लड़कियों को नियुक्त कर रखा है. प्रतिदिन 3000 लड़कियाँ बारी-बारी से उसकी सेवा में रहती हैं.

–चीनी लेखक चाउ-जु-कुआ द्वारा (चोल राज्य के संदर्भ में)

17. हिन्दू लोग विदेशियों से बहुत घृणा करते हैं. वे समझते हैं कि हमारा देश सबसे अच्छा है. हमारा धर्म, हमारी सभ्यता, हमारा विज्ञान, हमारे रीति-रिवाज सबसे अच्छे हैं. –अलबेरूनी

18. एक वर्ण के रूप में ब्राह्मणों की बौद्धिक श्रेष्ठता उनको मान्यता दिलाने के लिए समुचित पर्याप्त थी और उनमें इतना विवेक था कि वे राजाओं के रूप में नहीं, बल्कि मन्त्रियों के रूप में नियुक्त होकर शासन करते थे. इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि ब्राह्मण सदा अपने पेशे के आदर्शों के अनुसार कार्य नहीं करते थे और समाज में ब्राह्मणों को मिले स्थान के विरोध में लिंगायत जैसे कुछ आन्दोलन भी हुए, किन्तु सामान्यतः लोगों की जो आस्था थी, ब्राह्मणों ने अपने को उनके प्रति सच्चा सिद्ध किया तथा समाज के अन्य वर्ग के लोगों ने हर प्रकार से इस औचित्य को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार किया. –इलियट

19. इस सेना में सैनिक हर चार मास का वेतन पाते थे और किसी भी व्यक्ति को किसी प्रान्त के राजस्व पर हुण्डी के जरिए वेतन का भुगतान किया जाता था.

–अब्दुर्रज्जाक (विजयनगर साम्राज्य की सेना के लिए)

20. जहाँगीर शराब खूब पीता था तथा नूरजहाँ के हाथ का खिलौना था. –सर टॉमस रो

21. दीन-ए-इलाही अकबर की मूर्खता का इजहार है.

–वी. ए. स्मिथ

22. संसार की अन्य किसी इमारत में वह आकर्षण नहीं जो ताजमहल में है. –कीन

23. ताजमहल की योजना देवों ने की और उसका निर्माण जौहरियों ने किया. –लेनपूल

24. मैं लोगों को ऐसे हुक्म देता हूँ जो उनके और राज्य के लिए लाभकारी समझता हूँ. मैं नहीं जानता कि ये शरियत द्वारा अनुमत हैं या नहीं.

–अलाउद्दीन खिलजी (I.A.S. Pre., 1995)

25. मलक्का कैम्बे के बिना नहीं रह सकता और न कैम्बे मलक्का के बिना. अगर उन्हें बहुत धनी और बहुत समृद्ध बनना हो.

–एशिया व्यापार के विषय में टोमपिरेस की टिप्पणी

26. राजकीय मुकुट का प्रत्येक मोती गरीब किसान की अश्रुपूरित आँखों से गिरी हुई रक्त की घनीभूत बूँद है.

–अमीर खुसरो (भारतीय किसानों की गरीबी पर दिल्ली सल्तनत काल में की गई टिप्पणी)

(I.A.S Pre., 1997)

27. अन्त्यज जो चार वर्णों में परिगणित नहीं थे, आठ वर्गों अथवा शिल्पी या व्यावसायिक श्रेणियों में संघटित थे.

–अलबेरूनी

28. लोगों के धार्मिक विश्वासों में किसी को भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि कोई भी जानबूझकर गलत धर्म का चयन नहीं करता.

–शाह अब्बास को पत्र में (I.A.S. Pre., 1998)

29. जब उसने राजसत्ता पायी तब वह शरियत के नियमों और उपदेशों से काफी स्वतन्त्र था.

–जियाउद्दीन बर्नी द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के लिए (I.A.S. Pre., 1999)

30. अपने बड़े सामन्तों के बीच वह सम्राट इतना प्रभावशाली था कि कोई अपना सिर बहुत ऊँचा उठाने की हिम्मत नहीं करता था, लेकिन साधारण वर्ग के लोगों के साथ वह उदार और मिलनसार था और स्वेच्छा से उन्हें अपने पास नहीं आने देता था और उनकी अर्जियाँ सुनता था. वह उनके उपहार खुशी से कबूल करता था. उन्हें अपने हाथों में लेकर अपनी छाती से लगाता था.

–मांसरेट द्वारा अकबर के लिए (I.A.S. Pre., 1999)

31. नगर इतनी बुरी तरह उजड़ गया था कि नगर की इमारतों महल और आसपास के इलाकों में एक बिल्ली या कुत्ता तक नहीं बचा.

–जियाउद्दीन बर्नी (सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की राजधानी के लिए)

32. अब हमें खुले आम बगावत कर देश को विदेशी शासन से मुक्त करना है और साथियों मैं आपका और अपने सभी देशवासी भाइयों एवं बहिनों को इसमें शामिल होने के लिए आह्वान करता हूँ.

–सुभाषचन्द्र बोस (I.A.S. Pre., 1999)

33. निष्ठा की जोरदार स्वीकारोक्तियों के बावजूद किंचित सहानुभूति ही थी. नरमदलीय और गरमदलीय दोनों को

ही जर्मन विजयों की जानकारी से एक समान सन्तोष हुआ. वास्तव में जर्मनी के लिए कोई अनुराग नहीं था. केवल हमारे शासकों को नीचा दिखाने की इच्छा थी.

–जवाहरलाल नेहरू (I.A.S. Pre., 1998)

34. ब्रिटिश शासन अपने वजन एवं शक्ति में दुर्घर्ष बेलन है जिसके अपने उपयोग हैं, किन्तु इससे भूमि के उपजाऊ होने में मदद नहीं मिलती.

–बाल गंगाधर तिलक (I.A.S. Pre., 1996)

35. राष्ट्रीयता आत्मन्तर की एक दैवी नियोजित शक्ति है और इसके पूर्व कि यह सार्वभौम ऊर्जा के हृदय में जहाँ से आई है, लौट जाए, इसे अपना ईश्वर प्रदत्त कार्य कर लेना चाहिए.

–श्री अरविन्द घोष (I.A.S. Pre., 1996)

36. एक सच्चा राष्ट्रवादी पुरानी आधारशिलाओं पर निर्माण करने की इच्छा करता है. सामाजिक एवं राजनैतिक सुधारों के नाम पर हम अपनी संस्थाओं का अंग्रेजीकरण एवं अराष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते.

–रवीन्द्रनाथ टैगोर (I.A.S. Pre., 1996)

37. मैं दिव्य दृष्टा नहीं हूँ. मैं एक व्यावहारिक आदर्शवादी होने का दावा करता हूँ.

–महात्मा गांधी (I.A.S. Pre., 1996)

38. चालीस वर्षों के गम्भीर चिन्तन के बाद मैं यह कह रही हूँ कि विश्व के सभी धर्मों में हिन्दू धर्म से बढ़कर पूर्ण वैज्ञानिक, दर्शनयुक्त एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण धर्म दूसरा कोई नहीं है.

–श्रीमती ऐनीबेसेन्ट (सन् 1914 के भाषण में)

39. किसी क्रान्ति का आयोजन करना दुनिया का सबसे लाभदायी खेल समझा गया है. अंग्रेजों के मन में सोने का ऐसा लालच भर गया जो कोर्तेस और पिजाऐ के काल के स्पेनवासियों के बाद कभी देखने को नहीं मिला था. अब खासतौर पर बंगाल को तब तक चैन नहीं मिलने वाला था, जब तक उसके खून की एक-एक बूँद न निचुड़ जाए.

–ब्रिटिश इतिहासकार एडवर्ड थांप्सन एवं जी. टी. गैरेट

40. भारत में सरकार की व्यवस्था, सत्ता की नींव और उसे संभाले रखने तथा सरकार के कार्यकलापों को चलाने के तौर तरीके समान उद्देश्य के लिए यूरोप में अपनाए गए और तौर-तरीकों से बिल्कुल भिन्न है. वहाँ सम्पूर्ण सत्ता की नींव और उपकरण तलवार है.

–ड्यूक ऑफ विलिंग्टन

41. जहाँ तक पुलिस का सवाल है, वह जनता का रक्षक होने की स्थिति से कोसों दूर है. इस सम्बन्ध में जनता की भावना को बिना तथ्य का सहारा लिए मैं अच्छी तरह नहीं रख सकता. हाल के एक रेगुलेशन के अनुसार अगर कोई डकैती हुई हो, तो पुलिस को तब तक जाँच करने की मनाही है जब तक लूटे गए व्यक्ति उसे नहीं बुलाएँ. कहने का मतलब यह है कि गड़रिया भेड़िए से बड़ा भुक्खड़ हिंसक पशु है.

–गवर्नर जनरल बैंटिक, 1832

42. हमें ऐसा वर्ग बनाने के लिए जी-जान से प्रयत्न करना चाहिए, जो हमारे और उन करोड़ों लोगों के बीच, जिन पर हम शासन करते हैं. दुभाषिए का काम कर सकें; यह उन लोगों का वर्ग हो जो रक्त और रंग की दृष्टि से भारतीय मगर रुचि, विचारों, आचरण तथा बुद्धि की दृष्टि से अंग्रेज हो. –लॉर्ड मैकाले

43. मगर हाय ! तुम्हारी विजय का वह दिन देखने के लिए मैं कभी जिन्दा नहीं रहूँगा. जब दृढ़ता और दिलेरी से तुम गरुड़ के पंखों पर बैठोगी और ऊपर ज्ञान और सुखद स्वतन्त्रता के क्षेत्र में उड़ान भरोगी.

–काशीप्रसाद घोष

44. मेरे देश ! बीती हुई गरिमा के दिनों में तुम्हारे ललाट के चारों ओर एक सुन्दर प्रभामण्डल व्याप्त था और पूजा एक देवता के समान होती थी. वह गरिमा कहाँ है ? अब वह श्रद्धा कहाँ है ? आखिरकार गरुड़ के समान तुम्हारे पंखों को जंजीर से जकड़ दिया गया है और तुम नीचे धूल में औंधे पड़े हो. तुम्हारे चरण तुम्हारी विपन्नता की दुःखद कहानी के सिवाय गूँथने के लिए कोई माला नहीं है. –डेरोजिओ (प्रथम राष्ट्रवादी कवि)

45. अगर वह हैदर जैसी सैनिक चातुरी का परिचय दे भी दे तो वह जानता है कि वह एक मध्यमस्तरीय अंग्रेज अधिकारी जितना वेतन नहीं पा सकता और लगभग 30 वर्ष तक निष्ठापूर्वक सेवा करने के बाद जो पद वह प्राप्त करेगा वह भी उसे इंग्लैण्ड से नये-नये आए किसी रंगरूट की हुक्म अदायगी से सुरक्षित नहीं कर सकेगा.

–इतिहासकार टी. आर. होल्मस (सिपाहियों की दुर्दशा पर)

46. कोई भी मिसाल ऐसी नहीं कि किसी गोरे की गाड़ी पर दोस्ताना निगाह पड़ती हो............

उफ ! ये आँखों की भाषा ! शक की गुंजाइश कहाँ है ? गलत समझाने की गुंजाइश कहाँ है ? यहीं तो वह चीज है, जिससे मैंने समझा कि हमारी जाति का अक्सर बहुत

से लोगों को कोई डर नहीं होता और यह कि नफरत तो इससे सभी करते हैं.

–डब्ल्यू एच. रसल (लन्दन टाइम्स अखबार के संवाददाता 1858-59)

47. मैं एक ऐसी बड़ी सेना कभी नहीं देखना चाहता जिसकी भावनाएँ और पूर्वाग्रह और सम्पर्क वैसे ही हो, जिसे अपनी शक्ति का भरोसा है और जो मिलकर विद्रोह करने को इतनी उत्सुक हो. अगर एक रेजीमेंट विद्रोह करे, तो दूसरे रेजीमेंट को उससे इतना कटा हुआ देखना पसन्द करूँगा कि वह उस पर गोली चलाने के लिए भी तैयार हो.

–भारत सचिव चार्ल्स वुड (वायसराय केनिंग को 1861 में लिखे पत्र में)

48. मेरा ख्याल है कि न तो देशी और न ही यूरोपीय कृषक की वर्तमान दर पर समृद्ध बन सकता है. जमीन की आधी सकल पैदावार सरकार ले लेती है. हिन्दुस्तान (उत्तर भारत) में मैंने शाही अफसरों में यह आम भावना पाई. विदेशी राज्यों की प्रजा की तुलना में कम्पनी के प्रान्तों के किसान बदतर गरीब और पस्त हिम्मत है और यहाँ मद्रास में जहाँ जमीन आमतौर से कम उपजाऊ है, विषमता और स्पष्ट तथ्य यह है कि कोई भी देशी राजा हमारे जितना लगान नहीं माँगता.

–विशप हेबर (1826)

49. मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि आधी कृषि जनसंख्या को एक साल के अन्त में से दूसरे साल के अन्त तक यह पता नहीं होता कि पेट भर खाना कैसा होता है. –चार्ल्स इलियट

50. इसलिए मैं यह कहने की जुर्रत करूँगा कि भारत की सम्पत्ति या उसके जीवन को सुरक्षा प्राप्त नहीं है. भारत के लाखों-लाख लोगों के लिए जीवन का अर्थ आधा पेट भोजन या भुखमरी या अकाल और महामारी है.

–दादा भाई नौरोजी

51. विदेशी प्रशासन का अत्यधिक खर्चीलापन बहरहाल इसकी अकेली बुराई नहीं है. यह एक नैतिक बुराई भी है और बल्कि यह बड़ी बुराई है. वर्तमान व्यवस्था में भारतीय जाति का कद घटने या उसकी वृद्धि के रुकने की प्रक्रिया चल रही है हमें अपना पूरा जीवन उसका एक-एक दिन हीनता के वातावरण में जीना पड़ रहा है और हममें जो श्रेष्ठ है उसे भी झुकना पड़ रहा है. हमारी मनुष्यता जिन महान् ऊँचाइयों को छू सकती है वहाँ तक वर्तमान व्यवस्था में हम कभी नहीं पहुँच सकेंगे. प्रत्येक स्वशासी जनगण को जिस नैतिक ऊँचाई का अनुभव होता है उसे हम महसूस नहीं कर सकते. हमारी प्रशासकीय और सैनिक योग्यता उपयोग के बिना धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगी और हम अपने ही देश में लकड़ी काटने वालों या कुएँ से पानी निकालने वालों के रूप में जड़ होकर रह जाएँगे. –गोपालकृष्ण गोखले

52. इस तरह के तीन करोड़ प्राणी जो भारत के शरीर पर इस तरह रेंग रहे हैं जैसे कि सड़ती और बदबू देती लाशों के ऊपर कीड़े रेंगते हैं. हमारे बारे में यही वह तस्वीर है जो स्वाभाविक तौर पर अंग्रेज अधिकारियों के सामने उभरती है. –स्वामी विवेकानन्द

53. आज हम जो कुछ अपने इर्द-गिर्द देखते हैं वह एक पतित राष्ट्र है. एक ऐसा राष्ट्र जिसकी प्राचीन महानता ध्वंस होकर बिखरी पड़ी है. इसका राष्ट्रीय साहित्य और विज्ञान, इसका धर्मशास्त्र और दर्शन, इसका उद्योग और वाणिज्य, इसकी सामाजिक समृद्धि और घरेलू सरलता तथा मधुरता, यह सभी समाप्त हो चुकी बातों के साथ लगभग जा चुकी है. जब हमनें चारों ओर बढ़ते आध्यात्मिक सामाजिक तथा बौद्धिक सूनेपन का दुःखजनक तथा निराशाजनक दृश्य देखते हैं, तो हम इसमें कालिदास के काव्य के विज्ञान के तथा सभ्यता के देश को पहचानने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं.

–केशवचन्द्र सेन

54. हम दोनों भारत की हवा में सांस लेते हैं और गंगा-यमुना का पवित्र जल पीते हैं. हम दोनों भारत की धरती का अनाज खाकर जीवित रहते हैं. जीवन और मृत्यु, दोनों में हम एक साथ हैं. भारत में हमारे निवास ने हम दोनों का खून बदल डाला है, हमारे शरीर के रंग एक हो चुके हैं, हमारे हुलिए समान हो चुके हैं. मुसलमानों ने अनेक हिन्दू रिवाजों को अपना लिया है तथा हिन्दुओं ने मुसलमानों के आचार-विचार की बहुत-सी बातें ले ली है. हम इस कदर एक हो चुके हैं कि हमने एक नई भाषा उर्दू को विकसित किया है, जो न हमारी भाषा है और न हिन्दुओं की. इसलिए हम अपने जीवन के 30 पक्षों को छोड़ दे जो ईश्वर से सम्बन्धित है, तो निःसन्देह इस आधार पर कि हम दोनों एक ही देश में रहते हैं, हम राष्ट्र है तथा देश को तथा हम दोनों की प्रगति और कल्याण हमारी एकता, पारस्परिक, सहानुभूति और प्रेम निर्भर है, जबकि हमारे पारस्परिक मतभेद, अकड़, विरोध तथा दुर्भावना निश्चित ही हमें नष्ट कर देगी. –सैयद अहमद खान

55. जब तक लाखों-लाख लोग भूख तथा अज्ञान से ग्रस्त हैं मैं हर उस व्यक्ति को देशद्रोही कहूँगा जो उसके खर्च पर शिक्षा पाकर भी उन पर कोई ध्यान नहीं देता.

–स्वामी विवेकानन्द

56. क्या आप एक ही देश में नहीं रहते ? क्या आप एक ही धरती पर जलाए और दफनाए नहीं जाते ? क्या आप एक ही जमीन पर नहीं चलते या एक ही धरती नहीं रहते ? याद रखिए हिन्दू और मुसलमान शब्द केवल धार्मिक अन्तर के लिए है. —सर सैयद अहमद खान

57. दुनिया में अगर कोई पाप है, तो वह निर्बलता है. निर्बलता का त्याग करो; निर्बलता पाप है मृत्यु है.

—स्वामी विवेकानन्द

58. होमरूल मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा. —बाल गंगाधर तिलक

59. वह समय आ गया है जब सम्मान के प्रतीक अपमान अपने बेमेल सन्दर्भ में हमारी शर्म को उजागर करते हैं और मैं जहाँ तक मेरा सवाल है. सभी विशिष्ट उपाधियों से रहित होकर अपने उन देशवासियों के साथ खड़ा होना चाहता हूँ, जो अपनी तथाकथित क्षुद्रता के कारण मानव जीवन के अयोग्य अपमान को सहने के लिए बाध्य हो सकते हैं.

—रवीन्द्रनाथ टैगोर (नाइट की उपाधि लौटाते हुए)

60. जिस समय जनता का उत्साह अपनी चरम सीमा को छूने वाला था, उस समय पीछे हट जाने का आदेश देना राष्ट्रीय अनर्थ से कम नहीं था. महात्माजी के प्रमुख सहयोगी देश बंधु दास, पण्डित मोतीलाल नेहरू और लाला लाजपत राय, जो सब जेलों में थे, भी इस सामूहिक खिन्नता में भागीदार थे. मैं उस समय देशबन्धु के साथ था और मैंने देखा कि जिस तरह महात्मा गांधी बार-बार गोल-माल कर रहे थे. उस पर वे क्रोध और दुःख से आपे से बाहर हो रहे थे.

—सुभाषचन्द्र बोस ('द' इण्डियन स्ट्रगल)

61. मैं एक ही ईश्वर को मानता हूँ जो सभी आत्माओं की एक आत्मा है और सबसे ऊपर है. मेरा ईश्वर दुःखी मानव है; मेरा ईश्वर पीड़ित मानव है; मेरा ईश्वर हर जाति का निर्धन मनुष्य है. —स्वामी विवेकानन्द

62. हमारा संघर्ष वास्तव में स्वाधीनता के एक और बड़े संघर्ष का भाग था और जो शक्तियाँ हमें प्रेरित कर रही थीं, वे पूरी दुनिया में लाखों दूसरे लोगों को भी प्रेरित कर रही तथा कर्मक्षेत्र में ला रही थी. संकट की स्थिति में पूँजीवाद ने फासीवाद का रूप लिया. पराधीन औपनिवेशिक देशों में साम्राज्यवाद जो कुछ बहुत पहले से रहा है, स्वयं को जन्म देने वाले कुछ देशों में ही पूँजीवाद ने भी वैसा ही रूप धारण कर लिया. फासीवाद और साम्राज्यवाद इस तरह पतनशील पूँजीवाद के दो रूप बनकर सामने आए. पश्चिम में समाजवाद ने तथा पूर्वी तथा अन्य पराधीन देशों में उदीयमान राष्ट्रवाद ने फासीवाद और साम्राज्यवाद के इस गठजोड़ का विरोध किया. —जवाहरलाल नेहरू

63. "भाग्य का चक्र किसी न किसी दिन अंग्रेज जाति को बाध्य करेगा कि वह अपने भारतीय साम्राज्य से हाथ धो ले. लेकिन वे अपने पीछे किस तरह का भारत, कितनी बुरी बदहाली छोड़ जाएँगे ? जब उनके सदियों पुराने प्रशासन का सोता अंततः सूखेगा तब कितना कूड़ा-करकट और कीचड़ वे अपने पीछे छोड़ जाएँगे."

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

64. "मैं जो कार्य कर रहा हूँ वह भारत पर एक अंग्रेजी व्यवस्था लादने का नहीं है, बल्कि पुरानी देशी-व्यवस्था को पुनर्जीवित एवं विस्तृत करने का है; प्राचीन ग्राम्य-व्यवस्था के जो अवशेष हैं उनका पूर्ण उपयोग करते हुए प्राचीन आधारशिला पर स्थानीय शासन की इमारत खड़ी करनी है." —लॉर्ड रिपन

65. "हममें से अधिकतर अभी न वेदांती हैं, न पुराणपंथी और न तांत्रिक है. हम केवल 'छुओ नहीं' वाले हैं. हमारा धर्म रसोईघर में है. हमारा ईश्वर खाना पकाने के बर्तन में है और हमारा धर्म 'मुझे छुओ मत' मैं पवित्र हूँ. अगर यह एक शताब्दी तक और चलता रहा तो हम सब पागलखाने में होंगे." —स्वामी विवेकानन्द

66. "मैं लैंडहोल्डर्स सोसायटी को इस देश में 'स्वतन्त्रता का अग्रदूत' समझता हूँ. इसने लोगों को अपने-अपने अधिकारों के लिए वैधानिक तरीके से लड़ने की कला का पहला पाठ पढ़ाया और उन्हें सिखाया कि इस प्रकार पुरुषार्थ के साथ अपने दावों के लिए दृढ़ता से आवाज उठानी चाहिए और अपना मत प्रकट करना चाहिए."

—डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र

67. "यदि पचास शिक्षित नवयुवक ही स्वार्थ त्यागकर देश की स्वतन्त्रता के लिए संगठित होकर प्रयत्न करें, तो आगे का कार्य सरल हो सकता है." —ए. ओ. ह्यूम

68. "अपनी शिकायतों का निवारण कराने तथा रियायतें पाने के लिए उन्होंने 20 साल से अधिक समय तक कमोवेश जो निरर्थक आन्दोलन चलाया. उसमें उन्हें रोटियों के बजाय पत्थर मिले." —लाला लाजपत राय

69. "कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही हैं. भारत में रहते हुए मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा यह है कि मैं उसे शान्तिपूर्वक मरने में मदद दे सकूँ." —लॉर्ड कर्जन

70. "भारत स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहता है, तो उसको भिक्षावृत्ति का परित्याग कर स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा." –लाला लाजपत राय

71. आवश्यकता है वीर सिपाहियों की. वेतन : मृत्यु. पुरस्कार : शहादत. पेंशन : स्वतन्त्रता. युद्ध स्थल : भारत. –'गदर' में प्रकाशित एक विज्ञापन

72. "भारत का पुरुषत्व साम्राज्य की रक्षा में अपना सबसे अच्छा खून बहा है. हमारी वफादारी के इजहार हमारे अपने देशवासियों के खून से मूर्तिवान और पवित्र हो गए हैं. मुझे यह कहने की इजाजत दीजिए कि अगर दुर्भाग्यपूर्ण युद्ध लंबा हुआ और इंगलैण्ड हमसे धन-जन की मदद की माँग करेगा, तो हमारे पास का आखिरी पैसा, हमारी धमनियों में प्रवाहित होने वाले खून की आखिरी बूँद साम्राज्य की सेना में चढ़ा दी जायेगी."

–सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

73. "कौम चुपचाप देखती नहीं रह सकती जब उसकी तकदीर का फैसला होने जा रहा है. हिन्दुस्तान ने जम्हूरी मुल्कों के साथ हाथ मिलाने की कोशिश की थी, लेकिन ब्रिटिश हुकूमत ने वाइज्जत हाथ मिलाना भी नामुमकिन बना दिया. ....अँग्रेज अगर चाहें तो हिन्दुस्तान छोड़कर चले जा सकते हैं. जैसे वे सिंगापुर, मलाया और बर्मा छोड़कर चले आए हैं, लेकिन हिन्दुस्तानी इसे छोड़कर नहीं जा सकते, क्योंकि उनका मुल्क है, घर है. इसलिए उन्हें ऐसी ताकत पैदा करनी होगी जो ब्रिटिश बेड़ी को उतार फेंके और किसी भी नए हमलावर के किसी भी हमले को रोक सके."

–मौलाना अबुल कलाम आजाद

74. "सन् बयालीस की क्रान्ति इस देश के इतिहास में उस समय तक वही स्थान रखती है जो फ्रांस या रूस की क्रान्तियों का अपने-अपने देश में है. जिस पैमाने पर 1942 ई. की क्रान्ति हुई थी, वह इतिहास में अपना सानी नहीं रखती. इतने बड़े जनसमुदाय ने दूसरी किसी क्रान्ति में भाग नहीं लिया था. सन् 1942 ने देश की कायापलट कर दी, एक नए भारत का निर्माण किया. उसकी राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की. ....बयालीस में लड़ाई ने जनक्रान्ति का रूप लिया. ....अंग्रेजी राज्य का किला, जो अब तक इतना सुदृढ़ और दुर्भेद्य दीख रहा था, अकस्मात् टूटने लगा. कहीं दीवार टूटी तो कहीं कंगूरा, कहीं कुछ पाए तो कहीं मेहराब. जनता ने समझ लिया कि यह बालू की भीतों का बना हुआ किला है और उसने सीख लिया उन भीतों को ढाह देने का एक नया तरीका."

–श्री जयप्रकाश नारायण

75. "अस्थायी सरकार का काम होगा वह संघर्ष करना और चलाना जो भारत की भूमि से अंग्रेजों और उनके दोस्तों को निकाल बाहर करे. हम भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपने झंडे के गिर्द इकट्ठा होने और आक्रमण करने के लिए भारतीय जनता का आह्वान करते हैं. इस संघर्ष को शक्ति और धीरज तथा आखिरी जीत में पूरे विश्वास के साथ तब तक चलाने के लिए जब तक दुश्मन को हिन्दुस्तान की जमीन से निकाल नहीं दिया जाता और भयभीत जनता एक बार फिर आजाद कौम नहीं बन जाती." –सुभाषचन्द्र बोस

76. "मैं किसी चित्रकार की पेंटिंग को देखकर यह बता सकता हूँ कि किस चित्रकार ने पेंटिंग का कौनसा भाग बनाया है." –जहाँगीर

77. "मैं उन लोगों से नफरत करता हूँ, जो चित्रकारी से घृणा करते हैं." –अकबर

78. सम्राट् स्वयं सुन्दर भवनों की योजना बनाकर अपने मस्तिष्क एवं हृदय के विचारों को पाषाण एवं मिट्टी के आवरण से सुसज्जित करता था. –अबुल फजल

79. "मुगल काल में समस्त भूमि का स्वामी राजा होता था."

–फ्रांसीसी चिकित्सक बर्नियर

80. मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि "इन लोगों से अच्छा व्यवहार तभी किया जा सकता है जब एक हाथ में तलवार तथा एक में कलम हो." –सर टॉमस रो

81. "अंग्रेजों को उसी धरातल पर अपने को आधारित रखना चाहिये जिससे हमने आरम्भ किया तथा जिस पर हम टिके हुए हैं यानी भय." –सर टॉमस रो

82. "समय की माँग है कि आप अपने वाणिज्य का प्रबन्ध अपने हाथों में तलवार लेकर करें."

–बम्बई के गवर्नर जेराल्ड आन्जियर

83. "यह मराठों का अन्तिम पूर्ण प्रशासक था. यह कथन नाना फड़नवीस के विषय में कहा गया है."

–कर्नल पामर (M.P. P.S.C., 1996)

84. "दो मोती विलीन हो गये, बाइस सोने के मुहरें लुप्त हो गयीं और चाँदी एवं ताँबे की तो पूरी गणना ही नहीं की जा सकती है."

–पेशवा के पराभव का कूट सन्देश
(M.P. P.S.C., 1997)

85. "राजकीय मुकट का प्रत्येक मोती गरीब किसान की अश्रुपूरित आँखों से गिरी रक्त की घनीभूत बूँद है."

–अमीर खुसरो

86. "इस्लाम की राजधानी (बगदाद) से भेजे वस्त्र आभूषण उपहार को सुल्तान, उसके पुत्र, अमीरों ने धारण किया."
–फिरोज तुगलक (M.P. P.S.C., 1992, 1993)

87. "राजा देवत्व का अंश होता है उसकी समानता कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता."
–बलबन (अपने पुत्र बुगरा खाँ के लिए) (M.P. P.S.C., 1993)

88. "सर्वशक्तिमान ईश्वर या अल्लाह जब अपने सेवकों की आजीविका वृद्धावस्था में 'वापस नहीं लेता' तो खुदा का बन्दा होने के नाते भला मैं अपने वृद्ध सैनिक को कैसे पदच्युत कर सकता हूँ."
–फिरोज तुगलक (M.P. P.S.C., 1993)

89. "पाहन पूजै हरि मिले तो मैं पूजू पहार."
–कबीर (I.A.S. Pre., 1994)

90. "हनूज दिल्ली दूर अस्त" (दिल्ली अभी दूर है.)
–निजामुद्दीन औलिया (M.P. P.S.C., 1996)

91. "अपनी प्रजा की सुरक्षा तथा कल्याण के उद्देश्य को सदैव आगे रखें तभी देश के लोग राजा के कल्याण की कामना करेंगे और राजा का कल्याण तभी होगा जब देश प्रगतिशील और समृद्धिशील होगा."
–राजा कृष्ण देवराय (आयुक्त माल्यद से)

92. "राजदरबार में स्त्री क्लर्कों, स्त्री अंगरक्षकों के अलावा स्त्री पहलवान, स्त्री ज्योतिषी, स्त्री भविष्यवक्ता भी थी."
–नूनिज (विजयनगर साम्राज्य के लिए)

93. "जब भी मैं किसी नीच कुल में उत्पन्न हेय व्यक्ति को देखता हूँ, तो मेरी आँखों से अंगारे फूटने लगते हैं और क्रोध से मेरा हाथ (उसको मारने के लिए) मेरी तलवार पर चला जाता है."
–बलबन

94. "कुछ हिन्दू जानते हैं कि इस्लाम एक सच्चा धर्म है, लेकिन वे इस्लाम को कबूल नहीं करते."
–सूफी संत निजामुद्दीन औलिया

95. "इस नगर की परिधि साठ मील है. इसकी दीवारें पहाड़ों तक चली गई हैं और इन पहाड़ों की तराई में पहुँचकर उन्होंने घाटियों के गिर्द घेरा बना दिया है. इस नगर में शस्त्र धारण करने योग्य नब्बे हजार लोगों के होने का अनुमान है. उनका राजा भारत के अन्य सभी राजाओं से अधिक शक्तिशाली है."
–इतालवी यात्री निकोलो कोंती (विजय नगर साम्राज्य के लिए)

96. "प्रारम्भिक वैदिक आर्य समुद्री व्यापार नहीं करते थे."
–डॉ. ए. एल. बाशम

97. "राजी इतनी आजादी देता है कि कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार आ-जा सकता है और अपने धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकता है. उसे इसके लिए किसी भी प्रकार की नाराजगी नहीं झेलनी पड़ती है और न उसके बारे में यह जानकारी हासिल करने की कोशिश की जाती है कि वह ईसाई है या यहूदी मूर है अथवा नास्तिक."
–बारबोसा

98. "जमीन आबादी से भरी हुई है, जो लोग गाँव में रहते हैं वे बहुत दयनीय अवस्था में हैं, जबकि सरदार लोग खूब समृद्ध हैं और विलासिता का जीवन बिताते हैं."
–सोहलवीं सदी का यात्री निकितिन

99. "पूर्ववर्ती सुल्तानों में से कईयों ने भूमि पर शासन किया, लेकिन समुद्र पर किसी ने नहीं. समुद्री लड़ाई में काफिर हमसे आगे हैं. हमें उन्हें मात देनी है."
–महाप्रतापी सुल्तान सुलेमान

100. "धर्म और अधर्म, दोनों उसी (ईश्वर) की ओर भागे जा रहे हैं और (एक साथ) घोषणा कर रहे हैं–वह (ईश्वर) एक है और उसके राज्य में कोई हिस्सेदार नहीं है."
–फारसी कवि सनाई

101. "अलग-अलग व्यक्तियों ने आक्रोश भरी चुनौती के रूप में, जो कार्यवाही शुरू की, वह बढ़कर एक आन्दोलन में बदल गई और फिर आन्दोलन ने एक विद्रोह का रूप ले लिया.'' सरकार ने अपना गुस्सा दिखाया और आतंक तथा जोर-जुल्म की बागडोर ढीली कर दी गई. ....देश एक पुलिस राज्य में बदल गया. ....पुलिस और सेना की गोलियों से 10 हजार से अधिक लोगों को मार डालने के बाद देश में 1857 ई. के बाद इतना भयंकर और देशव्यापी दमन नहीं हुआ था."
–इतिहासकार विपिनचन्द्र, अमलेश त्रिपाठी और वरुण दे

102. "हुमायूँ जीवन भर ठोकरें खाता रहा और ठोकर खाकर ही संसार से विदा हुआ."
–लेन पूल

103. "मैंने भारत की प्रशंसा दो कारणों से की है. एक तो यह है कि हिन्दुस्तान मेरी जन्मभूमि और हम सबका वतन है. वतन से प्यार करना एक अहम फर्ज है. ....हिन्दुस्तान स्वर्ग के समान है. इसकी आबोहवा खुरासान से बेहतर है. ....यह हरा-भरा है और

साल भर फूलों से लदा रहता है. ·········· यहाँ के ब्राह्मण अरस्तू जैसे ज्ञानी हैं और विभिन्न क्षेत्रों में बहुत सारे विद्वान हैं."

–फारसी लेखक अमीर खुसरो

104. "कोई जर्जर बूढ़ी औरत भी अपने सिर पर सोने से भरी टोकरी रखकर यात्रा पर निकल जाती थी, तो शेरशाह द्वारा दी जाने वाली सजा के भय से कोई भी चोर-डाकू उसके पास फटकने की हिम्मत नहीं कर सकता था." –अब्बास शेरवानी

105. "ऐ मुल्लाओ, मेरा एकमात्र लक्ष्य सत्य का अनुसंधान करना है, सच्चे धर्म के सिद्धान्तों का पता लगाना और उन्हें उद्घाटित करना है." –अकबर

106. "शहंशाह पर जो विभिन्न प्रभाव पड़े उनके फलस्वरूप उसके मन में धीरे-धीरे किसी पत्थर की बाहरी रेखाओं की तरह यह विश्वास जगा कि सभी धर्मों में कुछ न कुछ विवेकी लोग हैं. इसलिए यदि कुछ-न-कुछ सच्चा ज्ञान सर्वत्र विद्यमान है, तो सत्य को एक ही धर्म तक क्यों सीमित होना चाहिए ?" –बदायूँनी

107. "उसमें पचास मैदानी तोप शामिल थीं. सबकी सब पीतल की बनी हुई थीं. हर तोप एक सुगढ़ और भली-भाँति रंगी-पुती गाड़ी पर रखी होती थीं. जिसे दो बहुत अच्छे घोड़े खींचते थे और एक तीसरा घोड़ा वक्त जरूरत काम आने के लिए साथ रखा जाता था."

–फ्रांसीसी यात्री वर्नियर

108. "सर्दी के मौसम में, जो हमारा मई है, लोग रूई भरे अंगरखे और टोपियाँ पहनते हैं." –रैल्फ फिच

109. "यदि संस्कृत की रचना ईश्वर ने की तो क्या प्राकृत को चारों ओर बदमाशों ने जन्म दिया ? इन झूठे अहंकारों को अलग ही रखिए. ईश्वर किसी भाषा के साथ पक्षपात नहीं करता. उसके लिए तो प्राकृत और संस्कृत समान हैं. मेरी भाषा मराठी में उदात्तम भावनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता है और वह समृद्ध एवं दिव्य ज्ञान के फलों से लदी हुई है." –एकनाथ स्वामी

110. "पुराने मन्दिर को नहीं तोड़ना चाहिए, लेकिन कोई नया मन्दिर नहीं बनने देना चाहिए." –औरंगजेब

111. "धर्म के मामलों से सांसारिक मामलों का क्या दखल है ? और धर्म के मामलों में धर्मांधता के लिए कहाँ जगह है ? आपके लिए आपका धर्म है और मेरे लिए मेरा. यदि आपका सुझाया हुआ यह नियम स्थापित हो जाए तो मेरा कर्त्तव्य सभी (हिन्दू) राजाओं और उनके समर्थकों को खत्म कर देना हो जाएगा." –औरंगजेब

112. "विधाता ने इंगलैण्ड को भारत का विस्तृत साम्राज्य इसलिए सौंपा है जिससे क्राइस्ट का झण्डा भारत में लहरा सके." –ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अध्यक्ष मेंगल्स

113. "स्वतन्त्रता के बाद मैं देशी राजाओं के एक संघ को शासन सत्ता सौंपने को तैयार हूँ यदि वे आजादी की लड़ाई में पूरा सहयोग दें."

–बहादुर शाह जफर (राजपूत नरेशों को लिखे पत्र में)

114. "हरएक हिन्दुस्तानी जो अंग्रेजों की तरफ से नहीं लड़ रहा था, हत्यारा माना गया. दिल्ली के रहने वालों को कत्लेआम का हुक्म दे दिया गया. ··········लूटमार की एक हफ्ते के लिए इजाजत मिली जो एक माह तक चली. इसके साथ कत्ले-आम भी जारी रहा. ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के पुराने कागजों में गवर्नर जनरल की यह रिपोर्ट दर्ज है." गाँवों में आग लगाकर लोगों को मार डाला गया. फाँसी देने वाले दल जेलों में गये. कुछ तो शौकिया फाँसी देने वाले थे, जिन्होंने कलात्मक ढंग से लोगों को मारा."

–थॉमसन, गैरेट एवं मैलेसन द्वारा लिखितांश
(1857 की क्रान्ति के समय)

115. "अगर दुनिया में कोई पाप है, तो वह है दुर्बलता."

–स्वामी विवेकानन्द

116. "मेरी छाती पर एक-एक लाठी का प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत पर एक-एक कील सिद्ध होगी."

–लाला लाजपत राय

117. "मैं स्वतन्त्रता चाहता हूँ, पौ फटने के पहले. मैं आपको एक मंत्र दे रहा हूँ, करो या मरो."

–महात्मा गांधी (8 अगस्त, 1942 को
कांग्रेस प्रतिनिधियों के समक्ष)

118. दया नहीं बल्कि सेवा, मानव सेवा ईश्वर तुल्य समझी जानी चाहिए. –रामकृष्ण परमहंस

119. सफलता ने उसका लम्बे समय तक साथ न दिया, भाग्य उसका ढुलमुल रहा तथा उस भाग्य ने उसे नष्ट करने के लिए अपनी कटार निकाल ली.

–जियाउद्दीन बर्नी (अलाउद्दीन खिलजी के लिए)

120. सान्ड्रोकॉट्स ने अपने भाषण के साहस से सिकन्दर को क्रुद्ध किया एवं उसकी हत्या का आदेश दे दिया.

–जस्टिन

121. भारतवर्ष में इतिहास रचना कभी भी महाकाव्यों की एक शाखा से अधिक नहीं रही, क्योंकि भारतीयों की इतिहास पद्धति इतिहास और पुराण तथा जनश्रुति अथवा

लोकमान्यताओं में सुस्पष्ट भेद स्थापित करने की नहीं रही. —डॉ. विन्टर्निट्ज

122. "हिन्दू घटनाओं के ऐतिहासिक क्रम की तरफ ध्यान नहीं देते, घटनाओं के कालक्रमानुसार वर्णन में वे बड़ी असावधानी दिखाते हैं. जब उनसे जानकारी प्रदान करने के लिए आग्रह किया जाता है, तो वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर कहानियाँ सुनाने लगते हैं." —अलबेरूनी

123. "भारतीय संस्कृति की कहानी एकता और समाधानों का समन्वय है तथा प्राचीन परम्पराओं और नवीन मतों के पूर्ण संयोग की कहानी है." —हुमायूँ कबीर

124. "हिन्दू के लिए भारतवर्ष न केवल एक सत्ता से शासित होने वाली इकाई है, बल्कि वह उसकी आध्यात्म संस्कृति का मूर्तरूप अथवा मातृदेवी है. उसके लिए भारतवर्ष उसकी संस्कृति का मूर्तमान रूप है, जिसमें उसने आत्मा को ऊँड़ेल दिया है."

—जे. रेम्जे मेकडानल्ड (इंगलैण्ड के भूतपूर्व प्रधानमंत्री)

125. "यद्यपि भारत में पाँच से अधिक बोलियाँ हैं, लेकिन इस देश की आध्यात्मिक-धार्मिक भाषा एक है और वह संस्कृत है." —मोनियर विलियम्स

126. "मेरे विचार में इससे अधिक श्रेष्ठ चित्र बनाना असम्भव है. भावनाओं की ऐसी अभिव्यक्ति पाश्चात्य कलाकार नहीं कर सकते." —फर्ग्युसन

127. "मालवा और गुजरात के सूबे, जो हुमायूँ के शेष साम्राज्य के बराबर थे, एक पके फल की तरह हुमायूँ के हाथों से गिर गए." —लेनपूल

128. "एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैं हिन्दुस्तान के साम्राज्य को लगभग खो चुका था." —शेरशाह सूरी

129. "मैं अपने पुत्र के जन्म के अवसर पर आप लोगों को यही भेंट दे सकता हूँ. मेरी कामना है कि कस्तूरी की सुगन्ध जिस तरह इस खेमे में फैल रही है, उसी तरह एक दिन मेरे पुत्र की कीर्ति की सुगन्ध भी पूरे संसार में फैले." —हुमायूँ (अकबर के जन्म के अवसर पर)

130. "वह मनुष्यों का जन्मजात बादशाह था. इतिहास के सर्वाधिक शक्तिशाली बादशाहों में से एक होने का उसका न्यायपूर्ण अधिकार है. निःसन्देह उसके इस अधिकार का आधार उसके प्रकृति प्रदत्त असाधारणगुण, उसके मौलिक विचार और उसकी अद्वितीय सफलताएँ थीं." —डॉ. वी. ए. स्मिथ (अकबर के लिए)

131. "वह कोमलता और निष्ठुरता, न्याय और बुद्धि की चंचलता, सुसभ्यता और पशुता, बुद्धिमत्ता और लड़कपन का अजीब मिश्रण था."

—डॉ. वी. ए. स्मिथ (जहाँगीर के लिए)

132. "राजत्व ईश्वर से निकला हुआ प्रकाश है तथा विश्व को आलोकित करने वाली सूर्य की किरण है."

—अबुल फजल

133. "जब तक मैं मेवाड़ से अतिक्रमणकारियों को निकाल बाहर नहीं कर दूँगा तब तक चैन से नहीं सोऊँगा. राज्य के सब सुख वैभव का उपयोग नहीं करूँगा और भारतीय स्वतन्त्रता और संस्कृति की रक्षा के लिए आक्रमणकारियों, अतिक्रमणकारियों और आतताइयों के विरुद्ध संघर्ष करता रहूँगा." —महाराणा प्रताप

134. "मुल्क के अन्दर योरोपी कौम पर नजर रखना. यदि खुदा मेरी उम्र बढ़ा देता तो मैं तुम्हें इस डर से आजाद कर देता. अब, मेरे बेटे ! यह काम तुम्हें करना होगा. तैलंग देश में उनकी लड़ाइयों और उनकी कूटनीति की तरफ से तुम्हें होशियार रहना चाहिए. इन तीनों कौमों (अंग्रेज, फ्रांसीसी और पुर्तगाली) को एक साथ निर्बल करने का ख्याल मत रखना. अंग्रेजों की ताकत बढ़ गई है. पहले उन्हें समाप्त करना. जब तुम अंग्रेजों को समाप्त कर लोगे तब बाकी दोनों कौमें तुम्हें अधिक कष्ट नहीं देंगी. मेरे बेटे ! उन्हें किले बनाने या सेना रखने की आज्ञा मत देना. यदि तुमने यह गलती की तो यह देश तुम्हारे हाथ से निकल जाएगा."

—अलीवर्दी खाँ ने सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी बनाते हुए

135. इतिहास में यह लिखा हुआ है कि सिख सेना ने हम पर आक्रमण करने के लिए अंग्रेजी सीमाओं में प्रवेश किया, परन्तु अधिकांश लोगों को जानकर विस्मय होगा कि वे नदी पार करके केवल अपनी सीमा में आए थे."

—कैम्पबैल

136. "यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारी शिक्षा योजना (पाश्चात्य शिक्षा) पर भारत में कार्य किया जाए, तो तीस वर्ष के बाद बंगाल के संभ्रान्त वर्ग में एक भी मूर्ति पूजक नहीं बचेगा." —लॉर्ड मैकाले

137. "धर्म मनुष्य के भीतर निहित देवत्व का विकास है. धर्म न तो पुस्तकों में है और न धार्मिक सिद्धान्तों में. वह तो केवल अनुभूति में निवास करता है. वह जीवन का अत्यन्त स्वाभाविक तत्व है." —स्वामी विवेकानन्द

138. धर्मों की इस संसद में सबसे महान् व्यक्ति विवेकानन्द हैं. उनका भाषण सुन लेने पर अनायास यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि ऐसे ज्ञानी देश (भारत) को सुधारने के लिए धर्म प्रचारक भेजना कितनी मूर्खता की बात है."

—न्यूयार्क के समाचार पत्र में प्रकाशित

139. "यदि पूर्व निश्चय के अनुसार एक साथ, एक ही तारीख को समूचे भारत में स्वतन्त्रता संघर्ष शुरू होता, तो

भारत में एक भी अंग्रेज जीवित नहीं बचता और भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो गया होता." –मैलीसन

140. "अल्लाह एक है तथा मुहम्मद उसका पैगम्बर है, का नारा लगाने वालो तथा ब्रह्म के रहस्यों को बुदबुदाने वालों (हिन्दुओं) ने एक-दूसरे के साथ मिलकर बगावत का झंडा बुलन्द किया." –टामसैला

141. "यदि आप लोग (विद्यार्थी), जो देश की आशाओं के केन्द्र हैं तथा उच्च शिक्षा प्राप्त किए हैं, अपने सुख-चैन तथा स्वार्थ को त्यागकर स्वाधीनता प्राप्त करने में नहीं लग सकते, तब कहना होगा कि उन्नति की सब आशाएँ व्यर्थ हैं तथा भारत उसी प्रकार के शासन के योग्य है, जो उसे मिला हुआ है. आपके कंधों पर रखा जुआ तब तक विद्यमान रहेगा जब तक आप इस ध्रुव सत्य को समझकर उसके अनुसार कार्य करने को उद्यत नहीं होंगे कि आत्मबलिदान तथा निःस्वार्थ कर्म ही स्थाई सुख एवं स्वतन्त्रता के अचूक पथ प्रदर्शक हैं." –ए. ओ. ह्यूम

142. मैंने बहुत प्रतीक्षा की कि अहिंसा की शक्ति पैदा करके विदेशी शासन हटाया जाए; परन्तु अब मेरा विचार बदल गया है; मैं सोचता हूँ कि अब और प्रतीक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि और प्रतीक्षा का अर्थ होगा विनाश की प्रतीक्षा. इसलिए मैंने फैसला किया है कि कुछ खतरों पर भी लोग दासता का विरोध करें." –महात्मा गांधी

143. "ईश्वर के नाम पर मैं यह पवित्र शपथ लेता हूं कि मैं भारत और उसके अड़तीस करोड़ लोगों को स्वतंत्र कराऊँगा और इस पवित्र युद्ध को अपने जीवन की अन्तिम साँस तक जारी रखूँगा." –नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

144. "आज हमें पाकिस्तान और आत्महत्या में से एक को चुनना होगा." –पंडित गोविन्द वल्लभ पंत

145. "हमारी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूँगा." –नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

146. "कांग्रेसी नेताओं के समक्ष सत्ता के प्रति आकर्षण भी था. इन नेताओं ने अपने राजनैतिक जीवन का अधिकतर भाग अंग्रेजी सत्ता का विरोध करने में ही बिताया था और अब वे स्वाभाविक रूप से सत्ता के प्रति आकर्षित हो रहे थे. कांग्रेसी नेता सत्ता का स्वाद चख चुके थे और विजय की घड़ी में वे इससे अलग होने की इच्छा नहीं रखते थे." –माइकेल ब्रेचर (भारत विभाजन के समय)

147. "यदि जिन्ना की अपनी उस बीमारी के कारण दो वर्ष पहले मृत्यु हो गई होती, तो हम अपने देश को एक बनाए रखने में पूरी तरह सफल रहते; वही एक अकेला व्यक्ति था, जिसके भारत के अखण्ड और एक बने रहने की स्थिति को असम्भव बना दिया. यह मुहम्मद अली जिन्ना का बनावटी इस्लामाबाद और हुकूमत की तीव्र लालसा ही थी जिसके आगे झुककर भारत के सभी नेताओं एवं जनता को भारत का विभाजन स्वीकार करना पड़ा. जिन्ना ने ही पाकिस्तान की बात छेड़ी थी, उसे उछाला था और मुसलमानों की भावना को दूषित कर पाकिस्तान बनाए जाने के लिए उन्हें भड़काया था. अन्यथा भारत का सामान्य मुसलमान कभी भी भारत के दो टुकड़े हों, ऐसा नहीं चाहता था." –लॉरी कालिन्स (पुस्तक माउन्टबेटन एण्ड पार्टीशन ऑफ इण्डिया में)

148. "मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है. ....अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी, सब मेरे भाई हैं. भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत के देव-देवियाँ मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरा बचपन का झूला, मेरी जवानी की फुलवारी, मेरा पवित्र स्वर्ग और बुढ़ापे की काशी है. भारत की मिट्टी मेरा सर्वोच्च स्वर्ग है. भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है." –स्वामी विवेकानन्द

149. "जिस तरह नेपोलियन प्रथम का स्पेन के विरुद्ध अभियान उसके लिए एक बहता हुआ नासूर सिद्ध हुआ, उसी तरह औरंगजेब का दक्षिण अभियान उसके साम्राज्य के लिए विनाशकारी बना." –जे. एन. सरकार

150. "अपने असीम साधनों और अपनी अतिशय शासन निपुणता के बावजूद अकबर महाराणा प्रताप को न दबा सका. आल्पस पर्वत के समान अरावली में भी कोई भी ऐसी घाटी नहीं है, जो राणा प्रताप के किसी न किसी वीर कार्य, उज्ज्वल विजय अथवा उससे अधिक यशपूर्ण पराजय से पवित्र न हुई हो. हल्दीघाटी मेवाड़ की थर्मोपली और दिवेर मेवाड़ का मेराथन है."[1] –कर्नल टॉड

151. "आगरा और फतेहपुर सीकरी दोनों ही लन्दन से बड़े हैं." –राल्फ पिच (I.A.S. Pre., 1998)

152. "किसी को भी अपनी जाति से बाहर विवाह करने एक व्यवसाय या व्यापार से दूसरे में परिवर्तन करने अथवा एक से अधिक कारोबार करने की अनुमति नहीं थी." –मेगस्थनीज (I.A.S. Pre., 1996)

1 क्रान्तिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस : बचनेश त्रिपाठी

153. "गांधीजी के जितने भी मूल विचार थे, वे गलत, ऊल-जलूल और अव्यावहारिक थे. स्वतन्त्र भारत ने उन्हें तिलांजलि दे दी, यह बहुत अच्छा हुआ."।

–मन्मथनाथ गुप्त (काकोरी केस)

154. "उच्च संस्कृति की महान् जनशक्ति के प्रदेश के निवासियों ! आप धन्य हैं. जब मैंने आपमें देशभक्ति का उत्साह पाया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई. आपके नेताजी का स्थान मेरे से बड़ा है. मैं तो केवल आठ करोड़ जर्मनों का नेता हूँ. मेरे जर्मन सैनिक नेताजी को प्रणाम करते हैं. मुझे पूर्ण विश्वास है कि नेताजी के नेतृत्व में आपका भारत शीघ्र ही स्वतन्त्र होगा."

–हिटलर (आजाद हिन्द फौज के जर्मनी में पहुँचने पर स्वागत वार्ता सुभाषचन्द्र बोस के लिए)

155. "क्रान्तिकारियों का फाँसी चढ़ जाना इस बात का सबूत है कि खुदगर्जी उनको इस रास्ते पर नहीं लाई. उनमें देश प्रेम था. वे देश में सच्ची स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहते थे. उन्होंने जो कुछ भी किया उसकी सारी जिम्मेदारी अंग्रेजी सल्तनत पर है."

–पं. मदनमोहन मालवीय

156. "मैं आप लोगों में से कुछ को महान बनता हुआ देखना चाहता हूँ. आप अपने लिए नहीं, भारत माता को महान् बनाने के लिए महान् बनें. जिससे वह स्वाधीन देशों की पंक्ति में मस्तक ऊँचा करके खड़ी हो सके. जो निर्धन और निष्प्रन्न हैं, मैं चाहता हूँ कि उनकी निर्धनता और निष्प्रन्नता मातृभूमि की सेवा को समर्पित हो जाये. काम करो ! जिससे मातृभूमि समृद्ध हो सके, कष्ट झेलो ! जिससे मातृभूमि आनन्दित हो सके." –महर्षि अरविन्द

157. "जिस प्रकार यूनानी लोगों का ध्येय अपने सम्पर्कों में आए हुए जंगली लोगों को सुसंस्कृत बनाना था, उसी प्रकार अंग्रेजों का ध्येय भारतीयों को सभ्य बनाना है."

–प्रो. ओटन

158. यदि कन्याकुमारी अहिंसा के सिद्धान्त का पालन नहीं कर पाती, तो हिमालय की गोद में बसे किसी गाँव को क्यों दण्डित किया जाए ?

–मोती लाल नेहरू (गांधीजी के विरोध में)

159. "मेरे खून की प्रत्येक बूँद भारत के प्रत्येक घर में आजादी के बीज बोए."

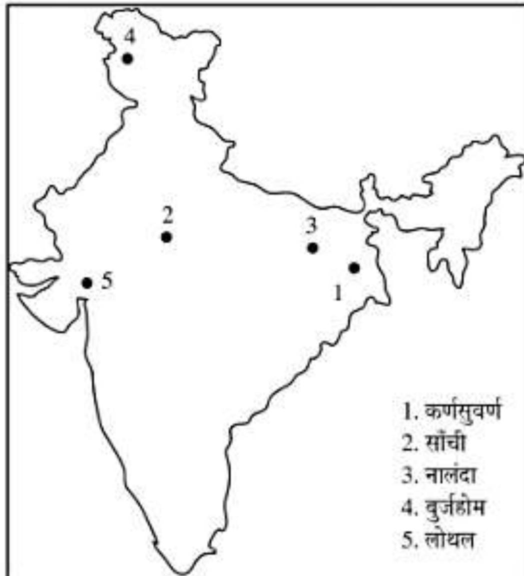
–गोपी मोहन साहा (फाँसी पर झूलते हुए)

11

मानचित्र अध्ययन

(Maps Study)

1. भारतीय ऐतिहासिक स्थल



(1) **कर्णसुवर्ण**—कर्णसुवर्ण वर्तमान में पश्चिमी बंगाल का मुर्शिदाबाद है. चीनी यात्री ह्वेनसांग ने कर्णसुवर्ण का अपने यात्रा वृत्तान्त में उल्लेख किया है. ह्वेनसांग के समय का यह अत्यन्त समृद्ध नगर गौड़ नरेश शशांक के शासनोपरान्त कामरूप के शासक भास्कर वर्मा द्वारा अपने राज्य में मिला लिया गया. पुनः सेनवंशीय राजाओं ने इसे गौड़ राज्य में मिलाया तथा कर्णसुवर्ण को गौड़ प्रदेश की राजधानी बनाया था.

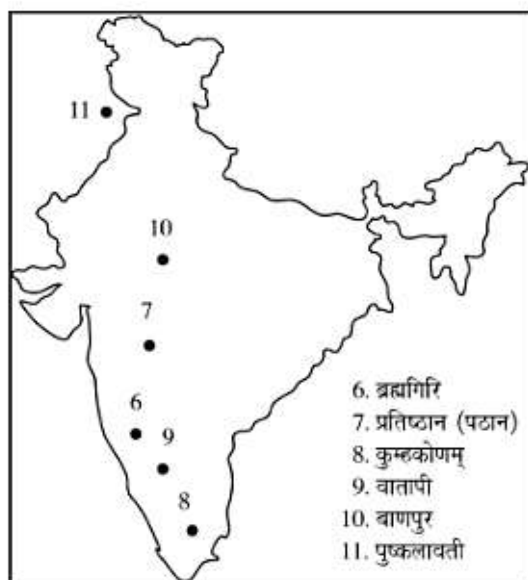
(2) **साँची**—साँची महत्वपूर्ण बौद्धस्थल है, जो वर्तमान में मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन जिले में अवस्थित क्षेत्र है. बौद्धों के तीर्थस्थल एवं स्तूपों के लिए विख्यात यह क्षेत्र पहाड़ी पर बसा हुआ है. यहाँ के एक विशाल स्तूप का निर्माण सम्राट अशोक ने कराया था.

(3) **नालंदा**—शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीनकाल से विख्यात रहा यह क्षेत्र वर्तमान में दक्षिण बिहार के राजगिरि के पास के क्षेत्रों में अवस्थित है. प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय इसी स्थल पर अवस्थित था. चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहाँ पर बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त की थी. बौद्ध भिक्षु शीलभद्र ह्वेनसांग के समय नालंदा विश्वविद्यालय का कुलपति था. मगध शासक की अनुमति से बालपुत्रदेव यहाँ पर पठन-पाठन के लिए आए विद्वानों के लिए एक विहार का निर्माण भी कराया था.

(4) **बुर्जहोम**—वर्तमान में यह स्थल बुर्जहोम के नाम से ज्ञात, जो जम्मू-कश्मीर राज्य में अवस्थित है. यह स्थल नवपाषाणकालीन स्थलों में से प्रमुख स्थल है. सन् 1935 में प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता पीटरसन एवं डी. टेरा ने उत्खनन कर यहाँ से मिट्टी के बर्तन, भेड़-बकरी आदि पशुओं की हड्डियाँ एवं नवपाषाणकालीन अन्य साक्ष्य प्राप्त किये थे. इस स्थल पर शवों के साथ कुत्तों के दफनाए जाने के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं.

(5) **लोथल**—लोथल सिन्धु सभ्यता का प्रमुख स्थल था, जो भोगवा नदी के किनारे वर्तमान गुजरात के अहमदाबाद जिले में अवस्थित है. यह सिन्धु-सभ्यता का प्रसिद्ध बन्दरगाह है. यहाँ पर एक गोदीवाडा (Dockyard), मुद्रा, जहाज का चित्र एवं अन्य सिन्धु सभ्यता के प्रमुख साक्ष्य प्राप्त हुए हैं. यहाँ पर चावल उत्खनन के दौरान प्राप्त हुए हैं.

(6) **ब्रह्मगिरि**—ब्रह्मगिरि वर्तमान में कर्नाटक के चित्तल दुर्ग जिले में अवस्थित है. यहाँ पर मौर्य सम्राट् अशोक का एक लघु शिलालेख प्राप्त हुआ है. अशोक के धर्म प्रचार के सम्बन्ध में इस शिलालेख में उल्लेख प्राप्त होता है. अशोक के दक्षिणी प्रान्त का केन्द्र सुवर्णगिरि था और वहाँ पर 'कुमार' प्रशासन को सँभालता था. इस तरह का वर्णन भी इस अभिलेख में प्राप्त होता है.



(7) **प्रतिष्टान**—पुराणों के अनुसार प्रतिष्ठान को ब्रह्माजी के द्वारा बसाया हुआ माना जाता है. वर्तमान में यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद से 35 किमी दूरी पर अवस्थित था. इसी नगर को विभिन्न विद्वानों ने 'प्लीयान' (एशियन ने), 'वैथन' (टॉलेमी ने), पैथान या पीथान (पेरीप्लस के अज्ञात लेखक ने) नाम से सम्बोधित किया है. यह सातवाहन शासक पुलुमावि की राजधानी, सातवाहनों का आदिस्थान माना जाता है. यहाँ पर से हाथीदाँत एवं शंख की वस्तुएँ, मिट्टी की मूर्तियाँ, भवनों के खण्डहर प्राप्त हुए हैं.

(8) **कुम्भकोणम्**—यह विख्यात प्राचीनकालीन शिक्षा केन्द्र के रूप में पहचाना जाता था. कुम्भकोणम् तमिलनाडु में कावेरी नदी के तट पर अवस्थित था. यहाँ पर सारंगपाणी (विष्णु के अवतार) के मन्दिर की नक्काशी विश्वविख्यात है. कुम्भ के आयोजन के लिए भी यह स्थल चर्चित है. रामास्वामी, कुम्भेश्वर एवं नागेश्वर के मन्दिर भी यहाँ की प्रसिद्धि का प्रमुख कारण है.

(9) **वातापी**—वातापी की स्थापना पुलकेशिन प्रथम ने की थी. यह नगर चालुक्य शासकों की राजधानी था. वर्तमान में वातापी कर्नाटक राज्य के बीजापुर जिले का 'बादामी' क्षेत्र है. यहाँ पर चार स्तम्भ युक्त बरामदे बने हुए हैं जिनमें तीन हिन्दुओं के एवं एक जैन धर्म का है. वैष्णव गुहा, विष्णु की अनन्तशायी एवं नृसिंह की मूर्तियों के लिए विख्यात है. गुफाओं की चित्रकारी के लिए भी यह स्थल प्रसिद्ध है. पुलकेशिन प्रथम के द्वारा निर्मित दुर्ग भी वातापी में ही स्थित है.

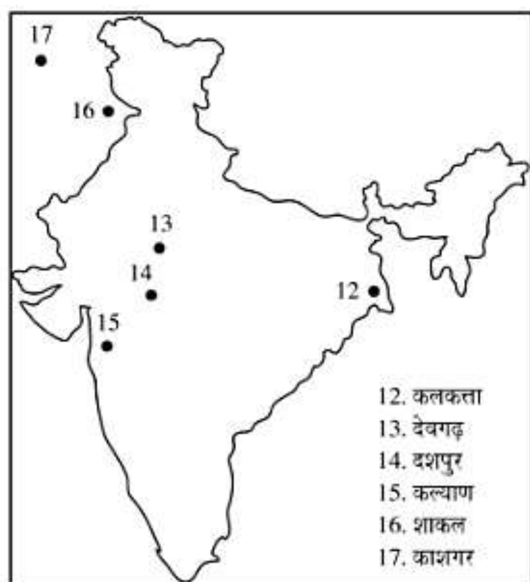
(10) **बाणपुर**—बाणपुर वर्तमान में राजस्थान के भरतपुर जिले का बयाना स्थल है. यहाँ पर उत्खनन से गुप्तकालीन मुद्राएँ प्राप्त हुई है. बाणपुर के पास खानवा के मैदान में बाबर और राणासांगा के मध्य खानवा का युद्ध यहीं पर हुआ था. मुगलकाल में यह भरतपुर के जाट राजाओं की रियासत भी रही थीं. करावली वंश के प्रथम शासक राजा विजयपाल ने बाणपुर में विजय मंदिर गढ़ बनवाया था.

(11) **पुष्कलावती**—पुष्कलावती वर्तमान में चारसड्डा नामक नगर है, जो पाकिस्तान में पेशावर से 17 मील की दूरी पर अवस्थित था. यूनानी सम्राट सिकन्दर के आक्रमण के समय यह नगर धर्म और कला का मुख्य केन्द्र था. ह्वेनसांग के समय यह प्रमुख बौद्ध धर्म का केन्द्र था. यहाँ पर बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए कई बौद्ध विहारों का निर्माण कराया था.

(12) **कलकत्ता**—भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं अंग्रेजों का प्रमुख व्यापारिक स्थल कलकत्ता था. बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में कलकत्ता क्रांतिकारियों की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था. सन् 1911 तक कलकत्ता ब्रिटिश शासन के अधीन भारत की राजधानी थी.

(13) **देवगढ़**—झाँसी के पास ललितपुर क्षेत्र में देवगढ़ एक छोटे से गाँव के रूप में आज अवस्थित है, किन्तु देवगढ़ भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्थल है. यहाँ पर गुप्तकाल में निर्मित दशावतार मन्दिर के अतिरिक्त अनेक मन्दिर एवं उनके अवशेष हैं. उल्लेखनीय है कि उत्तरी भारतीय स्थापत्य के नागर शैली के मन्दिरों में देवगढ़ का दशावतार मन्दिर प्रतिनिधि कलाकृति माना जाता है. यह विष्णु के दस अवतारों से सम्बन्धित है. विष्णु के अतिरिक्त यहाँ शिव, पार्वती, देवी तथा देवताओं की अनेक कलात्मक मूर्तियाँ पायी जाती हैं.

(14) **दशपुर**—मध्य प्रदेश राज्य का मंदसौर नगर प्राचीन समय में दशपुर के नाम से सम्बोधित किया गया है. शिवना नदी के तट पर स्थित इस नगर का उल्लेख कालिदास ने अपने साहित्य (मेघदूत) में किया है. मालवा क्षेत्र के दशपुर की एक विशिष्ट मालवी संस्कृति रही है. प्राचीनकाल में यहाँ एक उल्लेखनीय सूर्य-मन्दिर था. कुमारगुप्त के समय में दशपुर नगर वैभव एवं समृद्धि के लिए विख्यात था.



(15) **कल्याण**—भड़ौच के निकट स्थित कल्याण दक्षिण भारत का एक प्रमुख नगर है. यह प्राचीन भारत के प्रमुख व्यापारिक नगरों में से एक माना जाता है. यहाँ से एक व्यापारिक मार्ग वेंगी को कल्याण से जोड़ता था. उल्लेखनीय है कि कल्याण से विदेशी व्यापार वर्जित था. कल्याण शक शासक के अधीन रहा था. यह चालुक्यों के शासन में भी रहा था.

(16) **शाकल**—स्यालकोट नगर (वर्तमान में पाकिस्तान स्थित) का प्राचीन नाम शाकल्य एवं शाकल पाया जाता है. यह नगर प्राचीन भारत का प्रसिद्ध शिक्षा-केन्द्र था. यह मद्र देश की राजधानी भी थी. यहाँ बौद्ध साहित्य तथा दर्शन की शिक्षा दी जाती थी.

(17) **काशगर**—मध्य एशिया में स्थित काशगर नामक स्थान तुर्किस्तान में स्थित है. कनिष्क का शासन क्षेत्र काशगर तक फैला हुआ था. प्राचीन सभ्यता केन्द्रों में काशगर तथा खोतान की सभ्यताएँ उल्लेखनीय हैं. कनिष्क के शासनकाल में काशगर बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केन्द्र था. कनिष्क एकमात्र भारतीय राजा हुआ जिसने अपना राज्य मध्य एशिया के इन भागों तक फैलाने में सफलता प्राप्त की थी.

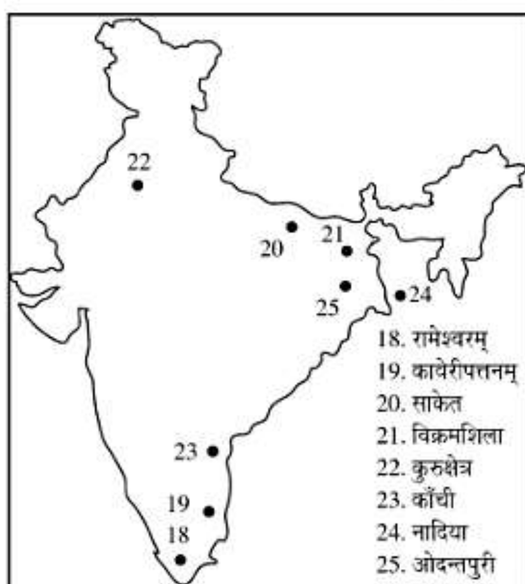
(18) **रामेश्वरम्**—भारत के दक्षिणी छोर में वर्तमान में तमिलनाडु राज्य के अन्तर्गत रामेश्वरम् आता है.

रामायण कथा में वर्णित रामेश्वरम शिवलिङ्ग एवं समुद्र सेतु इस स्थल पर भगवान् श्रीराम ने बनवाया था. आद्य शंकराचार्य द्वारा स्थापित दक्षिणी पीठ रामेश्वरम् में है. यहाँ के शिवलिंग की गणना भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में होती है.

(19) **कावेरीपत्तनम्**—यह वर्तमान में कावेरी नदी के तट पर अवस्थित है. यह चोल शासकों की राजधानी थी. कावेरीपत्तनम् दक्षिण भारत का प्राचीनकाल में प्रमुख व्यापारिक नगर था. कावेरीपत्तनम् में चोल शासकों द्वारा निर्मित अनेक मन्दिर प्रसिद्ध हैं.

(20) **साकेत**—अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सोलह महाजनपदों में कोसल भी एक था, जो अयोध्या का प्राचीन नाम था. कालान्तर में उत्तरी साकेत और दक्षिणी साकेत के रूप में यह महाजनपद विभक्त हो गया. उत्तरी कोशल की राजधानी साकेत थी. प्रसिद्ध राजवैद्य 'जीवक' यहाँ का निवासी था. शुंगकाल में पुष्यमित्र शुंग ने अश्वमेध यज्ञ किया. यह नगर धनी सेठों के लिए भी प्रसिद्ध था.

(21) **विक्रमशिला**—प्राचीन भारत के प्रख्यात विश्वविद्यालयों में से एक विक्रमशिला राज्य के भागलपुर जिले में स्थित था, जिसे मुस्लिम आक्रमणों का शिकार होकर समाप्त हो जाना पड़ा. इसकी स्थापना तत्कालीन गौड़ नरेश देवपाल ने की थी. इसके अवशेष अभी भी भागलपुर से 25 मील दूर पाथर घाटा नामक स्थान पर बिखरे पड़े हैं. यह विश्वविद्यालय आठवीं से तेरहवीं शताब्दी तक दक्षिण पूर्वी एशिया का सर्वोत्तम शिक्षा केन्द्र था. यहाँ बौद्ध, जैन तथा हिन्दू दर्शन की शिक्षा दी जाती थी. ज्यामिति एवं खगोल तथा आयुर्वेद अन्य



प्रमुख विषय थे. इसके अवशेषों को देखकर तत्कालीन स्थापत्य तथा नियोजन पद्धति की खूबियों की जानकारी मिलती है

(22) **कुरुक्षेत्र**—स्थानेश्वर या थानेश्वर के निकट स्थित कुरुक्षेत्र के मैदान में ही महाभारत का युद्ध हुआ था. यहीं कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था. वर्तमान में कुरुक्षेत्र हरियाणा का एक जिला मुख्यालय है. यहाँ पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय स्थित था.

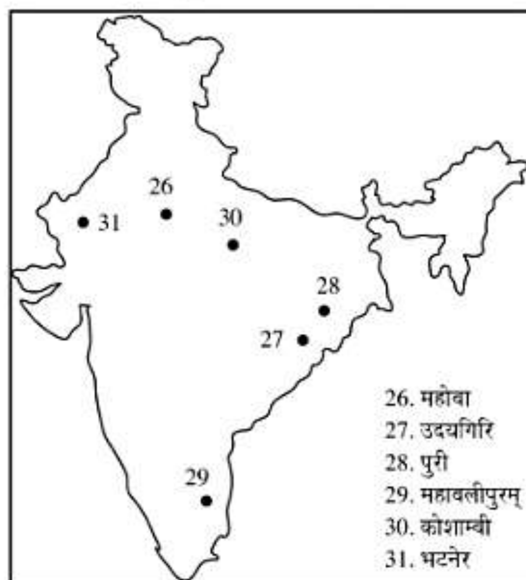
(23) **काँची**—दक्षिण भारत की काशी कही जाने वाली इस नगरी की गणना भारत की सात स्वर्गतुल्या नगरियों में की जाती थी. यह प्राचीन समय में पल्लवों की राजधानी थी. वर्तमान समय में यह तमिलनाडु राज्य में स्थित है. दक्षिण भारत के इतिहास में यह कला-संस्कृति, साहित्य तथा संगीत के केन्द्र के रूप में जानी जाती थी.

(24) **नादिया**—इसका एक नाम नवद्वीप भी पाया जाता है. नादिया शब्द नवद्वीप का ही अपभ्रंश रूप है. स्थान पूर्वी बंगाल में भागीरथी एवं जंगाली नदी संगम पर स्थित है. भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास में नवद्वीप शिक्षा के एक विख्यात केन्द्र के रूप में जाना जाता है. इसलिए केन्द्र के तर्कशास्त्र को काफी मान्यता थी. संस्कृत के कवि जयदेव जिनकी रचना 'गीतगोविन्दम्' है यहीं के निवासी थे. 'स्मृतिविवेक' नामक ग्रन्थ के रचयिता शूलपाणि नादिया के ही निवासी थे.

(25) **ओदन्तपुरी**—प्राचीन भारत में बौद्ध-शिक्षा के अनेक केन्द्र थे. इनमें से कई वर्तमान के विहार राज्य में स्थित थे. ओदन्तपुरी नामक स्थान बिहार में गया के पास स्थित, एक ऐसा ही केन्द्र था. बंगाल के पालवंशीय शासकों ने इसे बौद्ध-शिक्षा केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित करने में काफी योगदान किया था. यहाँ पर बौद्ध धर्म की शिक्षा के साथ-साथ ब्राह्मण धर्म की शिक्षा भी दी जाती थी.

(26) **महोबा**—वर्तमान उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में स्थित महोबा एक प्राचीन नगर है. चंदेल राजपूतों ने नवीं से तेरहवीं शताब्दी तक इसे अपनी राजधानी बनाए रखा. उस समय यह क्षेत्र जेजाकभुक्ति या जुझौती कहलाता था. पृथ्वीराज चौहान ने 1182 ई. में चंदेल शासक परमार्दिदेव को पराजित करके इस पर अधिकार कर लिया, लेकिन कुछ समय बाद चंदेलों ने इस पर पुनः अधिकार कर लिया. 1202 ई. में समस्त बुंदेलखंड के साथ ही महोबा भी दिल्ली के तुर्क साम्राज्य का अंग बन गया. कला प्रेमी चंदेलों द्वारा निर्मित अनेक मन्दिरों के अवशेष आज भी प्राप्त होते हैं.

(27) **उदयगिरि**—उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से सात मील दूर उत्तर-पश्चिम में उदयगिरि नामक स्थान के निकट स्थित पहाड़ियों की श्रृंखला में 123 फीट ऊँची है. कलिंग नरेश खारवेल का प्रसिद्ध हाथी गुम्फा अभिलेख खंडगिरि से कुछ ही दूर स्थित है. खंडगिरि की गुफाएँ जैन सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं. इन गुफाओं का निर्माण सम्भवतः प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में किया गया था.



(28) **पुरी**—जगन्नाथपुरी उड़ीसा राज्य के समुद्र तट पर स्थित एक प्राचीन ऐतिहासिक व धार्मिक नगर है. शंकराचार्य ने पूर्वी धाम जगन्नाथ पीठ यहीं स्थापित किया है. यहाँ प्राचीन जगन्नाथ का मन्दिर प्रसिद्ध है. इसकी स्थापत्य कला का उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है. यहाँ की रथयात्रा सदियों से चली आ रही अबाध श्रद्धाधारा ही है. प्राचीन भारत की सप्त पुरियों में पुरी या जगन्नाथपुरी एक है. जगन्नाथ मन्दिर का निर्माण 11वीं शती में यहाँ के तत्कालीन शासक अवन्ति वर्मा द्वारा करवाया गया था.

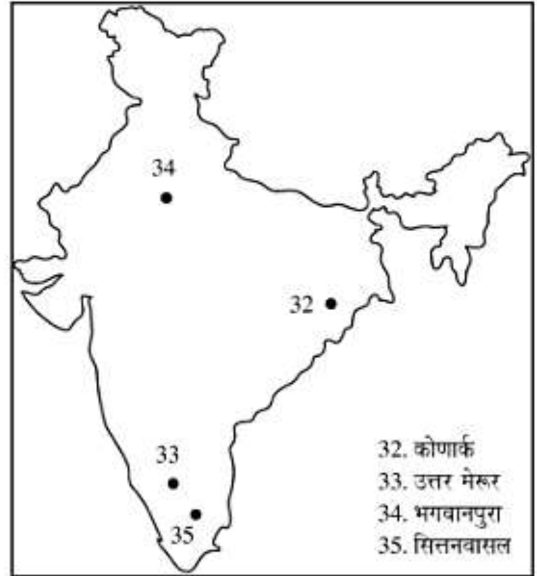
(29) **महाबलीपुरम्**—इसे मामल्लपुरम् भी कहते हैं. यह स्थान तमिलनाडु में मद्रास (चेन्नई) से 40 मील की दूरी पर समुद्र तट पर स्थित है. सुदूर दक्षिण में शासन करने वाले पल्लव शासकों के काल में यह नगर एक प्रसिद्ध समुद्री बन्दरगाह तथा कला का प्रमुख केन्द्र था. यहाँ पर कठोर चट्टानों को काटकर मण्डप तथा एकाश्मक (Monolithic Temple) बनाये गए, जिन्हें रथ कहा गया. चट्टानों से निर्मित रथों को 'सप्तपैगोडा' कहा जाता है. ये महाभारत के दृश्यों का चित्र प्रस्तुत करते हैं. इन पर दुर्गा, इन्द्र, शिव-पार्वती, हरिहर, ब्रह्म, स्कंद तथा गंगा आदि की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई थीं.

(30) **कोशाम्बी**—वर्तमान इलाहाबाद के दक्षिण पश्चिम में लगभग 33 मील की दूरी पर स्थित 'कोसम' नामक स्थान ही प्राचीन समय में कोशाम्बी के नाम से जाना जाता था. यह नगर यमुना के तट पर बसा हुआ था. पुराणों के अनुसार हस्तिनापुर के राजा ने हस्तिनापुर के गंगा प्रवाह में नष्ट हो जाने के पश्चात् इस नगर की स्थापना की थी. पाँचवी-छठी शती ईसा पूर्व में कोशाम्बी में वत्स राज्य की राजधानी थी, जहाँ का शासक उदयन था. गौतम बुद्ध ने इस नगर में अनेक उपदेश दिए थे. बौद्ध धर्म के केन्द्र होने के अतिरिक्त कोशाम्बी एक प्रमुख व्यापारिक नगर भी था. मौर्यकाल में पाटलिपुत्र का महत्व बढ़ जाने के कारण कोशाम्बी का गौरव कुछ कम हो गया और गुप्तकाल तक यह वीरान होने लगा था. कनिंघम महोदय ने सबसे पहले 1861 ई. में यहाँ की यात्रा की और पुरातत्त्वविदों का ध्यान आकृष्ट किया. फलतः 1937 में एन. जी. मजूमदार ने यहाँ उत्खनन का कार्य किया, लेकिन उनके निधन से इस कार्य में अवरोध आ गया. 1949 से 1966 ई. तक जी. आर. शर्मा के नेतृत्व में यहाँ व्यापक स्तर पर उत्खनन अभियान चलाया गया जिससे पुरातत्व महत्व की अनेक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं.

(31) **भटनेर**—वर्तमान राजस्थान में हनुमानगढ़ के समीप एक पूर्व मध्यकालीन स्थल 12वीं तथा 13वीं शताब्दी में इस पर जैसलमेर के भाटियों का अधिकार था. भाटी लोग दक्षिणी पंजाब से उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के भू-भाग पर फैले हुए थे. यहाँ का किला अपनी सुन्दरता के लिए बेहद प्रसिद्ध है.

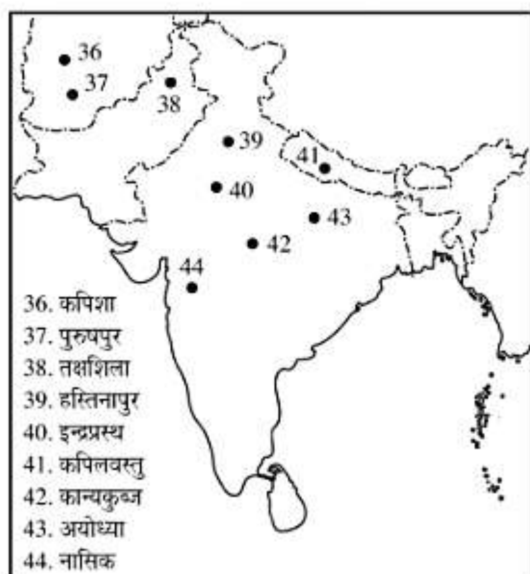
(32) **कोणार्क**—वर्तमान राज्य उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर के समीप ही लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कोर्णाक पुरी से 33 किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है. आइन-ए-अकबरी के लेखक अबुल फजल के अनुसार कोर्णाक में स्थित सूर्य मन्दिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में केशरीवंशी एक राजा द्वारा करवाया गया था. 13वीं शताब्दी में गंग वंश के राजा नरसिंह देव प्रथम द्वारा इसे नया रूप प्रदान किया गया. चतुर्भुजाकार परकोटे पर स्थित इस मन्दिर का मुख्य द्वार पूर्व की ओर था और सूर्योदय के समय सूर्य की पूजा की जाती थी. इस मन्दिर के गर्भगृह में पशु-पक्षियों, किन्नरों, देवताओं, देवियों, गन्धर्वों तथा अप्सराओं की विभिन्न मूर्तियाँ अभी भी हैं. यहाँ की मूर्तियों में खजुराहो शैली की झलक दिखायी देती है.

(33) **उत्तरा मेरूर**—तमिलनाडु में स्थित एक ग्राम, जहाँ से लगभग 200 चोल एवं पल्लवकालीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं. इनसे यह स्पष्ट होता है कि चोल शासन के दौरान ग्राम अधिकाधिक स्वायत्त थे. 10वीं शताब्दी के मन्दिर पर उत्कीर्ण एक लेख से विदित होता है कि चोल शासन में स्थानीय निकाय 'सभा' के सदस्यों का चुनाव लॉटरी पद्धति से होता था. चोल काल में प्रशासन के उच्च स्तरों और राजनैतिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों से ग्रामों का दैनन्दिन जीवन अप्रभावित रहता था.



(34) **भगवानपुरा**—यह स्थान वर्तमान में हरियाणा राज्य के कुरुक्षेत्र में एक छोटे से गाँव के रूप में है. 1975 ई. में किए गए उत्खनन से यहाँ हड़प्पाकालीन सभ्यता के साक्ष्य मिले हैं. यहाँ के एक स्तर से हड़प्पाइयों तथा आर्यों के साक्ष्य मिलने से यह प्रमाणित होता है कि कभी वे एक ही बस्ती में रहते थे.

(35) **सित्तनवासल**—यह स्थल तमिलनाडु के तंजोर जिले में पुदुकोट्टा नामक स्थान से 16 किलोमीटर दूरी पर पश्चिमोत्तर दिशा में स्थित है. यहाँ के शैल गुहा मंदिर उल्लेखनीय हैं. 'सित्तनवासल' शब्द से अभिप्राय जैन मुनियों से सम्बन्धित 'सिद्धों के निवास' से है. इस कथन की पुष्टि यहाँ से प्राप्त तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के ब्राह्मी अभिलेख से भी होती है, जिसके अनुसार ये शैल-गुहाएँ जैन मुनियों के निवास हेतु निर्मित की गयी थीं. इन गुहाओं में उत्कृष्ट भित्तिचित्रों के अवशेष सुरक्षित हैं. बचे हुए चित्रों के रंग हालांकि उड़ गए हैं; फिर भी उस समय की उत्कृष्ट चित्रकला की जानकारी के लिए पर्याप्त हैं. इन भित्तिचित्रों को कुछ समय पूर्व तक पल्लव चित्रकला का अवशेष माना जाता था, लेकिन अब यह तथ्य प्रकाश में आया है कि ये पल्लव कालीन न होकर पांड्यकालीन हैं और इन्हें अब राजसिंह प्रथम (730-765 ई.) द्वारा बनवाया हुआ माना जाता है.



(36) **कपिशा**—कपिशा एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नगर था जिसे छठी शताब्दी ई. पू. के मध्य पुक्कुशाती नामक शासक ने आक्रमण कर नष्ट कर दिया. कपिशा वर्तमान में काबुल के उत्तर-पूर्व में पंचशीर नदी के तट का क्षेत्र है.

(37) **पुरुषपुर**—पेशावर के नाम से जाना जाने वाला यह नगर कनिष्क की राजधानी था.

(38) **तक्षशिला**—तक्षशिला चौथी शताब्दी ई. पू. में भारत के उत्तर पश्चिम में मध्य एशिया से भारत आने वाले मार्ग पर स्थित था. यह शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था और यहीं पर चाणक्य ने शिक्षा ग्रहण की थी.

(49) **हस्तिनापुर**—हस्तिनापुर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित पौराणिक नगर है. महाभारत में इसे धृतराष्ट्र (कुरुवंश) की राजधानी बताया गया है.

(40) **इन्द्रप्रस्थ**—इन्द्रप्रस्थ का पहले खाण्डवप्रस्थ नाम था. पाण्डवों ने इसे अपनी राजधानी बनाया और इसे यह नाम दिया.

(41) **कपिलवस्तु**—छठी शताब्दी ई. पू. में यहाँ के शाक्य शासक सिद्धार्थ के यहाँ महावीर स्वामी का जन्म हुआ था. यह नगर नेपाल की तराई में बस्ती जिले के उत्तर में स्थित था.

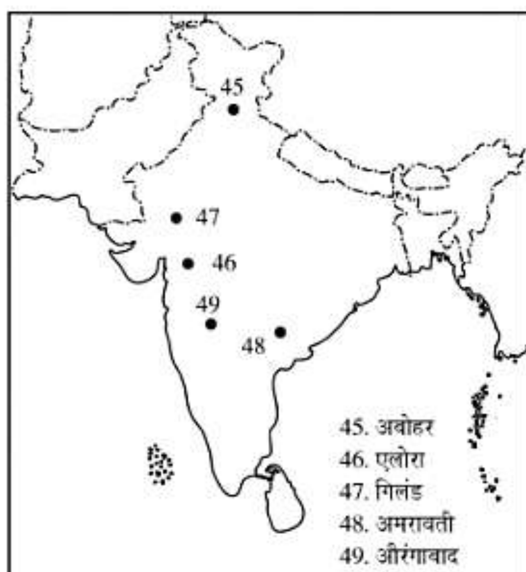
(42) **कान्यकुब्ज**—मध्यकाल में कन्नौज कहा जाने वाला यह नगर मौखरी राजाओं की राजधानी था. बाद में सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन ने इसे अपनी राजधानी बनाया था.

(43) **अयोध्या**—यहाँ रामायण के नायक भगवान् राम का जन्म हुआ था. वर्तमान में यह नगर उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में स्थित है.

(44) **नासिक**—नासिक गोदावरी के तट पर महाराष्ट्र में स्थित है. प्राचीनकाल में यह एक शक क्षत्रप की राजधानी था.

(45) **अबोहर**—अबोहर पूर्व मध्यकालीन ऐतिहासिक स्थल है, जिसे भट्टी राजपूत द्वारा बसाया गया था. वर्तमान में यह पंजाब के फिरोजपुर जिले में अवस्थित है. महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग एवं विदेशी आक्रमणकारियों के लिए इसे अत्यन्त प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी. यहाँ पर मुल्तान के सूबेदार एवं मुहम्मद बिन तुगलक के मध्य 1328 ई. में युद्ध भी हुआ था. अबोहर में बलबन ने मंगोलों से बचने के लिए एक किले का निर्माण कराया था.

(46) **एलोरा**—यह स्थान गुफाओं और द्रविड़ शैली के प्रसिद्ध कैलाश मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है.



(47) **गिलुण्ड**—बनास संस्कृति के नाम से विख्यात गिलुण्ड ताम्रपाषाणिक सभ्यता का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल था. वर्तमान में यह स्थल राजस्थान में उदयपुर के सन्निकट बनास नदी के किनारे पर अवस्थित है. यहाँ का पुरातात्त्विक टीला 750 फीट चौड़ा एवं 1500 फीट लम्बा था. यहाँ से कच्चे मकान, पशुओं के साक्ष्य एवं मिट्टी, ताँबे के बर्तन उत्खनन से प्राप्त हुए हैं.

(48) **अमरावती**—प्राचीनकाल में धान्य कष्ठ नाम से प्रसिद्ध यह स्थल वर्तमान में आन्ध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में

कृष्णा नदी के दाहिने तट पर अवस्थित है. सातवाहन शासकों के काल में यह हिन्दू संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था. आन्ध्रवंशीय सातवाहन शासक शातकर्णी प्रथम ने 180 ई. पूर्व में अमरावती को अपनी राजधानी बनाया था.

(49) **औरंगाबाद**—इस स्थल का पूर्व नाम फतेहनगर था. जिसे औरंगजेब ने औरंगाबाद नाम दिया था. औरंगजेब द्वारा निर्मित मकबरा जिसे द्वितीय ताजमहल कहा जाता है, औरंगाबाद में अवस्थित है. नोखण्डा महल और काली मस्जिद के लिए भी यह स्थान प्रसिद्ध है.

2. गौतम बुद्ध से सम्बन्धित ऐतिहासिक स्थल



(1) **लुम्बिनी**—लुम्बिनी गौतम बुद्ध का जन्म स्थल था. 563 ई. पू. कपिलवस्तु के शाक्य गण राजा शुद्धोधन के घर पर बुद्ध का जन्म हुआ था. लुम्बिनी नेपाल में कपिलवस्तु के पास में अवस्थित है.

(2) **बोधगया**—बोधगया नामक स्थल पर गौतम बुद्ध ने तपस्या की थी. अपने पाँच साथियों के साथ इस स्थल पर दो बार तपस्या की थी. इसी स्थल पर उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी. गौतम के आधार पर इसे गौतम गया पुकारा गया था. गौतम से बुद्ध का स्वरूप यहीं से इन्हें प्राप्त हुआ था.

(3) **ऋषिपत्तन (सारनाथ)**—ऋषिपत्तन क्षेत्र वर्तमान में वाराणसी के पास अवस्थित है. यहाँ पर गौतम बुद्ध ने अपने पाँच साथियों को जिन्होंने उनको पाखण्डी कहा था, उपदेश दिया था. बुद्ध के प्रथम उपदेश को इतिहास में धर्म चक्र प्रवर्तन (Turning of Wheels) कहा जाता था.

(4) **राजगृह**—सम्प्रति राजगृह बिहार राज्य में पटना के आसपास का क्षेत्र है. यह मगध जनपद की राजधानी था. यहाँ का प्रसिद्ध शासक बिम्बिसार था, जिसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था. यहाँ पर महात्मा बुद्ध ने द्वितीय उपदेश राजगृह में दिये थे.

(5) **कुशीनगर**—कुशीनगर वर्तमान में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले का कुसिया ग्राम है. कुशीनगर में महात्मा बुद्ध की मृत्यु चुन्द नामक सुनार के घर मांस खाने से हुई थी. महात्मा बुद्ध की मृत्यु इतिहास में 'महापरिनिर्वाण' के नाम से जानी जाती है. इसे बौद्ध धर्म का तीर्थस्थल माना जाता है. उस समय यहाँ पर शासन यहाँ पर मल्लों का था.

(6) **श्रावस्ती**—श्रावस्ती वर्तमान में उत्तर प्रदेश में गोंडा और बहराइच जिलों की सीमा पर अवस्थित सहेत-महेत है. महाजनपद काल में यह उत्तरी कोशल की प्रारम्भिक राजधानी थी. गौतम बुद्ध ने श्रावस्ती में सर्वाधिक उपदेश दिये थे. 21 विश्राम स्थलों पर लम्बे समय तक बुद्ध ने प्रवास श्रावस्ती में ही किया था. प्रसिद्ध डाकू 'अंगुलिमाल' को बौद्ध धर्म की दीक्षा श्रावस्ती में ही गौतम बुद्ध ने प्रदान की थी.

1. **प्रथम बौद्ध संगीति स्थल**—बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् 483 ई. पू. में राजगृह (बिहार) में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया. इस संगीति के अध्यक्ष महाकश्यप थे और यह अजातशत्रु के काल में सम्पन्न हुई थी.

2. **द्वितीय बौद्ध संगीति स्थल**—द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन बिहार के वैशाली (चुल्लवग्ग) में रेवतस्थविर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. प्रथम बौद्ध संगीति एवं बुद्ध के महापरिनिर्वाण से एक शताब्दी बाद 383 ई. पू. में यह बौद्ध संगीति शिशुनागवंश के शासक 'कालाशोक' की शासनावधि में सम्पादित हुई.

3. **तृतीय बौद्ध संगीति स्थल**—पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन 250 ई. पू. में मोग्गलिपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. तृतीय बौद्ध संगीति के काल में अशोक का शासन था.

4. **चतुर्थ बौद्ध संगीति स्थल**—कनिष्क के शासनकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति कश्मीर के कुण्डलवन में सम्पन्न हुई. इस बौद्ध संगीति की अध्यक्षता वसुमित्र ने की. चतुर्थ बौद्ध संगीति में ही बौद्ध धर्म हीनयान और महायान दो भागों में बँट गया था. अश्वघोष इस संगीति के उपाध्यक्ष थे.

5.-6. **पञ्चम् एवं षष्टम् बौद्ध संगीति स्थल**—हर्षवर्द्धन के शासनकाल में 5वीं एवं छठी बौद्ध संगीति का आयोजन कन्नौज में ह्वेनसांग की अध्यक्षता में किया गया. 100 फीट ऊँचे बुर्ज एवं विशाल संघाराम का निर्माण कन्नौज में इसी काल में हुआ था. षष्टम् बौद्ध संगीति में लगभग 5 लाख व्यक्ति एकत्रित हुए थे.

3. सोलह महाजनपद



(1) **अंग महाजनपद**—यह बिहार के उत्तरी-पूर्वी भाग में अवस्थित था. इसकी राजधानी चम्पानगरी थी. अंग महाजनपद वर्तमान में बिहार के भागलपुर और मुंगेर जिलों के अन्तर्गत आता है. छठी शताब्दी में यह महाजनपद श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र था. सम्प्रभुता के लिए अंग और मगध में परस्पर संघर्ष होता रहता था. इसी के फलस्वरूप यह मगध में विलीन हो गया.

(2) **मगध महाजनपद**—यह महाजनपद गंगा नदी के दक्षिण भाग में अवस्थित था. जो वर्तमान में पटना एवं शाहाबाद का क्षेत्र कहलाता है. इसकी प्रथम राजधानी गिरिव्रज एवं दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी. छठी शताब्दी ई. पू. के महाजनपदों में सर्वाधिक शक्तिशाली एवं उत्तरी भारत की राजनीतिक शक्ति का प्रमुख केन्द्र था. मगध महाजनपद चतुर्थ शताब्दी में आसपास के महाजनपद की अधिसत्ता हासिल कर छठी शताब्दी ई. पू. में साम्राज्यवाद में परिणित हो गया.

(3) **काशी महाजनपद**—यह जनपद अस्सी नदियों के संगम पर अवस्थित था. यह वर्तमान में उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्व के अन्तर्गत आता है. इसकी राजधानी वाराणसी या बनारस थी. सम्प्रभुता के लिए काशी और कोशल में संघर्ष हुआ था. अजातशत्रु ने काशी पर अधिकार कर इसे मगध में सम्मिलित कर लिया था.

(4) **कोशल महाजनपद**—यह जनपद पूर्वी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में अवस्थित था. इसकी सीमा पूर्व में गण्डक नदी तक, पश्चिम में पांचाल (मध्य दोआब), दक्षिण में सर्पिका एवं उत्तर में नेपाल की तराई तक फैली थी. सरयू नदी के कारण यह जनपद दो विभागों (1. उत्तरी कोशल, 2. दक्षिणी कोशल) में विभाजित था. उत्तरी कोशल की आरम्भिक राजधानी श्रावस्ती थी. दक्षिणी कोशल की राजधानी कुशावती थी. अजातशत्रु ने आक्रमण पर कोशल को मगध में मिला लिया था.

(5) **वज्जि महाजनपद**—मगध के उत्तर भाग में अवस्थित वज्जि महाजनपद की प्रशासनिक स्थिति गणतन्त्रात्मक थी. प्राचीन विदेह एवं वैशाली के टूटने से यह जनपद राजतन्त्र से गणतन्त्र बन गया. मगध के सम्राट् अजातशत्रु ने वज्जि को मगध महाजनपद में मिला लिया था.

(6) **मल्ल महाजनपद**—यह गणतान्त्रिक महाजनपद वज्जि महाजनपद के पश्चिमोत्तर एवं कोशल के पूर्व में हिमालय की तराई में अवस्थित प्राचीन कोशल का पूर्वी भाग था. मल्ल महाजनपद 'कुशीनारा' एवं 'पावा' दो विभागों में विभाजित था. मल्ल महाजनपद की राजधानी कुशीनारा बुद्ध का महापरिनिर्वाण स्थल था. वज्जि एवं मल्ल के मध्य राजनैतिक संघर्ष हुआ. मल्ल महाजनपद का विलय अन्त में मगध में हो गया.

(7) **वत्स महाजनपद**—यह महाजनपद काशी महाजनपद के दक्षिण पश्चिम में अवस्थित था. इस महाजनपद की राजधानी यमुना नदी के किनारे स्थित कौशाम्बी थी. यहाँ का प्रसिद्ध शासक उद्‌यन था. राजनीतिक प्रभुत्व के लिए वत्स का अवन्ति से संघर्ष हुआ था.

(8) **चेदि महाजनपद**—चेदि महाजनपद वत्स के दक्षिण भाग में यमुना के किनारे अवस्थित था. इसकी राजधानी शुक्तिमति थी. चेदि महाजनपद की सीमा कुरु महाजनपद से मिली हुई थी. इस महाजनपद का प्रतापी शासक शिशुपाल था.

(9) **कुरु महाजनपद**—यह जनपद यमुना नदी के किनारे पर इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुर के आसपास अवस्थित था. इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी. इस महाजनपद के शासक धनंजय, राजा कौरव (बौद्धकाल में) इक्ष्वाकु, सुतसोम थे. हस्तिनापुर के नष्ट होने पर कुरुओं का एक हिस्सा कौशाम्बी में चला गया था.

(10) **पांचाल महाजनपद**—यह जनपद रुहेलखण्ड और पश्चिमी उत्तर प्रदेश मध्य दोआव क्षेत्र में अवस्थित था. इस महाजनपद के दो विभाग थे—1. उत्तरी पांचाल, 2. दक्षिणी पांचाल. पांचाल हिमालय की तराई से दक्षिण में चम्बल नदी, पूर्व में कोशल महाजनपद तथा पश्चिम में कुरु महाजन तक फैला था. यह जनपद गंगा नदी द्वारा निर्मित विभाजक रेखा से विभाजित होती थी.

(11) **मत्स्य महाजनपद**—इस महाजनपद का प्रसार चम्बल नदी से सरस्वती नदी तक था. इस महाजनपद की दो शाखाएँ (1. वीरमत्स्य, 2. अपरमत्स्य) थी. मत्स्य की राजधानी विराट नगर थी. विराट नगर का नामकरण यहाँ के शासक विराट के नाम पर हुआ था. शहाज नामक शासक ने मगध और मत्स्य पर एक साथ शासन कर इसे मगध में मिला लिया था.

(12) **शूरसेन महाजनपद**—यह महाजनपद चेदि महाजनपद के पश्चिमोत्तर में कुरु के दक्षिण में अवस्थित था. इसकी राजधानी मथुरा थी. पाणिनी एवं पालि साहित्य के अनुसार पहले यहाँ गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली थी, जो कालान्तर में राजतन्त्रात्मक हो गई थी.

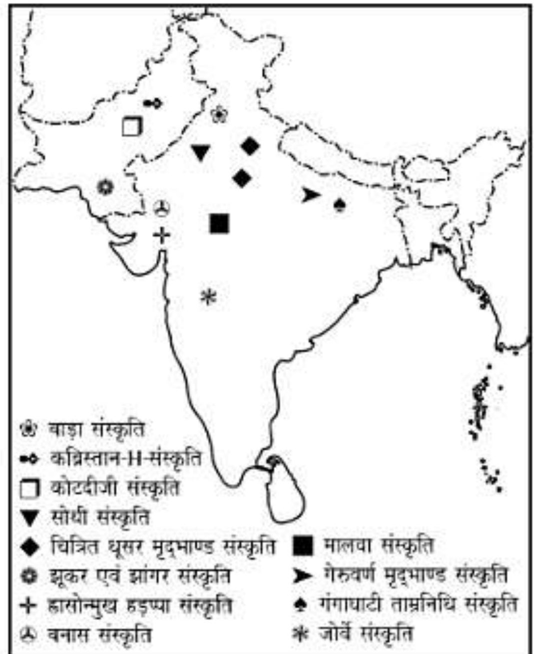
(13) **अवन्ति महाजनपद**—यह पश्चिमी भारत मध्य प्रदेश के मालवा प्रदेश में अवस्थित था. अवन्ति जनपद (उत्तरी अवन्ति एवं दक्षिणी अवन्ति) दो विभागों में विभाजित थे. उत्तरी अवन्ति की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिणी अवन्ति की राजधानी माहिष्मति थी. यह जनपद बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र था. मगध सम्राट् शिशुनाग ने अवन्ति पर आक्रमण कर मगध में शामिल कर लिया.

(14) **गांधार महाजनपद**—गांधार भारत के उत्तर-पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्र में अवस्थित था. वर्तमान में यह पेशावर, रावलपिण्डी के क्षेत्र कहलाये गये. गांधार जनपद की राजधानी तक्षशिला थी. यहाँ की राजधानी विद्या एवं व्यापार का प्रमुख केन्द्र थी. सम्प्रभुता के लिए गांधार और अवन्ति में परस्पर संघर्ष हुआ था. छठी शताब्दी ई. पू. के उत्तरार्द्ध में गांधार पर फारस (ईरान) का अधिकार हो गया था.

(15) **कम्बोज महाजनपद**—यह जनपद भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र का दूसरा भाग था. इस जनपद की राजधानी हाटक या राजपुर थी. साहित्यिक स्रोतों के अनुसार चन्द्रवर्मन, सुदक्षिण यहाँ के शासक थे. प्रारम्भ में यहाँ राजतन्त्रीय व्यवस्था थी, जो गणतन्त्रीय शासन प्रणाली में परिवर्तित हो गई थी.

(16) **अश्मक महाजनपद**—यह जनपद गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित था. इसकी राजधानी पोतना, पोतन या पोटली थी. इक्ष्वांकुवंशीय क्षत्रिय अश्मक जनपद का शासक था. अश्मक महाजनपद एवं अवन्ति के मध्य सम्प्रभुता के लिये संघर्ष हुआ था, जिसके फलस्वरूप अवन्ति ने अश्मक पर अधिकार कर लिया था.

4. प्राचीन संस्कृतियाँ



(1) **बाड़ा संस्कृति**—यह संस्कृति पंजाब में रोपड़ के निकट शिवालिक पहाड़ियों की उपत्यका के पास क्षेत्र में पल्लवित हुई. स्थल का नाम बाड़ा होने के कारण संस्कृति को भी बाड़ा संस्कृति कहा गया. यहाँ पर उत्खनन से मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जो कोटदीजी और कालीबंगा के हड़प्पा पूर्व संस्कृति के हैं. यहाँ पर ह्रासोन्मुख हड़प्पा सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं.

(2) **कब्रिस्तान-H-संस्कृति**—हड़प्पा नामक स्थल जो पाकिस्तान में है, में हड़प्पा सभ्यता के पतन हो जाने के बाद एक नई संस्कृति के साक्ष्य मिलते हैं जिसे कब्रिस्तान-H-संस्कृति कहते हैं. 1750-1400 ई. पू. इसकी अनुमानित तिथि है. यहाँ पर शव, मिट्टी के बर्तन, स्वर्ण आभूषण मृण्पात्र अवशेष में मिले हैं.

(3) **कोटदीजी संस्कृति**—कोटदीजी संस्कृति का नाम कोटदीजी के नाम से ही विख्यात हुआ. कोटदीजी नामक स्थान सिन्ध में खैरपुर के दक्षिण में मोहनजोदड़ो से 40 किमी पूर्व में अवस्थित है. वाणाग्र (Arrow-Heads), कच्ची ईंटों की दीवारें, मकान की पत्थर की नींव के अवशेष प्राप्त हुए हैं.

(4) **सोथी संस्कृति**—राजस्थान में बीकानेर जिले के सोथी नामक स्थल पर सोथी नामक संस्कृति का आविर्भाव हुआ है. इस स्थल पर प्राक्-हड़प्पाकालीन मृद्भाण्ड अवशेष खुदाई के दौरान प्राप्त हुए हैं. ऑल्चिन, अग्रवाल, अमलानन्द घोष इस संस्कृति को सिन्धु सभ्यता की आरम्भिक सभ्यता मानते हैं.

(5) **चित्रित धूसर मृदुभाण्ड संस्कृति**—हस्तिनापुर, पानीपत, अहिच्छत्र, सोनीपत, इन्द्रप्रस्थ, रोपड़ आलमगीरपुर आदि स्थानों पर चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति के अवशेषों में छिछली और गहरी तश्तरियाँ, कटोरे प्राप्त हुए हैं जिन पर काला स्वास्तिक वृत्त, बिन्दु एवं कई ज्यामितीय आकृतियाँ खोजी गई थी. इसका काल 800 ई. पू. माना गया है. इसे आर्यसंस्कृति भी कहा जाता है.

(6) **झूकर एवं झांगर संस्कृति**—लरकाना सिन्ध के पास चन्हुदाड़ो नामक स्थल से पहले झूकर एवं उसके बाद झांगर संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं. यहाँ के निवासी किसी अन्य स्थल से आये हुए प्रतीत होते हैं. यहाँ की झूकर संस्कृति में दो छेददार पत्थर की मुहरें एवं झांगर संस्कृति के दौरान हल्के लाल रंग के बर्तन उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. झूकर संस्कृति से मिलते हुए बर्तन भी प्राप्त हुए हैं.

(7) **हासोन्मुख हड़प्पा संस्कृति**—आधुनिक गुजरात की भादर नदी के किनारे अवस्थित रंगपुर नामक स्थल से हासोन्मुख हड़प्पा संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं. इस स्थल से विशिष्ट प्रकार की इमारत, कच्ची ईंटों के सुरक्षा दुर्ग, माहदेवी की मूर्तियाँ एवं मुहर प्राप्त हुई हैं.

(8) **बनास संस्कृति**—गिलुण्ड नामक स्थल पर बनास संस्कृति के अवशेष उत्खनन के दौरान पाये गये हैं. यह आहड़ संस्कृति के समकक्ष ही प्रतीत होता है. 2000-1500 ई. पू. के मध्य इसका काल माना गया है.

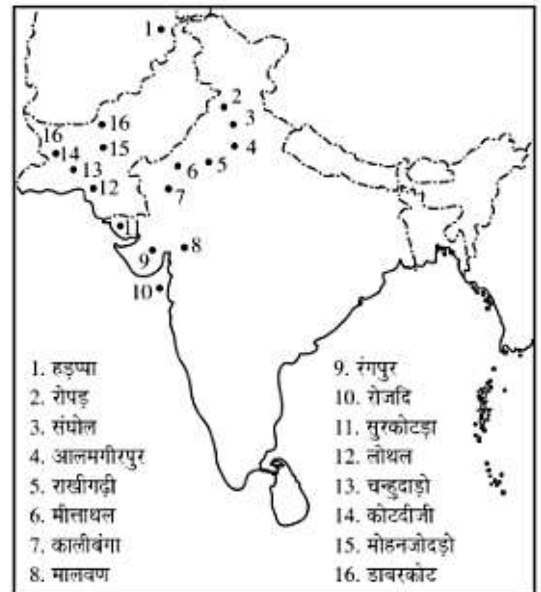
(9) **मालवा संस्कृति**—मालवा संस्कृति नवदाटोली, एरण और नागदा में 1700-1200 ई. पू. के मध्य पल्लवित हुई. यह हड़प्पा संस्कृति से अलग मानी जाती है.

(10) **गेरुवर्ण मृदुभाण्ड संस्कृति**—गेरुवर्णी मृदुभाण्ड गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में उत्तर हड़प्पाकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं. इसी कारण इस संस्कृति को गेरुवर्णी मृदुभाण्ड संस्कृति कहा जाता है. यह संस्कृति ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी के पूर्वार्द्ध में पल्लवित हुई थी. श्री एस. आर. राव इस संस्कृति को 'निम्न हड़प्पा' मानते हैं. हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बड़गाँव, अम्बखेड़ी, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, अन्तर जीखेड़ा से भी इस संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं.

(11) **गंगाघाटी ताम्रनिधि संस्कृति**—ऊपरी गंगा घाटी और गंगा यमुना दोआब स्थल से ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं. प्राप्त उपकरणों में प्रमुख रूप से हाथ की कुल्हाड़ियाँ, मत्स्य, भाले, मानवतारोपी मूर्तियाँ एवं शृंगिकाएँ प्रमुख रूप से हैं. 2000-1800 ई. पू. के मध्य यह संस्कृति विकसित हुई.

(12) **जोर्वे संस्कृति**—अहमदनगर के पास जोर्वे नामक स्थल पर जोर्वे संस्कृति पल्लवित हुई. इसका अनुमानित काल 1400-700 ई. पू. है. इसके सबसे अधिक अवशेष दैमाबाद में खोजे गए. विदर्भ और कोंकण को छोड़कर सारे महाराष्ट्र में यह संस्कृति फैली हुई थी.

5. सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल



(1) **हड़प्पा**—यह स्थल रावी नदी के किनारे पर मुल्तान जिले पाकिस्तान में अवस्थित है. यह क्षेत्र 5 किलोमीटर तक फैला हुआ था. सिन्धु घाटी सभ्यता का यह सबसे पहला स्थल है. सन् 1921 ई. में दयाराम साहनी ने इसकी खुदाई पर सिन्धु सभ्यता के अवशेषों को खोजा. नगर निर्माण की योजना के स्पष्ट प्रमाण यहाँ पर मिले हैं. सबसे बड़ी इमारत, अन्नागार एवं धनी पुरुषों के मकान के अवशेष उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. यहाँ से गढ़ी एवं निचले नगरों की प्रणाली भी प्रकाश में आई है. मिट्टी एवं कच्ची ईंटों का प्रयोग करने के प्रमाण मिलते हैं.

(2) **रोपड़**—यह सिन्धु सभ्यता का स्थल वर्तमान में पंजाब में अवस्थित है. यहाँ से हड़प्पा सभ्यता के दो चरण उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. मिट्टी के बर्तन, काँचली मिट्टी, ताम्र कुल्हाड़ी एवं मुहरें उत्खनन से प्राप्त हुई हैं.

(3) **संघोल**—चंड़ीगढ़ से लगभग 40 किमी की दूरी पर संघोल नामक सिन्धु सभ्यता का स्थल अवस्थित है. यहाँ से सिन्धु सभ्यता के अंतिम चरण के अवशेष उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. संघोल में मकान की कच्ची दीवारों में ईंट एवं कुटी हुई मिट्टी के प्रयोग होने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.

(4) **आलमगीरपुर**—यह स्थल गंगा-यमुना दोआब से प्राप्त होने वाला हड़प्पा सभ्यता का पहला अवशेष है. यहाँ से पतनोन्मुख सभ्यता के चरण मिले हैं. मेरठ के पास हिण्डन नदी के तट पर आलमगीरपुर अवस्थित है. मिट्टी के बर्तन यहाँ से अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं.

(5) **राखीगढ़ी**—राखीगढ़ी नामक यह स्थल जींद के निकट अवस्थित है. इस स्थल से प्राय हड़प्पाकालीन एवं हड़प्पाकालीन अवशेष उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. इस स्थल पर लिपिबद्ध मुहर प्राप्त हुई थे.

(6) **मीत्ताथल**—भिवानी (हरियाणा) के निकट यह सिन्धु सभ्यता का स्थल अवस्थित है. इस स्थल से हड़प्पा सभ्यता के विकासोन्मुख एवं पतनोन्मुख सभ्यता के दो चरण उत्खनन से प्राप्त हुए थे.

(7) **कालीबंगा**—यह ऐतिहासिक स्थल राजस्थान के गंगानगर जिले में अवस्थित है. यह वैदिककालीन नदी सरस्वती के किनारे पर बसा हुआ है. लकड़ी की नालियाँ यहाँ पर उत्खनन से प्राप्त हुई हैं. कालीबंगा को इतिहासकारों ने सैन्धव सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा है.

(8) **मालवण**—काठियावाड़ के सूरत जिले में सिन्धु सभ्यता का यह ऐतिहासिक स्थल अवस्थित है. इस स्थल से सिचाई के लिए एक नहर कच्ची ईंटों का चबूतरा, मिट्टी के बर्तन पाये गये हैं. यहाँ पर सिन्धु सभ्यता का एक बन्दरगाह भी प्राप्त हुआ है.

(9) **रंगपुर**—आधुनिक गुजरात के उत्खननों से प्रकाश में आये स्थलों में से रंगपुर भी एक प्रमुख हड़प्पाकालीन स्थल था. यह लोथल से 50 किलोमीटर उत्तर-पूर्व और अहमदाबाद के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित है. एस. आर. राव के अनुसार रंगपुर में सिन्धु सभ्यता का उदय लोथल के बाद हुआ था. रंगपुर के उत्खनन से हड़प्पा संस्कृति के ह्रास के विषय में जानकारी मिलती है.

(10) **रोजदि**—यह हड़प्पाकालीन स्थल राजकोट से दक्षिण में भादर नदी के किनारे अवस्थित था. यहाँ के मकानों को पत्थर की दीवार से घेर दिया गया था. इस प्रकार की घेराबन्दी सिन्धु सभ्यता में अन्य किसी स्थल पर देखने को नहीं मिलती है. रोजदि में उत्खनन से मिट्टी के बर्तन, आभूषण इत्यादि प्राप्त हुए हैं.

(11) **सुरकोटड़ा**—हड़प्पाकालीन स्थल उत्खननों से प्रकाश में आया यह स्थल कच्छ जिला में अवस्थित है. भवन निर्माण में सुरकोटड़ा में कच्ची ईंटों के प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त होते हैं. उत्खनन से यहाँ मिट्टी के बर्तन, अस्थि-कलश तथा बड़ी चट्टान से ढकी एक कब्र प्राप्त हुई है. यहाँ से अग्निकाण्ड के प्रमाण भी मिले हैं.

(12) **लोथल**—लोथल गुजरात में खम्भात की खाड़ी के समीप स्थित है. श्री एस. आर. राव द्वारा करवाई गई लोथल की खुदाई से अनेक भवनों एवं दुकानों के भग्नावशेष प्रकाश में आये हैं. लोथल में गोदीवाड़ा होने का प्रमाण भी मिलता है.

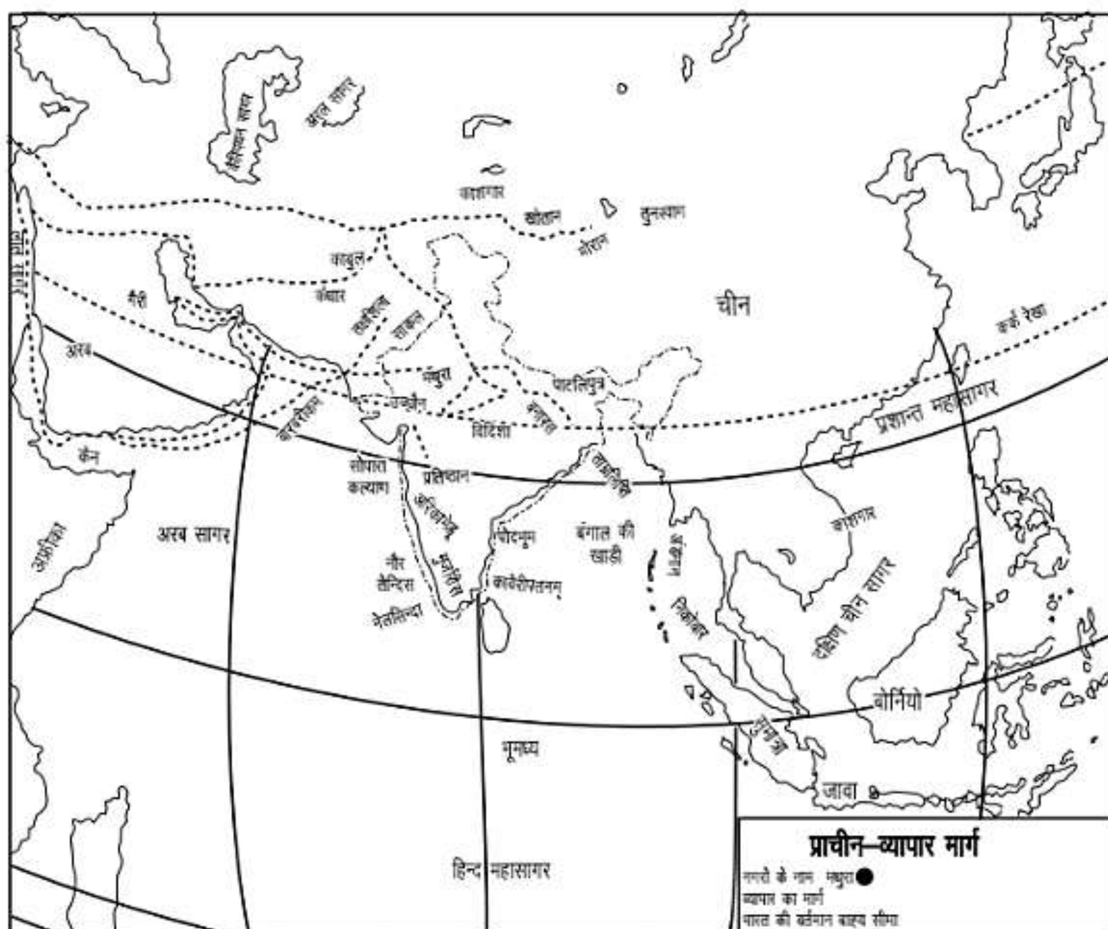
(13) **चन्हुदाड़ो**—यह स्थल सिन्ध (पाकिस्तान) में है. चन्हुदाड़ो मोहनजोदड़ो से लगभग 130 किमी की दूर पर सिन्धु नदी के तट पर अवस्थित है. चन्हुदाड़ो से सिन्धु संस्कृति के अलावा झूकर और झांगर संस्कृति के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं. उत्खनन से यहाँ पकाई गई ईंटों के भवन तथा मनके बनाने का कारखाना प्रकाश में आया है. मिट्टी के बर्तन एवं अन्य उपकरण हड़प्पा-मोहनजोदड़ो के सदृश हैं.

(14) **कोटदीजी**—कोटदीजी सिन्ध में खैरपुर से दक्षिण और मोहनजोदड़ो से लगभग 40 किलोमीटर पूर्व में अवस्थित है. यहाँ 'कोटदीजी संस्कृति' के अलावा हड़प्पा संस्कृति के होने का प्रमाण मिला है. कोटदीजी उत्खनन से बड़ी संख्या में वाणाग्र मिले हैं.

(15) **मोहनजोदड़ो**—यह स्थल पाकिस्तान के लरकाना (सिन्ध) जिले में अवस्थित है. इस स्थल को 'मृतकों का टीला' भी कहा जाता है. यह स्थल हड़प्पा से 483 किलोमीटर की दूरी पर सिन्धु नदी के पूर्वी तट पर अवस्थित है. यह सिन्धु नदी द्वारा हड़प्पा से जुड़ा था. लगभग ढाई वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस नगर की जनसंख्या लगभग 35,000 थी. विशाल स्नानागार यहाँ का प्रमुख भवन है. इस स्थल के उत्खनन से गढ़ी और पक्की ईंटों से बना बुर्ज मिला है. यहाँ से अन्नागार एवं अन्य भवनों के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं.

(16) **डाबरकोट**—यह स्थल सिन्धु नदी से लगभग 200 किमी की दूरी पर लोशलाई के दक्षिण झोब घाटी में स्थित है. कांधार जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर पड़ने से डाबरकोट का प्राचीनकाल में अत्यधिक महत्व था. डाबरकोट से सिन्धु संस्कृति के अतिरिक्त इसके पूर्व तथा बाद की संस्कृतियों के पुरावशेष भी मिले हैं.

6. प्राचीन व्यापार मार्ग



आन्तरिक व्यापार मार्ग

(1) आन्तरिक व्यापार में सर्वोपरि भूमिका मथुरा की प्राचीनकालीन भारत में थी. मथुरा से पूर्व की ओर एक व्यापारिक मार्ग बनारस से कौशाम्बी (श्रावस्ती) होते हुए ताम्रलिप्ति बंदरगाह तक जाता था.

(2) जल व स्थल मार्गों से आन्तरिक व्यापार होता था. इसमें व्यापार की उत्कृष्ट भूमिका में भड़ौच भी सर्वोपरि था. भड़ौच में उत्तर, पूर्व, दक्षिण से माल आता था. श्रावस्ती, उज्जैन, बनारस, पाटलिपुत्र का मार्ग पूर्वी भागों के लिए, मथुरा, तक्षशिला, साकल का मार्ग उत्तरी क्षेत्रों के लिए एवं प्रतिष्ठान का मार्ग दक्षिण के लिए था.

(3) आन्तरिक व्यापार का दूसरा मार्ग दक्षिण की तरफ उज्जैन, भड़ौच से प्रतिष्ठान तक जाता था. पश्चिम मार्ग बारबरी के बन्दरगाह को मथुरा से सम्बद्ध करता था. उत्तरी मार्ग तक्षशिला, साकल काबुल होते हुए मध्य एशिया से पश्चिम एशिया तक जाता था.

(4) साकल, मथुरा, पटना द्वारा तक्षशिला ताम्रलिप्ति के बन्दरगाह से सम्बद्ध होता था. दूसरा मार्ग इस क्षेत्र को बारबरीकम् के बन्दरगाह से जोड़ता था. श्रावस्ती, तक्षशिला, भड़ौच और उज्जैन प्रतिष्ठान से सम्बद्ध थे. मथुरा, उज्जैन, कौशाम्बी, आन्तरिक व्यापार मार्ग को तीन भागों में विभाजित करती थी.

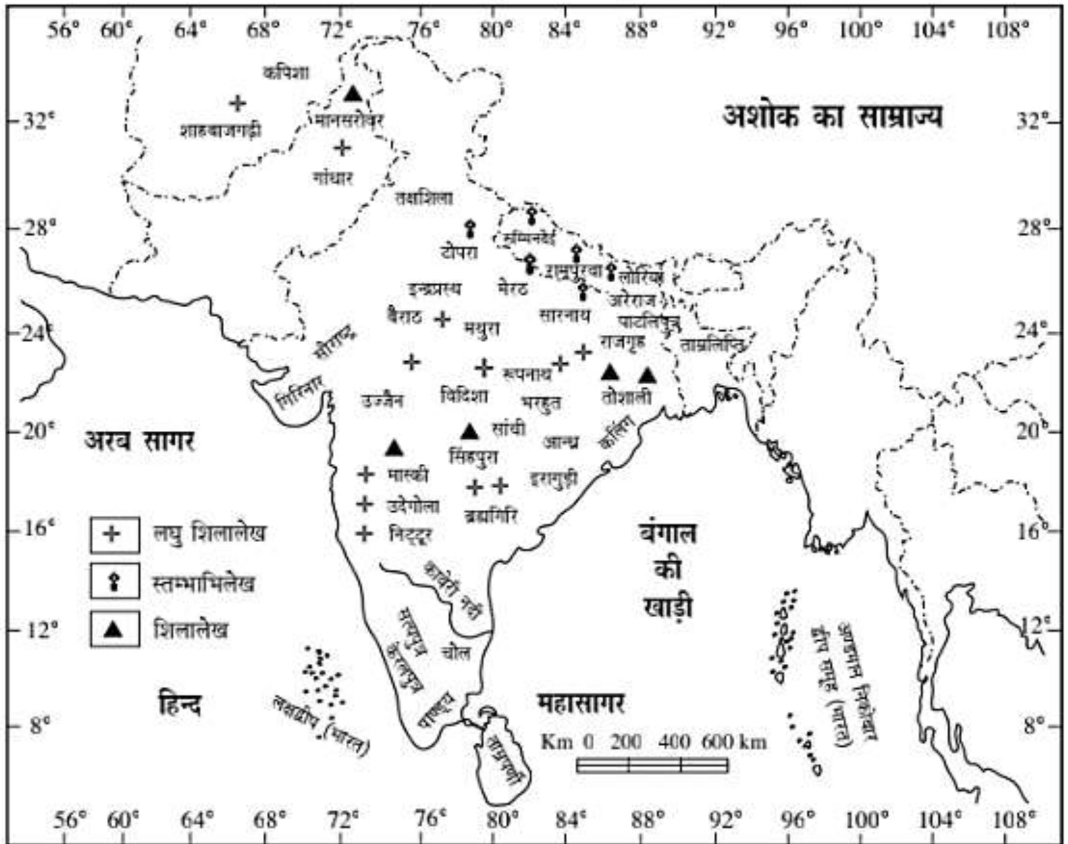
बाह्य व्यापार मार्ग

(1) बाहरी व्यापार भी स्थल एवं समुद्रीय मार्गों से होते थे. तक्षशिला से काबुल होकर दो मार्ग एशिया से रेशम मार्ग से जुड़ते थे.

(2) मुजरीस, तोन्दिस, नौर, सोपारा, भड़ौच ये पश्चिम समुद्र तट के बन्दरगाह थे, जो दक्षिण एवं पश्चिम के व्यापारिक प्रदेशों से सम्बद्ध थे. भड़ौच से बारबरीकम के मार्ग से अरब प्रायद्वीप में होकर पूर्वी रोमन साम्राज्य तक समुद्री मार्ग था.

(3) पूर्वी समुद्र तट पर पोदूयूम, मसूलीपत्तनम् (मछलीपत्तनम्), ताम्रलिप्ति, कावेरीपत्तनम अरिकामेडू बन्दरगाह अवस्थित थे. दक्षिण एवं पूर्व के प्रदेशों में इन्हीं के माध्यम से व्यापारिक सम्पर्क था. यही मार्ग ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से बर्मा (म्यांमार), इण्डो-चाइना, मलाया प्रायद्वीप, इण्डोनेशिया के द्वीपों से व्यापार होता था.

7. अशोक का साम्राज्य (The Empire of Ashoka)



अशोक का साम्राज्य (The Empire of Ashoka)

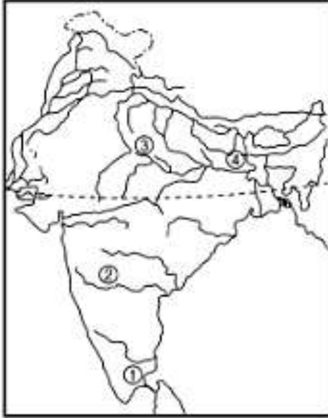
अशोक के अभिलेखों के अनुसार मगध, पाटलिपुत्र, खटविक पर्वत (गया के पास) कौशाम्बी, लुम्बिनी ग्राम, कलिंग (समाना, तौसली, जोगड़) अटवी या आलवी, इसिला, उज्जयिनी, सुवर्णगिरि एवं तक्षशिला अशोक के साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे.

शाहबाजगढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान), मानसेर (पाकिस्तान), कांधार, लमगान (अफगानिस्तान) से भी अशोक के शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जो सिद्ध करते हैं कि उत्तर-पश्चिम में अशोक की सीमा हिन्दुकुश पर्वत तक फैली हुई थी. राजतरंगिणी में अशोक को श्रीनगर का प्रथम सम्राट बताया है. इसी सन्दर्भ में ह्वेनसांग का मानना था कि श्रीनगर का संस्थापक अशोक ही था. नेपाल, देहरादून का तराई क्षेत्र चम्पारण विहार एवं पूर्व में बंगाल तक अशोक का साम्राज्य था. उड़ीसा और गंजाम से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र एवं महाराष्ट्र तक अशोक का राज्य फैला हुआ था. अशोक के अभिलेखों के आधार पर स्पष्ट होता है कि सुदूर दक्षिण और असम के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत अशोक के अधिकार क्षेत्र में आता था.

मानचित्रों से सम्बन्धित विगत वर्षों में आई.ए.एस. (प्री.) में पूछे गए प्रश्न

1. नीचे दिये गये मानचित्र को पहचानिए—

(I.A.S. Pre. 1993)



1, 2, 3 और 4 लिखे हुए स्थल प्रतिनिधित्व करते हैं—

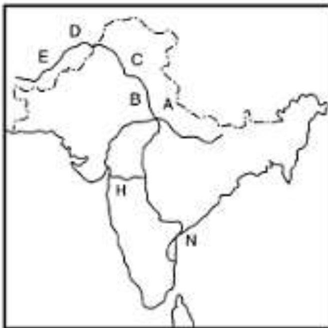
(A) मदुरै, कल्याणी, कान्यकुब्ज, गंडा

(B) तन्जौर, मान्यखेत, कौशाम्बी, रामावती

(C) तन्जौर, मान्यखेत, कान्यकुब्ज, रामावती

(D) उरैयुर, तालाकाड़, अहिच्छत्र, पुण्ड्रनगर

2. आगामी तीन प्रश्न नीचे दिए गए मानचित्र पर आधारित हैं जिसमें मुगलकाल के प्रमुख व्यापार मार्ग प्रदर्शित हैं— *(I.A.S. Pre. 1993)*



(i) H अंकित स्थान किसका द्योतन करता है ?

(A) मुम्बई (B) कैम्बे

(C) सूरत (D) भड़ौच

(ii) N किसका द्योतन करता है ?

(A) विशाखापत्तनम् (B) मद्रास

(C) नागप्पत्तनम् (D) मसूलीपत्तनम्

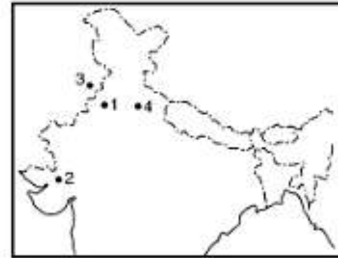
(iii) मार्ग A-E निम्नांकित में से होकर जाता है—

(A) मुल्तान (B) मेरठ

(C) अजमेर (D) लाहौर

3. नीचे दिये गये मानचित्र पर विचार कीजिए—

(I.A.S. Pre. 1993)



1, 2, 3 और 4 अंकित स्थान क्रमशः हैं—

(A) रोपड़, बनावली, सुरकोटड़ा, आलमगीरपुर

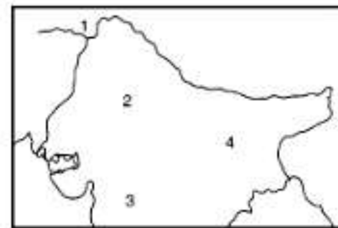
(B) कालीबंगा, सुरकोटड़ा, हड़प्पा, आलमगीरपुर

(C) कालीबंगा, लोथल, हड़प्पा, हुलास

(D) वनवाली, धौलावीरा, मांडा, राखीगढ़ी

4. नीचे दिये गये मानचित्र पर विचार कीजिए—

(I.A.S. Pre. 1994)



मानचित्र में 1, 2, 3 एवं 4 अंकित स्थान क्रमशः हैं—

(A) कौशाम्बी, पुष्कलावती, रोहितक एवं महिष्मती

(B) रोहितक, कौशाम्बी, महिष्मती एवं पुष्कलावती

(C) महिष्मती, रोहितक, कौशाम्बी, पुष्कलावती

(D) पुष्कलावती, रोहितक, महिष्मती एवं कौशाम्बी

5. नीचे दिये गये मानचित्र पर विचार कीजिए—

(I.A.S. Pre. 1994)



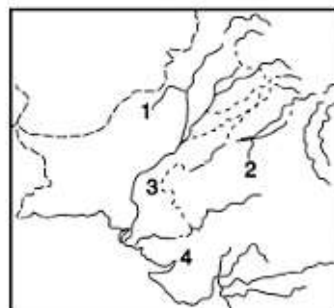
ऊपर मानचित्र में किस समय का मुगल साम्राज्य प्रदर्शित है ?

(A) 1525 (B) 1605

(C) 1707 (D) 1761

6. मानचित्र पर विचार कीजिए जिसमें कुछ पूर्व सिन्धुकालीन स्थल दिये गये हैं—

(I.A.S. Pre. 1996)



वे स्थल जो 1, 2, 3 तथा 4 संख्याओं में चिह्नित क्रमशः हैं—

(A) मेहरगढ़, कोटदीजी, सुरकोटड़ा, कालीबंगा

(B) मेहरगढ़, कालीबंगा, कोटदीजी, सुरकोटड़ा

(C) राणा घुण्डई, बणवाली, सुरकोटड़ा, कोटदीजी

(D) रहमान ढेरी, बणवाली, कुल्ली, थारो

7. नीचे दिए गए मानचित्र पर विचार कीजिए—



मानचित्र में छायाकृत क्षेत्र में निम्नलिखित में से कौनसी संस्कृति पल्लवित हुई ? *(I.A.S. Pre. 1996)*

(A) बनास संस्कृति

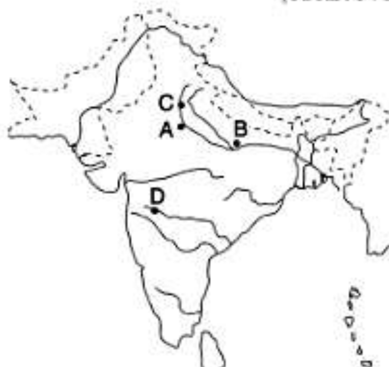
(B) चित्रित धूसर मृद्‌भाण्ड संस्कृति

(C) मालवा संस्कृति

(D) जोर्वे संस्कृति

8. नीचे दिए गए मानचित्र में A, B, C, D से चिह्नित स्थानों को दिए गए विवरणों से सुमेलित कीजिए—

(I.A.S. Pre. 1999)



(1) शरकी राज्य की राजधानी

(2) नील उत्पादन के महत्वपूर्ण केन्द्र

(3) पहले सही गुम्बद का स्थान

(4) आदिलशाही की राजधानी

(5) वह स्थान जहाँ मुहम्मद तुगलक ने अपनी राजधानी स्थानान्तरित की थी

नीचे लिखे कूट का उपयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए—

कूट :

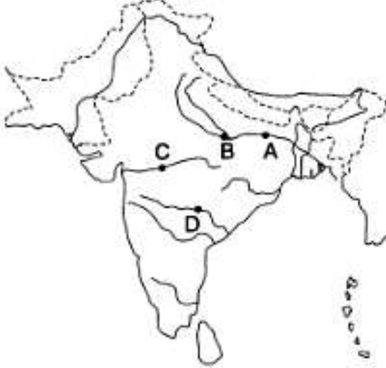
	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	3	2
(B)	2	3	4	5
(C)	2	1	3	5
(D)	4	3	1	2

9. चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में × चिह्नित क्षेत्र का प्रान्तीय राज्यपाल कौन था ? *(I.A.S. Pre. 1988)*



(A) मिनेण्डर
(B) पुष्यगुप्त
(C) तुशस्प
(D) रुद्रदामन

10. नीचे दिए गए मानचित्र में चार स्थल A, B, C और D से चिह्नांकित किए गए हैं– *(I.A.S. Pre. 1999)*



समुद्रगुप्त की दक्षिण विजयों के विस्तृत विवरण का अभिलेख एक अशोक स्तम्भ पर पाया गया है–

(A) A से चिह्नांकित स्थल पर
(B) B से चिह्नांकित स्थल पर
(C) C से चिह्नांकित स्थल पर
(D) D से चिह्नांकित स्थल पर

कूट :

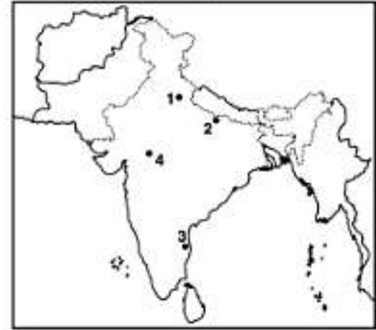
	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	3	2
(B)	2	3	4	5
(C)	2	1	3	5
(D)	4	3	1	2

11. सूची-I (स्थान) को सूची-II (मानचित्र में स्थिति) से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची–I (स्थान)

(a) हड़प्पा स्थल
(b) अवन्ती की राजधानी
(c) पल्लव राजधानी
(d) बौद्ध स्थल

सूची–II (मानचित्र में स्थिति)



कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	3	1
(B)	1	3	4	2
(C)	2	3	4	1
(D)	1	4	3	2

उत्तरमाला

1. (D) 2. (i) (C), (ii) (D), (iii) (D), 3. (B) 4. (D) 5. (B) 6. (B) 7. (C) 8. (C) 9. (B) 10. (B) 11. (D)

प्रश्नकोश
(Question Bank)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौनसे एक हड़प्पा स्थलों के समुच्चय में ऐसे ढाँचे प्राप्त हुए हैं जिनमें अग्नि वेदिकाएँ हैं ?
   (A) चन्हुदड़ो तथा आमरी
   (B) बणवाली तथा कालीबंगा
   (C) हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो
   (D) आलमगीरपुर तथा दयमाबाद

2. हड़प्पा काल का एक काँसे का रथ जिसमें दो बैलों की जोड़ी जुती हुई है और इसे एक नग्न मानव आकृति चला रही है. निम्नलिखित में से किस स्थान से प्राप्त हुआ है ?
   (A) संघोल (B) रोजदी
   (C) कुनाल (D) दयमाबाद

3. हड़प्पा काल की एक अत्यन्त उन्नत जल प्रबंधन व्यवस्था निम्नलिखित में से किस स्थान की खुदाई से प्राप्त हुई है ?
   (A) धौलावीरा (B) लोथल
   (C) कालीबंगा (D) आलमगीरपुर

4. हड़प्पाकालीन लिपि के विषय में निम्नलिखित में से कौनसा एक अधिक सम्भावित है ?
   (A) यह निश्चित रूप से पूर्व द्रविड़ है
   (B) यह निश्चित रूप से संस्कृति समूह से है
   (C) यह वर्णानुक्रमिक नहीं, बल्कि मुख्यतः चित्रलिपि है
   (D) इन लिपियों में प्रयुक्त भाषा का निश्चय ही सुमेरीय सम्बन्ध है

5. ताँबे की एक मानवाकृतीय आकृति निम्नलिखित में से किस स्थान के हड़प्पा स्तरों से प्राप्त हुई है ?
   (A) लोथल (B) कालीबंगा
   (C) हड़प्पा (D) रोजदी

6. 'ब्रह्म' का आविर्भाव एक परम सत्ता के रूप में हुआ—
   (A) ऋग्वेद
   (B) ब्राह्मण काल में
   (C) आरण्यक काल में
   (D) उपनिषद् काल में

7. गंगा-यमुना घाटी के उत्तर-वैदिककालीन लोगों की भौतिक संस्कृति की जानकारी प्राप्त की जा सकती है—
   (A) गेरु-रंजित मृद्भांडों से
   (B) चित्रित धूसर मृद्भांडों से
   (C) काले तथा लाल मृद्भांडों से
   (D) उत्तरी काले पॉलिश वाले मृद्भांडों से

8. सूची-I (सूत्र साहित्य) को सूची-II (उनमें वर्णित विषय) से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) कल्प	1. व्युत्पत्ति विज्ञान
(b) शिक्षा	2. स्वर विज्ञान
(c) निरुक्त	3. अनुष्ठान
(d) छंद	4. चतुष्पदी वृत्त

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	1	4
(B)	3	2	4	1
(C)	2	3	4	1
(D)	2	3	1	4

9. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) तिरुक्कुरल	1. इलंगो आदिगल
(b) शिलाप्पाधिकारम	2. सात्तनार
(c) मणिमेकलै	3. तोलकाप्पियर
(d) तोलकाप्पियम	4. तिरुवल्लुवर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	1	4	3	2
(C)	4	1	3	2
(D)	1	4	2	3

10. संगम तमिलों का प्राचीनतम् उपलब्ध ग्रन्थ है—
(A) पट्टिनपाल्लै (B) तिरुमुरुगारुप्पडै
(C) मदुरैकाँची (D) तोलकाप्पियम

11. निम्नलिखित में से कौनसा कारक बौद्ध धर्म के उद्भव के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी था ?
(A) आदिम राज्य का एक भूभागीय राज्य के रूप में परिवर्तन
(B) लोहे के बढ़ते हुए प्रयोग का प्रभाव
(C) श्रेणी व्यवस्था का विकास
(D) क्षत्रियों द्वारा ब्राह्मणों के प्रभुत्व को चुनौती

12. निम्नलिखित में से कौनसा एक बौद्ध संप्रदाय मठवासीय जीवन की आवश्यकता भगवान बुद्ध के स्मृतिचिह्नों की पूजा केवल स्वयं के मोक्ष प्राप्ति तथा इसमें विश्वास कि भगवान् बुद्ध फिर पैदा नहीं होंगे, जैसे विचारों पर बल देता है ?
(A) हीनयान (B) महायान
(C) वज्रयान (D) लामावाद

13. भारत में संगमरमर की सर्वोत्तम नक्काशी के लिए प्रसिद्ध मन्दिर अवस्थित था—
(A) ग्वालियर (B) किराडू में
(C) मोधेरा में (D) दिलवाड़ा में

14. प्राचीन भारत के निम्नांकित शासकों में से कौन जैन धर्म के संरक्षक थे ?
(1) श्रेणिक बिम्बिसार (2) चन्द्रगुप्त मौर्य
(3) खारवेल
नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—
कूट :
(A) (1), (2) और (3) (B) (1) और (2)
(C) (2) और (3) (D) (1) और (3)

15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) बलराम	1. युद्ध की कुल्हाड़ी
(b) राम	2. वीना
(c) कल्कि	3. धनुष तथा बाण
(d) वामन	4. अश्व तथा तलवार

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	4	3
(B)	2	3	1	4
(C)	1	3	4	2
(D)	3	1	4	2

16. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) विश्वनाथ	1. पुरी
(b) वासुदेव	2. मदुराई
(c) मीनाक्षी	3. काशी
(d) एकनांसा अथवा भद्र	4. मथुरा

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	1	3	4
(B)	3	1	2	4
(C)	3	4	2	1
(D)	2	3	4	1

17. निम्नलिखित में से कौनसे मौर्यकाल की भौतिक संस्कृति के आधार थे ?
(1) लोहे का अत्यधिक प्रयोग
(2) आहत सिक्कों का बाहुल्य
(3) उत्तरी काले पॉलिश वाले मृद्भांडों की प्रचुरता
(4) पकी हुई ईंटों का प्रयोग
(5) वलय कूपों प्रयोग
नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—
कूट :
(A) (1), (2), (3) और (5)
(B) (1), (3) और (4)
(C) (2), (4) और (5)
(D) (1), (2), (3), (4) और (5)

18. निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है ?
    (A) चौदह प्रमुख शिलालेख—धर्म के विभिन्न सिद्धान्त
    (B) सात स्तम्भ शिलालेख—शिलालेख के परिशिष्ट
    (C) भाब्रू अभिलेख—अशोक का नवीन प्रशासन
    (D) बराबर गुफा अभिलेख—अशोक की सहिष्णुता

19. गुप्तकाल में भगकर से तात्पर्य था—
    (A) भूमि कर (B) विक्री कर
    (C) बंजर भूमि पर कर (D) खदानों पर कर

20. परवर्ती गुप्तकाल में मुद्रा अथवा सिक्कों की कमी से निम्नलिखित में से कौनसा एक अनुमान लगाया जा सकता है ?
    (A) व्यापार का ह्रास
    (B) मुद्रा अर्थव्यवस्था का ह्रास
    (C) स्वर्ण की अनुपलब्धता
    (D) ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आत्मनिर्भरता

21. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) सेट्ठि	1. स्वर्ण मुद्रा
(b) श्रेणि	2. काँस्य तथा ताम्र मुद्रा
(c) निश्क	3. श्रेणी के प्रमुख
(d) कांस	4. श्रेणी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	4	2	1
(B)	4	3	1	2
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	2	1

22. गुप्तोत्तर कृषि भूमि सम्बन्धी संरचना के विषय में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही नहीं है ?
    (A) भू-स्वामी मध्यस्थ वर्ग का आविर्भाव इसकी विशेषता थी
    (B) इस काल में अधीनस्थ कृषकों की संवृद्धि हुई
    (C) राजवंश का निर्बाध भू-स्वामित्व इसका मूलधार था
    (D) कृषि भूमि व्यवस्था के विस्तार के साक्ष्यों में बढ़ोत्तरी मिलती है

23. निम्नलिखित में से कौनसी गुप्तोत्तर कृषि भूमि संरचना की प्रमुख विशिष्टताएँ हैं ?
    (1) भारत के विभिन्न भागों में बड़ी संख्या में भूमि अनुदान प्रदान करना.
    (2) भूमि पर सामुदायिक अधिकारों को समाप्त करना.
    (3) कृषकों का अधीनीकरण.
    नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—
    कूट :
    (A) (1) और (2) (B) (2) और (3)
    (C) (1) और (3) (D) (1), (2) और (3)

24. निम्नलिखित में से कौनसे वक्तव्य भारत में सामंतवाद पहलू की व्याख्या करते हैं ?
    (1) राजा अपने अधिकारियों को वेतन के स्थान पर भूमि अनुदान देता था.
    (2) कृषि कार्य शूद्र कृषकों द्वारा किया जाता था.
    (3) कुछ शक्तिशाली सामंतों के अपने उपसामंत होते थे.
    नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—
    कूट :
    (A) (1), (2) और (3) (B) (1) और (2)
    (C) (2) और (3) (D) (1) और (3)

25. प्रारम्भिक मध्य युग में भू-अनुदान व्यवस्था का अस्तित्व नहीं था—
    (A) उड़ीसा (B) उत्तर प्रदेश में
    (C) पंजाब में (D) राजस्थान में

26. जिस स्थान पर प्रथम सती स्तम्भ जो 510 ई. में पाया गया है, वह है—
    (A) एरण में (B) छोटे गाँव में
    (C) लोथल में (D) डांगवाडा में

27. निम्नलिखित में से किस प्राचीन स्मृतिकार ने उत्तराधिकार के विषय में विधवाओं को पुत्र के बाद स्थान दिया है ?
    (A) याज्ञवल्क्य (B) मनु
    (C) बृहस्पति (D) कात्यायन

28. 'ज्योतिष वेदांग' तथा 'सूर्य-प्रज्ञाप्ति' जैसे ग्रन्थों को किस श्रेणी में रखा जा सकता है ?
    (A) ब्रह्माण्ड-विज्ञान
    (B) ज्योतिष
    (C) खगोल-विज्ञान
    (D) जन्म-कुण्डली शास्त्र (होरोस्कोपी)

29. निम्नलिखित में से कौनसा स्थान स्मारकीय मन्दिर स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है ?
    (A) अरिक्कमेडु (B) अमरावती
    (C) गंगैकोंडचोलपुरम (D) उत्तरमेरूर

30. निम्नलिखित में से कौनसा एक चैत्य गोलाकार है ?
(A) भज (B) विदशा
(C) जुन्नर (D) कार्ले

31. निम्नलिखित में से कौन एक हड़प्पा संस्कृति की सुदूर पश्चिमी बस्ती थी ?
(A) लोथल (B) सुत्कगेण्डोर
(C) रंगपुर (D) मांडा

32. हड़प्पीय सीलों का सर्वाधिक प्रचलित प्रकार कैसा है ?
(A) चौकोर (B) गोल
(C) बेलनाकार (D) अंडाकार

33. पकी मिट्टी का बना हल का एक प्रतिरूप कहाँ से प्राप्त हुआ है ?
(A) कालीबंगा (B) बणवली
(C) राखीगढ़ी (D) रंगपुर

34. निम्नलिखित नगरों में से क्षेत्रफल में सबसे अधिक विस्तृत था–
(A) मोहनजोदड़ो (B) हड़प्पा
(C) धोलावीरा (D) कालीबंगा

35. दशराज्ञ युद्ध का विजेता सुदास किस जन से सम्बद्ध था ?
(A) अनु (B) द्रुह्य
(C) भरत (D) शिवि

36. वेदांग में किनका समावेश है ?
(A) कल्प, शिक्षा, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष
(B) कल्प, शिक्षा, ब्राह्मण, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष
(C) कल्प, शिक्षा, निरुक्त, आरण्यक, छन्द, ज्योतिष
(D) कल्प, उपनिषद्, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष

37. अपनी रचना में नन्दों एवं मौर्यों का उल्लेख करने वाला प्राचीन तमिल कवि कौन है ?
(A) सत्तनार (B) इलंगो आदिगल
(C) कपिलर (D) मामूलनार

38. संगम साहित्य में उल्लिखित शब्द नडुकल–
(A) वेलिर राजा से सम्बन्धित था
(B) स्मरण-प्रस्तर के अर्थ में प्रयुक्त होता था
(C) नाडुओं पर एक कर था
(D) भारत-रोम व्यापार में एक निर्यात की वस्तु था

39. निम्नलिखित में से चार स्थानों में हुई बौद्ध संगीतियों का सही कालक्रम क्या है ?
(1) वैशाली (2) राजगृह
(3) कुंडलवन (4) पाटलिपुत्र

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

कूट :
(A) (1), (2), (3), (4) (B) (4), (3), (2), (1)
(C) (2), (1), (3), (4) (D) (2), (1), (4), (3)

40. परम्परानुसार थेरवाद सम्प्रदाय के प्रवर्तक महाकच्चायन कहाँ के थे ?
(A) सिंहल (B) अवन्ति
(C) गन्धार (D) मगध

41. महासंघिकों के अनुसार जीव किससे निर्मित है ?
(A) पंच धर्म (B) सप्त धर्म
(C) नव धर्म (D) अष्टादश धर्म

42. निम्नलिखित में से कौनसा एक बौद्ध सम्प्रदाय था जिसकी मान्यता थी कि दृश्य जगत के सारभूत अंश पूर्णतः क्षणिक नहीं हैं, अपितु अव्यक्त रूप में सदैव विद्यमान रहते हैं ?
(A) सौत्रान्तिक (B) स्थविरवादिन
(C) सर्वस्तवादिन (D) सम्मितीय

43. निम्नलिखित में से कौन अन्य देवताओं के साथ चक्रेश्वरी देवी की पूजा करते थे ?
(A) भागवत (B) शैव
(C) जैन (D) बौद्ध

44. जैन धर्म के विषय में निम्नलिखित में से क्या सही है ?
(1) इसकी वेदान्त दर्शन से सजातीयता है.
(2) इसकी सांख्य दर्शन के साथ सजातीयता है.
(3) इसने आत्मा की अवधारणा को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया था.
(4) इसके अनुसार जगत दो नित्य कोटियों अर्थात् जीव एवं अजीव निर्मित है.

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–
(A) (1) एवं (3) (B) (2) और (3)
(C) (3) एवं (4) (D) (2) और (4)

45. प्रारम्भिक भागवत धर्म के निम्नलिखित में से कौनसे प्रमुख लक्षण–
(1) भक्ति (2) कर्म
(3) ज्ञान (4) सामाजिक कट्टरता
(5) त्याग

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–
(A) (1) एवं (3)
(B) (1), (2), (3) एवं (5)

(C) (1), (2), (4) एवं (5)
(D) (2), (3) एवं (5)

46. निम्नलिखित में से किस ऐतिहासिक स्थल से पंच वृष्णि वीरों का उल्लेख करने वाला एक प्राचीनतम अभिलेख मिला है ?
(A) घोसुंडी (B) वेसनगर
(C) द्वारिका (D) मथुरा

47. अम्बिका का रुद्र की भगिनी के रूप में कहाँ उल्लेख है ?
(A) वाजसनेयी संहिता
(B) शतपथ ब्राह्मण
(C) तैत्तरीय आरण्यक
(D) शिव पुराण

48. शलाका-पुरुष की अवधारणा किनसे सम्बद्ध है ?
(A) पाशुपात (B) जैन
(C) बौद्ध (D) भागवत

49. बिन्दुसार के शासनकाल में कहाँ पर विद्रोह हुआ था ?
(A) उज्जयिनी (B) पुष्कलावती
(C) तक्षशिला (D) राजगृह

50. किसके ग्रन्थ में चन्द्रगुप्त का विशिष्ट रूप से वर्णन हुआ है ?
(A) भास (B) विशाखादत्त
(C) अश्वघोष (D) भवभूति

51. खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ति किससे हुई ?
(A) चित्रलिपि (B) कीलाक्षर लिपि
(C) अरमाइक (D) ब्राह्मी

52. कुछ ऐतिहासिक स्रोतों में प्रयुक्त चित्रपट शब्द का तात्पर्य है—
(A) चित्रित वर्णन
(B) कामरूप के वस्त्र
(C) चित्रकारी के लिए कैनवास
(D) भित्ति चित्र

53. तौल एवं मानों के राजकीय प्रमाणीकरण एवं उनके आवधिक निरीक्षण का विधान जिसने किया है ?
(A) मनु (B) नारद
(C) वृहस्पति (D) पाराशर

54. अदरक एवं दालचीनी बहुत मात्रा में पाण्ड्य देश में उत्पन्न होती थी, इस बात का उल्लेख किसने किया है ?
(A) मेगस्थनीज (B) टॉलेमी
(C) इब्न सैद (D) मार्को पोलो

55. निम्नलिखित में से किसके सिक्कों की एक श्रेणी का बोध होता है ?
(A) गजशतक (B) गंधिक
(C) हिरण्यदाम (D) कटिसभ

56. निम्नलिखित में से कौन चेर राज्य के अंग थे ?
(1) कोरकई (2) मुजिरि
(3) पुहार (4) सालियूर
(5) तोण्डै
नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1), (2) एवं (4)
(B) (2) एवं (5)
(C) (2), (3) एवं (4)
(D) (3), (4) एवं (5)

57. महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र प्रतिष्ठान किस नदी के किनारे अवस्थित था ?
(A) कावेरी (B) कृष्णा
(C) गोदावरी (D) नर्मदा

58. कुछ स्रोतों में उल्लिखित चोर रज्जु शब्द का तात्पर्य है ?
(A) भूमि-माप की एक इकाई
(B) पुलिस अधिकारियों का एक वर्ग
(C) एक प्रकार का कर
(D) चोरों की रस्सी

59. दक्षिण भारत में चोलों एवं उनके उत्तराधिकारियों के काल में कृषकों के संघ का अभियान था—
(A) आलुमगणभ (B) नानादेसी
(C) चित्तिरमेली (D) एञ्जूर्रूवर

60. निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है ?
(A) क्षौम — कपड़ा
(B) पाद — सिक्कों का मूल्य वर्ग
(C) आढ़क — वास्तु-खंड
(D) द्रोण — वर्षा का मान

61. गुप्तकाल में पूर्वी भारत में ग्रामीण काश्तकारों के लिए निम्नलिखित में से किन शब्दों का प्रयोग होता था ?
(1) अग्रहारिन् (2) कुटुम्बिन
(3) महत्तर (4) भोगिक
नीचे दिये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (3) एवं (4)
(C) (1) एवं (4) (D) (2) एवं (3)

62. दक्षिण भारतीय समाज का वेलंगै (दक्षिण हस्त) एवं इड़ंगै (वामहस्त) भेद सर्वप्रथम किस काल में दृष्टिगोचर होता है ?
(A) संगम काल में (B) पल्लव काल में
(C) चोल काल में (D) नायक काल में

63. कुछ ब्राह्मण मतावलम्बी ग्रन्थों के अनुसार निम्नलिखित में से कौनसी अन्य जातियाँ थी ?
(1) वेन (2) भेद
(3) लोकायतिक (4) नास्तिक
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
(A) (1), (2), (3) एवं (4)
(B) (1), (2) एवं (3)
(C) (1), (2) एवं (4)
(D) (3) एवं (4)

64. "जीवन में सेवा उसका हिस्सा था." यह किस पर लागू होता था ?
(A) बौद्ध भिक्षु (B) वैश्य वर्ण
(C) शूद्र वर्ण (D) चाण्डाल

65. निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सुमेलित नहीं है ?
(A) राजशेखर — काव्यमीमांशा
(B) उद्योतन — कुवलयमाला
(C) बल्लालसेन — दायभाग
(D) लक्ष्मीधर — कृत्यकल्पतरू

66. भवभूतिकृत 'मालतीमाधव' निम्नलिखित में से किनके अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है ?
(A) दिगम्बर जैन (B) कापालिक
(C) बौद्धतान्त्रिक (D) भागवत

67. निम्नलिखित में से किसके द्वारा सम्पादित 'हिरण्यगर्भयज्ञ' में गुर्जर राजा आदि ने द्वारपालों का कार्य किया था ?
(A) धर्मपाल (B) देवपाल
(C) दन्तिदुर्ग (D) अमोघवर्ष

68. कश्मीर की रानी दिद्दा ने कब शासन किया था ?
(A) सातवीं शताब्दी में (B) आठवीं शताब्दी में
(C) नवमी शताब्दी में (D) दसवीं शताब्दी में

69. प्रसिद्ध लेखक क्षेमेन्द्र कहाँ रहते थे ?
(A) बंगाल में (B) कश्मीर में
(C) महाराष्ट्र में (D) गुजरात में

70. राजेन्द्र चोल द्वारा विजित कौसलेनाडू की स्थिति किस नदी के तट पर थी ?
(A) गोदावरी (B) सरयू
(C) महानदी (D) ताप्ती

71. पूर्व मध्यकालीन दक्षिण भारतीय राजतन्त्र में 'उडम्न कुट्टम' शब्द का तात्पर्य था ?
(A) चोल राज्य में लघु राज्यों का एक समूह
(B) चोलों के अन्तर्गत अधिकारियों का एक समूह
(C) होयसल राज्य में लगने वाला एक कर
(D) चोलों द्वारा सम्पोषित एक नौसेना

72. निम्नलिखित में से कौन 'फाह्यान' शासन के केन्द्र में थे ?
(1) लाट (2) शाकम्बरी
(3) मड्डूल (4) धवगर्ता
(A) (1), (3) एवं (4) (B) (1), (2) एवं (3)
(C) (1), (2) एवं (4) (D) (2), (3) एवं (4)

73. छायालोक है ?
(A) एक महाकाव्य
(B) साहित शास्त्र पर एक ग्रन्थ
(C) एक नाटक
(D) बौद्ध ज्ञान मीमांसा का एक ग्रन्थ

74. पाल शासक देवपाल एक द्रविड़ राजा को हराने का दावा करता है; जिसका तादात्म्य प्रायः निम्नलिखित में से किया जाता है ?
(A) दन्तिदुर्ग (B) अमोघवर्ष
(C) ध्रुव (D) कृष्ण II

75. महाअक्षपटलिक निम्नांकित का प्रभारी था—
(A) रथ (B) नौ सेना
(C) लेखा (D) पदाति

76. चन्देल राजवंश की नींव किसने डाली थी ?
(A) वाक्पति (B) नन्नुक
(C) जयशक्ति (D) हर्ष

77. राजतरंगिणी के अनुसार निर्वाचन द्वारा सिंहासन प्राप्त करने वाला राजा कौन था ?
(A) धर्मपाल (B) पारास्कर
(C) नन्दिवर्मन (D) करिकालन

78. वृहस्पति के अनुसार शिल्पकारों की कितनी श्रेणियाँ थीं ?
(A) दो (B) चार
(C) छः (D) आठ

79. निम्नलिखित में से कौनसा हड़प्पा संस्कृति का स्थल है, जहाँ से फारस की खाड़ी की मुद्रा उत्खनन से प्राप्त हुई थी ?
(A) मोहनजोदड़ो (B) धौलावीरा
(C) लोथल (D) कालीबंगा

80. आमरी संस्कृति कहाँ पनपी ?
(A) कच्छ क्षेत्र (B) अफगानिस्तान
(C) ब्लूचिस्तान (D) सिन्ध

81. कौनसी फसल हड़प्पा संस्कृति के लोगों को ज्ञात नहीं थी ?
(A) चावल (B) कपास
(C) रागी (D) यव

82. निम्नलिखित में से कौन एक ठीक सुमेलित है ?
(A) सुरकोटड़ा – जुता हुआ खेत
(B) हड़प्पा – अश्व के अवशेष
(C) रंगपुर – धान की भूसी
(D) चन्हुदाड़ो – गढ़ क्षेत्र

83. हड़प्पा संस्कृति की बहुसंख्यक मुहरें निर्मित हैं–
(A) पकी मिट्टी से (B) प्रकाचित वस्तु (फायन्स)
(C) अकीक (D) सेलखड़ी से

84. निम्नलिखित में से किस वस्तु का निर्यात मेलुहा से होता था, जिसकी कभी हड़प्पा क्षेत्र के रूप में पहचान की जाती थी ?
(1) काली लकड़ी (2) हाथीदाँत
(3) सोना (4) सीसा
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–
कूट :
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (1), (2) एवं (4)
(C) (1), (3) एवं (4) (D) (2), (3) एवं (4)

85. निम्नलिखित में से कौन उपनिषदों में उल्लिखित कैकेय जनपद का एक दार्शनिक राजा था ?
(A) जावालि प्रवहण (B) जमदग्नि
(C) श्रुतसेन (D) अश्वपति

86. नीललोहित जो वैदिक ग्रन्थों में उल्लिखित एक प्रकार का मृद्भाण्ड है, किससे अभिन्न माना जा सकता है ?
(A) चित्रितधूसर मृद्भाण्ड
(B) लाल भाण्ड
(C) कृष्ण एवं लाल भाण्ड
(D) उत्तरी कृष्ण चमकदार भाण्ड

87. वैदिक ग्रन्थों में ऊसर भूमि का व्यंजक शब्द है–
(A) व्रज (B) कुल्या
(C) सुयवस् (D) खिल्ल

88. ऋग्वेद में उल्लिखित यदु एवं तुर्वस थे–
(A) दो सेनानायक (B) दो भाई
(C) दो राजा (D) दो जन

89. दक्षिण भारत के इतिहास में निम्नलिखित का सही क्रम क्या है ?
(1) मौर्य शासन का विस्तार
(2) महापाषाण संस्कृति का विस्तार
(3) संगम युग
(4) पल्लव प्रभुत्व
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए–
कूट :
(A) (2), (3), (1), (4) (B) (2), (1), (3), (4)
(C) (2), (1), (4), (3) (D) (1), (2), (3), (4)

90. निम्नलिखित में से पूर्वकालीन तमिल साहित्य में उल्लिखित पथकर है–
(A) पडुपोरुल (B) इडुपोरुल
(C) उल्क (D) उरुपोरुल

91. 'उपोसथ' का आचरण कौन करते थे ?
(A) नियतकालीन उपवास द्वारा ब्राह्मण धर्मानुयायी विधवाएँ
(B) सभा में बौद्ध भिक्षु
(C) वाह्य वस्तुओं में आनन्द के प्रतीकात्मक त्याग के रूप में कापालिक
(D) अपनी शक्ति पूजा के अंग के रूप में तान्त्रिक

92. निम्नलिखित में से किसे यक्ष एवं यक्षणियों की पूजा में विश्वास था ?
(1) ब्राह्मण धर्म (2) कालामुख सम्प्रदाय
(3) बौद्ध धर्म (4) जैन धर्म
नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए–
कूट :
(A) (1), (2) और (3) (B) (1), (2) और (4)
(C) (1), (3) और (4) (D) (2), (3) एवं (4)

93. मानव व्यक्तित्व पंच स्कन्धों से निर्मित है, यह सिद्धान्त किससे सम्बद्ध है ?
(A) बुद्ध (B) महावीर
(C) पार्श्वनाथ (D) मस्करिपुत्र गोशाल

94. अष्टांगिक मार्ग की अवधारणा किसका विषय है ?
(A) धर्मचक्रप्रवर्तनसूत्त (B) दिव्यावदान
(C) दीपवंश (D) महापरिनिर्वाण सूत्त

95. नागार्जुन के शून्यवाद का प्रतिपादन किया गया है–
(A) योगाचार में (B) वैभाषिक में
(C) माध्यमिक में (D) सौत्रान्तिक में

96. पूर्व शैल किसकी शाखा थे ?
(A) बौद्ध धर्म के स्थविरवाद सम्प्रदाय की
(B) बौद्ध धर्म के महासंघिक सम्प्रदाय की
(C) जैन धर्म के श्वेताम्बर सम्प्रदाय की
(D) पूर्व मीमांसकों की

97. निम्नलिखित में से कौन केवल प्रत्यक्ष प्रमाण स्वीकार करता है ?
(A) मीमांसा (B) न्याय
(C) सांख्य (D) लोकायत (चार्वाक)

98. जैन तीर्थंकरों के जीवन वृत्त कहाँ उपलब्ध है ?
(A) भगवती सूत्र में (B) कल्पसूत्र में
(C) नियमावली सूत्र में (D) उवासदगसाओ

99. कौन पर्वत जैनों में पाये जाते हैं/जाता हैं ?
(1) अर्बुदगिरि (2) शत्रुजंयगिरि
(3) चन्द्रागिरि (4) ऊर्जयन्त गिरि
(A) केवल (1) (B) (1) एवं (3)
(C) (2) एवं (4) (D) (1), (2), (3) एवं (4)

100. वृष्णि वंश के पंचवीरों में साम्ब किसके पुत्र थे ?
(A) रोहिणी (B) रुकमणि
(C) जाम्बवती (D) देवकी

101. निम्नलिखित में से किन राजशक्तियों के अभिलेखों में स्कन्द की पूजा का उल्लेख है ?
(1) सातवाहन (2) यौधेय
(3) इक्ष्वाकु (4) चेदि
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर चुनिए—
(A) (1) और (2) (B) (1) और (3)
(C) (2) और (3) (D) (3) और (4)

102. सात्वत विधि शब्द का तात्पर्य है–
(A) तांत्रिक कार्य (B) भागवत अनुष्ठान
(C) महायान दर्शन (D) लकुलीश पूजा की विधि

103. निम्नलिखित में से वे कुषाण राजा कौन थे जिनके सिक्कों पर शिव एवं नन्दी अथवा शिव का कोई आयुध अंकित है ?
(1) हुविष्क (2) कनिष्क
(3) कुजुलकदफिसस (4) विमकदफिसस
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (2), (3) एवं (4)
(C) (1), (3) एवं (4) (D) (1), (2) एवं (4)

104. 'पेरियपुराणम्' किस विषय का ग्रन्थ है ?
(A) बंगाली वैष्णव धर्म (B) तमिल शैव धर्म
(C) कश्मीर शैव धर्म (D) गुणोत्तर शाक्त धर्म

105. कला एवं साहित्य में गोपियाँ—कृष्ण कथा की प्रमुख अंग कब बनी ?
(A) शुंगकाल में (B) कुषाण काल में
(C) गुप्तकाल में (D) पूर्व मध्यकाल में

106. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (स्रोत)	**सूची-II (चन्द्रगुप्त मौर्य के विषय में सूची-I में दिये गये स्रोतों में सूचना सही या गलत)**
(a) यूनानी स्रोत	1. वह साधारण कुल में पैदा हुआ था.
(b) जैन स्रोत	2. वह एक क्षत्रिय प्रमुख का पुत्र था.
(c) बौद्ध स्रोत	3. वह शूद्र था.
(d) ब्राह्मण स्रोत	4. वह ग्राम के मुखिया की दुहिता का पुत्र था.
	5. वह जैन था.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	5	3	1
(B)	1	3	4	2
(C)	1	4	2	3
(D)	3	5	2	4

107. निम्नलिखित में से किसमें चन्द्रगुप्त सभा (चन्द्रगुप्त मौर्य की परिषद्) का उल्लेख है ?
(A) अर्थशास्त्र (B) मुद्राराक्षस
(C) महाभाष्य (D) परिशिष्टपर्व

108. वह मौर्य राजा जो अमित्रघात के नाम से भी जाना जाता था कौन था ?
(A) बिन्दुसार (B) दशरथ
(C) ग्रहवर्मन (D) बृहद्रथ

109. चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में सौराष्ट्र में सुदर्शन तड़ाग के निर्माण का श्रेय निम्नलिखित में से किसे है ?
(A) यवनराज तुसाष्प (B) पर्णदत्त
(C) पह्लव सुविशाख (D) वैश्य पुष्यगुप्त

110. निम्नलिखित में से किनमें उन राजकीय अन्नागारों का उल्लेख है, जिनकी स्थापना ईसा पूर्व समय में दुर्भिक्ष की विपत्ति से निपटने के लिए की गई थी ?
(A) रामपुरवा एवं लौरिया नन्दनगढ़ स्तम्भाभिलेख

(B) गिरनार एवं जौगड़ शिलाभिलेख
(C) मास्की एवं बैराठ लघु शिलाभिलेख
(D) सोहगौरा एवं महास्थानगढ़ फलक अभिलेख

111. अशोक ने कहाँ चोल, पाण्ड्य, केरलपुत्र और सत्यपुत्रों का अपनी पड़ोसी शक्तियों के रूप में उल्लेख किया है ?
(A) शिलालेख II
(B) शिलालेख XIII
(C) स्तम्भलेख VII
(D) लघु शिलालेख

112. जातकों में उल्लिखित हीनसिप्प निम्नलिखित में से कौन है ?
(1) काष्ठशिल्पी
(2) कसाई
(3) व्याध एवं फन्दा शिकारी
(4) दन्तकार
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2) एवं (3) (D) (3) एवं (4)

113. नीचे प्रस्तुत चार राजवंशों में से किसने सीसे के सिक्के चलाए थे ?
(1) मौर्यवंश (2) सातवाहन
(3) पश्चिमी क्षत्रप (4) गुप्त
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2), (3) एवं (4) (D) (3) एवं (4)

114. प्राचीन स्रोतों में वर्णित पलूर बन्दरगाह किसके तट पर स्थित था ?
(A) केरल (B) बंग
(C) कलिंग (D) आन्ध्र

115. भारत में नारियल की खेती कब से ज्ञात है ?
(A) मौर्यकाल से
(B) सातवाहन एवं क्षत्रपों के काल से
(C) गुप्तकाल से
(D) पल्लव एवं पश्चिमी गंगकाल से

116. निम्नलिखित में से कौन सही सुमेलित नहीं है ?
(A) अंगुल — रेखिक माप की इकाई
(B) वेलि — स्थान नापने की इकाई
(C) कलम — तरल मापन की इकाई
(D) कलंजु — भार की इकाई

117. प्राचीन स्रोतों में वर्णित निम्नलिखित में से कौनसे शब्द भूमिमाप के व्यंजक हैं ?
(1) निवर्तन (2) कुल्यावाप
(3) द्रोणवाप (4) रथ्या
नीच दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (2) एवं (3)
(C) (1), (2) एवं (3) (D) (3) एवं (4)

118. विवाहों के निम्नलिखित प्रकारों में से किसमें वर द्वारा वधु शुल्क दिया जाता था ?
(A) ब्रह्म (B) राक्षस
(C) पिशाच (D) असुर

119. किस चोल शासक ने राष्ट्रकूटों से तौण्डैमण्डलम छीन लिया था ?
(A) परान्तक I (B) सुन्दर चोल
(C) राजराज I (D) कुलोतुंग I

120. चोल प्रशासकीय व्यवस्था में सभा—
(A) ग्राम अदालत थी
(B) अग्रहारों में व्यस्क लोगों का समुदाय थी
(C) मन्दिर की व्यवस्था के लिए सभी जातियों के लोगों की एक समिति थी
(D) नाहारों की समिति थी

121. चट्टान काटकर बनाया हुआ कैलाश का मन्दिर कहाँ स्थित है ?
(A) एलिफेन्टा (B) एलोरा
(C) बादामी (D) महाबलीपुरम्

122. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) प्रतिहार	1. सुवर्णगिरि
(b) चालुक्य	2. चन्द्रावती
(c) चौहान	3. अनहिलपाटक
(d) परमार	4. कान्यकुब्ज
	5. कल्याणी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	4	1
(B)	4	3	1	2
(C)	1	2	4	2
(D)	3	5	2	4

123. निम्नलिखित में से किसकी मणिग्राम के रूप में ख्याति थी ?
(A) जौहरियों की बस्ती
(B) यक्ष मणिभद्र की पूजा का प्रमुख स्थान
(C) व्यापारियों का एक संघ
(D) चोल राज्य में ब्राह्मणों को प्रदत्त कर मुक्त ग्राम

124. एकान्त रमय्या के नाम का सम्बन्ध किससे है ?
(A) श्री वैष्णव धर्म (B) कालामुख सम्प्रदाय
(C) वीर शैव धर्म (D) जैन धर्म

125. बौद्ध मठ शैलेन्द्र चूड़ामणि विहार को किसने भूमिदान दिया था ?
(A) पाल राजा देवपाल ने
(B) चोल राजा कुलोतुंग ने
(C) पाण्ड्य राजा सुन्दर पाण्ड्य ने
(D) पल्लव राजा नरसिंहवर्मन् ने

126. सन् 1100-1300 ई. की अवधि में ताड़पत्रों पर निष्पादित लघु हस्तलिपि चित्रों के लिए निम्नलिखित में से कौन एक क्षेत्र प्रसिद्ध है ?
(A) केरल (B) दक्कन
(C) चोल राज्य (D) पश्चिमी भारत

127. एक विशाल बौद्ध विहार का स्थल सोमपुर कहाँ था ?
(A) पूर्वी विहार (B) उत्तरी विहार
(C) उत्तरी बंगाल (D) दक्षिणी बंगाल

128. पूर्व मध्यकाल में डाहल किसका क्षेत्र था ?
(A) परमार (B) चन्देल
(C) कलचुरि (D) भंज

129. निम्नलिखित में से किन धातुओं का प्रयोग हड़प्पावासियों ने नहीं किया ?
(A) ताँबा (B) सोना एवं ताँबा
(C) लोहा एवं टिन (D) चाँदी एवं काँसा

130. निम्नलिखित में से किस वक्तव्य का समर्थन पुरातत्व के साक्ष्य से नहीं होता ?
(A) तृतीय सहस्राब्दी ई. पू. में बहरीन द्वीप के निवासी सैन्धव एवं सुमेरी लोगों के मध्य व्यापार में बिचौलियों का कार्य करते थे
(B) सैन्धव संस्कृति एवं पश्चिम एशिया के मध्य सामुद्रिक व्यापार में लोथल की अहम भूमिका थी
(C) हड़प्पावासियों का विनाश आर्यों द्वारा हुआ
(D) धातु की मूर्तियों को बचाने के लिए हड़प्पावासी भ्रष्ट मोम तकनीक जानते थे

131. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) हड़प्पा	1. शवाधिस्थान आर 37
(b) लोथल	2. गोदीवाड़ा
(c) कालीबंगा	3. नर्तकी आकृति
(d) मोहनजोदड़ो	4. जुता हुआ खेत

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	3	4	1	2
(D)	1	2	4	3

132. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (स्थान के नाम)	सूची-II (सम्बद्ध संस्कृति)
(a) रंगपुर	1. पुरापाषाण संस्कृति
(b) सोहन	2. नवपाषाण संस्कृति
(c) आदिच्चनल्लूर	3. ताम्रपाषाण संस्कृति
(d) बुर्जहोम	4. मध्यपाषाण संस्कृति
	5. महापाषाण संस्कृति

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	4	5	2
(B)	3	1	5	2
(C)	3	1	5	4
(D)	2	3	4	5

133. सैन्धव संस्कृति के विषय में निम्नांकित किस वक्तव्य की न्यूनतम संभावना है ?
(A) सैन्धव संस्कृति का उदय कालीबंगा संस्कृति से हुआ
(B) सैन्धव संस्कृति का उदय सिन्ध और बलूचिस्तान की कृषक संस्कृतियों से हुआ
(C) सैन्धव संस्कृति सोथी संस्कृति का प्रसार है
(D) सैन्धव संस्कृति कहीं भी ग्राम संस्कृति की अवस्था से गुजरे बिना सीधे एक नगर संस्कृति के रूप में प्रकट हुई

134. ऋग्वेद में सम्पत्ति का प्रमुख रूप क्या था ?
(A) सुवर्ण (B) गोधन
(C) मकान (D) भूमि

135. बोगाजकोई के एक अभिलेख में आहूत आर्य देवता है—
(A) इन्द्र, विष्णु, वरुण एवं नासत्य
(B) रुद्र, मित्र, इन्द्र एवं नासत्य
(C) इन्द्र, मित्र, वरुण एवं नासत्य
(D) मित्र, विष्णु, वरुण एवं इन्द्र

136. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) आश्वलायन	1. संहिता
(b) आपस्तम्ब	2. गह्यसूत्र
(c) मैत्रायण	3. निरुक्त
(d) यास्क	4. धर्मसूत्र

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	4	2	3
(B)	3	1	2	4
(C)	2	3	1	4
(D)	2	4	1	3

137. निम्नलिखित में कौनसी वैदिक सभाएँ थीं ?
(1) सभा (2) विदथ
(3) समिति (4) परिषद्
नीचे दिए कूट से सही उत्तर चुनिए—
(A) (1) एवं (2)
(B) (3) एवं (4)
(C) (1), (2) एवं (3)
(D) (1), (3) एवं (4)

138. संगम काल में तमिल में महाभारत किसने लिखी ?
(A) पेरुन्देवनार (B) विल्लिपुतुर आलवार
(C) कम्बन (D) कुट्टन

139. बुद्ध निम्नलिखित में से किन बातों को नहीं मानते थे ?
(1) वेदों की प्रमाणिकता
(2) ब्राह्मणों की श्रेष्ठता
(3) यज्ञों की फलोत्पादकता
(4) पुनर्जन्म का सिद्धान्त
नीचे दिये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1), (2) और (3)
(B) (2), (3) और (4)
(C) (1), (2) और (4)
(D) (1), (2), (3) और (4)

140. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (घटना)	सूची-II (स्थान)
(a) प्रथम बौद्ध संगीति	1. वैशाली
(b) द्वितीय बौद्ध संगीति	2. राजगृह
(c) तृतीय बौद्ध संगीति	3. पाटलिपुत्र
(d) चतुर्थ बौद्ध संगीति	4. कश्मीर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	1	4
(B)	3	1	4	2
(C)	1	4	3	2
(D)	2	1	3	4

141. बौद्ध शब्दावली में 'धर्मचक्रप्रवर्तन' से क्या निर्देशित होता है ?
(A) जन्म और मृत्यु के चक्र में विश्वास
(B) बुद्ध की निर्वाण प्राप्ति
(C) बुद्ध का प्रथम उपदेश
(D) चक्रवर्ती का व्यक्तिगत धर्म

142. बुद्ध के अनुसार निम्नलिखित में किससे निर्वाण की प्राप्ति होती है ?
(A) निरन्तर स्थितप्रज्ञ अवस्था में रहना
(B) अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण
(C) संन्यास एवं तप का अनुपालन
(D) श्रद्धा-भाजन के प्रतीक स्तूप की पूजा

143. "सभी संस्कार व्ययधर्मा हैं, अप्रमाद के साथ अपने मोक्ष का सम्पादन करें." इन वचनों का श्रेय किसे दिया जाता है ?
(A) कृष्ण (B) महावीर
(C) बुद्ध (D) शंकराचार्य

144. निम्नलिखित में से किस एक का प्रचलन महावीर ने किया ?
(A) अहिंसा (B) अपरिग्रह
(C) ब्रह्मचर्य (D) सत्य

145. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (जिनों का नाम)	सूची-II (उनके संज्ञान)
(a) पार्श्वनाथ	1. वृषभ
(b) आदिनाथ	2. सिंह

(c) महावीर		3. सर्प
(d) शान्तिनाथ		4. अज
		5. हरिण

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	3	1	2	5
(C)	2	4	1	3
(D)	5	2	4	1

146. निम्नलिखित में से कौनसा वक्तव्य सही नहीं है ?
(A) खजुराहो में जैन मन्दिर है
(B) उड़ीसा में उदयगिरि में जैन गुफाएँ हैं
(C) मथुरा में एक जैन स्तूप था
(D) वैशाली मे जैन विहार है

147. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) अर्द्धनारीश्वर की अवधारणा	1. भागवत धर्म
(b) पंचदेवों की पूजा	2. स्मार्त
(c) स्याद्वाद का सिद्धान्त	3. जैन धर्म
(d) वीर पूजा	4. शैव धर्म

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	1	3	4
(B)	4	2	1	3
(C)	4	2	3	1
(D)	3	4	2	1

148. निम्नलिखित में से कौन एक भागवत धर्म का सबसे महत्वपूर्ण लक्षण है ?
(A) निजी देवताओं के प्रति भक्ति पर जोर
(B) तप पर जोर
(C) कर्मकाण्डों पर जोर
(D) ज्ञान पर जोर

149. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) चैतन्य	1. केरल
(b) शंकर	2. बंगाल
(c) ज्ञानदेव	3. तमिलनाडु
(d) त्यागराज	4. महाराष्ट्र
	5. उड़ीसा

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	2	3	1	4
(C)	3	2	4	1
(D)	2	1	4	3

150. निम्नलिखित में से किसे पाशुपत का प्रवर्त्तक माना जाता है ?
(A) वसव (B) लकुलीश
(C) कुशिक (D) गोरखनाथ

151. आत्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त का कहाँ उल्लेख नहीं मिलता ?
(A) आरण्यक (B) जातक साहित्य
(C) उपनिषद् (D) वेद

152. अशोक के अधिकांश लेख प्राकृत भाषा में हैं, क्योंकि यह—
(A) राज्य की भाषा थी
(B) अधिकांश लोगों द्वारा समझी जाती थी
(C) तथागत बुद्ध द्वारा प्रयोग में लाई गई थी
(D) उस समय की एकमात्र ज्ञात भाषा थी

153. अशोक के अभिलेखों से निम्नलिखित में किस बात का ज्ञान नहीं होता ?
(A) उसने उच्च सरकारी पदों पर बौद्ध धर्म के अनुयायियों को नियुक्त किया
(B) उसने भिक्षुओं तथा भिक्षुणिओं को चेतावनी दी कि बौद्ध धर्म में संघभेद करने पर उन्हें दण्डित किया जायेगा
(C) उसने स्पष्ट रूप में बुद्ध, धर्म एवं संघ में आस्था व्यक्त की
(D) उसने पावन बौद्ध स्थानों की यात्रा की

154. निम्नलिखित में से कहाँ पर अशोक का नाम मिलता है ?
(1) अशोक का निट्टूर अभिलेख
(2) समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख
(3) रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
(4) खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2) एवं (4) (D) (3) एवं (4)

155. अशोक के अभिलेख किन लिपियों में लिखे मिलते हैं ?
(A) खरोष्ठि एवं ब्राह्मी

(B) खरोष्ठि, ब्राह्मी एवं ग्रीक
(C) खरोष्ठि, ब्राह्मी एवं अरामाइक
(D) खरोष्ठि, ब्राह्मी, ग्रीक एवं अरामाइक

156. मौर्य साम्राज्य में पाटलिपुत्र के नगर शासन प्रवन्ध को जानने के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं—
(A) इण्डिका
(B) मुद्राराक्षस
(C) अशोक के अभिलेख
(D) अर्थशास्त्र

157. निम्नांकित किसमें मौर्यों का क्षत्रिय रूप में उल्लेख किया है ?
(A) मुद्राराक्षस (B) ग्रीक लेखन
(C) अर्थशास्त्र (D) दिव्यावदान

158. निम्नांकित में से कौन एक अशोक की तिथि निर्धारित करने के लिए सर्वाधिक विश्वसनीय और सही साक्ष्य है ?
(A) देवानांप्रिय तिस्स के साथ उसकी समकालिकता वतलाने वाले सिंहली इतिवृत्त
(B) विदेशी राजाओं का उल्लेख करने वाले अशोक के अभिलेख
(C) मौर्य राजाओं के वंशक्रम एवं तिथिक्रम का उल्लेख करने वाले पौराणिक साहित्य
(D) बौद्ध संगीतियों के आयोजन का उल्लेख करने वाला पालि आगम साहित्य

159. निम्नलिखित में से किन राजाओं ने सुदर्शन सरोवर का उल्लेख करने वाले लेख छोड़े हैं ?
(1) अशोक (2) रुद्रदामन
(3) समुद्रगुप्त (4) स्कन्दगुप्त
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2) एवं (3) (D) (2) एवं (4)

160. वुद्ध की प्राचीनतम मूर्तियाँ लगभग एक ही समय कहाँ पर बनी थीं ?
(A) गान्धार एवं अजन्ता में
(B) मथुरा एवं अमरावती में
(C) मथुरा एवं गान्धार में
(D) अजन्ता एवं अमरावती में

161. निम्नांकित कौनसा युग्म सही सुमेलित नहीं है ?
(A) प्लिनी — प्राकृतिक इतिहास
(B) टॉलेमी — भूगोल
(C) स्ट्रेवो — पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी
(D) कॉसमॉस — क्रिश्चियन स्थान वर्णन

162. किस निम्नांकित स्थल के साथ गुप्तकाल में भारत का घनिष्ठतम सम्बन्ध था ?
(A) दक्षिण पूर्व एशिया
(B) मध्य एशिया
(C) ईरान
(D) पश्चिमी एशिया

163. निम्नलिखित में किससे श्रेणी शब्द की सर्वाधिक उपयुक्त व्याख्या होती है ?
(A) एक ही व्यवसाय करने वाले एक जाति के लोगों का संगठन
(B) एक व्यवसाय करने वाले एक या एक से अधिक जाति के लोगों का संगठन
(C) अलग-अलग व्यवसाय करने वाले विभिन्न जातियों के लोगों का संगठन

164. संगम काल में रोम और तमिलनाडु के बीच सघन वाणिज्य सम्वन्ध थे. अनेक वस्तुओं का तमिलनाडु से रोम को निर्यात होता था. निम्नांकित में से कौनसी वस्तु निर्यात में सम्मिलित नहीं थी ?
(A) मसाले (B) वैदूर्य
(C) हाथीदाँत (D) शराव

165. ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में निम्नलिखित में से किसने भारत के सामुद्रिक व्यापार में नया योगदान किया ?
(A) अपेक्षाकृत अच्छे प्रकार के पोतों का निर्माण
(B) विभिन्न स्थानों पर समुद्र की गहराई का ज्ञान
(C) नौकायन का अधिक अच्छा प्रशिक्षण
(D) मानसून हवाओं का ज्ञान

166. निम्नलिखित में से कौनसी गुप्त शासन के अनुवर्तीकाल की विशेषता नहीं थी ?
(A) व्यापार का ह्रास
(B) सिक्कों के प्रयोग में बढ़ोतरी
(C) स्थानीय तौल मानों के प्रयोग में वृद्धि
(D) सामन्तों की वृद्धि

167. उत्तर-गुप्तकाल में ब्राह्मण अभिजात वर्ग का उदय किस वात से आसान वना ?
(A) पुरोहित वर्ग को भूमिदान
(B) कर्मकाण्ड विधियों की वृद्धि
(C) विदेशियों का आगमन
(D) बौद्ध धर्म का ह्रास

168. किस काल में जजमानी व्यवस्था कहलाने वाली एक नए प्रकार की सामाजिक संरचना का भारत में प्रसार हो गया ?
(A) परवर्ती वैदिक युग (B) मौर्य साम्राज्य
(C) गुप्त युग (D) उत्तर-गुप्तकाल

169. निम्नांकित में कौन एक गुप्त एवं उत्तर-गुप्तकालों में सामन्तीय रचना से सम्बद्ध नहीं हैं ?
(A) भूमिधर बिचौलियों का उदय
(B) मातहत कृषक वर्ग की वृद्धि
(C) स्थानीयकृत ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकसित होना जिसमें बाजार व्यवस्था की क्रियाशीलता के लिए कोई असर नहीं था
(D) मजबूत केन्द्रीयकृत राजनैतिक सत्ता का उदय

170. पूर्व मध्यकाल में जातियों का अत्यधिक प्रगुणन अधिकांशतः किस कारण से था ?
(A) वर्णसंकर का विद्यमान होना
(B) जनजातियों का जातियों के रूप में बढ़ता हुआ अधिक मात्रा में अन्तर्लयन
(C) व्यावसायिक वर्गों का जातियों में परिवर्तन
(D) धार्मिक सम्प्रदायों का जातियों में रूपान्तरण

171. अनेक प्रारम्भिक बौद्ध ग्रन्थों में वर्णित चार वर्गों का सोपानक्रम क्या है ?
(A) वेस्स, सुद्द, खत्तिय, बहमन्न
(B) सुद्द, वेस्स, बहमन्न, खत्तिय
(C) खत्तिय, बहमन्न, वेस्स, सुद्द
(D) वेस्स, महमन्न, सुद्द खत्तिय

172. निम्नांकित किस चोल शासक के विषय में वर्णन है कि उसने अनुराधापुर को, जो एक समय सीलोन की राजधानी थी, नष्ट किया ?
(A) राजराज I (B) राजेन्द्र I
(C) राजाधिराज I (D) कुलोतुंग I

173. मोक्ष का सम्बन्ध है—
(A) हिन्दू धर्म से (B) जैन धर्म से
(C) बौद्ध धर्म से (D) इस्लाम धर्म से

174. चाणक्य किसका महामंत्री था ?
(A) चन्द्रगुप्त मौर्य (B) सम्राट् अशोक
(C) विक्रमादित्य (D) समुद्रगुप्त

175. निम्नलिखित में से किनसे सिन्धुघाटी सभ्यता सम्बन्धित है ?
(A) द्रविड़ लोग
(B) आर्य लोग
(C) पूर्व पाषाण युग के लोग
(D) धातु युग के लोग

176. निम्नलिखित में से कौनसा ग्रन्थ आर्यों का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है ?
(A) भृगुसंहिता (B) ऋग्वेद
(C) रामायण (D) महाभारत

177. निम्नलिखित में से कौनसा स्थान आर्य पूर्व सभ्यता से सम्बन्धित है ?
(A) वैशाली (B) श्रावस्ती
(C) हड़प्पा (D) भरहुत

178. निम्नलिखित में से कौनसा ग्रन्थ बुद्ध से सम्बन्धित है ?
(A) जातक कथा (B) विक्रमोर्वशी
(C) पंचतन्त्र (D) जीवनसार

179. सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हुआ—
(A) 261 ई. पू. (B) 326 ई. पू.
(C) 305 ई. पू. (D) 226 ई. पू.

180. सेल्युकस ने भारत पर कब आक्रमण किया था ?
(A) 261 ई. पू. (B) 326 ई. पू.
(C) 305 ई. पू. (D) 323 ई. पू.

181. निम्नलिखित में से किस वंश के राजाओं ने महाबलीपुरम् की पथरी रथों की रचना कराई ?
(A) चालुक्य (B) पल्लव
(C) हूण (D) गुप्त

182. चोलवंश का सबसे महान् सम्राट कौन था ?
(A) यशोवर्मन (B) जयवर्मन
(C) राजराजा I (D) पुलकेशियन I

183. सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोग निम्नलिखित में से किस पशु से परिचित नहीं थे ?
(A) हाथी से (B) ऊँट से
(C) घोड़े से (D) साँड से

184. सिन्धु घाटी की सभ्यता सम्बन्धित है—
(A) ताम्र युग से (B) लौह युग से
(C) कांस्य युग से (D) स्वर्ण युग से

185. सिन्धु घाटी के लोग किसकी पूजा करते थे ?
(A) गणेश की (B) विष्णु की
(C) पशुपति की (D) राम की

186. निम्नलिखित में से किस शासक ने सम्राट् हर्षवर्धन को पराजित किया था ?
(A) महेन्द्र वर्मन ने (B) शशांक ने
(C) नरसिंह वर्मन ने (D) पुलकेशियन द्वितीय

187. भारतवर्ष का नाम भरत शब्द के आधार पर रखा गया है, निम्नलिखित में से किसमें भारत शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम हुआ है ?
(A) ऋग्वेद (B) सामवेद
(C) यजुर्वेद (D) अथर्ववेद

188. कला और साहित्य के संरक्षक किस गुप्त सम्राट् की वीणा वादन करते हुए मूर्ति सिक्कों पर अंकित है ?
(A) चन्द्रगुप्त द्वितीय (B) समुद्रगुप्त
(C) स्कन्दगुप्त (D) कुमारगुप्त

189. चीनी यात्री फाह्यान का भारत आगमन का मुख्य उद्देश्य था—
(A) गुप्त साम्राज्य के प्रशासनिक ढाँचे का अध्ययन करना
(B) बौद्ध मठों का निरीक्षण कर ऐतिहासिक तथ्यों को संकलित करना
(C) व्यापार हेतु एक सुगम मार्ग को खोज निकालना
(D) भारतीय कला और संगीत का अध्ययन करना

190. कालिदास निम्नलिखित में से किस शासक के समकालीन थे ?
(A) चन्द्रगुप्त द्वितीय (B) समुद्रगुप्त
(C) अशोक (D) चन्द्रगुप्त मौर्य

191. छान्दोग्य क्या है ?
(A) वेद (B) उपनिषद्
(C) वेदांग (D) दर्शन की एक शाखा

192. आश्रम व्यवस्था के अनुसार अन्तिम आश्रम कौनसा है ?
(A) संन्यास (B) वानप्रस्थ
(C) ब्रह्मचर्य (D) गृहस्थ

193. बौद्धों के त्रिपटक किस भाषा में लिखे गये हैं ?
(A) हिन्दी में (B) पाली में
(C) संस्कृत में (D) प्राकृत में

194. पुराण किसके धार्मिक ग्रन्थ हैं ?
(A) बुद्ध अनुयायियों के (B) जैनियों के
(C) सिखों के (D) हिन्दुओं के

195. महात्मा बुद्ध का जन्म कब हुआ था ?
(A) 463 ई. पू. (B) 663 ई. पू.
(C) 563 ई. पू. (D) 363 ई. पू.

196. समैया से तात्पर्य है—
(A) श्वेताम्बर सम्प्रदाय की एक शाखा से
(B) दिगम्बर सम्प्रदाय की शाखा से
(C) जैन धर्म के तीर्थंकरों से
(D) उदयगिरी के वाघगुफा से

197. सूत्रकृदंग में हमें उपलब्ध होता है—
(A) भिक्षुओं के आचरण सम्बन्धी नियम
(B) दस व्यापारियों का वर्णन जिन्होंने मोक्ष प्राप्त की थी
(C) जैन धर्म के विभिन्न मतों की समीक्षा
(D) उन मुनियों का विवरण जिन्होंने तपस्या के माध्यम से मोक्ष प्राप्त की

198. तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन जिसकी अध्यक्षता में हुआ था, वे थे—
(A) महाकस्यप (B) मोग्गलिपुत्ततिस्स
(C) रेवतस्थविर (D) वसुमित्र

199. जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए हैं, उनमें दूसरे तीर्थंकर थे—
(A) पार्श्वनाथ (B) महावीर स्वामी
(C) अजितनाथ (D) सिद्धार्थ

200. भारत से आयात होने वाली किस वस्तु पर रोम की सीनेट ने प्रतिबन्ध लगाया था, क्योंकि उसके आयात से रोम के गौरव पर आँच आने की संभावना थी ?
(A) केसर (B) शराब
(C) कालीमिर्च (D) मलमल

201. अटकथा की रचना की गई थी—
(A) महात्मा बुद्ध द्वारा (B) आनन्द द्वारा
(C) बुद्ध घोष द्वारा (D) अश्वघोष द्वारा

202. पार्श्वनाथ के पिता का नाम था—
(A) अजितसेन (B) अशोक
(C) अश्वसेन (D) सिद्धार्थ

203. जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की माता का नाम था—
(A) वामा (B) त्रिशला
(C) प्रभावती (D) यशोधरा

204. जैन धर्म की दूसरी संगीति आयोजित हुई थी—
(A) पाटलिपुत्र में (B) कौशाम्बी में
(C) वल्लभी में (D) बनारस में

205. अजातशत्रु के अनुरोध पर महात्मा बुद्ध अपना धर्मोपदेश देने जिस राज्य में गये थे, वह था—
(A) मगध (B) कौशल
(C) कौशाम्बी (D) कुरु

206. आगमत मत के विचारों के प्रमुख विचारक थे—
(A) शिवाचार्य (B) श्रीकान्त शिवाचार्य
(C) एकान्त रमम्या (D) महात्मा वसव

207. शिव का पशुपति रूप सर्वप्रथम देखने को मिलता है—
(A) अथर्वशिरस उपनिषद्
(B) पंचार्थविद्या
(C) पद्यसंहिता
(D) विष्णुतत्व संहिता

208. डाइमेक्स को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में राजदूत के रूप में भेजने वाला नरेश किस देश का था ?
(A) यूनान (B) मिश्र
(C) रोम (D) सीरिया

209. मुनियों एवं श्रावकों के आचार का वर्णन उपलब्ध होता है—
(A) चरणानुयोग में (B) करणानुयोग में
(C) प्रथमानुयोग में (D) जैन पुराण में

210. 'सम्यक् प्रयास' से क्या अभिप्राय है ?
(A) चित्त को एकाग्र करके भगवान् के चिन्तन में लगाना
(B) जीवन के उत्कर्ष के लिए प्रयास करना
(C) ईमानदारी से जीविका उपार्जन करना
(D) अच्छे विचारों से सत्य की तलाश करना

211. भगवती सूत्र में हमें उपलब्ध है—
(A) जैन मुनियों से सम्बन्धित नियम
(B) जैन धर्म का विशद् विवरण
(C) सांसारिक बन्धनों से मुक्ति का मार्ग
(D) स्यादवाद का विशद विवेचन

212. पञ्चार्थी में उल्लेखित पाँच पदार्थों में निम्नलिखित पदार्थों में से कौनसा नहीं है ?
(A) कार्य (B) योग
(C) तेज (D) दुःखान्त

213. 'पंचभूमि' के रचयिता थे—
(A) असंग (B) नागार्जुन
(C) वसुबन्धु (D) अश्वघोष

214. तमिल कविता संगम काल में जिन दो प्रमुख समूहों में विभक्त थी, उनके नाम थे—
(A) पालई और मुल्लाई (B) कुरिंजी और अहम
(C) मरुदम और पुरम (D) अगम और पुरम

215. अशोक महान् इतिहास में जाना जाता है—
(A) हिंसा और विजयों के लिए
(B) प्राकृत में कविता लिखने के लिए
(C) शान्ति और अहिंसा के लिए
(D) जंगली जानवरों के शिकार के लिए

216. कौटिल्य ने रचना की—
(A) रामचरितमानस (B) अभिज्ञानशाकुन्तलम
(C) अर्थशास्त्र (D) मनुस्मृति

217. महावीर स्वामी का प्रारम्भिक नाम क्या था ?
(A) सिद्धार्थ (B) वर्धमान
(C) ऋषभदेव (D) नन्द

218. सिक्कों के अध्ययन को क्या कहते हैं ?
(A) आर्कयोलॉजी (B) एपिग्राफी
(C) न्यूमिस्मेटिक्स (D) एस्ट्रोलॉजी

219. अर्जुन किसका शिष्य था ?
(A) श्रीकृष्ण (B) द्रोणाचार्य
(C) कौटिल्य (D) मनु

220. काकतिया वंश ने कहाँ शासन किया था ?
(A) वारंगल (B) मदुराई
(C) काँचीपुरम (D) तंजौर

221. प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् चक्रपाणी निपुण थे—
(A) चिकित्साशास्त्र में (B) खगोलशास्त्र में
(C) ज्योतिष विद्या में (D) गणितशास्त्र में

222. बिन्दुसार पुत्र था—
(A) अशोक का (B) चन्द्रगुप्त मौर्य का
(C) अजातशत्रु का (D) सिद्धार्थ का

223. बिम्बिसार का वध किया था उसके पुत्र—
(A) बिन्दुसार ने
(B) अजातशत्रु ने
(C) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने
(D) हर्ष ने

224. प्राचीन समय में बिहार किस नाम से जाना जाता था ?
(A) मगध (B) भागलपुर
(C) पटना (D) पाटलिपुत्र

225. बौद्ध धर्म का हीनयान सम्प्रदाय विश्वास करता है—
(A) गौतम बुद्ध एक महामानव है, किन्तु अवतार नहीं है
(B) गौतम बुद्ध अवतार है
(C) गौतम बुद्ध एक साधारण मानव है
(D) गौतम बुद्ध एक शासक है

226. प्रो. मैक्समूलर के अनुसार आर्य मूल निवासी थे—
(A) मध्य एशिया के (B) हिमालय (मानस) के
(C) अमरीका के (D) चीन के

227. दंतिदुर्ग ने दक्कन में नए राजवंश की स्थापना किसको हराकर की थी ?
(A) चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीय
(B) प्रतिहार राजा भोज
(C) पल्लव राजा महेन्द्र वर्मा
(D) पाल राजा देवपाल

228. चन्हुदाड़ो, हड़प्पा संस्कृति से सम्बन्धित एक स्थल है, जो स्थित है—
(A) सिंध में (B) पंजाब में
(C) गुजरात में (D) बहावपुर में

229. प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण से सम्बन्धित क्षेत्र था—
(A) सिन्धु घाटी (B) गंगा-यमुना मैदान
(C) दक्षिणी तटवर्ती क्षेत्र (D) पश्चिमी तटवर्ती क्षेत्र

230. वत्स का राज्य स्थित था—
(A) इलाहाबाद के आसपास
(B) उज्जैन के आसपास
(C) मेरठ के आसपास
(D) वाराणसी के आसपास

231. भरहूत एवं अमरावती सुप्रसिद्ध केन्द्र थे—
(A) जैन धर्म के (B) शैव मत के
(C) बौद्ध धर्म के (D) भागवतवाद के

232. केसरिया सुप्रसिद्ध है—
(A) पाल-सेन तक्षण कला के लिए
(B) बौद्ध स्तूप के लिए
(C) विष्णु मन्दिर के लिए
(D) सूफी दरगाह के लिए

233. कुम्रहार स्थल सम्बन्धित है, प्राचीन—
(A) पाटलिपुत्र से (B) चम्पा से
(C) अंग से (D) राजगीर से

234. निम्नलिखित में से किस स्थान पर पहली जैन महासभा हुई ?
(A) पाटलिपुत्र (B) वैशाली
(C) गया (D) कुण्डग्राम

235. महाभाष्य ग्रन्थ के लेखक कौन थे ?
(A) भाप (B) काव्यायन
(C) वाक्पति (D) पतञ्जलि

236. वायुपुराण में बिन्दुसार को किस नाम से पुकारा गया है ?
(A) अमित्रचेत्स (B) सिंहसेन
(C) भद्रसेन (D) भद्रसार

237. निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सुमेलित नहीं हैं ?

	नदियों के ऋग्वैदिक नाम	आधुनिक नाम
(A)	विपाशा	व्यास
(B)	परुष्णी	रावी
(C)	अस्किनी	चिनाव
(D)	वितस्ता	सतलज

238. बिम्बिसार का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किस वंश से था ?
(A) नन्द (B) शुंग
(C) हर्यंक (D) मौर्य

239. एहोल प्रशस्ति किस काल से सम्बद्ध है ?
(A) चोल (B) चालुक्य
(C) गुप्त (D) नन्द

240. हर्षवर्धन और समुद्रगुप्त दोनों के सम्बन्ध में निम्नलिखित से कौनसा सत्य है ?
(A) दोनों ने अश्वमेध यज्ञ किए
(B) दोनों विदेशी राजाओं के दूतों का स्वागत करते थे
(C) दोनों ने दक्षिणी भारत को विजित किया
(D) दोनों ने संस्कृत साहित्य में योगदान दिया

241. उत्तर-वैदिकयुग में निम्नलिखित में से क्या नहीं था ?
(A) मजबूत गणराज्य
(B) पितृसत्तात्मक समाज
(C) सहकारी खेती
(D) सामाजिक व आर्थिक समानता

242. 'राजुक' कौन थे ?
(A) चोल साम्राज्य में व्यापारी
(B) मौर्य शासन में अधिकारी
(C) गुप्त साम्राज्य में सामन्त वर्ग
(D) शक सेना में सैनिक

243. कालसी क्यों प्रसिद्ध है ?
(A) गुप्तकालीन मन्दिरों के लिए
(B) फारसी सिक्कों के लिए
(C) अशोक के शिलालेख के लिए
(D) बौद्ध चैत्य के लिए

244. अशोक और कनिष्क दोनों ने ही—
(A) विशेष धार्मिक अधिकारी नियुक्त किया
(B) श्रीलंका में अपने दूत भेजे
(C) बौद्ध सम्मेलन बुलाये
(D) दक्षिण में शासन किया

245. निम्नलिखित में से कौन कन्नौज नगर पर अधिकार के लिए त्रिकोण संघर्ष में शामिल नहीं थे ?
(A) चोल (B) राष्ट्र कूट
(C) पाल (D) गुर्जर प्रतिहार

246. गुप्त एवं गुप्तोत्तर काल में सोने के सिक्कों के लिए प्रयुक्त होने वाला 'दीनार' शब्द किससे निष्पन्न है ?
(A) अरबी (B) ग्रीक
(C) लैटिन (D) फारसी

247. निम्नलिखित में से कौनसा ग्रन्थ उल्लेख करता है कि अशोक, श्रीनगर का संस्थापक था ?
(A) दिव्यावदान (B) महावंश
(C) दीपवंश (D) राजतरंगिणी

248. मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख प्रतिहारों की उत्पत्ति प्रारम्भ करता है—
(A) चन्द्र से (B) राम से
(C) लक्ष्मण से (D) यज्ञ कुण्ड से

249. वह कलचुरी राजा जिसका स्तम्भ अभिलेख बंगाल के वीरभूम जिले से मिला है—
(A) कोक्कल I (B) युवराज देव I
(C) गांगेयदेव (D) कर्ण

250. 'गंगैकोंड' की उपाधि किस चोल सम्राट् ने धारण की थी ?
(A) राजराज (B) राजेन्द्र
(C) राजाधिराज (D) कुलोतुंग

251. नासिक अभिलेख किसकी उपलब्धियों का वर्णन करता है ?
(A) हर्षवर्धन (B) पुलकेशियन द्वितीय
(C) गोविन्द राष्ट्रकूट (D) गौतमीपुत्र शातकर्णी

252. राजकीय यज्ञों में सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण यज्ञ था—
(A) राजसूय यज्ञ (B) वाजपेय यज्ञ
(C) अश्वमेध यज्ञ (D) अग्निष्टोम यज्ञ

253. लोथल में हड़प्पा निवासियों का मुख्य उद्योग क्या था ?
(A) धातुकर्म उद्योग (B) हथकरघा उद्योग
(C) जहाज उद्योग (D) मनका उद्योग

254. लोथल किस प्रदेश में स्थित है ?
(A) राजस्थान में (B) गुजरात में
(C) सिन्ध में (D) ब्लूचिस्तान में

255. कालीबंगा किस राज्य में स्थित है ?
(A) राजस्थान में (B) गुजरात में
(C) हरियाणा में (D) सिन्ध में

256. किन स्थलों से प्राक् हड़प्पाकालीन दुर्ग तथा नगर योजना के साक्ष्य प्राप्त होते हैं ?
(A) लोथल-हड़प्पा (B) कोटदीजी-कालीबंगा
(C) कालीबंगा-लोथल (D) वनवाली-लोथल

257. सिन्धु सभ्यता के किस स्थल पर बन्दरगाह था ?
(A) लोथल (B) हड़प्पा
(C) मोहनजोदड़ो (D) इनमें से कोई नहीं

258. हड़प्पा सभ्यता का प्रसार मुख्य रूप से किन-किन स्थानों पर हुआ ?
(A) पंजाब, राजस्थान एवं गुजरात
(B) पंजाब, गुजरात एवं दिल्ली
(C) गुजरात, हरियाणा एवं मध्य प्रदेश
(D) राजस्थान, हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश

259. सिन्धु सभ्यता के निवासियों का मुख्य खाद्यान्न क्या था ?
(A) मांस (B) मछली
(C) गेहूँ (D) जौ

260. प्राचीनकाल में सोने के सिक्के सर्वाधिक किसने जारी किये ?
(A) मौर्य शासकों ने (B) कुषाण शासकों ने
(C) गुप्त शासकों ने (D) शक शासकों ने

261. सांख्य योग का प्रतिपादन किसने किया ?
(A) कपिल (B) पतञ्जलि
(C) कणाद (D) गौतम

262. हड़प्पा किस नदी के किनारे पर अवस्थित है ?
(A) सिन्धु नदी के (B) रावी नदी के
(C) सतलज नदी के (D) व्यास नदी के

263. निम्नलिखित में से कौन एक गुप्तोत्तरकाल में भारत में आयात की प्रमुख मद थी ?
(A) घोड़े
(B) चमड़े की वस्तुएँ
(C) औषधि वाली जड़ी-बूटियाँ
(D) रेशम

264. गुप्तोत्तरकाल में अन्ततः भूमि का स्वामित्व किसके पास था ?
(A) कृषक (B) ग्रामसभा
(C) राजा (D) संयुक्त परिवार

265. प्राचीन भारत में घट्टीयन्त्र का प्रयोग किस कार्य में होता था ?
(A) धातु के बर्तनों के निर्माण में
(B) यज्ञीय कर्मकाण्डों में जल प्रवाहित करने में

(C) तान्त्रिक अनुष्ठानों में
(D) कूपों से सिंचाई करने में

266. प्राचीन एवं पूर्व-मध्यकालीन भारत में अकृष्ट एवं करमुक्त भूमि की संज्ञा थी—
(A) सीता (B) खर्वटक
(C) खिलक्षेत्र (D) सीताध्यक्ष

267. देवमातृका शब्द का आशय है—
(A) मातृ देवियाँ
(B) व्यक्ति की मातृभूमि
(C) दैवीय गुणों से उत्पन्न स्त्री
(D) वर्षायुक्त प्रदेश

268. ब्रह्मदेय शब्द प्रथम बार कहाँ मिलता है ?
(A) पूर्व वैदिक ग्रन्थों में
(B) पूर्व बौद्ध ग्रन्थों में
(C) गुप्तपूर्व अभिलेखों में
(D) गुप्तोत्तर अभिलेखों में

269. निम्नलिखित शब्दों में से किनका प्रयोग प्राचीन भारत में भूमि माप के निर्देशन के लिए होता था ?
(1) पल (2) नाल
(3) कुल्यावाप (4) निवर्तन
नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (1), (2) एवं (4)
(C) (1), (3) एवं (4) (D) (2), (3) एवं (4)

270. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) कोलिय	1. पिप्पलीवन
(b) मोरिय	2. वैशाली
(c) विदेह	3. रामग्राम
(d) लिच्छवि	4. मिथिला

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	4	1
(B)	1	4	2	3
(C)	3	1	4	2
(D)	4	3	2	1

271. निम्नलिखित अभिलेखों में से किस एक में सती का प्राचीनतम पुरालेखीय साक्ष्य मिलता है ?
(A) हुविष्क का मथुरा अभिलेख
(B) समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भ अभिलेख
(C) स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख
(D) भानुगुप्त का एरण स्तम्भ अभिलेख

272. कहा जाता है कि निम्नांकित के निर्देशन में चालुक्य राजा कुमारपाल ने जैन सुधार कार्यक्रम आरम्भ किया—
(A) मल्लिनाथ (B) स्थूलभद्र
(C) जयचन्द्र (D) हेमचन्द्र

273. उत्तरी भारत में गुप्तोत्तरकालीन सामाजिक संरचना निम्नांकित से विशिष्ट है—
(A) स्त्रियों का बढ़ता हुआ महत्त्व
(B) अस्पृश्यता का कम होना
(C) जातियों की वृद्धि
(D) दास प्रथा का पुनर्जीवन

274. निम्नलिखित में से कौन एक धर्मशास्त्रों में उल्लेखित अन्त्यज वर्ग के लोगों में समाविष्ट थे ?
(A) यवन (B) शबर
(C) शूद्र (D) चाण्डाल

275. निम्नलिखित में किस स्थान से गर्त निवासों का पुरातात्त्विक साक्ष्य मिला है ?
(A) राखीगढ़ी (B) गुफ्करा
(C) मेहरगढ़ (D) बालाकोट

276. हड़प्पा संस्कृति के निम्नलिखित स्थलों में से कौन कच्छ प्रदेश में स्थित है ?
(A) देसलपुर एवं सुरकोटड़ा
(B) रंगपुर एवं रोजिदी
(C) अल्लाबदीनों एवं बालाकोट
(D) रोपड़ एवं सुरकोटड़ा

277. ऋग्वेद में उल्लिखित 'शुतुद्री'—
(A) वधू का व्यंजक शब्द है
(B) एक नदी का नाम है
(C) सुरा बनाने में प्रयुक्त होने वाला एक पादप है
(D) एक यज्ञीय पशु है

278. निम्नलिखित वेदांगों में से कौनसा एक सही सुमेलित नहीं है ?
(A) कल्प — कर्मकाण्ड
(B) ज्योतिष — खगोल विज्ञान
(C) शिक्षा — ध्वनिशास्त्र
(D) निरुक्त — व्याकरण

279. निम्न में से कौनसी बातें उत्तर-वैदिककाल का लक्षण हैं ?
(1) जंगलों का व्यापक रूप से जलाया जाना
(2) लौह उपकरणों का निर्माण

(3) ऋतुओं का ज्ञान
(4) बड़े पैमाने पर सिंचाई

नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—

कूट :
(A) (1), (2) एवं (3)
(B) (1), (2) एवं (4)
(C) (1), (3) एवं (4)
(D) (2), (3) एवं (4)

280. चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति से उत्तर-वैदिककालीन ग्रन्थों में प्रतिबिम्बित जीवन की पहचान करने के निम्नलिखित में से कौनसे कारण हैं ?
(1) दोनों की भौतिक संस्कृतियों में समानता
(2) दोनों के भौगोलिक विस्तार में समानता
(3) दोनों की कालक्रम अवधि में समानता
(4) दोनों का स्थानीय विकास हुआ है

नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—

कूट :
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (1), (2) एवं (4)
(C) (1), (3) एवं (4) (D) (2), (3) एवं (4)

281. ऋग्वैदिक काल के लोग इन्द्र का निम्नलिखित प्रयोजन से आह्वान करते थे—
(A) ज्ञान प्राप्ति
(B) मरणोपरान्त जीवन
(C) जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति
(D) भौतिक सुख एवं विजय

282. निम्नलिखित में से कौन एक संगम युग में बन्दरगाह नहीं था ?
(A) एरिकमेडू (B) उरैयूर
(C) कोरकै (D) अलंगुलम

283. निम्नलिखित में से कौन बौद्ध धर्म के लक्षण माने जाते हैं ?
(1) वेदों के प्रामाण्य की अस्वीकृति
(2) व्यक्ति की भूमिका पर बल
(3) जीव एवं अजीव के प्रवर्गों में विश्वास
(4) प्रकृति और पुरुष का सिद्धान्त

नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—

कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (1), (3) एवं (4)
(C) (2) एवं (3) (D) (3) एवं (4)

284. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I (लक्षण)	सूची-II (बोधिसत्त्व)
(a) कलशधारी	1. वज्रपाणि
(b) वज्रधारी	2. अवलोकितेश्वर
(c) पद्मधारी	3. मैत्रेय
(d) खड्गधारी	4. अमिताभ
	5. मंजूश्रीमूलकल्प

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	3	1	4	5
(C)	3	1	2	5
(D)	4	5	3	1

285. प्राचीन बौद्ध साहित्य में उल्लिखित जीवक एक—
(A) बोधिसत्त्व था (B) राजा था
(C) व्यापारी था (D) वैद्य था

286. वज्रयान बौद्ध धर्म में/बोधिसत्त्व की संगिनी को कहा जाता था—
(A) मातंगी (B) योगिनी
(C) डाकिनी (D) तारा

287. धार्मिक दृष्टि से मथुरा में कंकाली टीला से प्राप्त मूर्तियाँ थीं—
(A) बौद्ध (B) जैन
(C) शाक्त (D) वैष्णव

288. निम्नलिखित में से कौनसे शब्द जैन ग्रन्थों को निर्दिष्ट करने में प्रयुक्त होते हैं ?
(1) निर्ग्रन्थ (2) पूर्व
(3) अंग (4) उपांग

नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—

कूट :
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (2), (3) एवं (4)
(C) 1 मात्र (D) (2) एवं (4)

289. निम्नलिखित दर्शनों में से किस एक का जैन धर्म से सम्बन्ध है ?
(A) स्याद्वाद (B) योगाचर
(C) माध्यमिक (D) शून्यवाद

290. ह्वेनसांग ने किस प्रदेश में जैन धर्म को समृद्ध स्थिति में देखा था ?
(A) उड़ीसा (B) कश्मीर
(C) बंगाल (D) बिहार

291. कुमारसम्भव में किसकी कथा वर्णित है ?
(A) सनत्कुमार (B) कार्तिकेय
(C) प्रद्युम्न (D) अभिमन्यु

292. मातृदेवी उमा का नाम किसके सिक्कों पर मिलता है ?
(A) कुणिन्द (B) हिन्द-यवन
(C) कुषाण (D) गुप्त

293. निम्नलिखित में से मौर्य दरबार में राजदूत के रूप में मेगस्थनीज के बाद कौन आया ?
(A) हेगेजेण्डर (B) डायमेकस
(C) एथेनॉएस (D) निआर्कस

294. प्राचीन स्रोतों में निम्न में से किसके साथ श्रमण का युग्म बनता है ?
(A) आजीविक (B) सौगत
(C) ब्राह्मण (D) निर्ग्रन्थ

295. यद्यपि अशोक के अनेक पुत्र थे, अभिलेखों में केवल एक ही उल्लिखित है, जिसका किसी अन्य स्रोत में उल्लेख नहीं मिलता. वह है—
(A) कुणाल (B) तीवर
(C) महेन्द्र (D) जलौक

296. अर्थशास्त्र में पुर-विन्यास से स्पष्टतया निर्दिष्ट होता है कि औद्योगिक और व्यापारिक वर्गों को—
(A) बिल्कुल ध्यान में नहीं रखा गया था
(B) नगर में विशिष्ट आवास दिया गया था
(C) नगर के बाहर स्थान दिया गया था
(D) नगर के अन्दर और बाहर स्थान दिया गया था

297. मौर्य सिक्कों के बारे में निम्नलिखित में से कौनसा/कौनसे कथन सही हैं ?
(1) वे रजत एवं ताम्र सिक्के हैं.
(2) वे चलाने वाले राजा के नाम को धारण करते हैं.
(3) उन पर भिन्न-भिन्न चिह्न समूह अंकित हैं.
नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2) एवं (3) (D) (1), (2) एवं (3)

298. कौटिल्य द्वारा प्रयुक्त 'धर्मस्थीय' शब्द का तात्पर्य था—
(A) शैक्षणिक संस्था (B) धार्मिक संस्था
(C) न्यायालय (D) राजस्व विभाग

299. समझा जाता है कि मौर्य स्तम्भों के लिए पत्थर निम्नांकित से प्राप्त होते थे—
(A) राजमहल पहाड़ियाँ (B) राजगृह
(C) चुनार (D) बराबर पहाड़ियाँ

300. अशोक के शासनकाल में कुमार निम्नांकित स्थानों में नियुक्त थे—
(A) तक्षशिला, तोसाली एवं उज्जयिनी
(B) तक्षशिला, उज्जयिनी एवं जूनागढ़
(C) तक्षशिला, तोसाली एवं सोपारा
(D) उज्जयिनी, मथुरा एवं येरागुडी

301. दीनार के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौन सही है ?
(1) इसका आशय केवल एक विदेशी सिक्के से था.
(2) इसका आशय एक स्वर्ण सिक्के से था.
(3) इसका आशय गुप्तकाल में प्रचलित एक सिक्के से था.
(4) इसका प्रयोग केवल भूमि के क्रय-विक्रय के लिए होता था.
नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (1), (2) एवं (4)
(C) (2), (3) एवं (4) (D) इनमें से कोई नहीं

302. याज्ञिक कर्मकाण्डों का विरोध किया गया है—
(A) यजुर्वेद में (B) पुराणों में
(C) उपनिषदों में (D) सामवेद में

303. उमास्वामी ने बताया है कि यथार्थ ज्ञान के प्रति सच्ची श्रद्धा रखना ही है—
(A) सम्यक् दर्शन (B) सम्यक् चरित्र
(C) सम्यक् ज्ञान (D) इनमें से कोई नहीं

304. मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में एक यूनानी राजदूत के रूप में रहते हुए 'इण्डिका' ग्रन्थ की रचना की थी, फिर भी इण्डिका में उल्लेखित कई घटनाएँ शंकास्पद समझी जाती हैं—
(A) क्योंकि मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त की प्रशंसा अधिक नहीं करना चाहता था
(B) क्योंकि वह भारत के गौरव को उजागर नहीं करना चाहता था
(C) क्योंकि उसे भारतीय भाषाओं का ज्ञान नहीं था
(D) क्योंकि वह भारतीयों के अधिक सम्पर्क में नहीं था

305. संगम युग के स्थानीय प्रशासन के सन्दर्भ में कौनसा कथन सही नहीं है ?
(A) उस युग में आज जैसी नगरपालिकाएँ नहीं थीं
(B) मण्डलम् का विभाग नाडु कहलाता था
(C) गाँव की व्यवस्था ग्रामसभा के अन्तर्गत थी
(D) स्थानीय प्रशासन के प्रति तमिल नरेश उदासीन थे

306. अवदानशतक में उल्लेख उपलब्ध है—
(A) महायान सम्प्रदाय के नियमों का उल्लेख मिलता है
(B) दन्त कथाओं का उल्लेख मिलता है
(C) महात्मा बुद्ध की जीवनी का
(D) इसमें मिलिन्द और नागसेन के संवादों का संग्रह है

307. चन्द्रगुप्त मौर्य की मन्त्रिपरिषद् में वित्तमन्त्री को कहा जाता था—
(A) समाहर्ता (B) सन्निधाता
(C) प्रदेष्टा (D) व्यावहारिक

308. दर्शन के क्षेत्र में भागवत मत ने किस दर्शन को जन्म दिया ?
(A) अद्वैत वेदान्त (B) विशिष्टाद्वैत
(C) सांख्य (D) वैशेषिक

309. महाभारत के आदिपर्व में कृष्ण को सम्बोधित किया गया है—
(A) विष्णु के नाम से (B) गोविन्द नाम से
(C) नारायण से (D) प्रद्युम्न से

310. राक्षस नरेश बलि के प्रभामण्डल को समाप्त करने हेतु विष्णु ने अवतार धारण किया था—
(A) नरसिंह अवतार (B) वराह अवतार
(C) कूर्म अवतार (D) वामन अवतार

311. डॉ. स्मिथ के अनुसार अशोक के स्तम्भों में सर्वश्रेष्ठ स्तम्भ है—
(A) मलैयिनन्दनगढ़ (B) सारनाथ का स्तम्भ
(C) बैराठ का स्तम्भ (D) लौरिया नन्दनगढ़

312. निम्नलिखित ग्रन्थों में से कौनसा ग्रन्थ भक्ति ग्रन्थों में नहीं आता था ?
(A) पाञ्चरात्र संहिता (B) गरुड़ संहिता
(C) शाण्डिल्य सूत्र (D) नारद पंचरात्र

313. भागवत मत का उदय भारत में माना जाता है—
(A) ईसा की प्रथम सदी
(B) ईसा की दूसरी सदी
(C) ईसा की तीसरी सदी
(D) ईसा की चौथी सदी

314. ब्राह्मण नायनार होते थे—
(A) नायनार (B) तिरुज्ञान संबधर
(C) मणिक्कवाशगर (D) तिरुनाकुक्करशु

315. निम्नलिखित में से कौन एक ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में भारत से पश्चिम में होने वाले निर्यात की वस्तु नहीं थी ?
(A) मोती (B) महीन वस्त्र
(C) जवाहरात (D) चाँदी

316. निम्नलिखित में से किस एक से बेगार का निर्देश होता है ?
(A) बलि (B) शुल्क
(C) उद्रंग (D) कर

317. निम्नलिखित में से किस एक की अन्य तीन से भिन्न गुणार्थकता है ?
(A) सभा (B) नगर
(C) मुक्ति (D) उर

318. स्मृतियों में उल्लिखित आपद्धर्म विषय में कौन एक सत्य है ?
(A) इसका तात्पर्य था कर्त्तव्यत्याग
(B) इसकी अनुमति केवल क्षत्रियों के लिए थी
(C) इसका तात्पर्य था ब्राह्मणों द्वारा राजाओं के लिए किए गये यज्ञ
(D) इसका आशय था विपत्तिकाल में विभिन्न वर्णों के लिए अनुमत कर्त्तव्य

319. प्राचीनकाल में कारवार के व्यवसाय में निम्नलिखित कार्य सम्मिलित था—
(A) कारगार रक्षक के रूप में
(B) चर्म-कर्म के रूप में
(C) शिकारी-संग्राहक के रूप में
(D) नगर की सड़कों में झाड़ू लगाने वाले के रूप में

320. प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचना में अनिरवसित शब्द का सम्बन्ध था—
(A) ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों से
(B) वैश्यों और शूद्रों से
(C) केवल शूद्रों से
(D) वैश्यों

321. निम्नलिखित देशों में बौद्धायन के अनुसार कौन अपवित्र होने वाले थे, जहाँ तीर्थंकरों को छोड़कर यात्रा नहीं करनी चाहिए ?
(1) वंग (2) सौराष्ट्र
(3) शूरसेन (4) मगध
नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1), (2) एवं (3) (B) (1), (2) एवं (4)
(C) (1), (3) एवं (4) (D) (2), (3) एवं (4)

322. निम्नलिखित में से कौन काकतीय राज्य का एक महत्त्वपूर्ण समुद्रपत्तन था ?
(A) धरणीकोटा (B) मोट्टुप्पली
(C) मलिचीपट्टण (D) नेल्लूरू

323. मुहम्मद गौरी के स्वर्ण सिक्कों पर प्रायः निम्नांकित का अंकन है—
(A) पुरोभाग पर देवी लक्ष्मी और पृष्ठ भाग पर नागरी अक्षरों में उसका नाम
(B) एक और कलिमः और दूसरी ओर अरबी अक्षरों में उसका नाम
(C) पुरोभाग पर उसका नाम और पृष्ठभाग पर टकसाल का नाम एवं टंकण वर्ष
(D) पुरोभाग पर राशियों के चिह्न और पृष्ठभाग पर फारसी अक्षरों में उसका नाम

324. "पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजौं पहार." यह कथन निम्नांकित का है—
(A) रामानन्द (B) नामदेव
(C) गुरुनानक (D) कबीर

325. चरखे का प्रयोग सर्वमान्य हो गया—
(A) 7वीं शताब्दी ई. में
(B) 10वीं शताब्दी ई. में
(C) 12वीं शताब्दी ई. में
(D) 14वीं शताब्दी ई. में

326. जंगल की देवी अरण्यानी का प्रथम उल्लेख है—
(A) ऋक् संहिता में (B) अथर्ववेद में
(C) आरण्यक ग्रन्थों में (D) उपनिषद् ग्रन्थों में

327. भारत के कुछ क्षेत्रों में लोग जमीन के अन्दर गड्ढों में रहते थे. इस बात का संकेत खुदाई से निम्नलिखित में मिलता है—
(A) बिहार (B) कश्मीर
(C) कर्नाटक (D) राजस्थान

328. अपने पुरोहित के साथ विदेघ माधव के पूर्व की ओर प्रव्रजन की कथा निम्नांकित में वर्णित है—
(A) ऐतरेय ब्राह्मण (B) शतपथ ब्राह्मण
(C) गोपथ ब्राह्मण (D) बृहदारण्यक उपनिषद्

329. वैदिक साहित्य में उल्लिखित अध्वर्यु था—
(A) वैदिक राजन् का सहयोगी
(B) रत्निन में से एक
(C) एक प्रकार का रथ
(D) यज्ञीय पुरोहित का एक भेद

330. गो-अपहरण के प्रसंग में ऋग्वेद में प्रमुख रूप से नाम आता है—
(A) म्लेच्छों का (B) दासों एवं दस्युओं का
(C) पणियों का (D) निषादों का

331. बौद्ध धर्म के किस निम्नांकित मत का उद्‌भव सातवीं शताब्दी ई. के आसपास हुआ ?
(A) थेरवाद (B) हीनयान
(C) महायान (D) वज्रयान

332. प्रथम तमिल संगम की स्थापना की थी—
(A) तिरुवल्लुवर ने (B) परशुराम ने
(C) मामुलनार ने (D) अगस्त्य ने

333. ऋग्वेद के सूक्तों के विषय में कौनसे निम्नांकित कथन सही हैं ?
(1) उनमें हिमवन्त एवं मूजवन्त का उल्लेख है.
(2) उनमें भौगोलिक शब्दों जैसे आर्यवर्त और दक्षिणात्य का उल्लेख है.
(3) उनमें उल्लिखित अधिकांश नदियाँ यमुना एवं गंगा से पश्चिम के क्षेत्रों में बहती हैं.
(4) उनमें कुरु, पांचाल एवं इक्ष्वाकु राजवंशों का उल्लेख है.

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (1) एवं (3)
(C) (2), (3) एवं (4) (D) (1), (2), (3) एवं (4)

334. निम्नलिखित में से कौन दीघनिकाय पर टिका है ?
(A) दीपवंश (B) ललितविस्तर
(C) नीतिप्रकरण (D) सुमंगल विलासिनी

335. निम्नलिखित स्थलों में कहाँ मनुष्य रूप में बुद्ध के प्रथम अंकन का मूर्ति-साक्ष्य प्राप्त हुआ है ?
(A) भरहुत (B) मथुरा
(C) साँची (D) अमरावती

336. बौद्ध धर्म के विषय में कौनसे कथन सही हैं ?
(1) इसने वर्ण और जातियों को अस्वीकार नहीं किया.
(2) इसने ब्राह्मण वर्ण की सर्वोच्च सामाजिक स्थिति को चुनौती दी.
(3) इसने कुछ शिल्पों को निम्न माना.

नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (2) एवं (3)
(C) (1), (2) एवं (3) (D) इनमें से कोई नहीं

337. निम्नांकित चार राजाओं में से किन दो के वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे ?
(1) मगध का बिम्बिसार (2) कौशल का प्रसेनजित
(3) अवन्ति का प्रद्योत (4) मगध का अजातशत्रु

कूट :
(A) (1) एवं (3) (B) (1) एवं (4)
(C) (2) एवं (3) (D) (3) एवं (4)

338. जैन दर्शन का निम्नांकित से निकट का साम्य है—
(A) वेदान्त (B) सांख्य
(C) वैशेषिक (D) योगाचार

339. ऐसी मान्यता है कि जैनों के मूल आगम में थे—
(A) 6 अंग (B) 8 अंग
(C) 10 अंग (D) 12 अंग

340. निम्नलिखित में से किसका राज्य जैन धर्म मानने वाले तथा जैन मन्दिरों का निर्माण करने वाले धनाढ्य व्यापारियों के लिए विख्यात था ?
(A) गुर्जर प्रतिहार (B) चालुक्य
(C) गहड़वाल (D) काकतीय

341. हेलियोडोरस के वेसनगर अभिलेख में निम्नांकित का उल्लेख है—
(A) संकर्षण एवं वासुदेव
(B) संकर्षण, प्रद्युम्न एवं वासुदेव
(C) केवल वासुदेव
(D) सभी पंचवीर

342. क्षत्रियजन यौधेय केवल निम्नांकित देवता के उपासक थे—
(A) इन्द्र (B) वासुदेव
(C) पशुपति (D) कार्तिकेय

343. शैव धर्म के इतिहास में कायावरोहण का क्या महत्व है ?
(A) यह पाशुपत सम्प्रदाय के एक प्रमुख लक्षण पशुपाश-विमोक्षण से अभिन्न है
(B) यह लकुलीश का जन्मस्थल था
(C) यह कापालिकों के व्रतों में से एक व्रत था
(D) यह कालामुख सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए निर्धारित एक धार्मिक कृत्य था

344. निम्नलिखित स्थानों में से कौन सूर्य मंदिरों के लिए विख्यात है ?
(1) मन्दसौर (2) मूलस्थान
(3) कोणार्क (4) मोढेरा
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (3)
(B) (3) एवं (4)
(C) (2), (3) एवं (4)
(D) (1), (2), (3) एवं (4)

345. निम्नलिखित पदों में से किनका अभिप्राय विभिन्न धर्मावलम्बी साधुओं के आश्रम से है ?
(1) विहार (2) मठ
(3) बसदि (4) मंडप
नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) (1) एवं (2) (B) (2) एवं (3)
(C) (3) एवं (4) (D) (1), (2) एवं (3)

346. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) न्याय	1. जैमिनि
(b) वैशेषिक	2. कपिल
(c) सांख्य	3. कणद
(d) मीमांसा	4. गौतम

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	4	2	1
(B)	2	3	1	4
(C)	4	3	2	1
(D)	4	1	3	2

347. मौर्य शासन व्यवस्था में रूपदर्शक नामक अधिकारी था—
(A) चाँदी तथा अन्य धातुओं का परीक्षक
(B) गणिकाओं का अध्यक्ष
(C) रंगमंच का प्रबन्धक
(D) सिक्कों का परीक्षक

348. प्राचीनतम भारतीय सिक्के निम्नांकित से पहले के नहीं हैं—
(A) सातवीं शताब्दी ई. पू.
(B) पाँचवीं शताब्दी ई. पू.
(C) तृतीय शताब्दी ई. पू.
(D) द्वितीय शताब्दी ई. पू.

349. अशोक का समकालीन सीरिया का ग्रीक राजा, जिसका उसके अभिलेखों में उल्लेख मिलता है, था—
(A) एण्टियोकस II थियोस
(B) टॉलेमी द्वितीय
(C) एण्टीगोनस
(D) एलेक्जेंडर

350. मौर्यकाल में दुर्भिक्ष काल में राहत कार्यों के लिए कोष्ठागारों के अस्तित्व का प्रमाण निम्नांकित से ज्ञात हुआ है—
(A) गिरनार का शिलालेख II
(B) स्तम्भलेख II

(C) सासाराम का लघु शिलालेख
(D) सोहगौरा पट्ट अभिलेख

351. नगर प्रशासन के प्रसंग में नगर श्रेष्ठी एवं सार्थवाह का उल्लेख निम्नांकित स्थान से प्राप्त गुप्त अभिलेखों में हुआ है—
(A) मध्य प्रदेश (B) पुंड्रवर्धन
(C) अवन्ति (D) सौराष्ट्र

352. गुप्त स्वर्ण एवं रजत सिक्के मूलतः निम्नांकित के सिक्कों पर आधारित थे—
(A) रोमन और शक क्षत्रप
(B) कुषाण और यौधेय
(C) कुषाण और शक क्षत्रप
(D) रोमन और कुषाण

353. सातवाहन नरेशों की राजधानी थी—
(A) मदुराई (B) पटना
(C) मथुरा (D) पैठान

उत्तरमाला

1. (B)	2. (D)	3. (A)	4. (C)	5. (C)
6. (A)	7. (B)	8. (A)	9. (A)	10. (D)
11. (D)	12. (A)	13. (D)	14. (C)	15. (C)
16. (C)	17. (D)	18. (C)	19. (A)	20. (A)
21. (C)	22. (C)	23. (D)	24. (A)	25. (C)
26. (A)	27. (A)	28. (C)	29. (C)	30. (A)
31. (B)	32. (A)	33. (B)	34. (A)	35. (C)
36. (A)	37. (D)	38. (A)	39. (D)	40. (B)
41. (A)	42. (C)	43. (D)	44. (D)	45. (A)
46. (D)	47. (A)	48. (B)	49. (C)	50. (B)
51. (C)	52. (B)	53. (A)	54. (D)	55. (B)
56. (B)	57. (C)	58. (B)	59. (C)	60. (D)
61. (D)	62. (B)	63. (A)	64. (C)	65. (C)
66. (B)	67. (C)	68. (D)	69. (B)	70. (C)
71. (B)	72. (B)	73. (B)	74. (B)	75. (C)
76. (B)	77. (B)	78. (C)	79. (B)	80. (D)
81. (C)	82. (C)	83. (D)	84. (A)	85. (A)
86. (A)	87. (D)	88. (D)	89. (B)	90. (C)
91. (B)	92. (D)	93. (A)	94. (A)	95. (C)
96. (B)	97. (D)	98. (B)	99. (D)	100. (C)
101. (C)	102. (B)	103. (D)	104. (B)	105. (D)
106. (C)	107. (A)	108. (A)	109. (D)	110. (D)
111. (A)	112. (C)	113. (C)	114. (B)	115. (B)
116. (D)	117. (C)	118. (D)	119. (A)	120. (B)
121. (B)	122. (D)	123. (C)	124. (C)	125. (A)
126. (D)	127. (C)	128. (C)	129. (C)	130. (C)
131. (D)	132. (B)	133. (C)	134. (B)	135. (C)
136. (D)	137. (C)	138. (A)	139. (A)	140. (D)
141. (C)	142. (B)	143. (C)	144. (C)	145. (B)
146. (C)	147. (A)	148. (B)	149. (D)	150. (B)
151. (D)	152. (B)	153. (A)	154. (B)	155. (D)
156. (A)	157. (D)	158. (B)	159. (D)	160. (C)
161. (C)	162. (A)	163. (C)	164. (D)	165. (D)
166. (A)	167. (A)	168. (D)	169. (D)	170. (A)
171. (C)	172. (A)	173. (A)	174. (A)	175. (C)
176. (B)	177. (C)	178. (A)	179. (B)	180. (C)
181. (B)	182. (C)	183. (C)	184. (C)	185. (C)
186. (D)	187. (A)	188. (B)	189. (B)	190. (A)
191. (B)	192. (A)	193. (B)	194. (D)	195. (C)
196. (C)	197. (A)	198. (B)	199. (C)	200. (D)
201. (D)	202. (C)	203. (A)	204. (C)	205. (A)
206. (C)	207. (A)	208. (A)	209. (B)	210. (D)
211. (A)	212. (B)	213. (B)	214. (A)	215. (C)
216. (C)	217. (B)	218. (C)	219. (B)	220. (A)
221. (A)	222. (B)	223. (B)	224. (A)	225. (A)
226. (A)	227. (A)	228. (A)	229. (B)	230. (B)
231. (C)	232. (A)	233. (D)	234. (A)	235. (D)
236. (C)	237. (D)	238. (C)	239. (B)	240. (B)
241. (C)	242. (B)	243. (C)	244. (C)	245. (A)
246. (A)	247. (D)	248. (A)	249. (A)	250. (B)
251. (D)	252. (B)	253. (C)	254. (B)	255. (A)
256. (B)	257. (A)	258. (A)	259. (C)	260. (C)
261. (A)	262. (B)	263. (A)	264. (C)	265. (D)
266. (C)	267. (D)	268. (C)	269. (C)	270. (C)
271. (D)	272. (D)	273. (C)	274. (C)	275. (A)
276. (A)	277. (B)	278. (D)	279. (D)	280. (A)
281. (C)	282. (D)	283. (C)	284. (A)	285. (D)
286. (D)	287. (B)	288. (B)	289. (A)	290. (A)
291. (B)	292. (B)	293. (B)	294. (C)	295. (B)
296. (B)	297. (B)	298. (C)	299. (C)	300. (C)
301. (A)	302. (C)	303. (D)	304. (C)	305. (B)
306. (C)	307. (A)	308. (B)	309. (C)	310. (D)
311. (D)	312. (B)	313. (A)	314. (B)	315. (D)
316. (A)	317. (A)	318. (D)	319. (D)	320. (C)
321. (A)	322. (B)	323. (B)	324. (D)	325. (C)
326. (D)	327. (A)	328. (D)	329. (D)	330. (B)
331. (D)	332. (D)	333. (B)	334. (B)	335. (A)
336. (B)	337. (B)	338. (B)	339. (D)	340. (B)
341. (D)	342. (B)	343. (C)	344. (C)	345. (D)
346. (C)	347. (B)	348. (C)	349. (C)	350. (B)
351. (A)	352. (D)	353. (D)		

परिशिष्ट

(Appendices)

- प्राचीन भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाएं (कालक्रमानुसार)
- प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंश एवं शासक
- महत्वपूर्ण दरबारी कवि, विद्वान् व उनके संरक्षक
- प्रमुख भारतीय शासक तथा उपाधि
- प्राचीन भारतीय विद्वान् एवं उनके ग्रन्थ, कालक्रम
- प्राचीन भारतीय इतिहास से सम्बद्ध विदेशी विद्वान्, उनका कालक्रम ग्रन्थ एवं सम्बन्धित देश
- प्राचीन भारत के सिक्के
- प्राचीनकालीन शब्दावली
- प्राचीनकाल में भारत आने वाले विदेशी यात्री
- प्राचीन भारतीय स्थापत्य
- मौर्य समाज के प्रमुख अधिकारी
- गुप्त साम्राज्य के प्रमुख अधिकारी
- प्रमुख प्राचीन अभिलेख
- गिरनार (गुजरात) का शिलालेख
- भारत के प्रमुख लोक नृत्य तथा लोक नाट्य शैलियाँ
- प्रमुख शास्त्रीय नृत्य
- प्राचीन भारत के ऐतिहासिक व्यक्तित्व
- प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रमुख युद्ध
- बौद्धकालीन प्रमुख जनपद एवं राजधानी
- प्रमुख राजवंश, संस्थापक तथा राजधानी
- प्रमुख भारतीय संवत्
- वैदिक काल की विशिष्ट जानकारी
- जैन धर्म के प्रमुख तीर्थंकर एवं उनके नाम
- बौद्ध संगीतियाँ
- बौद्ध साहित्य
- बौद्ध ग्रन्थों में वर्णित गणराज्य
- संगमकालीन समाज के वर्ग
- प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल एवं उनके प्राप्त अन्य नाम
- संगम की विशिष्ट जानकारी
- संगम साहित्य एवं साहित्यकार
- भारतीय नृत्य एवं संगीत से सम्बन्धित ग्रन्थ एवं लेखक
- मत्स्यपुराण के अनुसार भारतवर्ष के भेद
- सिन्धु सभ्यता की विशिष्ट जानकारी
- सिन्धु सभ्यता में विदेशी व्यापार
- प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्त एवं उनके प्रतिपादक
- प्राचीनकालीन वैवाहिक प्रकार
- हर्षकालीन साम्राज्य के पदाधिकारी
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित मौर्यकालीन मंत्री
- प्रमुख नदियाँ एवं उनके प्राचीन नाम
- सोलह महाजनपद एवं उनकी राजधानी
- प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय एवं संस्थापक
- प्राचीनकालीन षोड़श संस्कार
- प्रमुख धर्म प्रवर्त्तकों के स्थापित मत
- प्राचीनकालीन महायज्ञ
- शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ
- मनुस्मृति द्वारा प्रतिपादित दस यम
- अशोक के बौद्ध धर्म प्रचारक एवं प्रचार क्षेत्र
- गुप्तकालीन जिले के अधिकारी
- प्राचीनकालीन व्यावसायिक वर्ग
- पाषाणकालीन स्थल, खोजकर्ता एवं सन्
- अशोक के अभिलेख, उनके खोजकर्ता एवं खोज का वर्ष
- प्राचीन भारतीय इतिहास से सम्बद्ध प्रमुख अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ
- प्रमुख सूत्र ग्रन्थ, उनके रचनाकार एवं कालक्रम
- स्मृति ग्रन्थ एवं उनका काल
- प्राचीन भारतीय राजवंश, कालक्रम एवं संस्थापक
- प्राचीन भारत के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल

प्राचीन भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाएँ (कालक्रमानुसार)

2500000 ई. पू. से 1000000 ई. पू.	भारत में निम्न पुरापाषाण काल एवं मानव का प्राचीनतम अस्तित्व.
1000000 ई. पू. से 40000 ई. पू.	प्रस्तर शिल्प संस्कृति एवं मध्य पुरापाषाणकाल का आविर्भाव.
40000 ई. पू. से 10000 ई. पू.	उच्च-पुरापाषाण काल एवं आधुनिक मानव होमोसेपियन्स का उदय.
9000 ई. पू. से 4000 ई. पू.	मध्य-पाषाणकाल में पशुओं के पालने एवं शिकार करना प्रारम्भ.
7000 ई. पू. से 1000 ई. पू.	नव-पाषाणकाल का उदय एवं फसल उगाने की शुरूआत.
2500 ई. पू. से 1800 ई. पू.	सिन्धु घाटी सभ्यता की कांस्ययुगीन सभ्यता का उदय.
2100 ई. पू. से 1500 ई. पू.	राजस्थान में बनास घाटी में ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता का उदय. आहड़ (आहार) संस्कृति का उदय.
2000 ई. पू. से 1500 ई. पू	दोआब में गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति का आविर्भाव.
1800 ई. पू. से 1200 ई. पू.	हड़प्पा की उत्तरकालीन संस्कृति का उदय.
1700 ई. पू. से 1200 ई. पू.	नवदाटोली (मालवा) में ताम्र पाषाण संस्कृति का आविर्भाव.
1500 ई. पू.	आर्यों का भारत में आगमन.
1500 ई. पू. से 1000 ई. पू.	आर्यों का प्रमुख ग्रन्थ ऋग्वेद रचा गया.
14वीं शताब्दी ई. पू.	एशिया माइनर के बोगजकोई अभिलेख की तिथि.
1100 से 900 ई. पू.	महाभारतकाल (हस्तिनापुर से प्राप्त तथ्यों के अनुसार).
1050 ई. पू.	चित्रित धूसर मृदभाण्ड युक्त लौह प्रयोक्ता संस्कृति की प्रारम्भिक तिथि.
1000-600 ई. पू.	उत्तर-वैदिककाल की तिथि. इसी दौरान उत्तरी गंगा के मैदान में आर्यों का विस्तार हुआ.
1000-600 ई. पू.	ऋग्वेद के अतिरिक्त वेदों की रचना एवं ब्राह्मणों की स्थिति रचना का समय.
1000 ई. पू.	लोहे के गांधार में प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए.
950 ई. पू.	महाभारत के युद्ध की अनुमानित तिथि.
817 ई. पू.	जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की तिथि.
800 ई. पू.	महाभारत की प्रारम्भिक रचना का समय. बंगाल में आर्यों का प्रसार.
600 ई. पू.	मगध का उत्थान, महर्षि कणाद के वैशेषिक दर्शन एवं यास्क के निरुक्त का निरूपण काल. आहत सिक्कों (Punch marked coins) का प्रारम्भ. नगरीकरण की प्रक्रिया का आरम्भ हुआ.
600 ई. से 550 ई. पू.	उपनिषदों के संकलन का समय.
600 से 200 ई. पू.	सूत्रों की रचना हुई.
563 ई. पू.	कपिलवस्तु के लुम्बिनी में महात्मा बुद्ध का जन्म.
544 ई. पू. से 492 ई. पू. तक	हर्यंक वंश के संस्थापक बिम्बिसार का मगध में शासन प्रारम्भ हुआ.
540 ई. पू.	वैशाली के कुण्डग्राम में महावीर स्वामी का जन्म हुआ.
516 ई. पू.	फारस के एकेमेनिड सम्राट् डेरियस प्रथम ने भारत के पश्चिमोत्तर भाग पर आक्रमण किया.
500 ई. पू.	वाल्मीकि की रामायण की रचना प्रारम्भ हुई. सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि का समय. दक्षिण भारत एवं श्रीलंका में आर्यों का प्रसार हुआ.
500 से 400 ई. पू.	पुराणों की रचना आरम्भ हुई.
492 से 460 ई. पू.	मगध में अजातशत्रु का शासनकाल.
468 ई. पू.	जैन धर्म के प्रमुख प्रवर्तक महावीर स्वामी ने पावा में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया.
460 से 444 ई. पू.	मगध साम्राज्य में सम्राट् उदयिन का शासनकाल.
450 ई. पू.	मगध सम्राट् उदयिन द्वारा पाटलिपुत्र का निर्माण कराया गया.
483 ई. पू.	कुशीनगर में महात्मा बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया. राजगृह में महाकश्यप की अध्यक्षता में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया.
413 ई. पू.	मगध में शिशुनाग ने हर्यंक वंश का पतन कर शिशुनाग वंश की स्थापना की.
400 ई. पू.	व्याकरण के महान् विद्वान् पाणिनी की पुस्तक 'अष्टाध्यायी' का निरूपण काल.

387 ई. पू.	वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन मगध सम्राट् कालाशोक के संरक्षण में हुआ.
344 ई. पू.	शिशुनाग वंश का पतन एवं मगध में महापद्मनन्द द्वारा नन्द वंश की स्थापना.
326 ई. पू.	सिकन्दर द्वारा भारत पर आक्रमण किया गया.
325 ई. पू.	सिकन्दर ने भारत से प्रस्थान किया.
322 ई. पू.	मगध में नन्द वंश का अन्त एवं चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की.
305 ई. पू.	भारत पर सेल्यूकस निकेटर का आक्रमण एवं चन्द्रगुप्त मौर्य के हाथों पराजय.
305-297 ई. पू.	मेगस्थनीज ने भारत की यात्रा की.
300 ई. पू.	कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की. पाटलिपुत्र में प्रथम जैन संगीति का आयोजन हुआ.
300 ई. पू. से 300 तक	इस काल में संगम साहित्य को संकलित किया गया.
298 से 273 ई. पू.	मगध में मौर्य सम्राट् बिन्दुसार का शासनकाल.
298 से 274 ई. पू.	सीरिया के सम्राट् अंतिओकस प्रथम का राजदूत डायमेकस बिन्दुसार के दरबार में आया.
284 से 262 ई. पू.	बिन्दुसार के दरबार में मिश्र के शासक का राजदूत डायोनिसियस आया.
273 से 232 ई. पू.	मगध में अशोक महान् का शासन-काल.
250 ई. पू.	पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन मोग्गलिपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में हुआ. अशोक महान् ने साँची स्तूप का निर्माण कराया.
249 ई. पू.	बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र को श्रीलंका भेजा.
248 ई पू.	अशोक महान् ने लुम्बिनी की यात्रा की.
232 ई. पू.	अशोक महान् की मृत्यु हुई एवं मगध में उत्तराधिकारी के रूप में उनके पुत्र कुणाल ने शासन सँभाला.
220 से 180 ई. पू.	बैक्ट्रिया के शासक डिमेट्रियस द्वितीय का शासनकाल.
206 ई. पू.	सीरिया के शासक अंतिओकस तृतीय ने भारत पर आक्रमण कर सुभागसेन को पराजित किया.
200 ई. पू.	अमरावती में स्तूप का निर्माण हुआ.
200 ई. पू. से 200	मनुस्मृति की रचना का कालक्रम.
185 ई. पू.	मौर्य वंश का पतन एवं पुष्यमित्र शुंग[1] द्वारा मगध में शुंग वंश की स्थापना.
180 से 165 ई. पू.	पश्चिमोत्तर भारत में इण्डो-यूनानी शासक डिमेट्रियस-II का शासनकाल.
165 से 145 ई. पू.	पश्चिमोत्तर भारत में इण्डो-यूनानी शासक मीनेण्डर का आधिपत्य हो गया.
150 ई. पू.	पतंजलि के व्याकरण ग्रन्थ महाभाष्य का प्रणयन काल.
145 से 101 ई. पू.	चोल नरेश एलारा द्वारा लंका पर आधिपत्य कर लिया गया
138 से 88 ई. पू.	पूर्वी ईरान में पार्थियन एवं शकों के मध्य संघर्ष हुआ.
100 ई. पू.	यूनानी यात्री एलन का पश्चिमोत्तर यात्रा का कालक्रम.
90 से 70 ई. पू.	गांधार प्रदेश में पार्थियन शासक माऊज का शासनकाल.
75 ई. पू.	वसुदेव द्वारा मगध में शुंग वंश का पतन कर कण्व वंश की स्थापना.
58 ई. पू.	उज्जैन के सम्राट् विक्रमादित्य ने शकों को पराजित किया.
57 ई. पू.	'कृत मालव विक्रम सम्वत्' का आरम्भ हुआ.
50 ई. पू.	कलिंग के सम्राट् खारवेल का कालक्रम.
50 से 45 ई. पू.	दक्षिण भारत से रोम का व्यापार प्रारम्भ हुआ.
44 से 29 ई. पू.	मगध में कण्व वंश का पतन हो गया.
20 से 52 ई. पू.	उत्तर-पश्चिम भारत पर पार्थियन शासक गोण्डोफर्नीज के शासन का कालक्रम
50 से 64 ई. पू.	कदफिसस प्रथम ने पश्चिमोत्तर भारत में कुषाण वंश की सत्ता की स्थापना की.
50 से 75 ई. पू.	गौतम ने न्यायदर्शन का प्रवर्तन किया.
64 से 78 ई. पू.	पश्चिमोत्तर भारत में कदफिसस द्वितीय का शासन.

1 कुछ विद्वान् यह कालक्रम 187 ई. पू. भी मानते हैं.

78 ई. पू.	कुषाण शासक कनिष्क का राज्यारोहण, कनिष्क द्वारा शक सम्वत् का आरम्भ.
100 से 200 ई.	बौद्ध धर्म की महायान शाखा के दार्शनिक नागार्जुन का कालक्रम. संस्कृत के प्रख्यात् नाटककार अश्वमेध का कालक्रम.
101 ई.	कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कनिष्क के संरक्षण में हुआ.
130 ई.	रुद्रदामन ने पश्चिमोत्तर भारत का शासन सँभाला.
150 ई.	शक शासन रुद्रदामन ने सातवाहनों को परास्त कर कोंकण एवं मालवा पर विजय प्राप्त की.
165 से 194 ई.	सातवाहन शासक यज्ञश्रीपुत्र शातकर्णि का शासनकाल.
175 ई.	यज्ञश्रीपुत्रशातकर्णि ने शक शासक द्वारा विजित कोंकण एवं मालवा को छीना.
190 ई.	चोलवंश के महान् सम्राट् करिकाल का राज्यारोहण हुआ.
225 ई.	सातवाहन साम्राज्य का पतन हुआ.
245 ई.	महाराष्ट्र में आभीर वंश का उद्‌भव हुआ.
248 ई.	कलचुरि शासक ने जैकूटक सम्वत् का आरम्भ किया.
250 ई.	बरार में विन्ध्यशक्ति ने वाकाटक वंश की स्थापना की.
300 ई.	पुराणों का अंतिम रूप से संकलन हुआ एवं लंका के इतिवृत्त 'दीपवंश' की रचना का कालक्रम.
319–320 ई.	मगध में चन्द्रगुप्त प्रथम ने स्वतन्त्र गुप्त राज्य की स्थापना की. चन्द्रगुप्त सम्वत् का आरम्भ हुआ.
335–386 ई.	गुप्तवंशीय सम्राट् समुद्रगुप्त का शासनकाल.
360 ई.	समुद्रगुप्त के दरबार में लंका के राजदूत का आगमन.
375–445 ई.	चन्द्रगुप्त-II समकालीन कवि एवं नाटककार कालिदास का कालक्रम.
380–412 ई.	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का शासनकाल.
388 ई.	शकों पर विजय के उपलक्ष्य में चन्द्रगुप्त II भारत में सर्वप्रथम चाँदी के सिक्कों का प्रचलन प्रारम्भ किया.
399–414 ई.	चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान के द्वारा चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत की यात्रा.
400 ई.	रामायण (वाल्मीकि) एवं महाभारत का अन्तिम रूप से संकलन हुआ. **'अमरसिंह'** द्वारा प्रसिद्ध शब्दकोष अमरकोष की रचना की गई. दक्षिण भारत में शासकीय भाषा के रूप में संस्कृत को मान्यता मिली.
448 ई.	इलाहाबाद गुप्त अभिलेख की तिथि, जिसमें दशमलव पद्धति के प्रचलन का उल्लेख मिलता है.
445–467 ई.	गुप्त सम्राट् स्कन्दगुप्त का शासनकाल
476 ई.	प्रख्यात गणितज्ञ आर्यभट्ट का जन्म पटना में हुआ.
510 ई.	एरण अभिलेख की तिथि, जिसमें सती प्रथा को उल्लेखित किया गया है.
528–543 ई.	मध्य भारत में यशोधर्मा का शासन
543 ई.	पुलकेशिन प्रथम ने वादामी के चालुक्य वंश की स्थापना की.
550 ई.	गुप्तवंश के अन्तिम शासक विष्णुगुप्त की मृत्यु.
554 ई. से 566 ई.	चालुक्य सम्राट् कीर्तिवर्मन का कालक्रम.
598 ई.	महान् गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त का जन्म.
650 ई.	तमिल के प्रख्यात् महाकाव्य शिलाप्पदिकारम एवं मणिमेखलै का रचनाकाल.
620 ई.	चालुक्य सम्राट् पुलकेशियन II ने हर्ष को पराजित किया.
622 ई.	हिज्री सन् का प्रारम्भ हुआ.
629–644 ई.	चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा का कालक्रम.
634 ई.	पुलकेशियन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख की तिथि, जिसमें कालिदास एवं भारवि के सन्दर्भ में उल्लेख मिलता है.
637 ई.	ह्वेनसांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय की यात्रा की.
642 ई.	पुलकेशियन द्वितीय की मृत्यु हो गई.
643 ई.	ह्वेनसांग ने हर्षवर्द्धन से भेंट की. हर्ष ने गंजाम पर आक्रमण किया.
647 ई.	सम्राट् हर्षवर्द्धन की मृत्यु.

655 से 680 ई.	चालुक्य नरेश विक्रमादित्य प्रथम का शासनकाल.
655 ई.	विक्रमादित्य प्रथम ने पल्लवों को परास्त कर बादामी को पुनः प्राप्त किया.
670 ई.	चीनी यात्री इत्सिंग नालन्दा विश्वविद्यालय में आया.
695 से 722 ई.	पल्लव नरेश नरसिंहवर्मन द्वितीय का शासनकाल.
705 से 777 ई.	जैन ग्रन्थों के प्रणेता हरिभद्रसूरि का कालक्रम.
713 ई.	सिन्ध में अरब शासन की स्थापना हुई.
725 से 752 ई.	कन्नौज के शासक यशोवर्मन का शासनकाल.
736 ई.	दिल्ली के पहले नगर की स्थापना हुई.
743 ई.	तिब्बत में लामा धर्म का उत्थान हुआ.
750 ई.	पालवंश की स्थापना, गोपाल ने शासन सँभाला.
753 ई.	बरार में दन्तिदुर्ग के नेतृत्व में.
757 ई.	राष्ट्रकूटों ने कीर्तिवर्मन द्वितीय को पराजित कर बादामी के चालुक्य वंश का अन्त कर दिया.

प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंश एवं शासक**

हर्यंक वंश	**545 ई. पू.-412 ई. पू. तक**
बिम्बिसार	545-493 ई. पू.
अजातशत्रु	493-461 ई. पू.
उदयिन या उदयभद्र	461-445 ई. पू.
अनिरुद्ध, मुण्ड, नागदाश	445-412 ई. पू.
शिशुनाग वंश	**412-345 ई. पू. तक**
शिशुनाग	412-394 ई. पू.
कालाशोक	394-366 ई. पू.
नन्दिवर्धन	366-344 ई. पू.
नन्द वंश	**344-321 ई. पू. तक**
महानंदिन, महापद्मनन्द, घनानन्द	344-321 ई. पू.
मौर्य वंश	**321-185 ई. पू. तक**
चन्द्रगुप्त मौर्य	321-298 ई. पू.
बिन्दुसार 'अमित्रघात'	298-273 ई. पू.
अशोक	273-232 ई. पू.
बृहद्रथ	232-185 ई. पू.
शुंगवंश	**185-75 ई. पू. तक**
पुष्यमित्र	185-149 ई. पू.
अग्निमित्र	149-141 ई. पू.
वसुज्येष्ठ	141-134 ई. पू.
वसुमित्र	134-124 ई. पू.
आर्द्रक तथा ओद्रक	124-122 ई. पू.
पुलिन्दक	122-119 ई. पू.
घोष	119-116 ई. पू.
वज्रमित्र	116-110 ई. पू.
भागवत	110-78 ई. पू.
देवभूति	78-75 ई. पू.
कण्व बंश	**75-30 ई. पू.**
वसुदेव	75-66 ई. पू.
भूमिमित्र	66-52 ई. पू.
नारायण	52-40 ई. पू.
सुशर्मन	40-30 ई. पू.
आन्ध्र वंश * (सातवाहन)	**60 ई. पू. से 240 ई. पू.**
शिमुक (सिमुक)	
कृष्ण	
श्री मल्लकर्णी	
पूर्णोत्संग	
स्कन्ध स्तम्भि	
शातकर्णी	
लम्बोदर	
अपालक	
मेघस्वाति	
स्वाति	
स्कन्धस्वाति	
मृगेन्द्र स्वातिकर्ण	
कुन्तल स्वातिकर्ण	

** स्रोत–प्राचीन भारतीय इतिहास परिशिष्ट. –*डॉ. राजबलि पाण्डेय*

* मत्स्य पुराण के अनुसार

स्वातिकर्ण
पुलुमांवि (पुनुमायी)
रिक्तपर्ण
हाल
मण्डलक
पुरीन्द्रसेन
सुन्दर शान्तिकर्ण
चकोर स्वातिकर्ण
शिव स्वाति
गौतमीपुत्र
पुलोमा
शिवश्रीसात
शिवस्कन्द शातकर्णी
यशश्रीशातकर्णी
विजय
चण्डश्रीशातकर्णी
पुलोमा

गुप्त वंश	**243-510 ई.**
श्रीगुप्त	243-280 ई.
घटोत्कच	280-320 ई.
चन्द्रगुप्त प्रथम	320-340 ई.
समुद्रगुप्त	340-375 ई.
रामगुप्त	375 ई.
चन्द्रगुप्त द्वितीय	375-414 ई.
कुमारगुप्त	414-455 ई.
स्कन्दगुप्त	455-467 ई.
भानुगुप्त बालादित्य	495-510 ई.
पुष्यभूति वंश	**580-648 ई.**
प्रभाकर वर्धन	580-605 ई.
राज्यवर्धन द्वितीय	605-606 ई.
हर्षवर्धन	606-648 ई.
चोल वंश	**864-1122 ई.**
विजयालय	864-880 ई.
आदित्य	880-907 ई.
परान्तक प्रथम	907-949 ई.
राजराजे प्रथम	985-1014 ई.
राजेन्द्र प्रथम	1014-1044 ई.
राजाधिराज	1044-1052 ई.
राजेन्द्र द्वितीय	1052-1063 ई.
वीरेन्द्र प्रथम	1063-1070 ई.
कुलोतुंग	1070-1122 ई.

पल्लव राजवंश	
सिंह विष्णु अवनिसिंह	575-600 ई.
महेन्द्र वर्मन प्रथम	600-630 ई.
नरसिंह वर्मन प्रथम	630-668 ई.
महेन्द्र वर्मन द्वितीय	668-670 ई.
परमेश्वर वर्मन प्रथम	670-695 ई.
नरसिंह वर्मन द्वितीय	695-722 ई.
परमेश्वर वर्धन द्वितीय	722-730 ई.
नन्दी वर्मन द्वितीय	730-795 ई.
राष्ट्रकूट वंश	
दन्तिदुर्ग	
कृष्णराज प्रथम	758-773 ई.
ध्रुव	780-793 ई.
गोविन्द तृतीय	793-814 ई.
अमोघवर्ष	814-878 ई.
कृष्ण द्वितीय	878-914 ई.
इन्द्र तृतीय	914-918 ई.
चालुक्य वंश	
जयसिंह	
पुलकेशियन प्रथम	535-567 ई.
कीर्तिवर्मन प्रथम	
मंगलेश	598 ई.
पुलकेशियन द्वितीय महान्	609-642 ई.
विक्रमादित्य प्रथम	645-681 ई.
विक्रमादित्य द्वितीय	734-745 ई.
कीर्तिवर्मन द्वितीय	746-757 ई.
कुषाण वंश	
कुजुल कदफिसस	
विम कदफिसस	
कनिष्क	78-123 ई.
वासुदेव	145-176 ई.
वाकाटक वंश	
विन्ध्यशक्ति	
प्रभावती गुप्त (महिला संरक्षिका)	390-410 ई.
हरिषेण	475-510 ई.
गुर्जर प्रतिहार वंश	
नागभट्ट प्रथम	
ककुस्थ	
देवराज	

वत्सराज	775-800 ई.
नागभट्ट द्वितीय	800-833 ई.
रामभद्र	833-836 ई.
भोज	836-885 ई.
महेन्द्रपाल प्रथम	885-910 ई.
भोज द्वितीय	910-912 ई.
महीपाल प्रथम	912-945 ई.
महेन्द्रपाल द्वितीय	945-948 ई.
देवपाल	948-950 ई.
विनायकपाल	
महीपाल द्वितीय	
विजयपाल	
राज्यपाल	
त्रिलोचनपाल	
यशपाल	

पाल वंश

गोपाल (संस्थापक)	750-770 ई.
धर्मपाल	770-810 ई.
देवपाल	810-850 ई.
विग्रहपाल प्रथम	850-854 ई.
नारायण पाल	854-915 ई.
राज्यपाल	915-940 ई.
गोपाल द्वितीय	940-960 ई.
विग्रहपाल द्वितीय	960-988 ई.
महीपाल प्रथम	988-1038 ई.
नयपाल	1038-1055 ई.
विग्रहपाल तृतीय	1055-1070 ई.
महीपाल द्वितीय	1070-1075 ई.
रामपाल	1075-1120 ई.
कुमारपाल	1120-1125 ई.
गोपाल तृतीय	1125-1144 ई.
मदनपाल	1144-1161 ई.
गोविन्दपाल	

गहड़वाल वंशीय

यशोविग्रह (संस्थापक)	
महीचन्द्र	
चन्द्रदेव	1089-1104 ई.
मदन देव	1104-1114 ई.
गोविन्द्र चन्द्र	1114-1154 ई.
विजयचन्द्र	1155-1169 ई.
जयचन्द्र	1170-1194 ई.
हरिश्चन्द्र	

चन्देल वंश

नन्नुक	831-844 ई.
वाक्पति	844-870 ई.
विजयशक्ति	870-900 ई.
राहिल	900-915 ई.
हर्ष	915-930 ई.
यशोवर्मा	930-950 ई.
धंग	950-1002 ई.
गंड	1003-1017 ई.
विद्याधर	1018-1029 ई.
विजयपाल	1030-1050 ई.
देववर्मा	1050-1060 ई.
कीर्तिवर्मा	1060-1100 ई.
सल्लक्षण वर्मा	1100-1115 ई.
जयवर्मा	1115-1120 ई.
पृथ्वीवर्मा	1120-1129 ई.
मदनवर्मा	1129-1163 ई.
यशोवर्मा द्वितीय	1163-1165 ई.
परिमर्दिनदेव	1165-1202 ई.
त्रैलोक्यवर्मा	1203-1247 ई.
वीर्यवर्मा	1250-1286 ई.
भोजवर्मा	1286-1288 ई.
हम्मीरवर्मा	1288-1310 ई.

चौहान (चाह्मान) वंश

वासुदेव (संस्थापक)	551 ई.
सामन्तराज	
नरदेव	
अजयराज प्रथम	
विग्रहराज प्रथम	
चन्द्रराज प्रथम	
गोपेन्द्रराज	
दुर्लभराज प्रथम	
गूवक प्रथम	
चन्द्रराज द्वितीय	
गूवक द्वितीय	
चन्दनराज	
वाक्पतिराज प्रथम	
सिंहराज	
विग्रहराज द्वितीय	
दुर्लभराज द्वितीय	
गोविन्दराज द्वितीय	
वाक्पतिराज द्वितीय	
वीर्यराज	

चामुण्डराज	
दुर्लभराज द्वितीय	
विग्रहराज तृतीय	
पृथ्वीराज प्रथम	
अजयराज द्वितीय	1105-1130 ई.
अर्णोराज	1130-1150 ई.
विग्रहराज चतुर्थ	1150-1164 ई.
अपरगांगेय	1164 ई.
पृथ्वीराज द्वितीय	1164-1169 ई.
सोमेश्वर	1169-1177 ई.
पृथ्वीराज तृतीय	1178-1192 ई.
हरिराज	1198 ई.

चौलुक्य वंश

मूलराज प्रथम (संस्थापक)	941-996 ई.
चामुण्डराज	997-1009 ई.
वल्लभराज	1009 ई.
दुर्लभराज	1009-1024 ई.
भीम प्रथम	1024-1064 ई.
कर्ण	1065-1093 ई.
जयसिंह सिंहराज	1094-1142 ई.
कुमारपाल	1143-1173 ई.
अजयपाल	1173-1176 ई.
मूलराज द्वितीय	1176-1178 ई.
भीम द्वितीय	1178-1241 ई.

परमार वंश

उपेन्द्रराज	790-817 ई.
वैरीसिंह प्रथम	817-842 ई.
सीआक प्रथम	844-893 ई.
वाकपति प्रथम	894-920 ई.
वैरिसिंह द्वितीय	921-945 ई.
सीआक द्वितीय	945-972 ई.
वाकपति द्वितीय (भुंज)	973-996 ई.
सिन्धुराज	996-1010 ई.
भोज	1010-1055 ई.
जयसिंह प्रथम	1055-1070 ई.
उदयादित्य	1070-1086 ई.
लक्ष्मदेव	1086-1094 ई.
नरवर्मा	1094-1133 ई.
यशोवर्मा	1134-1142 ई.
जयवर्मन	
विन्ध्यवर्मन	
सभटवर्मन	

महत्वपूर्ण दरबारी कवि, विद्वान् व उनके संरक्षक

कवि एवं विद्वान्	संरक्षक
रवि कीर्ति	पुलकेशिन द्वितीय
भवभूति	कन्नौज का यशोवर्मन (720 ई.)
वाकुपति	यशोवर्मन
अश्वघोष, नागार्जुन, चरक	कनिष्क
हरिषेण	समुद्रगुप्त
कौटिल्य	चन्द्रगुप्त मौर्य
दण्डिन	नरसिंह वर्मन
भारवि	सिंह विष्णु
वाणभट्ट	हर्षवर्धन
राजशेखर	महिपाल
सोमदेव	पृथ्वीराज तृतीय
कालिदास, धनवंतरि, आर्यभट्ट, अमरसिंह	चन्द्रगुप्त द्वितीय
चन्दवरदायी	पृथ्वीराज चौहान
गुणाढ्य	सातवाहन नरेश हाल
महावीराचार्य, जिनसेन	अमोघवर्ष

प्रमुख भारतीय शासक तथा उपाधि

शासक	उपाधि
कृष्णदेवराय	यवनराज्य स्थापनाचार्य
राजेन्द्र प्रथम	गंगैकोण्डचोल
राजराम	जयमगोण्ड, चोलमार्तण्ड
विक्रमादित्य द्वितीय	नरेन्द्रमृगराज
विक्रमादित्य चतुर्थ	त्रिभुवन मल्ल
गोविन्द तृतीय	जगत्तुंग
नरसिंहवर्मन प्रथम	वातापीकोण्ड, महामल्ल
महेन्द्रवर्मन प्रथम	विचित्रचित्त
पुलकेशिन द्वितीय	परमेश्वर
हर्षवर्धन	शिलादित्य
चन्द्रगुप्त द्वितीय	विक्रमादित्य, शकारी
चन्द्रगुप्त प्रथम	महाराजाधिराज
समुद्रगुप्त	कविराज, पराक्रमांक, भारतीय नेपोलियन
कनिष्क	देवपुत्र
गौतमीपुत्र शातकर्णी	क्षत्रियदर्पमान मर्दन
हाल	कविवत्सल
अशोक	देवानामप्रिय, प्रियदर्शी
बिन्दुसार	अमित्रघात

प्राचीन भारतीय विद्वान् एवं उनके ग्रन्थ, कालक्रम

नाम विद्वान्	रचना	कालक्रम
यास्क	निरूक्त	600 ई. पू.
महर्षि कणाद	वैशेषिक दर्शन	600 ई. पू.
महर्षि गौतम	न्यायसूत्र	600-400 ई. पू.
महर्षि कपिल	सांख्य दर्शन	600-400 ई. पू.
वाल्मीकि	रामायण	—
वेदव्यास	महाभारत	—
पाणिनी	अष्टाध्यायी	400 ई. पू.
कौटिल्य (चाणक्य)	अर्थशास्त्र	300 ई. पू.
मनु	मनुस्मृति	200 ई. पू. से 200 ई.
पतञ्जलि	महाभाष्य	150 ई. पू.
गुणाढ्य	वृहत्संहिता	50 ई. पू. से 75 ई.
राजा हाल	गाथा सप्तशती	प्रथम शताब्दी ई.
अश्वघोष	बुद्धचरित, सौन्दरानन्द	100-200 ई.
नागार्जुन	माध्यमिका सूत्र	100-200 ई.
सुश्रुत	सुश्रुत संहिता	100-200 ई.
चरक	चरक संहिता	100-200 ई.
कालिदास	रघुवंश, मेघदूत, कुमार सम्भव	375–445 ई.
विष्णु शर्मा	पंचतन्त्र	चतुर्थ शताब्दी
भास	स्वप्नवासवदत्ता, चारुदत्त	चतुर्थ शताब्दी
अमरसिंह	अमरकोष	400-500 ई.
वात्स्यायन	कामसूत्र	400-500 ई.
आर्यभट्ट	आर्यभट्टीय	476-550 ई.
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	छठी शताब्दी
भारवि	किरातार्जुनीयम	छठी शताब्दी
विशाखादत्त	मुद्राराक्षस	छठी शताब्दी
कुमारदास	जानकी हरण	छठी शताब्दी
भट्टी	रावण वध	छठी शताब्दी
दण्डी	दशकुमारचरित	छठी शताब्दी
भरतमुनि	नाट्यशास्त्र	छठी शताब्दी
वराहमिहिर	वृहत्संहिता	छठी शताब्दी
ब्रह्मगुप्त	ब्रह्म सिद्धान्त	छठी शताब्दी
कामंदक	नीतिसार	छठी शताब्दी
बाणभट्ट	हर्षचरितम्	सातवीं शताब्दी
माघ	शिशुपाल वध	सातवीं शताब्दी
भामह गुप्त	काव्यालंकार	सातवीं शताब्दी
भट्टनारायण	वेणीसंहार	सातवीं शताब्दी
भर्तृहरि	नीति शतक, वैराग्य शतक, शृंगार शतक	सातवीं शताब्दी
हर्षवर्द्धन	नागानन्द, रत्नावली	सातवीं शताब्दी
भवभूति	मालती माधव उत्तररामचरितम्	आठवीं शताब्दी
रत्नाकर	हरिविजय	आठवीं शताब्दी
हरिभद्रसूरि	कथाकोष, हरिभद्रसूरि टीका	आठवीं शताब्दी
उद्योतन सूरि	कुवलयमाला	आठवीं शताब्दी
वाक्पति	गौडवहो	आठवीं शताब्दी
जिनसेन	आदिपुराण	नवीं शताब्दी
हरिषेण	वृहत्कथाकोष	नवीं शताब्दी
परिमल गुप्त	नवसाहसांक-चरितम्	950–1000 लगभग
सोमदेव सूरि	नीतिवाक्यामृतम्	950–1010 लगभग
राजशेखर	काव्यमीमांसा	10वीं शताब्दी
सोमदेव	कथासरित्सागर	11वीं शताब्दी
नारायण पण्डित	हितोपदेश	11वीं शताब्दी
विज्ञानेश्वर	मिताक्षरा	11वीं शताब्दी
क्षेमेन्द्र	दशावतार	11वीं शताब्दी
अतुलदेव	मूषिक वंश	11वीं शताब्दी
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	1150-1200 ई. (लगभग)
कम्बन	तमिल रामायण	12वीं शताब्दी
विल्हण	विक्रमांकदेवचरितम्	12वीं शताब्दी
कल्हण	राजतरंगिणी	12वीं शताब्दी

प्राचीन भारतीय इतिहास से सम्बद्ध विदेशी विद्वान्, उनका कालक्रम ग्रन्थ एवं सम्बन्धित देश

विद्वान्	देश	ग्रन्थ	समय
मिलेट्स	यूनानी	ज्योग्राफी	550 ई. पू. (ल.)
हेरोडोट्स	यूनानी	हिस्टोरिका	476 ई. पू.
केसियस	पर्शिया	इण्डिका	425 ई. पू.
एरिस्टो-बुलस	यूनानी	हिस्ट्री ऑफ द वार	326 ई. पू.

ओनेसिक्रिट्स	यूनानी	सिकन्दर की जीवनी	326 ई. पू.
मेगस्थनीज	यूनानी	इण्डिका	305 से 297 ई. पू.
पेक्ट्रोक्लीज	सीरिया	पू. देशों का भूगोल	250 ई. पू. (ल.)
एलियन	यूनानी	ए कलेक्शन ऑफ मिसलेनियस हिस्ट्री	100 ई. पू.
स्ट्रेबो	यूनानी	ज्योग्राफी	100 ई. पू. (ल.)
प्लिनी	यूनानी	नेचुरल हिस्ट्री	77 ई. पू.
अज्ञात-नाविक	यूनानी	पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन-सी	80 से 115 ई. पू.
एरियन	यूनानी	सिकन्दर का आक्रमण	100 से 120 ई.
टॉलेमी	रोम	ज्योग्राफी	150 ई. पू.
फाह्यान	चीन	फाह्यान की यात्राएं	399 से 414 ई.
कास्मॉस	यूनानी	क्रिश्चियन टोपोग्राफी	535 से 547 ई.
ह्वेनसांग	चीन	शी-यू-की	629 से 644 ई.
ह्वली	चीन	ह्वेनसांग की जीवनी	675 से 685 ई.
इत्सिंग	चीन	भारत और मलाया द्वीपों में प्रचलित बौद्ध धर्म	675 से 695 ई.
इब्ने खुर्दादव	अरव	कितावुल मयालक-वल-मामालिक	864 ई.
अलविला दुरी	अरव	फुतूहल-वुल्दान	885 से 892 ई.
अलमसूदी	अरव	मुरुज-उल-जहान	915 से 16 ई.
अलवरूनी	गजनी	तहकीके-हिन्द	1000 से 1030 ई.
अलइदरी सी	अरव	नुज्हजुल-मुश्ताक	11वीं शताब्दी
अलवहरी	अरव	तारीखे मसूदी	11वीं शताब्दी
अलडमरी	अरव	मसालिक-अल-आव मामालिक-उलं-अमसार	1185 ई.

प्राचीन भारत के सिक्के

1 स्वर्ण मुद्रा = 80 कृष्णाल

चाँदी के सिक्के–कृष्णाल, माश, धर्म व शतमान

ताँवे के सिक्के–कापार्पण (काषार्पण का संक्षिप्त 'पण' था. सवसे छोटा सिक्का 1/8 पण का होता था. 6वीं से चौथी शती ई. पू.)

1 कापार्पण का वजन = 140 ग्रेन

ईरान का शुद्ध सोना = डैरिक

ईरान में चाँदी का सिक्का–सिगलोई मारोकेल

कुषाणों के शासनकाल में 'दिनार' की तरह के सोने के सिक्के चलते थे. उन्होंने चाँदी का सिक्का जारी नहीं किया. कदफिसस प्रथम ने हेराकल की आकृति वाली चाँदी की मुद्राएँ चलायीं थी. कदफिसस द्वितीय ने शिव की आकृति युक्त सोने के सिक्के चलाये थे.

समुद्रगुप्त के सिक्के–शेर की आकृति एवं संगीतमग्न आकृति के अतिरिक्त अन्य प्रकार के सिक्के विदेशी प्रभाव से प्रभावित हैं. कुषाणों के सिक्कों की आकृतियों के सिर वाले भाग पगड़ी, टोप आदि से युक्त हैं, जबकि कुछ से सिर नंगे हैं. भारतीय देवियों की आकृति वनी है. उसने कोई चाँदी के सिक्के का निर्माण नहीं किया.

चन्द्रगुप्त द्वितीय–चाँदी तथा ताँवे के सिक्के जारी किये. उसने सिंह तथा घुड़सवार की आकृतियों वाले सिक्के चलाये. चाँदी के सिक्के पश्चिमी क्षत्रपों को जीतने के बाद जारी किये.

कुमारगुप्त प्रथम के चाँदी के सिक्के (415-455 ई.)–इनके सिक्कों पर एक ओर गरुड़ तथा दूसरी ओर मोर की आकृति है. सर रिचर्ड वर्न ने जो चाँदी के सिक्के प्राप्त किए, उनमें 9 श्री प्रताप सील, 284 श्री शैलादित्य तथा 1 हर्ष के थे. सर्वाधिक प्राप्त सिक्के मौर्योत्तर काल के हैं. गुप्तों ने सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएँ प्रचलित कीं.

स्कन्दगुप्त (455-67 ई.)–तीन प्रकार की स्वर्ण मुद्राएँ जारी की–धनुर्धर, लक्ष्मी, घुड़सवार अंकित.

पुरुगुप्त (467-73 ई.)–सिर्फ धनुर्धर की आकृति वाले सिक्के चलाये.

पंच मार्क–ये सिक्के चाँदी के हैं, भारत में सबसे पुराने हैं. ये विहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश से मिले हैं.

कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.)–इनके द्वारा जो सिक्के जारी किए गए उन पर कार्तिकेय के साथ मोर को उनके वाहन के रूप में अंकित किया गया है. राजाओं से सम्वन्धित सिक्के चलाने वाले प्रथम यूनानी भारतीय राजा हैं. ये भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाने वाले भी हैं.

नल (उड़ीसा के महाकान्तकर क्षेत्र के निवासी)–उन्होंने सोने के सिक्के चलाए. मान (महानदी के उत्तरी तटीय क्षेत्र निवासी) राजाओं ने ताँवे के सिक्के चलाए.

प्राचीनकालीन शब्दावली

1. **सभा-सह**–सभा का प्रमुख व्यक्ति (ऋग्वैदिककाल)
2. **सभेय**–सभा का पूज्य.
3. **सभा**–ऋग्वैदिककाल में राष्ट्रीय विधायिका के रूप में कार्यरत.
4. **समिति**–जनसामान्य के लिए राष्ट्रीय विधायिका. इसका मुख्य कार्य राजा का चुनाव करना था.

5. **विश्**–जनजाति के लिए ऋग्वेद में 170 बार यह शब्द आया है.

6. **व्रत**–गण, ग्राम तथा सार्ध के रूप में सेना के जनजाति समूहों के लिए यह शब्द आया है.

7. **उपास्ति**–राजपरिवार के लोगों के लिए ऋग्वैदिक शब्द.

8. **व्रात्य**–मगध के लोगों के लिए अथर्ववेद में आया शब्द.

9. **कुलाल**–धर्मशास्त्रों में कुम्हारों के लिए प्रयुक्त शब्द.

10. **वसाढ़ी**–जैन धर्म.

11. **सार्वभौम प्रणाली**–700 ई. पू. के लगभग प्रारम्भ अश्वमेध यज्ञ सार्वभौम के द्वारा ही सम्पन्न होता था.

12. **साम्राज्य प्रणाली**–वैदिक युग में लोकप्रिय संघीय शासन व्यवस्था.

13. **परिव्राजिक**–'शर्मण' वर्ग की स्त्रियाँ.

14. **अन्तर्वेदी**–गंगा-दोआब के लिए प्रयुक्त.

15. **परिपत्र**–पश्चिमी विन्ध्या.

16. **सह्याद्रि**–पश्चिमी घाट.

17. **महेन्द्र**–पूर्वी घाट के लिए.

18. **यदु तथा तुर्वस**–दासों की तरह उपेक्षित आर्य.

19. **पुरु**–मृध्रवया कहकर सम्बोधित.

20. **त्रित्सु**–भरत के शासनरत् वंश का नाम.

21. **कीकट**–दक्षिणी विहार के अनार्य लोग.

22. **सुशोम**–सोहन नदी के लिए प्रयुक्त.

23. **मरुन्द्रध**–मरुद्वृध के लिए प्रयुक्त.

24. **दृषद्वती**–राक्षी या चितांग के लिए प्रयुक्त, घग्घर नदी.

25. **प्रप**–कुओं के लिए प्रयुक्त.

26. **जन**–ईरानी शब्द 'जन्तु' का समानार्थी.

27. **स्पस**–गुप्तचरों के अर्थ में.

28. **पत्ति**–पैदल सैनिक.

29. **अयोमुखम**–ताँबा या लोहा की नोक वाले तीर.

30. **पुर चरिष्णु**–चलायमान किला.

31. **व्रजपति**–ग्रामिणी के रूप में परिचित.

32. **गृहपति**–दम्पत्ति का समानार्थी.

33. **निवि**–अंतःवस्त्रों के लिए प्रयुक्त.

34. **अयस्**–लोहे के लिए उल्लिखित.

35. **कृष्टि या चाराशामी**–कृषि करने वाला.

36. **उर्वर या क्षेत्र**–कृषियुक्त भूमि के लिए प्रयुक्त.

37. **सतक**–उत्तर-मौर्यकाल के दौरान मथुरा में निर्मित एक वस्त्र.

38. **स्नातगो**–सैन्य प्रशासक.

39. **मेरिद**–जिला मजिस्ट्रेट.

40. **कर्मकार**–घरेलू नौकर.

41. **पौरुपेय**–भाड़े के श्रमिक के लिए प्रयुक्त.

42. **भोग**–राजस्व लगान.

43. **कोटिश्वर**–करोड़पति.

44. **ओरार**–गुप्तचर.

45. **अवाई**–ग्राम की सभा एवं मुख्य शहर का न्यायालय.

46. **अरिवार**–बुद्धिमान व्यक्ति, भूत, वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञाता माना जाता था.

47. **अंदनार**–राजभवन में पुरोहित के रूप में नियुक्त.

48. **उमनार**–नमक बनाकर बेचने वाला.

49. **कनक्कार**–शिक्षक, जो छात्रों के एक समूह को साहित्य तथा व्याकरण की शिक्षा देता था.

50. **उत्स**–इस्पात.

प्राचीन काल में भारत आने वाले विदेशी यात्री

यात्री	भ्रमण क्षेत्र	समय
स्काईलैक्स (ईरानी यात्री)	सिन्ध प्रदेश में	520 ई. पू. (ल.)
निआर्कस (यूनानी नौसेना अधिकारी)	पश्चिमोत्तर भारत में	326 ई. पू.
एरिस्टोबुलस (यूनानी विद्वान्)	पश्चिमोत्तर भारत में	326 ई. पू.
ओने सिकिट्स (यूनानी नौसेना अधिकारी)	पश्चिमोत्तर भारत में	326 ई. पू.
मेगस्थनीज (यूनानी राजदूत)	चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में	305 से 297 ई. पू.
डाइमेकस (सीरिया का राजदूत)	विन्दुसार के समय में	298 से 273 ई. पू.
डायनिसियस (मिस्र का राजदूत)	विन्दुसार के समय में	284 से 262 ई. पू.
एलियन (यूनानी यात्री)	पश्चिमोत्तर भारत में	100 ई. पू. (ल.)
प्लिनी (यूनानी यात्री)	पश्चिमोत्तर भारत में	77 से 78 ई.
पेरिप्लस का अज्ञात लेखक (यूनानी नाविक)	चोल राज्य में	80 से 115 ई.
फाह्यान (चीनी बौद्ध यात्री)	चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में	399 से 414 ई.
शुंगयुन (चीनी यात्री)	पूर्वोत्तर भारत में	515 से 520 ई.
कॉस्मॉस (यूनानी बौद्ध यात्री)	हर्षवर्धन के समय में	629 से 644 ई.
वांग-हुएन-सी (चीनी राजदूत)	हर्षवर्धन के समय में	643 ई.

इत्सिंग (चीनी बौद्ध यात्री)	पश्चिमोत्तर भारत में	675 से 695 ई.
मात्वेन लिन (चीनी यात्री)	पूर्वी भारत में	7वीं शताब्दी
सुलेमान (अरब यात्री)	मिहिर भोज प्रतिहार के समय में	815 से 851 ई.
इब्ने खुर्दादव (अरब यात्री)	मिहिर भोज प्रतिहार के समय में	864 ई.
अलमसूदी (अरब यात्री)	महिपाल प्रथम प्रति-हार	915 से 916 ई.
अलबरूनी (गजनी का विद्वान्)	पश्चिमोत्तर भारत में (महमूद गजनवी के साथ में)	1000 से 1030 ई.
अलइदरी (अरब यात्री)	पश्चिमोत्तर भारत में	11वीं शताब्दी
अलबहरी (अरब यात्री)	पश्चिमोत्तर भारत में	11वीं शताब्दी
शिहाबुद्दीन अलइमरी (अरब यात्री)	पश्चिमोत्तर भारत में	1185 ई.

प्राचीन भारतीय स्थापत्य

स्थापत्य	निर्माता	स्थल	निर्माण समय
साँची का स्तूप	अशोक	साँची	250 ई. पू. (ल.)
अमरावती का स्तूप	सातवाहन	अमरावती	200 ई. पू. (ल.)
भरहुत का स्तूप	शुंग	भरहुत	150 ई. पू. (ल.)
वराहवतार मंदिर	वीरसेन	उदयगिरि	400 ई. पू. (ल.)
दशावतार मंदिर	चन्द्रगुप्त द्वितीय	देवगढ़	400 ई. पू. (ल.)
पार्श्वनाथ का मंदिर	शंकर	उदयगिरि	426 ई. पू. (ल.)
अजंता की गुफाएं	गुप्त शासक	महाराष्ट्र	5वीं शताब्दी
झूमरा का शिव मंदिर	गुप्त शासक	नागौद	5वीं शताब्दी
सात पैगौडा (रथ मंदिर)	नरसिंहवर्मन प्रथम	मामल्लपुरम्	650 ई. (ल.)
लिंगराज का मंदिर	ययाति-केशरी	भुवनेश्वर	667 ई. (ल.)
कैलाशनाथ का मंदिर	नरसिंहवर्मन द्वितीय	काँची	700 ई.
शोर मंदिर	नरसिंहवर्मन द्वितीय	मामल्लपुरम्	705 ई.
विरुपाक्ष का मंदिर	विक्रमादित्य चालुक्य	पट्टड्कल	740 ई.
एहोल का मंदिर	विक्रमादित्य चालुक्य	एहोल	740 ई.
कैलाश का मंदिर	कृष्ण प्रथम राष्ट्रकूट	एलोरा	770 ई.
ऐलिफेंटा गुहा मंदिर	राष्ट्रकूट	एलिफेंटा	8वीं शताब्दी
कोरंगनाथ का मंदिर	परान्तक चोल	त्रिचनापल्ली	940 ई.
खजुराहो का मंदिर	चंदेल शासक	खजुराहो	950 ई. से 1050 ई.
गोमतेश्वर की प्रतिमा	चामुंडराय	श्रवण-बेलगोला	983 ई.
कंदरिया महादेव मंदिर	चंदेल शासक	खजुराहो	990 ई.
वृहदेश्वर मंदिर	राजराज चोल	तंजावुर	1000 से 1005 ई.
गंगैकोंड चोलपुरम् मंदिर	राजेन्द्र चोल	गंगैकोंड चोलपुरम्	1025 ई.
दिलवाड़ा मंदिर	विमल शाह	आबू पर्वत	1032 ई.
रुद्रमहाकाल मंदिर	जयसिंह	सिद्धपुर (गुजरात)	1130 ई.
होयसलेश्वर मंदिर	होयसल शासक	हैलविड (द्वार समुद्र)	1175 से 1190 ई.
मीनाक्षी मंदिर	पांड्य शासक	मदुरै	12वीं-13वीं शताब्दी
जगन्नाथ मंदिर	अनन्तवर्मन चोडगंग	पुरी	1200 ई. (ल.)
सूर्य मंदिर	नरसिंह प्रथम	कोणार्क	1236 से 1264 ई.

मौर्य साम्राज्य के प्रमुख अधिकारी

मौर्य साम्राज्य का संगठन एकतन्त्रीय था. पूरा साम्राज्य 9 प्रान्तों में विभाजित था. प्रत्येक प्रान्त को 'चक्र' कहा जाता था.

केन्द्रीय प्रशासन

सम्राट्–वह साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी था. कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका तीनों का प्रधान था. सम्राट् की स्वेच्छाचारिता पर मन्त्रिपरिषद् और जनपद तथा लोकमत नियन्त्रण रखते थे. राजा प्रजा के साथ पुत्रवत्

व्यवहार करता था. प्रशासकीय कर्मचारी की नियुक्ति, सेना का संचालन स्वयं करता था तथा सेना का सर्वोच्च अधिकारी भी वह स्वयं था. सम्राट् के सहायतार्थ, परामर्शार्थ मंत्रिपरिषद् का गठन किया गया था. मंत्री पुरोहित, सेनापति तथा युवराज 18 तीर्थों में प्रमुख थे. अधिकारियों को तीर्थ कहा जाता था.

1. **मंत्रिन**–प्रधानमन्त्री.

2. **युवराज**–यह राजकुल से सम्बन्धित तथा राजा का पुत्र होता था.

3. **पुरोहित**–धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित.

4. **सेनापति**–सेना की देखरेख करने वाला.

5. **दौवारिक**–राजदरबार, सीमादारी तथा अन्य प्रमुख राजकीय द्वार रक्षक.

6. **अन्तर्वेदिक**–अन्तःपुर का अध्यक्ष.

7. **समाहर्ता**–आय का संग्रहकर्ता.

8. **सन्निधाता**–राजकीय कोष का अध्यक्ष.

9. **प्रशास्ता**–कारागार का अध्यक्ष.

10. **प्रदेष्टि**–कमिश्नर.

11. **नायक**–नगर रक्षा का अध्यक्ष.

12. **पौर**–नगर का कोतवाल.

13. **व्यावहारिक**–प्रमुख न्यायाधीश ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट.

14. **कर्मान्तिक**–उद्योगों और कारखानों का अध्यक्ष.

15. **दण्डपाल**–पुलिस तथा अनुशासन स्थापित करने वाले दल का अध्यक्ष.

16. **दुर्गपाल**–राजकीय दुर्ग रक्षकों का अध्यक्ष.

मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को 48000 पण वेतन, राज्यपालों को 12000 पण वार्षिक, अध्यक्षों को 1000 पण वेतन मिलता था. पैदल सेना को 500 पण, रथिक को 200 पण, आरोही को 500 से 100 पण, सबसे कम 60 पण वेतन मिलता था.

अन्य विभागीय अध्यक्ष

1. **लक्षणाध्यक्ष**–मुद्रा तथा टकसाल का अध्यक्ष होता था.

2. **पण्याध्यक्ष**–राजकीय व्यवस्था का अध्यक्ष.

3. **आयुधाध्यक्ष**–अस्त्र-शस्त्र के निर्माण एवं रक्षा का अध्यक्ष.

4. **पौतवाध्यक्ष**–नाप-तौल, बाँट, तराजू आदि विषयों का अध्यक्ष.

5. **मानाध्यक्ष**–समय तथा स्थान के निर्णय सम्बन्धी अध्यक्ष.

6. **शुल्काध्यक्ष**–राजकीय धन, जुर्माने इत्यादि से सम्बन्धित कार्यों का अध्यक्ष.

7. **सूत्राध्यक्ष**–कताई, बुनाई का अध्यक्ष.

8. **सीताध्यक्ष**–राजकीय कृषि का अध्यक्ष.

9. **सुराध्यक्ष**–आबकारी विषयों का अध्यक्ष.

10. **सूनाध्यक्ष**–कसाईखाने का अधिकारी.

11. **मुद्राध्यक्ष**–यह राजकीय चिह्न, मुद्रा तथा पासपोर्ट से सम्बन्धित कार्यों का अधिकारी था.

12. **विविताध्यक्ष**–चारागाह का अधिकारी.

13. **द्यूताध्यक्ष**–जुओं आदि विषयों का अध्यक्ष.

14. **बन्धनागाराध्यक्ष**–जेल विभाग का निरीक्षक.

15. **नवाध्यक्ष**–पशुनिरीक्षक.

16. **नौकाध्यक्ष**–जल मार्ग से सम्बन्धित यातायात का अध्यक्ष.

17. **पत्तनाध्यक्ष**–बन्दरगाहों का अधिकारी.

18. **गणिकाध्यक्ष**–वेश्यालयों का निरीक्षक.

19. **संस्थाध्यक्ष**–व्यापार का प्रबन्धक.

20. **सैन्य विभागाध्यक्ष**–पदाति, अश्व, रथ तथा गज सेना के विभिन्न अध्यक्ष.

गुप्त साम्राज्य के प्रमुख अधिकारी

1. **सर्वाध्यक्ष**–यह कर्मचारी सब विभागों का निरीक्षक होता था. इस पद पर उच्चवंशीय लोग नियुक्त किये जाते थे.

2. **भाण्डागाराधिकृत**–यह कोषाध्यक्ष होता था.

3. **महासेनापति**–यह सेना का सबसे बड़ा पदाधिकारी होता था.

4. **महादण्डनायक**–महासेनापति के अधीन अनेक महादण्डनायक होते थे, जो सैन्य संचालन करते थे.

5. **रणभाण्डागारिक**–सेना के लिए अस्त्र-शस्त्र, भोजन तथा आवश्यक सामग्री जुटाने का भार जिस विभाग के अधीन होता था, उसका प्रधान रणभाण्डागारिक था.

6. **महाबलाधिकृत**–सेना, छावनी और व्यूह रचना के विभाग का अध्यक्ष होता था.

7. **दण्डपाशाधिकरण**–पुलिस विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी.

8. **महासन्धिविग्रहिक**–अन्तर्राष्ट्रीय विभाग का सर्वोच्च अधिकारी था.

9. **विनयस्थितिस्थापक**–वैशाली की एक मुहर पर यह नाम अंकित है. इससे प्रकट है कि यह अधिकारी धर्म तथा आचरण आदि के सम्बन्ध में देखभाल करता था.

10. **दूत**–यह कर्मचारी अन्य राज्यों में राजदूत का कार्य सम्पादित करता था.

11. **ध्रुवाधिकरण**–यह भूमिकर वसूल करता था.

12. **शौल्किक**–यह कर लेने वाला कर्मचारी था.

13. **गोल्मिक**–यह वनों का अध्यक्ष था.

14. **महाक्षपटलिक**–यह राजकीय आदेशों का राजकीय आय-व्यय लेखा रखने वाला कर्मचारी था.

प्रमुख प्राचीन अभिलेख

साहित्यिक महत्त्व

प्राचीन अभिलेख भारतीय संस्कृति के अमर स्मारक हैं. इन अभिलेखों का मूल्यांकन करने पर सिद्ध होता है कि इनमें संस्कृत साहित्य के इतिहास की अखण्ड परम्परा समाहित है. ईसा की प्रारम्भिक पाँच शताब्दियों में मैक्समूलर की दृष्टि से कोई महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थ नहीं लिखा गया है. अतः वह अन्धकार का युग है, किन्तु संस्कृत के इन अभिलेखों को देखकर, इनकी परिष्कृत भाषा-शैली, प्रशस्त अलंकारों का प्रयोग देखकर यह कहा जा सकता है कि मैक्समूलर का 'पुनर्जागरण' का सिद्धान्त, तथ्य एवं तर्कों से परे है. ये अभिलेख उच्च कोटि के संस्कृत काव्य परम्परा का स्वरूप प्रस्तुत करते हैं. विशेषतः रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख उच्चकोटि के संस्कृत गद्य का स्वरूप प्रकट करता है, जिसमें सुबन्धु, दण्डी और बाण की गद्य शैली का पूर्वरूप देखा जा सकता है. इसकी भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण है. इसमें दीर्घ समासों का भी प्रयोग देखते ही बनता है. अलंकृत शैली, नादात्मकता, इनकी अन्य विशेषताएँ हैं.

काव्य सौन्दर्य

काव्य की रमणीयता की दृष्टि से कुछ अवतरण प्रस्तुत हैं–

चलत्पता कन्यबला सनाथन्यत्यर्थ शुक्ला न्याधिकोन्नतानि।
तडिल्लताचित्रसिलाभ्रकूटतुलोपयनानि गृहाणि यत्र।
(दशपुर पट्टवायश्रेण्या शिलालेख, 10)

इस पर कालिदास के मेघदूत की निम्न पंक्तियों का प्रभाव है–

विधुत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः ।
(उत्तरमेघ 1)

दशपुर का वर्णन मार्मिक है, उसमें काव्य कला का पूर्ण परिष्कार. रसमय ललित पदावली और ध्वन्यात्मकता के साथ वर्णन शैली भी भव्य है. मालव भूमि के तिलक स्वरूप दशपुर, सूर्य का वर्णन, दशपुर के तन्तुवायों की चारित्रिक विशेषताएँ, सभी उसमें प्रतिविम्बित हो उठी हैं. सूर्य का वर्णन प्रस्तुत है–

यः प्रत्यह प्रतिविभात्युदयालेन्द्र
विस्तीर्णतुङ्ग शिखरस्खलितांशु जालः ।
क्षीवाङ्गनाजनकपोलतलाभि ताम्र ।
पायात्सवः सुकिरणाभरणो विवस्थान ॥ 3 ॥

गिरनार (गुजरात) का शिलालेख

शिलालेख संख्या-1

भाषा–प्राकृत (पाली)

समय–272-232 ई. पू.

लिपि–ब्राह्मी

उद्देश्य–लोकोपकारपर लेख

मूल पाठ–

1. सर्वत विजिम्हि देवानंप्रियस प्रियदसिनोराओ ।
2. एवमपि प्रचंतेपु यथा चोड़ा पाड़ा सतियपुत्तोओ तंब ।
3. पंणी अंतियको योनराजा ये वापि तस अंतियकस सामीपं ।
4. राजानो सर्वत देवानांप्रियस प्रियदसिनोराजो द्वेचिकीछा-कता ।
5. मनुस चिकीछा पसु चिकीछा च ओसुदानि च यानि भानुसोवगानि च ।
6. परसोपगानि च यतयत नास्ति सर्वत्र हारापितानि च रोपापितानि च ।
7. मूलानि च फलानि च यत् नास्ति सर्वत हारापितानि च रोपापि तानि च ।
8. यंथेसू कूपा च खानापिता व्रछा च रोपापिता परिभोगाय पसुमनुसानं ।

शिलालेख संख्या-4

स्थान–गिरनार

भाषा–प्राकृत (पाली)

लिपि–ब्राह्मी

समय–ईसा पूर्व 272-232

उद्देश्य–धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए

मूल पाठ–

1. अतिकातं अंतरं वहूनि वाससतानि वदितो एवं प्राणारंभो विहिंसा च भूतानं ओतीसु ।
2. असंप्रतिपती ब्राह्मामणानं असंप्रतीपती । त अज देवानं प्रियस प्रियवसिनो राणो ।
3. धमचरणेन भेरीघोसो अहो धंमधोसो विमानदर्सणा च हास्तिदसणा च ।
4. भगि खंघानि च अजानि च द्वियानि रूपानि दसयित्वा जनं । यारिसे बहूहि वाससतेहि ।
5. न भूतपूवे तारिसे अज वदिते देवानंप्रियस प्रियदसिनो राजो धंमानुसस्टिया अनारं ।

6. भो प्राणानं अविहींसा भूतानं आतीनं सपंटियती ब्रह्मण सभणानं संपटियती मातरि पितरि ।

7. सुसुसा थैरसुसुसा । एस अजे च बहुविधे धंमचरणे वढिते । वडमिसतिचेव देवानंप्रियो ।

8. प्रयडसि राजा धंमचरणं इदं । पुत्रा च पोत्रा च प्रपोत्रा च देवानंपिप्रस प्रियदुप्रनो रात्रो ।

9. प्रवधयिसंति इदं धंमचरणं आव सवटकपा धंमम्हि सीलम्हि तिस्टंतो धंमं अनुसासिसंति ।

10. एस हि सेस्टे कंमे य धंमानुसासनं । धमचरणे पिनं भवति अलीलस । त इमम्हि अथम्हि ।

11. वधी च अहीनी च साधु । एताय अथाय इदं लेखापितं इमस अथस वधि युजंतु हीनि च ।

12. नो लोचेतव्या । द्वादस वासाभिसितेन देवानं प्रियेन प्रयदसिना रात्रा इदं लेखापितं ।

शिलालेख संख्या-13

स्थान–शहवाज गढ़ी (पाकिस्तान)

भाषा–प्राकृत (पाली)

लिपि–खरोष्ठी

समय–272-232 ई. पू.

उद्देश्य–धर्म विजय ही वास्तविक है, इस तथ्य की घोषणा.

मूल पाठ–

1. अठदश अभिसितम देवनप्रिअस प्रिअदशिस रसोकलिग विजित । दि अदयत्रे प्रगत सहस्त्रे येततो अपवुदे शतसहस्त्रय-त्रेत्रहते बहुत वतके व मुटे ।

2. तपोपच अधुन लघेपु कलिगेपुतिव्र ध्रमशिलन ध्रमकमत ध्रमनुशस्ति च देवनप्रियस । सो अस्ति अनुसोचन देवनप्रिअस विजिनिति कलिगनि ।

3. अविजितं हि विनिजमनो यो तत्र वध व मरणं व अपवधे व जनस तं बढूं वदेनियमतं गुरुमत च देवप्रियस । इदं पि चु ततोगुरुमततरं देवनप्रियस । ये तत्र ।

4. वसति ब्रमण व भ्रमण च अंजे च प्रषंड ग्रह्य व येसु विहित एव अग्रभुटि सुश्रुष मतपितुपु सुशुष गुरुन सुश्रुष मित्र संस्तुत सहय ।

5. अतिकेपु दसभटकनं सम्मप्रतिपति द्रिदमतित वेप तत्र भोति अपग्रथो व वधो व अभिरतन व निक्रमणं । येष व पि सुविहितन सिहो अविप्रहिनो ए तेष मित्रसंस्तुत सहयजतिक दसन ।

6. प्रपुणति तत्र तं पितेष को अपध्रथो भोति । प्रति भंग च एवं सव्रमनुगनं गुरुमतं च देवनंप्रियस । नस्ति च एकतरेपि प्रणउस्पिन नम प्रसदो । सो यमत्रो जनो तद कलिगे हतो च मुये च अपवुद च ततो ।

7. शतमगे व सहस्त्रभगं च अजगुरुमतं वो देवनंप्रियस । योपि च अपकरेयति क्षीमतवियमिते व देवनंप्रियस यं शको क्षमनये । यो पि च अटवि देवनंप्रियस विजिते भोति तपि अनुनेति अनुनिजपेति । अनुतपे पि च प्रभवे ।

8. देवनं प्रियस वुचति तेष किति अवत्रपेयु न च हंयेयसु । इछति हि देवनंप्रियो सव्रभुतन अक्षति संयमं समचरियं रभसिये ।

अयि च मुखमुत विजये देवनंप्रिपस यो ध्रमविजयो ।

सो च पुनलयो देवनंप्रियस इह च सेवपु च अंतेपु ।

9. अ बपु पि योजनशतेषु यत्र अंतिपोको नम योनराज परं च तेन अतियोकेन चतुरे रजनि तुरभये नम अंतकिनि नम मक नम अलिकसुदरो नम निच चोड पंड अव तंबपणिय ।

एवमेव हिद रजविषवस्पि योनकंवोयेपु नभकन भितिन ।

10. भोज पितिनिकेषु अंध्रपलिदेपु सवत्र देवनंप्रियस ध्रुवमनुशस्ति अनुवंटति । यत्र पि देवनंप्रियस दुत न व्रचति तेपि श्रुतु देवनंप्रियस धमवुटं विधनं ध्रमनुशस्ति ध्रमं अनुविधिन्यंति च । यौ स लधे एतकेन भोति सवत्र विजयो सवत्र पुन ।

11. विजयो प्रितिरसो सो । लघ भोति प्रिति धम्र विजयस्वि । लहुक लुखो सप्रिति । परत्रिकमेव महफल भेजति दवनंप्रियो । एतये च अण्ये अपि ध्रमदिपि निपिस्त किति पुत्र पपोत्र मे असु नवं विजयं मं विजेतविडन मजिपु एकस्पि यो विजये क्षति च लहुदंडत च रोचेतु तं च यो विज (य) मजतु ।

12. यो ध्रर्मावजयो । सो हिदलोकिको । सवचरिरति भोतु य धंमरति । स हि हिदलोकिक परलोकिक ।

देहली-टोपरा स्तम्भ लेख (VI) षष्ठ

स्थान–टोपरा

भाषा–प्राकृत (पाली)

समय–272-232 ई. पू.

लिपि–ब्राह्मी

उद्देश्य–धर्म के प्रति अनुराग की अभिव्यक्ति.

मूल पाठ–

1. देवानांपिये पियदसि लाज हेवं आद्य (1) दुवाडस ।

2. वस अभिसितेन मे धंमलिपि लिखापिता लोकसा ।

3. हितसुखाये से तं अपहटा तं तं धंमवदि पापो वा (1) ।

4. हेवं लोकसा हितसुखेति पटिवेखामि अथ इयं ।

5. नातिसु हेवं पतियासंनेसु हेवं अपकटेसु ।

6. किमं कानि सुखं अवहामी ति तथ च विदहामि (1) हे मे वा ।

7. सवनिकायेसु पटिवेखामि (4) सव पासंडा पि मे पूजिता ।

8. विविधाय पूजाया ए चु इय अतना पचूपगमने ।

9. से मे मोख्यमते (1) सडुविसति वस अभिसितेन मे ।

10. इयं धंमलिपि लिखापिता ।

सप्तम स्तम्भ लेख पूर्वाभिमुख

देहली–टोपरा

समय–272-232 ई. पू.

भाषा–प्राकृत (पाली)

लिपि–ब्राह्मी

उद्देश्य–धर्म प्रचार का सिंहावलोकन.

मूल पाठ–

11. देवानांपिये पियदसि लाजा हेवं आहा । ये अतिकंतं ।

12. अंततं लाजाने हुसु हेवं इछिसु कथं जने ।

13. धमंवढिया वढेया नो यु जने अनुलुपाया धंमवदिया ।

14. बढ़िया । एवं देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आद्य । एस मे ।

15. हु था अतिकंतं च अंतंलं हेवं इछिसु लाजाने कथं जने ।

16. अनुलुपाया धंमवढ़िया बढेया ति नो च जने अनुलुपाया ।

17. धंमवढिया बढिया से किनसु जने अनुपटिपजेया ।

18. किनसु जने अनुलुपाया धमवढिया वदेयाति किनसुकानि ।

19. अभ्युंनामयेहं धंमवदिया ति एवं देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं ।

20. आहा ! एस मे हु था । धमसवनानि सानापयाभि धंमानुसथिनि ।

21. अनुसासाभि । एवं जने सुतु अनुपटी पजीसति अभ्युंनमिसति ।

22. धंमवढिया च वांद बढिसति एताये मे आठाये धमंसावपितानि धंमानुसथिनि विविधानि आनिपितानि यथा पुलि सापिवहुने जनसि आयता ए ते पालियो वदिसंति पि पविथलिसंति पि । लजूका पि बहुकेसु पान सहसहसेसु आयता ते पि मे आनपिता हेवं च हेवं च पलियोवहथ ।

23. जनं धंमयुतं देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आद्य एतमेव मे अनुवेख माने धंमपमानि कटानि धंममहामाता कटा धंम काटे देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आहा ममेसु पि मे निमोहानि लोपापितानि छायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं अंबालडिक्या लोपापिता अढको सिक्यानि पि मे उदुपानामि ।

24. खानायापितानि निसिदया च कालपिता आपानानी में बहुकानि तत तत कालापितानि पटिभोगाये पसुमुनिसानं ल.......... स एस पटिभोगेनाम विविधायां हि सुखापनाया वुलिमेहि पि लाजीहि ममया च सुखयिते लोके इमंचू धंमानुपटीपती अनुपटी पजंतु ति एतदथा मे ।

25. एस कटे देवानं पिये पियदसि हेवं आहा धंममहामाता पिमेते बहु विधेसु अठेसु आनुगहिकेसु वियापटासे पवजीतानं चेव गिहिभानं च सव.......... डेसु पि च वियापटासे संघठसि पि मे कटे इये वियापटा होहंति तिहेमेव वाभनेपु आजीविकेसुपि मे कटे ।

26. इमे वियापटा होहंति ति निगंठेसु पि मे कटे इमे विचापटा होहंति नाना पासंडेसु पि मेकटे इमे वियापटा होहंति ति पटिपिसिठं इमे वियापटा होहंति ति पटिपिसिठं पटीविसिठं तेसु तेसु ते माता धंममहामाता चुमे एतेसु चेव वियापटा सवेसु च पासंडेसु देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आहा ।

27. एते च अंने च बहुका मुखा दान विसगसि वियापटासेमय चे व देविनं च सवसि च मे ओलोधनसि ते बहु विधेन आकालेन तानि तानि तुठायत नानि पटि (पादयंति) हिद एद दिसासु च । दालकानां पि च मे कटे । अनानं च देविकुमालानं इमे दानविसगेसु वियापटा होहंति ति ।

28. धंमापदानठाने धंमानुपटिपतिये एसहि धंमापदाने धंमपटीपति च या इयं दया दाने स चे सोचवे च मदवे साधवे च लोकस हेवं वदियसि ति देवानांप्रिये प.......... स लाजा हेवं आहा यानि हि कानि चि ममिया साधवानि कटानि तं लोके अनूपटीपंने तं च अनुविधियति तेन वदिता च ।

29. वढ़िसंति च माता पितुसु सुसुसाया गुलुसु सुसुसाया वयोमहानकानं अनुपटीपतिया वामनसमनेपु कपनवलाकेसु आव पासभटके सुसंपटी बतिया देवानंपिय यदसि लाजा हेवं आहा मुनिसानं चु या इयं धंमवदि वढ़िता दुवेहि येव आकालेह धंमनियमेन च निझतिया च ।

30. तत चु लहु से धंमनियमे निझतिया व भुये धमनियमे चु खोस्सये ने इयं करे इमानि च इमानि जातानि अवधियानि अंनानि पिचु बहुकं धंमनियमानि यानि मे कटानि निझतिया व चु भुये मुनिसानं धंमवदि वदिता अविहिंसाये भुतानं ।

31. अनालंभाये पानानं से एतापे अथाये इयं केट पुतापपोतिके चंदमसु लिपिके होतु ति च अनुपटीजन्तु ति हेवं हि अनुपटीपजनं हिदल पालते आलधे होति सतीवसतिवसा मिसितेन मे इयं धंमलिपि निखायाणिता ति एतं देवानंपिये आहा इयं ।

32. धंमलिवि अत अथि सिलाथंभानि वा सिला फलकानि वा तत कटविया एन एस चिलठितिके सिया ।

बेसनगर गरुड़ स्तम्भ लेख

स्थान–बेसनगर (म. प्र.)

भाषा–प्राकृत–संस्कृत प्रभावित

लिपि–ब्राह्मी

समय–ई. पू. द्वितीय शतक

मूल पाठ–

1. [दे] व देवस वा सुदे वस गरुड़ध्वज अयं ।
2. कारिते इ [अ] हेलिओ दोरेण भाग ।
3. वतेन दियसपुत्रेण तख्खसिलाकेन ।
4. योन दूतेन [आ] गतेन गतेन महाराजस ।
5. अंतलिखितस उप [:] ता सवस रजो ।
6. का सी पु [त्र] स [भ] गभ दुस त्रातारस ।
7. वसेन च [तु] दसेनं राजेन वधमानस ॥

(2)

1. त्रिनि अमुन पदानि [इ अ] [सु] अनुठितानि ।
2. नेयंति [स्वयं] दम चाग अप्रमाद ।

शुङ्ग उत्तरकालीन भारतीय नरेशों के अभिलेख खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख

स्थान–हाथीगुम्फा (भुवनेश्वर-उड़ीसा) उदयगिरी पहाड़ी पर

भाषा–प्राकृत (पाली)

लिपि–ब्राह्मी

समय–प्रथम शताब्दी ईशवीय

उद्देश्य–वीर एवं पराक्रमी राजा खारवेल की प्रशस्ति तथा उसकी सीरता के कार्यों का वर्णन.

मूल पाठ–

1. नमो अरहंतानं [1] नमो सव सिधानं [11] ऐरेण्य महाराजेन महामेघवाहनेन चेतिराज व [·] स वधनेन पसथ सुभलखनेन चतुरत लुठ ण गुण उपितेन कलिंगाधियतिना सिरि खाखेलेन ।

2. [पं] दरस व सानि सीरि कडार सरीखता कीडिता कुमार कीडिका [11] ततो लेख रूप गणना वयवहार विधि विसारयेन सब विजावादातेन नवयवसानि योवरज पा सासितं [11] संपुंण चतुवीसति वसो तदानि वधमान सेसयो वेनाभिविजयो ततिये ।

3. कलिंग राज वसे पुरिस युगे महाराजाभिसेचनं पापुनाति [11] अभिसतयतो च पधमे वसे वात पिहत गोपुर पाकार निवेसनं वटिसंखाएयति कलिंग नगरिखिवी [रं] [1] सितल तड़ाग पाडियो च बंधापयति सबूयान प [टि] संथपनं च ।

4. कारयति पनवि [सि] साहि सत सहसेटि पकतियो च रंजयति [11] दुतिये च वसे अचितयिता सातकानि पछिम दिसं हय गज नर रध वहुलं दंड पठापयति [1] कन्हेवणं गताय च सेनाय च वितासिति असिक नगरं [11] ततिये पुन वसे ।

5. गंधव वेद वुधोदप नत गीत वादित संदसनाहि उसव समाज कारापनाहि च कीडापयति नगरि [11] तथा चवुथे वसे विजाधराधिवासं अहतपूर्व कलिंग युवराज [निवेसितं] वितध म [ट]… च निरिखत छत ।

6. भिंगारे हि त-रतन सपतेये सवरठिक भोज के पादे वंढा-पथति [11] पंचमे चदानी वसे नदं राजति वस सत ओ [घा] टितं तनसुलिय वाटा पणाडिं नगरं पंवेस [य] ति सो… [1] [अ] भिसितो च [छठे वसे] राजसेयं संदंसयंतो सवकर वण ।

7. अनुगह अनेकानि सत सहसानि विसजति पोर जानपदं [11] सतमं च वसं (पस) सतो वजिरघर… स मतुक पद… [कु] म… [1]… अठमे च वसे महता सेन [1]… गोरधगिरि।

8. धातापयिता राजगहं उपपीडययति [1] एतिन [1] कंमपदान स [·] नादेन…सेन वाहने विपमुचितं मधुरं अपयातो यवरा (ज) [डिमित (दियुमेत)]… यछति… पलव… ।

9. कपरुखे हथ गज रथ सहयति सब धरावास… सब ग्रहणं च कारयितुं ब्रह्मणानं ज (य) परिहारं ददाति [1] अरहत… [नवमे च वसे]… ।

10. …महाविजय पासादं कारयति अठतिसाय सतसहसेहिं [11] दंसमे च वसे दंड संधी सा [ममयो] भरधवस पठानं मह [1] जयनं… कारापयति [11] [एकादसमे च वसे]… प [1] यातानं च म [नि] रतनानि उपलयते ।

11. …पूर्व राजनिवेसिंत पीथुडं गदभनंगलेन कासयति [1] जन [प] द भावनं च तेरस वस सत कत भि [·] दति तमिरदहं संघातं 1 वारसमे च वसे… सह सेहि वितासयति उतरापध राजानो… ।

12. मा [1] गधानं च विपुलंभय जनेतो हथसं गंगाय पाययति [1] या [1ग] घ [·] च राजानं बहुसतिमिंत पादे वंदापयति [1] नंदराज नीतं च का लि गं जिनसंनिवेस… अंग मगध वसुं च नयत्रि [11] ।

13. …क [·] जठर लखिल गोपु राणि सिंह राणि निवेसयति सत विसिकनं प रि (हारेहि) अभुतं मछरियं हथी निव स परिहर… हय हथि रतन (मानिकं) पंडराजा… भु त मनि रतनानि आहरापयति इध सत (सहनानि) ।

14. …सिनो वसी करोति [1] तेरसमे च वसे सुपवत विजय चके कुमारी पवहे अरहते हि परिवन सं सि तेहि कायनिसीदिवाय या पूजावकेहि राज भितिन चिन वतानि वास [सि] तानि पूजानुरत उवा सग खा खेल सिरिना जीव देह सथि का परिवाता [11] ।

15. ...सकतं समण सुविहितानं च सव दिसानं भ [नि] नं तपसि इ सि न संधियनं अरहत निसीदिया समीपे पाभारे वराकार समुधपिताहि अनेकयोक नाहि ताहि... सिलाहि... ।

16. ...चंतुरे च वेडुरिप गमे थंमे पतिठापयति पानतरीय सत सहसेहि [1] मु [खि] य कल वोछिनं च चोप [ठि] अंग संतिक [·] तुरीयं उपादयति [1] खेम राजा स वद राजा स भिखु राजा धम राजा पसं तो सुनं तो अनुभव तो कलानानि ।

17. ...गुण विसेस कुसलो सव पासड पूजको सव दे वाय तन सकार कारको अपतिहम चक्र वाहन बलो चक्र वाहनबलो चकधरो गुतचको पवचको राजसिवमू कुल विनिश्रितो महाविजयो राजा खारवेलसिरि [11] ।

रुद्रदामा का गिरनार (जूनागढ़)
अभिलेख शक् वर्ष 72-150 ई.

सिद्धम् इदं तडाकं सुदर्शनं गिरिनगरपिदू...मृत्तिकोपल विस्ताराया मोच्छ्यनिः सन्धिवद्ध दृढ़सर्वपालीकत्वान् पर्वतवाद प्रतिस्पधि सुश्लिठटवन्ध... मवजातेनाकृ त्रिमेण सेतुबन्धेनोपन्नं सुप्रतिविहित प्रणालीपरीवाहमीदविधानं च त्रिस्कन्ध... नादिभिर-नुग्रहेर्भहत्युपचये वर्त्तते । तदिदं राज्ञो महाक्षत्रपस्य सुग्रहीवनाम्नः स्वाभिचठ टन पौत्रस्य राज्ञः क्षत्रपस्य जयदाम्नः पुत्रस्य राज्ञोमहाक्षत्रपस्त्र गुरुभिरभ्यस्तनाम्नो रुद्रादाम्नो पर्पे द्विसप्ततमे 702 मार्गशीर्ष बहुल प्रतिपदायां सृष्टवष्टिना पर्णन्येनैकार्णवभूतायाभिव पृथिव्यां कृतायां गिरेरूर्जयतः सुवर्णसिकतापलाशिनी प्रभृतीनां नदीनामतिमात्रो द्रवृ लै वे गैसे तुम... यमाणनु रूप प्र तिकारमपि गिरिशिखर तरुतयट्टाल लकोपतल्पद्वार शर जोच्छय विध्वंसिना युगनिधनसदृशपरमघो-खेगेन वायुना प्रयभित सलिल विक्षिप्त जर्ज्जरी कृताव... क्षिप्ताश्मवृष्क्ष गुल्मलताप्र त्रानमानदीत लादित्यु द्धाटितमासीत्स चत्वारि हस्तशतनिविश दुत्तराव्यायतेनैतावन्त्येव विस्तीर्णेन पंचसप्तति हस्तानवगादेन मेदेन निःसृतसर्वतोपं मरुधन्व-कल्पमविमृशं दुर्दुशनं... ।

स्यार्थे मौर्यस्थ राज्ञः चन्द्रगुप्तस्य राष्ट्रियेण वैश्येन पुष्पगुप्तेन कारित अशोकस्य मौर्यस्य कृते यवनराजेन तुपास्फे नाधिष्ठाय प्रणाली भिरलंकृतं तत्कारितया च राजानुरूपकृत विधानया तस्मिभेदूदृष्टिया प्रणाडया विस्तृत सेतु... । ... णागर्भात्प्रमृत्यविहत समुदित राजलक्ष्मी धारणागुणतः सर्ववर्णे-श्वरभिगम्य रक्षणार्थ पतित्वे वृतेनाप्राणोच्छ वासात्पुरुपवध-निवृत्तिकृत सत्य प्रतिज्ञेनान्यत्र संग्रामेष्व भिमुखागतसदृशत्रु प्रहरण वितरणत्वा-विगुणरिपु... धृतकारुण्येन... स्वयमभ्गात जनपद प्रणि पतितायुपशरणेदेन दस्यु व्यालमृगरोगादिभिर मुपसृष्ट पूर्वनगर निगमजनपददानां स्ववीर्या–जितानामनुरक्त सर्वप्रकृतीनां पूर्वापराक रावन्तयनूपनी वृदानर्त्त सुराष्ट्र श्वभ्रमरुकच्छ सिन्धु–सौवीर कुकुरापरात्तनिषादादीनां समग्राणा तत्प्रभावाद्यथावत्प्राप्त धर्मार्थकाम विषयाणां विषयाणां पतिता सर्वक्षत्राविष्कृत वीर शब्दजातोत्सेका विधेयानां योधेयानां प्रसह्योत्सादकेन दक्षिणापथपतेः सातकर्णेर्द्विपिरिव्याणि भव जित्यवाजित्य सम्वन्धाविदूरतया ऽनुत्सादानात्प्राप्तयशसाभा... प्वविजयेन भ्रष्टराजप्रतिष्ठापकेन । यथार्थ हस्तोच्छ्यार्जितोजित धर्मानुरागेण शब्दार्थ गान्धर्व न्यायाधानां विधानां महतीनां पारणधारण विज्ञान प्रयोग वाप्त... विपुलकीर्तिना तुरगगजरथ चर्यासिचर्यनियुद्धाधा... परवललाधव सौष्ठव क्रियेणाहरदर्दान-माना नवमानशीलेन स्थललेक्षेण यथावत्प्राप्तैवलिशुल्क भागैः कनक रजतवज्र वैडूयेरत्नोपचयविष्पन्द्रमानकोशेन स्फुटलघु मधुर चित्र कान्तशब्द समयोदारालंकृत गद्यपद्य प्रवीणेन प्रमाणमानोन्मान स्वगति वर्णसारत्यादिभिः परम लक्ष्यव्यंजनै-रूपेतकान्त मूर्त्तिनास्वयमधिगत महाक्षत्रपनाम्ना नरेन्द्रकन्या स्वयंवरानेक माल्यप्राप्तदाम्ना महाक्षत्रपेण रूद्रदाम्ना वर्ष सहस्राय गौ–ब्रह्मार्थ धर्म कीर्तिवुद्धियर्थ चापीडथित्वा करविष्टि प्रणयक्रियाभिः पौरजनापदं जणं स्वर-मात्कोशान्महता धनोधेनानतिमहत्ता च कालेनं त्रिगुणदृढतरविस्तारायामं सेतुं विधाय सर्वतटे... सुदर्शनतरं कारितम्स अस्मिन्नर्थे महाक्षत्रपस्थ मतिसचिवकर्म सचिवैरमात्यगुण सयुद्युत्तैरप्याति महत्त्वाद मेदस्यानुत्साह विमुखमतिभिः प्रव्याख्यातारम्भं पुनः सेतुवन्ध-नैरायशाद्वाहमूतासु प्रजास्विहाधिष्ठाने पौराजानपदजनानुग्रहार्थ पार्थिवेन कृत्स्नानानगानर्त्तसुराष्ट्राणां पालनार्थ नियुक्तेन पत्यवेन कुलैपपुत्रेणा मात्येन सुविशाखेन यथावदर्थधर्म व्यवहार दर्शनैरनुरागमभ्वर्द्धयता शक्तेन दात्तेनाचपलेनाविस्मते नार्येणाहार्येण स्वधितिष्ठता-धर्म-कीर्ति-यशांसि भुर्तरमिवर्द्धय तानुष्ठितमिति ।

समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख
हरिषेण : 350 ई.

1. ...कुल्यै...स्वैः...तस... ।

2. ... यस्य... ।

3. ...युवं ॥ 1 ॥

4. स्फुरद्वं...क्षं स्फुढोद्ध्वसित्...प्रवितत ॥ 2 ॥

5. यस्य प्रज्ञानुषंगोचित सुखमनसः शास्त्रतन्वार्थ भर्त्तु...स्तब्धो...नि...नोच्छृ... ।

6. सत्काव्यश्री विरोधान्बुधगुणित गुणाज्ञाहतानेव कृत्वा विद्वल्लोके विनाशिस्फुटबहुकविता कीर्तिराज्यं थुनन्तिन ॥ 3 ॥

7. आर्य्यो हीत्युपगुह्य भाव पिशुनैरुत्कर्णितै रोमभिः सभ्येपूच्छवसितोपु तुल्य कुलज म्लानाननोद्विक्षितः ।

8. स्नेह व्यालुलितेन वाष्पगुरूणा तत्वेक्षिणा चक्षुणा यः चित्रा–

भिहितो निरीक्ष्य निखिलां पाद्वेवगुर्वीमिति ॥ 4 ॥

9. दृष्ट्वा कर्माण्यनेकान्यमनुसदृशान्यद् भूतोद् भिन्न हर्षा भावैरास्वादयत्तः...केचित् ।

10. वीर्योत्तपाश्च केचिच्छरणमुमागता यस्त वृत्ते प्रणामेऽप्यर्सि ग्रस्तेषु... ॥ 5 ॥

11. संग्रामेषु स्वभुजविजिता नित्यमुच्चापकाराः श्वः श्वोमान प्र... ।

12. तोषोतुं गैः स्फुट-वहुरम-स्नेह-फुल्लैर्म्यनोभिः पश्चाताप व... स्याद्वसन्तम् ॥ 6 ॥

13. उद्वेलोदितवाहुवीर्य्यभसादेकेन येन क्षणादुन्यूल्यांच्युत नागसेन... ॥

14. दण्डैग्राहतयैव कोत कुलजं पुष्पाह्वये क्रीड़ता, सूर्य नित्य तट ॥ 7 ॥

15. धर्म्मप्राचीरवन्धः शशि-कर–शुचय : कीर्त्तयः स प्रताना वैदुष्यं तत्वभेदि प्रशम कु...म...यु...तार्थम्.

16. अध्येयः सूक्तमार्गः कवि-मति-विभवोत्सारणं चापि काव्यम् को नुस्याद्योअस्यं नस्याद् गुणमति विदुषां ध्यानपात्रं य एकः ।

17. तस्य विविध समर शतावरण दक्षस्य स्वभुज-वलं पराक्रमैकवन्धोः । पराक्रमाङाकस्य परशु-शर-शंक-शक्ति-प्रसासि-तोमर ।

18. भिन्दीपालनाराचवैतस्तिकाद्यनेक प्रहरण विरुदाकुल-व्रण-शतांक शोभसयु दयोपचित-कान्ततर वर्ष्यणः ।

19. कौशल क महेन्द्र माहाकान्तार कव्याघ्रराज कौशल-कमण्टराज पैष्ट पुरकमहेन्द्र गिरि कौहर कस्वामिदलोरण्ड-पल्लकदमन कांचेयक विष्णु गोपावमुक्तक ।

चन्द्रगुप्त का मेहरौली लौह स्तम्भ लेख (413 A.D.)

यस्योद्वर्तयवः प्रतीपसुरक्षा शत्रुन्समेत्थागतान् वंगेठवाहव-वर्तिनोऽभिलिखिता खंङ् गेन कीर्ति भुंजे ॥ तीर्त्वा सप्त मुखानि येन समेर सिन्धोर्ज्जिता वाहिल्का यस्याघाप्यधिवास्यते जलनिधिर्वीर्टर्यातिलैर्द्धक्षिण; खिन्नस्येव विसृज्य वां नरपते-गीमाश्रितस्येतरां मूत्वी कर्म्य-जितावर्नि गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षिती शान्तस्येव महावनेहुतभुजो यस्य प्रतापो महावाधाप्युत्सृजति प्रणाशितरिपोर्य्यत्नस्य शेषः क्षितिम् प्राप्तेन स्वभुजार्ज्जितं च सुचिरं चैकाधिराज्यं क्षितौ चन्द्राह्वेन समग्र-चन्द्रसदृशी वक्तश्रियं विभ्रता । तेनायं प्राणिधाम भूमिपतिना धावेन (भावेन) विष्णौ मति प्रांशविष्णुपदैगिरौ भगवतो-विष्णोर्ध्वजः स्थापितः ।

भारत के प्रमुख लोक नृत्य तथा लोक नाट्य शैलियाँ

1. **बिहू नृत्य**–इस नृत्य का प्रचलन पूर्वोत्तर भारत के असम राज्य में है. इसका प्राचीन रूप आरण्यक नृत्यों की परम्परा से जुड़ा हुआ है. असम की कचारी एवं कछारी जनजातियों में प्रचलित यह नृत्य वर्ष में तीन वार आयोजित किया जाता है.

2. **रउफ**–यह जम्मू एवं कश्मीर राज्य का सबसे प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जिसका आयोजन फसल कटाई हो जाने के पश्चात् स्त्रियों द्वारा किया जाता है.

3. **गरबा**–यह गुजरात राज्य में प्रचलित स्त्रियों का सबसे महत्वपूर्ण लोक नृत्य है, जो नवरात्रि के अवसर पर आयोजित किया जाता है. इसका उद्देश्य देवी दुर्गा की आराधना करना होता है.

4. **भांगड़ा**–यह पंजाब राज्य में प्रचलित अत्यन्त लोकप्रिय नृत्य है, जिसे वहाँ के पुरुषों द्वारा किया जाता है.

5. **घूमर**–यह राजस्थान में प्रचलित सर्वप्रमुख लोक नृत्य है, जिसे केवल स्त्रियाँ करती हैं. तीज, त्यौहारों, होली, दुर्गा पूजा एवं विभिन्न देवियों की पूजा के अवसर पर यह नृत्य आयोजित किया जाता है.

6. **पण्डवानी**–यह मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ क्षेत्र में प्रचलित एकल लोक नृत्य है, जिसका प्रस्तुतीकरण समवेत स्वरों में होता है.

7. **बिदेशिया**–यह उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्यों के भोजपुरी क्षेत्रों एवं ग्रामीण जनता में सर्वाधिक प्रचलित है. इस नृत्य की रचना का श्रेय भिखारी ठाकुर को दिया जाता है.

8. **नौटंकी**–यह उत्तर प्रदेश का लोकप्रिय प्रतिनिधि लोक नाट्य है. इसमें अभिनय और गायकी का अनुपम संगम देखने को मिलता है. इसमें दोहा, सोहनी, हरिगीतिका छन्द, लावनी, वीर, कव्वाली, गजल, दादरा, ठुमरी आदि का प्रयोग किया जाता है.

9. **यक्षगान**–यक्षगान कर्नाटक की नृत्य नाटिका है. ग्रामीण परम्परा पर आधारित इस नृत्य का विषय पौराणिक होता है.

10. **कालबेलिया**–यह नृत्य राजस्थान की कालबेलिया जनजाति की स्त्रियों का नृत्य है. कालबेलिया पेशे से सपेरे होते हैं. कालबेलिया स्त्रियाँ पूंगी पर इडोनो और गीत के सहारे नृत्य करती हैं.

11. **छऊ**–यह विहार, वंगाल, उड़ीसा के आदिवासियों का युद्ध नृत्य है. इस नृत्य के तीन विद्यालय हैं–सरायकेला, पुरुलिया, मयूरभंज ।

12. **तमाशा**–यह महाराष्ट्र की नृत्य नाटिका है. वंशीधर भट्ट को इसे विकसित करने का श्रेय प्राप्त है.

प्रमुख शास्त्रीय नृत्य

1. **कत्थक**–कत्थक मूलतः उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य है. इसका आधार हिन्दू परम्परा में है, जिसको संरक्षण देने का श्रेय कुछ मुस्लिम शासकों को भी है. इस सन्दर्भ में अवध के नवाव वाजिद अली शाह का नाम उल्लेखनीय है.

2. **भरतनाट्यम**–भरतनाट्यम तमिलनाडु का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है. प्रचलित कथानक के अनुसार शिवजी की

अर्धांगिनी शक्ति अर्थात् गौरी ने एक लाख श्लोकों का 'गौरीकथक' लिखा था. इस ग्रन्थ के आधार पर सारंगदेव ने 'महाभारत सदामुनि' नामक नाट्य ग्रन्थ लिखा.

3. **कथकली**–यह केरल राज्य का प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य है. परम्परा से यह नृत्य केरल की योद्धा जनजाति नायर में प्रचलित रहा है.

4. **कुचिपुड़ी**–यह नृत्य मूलतः आन्ध्र प्रदेश से सम्बन्धित है. यह एक समय सिर्फ मन्दिरों के प्रागंण से सम्बद्ध था और पुरुष ही इस नृत्य को करते थे. 'कुचिपुडी' नामक गाँव के नाम पर ही इस नृत्य का नाम कुचिपुड़ी पड़ा.

5. **ओडिसी**–यह उड़ीसा का प्राचीन नृत्य है. यह नृत्य भी देवदासी परम्परा से अनुप्राणित रहा है. ओडिसी का प्राचीनतम् प्रमाण हाथीगुम्फा अभिलेख से प्राप्त होता है.

6. **मणिपुरी**–इस शास्त्रीय नृत्य का मूलाधार मणिपुर का प्राचीन जनजातीय नृत्य है, लेकिन वैष्णव धर्म की विषय-वस्तु का अवलम्बन लेकर यह नृत्य शास्त्रीय परम्परा के रंग में रंग गया.

7. **मोहिनीअट्टम**–यह केरल से सम्बन्धित है. यद्यपि इसकी गणना पूर्व शास्त्रीय नृत्यों में नहीं की जाती, तथापि यह शास्त्रीय परम्परा से अवश्य ही सम्बद्ध प्रतीत होता है. यह वैष्णव भक्त परम्परा से अनुप्राणित नृत्य है, जिसकी चर्चा 'व्यवहार माला' नामक ग्रन्थ में मिलती है.

प्राचीन भारत के ऐतिहासिक व्यक्तित्व

(1) अशोक महान्
(Ashoka the Great)

वास्तविक नाम	अशोक वर्धन
प्रसिद्ध नाम	अशोक महान्



अन्य नाम	1. धर्माशोक (कलिंग विजय के पश्चात्) 2. पियदस्सि (राज्याभिषेक का नाम) 3. चण्डाशोक (क्रोधी स्वभाव के कारण) 4. शांतावसाद
पिता	बिन्दुसार
प्रारम्भिक जीवन	1. पिता के बीमार होने पर उज्जैन के सूबेदार बने. 2. सौतेले भाई सुसीम को मारकर राज्य का कार्य-भार सँभाला 3. प्रारम्भ से अत्यन्त नीच, दुष्ट एवं क्रूर प्रकृति का था अतः उसे चण्डाशोक कहा जाता था. 4. लोगों को मारने के उद्देश्य से रमणीय वधस्थल की स्थापना की थी.
माता	सुभद्रांगणी या धम्मा (चम्पा के ब्राह्मण की पुत्री)
पत्नी	1. देवी (विदिशा के सेठी की सुन्दर पुत्री से प्रेम विवाह किया) 2. तिष्यरक्षिता
पुत्र	1. तीवर, 2. महेन्द्र, 3. कुणाल, 4. जालोक
शासनकाल	(1) 273 से 236 ईसा पूर्व[1] (2) 269 से 232 ईसा पूर्व
गुरु	मोग्गलिपुत्र तिस्स
प्रादेशिक राजधानियाँ[3]	(1) तक्षशिला (2) उज्जैन (3) तोसली (कलिंग) (4) स्वर्णगिरि
प्रमुख युद्ध	कलिंग युद्ध (261-60 ई. पू.)[2] (इस युद्ध के बाद अशोक चण्डाशोक से धर्माशोक बन गया था.)
साम्राज्य	मगध, पाटलिपुत्र, खलतिक पर्वत, कौशाम्बी, लुम्बिनीग्राम, कलिंग, अटवी, सुवर्णगिरि, उज्जयिनी एवं तक्षशिला उसके साम्राज्य के अन्तर्गत थे.
अशोक के धम्म की व्याख्या	"धम्म है साधुता, बहुत से अच्छे कल्याण-कारी कार्य करना, पापरहित होना, मृदुला, दूसरों के प्रति व्यवहार में मधुरता, दया, दान, सत्य और पवित्रता." (दूसरे एवं सातवें अभिलेख के अनुसार)
नियुक्तियाँ	शासन के 14वें वर्ष में धम्म प्रचार के लिए धम्म महामात्रों की नियुक्ति (सातवें स्तम्भाभिलेख में वर्णित)

---
1 The age of Imperial Unity : Bhartiya Vidya Bhavan; Chapter–V, Page 88

2 भारत के गौरव, भाग 1, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार पेज 38

भेजे गए धर्म प्रचारक	(1) मंज्झतिक–कश्मीर और गान्धार में (2) महादेव–महिषमण्डल में (3) महारक्षित–यवन राज्यों में (4) धर्मरक्षित–अपरान्त में (5) मज्झिम–हिमालय प्रदेश में (6) महाधर्मरक्षित–महाराष्ट्र में (7) रक्षित–वमवासी में (8) सोम एवं उत्तरा–सुवर्ण भूमि में (9) महेन्द्र एवं संघमित्रा–श्रीलंका में
बौद्ध धर्म सम्बन्धी कृत्य	तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया (अध्यक्ष–मोग्गलिपुत्र तिस्स)
केन्द्रीय राजधानी	पाटलिपुत्र
प्रसिद्ध वक्तव्य	"जिस प्रकार एक माँ अपने शिशु को एक कुशल धाय को सौंपकर निश्चित हो जाती है कि कुशल धाय संतान का पालन-पोषण करने में समर्थ है, उसी प्रकार मैंने भी अपनी प्रजा के सुख और कल्याण के लिए **रज्जुकों** की नियुक्ति की है."
मृत्यु	232 ई. पू.[1]

(2) महावीर स्वामी
(Mahavir Swami)

वास्तविक नाम	वर्द्धमान
आध्यात्मिक नाम	महावीर स्वामी
जन्म	540 ई. पू. में[2]
जन्म-स्थल	कुण्डग्राम (वैशाली के निकट)



परिवार	क्षत्रिय राजपरिवार
पिता	सिद्धार्थ (ज्ञातृक कुल के गणराजा)
माता	त्रिशला (लिच्छवि गणराज्य के प्रधान चेटक की बहिन)
पत्नी	यशोदा (राजा समरवीर की पुत्री)
पुत्री	प्रियदर्शना
पुत्री दामाद	जमालि (क्षत्रिय युवक)
संन्यास	30 वर्ष की उम्र में (महापरिभि निष्क्रमण के नाम से प्रसिद्ध)
संन्यास की अनुमति	भाईनन्दिवर्द्धन से (पिता की मृत्यु के पश्चात्)
वस्त्र त्याग	संन्यास के ग्यारह मास के उपरान्त
कैवल्य (पूर्ण ज्ञान) प्राप्ति	12 वर्ष की तपस्या के उपरान्त
कैवल्य प्राप्ति स्थल	जम्भिकग्राम (जृम्भिका) के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर शाल्मलि वृक्ष के नीचे
उपनाम	(1) केवलिन (पूर्ण ज्ञान प्राप्ति के कारण) (2) जिन (इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण) (3) महावीर (अत्यधिक कष्टों को सहने की क्षमता के कारण
धर्म प्रचार क्षेत्र	चम्पा, वैशाली, राजगृह
अनुयायियों का सम्बोधन	जैन
प्रमुख शिष्य	(1) अग्निभूति (2) इन्द्रभूति (3) वायुभूति (4) सुधर्मन (5) मण्डित (6) मोरियपुत्र (7) अचलभ्राता (8) प्रयास (9) मेसार्य (10) अकम्पित (11) व्यक्त (12) चेटक (वैशाली के शासक) (13) प्रद्योत (अवन्ति के शासक) (14) विम्बिसार (15) अजातशत्रु (16) दधिवाहन (17) मल्लराजा सूस्तिपाल
प्रथम भिक्षुणी	चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना
महावीर स्वामी के पश्चात् प्रथम थेर	सुधर्मन
तीर्थंकर	चौबीसवें तीर्थंकर
मृत्यु (महापरिनिर्वाण)	468 ई. पू.[3] (पावापुरी में)

1 प्राचीन भारत का इतिहास : झा एवं श्रीमाली पृष्ठ 190
2 India : Earliest times to 1206 AD. Bharti Bhavan
3 प्राचीन भारत का इतिहास–झा एवं श्रीमाली–पृष्ठ 147

(3) आदिगुरु शंकराचार्य (Adiguru Shankaracharya)

वास्तविक नाम	शंकर
प्रसिद्ध नाम	शंकराचार्य
जन्म	788 ई.[1]



जन्मस्थल	कलादि (केरल)
परिवार	नम्बूदरीपाद ब्राह्मण परिवार
पिता	शिवगुरु
माता	सुभद्रा
गुरु	स्वामी गोविन्द भगवद्पाद (संन्यास की दीक्षा)
शिष्य	पद्मपदाचार्य
स्थापित मठ	(1) शृंगेरीमठ (रामेश्वरम्) (2) शारदामठ (द्वारिका) (3) गोवर्द्धनमठ (जगन्नाथपुरी) (4) ज्योतिर्मठ (वदरिकाश्रम)
अनुसरित मार्ग	ज्ञानी मार्ग
दर्शन-सिद्धान्त	अद्वैतवाद
उपनाम	प्रच्छन्न बौद्ध
प्रमुख ग्रन्थ	(1) ब्रह्मसूत्र भाष्य, (2) गीता भाष्य, (3) शिव स्रोत, (4) आत्मवोध, (5) विवेक चूड़ामणि, (6) सौन्दर्य लहरी
शास्त्रार्थ	कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र एवं उनकी पत्नी भारती, कापालिक भैरवाचार्य को शास्त्रार्थ में पराजित किया.
प्रसिद्ध वक्तव्य	"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मणैवमा परः"
मृत्यु	32 वर्ष की उम्र में[2] (788 + 32 = 820 ई. में)

(4) सम्राट् हर्षवर्द्धन (Samrat Harshavardhana)

वास्तविक नाम	हर्ष
प्रसिद्ध नाम	हर्षवर्द्धन
जन्म	590 ई.



पिता	प्रभाकरवर्द्धन
माता	यशोमति
वंश	पुष्यभूति या वर्द्धन
भाई	राज्यवर्द्धन
वहिन	राजश्री
धर्मावलम्वी	1. प्रारम्भिक उम्र में शैव 2. अन्तिम अवस्था में बौद्ध धर्मावलम्वी (महायान मत)
राज्याभिषेक	606 ई. में[3]
साम्राज्य संगठन	सामन्ती व्यवस्था पर आधारित
उपाधियाँ	(1) परम भट्टारक, (2) महाराजाधिराज, (3) सकलोत्तरापथेश्वर, (4) चक्रवर्ती, (5) एकाधिराज, (6) सार्वभौम, (7) परमेश्वर
प्रमुख अधीनस्थ शासक	(1) ध्रुवसेन द्वितीय (वल्लभी), (2) भास्करवर्मन (कामरूप) (3) पूर्णवर्मन (मगध) (4) उदित (जालन्धर) (5) माधवगुप्त (उत्तरगुप्त शासक)
सैनिक संगठन	गजसेना की संख्या 60,000, घुड़सवार–100000, 50,000 पैदल सैनिक (ह्वेनसांग के अनुसार)
लगाये गए प्रमुख कर	(1) उद्रंग, (2) उपरिकर, (3) धात्र, (4) हिरण्य, (5) भाग, (6) भोग, (7) भूत-भात, (8) तुल्यमेय
रचनाएँ	(1) नागानन्द, (2) रत्नावली, (3) प्रियदर्शिका

1 India : Earliest times to 1206 AD. Page 399
2 हिन्दी विश्वकोष : नगेन्द्रनाथ वसु, पृष्ठ 552
3 India : Earliest times to 1206 A.D. Page 312

दरबारी कवि	(1) बाणभट्ट, (2) मयूर, (3) मातंग दिवाकर, (4) जयसेन
शासनकाल में आए विदेशी यात्री	(1) ह्वेनसांग (चीनी यात्री) 630 ई. में आगमन (2) वांग-हुएन सी (चीनी राजदूत) 643 ई. में
सम्पादित धार्मिक कृत्य	(1) पाँचवें वर्ष प्रयाग में 'मोक्ष परिषद् का आयोजन करता था. (2) हर्ष ने ह्वेनसांग के सम्मान में एक सभा बुलाई थी, जिसमें 20 राज्यों के राजा, विभिन्न धर्मों के विद्वान् आये थे. इसी समय उसने एक विशाल संघाराम, 100 फीट ऊँचा बुर्ज एवं स्वयं के कद के बराबर की सोने की बुद्ध प्रतिमा बनाई थी.
साम्राज्य विस्तार	पूर्व में गंजाम से पश्चिम में वल्लभी, उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में नर्मदा तक विस्तृत था[1]
ऐतिहासिक स्रोत	(1) हर्षचरित (बाणभट्ट कादम्बरी) (2) ह्वेनसांग का यात्रा विवरण (शियु की)
राजधानी	कन्नौज
सम्वत् प्रवर्त्तन	हर्ष संवत् (606 ई. में प्रचलित) (हर्ष के सिंहासनारूढ़ होने पर)
प्रमुख अभिलेख	गंजाम अभिलेख (हर्ष की गंजाम विजय पर लिखित)
प्रमुख युद्ध	नर्मदा का युद्ध (620 ई. में हर्षवर्द्धन एवं पुलकेशिन II के मध्य, पुलकेशिन II विजयी)
मृत्यु	647 या 48 ई. में[2]

(5) महाकवि कालिदास (Mahakavi Kalidas)

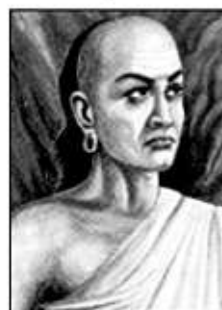
वास्तविक नाम	कालिदास
प्रसिद्ध नाम	कालिदास
जन्म	1 से चतुर्थ शताब्दी के मध्य[3] (वेबर के अनुसार)
जन्मस्थल	उज्जयिनी (वैमत्यता है.)
उपासक	शैव मतावलम्बी एवं काली उपासक
समकालिक विद्वान्	(1) धन्वन्तरि, (2) क्षपणक, (3) अमर सिंह (4) शङ्कु, (5) बेतालभट्ट, (6) घर्टकर्पर, (7) वराहमिहिर, (8) वररुचि (ये सभी विक्रमादित्य के नवरत्न थे जिनमें एक कालिदास भी थे.)



रचनाएँ	(1) अभिज्ञानशाकुन्तलम्, (2) मालविकाग्निमित्रम्, (3) विक्रमोर्वशीयम्, (4) रघुवंश, (5) कुमारसंभव, (6) मेघदूत
उपाधि	महाकवि
पत्नी	विद्योतमा
सर्वाधिक आलंकारिक प्रयोग	उपमा अलंकार (बहुलता)
मृत्यु	अज्ञात

(6) चाणक्य (Chanakya)

वास्तविक नाम	विष्णुगुप्त
प्रसिद्ध नाम	कौटिल्य, चाणक्य



अन्य नाम	द्रोमिण, अंशुल, मल्ल-नाग, वात्स्यायन
जन्म	400 ई. पू. लगभग[4]

---

1 भारत के गौरव I, पृष्ठ सं. 67 प्रकाशन विभाग, भारत सरकार.
2 हिन्दी विश्वकोष–नगेन्द्रनाथ वसु, पृष्ठ–696
3 हिन्दी विश्वकोष–नगेन्द्रनाथ वसु, पृष्ठ 591
4 भारत के गौरव : भाग I प्रकाशन विभाग, भारत सरकार

जन्मस्थल	तक्षशिला
उल्लेखनीय कार्य	मगध के अत्याचारी शासक नन्द को मारकर चन्द्रगुप्त मौर्य को शासक बनाया.
अध्ययन	तक्षशिला एवं पाटलिपुत्र में
रचनाएँ	(1) नीतिशास्त्र, (2) अर्थशास्त्र, (3) विष्णुगुप्त सिद्धान्त, (4) कामशास्त्र, (5) न्यायसूत्र.
प्रधान शिष्य	कामन्दक
परिवार	ब्राह्मण
सम्पादित कृत्य	(1) चन्द्रगुप्त मौर्य को शस्त्र, शास्त्रोचित शिक्षा देकर मौर्यवंश का शासक बनाया. (2) मौर्यवंश के अन्तर्गत चन्द्रगुप्त शासक के प्रधान अमात्य का कार्यभार सँभाला.
प्रमुख आचार्य	(1) भारद्वाज, (2) पाराशर, (3) विशालाक्ष
स्थापन्न	मगध में राजतन्त्र की स्थापना
मृत्यु	अज्ञात

(7) महात्मा बुद्ध
(Mahatma Buddha)

वास्तविक नाम	सिद्धार्थ
आध्यात्मिक नाम	गौतम बुद्ध
जन्म	563 ई. पू.[1]



जन्म-स्थल	कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी ग्राम में (साल (साल्मलि) वृक्ष का उपवन)
गौत्र	गौतम
पिता	शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्य गणराजा)
माता	महामाया (कौशल राज्य की राजकुमारी)
परिवार	उच्च कुलीन क्षत्रिय राज परिवार
पालन-पोषण	मौसी महाप्रजापति गौतमी द्वारा (जन्म के प्रथम सप्ताह में माँ की मृत्यु हो जाने के कारण)
प्रारम्भिक जीवन	अत्यन्त सुख-सुविधा पूर्ण
पत्नी	यशोधरा (गोपा) 16 वर्ष की उम्र में शादी
पुत्र	राहुल
चचेरा भाई	देवदत्त
बुद्ध के शिक्षक	(1) अलारा कलामा (सांख्य दर्शन) (2) रुद्रक रामपुत्र
स्वयं का घोड़ा	कठक (कन्थक)
सारथी	चन्ना (छन्न)
वैराग्य उत्पत्ति का भाव	नगर भ्रमण के दौरान वृद्ध, रोगी, मृत और संन्यासी को देखकर
घृणा का प्रादुर्भाव	निर्वस्त्र गणिकाओं को देखकर
गृहत्याग	29 वर्ष की उम्र में पुत्र, पत्नी को निद्रावस्था में छोड़कर ('महाभिनिष्क्रमण' कहा गया)
तपस्या के साथी	(1) आंज, (2) अस्सजि, (3) वप्प, (4) महानाम, (5) भद्दिय
तपस्या सहचर विशेष	ब्राह्मण कौण्ड्रिन्य (उरुवेला में)
तपभंग	तपमार्ग को निरर्थक जानकर सुजाता नामक स्त्री की खीर खाकर
तपस्या का दूसरा चरण	बोधगया में वट वृक्ष के नीचे समाधिस्थ
ज्ञान प्राप्ति एवं बुद्ध नामकरण	समाधि की स्थिति में 8 दिनों के पश्चात् वैशाखी पूर्णिमा की रात्रि को सच्चे ज्ञान की प्राप्ति जो 'सम्बोधि' के नाम से प्रसिद्ध हुई एवं गौतम बुद्ध कहलाए.
प्रथम उपदेश	अपने पाँच साथियों को ऋषिपत्तन (सारनाथ) में प्रथम उपदेश दिया, जिन्होंने बुद्ध को पाखण्डी कहा था. [उनका प्रथम उपदेश धर्मचक्र प्रवर्तन (Turning of Wheel) कहलाया] संघ की स्थापना इसी दौरान हुई.
संघ के सदस्य	बुद्ध के कौण्ड्रिन्य इत्यादि पाँच साथी एवं बनारस के श्रेष्ठि 'यश'
द्वितीय उपदेश	राजगृह या राजगीर (मगध की राजधानी) में (मगध शासक बिम्बिसार ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया)

1 India : Earliest times to 1206 A.D., Page 126. Dr. Kameswar Prasad.

अन्य उपदेश स्थल	वैशाली, कौशल में 40 वर्षों तक घूम-घूमकर.
बुद्ध के प्रमुख अनुयायी	(1) अजातशत्रु, (2) बिम्बिसार, (3) कौशल नरेश प्रसेनजित, (4) अनाथपिण्डक, (5) नगरवधु आम्रपाली, (6) आनन्द, (7) उपालि, (8) महाकश्यप, (9) जीवक, (10) अनुरुद्ध
बुद्ध के जीवन की पाँच घटनाओं के प्रतीक	(1) जन्म–कमल और वृषभ (2) महाभिनिष्क्रमण–अश्व (3) धर्मचक्र प्रवर्त्तन–चक्र (4) निर्वाण (सम्बोधि)–बोधिवृक्ष (5) महापरिनिर्वाण–स्तूप
बुद्ध एवं बौद्ध धर्म पर आधारित ग्रन्थ एवं साहित्य	पालि त्रिपिटक– (1) सुत्तपिटक (2) विनयपिटक (3) अभिधम्म पिटक
सबसे पहले अनुयायी	दो बंजारे–तापुस एवं भल्लुक
बौद्ध संघ की प्रथम महिला सदस्य	बुद्ध की मौसी गौतमी
संघ की प्रमुख सदस्याएँ	(1) यशोधरा (बुद्ध की पत्नी) (2) खेमा (बिम्बिसार की पत्नी) (3) नन्दा (गौतमी की पुत्री) (4) विशाखा (अंग जनपद के श्रेष्ठि की पुत्री) (5) आम्रपाली (वैशाली की गणिका)
बुद्ध का विश्राम स्थल	पूर्वाराम विहार (अंगजनपद के श्रेष्ठि की पुत्री विशाखा द्वारा बनाया गया था.)
चार आर्य सत्य	(1) दुःख, (2) दुःख समुदाय, (3) दुःख निरोध, (4) दुःखनिरोध गामिनी प्रतिपदा
प्रमुख बौद्ध संगीतियाँ	(1) प्रथम बौद्ध संगीति–483 ई. पू. (राजगृह में)[1] अध्यक्ष–भिक्षु महाकश्यप (शासक अजातशत्रु) [4] (2) द्वितीय बौद्ध संगीति–383 ई. पू. (वैशाली में) अध्यक्ष–रेवत स्थविर (शासक–कालाशोक) (3) तृतीय बौद्ध संगीति–250 ई. पू. (पाटलिपुत्र में) अध्यक्ष–मोग्गलिपुत्र तिस्स (शासक-अशोक) (4) चतुर्थ बौद्ध संगीति–प्रथम शताब्दी ई. में (कुण्डलवन में) अध्यक्ष–वसुमित्र (शासक-कनिष्क) (5) पाँचवीं बौद्ध संगीति[2]–सातवीं शताब्दी (कन्नौज में) अध्यक्ष–ह्वेनसांग (शासक–हर्षवर्द्धन)
सम्प्रदाय	(1) हीनयान, (2) महायान (चतुर्थ बौद्ध संगीति के दौरान विभाजन हुआ)
प्रवर्त्तक	बौद्ध धर्म
मृत्यु	486 ई. पू.[3] (कुशीनगर में) चुन्द (चन्दु) नामक सुनार के घर सुअर का माँस खाने से.

(8) महर्षि वेदव्यास
(Maharishi Ved Vyas)

वास्तविक नाम	द्वैपायन (कृष्ण द्वैपायन)
प्रसद्धि नाम	वेदव्यास (वेदों का विभाग करने के कारण)



अन्य नाम	बादरायण
जन्म-स्थल	(1) यमुना गर्भस्थ द्वीप में (2) बसाना ग्रांव करनाल[4]
पिता	भगवान पराशर
माता	सत्यवती (धीवर कन्या)

1 कुछ विद्वान् 486 ई. पू. भी प्रथम बौद्ध संगीति का कालक्रम मानते हैं.

2 Records of the Western World Page 37, Hsuan Tsang

3 भारतीय इतिहास कोश–सच्चिदानन्द भट्टाचार्य पृष्ठ 491

4 अमृता प्रीतम की पुस्तक नौ फूलों की व्यथा में वर्णित.

प्रमुख शिष्य	(1) सुमन्तु, (2) जैमिनी, (3) पैल (4) वैशम्पायन, (5) शुकदेव
उल्लेखनीय तथ्य	(1) बहुत छोटी उम्र में ही माता की आज्ञा से तपस्या करने चले गये. (2) महाभारत की एक संहिता का लेखन किया था. भागवत पुराण की रचना भी इन्होंने की थी. (3) भागवत पुराण में वेदव्यास को विष्णु का सत्रहवाँ अवतार बतलाया गया है.
प्रमुख समुद्भूत व्यास	(1) स्वयंभू, (2) मनु, (3) उशना, (4) बृहस्पति, (5) सवितृ, (6) यम, (7) इन्द्र, (8) वशिष्ठ, (9) सारस्वत, (10) त्रिधामन्, (11) ऋषभ, (12) सुतेजा, (13) अन्तरिक्ष, (14) सुचक्षुः, (15) सम्यारुणि, (16) धनञ्जय, (17) कृतञ्जय, (18) ऋतञ्जय, (19) भारद्वाज, (20) गौतम, (21) उत्तम, (22) वाचश्रवस, (23) तृणविन्दु, (24) वाल्मीकि, (25) शक्ति, (26) पाराशर, (27) जातकर्ण, (28) द्वैपायन

(9) महर्षि वाल्मीकि (Maharishi Valmiki)

वास्तविक नाम	रत्नाकर, अग्नि शर्मा
प्रसिद्ध नाम	महर्षि वाल्मीकि, (दीमकों द्वारा शरीर पर घर वना लेने के कारण)



उपाधि	आदिकवि, महर्षि ब्रह्मर्षि
पिता	वरुण (आदित्य) प्रचेता,[1]
दादा	महर्षि कश्यप
भाई	भृगु ऋषि
लेखन का आरम्भ	काममयी स्थिति में निमग्न क्रौंच जोड़े के नर को शिकारी द्वारा मार देने पर उसके प्रति उपजे क्रोध से बने श्लोक से.
रामायण लेखन के प्रेरक	नारद (प्रेरणा दी), ब्रह्मा जी (वरदान दिया)
उपासना वर्ण	मरा-मरा (राम के उल्टे वर्ण) कौञ्च पक्षी (अनुष्टुप छन्द बना)
आश्रम	(1) भैंसा लोटन गाँव (वर्तमान चम्पारण का वाल्मीकि नगर) (2) विठुर नामक स्थल (कानपुर के पास)[2]
प्रारम्भिक प्रकृति	एक जंगली दस्यु के रूप में
वंशज	प्रचेता ऋषि वंशज
शिष्य	भारद्वाज मुनि
रामायण लेखन	महर्षि वाल्मीकि ने रामायण को 6 काण्ड तक 500 सर्गों में एवं 24 हजार श्लोकों में पूरा किया.
आश्रय प्रदाता	निर्वासित श्रीराम पत्नी सीता एवं दो पुत्रों को.

(10) पाणिनी (Panini)

वास्तविक नाम	आहिक
अन्य नाम	दाक्षीपुत्र, शालङ्की, पाणिन, शालातुरीय
प्रसिद्ध नाम	पाणिनी (वंश नाम)
जन्म	300 ई. पू.[3]
जन्म स्थल	शलातुर
पितामह	विष्णुशर्मन पाणिनी
पिता	सामन पाणिनी
गौत्र नाम	शलांकी
गुरु	वर्ष
उपाधि	व्याकरणाचार्य, वृतज्ञ आचार्य
भाई	(1) पिंगल, (2) व्याडि, (3) वररुचि
उल्लेखनीय योगदान	(1) संस्कृत भाषा को प्रथम बार व्याकरण सम्मत शुद्ध स्वरूप प्रदान किया. (2) कृदन्त, तद्धित, प्रत्ययों से शब्द निर्माण की परम्परा प्रारम्भ की.
प्रसिद्ध ग्रन्थ	अष्टाध्यायी

1 वाल्मीकि रामायण में दोनों नामों का उल्लेख किया गया है.
2 गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित वाल्मीकि रामायण की भूमिका में उल्लिखित
3 हिन्दी विश्वकोष–नगेन्द्रनाथ वसु, पृष्ठ 213

(11) बिम्बिसार
(544-492 ई. पू.)

वास्तविक नाम	बिम्बिसार
पिता	दक्षिण बिहार के एक छोटे सैनिक अधिकारी.[1]
कुल	हर्यंक कुल (अश्वघोष के बुद्धचरित के अनुसार)
उपनाम	सेणिय, श्रेणिक
राज्याभिषेक	14 वर्ष की अल्पायु में 544 ई. पू.
राज्याभिषेक के समय मगध की स्थिति	1. मगध की स्थिति उस समय अत्यधिक खराब थी. 2. पड़ोसी राज्य के राजा अपने राज्य विस्तार में लगे हुए थे. 3. तक्षशिला और अवन्ति के मध्य के सम्बन्धों में कटुता पैदा हो चुकी थी.
तुलनात्मक राजवंश	यूरोप के हैप्सवर्ग एवं बौरवन्स राजवर्ग.
उल्लेखनीय कार्य	1. अवन्ति के राजा चण्ड प्रद्योत एवं गांधार के राजा पौष्करसारिन में समझौता कराकर मैत्री स्थापित करवाई. 2. सम्बन्ध सुधारने के दृष्टिकोण से पीलिया से पीड़ित राजा चण्ड प्रद्योत (अवन्ति नरेश) का इलाज बिम्बिसार ने अपने चिकित्सक जीवक से कराया. 3. मद्र (पूर्वी पंजाब), कौशल एवं वैशाली के लिच्छिवियों के साथ सम्बन्ध स्थापित किये. 4. कूटनीति, वैवाहिक सम्बन्ध एवं सैन्य शक्ति के आधार पर वर्चस्व स्थापित किया. 5. प्रशासन, न्याय एवं सेना को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयास किये. 6. अंग को जीतकर उसके राजा ब्रह्मदत्त की हत्या कर अंग को मगध में शामिल कर लिया.
प्रधान रानी	भद्र की राजकुमारी 'खेमा'
विवाह एवं दहेज	1. कौशल की राजकुमारी कौशल देवी से विवाह हुआ था. दहेज में एक काशिग्राम मिला था जिससे 1 लाख रुपये का वार्षिक राजस्व प्राप्त होता था. 2. दूसरा विवाह लिच्छवि की राजकुमारी चेलना से हुआ था.
प्रशासनिक पदाधिकारी	1. सभासत्तक 2. सेनानायक 3. वोहारिक (न्यायाधीश)
न्याय व्यवस्था	1. अपराधियों को कठोर सजा देने का प्रावधान था. 2. मृत्युदण्ड, अंग-भंग एवं शारीरिक यातना अपराध की प्रकृति के आधार पर सुनिश्चित की जाती थी.
ग्रामीण प्रशासन	1. ग्राम का मुखिया ग्राम-भोजक होता था. 2. ग्राम-भोजक गाँवों में शान्ति व्यवस्था स्थापित करते थे. लगान वसूली का कार्य भी ग्राम-भोजक का ही था. 3. ग्रामीण प्रशासन पर केन्द्र का नियन्त्रण था.
तत्कालीन शहरों की संख्या	1. महावग्ग के अनुसार बिम्बिसार के शासनकाल में उसके राज्य में 80,000 शहर थे.
अन्तिम समय	1. बिम्बिसार का अन्तिम समय अत्यधिक दुःखद रहा. 2. बिम्बिसार के पुत्र कूणिक अजातशत्रु ने अपने पिता को गिरफ्तार कर हत्या करवा दी एवं स्वयं का राज्यारोहण करवाया.

(12) अजातशत्रु
(492 से 462 ई. पू.)

वास्तविक नाम	कूणिक अजातशत्रु
पिता	बिम्बिसार
पिता से सम्बन्ध	असन्तोषजनक
राजवंश की स्थिति	हर्यंक वंश का चरमोत्कर्ष काल.
साम्यता	यूरोप के प्रसिया राजवंश के फ्रेडरिक द्वितीय से.
महत्त्वपूर्ण कार्य	1. राजगृह की किलेवन्दी को सुदृढ़ किया एवं राजगृह में एक चहारदीवारी का निर्माण कराया. 2. गंगा और सोन के संगम पर पाटलिपुत्र में एक दुर्ग का निर्माण कराया. 3. आंतरिक स्थिति सशक्त कर सैनिक अभियान प्रारम्भ किए.

1 महावंश के अनुसार बिम्बिसार के पिता भट्टिय या भाटिया थे.

उल्लेखनीय कार्य	1. कौशल के साथ संघर्ष काशीग्राम के राजस्व रुक जाने के कारण किया, लेकिन बाद में दोनों में समझौता हो गया और कौशल नरेश प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वज्जीरा से अजातशत्रु का विवाह कर दिया. 2. वैशाली के लिच्छवियों को परास्त कर वैशाली को मगध में मिला लिया. युद्ध का कारण कीमती पत्थर, हार और हाथी के स्वामित्व को लेकर था. युद्ध 484-468 ई. पू. तक लगभग 16 वर्षों तक चला. मगध की विजय हुई. 3. लिच्छवियों के पराजय से काशी, विदेह, मल्स इत्यादि मगध में विलीन हो गये.
अजातशत्रु की सेना के प्रमुख हथियार	1. रथमूसल (गदायुक्त गाड़ी) 2. महासिला-कण्टग (पत्थर फेंकने वाली मशीन)
मंत्री	वस्सकार
अन्तिम समय	462 ई. पू. में मृत्यु (अपने पुत्र द्वारा हत्या)

(13) चन्द्रगुप्त मौर्य
(321 से 300 ई. पू.)

वास्तविक नाम	चन्द्रगुप्त मौर्य
पूर्वज	पिप्पलीवन के शासक
बाल्यकाल	जंगलों में बीता
प्रेरणा एवं सरक्षण	तक्षशिला के आचार्य चाणक्य द्वारा नन्दवंश के विनाश के लिए बचपन से शिक्षा एवं कूटनीति से तैयार करना.
लक्ष्य	1. यूनानी आक्रमणकारियों से मुक्ति 2. मगध को नन्दों से मुक्त करना
उल्लेखनीय कार्य	1. चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानन्द (नन्दवंश) को मारने के लिए सिकन्दर की सहायता के लिए निवेदन किया, लेकिन असमर्थ रहा.
प्रथम विजय	विदेशी शासन के विरुद्ध भड़काकर लोगों को समर्थन में लेकर यूनानी सत्ता की कमजोर अवस्था में चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिन्ध और पंजाब पर आक्रमण कर लिया. पाटलिपुत्र पर अधिकार करने के लिए सिन्ध और पंजाब से सहयोग लिया.
द्वितीय विजय	पंजाब से चन्द्रगुप्त मौर्य पाटलिपुत्र पहुँचा. वहाँ पर उसको मुक्तिदाता के रूप में स्वीकृत किया. मगध की जनता की सहायता से नन्दवंश के अन्तिम शासक घनानन्द को मारकर चन्द्रगुप्त मौर्य मगध का शासक बना.
द्वितीय विजय के तरीके	1. नन्द की विशालतम एवं शक्तिशाली सेना जिसका सेनापति भद्दशाल था. घनानन्द को हराने के लिए चाणक्य ने षड्यन्त्र का सहारा लिया. (मुद्राराक्षस के अनुसार) 2. चन्द्रगुप्त और घनानन्द के युद्ध में 100 कोटि सैनिक, 10 हजार हाथी, 1 लाख घोड़े और 5000 रथ पूरी तरह ध्वस्त हो गये. (मिलिन्दपन्हो के अनुसार) 3. युद्ध से डरकर घनानन्द अपनी दो पत्नियों एवं एक पुत्री के साथ भाग गया. (परिशिष्ट पर्व के अनुसार)
राज्याभिषेक	घनानन्द को मारकर 321 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य मगध साम्राज्य का शासक बना.
सम्पादित अन्य महत्वपूर्ण कार्य	1. विन्ध्य पर्वत के दक्षिणी भाग पर आक्रमण कर विशाल साम्राज्य का निर्माण किया. 2. सेल्यूकस 312-11 ई. पू. अपने प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय प्राप्त कर बेबीलोन और बैक्ट्रिया के मार्ग से भारत की तरफ अग्रसर हुआ. 305-304 ई. पू. काबुल के मार्ग से सिन्धु नदी की तरफ सिकन्दर द्वारा जीते हुए प्रदेशों पर आक्रमण करने के लिए आया जिसका सामना चन्द्रगुप्त मौर्य से करना पड़ा. दोनों में सन्धि होकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गए. (अ) संधि की शर्तों में एरियाना के निम्नलिखित चार प्रदेश चन्द्रगुप्त मौर्य को प्राप्त हुए– (i) एरिया (हेरात)

(ii) आरकोशिया (कन्दहार)

(iii) जेड्रोसिया (बलूचिस्तान)

(iv) पेरीपेमिसदाई (काबुल)

(ब) मौर्य साम्राज्य की सीमा ईरान और अफगानिस्तान तक हो गयी.

(स) हिन्दुकुश पर्वतमाला मौर्य साम्राज्य और सेल्युकस के राज्य के बीच की सीमा रेखा बन गई.

(द) सेल्युकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया गया.

(य) मेगस्थनीज इण्डिका का लेखक था जिसे सेल्युकस ने अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था.

साम्राज्य विस्तार चन्द्रगुप्त का साम्राज्य पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक एवं उत्तर में हिमालय शृंखला से दक्षिण में मैसूर तक तथा पश्चिमोत्तर में मध्य एशिया तक फैल गया जो किसी भारतीय शासक द्वारा स्थापित सबसे बड़ा साम्राज्य था.

प्रशासन व्यवस्था

1. राजा राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होता था. सभी अधिकार राजा के हाथों में थे.
2. मन्त्रिपरिषद् एवं पदाधिकारियों द्वारा प्रशासन का नियन्त्रण राजा करता था.
3. राजा राज्य के सभी विभागों पर गुप्तचरों की सहायता से नियन्त्रण रखता था.
4. नगर प्रशासन, सैनिक व्यवस्था, स्थानीय प्रशासन की व्यवस्था अत्यन्त सुदृढ़ थी.

विभिन्न गतिविधियाँ

1. चन्द्रगुप्त मौर्य महल में स्त्री अंग-रक्षकों के साथ रहता था. वह मद्यपान एवं खेलकूद में अभिरुचि लेता था.
2. ब्राह्मण एवं श्रमणों का सम्मान करता था.
3. महल से बाहर युद्ध, यज्ञ, आखेट, न्याय के लिए निकलता था.

निष्कर्ष

1. चन्द्रगुप्त मौर्य प्रथम भारतीय साम्राज्य निर्माता, मुक्तिदाता एवं विश्वविख्यात शासक था.
2. पंजाब से यूनानियों को खदेड़ने एवं मगध की प्रजा को नन्दों के अत्याचारों से मुक्त कराने के लिए 'मुक्तिदाता' कहा जाता है.
3. वह एक प्रखर प्रशासक, विजेता एवं कुशल कूटनीतिज्ञ के रूप में ख्यात व्यक्तित्व था.
4. चन्द्रगुप्त मौर्य जैन धर्म का समर्थक था.

अन्तिम जीवन मगध में 12 वर्ष तक अकाल पड़ा जिससे क्षुब्ध होकर चन्द्रगुप्त मौर्य आचार्य भद्रबाहु के साथ मैसूर चला गया. श्रवणबेलगोला में चन्द्रगुप्त को कैवल्य की प्राप्ति हुई.

(14) बिन्दुसार (अमित्रघात)
(300-272 ई. पू.)

वास्तविक नाम बिन्दुसार

उपनाम अमित्रघात (शत्रुओं का संहारक)

अन्य प्रचलित नाम (i) अमित्रकेटे (ii) अमित्रचेत्स (iii) अल्लित्रोशेड्स (iv) सिंहसेन

शासनावधि (i) 24 वर्ष (पुराणों के अनुसार) (ii) 27 वर्ष (महावंश के अनुसार)

विशिष्ट उपलब्धियाँ

1. चन्द्रगुप्त के पश्चात् भी चाणक्य ने बिन्दुसार के प्रशासन में प्रधानमंत्री का पद सँभालकर उल्लेखनीय योग-दान किया जिससे अनेक विशिष्ट उपलब्धियाँ बिन्दुसार ने हासिल कीं. (आर्यमंजूश्रीमूलकल्प, लामा तारानाथ के अनसार)
2. लामा तारानाथ के अनुसार–चाणक्य ने 16 राज्यों के राजाओं और सामन्तों का नाश किया एवं बिन्दुसार को पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्रपर्यंत भू-भाग का अधीश बनाया गया.
3. यूनानियों से मैत्री सम्बन्ध बिन्दुसार ने अनवरत बनाये रखे.
4. सीरिया का राजा अन्तिओक प्रथम ने डायमेकस को, मिस्र के शासक टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस ने

डायोनिक्स को बिन्दुसार के दरबार में राजदूत के रूप में भेजा.

महत्वपूर्ण कार्य

1. साम्राज्य सुरक्षा के लिए विद्रोहों का दमन एवं विदेशी शासकों के साथ मित्रता.
2. बिन्दुसार ने अपने पास योग्य मंत्रियों को रखा था. चाणक्य, सुबंधु, खल्लाटक, राधागुप्त बिन्दुसार के मंत्री थे. 500 सदस्यों वाली एक सभा भी उसकी सहायता करती थी.
3. बिन्दुसार आजीवको से प्रभावित था और संरक्षण देता था.
4. उसने चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य को अखण्डित बनाये रखा.

मृत्यु 272 या 270 ई. पू. में

(15) पुष्यमित्र शुंग (187-151 ई. पू.)

वास्तविक नाम पुष्यमित्र शुंग

सम्बन्धित वंश शुंग

शासक शुंगवंश का संस्थापक

पूर्व स्थिति

(i) मौर्य शासक बृहदर्थ का सेनापति था.

(ii) सेनापति के रूप में यवनों से संघर्ष किया. (प्रो. वी. पी. सिन्हा के अनुसार)

उल्लेखनीय तथ्य

1. शुंगवंश की स्थापना.
2. विदर्भ के साथ संघर्ष एवं माधवसेन और यज्ञसेन के राज्यों पर अधिकार.
3. यवनों के साथ पुष्यमित्र शुंग का युद्ध एवं विजय प्राप्ति.
4. पंजाब में स्यालकोट एवं जालन्धर पर विजय प्राप्त की.
5. अवन्ति (उज्जयिनी) पर अधिकार किया. (मेरुतुंग के विवरण के अनुसार)

अन्य सम्बन्धित विशिष्ट तथ्य

1. 36 वर्षों के शासन की अवधि में पुष्यमित्र ने मौर्य साम्राज्य को संगठित कर शुंग साम्राज्य बना दिया.
2. विदेशी आततायियों पर अंकुश लगाया.
3. अपने साम्राज्य की सीमा दक्षिण में नर्मदा नदी तक स्थापित की.
4. बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, मगध, कौशल शाकल, पंजाब के कुछ भाग मालवा एवं बरार पुष्यमित्र के साम्राज्य के अन्तर्गत आते थे.
5. शुंग वंश की पहली राजधानी पाटलिपुत्र थी एवं दूसरी राजधानी 'विदिशा' बनाई गई.
6. कुछ विद्वानों के मतानुसार 'विदिशा' एक नगरी थी, जिसका प्रान्तीय गवर्नर अग्निमित्र था.

प्रशासनिक व्यवस्था

1. वायुपुराण के अनुसार पुष्यमित्र ने अपना साम्राज्य आठ पुत्रों में विभक्त कर दिया, जो विभिन्न भागों पर सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे.
2. पुष्यमित्र शुंग पाटलिपुत्र से ही समस्त साम्राज्य का नियन्त्रण रखता था.
3. युवराज की एक परिषद् होती थी, जो आवश्यक विषयों में सलाह देती थी.
4. (i) कालीदास के अनुसार विदिशा में एक युवराज परिषद् विद्यमान थी.

   (ii) पतञ्जलि के अनुसार विदिशा में पुष्यमित्र की राज्यपरिषद् विद्यमान थी.
5. राजकुल के सदस्यों को प्रान्तीय प्रशासक के पद प्रदान किए गए थे.
6. विदिशा में अग्निमित्र का गवर्नर का प्रभार दिया गया था.
7. के. पी. जायसवाल के अनुसार शुंग-वंशीय राज्य संघ राज्य नहीं था.

धार्मिक व्यवस्था

1. ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान इसी काल में हुआ.
2. पुष्यमित्र के काल में बौद्ध धर्म की अपेक्षा वैदिक धर्म का अधिक प्रभुत्व स्थापित हुआ.
3. पूजा, यज्ञ, बलि की प्रथा इस काल में पुनः अस्तित्व में आ गई थी.
4. पुष्यमित्र ने विदर्भ युद्ध एवं यवनों पर विजय प्राप्त करने के अवसर पर अश्वमेध यज्ञ किए जाने का उल्लेख मिलता है.
5. धनदेव के अयोध्या अभिलेख से पुष्यमित्र द्वारा अश्वमेध यज्ञ किए जाने का उल्लेख मिलता है.

6. पहला अश्वमेध यज्ञ मगध पर शासन का आरम्भ करने के काल में तथा दूसरा अश्वमेध यज्ञ यवनों पर विजय प्राप्त करने के दौरान किया.
7. माना जाता है कि पुष्यमित्र शुंग के किसी एक यज्ञ में पुरोहित का कार्य पतञ्जलि ने किया था.
8. बौद्ध धर्म के प्रति विरक्ति एवं ब्राह्मण धर्म के प्रति अनुरक्ति के कारण पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण धर्म का उद्धारक एवं बौद्ध धर्म के उत्पीड़क के रूप में जाना जाता था.

(16) रुद्रदामन (130-150 ई. पू.)

वास्तविक नाम रुद्रदामन

शासित वंश शक वंश (कार्दमक क्षत्रप से विख्यात)

शासन काल 130-150 ई. पू.

सम्बन्धित अभिलेख जूनागढ़ अभिलेख

उपाधि महाक्षत्रप

शासित क्षेत्र
1. अवन्ति (पूर्वी और पश्चिमी मालवा)
2. अनुपनिर्वत (माहिष्मती, मंधाता या माहेश्वर)
3. अनार्त (द्वारिका का निकटवर्ती क्षेत्र या उत्तरी काठियावाड़)
4. सौराष्ट्र (दक्षिणी काठियावाड़)
5. खभ्र (साबरमती के पास का क्षेत्र)
6. मारू (मारवाड़)
7. कच्च (कच्छ)
8. सिन्धु-सौवीर (सिन्धु घाटी)
9. कुकुर (सिन्ध और पारिपात्र या उत्तरी काठियावाड़ का आनर्त के निकट का प्रदेश)
10. अपरान्त (उत्तरी कोंकण)
11. निषाद (सरस्वती और पश्चिमी विन्ध्य का मध्यवर्ती क्षेत्र)

विजय
1. दक्षिणापथेश्वर या सातवाहन राजा को दो बार हराने का उल्लेख (जूनागढ़ अभिलेख)
2. वशिष्ठ पुत्र पुलुमावी को पराजित किया (प्रसिद्ध इतिहासकारों के अनुसार)
3. कुषाणों पर विजय प्राप्त कर सिन्धु सौवीर क्षेत्र जीता.

विशेषताएँ
1. अन्तिम महान् शासक
2. प्रजा को प्रसन्न रखने वाला शासक
3. जूनागढ़ अभिलेख में भ्रष्टराज प्रति स्थापक कहा गया है.
4. व्याकरण, संगीत, तर्कशास्त्र, गणित का ज्ञाता.

प्रशासनिक व्यवस्था
1. राज्य विभिन्न प्रान्तों में विभक्त था. जहाँ पर अमात्य गवर्नर के रूप में शासन करते थे.
2. राजा को प्रशासन में सहयोग के लिए मंत्री नियुक्त थे, जिनमें दो प्रकार थे–

(i) मति सचिव और (ii) कर्मसचिव.

अन्य उल्लेखनीय बातें संस्कृति का सर्वाधिक विकास किया. सर्वप्रथम जूनागढ़ अभिलेख में शुद्ध संस्कृति भाषा का प्रयोग किया.

रुद्रदामन के बाद शकों की शक्ति क्षीण हो गई. शकों का अन्तिम राजा रुद्रसिंह द्वितीय था, जिसको पराजित कर चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पश्चिमी क्षत्रपों के राज्यों को गुप्त साम्राज्य में विलीन कर लिया.

(17) गोण्डोफर्नीज : विशिष्ट जानकारी

नाम गोण्डोफर्नीज

शासक पह्लव वंश का सबसे प्रभावशाली शासक

अभिलेख तख्त-ए-बाही

प्रारम्भिक क्षेत्र पूर्वी ईरान में पार्थियन साम्राज्य का गवर्नर.

राज्य का विस्तार सिस्तान, सिन्ध, दक्षिण और पश्चिमी पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, दक्षिणी अफगानिस्तान उसके राज्य में सम्मिलित प्रान्त थे.

सम्भावित शासन तिथि	19-45 ई. पू. के मध्य
अन्य तथ्य	1. तक्षशिला के फ्रेओटीज से गोण्डोफर्नीज की पहचान की जाती है. 2. 43-44 ई. पू. में गोण्डोफर्नीज तक्षशिला गया, उस दौरान फ्रेओटीज वहाँ का शासक था. (अपोलोनियस अरयाना के अनुसार)
प्रशासनिक सहायक	गवर्नर या अधीनस्थ राजा अव्दगसेस अस्पवर्मन, सस सपेदन तथा सतवस्त्र उसके सहायक थे.
धर्म गुरू	प्रसिद्ध ईसाई धर्मप्रचारक सन्त थॉमस
धर्म	ईसाई धर्म थॉमस के सानिध्य में स्वीकार किया.
अन्य तथ्य	गोण्डोफर्नीज के वाद अब्दगसिस, पकोरिस और नवेरिस ने पह्लवों की सत्ता को सँभाला, लेकिन कुषाणों के वढ़ते प्रभाव से उन्हें असफलता हासिल हुई. कुषाण विजेता कुजुलकदफिसिस पार्थियनों से मित्रता कर गोण्डोफर्नीज की मृत्यु के बाद गांधार प्रदेश पह्लवों को खदेड़ कर स्वयं शासक वन गया. पह्लव अन्य आक्रमणकारियों यवन, शक, कुषाण की तरह अपना प्रभाव नहीं छोड़ सके.

(18) कनिष्क I

वास्तविक नाम	कनिष्क I
शासन	कनिष्क ग्रुप का प्रथम शासक जो कदफिसस द्वितीय या विम कदफिसस के बाद कुषाणों का शासक बना.
पूर्व स्थिति	विम कदफिसस के पूर्वी भारतीय प्रान्त का प्रशासक.
राज्याश्रयी धर्म	बौद्ध धर्म
उल्लेखनीय तथ्य	कनिष्क I साम्राज्य निर्भरता, महान् योद्धा एवं कला, धर्म तथा संस्कृति का संरक्षक था.
तिथि के सम्बन्ध में विभिन्न मत	1. विभिन्न विद्वानों के अनुसार प्रथम से तृतीय शताब्दी के मध्य का काल 2. अनेक विद्वानों के अनुसार 78 ई. पू. शक सम्वत् को कनिष्क ने प्रारम्भ किया. 3. फ्लीट नामक इतिहासकार के अनुसार कनिष्क ने 58 ई. पू. विक्रम सम्वत् चलाया. (कनिष्क डॉऊसन, फ्रैंक, कैनेडी इस मत के समर्थक हैं). 4. प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री एलन के अनुसार 78–81 एवं 98–117 ई. पू. के दौरान ही कनिष्क का समय था. 5. मार्शल, स्टेन, कोनोव, स्मिथ आदि के अनुसार कनिष्क प्रथम 125 ई. या 144 ई. में गद्दी पर बैठा और ईसा की दूसरी शताब्दी उत्तरार्द्ध तक शासन किया. 6. डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार कनिष्क 248 ई. में गद्दी पर बैठा. मजूमदार के अनुसार कनिष्क ने त्रैकुटक कलचुरि-चेदि सम्वत् चलाया था. 7. डॉ. आर. जी. भण्डारकर के अनुसार 278 ई. कनिष्क की शासनावधि है. 8. आर. डी. वैनर्जी, रैप्सन, थॉमस जैसे विद्वान् कनिष्क की तिथि 78 ई. मानते हैं.
सम्बन्धित अभिलेख	1. पेशावर (राज्यकाल का प्रथम वर्ष) 2. कोशम (राज्यकाल का द्वितीय वर्ष) 3. सारनाथ (राज्यकाल का तृतीय वर्ष) 4. मथुरा (चतुर्थ वर्ष) 5. सूईविहार एवं जेद्दा (ग्यारहवाँ वर्ष) 6. मनिक्याला (18वाँ वर्ष) 7. मथुरा (23वाँ वर्ष) 8. साँची अभिलेख (22वाँ वर्ष)
उपाधियाँ	देवपुत्र, कैसर
मृत्यु	जनश्रुतियों के अनुसार 101 या 102 ई. में.

प्राचीन भारतीय इतिहास के प्रमुख युद्ध

युद्ध	पक्ष-विपक्ष	परिणाम	वर्ष
हाइडेस्पीज (झेलम का युद्ध)	सिकन्दर एवं पुरु	सिकन्दर की विजय	326 ई. पू.
सिन्धु का युद्ध	सेल्यूकस एवं चन्द्रगुप्त	चन्द्रगुप्त की विजय	305 ई. पू.
कलिंग युद्ध	अशोक एवं कलिंग राज्य	अशोक विजयी	261 ई. पू.
सिंधु नदी का युद्ध	वसुमित्र शुंग एवं डिमेट्रियस	वसुमित्र विजयी	175 ई. पू.
शक युद्ध	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एवं शक रुद्रसिंह	चन्द्रगुप्त विजयी	380 ई.
गंगा घाटी का युद्ध	स्कन्दगुप्त एवं हूण	स्कन्दगुप्त विजयी	457-58 ई.
मध्य भारत का हूण युद्ध	यशोधर्मा एवं मिहिरकल हूण	यशोधर्मा विजयी	532 ई.
नर्मदा का युद्ध	हर्षवर्धन एवं पुलकेशियन II चालुक्य	पुलकेशियन II विजयी	620 ई.
वातापी का युद्ध	पल्लव नरसिंह वर्मन I एवं पुलकेशियन II	नरसिंहवर्मन विजयी	642 ई.
रावर का युद्ध	मुहम्मद-बिन-कासिम एवं राजा दाहिर	मुहम्मद-बिन-कासिम विजयी	712 ई.
प्रतिहार-अरब युद्ध	नागभट्ट I प्रतिहार एवं अरब	नागभट्ट विजयी	738 ई.
तोडैमंडलम का युद्ध	आदित्य चोल एवं अपराजित पल्लव	आदित्य विजयी	897 ई.
विरजापुरी का युद्ध	राष्ट्रकूट इन्द्र III एवं चालुक्य विजयादित्य	इन्द्र III विजयी	919 ई.
पेशावर का युद्ध	महमूद गजनवी एवं जयपाल	महमूद विजयी	1001 ई.
वैहिंद का युद्ध	महमूद गजनवी एवं आनन्दपाल	महमूद विजयी	1009 ई.
रामगंगा का युद्ध	महमूद गजनवी एवं त्रिलोचनपाल	महमूद विजयी	1019 ई.
धान्यकटक का युद्ध	राजाधिराज चोल एवं सोमेश्वर चालुक्य	राजाधिराज विजयी	1045 ई.
कोप्पम का युद्ध	राजाधिराज चोल एवं सोमेश्वर	सोमेश्वर विजयी	1052 ई.
तुंगभद्रा का युद्ध	वीर राजेन्द्र चोल एवं सोमेश्वर	वीर राजेन्द्र विजयी	1066 ई.
अन्हिलवाड़ा का युद्ध	मुहम्मद गौरी एवं भीम चालुक्य	भीम विजयी	1178 ई.
तराइन का प्रथम युद्ध	मुहम्मद गौरी एवं पृथ्वीराज चौहान	पृथ्वीराज विजयी	1191 ई.
तराइन का द्वितीय युद्ध	मुहम्मद गौरी व पृथ्वीराज चौहान	मुहम्मद विजयी	1192 ई.
चन्दावर का युद्ध	मुहम्मद गौरी व जयचन्द	मुहम्मद गौरी विजयी	1194 ई.

बौद्धकालीन प्रमुख जनपद एवं राजधानी

जनपद	राजधानी	वर्तमान क्षेत्र
1. अंग	चम्पा	भागलपुर, मुंगेर (बिहार)
2. मगध	गिरिव्रज/राजगीर	पटना तथा गया (बिहार)
3. काशी	वाराणसी	वाराणसी के आसपास (उ.प्र.)
4. कौशल	श्रावस्ती	पूर्वी उत्तर प्रदेश
5. वज्जि	वैशाली	मुजफ्फरपुर (बिहार)
6. मल्ल	पावा	देवरिया, गोरखपुर (उ. प्र.)
7. चेदि	शुक्तिमती	बुन्देलखण्ड (उ. प्र.)
8. वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद (उ. प्र.)
9. कुरू	इन्द्रप्रस्थ	मेरठ तथा हरियाणा के क्षेत्र
10. पांचाल	अहिच्छत्र/ कांम्पिल्य	आधुनिक पश्चिमी उत्तर प्रदेश
11. शूरसेन	मथुरा	मथुरा (उ. प्र.)
12. गंधार	तक्षशिला	पेशावर तथा कश्मीर
13. कम्बोज	राजपुरा	उ. प्र. सीमा प्रान्त
14. अश्मक	पाटेली	गोदावरी
15. अवन्ति	उज्जैन	मालवा और मध्य प्रदेश
16. मत्स्य	विराटनगर	जयपुर के आसपास के राज्य

प्रमुख राजवंश, संस्थापक तथा राजधानी

राजवंश	संस्थापक	राजधानी
पांड्य वंश	राजनेडुबोलियन	मदुराई
चोल	विजयालय	तन्जौर
राष्ट्रकूट	दन्तिदुर्ग	मान्यखेट
चालुक्य (कल्याणी)	विजयादित्य	मान्यखेट, कल्याण
चालुक्य (वेंगी)	कुब्ज विष्णुवर्धन	वेंगी
चालुक्य (बादामी)	जयसिंह प्रथम	वातापी
पल्लव	सिंहवर्मन चतुर्थ	काञ्चीपुरम्
गुर्जर-प्रतिहार	नागभट्ट-I	कन्नौज
गहड़वाल	चन्द्रदेव	पहले वाराणसी फिर कन्नौज
परमार	कृष्णराज	धारानगरी

सेन	सामंतसेन	विजयपुर एवं विक्रमपुर
पुष्यभूति	नरवर्द्धन	थाणेश्वर एवं कन्नौज
हूण	तोरमाण	शाकल
गुप्तवंश	श्रीगुप्त	पाटलिपुत्र
कुषाण	कुजल कड्फिसस	पुरुषपुर
शालंकायन् वंश	नन्दीवर्मन	वेंगी
इक्ष्वाकुवंश	वशिष्ठपुत्र श्री	नागार्जुन कोण्ड
सातवाहन	शिमुक	प्रतिष्टान
कण्ववंश	वसुदेव	पाटलिपुत्र
शुंग	पुष्यमित्र शुंग	पाटलिपुत्र
मौर्य	चन्द्रगुप्त मौर्य	पाटलिपुत्र
नन्द	महापद्मनन्द	पाटलिपुत्र
शिशुनाग	शिशुनाग	वैशाली
हर्यक	बिम्बसार	गिरिवज्र, राजगृह एवं पाटलिपुत्र

प्रमुख भारतीय संवत्

संवत्	प्रवर्तक	आरम्भ होने का वर्ष
कलिंग संवत्	आर्यभट्ट द्वारा प्रयुक्त (500 ई.)	3102 ई. पू.
सप्तर्षि संवत्	वेदांग-ज्योतिष में उल्लिखित	3076 ई. पू.
बुद्ध संवत्	श्रीलंका परम्परानुसार बुद्ध द्वारा प्रारम्भ	544 ई. पू.
महावीर संवत्	महावीर स्वामी	527 ई. पू.
विक्रम संवत्	विक्रमादित्य (उज्जयिनी सम्राट)	58 ई. पू.
शक संवत्	कनिष्क (कुषाण सम्राट्)	78 ई.
कलचुरि संवत्	प्रवर्तक आभीर राजा माने जाते हैं	248 ई. पू.
गुप्त संवत्	चन्द्रगुप्त प्रथम (गुप्त सम्राट्)	319 या 320 ई. पू.
हर्ष संवत्	हर्षवर्धन (कन्नौज सम्राट्)	606 ई. पू.
कौलम संवत्	मालाबार में प्रचलित	825 ई. पू.
नेवाड़ी संवत्	नेपाल शासक द्वारा आरम्भ	879 ई. पू.
चालुक्य विक्रम संवत्	विक्रमादित्य चतुर्थ कल्याणी के चालुक्य (सम्राट्)	1076 ई. पू.
लक्ष्मण संवत्	लक्ष्मण सेन (बंगाल सम्राट्)	1120 ई. पू.

वैदिक काल की विशिष्ट जानकारी

विशिष्ट जानकारी	ऋग्वैदिककाल (1500-1000 ई. पू.)	उत्तर-वैदिककाल (1000-600 ई. पू.)
1. जानकारी स्रोत	ऋग्वेद	सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक एवं उपनिषद्
2. भौगोलिक ज्ञान	सप्त सैन्धव (पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, पंजाब, प. उत्तर प्रदेश)	इस काल में आर्यों का विस्तार गंगा से पूर्वी प्रदेशों में होने लगा था. मोटेतौर पर विन्ध्यप्रदेश को दक्षिण सीमा माना जा सकता है.
3. राजनीतिक अवस्था	प्रशासन-तन्त्र कबीलों के प्रधानों के हाथों चलता था. इस काल में सभा, समिति, विदथ एवं जन नामक वैचारिक सैनिक, धार्मिक कार्यों को देखने वाले संगठन होते थे.	राजतन्त्र ही प्रमुख शासन-तन्त्र था. इस काल में ऋग्वैदिककाल की सभा, समिति निष्प्रभावी हो गयी थी. उनकी जगह राज-कीय प्रभुत्व आ गया. सभा-समितियों में स्त्रियों का प्रवेश निषेध था.
4. सामाजिक अवस्था	सामाजिक संगठन का आधार गोत्र या जन्म-मूलक सम्बन्ध था. व्यक्ति की पहचान उसके गोत्र या कुल से होती थी.	समाज स्पष्टतः वर्ण व्यवस्था पर आधारित था. समाज का वर्गीकरण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन चार वर्णों में हो गया था.
5. आर्थिक व्यवस्था	मुख्य रूप से पशु-चारक, कृषि का उत्तम ज्ञान, काँसे का प्रयोग एवं सोने-चाँदी के प्रयोग की जानकारी थी.	लोहे का आविष्कार, मुख्य जीविका का साधन कृषि था. विभिन्न प्रकार के शिल्पों की जानकारी, सोने-चाँदी के विभिन्न प्रकार के आभूषण बनाए जाते थे. पशुपालन होता था.
6. धार्मिक अवस्था	इन्द्र, अग्नि, वरुण प्रमुख देवताओं की उपासना की जाती थी. पशुबलि की निन्दा की गई. आनुष्ठानिक और याज्ञिक मन्त्र नहीं पढ़े जाते थे.	प्रजापति प्रमुख देवता होता था. आनुष्ठानिक और याज्ञिक मंत्र पढ़े जाते थे.

जैन धर्म के प्रमुख तीर्थंकर एवं उनके नाम

1. ऋषभदेव
2. अजितनाथ
3. साम्वनाथ
4. अभिनन्दन
5. सुमितनाथ
6. पद्मप्रभु
7. सुपार्श्वनाथ
8. चन्द्रप्रभु
9. सुविधिनाथ
10. शीतलनाथ
11. श्रेयांसनाथ
12. वसुपूज्य
13. विमलनाथ
14. अनन्तनाथ
15. धर्मनाथ
16. शान्तिनाथ
17. कुन्थुनाथ
18. अरिनाथ
19. मल्लिनाथ
20. मुनिसुव्रतनाथ
21. नेमिनाथ
22. अरिष्टनेमि
23. पार्श्वनाथ
24. महावीर स्वामी

बौद्ध संगीतियाँ

1. **प्रथम**

स्थान	राजगृह (विहार)
समय	483 ई. पू.
शासनकाल	अजातशत्रु

2. **द्वितीय**

स्थान	वैशाली (विहार)
समय	383 ई. पू.
शासनकाल	कालाशोक

3. **तृतीय**

स्थान	पाटलिपुत्र
समय	255 ई. पू.
शासनकाल	अशोक

4. **चतुर्थ**

स्थान	कश्मीर के कुण्डलवन
समय	लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी
शासनकाल	कनिष्क

बौद्ध साहित्य

1. **सुत्तपिटक** – इसमें बुद्ध के धार्मिक विचार और वचनों का संग्रह है.
2. **अभिधम्मपिटक**– इसमें बौद्ध दर्शन का विवेचन किया गया है.
3. **विनयपिटक** – इसमें बौद्ध संघ के नियमों का उल्लेख है. इन त्रिपटकों से तत्कालीन सामाजिक दशा की जानकारी मिलती है.
4. **जातक** – इसमें बुद्ध के पूर्वजन्मों की काल्पनिक कथाएँ हैं.

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न–

1. बुद्ध
2. धम्म
3. संघ

चार आर्य सत्य–

1. दुःख
2. दुःख-समुदाय
3. दुःख निरोध
4. दुःख निरोध–गामिनी प्रतिपदा

बौद्ध ग्रन्थों में वर्णित गणराज्य

1. कपिलवस्तु के शाक्य
2. अल्लकप्प के बुली
3. केसपुत्त के कलाम
4. सुसुमगिरि के भग्ग
5. रामग्राम के कोलिय
6. पावा के मल्ल
7. कुशीनारा के मल्ल
8. पिप्पलीवन के मोरिय
9. मिथिला के विदेह
10. वैशाली के लिच्छवि

संगमकालीन समाज के वर्ग

1. अरसर (शासक)
2. अडनर (ब्राह्मण)
3. वेनिगर (वणिक)
4. वेल्ला (कृषक)

प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल एवं उनके प्राप्त अन्य नाम

स्थल	अन्य नाम
प्राग्ज्योतिषपुर	कामाख्या (फालिका पुराण)
साकल (स्यालकोट)	सागल (बौद्ध ग्रन्थ) संगाल (यूनानी) योनकान नगर
सारनाथ	ऋषिपत्तन
उज्जयिनी	हिरण्यवती, भागवती, पद्मावती, विशाला
मथुरा	मेथोरा (मेगस्थनीज) मधुपुर
मदुरा	दक्षिणी मथुरा, कदम्बन
सांची	चैत्यगिरी चेतिय
कन्नौज	कान्यकुब्ज महोदय, कुशास्थल
गंजाम	कांगोद
नागार्जुनकोंडे	श्रीपर्वत, विजयपुरी
पाटलिपुत्र	कुसुमध्वज, पुष्पपुर, पालिब्रोथा
प्रतिष्ठान	प्लीथान, पैठन, पीथान
वैराठ (जयपुर के पास)	विराट (महाभारतकाल में)

भृगुकच्छ	भुरुकच्छ, भृगुपुर, भृगुतीर्थ, भड़ीच
मामल्लपुर	महाबलीपुरम्
बादामी	वातापी
वैशाली	सांकाश्य
सोपारा	शूर्पारक
होयसल	हेलविड
एरकिण	एरण
चम्पा	मालिनी
थानेश्वर	स्थानेश्वर, स्थाणीश्वर
मन्दसौर	दसपुर
नासिक	गोवर्धन
पेशावर	पुरुषपुर
बेसनगर	विदिशा
नेवासा	श्रीनिवास
धौली	धवलगिरी, तोसालि

संगम की विशिष्ट जानकारी

संगम	आयोजित स्थल	अध्यक्ष	सदस्य संख्या
प्रथम	मदुरा	ऋषि अगस्त्य	549
द्वितीय	कपाटपुरुम् (अलैवे)	तोलकाप्पियर (संस्थापक अध्यक्ष अगस्त्य)	49
तृतीय	उत्तरी मदुरा	नक्कीरर	49

संगम साहित्य एवं साहित्यकार

कृतियाँ	रचनाकार
1. शिलप्पादिकरम् (महाकाव्य)	इलागो आदिगल
2. तोलकाप्पियम् (तमिल व्याकरणशास्त्र)	तोलकाप्पियर
3. जीविका चिन्तामणि (महाकाव्य)	तिरुत्तक्कदेवर
4. कुरल (अष्टादश लघु उपदेश गीत)	तिरुवल्लुवर
5. मणिमेखलै (तमिल काव्य का ओडिसी)	सीत्तले सतनार

भारतीय नृत्य एवं संगीत से सम्बन्धित ग्रन्थ एवं लेखक

कृति	रचयिता	काल
नाट्यशास्त्र	भरतमुनि	प्राचीनकाल
नृत्य रत्नावली	वाकानाचार्य	1254 ई.
संगीत रत्नाकर	शारंगदेव	13वीं शताब्दी
संगीत मल्लिका	मोहम्मदशाह	13वीं शताब्दी
गीत गोविन्द	जयदेव	13वीं शताब्दी
संगीतोपनिषद्	वाकानाचार्य	1349 A.D.
हस्तमुक्तावली	शुभंकर	
संगीतराज	महाराणाकुंभ	14वीं शताब्दी
नगमाते असाफी	मुहम्मदरिजा	1813 A.D.
संगीत दामोदर	रघुनाथ	17वीं शताब्दी
आदिभारतम्	तुलजाराजा	1729 A.D.
भरतारनावा	तुलजाराजा	1729 A.D.
नाट्यवेदगामा	तुलजाराजा	1729 A.D.
गोरातशैविजय	विद्यापति	1729 A.D.
संगीत मकरन्द	वेद (मराठा)	17वीं शताब्दी
संगीतसार	राधागोविन्द	18वीं शताब्दी

मत्स्यपुराण के अनुसार भारतवर्ष के भेद

1. इन्द्रद्वीप
2. कसेरू
3. ताम्रपर्णी
4. गभस्तिमान
5. नागद्वीप
6. सौम्य
7. गन्धर्व
8. वारुण
9. सागर से घिरा भारत

सिन्धु सभ्यता की विशिष्ट जानकारी

प्रमुख स्थल	खुदाईकाल	पुरातत्वविद्	नदियाँ	जिला+राज्य क्षेत्र
हड़प्पा	1921	दयाराम साहनी	रावी	मुलतान (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ो	1922	राखालदास बनर्जी	सिन्धु (पूर्वी किनारे पर)	लरकाना (सिंध)
कालीबंगा	1953, 60	बी. लाल	सरस्वती	गंगानगर[1] (राज.)
चन्हुदाड़ो	1931	एम. जी. मजूमदार		सिंध (पाकिस्तान)
लोथल	1957	रंगनाथ राव	भोगवा	गुजरात
सुरकोटड़ा	1959	जगतपति		कच्छ गुजरात
रंगपुर	1954	रंगनाथ राव	भादर	अहमदाबाद
बणवाली	1973-74	आर. एस. विष्ट	घग्घर, सरस्वती	हिसार (हरियाणा)
सुत्कगेण्डोर	1962	जॉर्जडेल्स	दाश्त (पूर्वी किनारे पर)	बलूचिस्तान

1 इस क्षेत्र को हनुमानगढ़ में भी माना जाता है.

सिन्धु सभ्यता में विदेशी व्यापार

आयातित वस्तुएँ	स्थल
1. सोना	फारस (ईरान), अफगानिस्तान, कर्नाटक
2. चाँदी	अफगानिस्तान, फारस (ईरान)
3. ताँबा	बलूचिस्तान (पाकिस्तान), खेतड़ी (राजस्थान)
4. सीसा	दक्षिणी भारत, अफगानिस्तान, ईरान, राजस्थान
5. टिन	अफगानिस्तान, मध्य एशिया
6. गोमेद	सौराष्ट्र
7. फीरोजा	ईरान
8. लाजवर्ण	मेसोपोटामिया
9. जुवमणि	महाराष्ट्र

प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्त एवं उनके प्रतिपादक

प्रतिपादक	दार्शनिक सिद्धान्त
पतञ्जलि	योग दर्शन
गौतम	न्याय दर्शन
कपिल	सांख्य दर्शन
चार्वाक	लोकायत दर्शन (चार्वाक दर्शन)
बादरायण	उत्तर मीमांसा दर्शन
जैमिनी	पूर्व मीमांसा दर्शन
कणाद	वैशेषिक दर्शन

प्राचीनकालीन वैवाहिक प्रकार

1. **ब्रह्म** — माता-पिता द्वारा वर-कन्या का विवाह सम्पादित करना.
2. **दैव** — पुरोहित द्वारा विवाह सम्पादन करना.
3. **आर्ष** — कन्या के पिता के द्वारा गाय व बैल वर के पिता से लेकर कन्या का विवाह वर से करना.
4. **प्रजापत्य** — वर व कन्या द्वारा आपसी प्रतिबद्धता के उपरान्त विवाह करना.
5. **गान्धर्व** — प्रेम विवाह
6. **राक्षस** — कन्या का अपहरण कर विवाह करना.
7. **असुर** — धन के बदले में कन्या का विवाह.
8. **पिशाच** — सोती हुई या बेहोश कन्या के साथ बल से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना.

हर्षकालीन साम्राज्य के पदाधिकारी

1. **राजस्थानीय** — प्रान्त का शासक
2. **विषयपति** — जिले का अधिकारी
3. **महत्तर** — गाँव का अधिकारी
4. **ग्रामिक** — गाँव का अधिकारी
5. **भ्रष्टकुलाधिकरण** — महत्वपूर्ण ग्राम अधिकारी
6. **अक्षपटलिक** — भूमि व्यवस्था का सर्वोच्च अधिकारी
7. **बृद्धाश्ववार** — अश्व सेनाध्यक्ष
8. **कटुक** — हाथियों की सेना का अध्यक्ष
9. **महासन्धिविग्रहाधिकृत** — सन्धि करने वाला अधिकारी
10. **महाबलाधिकृत** — सेना का सर्वोच्च सेनापति
11. **दूत राजस्थानीय** — विदेश मन्त्री
12. **भोगिक (भोगपति)** — भूमिकर संग्राहक
13. **मीमांसक** — न्यायाधीश
14. **महाप्रतिहार** — राजप्रासाद का रक्षक
15. **उपरिक** — प्रान्तीय शासक

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित मौर्यकालीन मंत्री

1. **मन्त्री**
2. **पुरोहित**
3. **समाहर्ता**
4. **सन्निधाता**
5. **सेनापति**
6. **युवराज**
7. **प्रदेदता** — फौजदारी न्यायाधीश
8. **नायक** — सेना का प्रमुख संचालक
9. **व्यावहारिक** — दीवानी न्यायाधीश
10. **कार्मान्तिक** — कारखानों का संचालक
11. **दण्डपाल** — पुलिस मन्त्री
12. **मन्त्रिपरिषदाध्यक्ष** — सभा का प्रमुख
13. **अन्तपाल** — सीमा मन्त्री
14. **दुर्गपाल** — गृहरक्षामन्त्री
15. **नागरिक** — नगराधिकारी
16. **आटविक** — जंगलविभाग का अध्यक्ष
17. **आन्तर्वंशिक** — अंगरक्षकों का मुखिया
18. **दौवारिक** — राजद्वार का प्रधान रक्षक
19. **प्रशास्ता** — राज्यादेश सम्बन्धित मंत्री

प्रमुख नदियाँ एवं उनके प्राचीन नाम

नदी	प्राचीन नाम
सिन्धु	इन्दुस
गोमती	गोमल
सरस्वती	सरसुती
वितस्ता	झेलम
व्यास	विपाशा
सतलज	शतुद्रि
स्वात	स्वस्तु
घग्घर	दृषद्वती
कुर्रम	क्रमू
चिनाब	अस्किनी
रावी	परूष्णी

सोलह महाजनपद एवं उनकी राजधानी

क्र.सं.	महाजनपद	राजधानी
1.	अंग	चम्पा
2.	मगध	गिरिव्रज
3.	काशी	वाराणसी
4.	कोशल	श्रावस्ती
5.	वज्जि	वैशाली
6.	मल्ल	कुशीनगर
7.	चेदि	शुक्तिमति/सोत्थिमती
8.	वत्स	कौशाम्बी
9.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ
10.	पांचाल	अहिच्छत्र
11.	मत्स्य	वैराठ (विराट नगर)
12.	सूरसेन	मथुरा
13.	अश्मक	प्रतिष्ठान
14.	अवन्ति	उज्जयिनी
15.	गान्धार	तक्षशिला
16.	कम्बोज	राजपुर

प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय एवं संस्थापक

धार्मिक सम्प्रदाय	संस्थापक
राधावल्लभ सम्प्रदाय	हित हरिवंश
आजीवक सम्प्रदाय	मक्खलिपुत्त घोषाल
यदृच्छावाद (भौतिकवादी)	केशकम्बलिन
द्वैतवाद ब्रह्म सम्प्रदाय	माधवाचार्य
विशिष्टाद्वैतश्री सम्प्रदाय	रामानुजाचार्य
रुद्र सम्प्रदाय	बल्लभाचार्य
घोर अक्रियावादी सम्प्रदाय	पूरण कश्यप
भौतिकवादी	पकुध कच्चायन
अनिश्चयवादी सम्प्रदाय	संजय वेट्ठलिपुत्र

प्राचीनकालीन षोडश संस्कार

1. गर्भाधान	9. कर्णविध
2. पुंसवन	10. विद्यारम्भ
3. सीमान्तोन्नयन	11. उपनयन
4. जातकर्म	12. वेदारम्भ
5. नामकरण	13. केशान्त
6. निष्क्रमण	14. समावर्त्तन
7. अन्नप्राशन	15. विवाह
8. चूड़ाकरण	16. अन्त्येष्टि

प्रमुख धर्म प्रवर्त्तकों के स्थापित मत

प्रवर्त्तक	मत
रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद
शंकराचार्य	अद्वैतवाद
विज्ञानभिक्षु	अविभागाद्वैत
माधवाचार्य	द्वैतवाद
बल्लभाचार्य	शुद्धाद्वैतवाद
निम्बकाचार्य	द्वैताद्वैतवाद
भास्कराचार्य	भेदाभेदमान
श्रीपति	वीर शैव विशिष्टाद्वैतवाद
श्रीकण्ठ	शैव विशिष्टाद्वैत

प्राचीनकालीन महायज्ञ

1. **ब्रह्म यज्ञ** — वेदों का अध्ययन करना, अध्यापन करना.
2. **देव यज्ञ** — अग्नि में घी एवं सामग्री के द्वारा आहुति देकर देव पूजा करना.
3. **पितृ यज्ञ** — पितरों को तर्पण करना, श्राद्धकर्म.
4. **मनुष्य यज्ञ** — मानव कल्याणार्थ अतिथि सत्कार करना.
5. **भूत यज्ञ** — पशु-पक्षियों को खिलाना एवं उनके हितार्थ कामना करना.

शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ

1. **ज्योतिर्मठ** — बद्रीनाथ (उत्तर प्रदेश)
2. **गोवर्द्धन मठ** — पुरी (उड़ीसा)
3. **शारदामठ** — द्वारिका (गुजरात)
4. **शृंगेरीमठ** — मैसूर (कर्नाटक), रामेश्वरम्

मनुस्मृति द्वारा प्रतिपादित दस यम

1. ब्रह्मचर्य	6. अहिंसा
2. क्षमा	7. मधुर स्वभाव
3. दया	8. नम्रता
4. ध्यान	9. इन्द्रिय दमन
5. सत्य	10. चोरी न करना

अशोक के बौद्ध धर्म प्रचारक एवं प्रचार क्षेत्र

प्रचारक	प्रचार क्षेत्र
1. मज्झिम	हिमालय
2. सोन व उत्तरा	सुवर्णभूमि
3. मज्झिन्तिक	कश्मीर-गांधार
4. महेन्द्र	श्रीलंका
5. महारक्षित	यवन राज्य
6. महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
7. महादेव	मैसूर (कर्नाटक)
8. धर्म रक्षित	पश्चिमी भारत

गुप्तकालीन जिले के अधिकारी

1. **नगर श्रेष्ठी** — नगर का प्रधान सेठ
2. **सार्थवाह** — व्यापारियों के निगम का मुखिया
3. **प्रथम कुलिक** — शिल्पसंघ का मुखिया
4. **प्रथम कायस्थ** — प्रधान लेखक
5. **पुस्तपाल** — राजकीय आदेशों को सुरक्षित रखने वाला अधिकारी

प्राचीनकालीन व्यावसायिक वर्ग

क्र.	प्राचीन वर्ग	कार्य/व्यवसाय	वर्तमान वर्ग
1.	कुलाल	मिट्टी के बर्तन बनाने वाला	कुम्हार, कुम्भकार
2.	रजक	धोने वाला	धोबी
3.	कर्मकार	लोहे की वस्तुएँ बनाने वाला	लुहार
4.	वर्धकिन	लकड़ी की वस्तुएँ बनाने वाला	बढ़ई
5.	नापित	सैलून कार्य करने वाला	नाई
6.	हिरण्यकार	सोने के आभूषण बनाने वाला	सुनार
7.	चर्मकार	चमड़े की वस्तुएँ बनाने वाला	रैगर
8.	वासोवाय	वस्त्र बुनने वाला	दर्जी
9.	ठड्कार	पीतल के बर्तन बनाने वाला	ठठेरा
10.	शिल्पकार	मूर्तियाँ बनाने वाला	मूर्तिकार
11.	मणिकार	रत्नों के कार्य करने वाला	जौहरी
12.	त्रपुकार	रांगे का काम करने वाला	
13.	सीसकार	शीशे का काम करने वाला	
14.	सूचीकार	सूई बनाने वाला	
15.	दन्तकार	हाथीदाँत का काम करने वाला	
16.	शैलरूपकार	पत्थरों पर नक्काशी करने वाला	शिल्पी

पाषाणकालीन स्थल, खोजकर्ता एवं सन्

स्थल	सम्बद्ध सभ्यता	सन्	खोजकर्ता
टोंस सरिता की घाटी (उ. प्र.)	उत्तर-पाषाण-काल	1860 ई.	ली मेसूरियर
पल्लावरम् (चेन्नई)	पूर्व पाषाण-कालीन	1863 ई.	ब्रूस फूट
सक्कर व रोहरी (सिन्ध)	मध्य पाषाण-कालीन	1866 ई.	इवांस महोदय
बेल्लारी (द. भारत)	उत्तर पाषाण-कालीन	1872 ई.	विलियम फ्रेजर
पिंडी घेब (पंजाब)	पूर्व पाषाण-कालीन	1930 ई.	टॉड महोदय
कश्मीर घाटी	पूर्व पाषाण-कालीन	1935ई.	डिटेरा
साबरमती घाटी (गुजरात)	पूर्व पाषाण-कालीन	1941 ई. से 1942	एच. डी. सांकलिया कृष्णास्वामी
हिरपुरा, लांघनाज व अखज (साबरमती-घाटी)	मध्य पाषाण-कालीन	1941–45 ई.	एच. डी. सांकलिया

अशोक के अभिलेख, उनके खोजकर्त्ता एवं खोज का वर्ष

अशोक के अभिलेख	खोजकर्त्ता	खोज का वर्ष
दिल्ली का अशोक स्तम्भ	पाद्रेटीफेन्थेलर	1750 ई.
नागार्जुनी एवं बाराबर गुहा अभिलेख	जे. एच. हेरिंगटन	1785 ई.
गिरिनार अभिलेख	कर्नल टॉड	1822 ई
शहबाजगढ़ी अभिलेख	कोर्ट	1836 ई.
धौली अभिलेख	किटो	1837 ई.
भाब्रू अभिलेख	कैप्टेन बर्ट	1840 ई.
जोगड़ा अभिलेख	सर वाल्टर इलियट	1850 ई.
कालसी शिलालेख	फारेस्ट	1860 ई.
विराट लघु शिलालेख एवं रामपुरवा स्तम्भ लेख	कारालय	1872 ई.
सोपारा शिलालेख	भगवान लाल इन्द्रजी	1882 ई.
मन्सेहरा शिलालेख	कैप्टेन लोह	1889 ई.
मैसूर के तीन लघु शिलालेख	राइस महोदय	1891 ई.
निगाली सागर स्तम्भ अभिलेख	फहिरे	1895 ई.
रुम्मनदेई स्तम्भ लेख	फहिरे महोदय	1896 ई.
सारनाथ स्तम्भ अभिलेख	ओतेल महोदय	1905 ई.
मास्की शिलालेख	बीडन महोदय	1915 ई.

प्राचीन भारतीय इतिहास से सम्बद्ध प्रमुख अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

अभिलेख/प्रशस्ति	तिथि	सम्बन्धित शासक	उल्लिखित विषय
रुम्मिनदेई अभिलेख	250 ई. पू.	अशोक	लुम्बिनी यात्रा
मास्की अभिलेख	248 ई. पू.	अशोक	धार्मिक सहिष्णुता
हाथीगुम्फा अभिलेख	50 ई. पू.	खारवेल	बौद्ध धर्म प्रचार
नासिक गुहालेख	150 ई. पू.	पुलुमावि	राज्य विस्तार
नासिक प्रशस्ति	130 ई. पू.	गौतमी पुत्र शातकर्णी	राज्य विस्तार
जूनागढ़ (गिरिार) अभिलेख	150 ई. पू.	शकक्षत्रप रुद्रदामन	बाँध निर्माण व मरम्मत
विदिशा का गरुड़ स्तम्भ	150 ई. पू.	हेलियोडोरस (यूनानी राजदूत)	वैष्णव धर्म प्रचार
प्रयाग स्तम्भ लेख	380 ई. पू.	समुद्रगुप्त	दिग्विजय
महरौली स्तम्भ अभिलेख	410 ई. पू.	चन्द्रगुप्त द्वितीय	चन्द्रगुप्त की विजय
भिलसड स्तम्भ अभिलेख	415 ई. पू.	कुमारगुप्त	स्वामी महासेन मन्दिर निर्माण
उदयगिरि गुहा अभिलेख	425 ई. पू.	कुमारगुप्त	पार्श्वनाथ मूर्ति की स्थापना
कहौम अभिलेख	455 ई. पू.	स्कन्दगुप्त	शक्रादित्य उपाधि
भितरी स्तम्भ अभिलेख	456 ई. पू.	स्कन्दगुप्त	पुष्यमित्रों पर विजय
जूनागढ़ अभिलेख	458 ई. पू.	स्कन्दगुप्त	हूणों पर विजय
एरण वाराह अभिलेख	498 ई. पू.	हूण तोरमाण	हूणों का आक्रमण
एरण अभिलेख	510 ई. पू.	गोपराज	सती प्रथा
मंदसौर अभिलेख	532 ई. पू.	यशोधर्मन	हूण विजय
ऐहोल अभिलेख	634 ई. पू.	पुलकेशियन द्वितीय	चालुक्य विजय
गंजाम अभिलेख	643 ई. पू.	हर्षवर्धन	हर्ष की गंजाम विजयें
ग्वालियर अभिलेख	875 ई. पू.	मिहिर भोज प्रतिहार	भोज की विजय
उत्तर मेरूर अभिलेख	929 ई. पू.	परांतक चोल	चोल स्थानीय शासन
देववाड़ा अभिलेख	1150 ई. पू.	विजय सेन	विजय सेन की विजय

प्रमुख सूत्र ग्रन्थ, उनके रचनाकार एवं कालक्रम

सूत्र ग्रन्थ	रचनाकार	कालक्रम
धर्मसूत्र	गौतम	600-400 ई. पू.
श्रौतसूत्र	शांखायन	600-400 ई. पू.
गृह्यसूत्र	आश्वलायन	600-400 ई. पू.
धर्म; श्रौत एवं गृह्यसूत्र	आपस्तम्भ	500-100 ई. पू.
धर्मसूत्र, गृह्यसूत्र	बौधायन	500-200 ई. पू.
गृह्यसूत्र	पारस्कर	300-200 ई. पू.
धर्मसूत्र	वशिष्ठ	300-100 ई. पू.
धर्मसूत्र	वैखानस	100-300 ई. पू.
धर्मसूत्र	हिरण्यकेशी	100-300 ई. पू.
श्रौतसूत्र	कात्यायन	400-600 ई. पू.

स्मृति ग्रन्थ एवं उनका काल

स्मृति	कालक्रम
मनुस्मृति	200 ई. पू. से 200 ई.
याज्ञवल्क्य स्मृति	100-300 ई. पू.
नारद स्मृति	300-400 ई. पू.
पाराशर स्मृति	300–500 ई. पू.
बृहस्पति स्मृति	300–500 ई. पू.
कात्यायन स्मृति	400–600 ई. पू.

प्राचीन भारतीय राजवंश, कालक्रम एवं संस्थापक

राजवंश	कालक्रम	संस्थापक	राज्य
हर्यक वंश	544 से 413 ई. पू.	बिम्बिसार	मगध
शिशुनाग वंश	413 से 344 ई. पू.	शिशुनाग	मगध
नन्द वंश	344 से 322 ई. पू.	महापद्मनंद	मगध
मौर्य वंश	322 से 185 ई. पू.	चन्द्रगुप्त	मगध
शुंगवंश	185 से 75 ई. पू.	पुष्यमित्र	मगध
पल्लव वंश	90 ई. पू. से 52 ई. पू.	माउज	गांधार
कण्व वंश	75 ई. पू. से 30 ई. पू.	वासुदेव	मगध
सातवाहन वंश	30 ई. पू. 225 ई. पू.	सिमुक	महाराष्ट्र
कुषाण वंश	50 ई. से 230 ई. पू.	कदफिसस प्रथम	पश्चिमोत्तर भारत

भारशिव नागवंश	140 से 350 ई. पू.	नवनाग	विदिशा
चोल (आदि)	190 से 600 ई. पू.	करिकाल	चोल मंडलम्
वाकाटक वंश	250 से 480 ई. पू.	विन्ध्य शक्ति	बरार
इक्ष्वाकु वंश	250 से 400 ई. पू.	—	आन्ध्र प्रदेश
गुप्त वंश	275 से 550 ई. पू.	श्रीगुप्त	मगध
कदम्ब वंश	300 से 450 ई. पू.	मयूर शर्मन	उ. कर्नाटक व कोंकण
गंग वंश (पश्चिमी)	300 से 500 ई. पू.	कोंगनि वर्मा	मैसूर
पल्लव (आदि)	300 से 500 ई. पू.	बप्प देव	कांची
वशिष्ठ वंश	350 से 550 ई. पू.	—	दठ कलिंग
नल वंश	350 ई. से 550 ई. पू.	—	महाकालान्तर
मान वंश	350 ई. से 600 ई. पू.	—	उड़ीसा का उत्तरी समुद्रतटीय क्षेत्र
माठ वंश	350 ई. से 600 ई. पू.	—	उड़ीसा का महा-नदी एवं कृष्णा का मध्यवर्ती क्षेत्र
पुष्यभूति (वर्द्धन) वंश	450 ई. से 647 ई.	पुष्यभूति	थानेश्वर
मैत्रक वंश	525 ई. से 767 ई.	ध्रुवसेन प्रथम	वल्लभी (गुजरात)
चालुक्य बादामी	543 ई. से 757 ई.	पुलकेशियन प्रथम	बादामी
पल्लव वंश	550 ई. से 897 ई. पू.	सिंह विष्णु	कांची
मौखरि वंश	554 ई. से 600 ई. पू.	ईशान वर्मा	कन्नौज
कार्कोट वंश	596 ई. से 810 ई. पू.	दुर्लभ वर्धन	कश्मीर
खड्ग वंश	600 ई. से 700 ई. पू.	—	ढाका
राट वंश	600 ई. से 700 ई. पू.	—	कोमिल्ला (बंगाल)
चालुक्य वेंगी	615 ई. 1118 ई. पू.	विष्णुवर्द्धन	वेंगी
चौहान शाकम्भरी	650 ई. से 1192 ई. पू.	वासुदेव	शाकम्भरी (अजमेर)
चालुक्य कल्याणी	696 ई. से 1189 ई. पू.	विजयादित्य	कल्याणी
गुर्जर प्रतिहार	730 ई. से 1136 ई. पू.	नागभट्ट प्रथम	कन्नौज
राष्ट्रकूट वंश	750 ई. से 973 ई. पू.	दंतिदुर्ग	महाराष्ट्र
पाल वंश	750 ई. से 1180 ई. पू.	गोपाल	बंगाल
आयुध वंश	770 ई. से 815 ई. पू.	वज्रायुद्ध	कन्नौज
चंदेल वंश	800 ई. से 1202 ई. पू.	नन्नुक	बुन्देलखण्ड
परमार वंश	800 ई. से 1210 ई. पू.	उपेन्द्र	मालवा
उत्पल वंश	810 ई. से 936 ई. पू.	अवन्ति वर्मन	कश्मीर
चोल वंश	850 ई. से 1279 ई. पू.	विजयालय	तमिल प्रदेश
चालुक्य वंश	942 ई. से 1197 ई. पू.	मूलराज प्रथम	गुजरात
लोहार वंश	1003 से 1155 ई.	संग्राम राज	कश्मीर
सेन वंश	1050 से 1202 ई.	सामन्त सेन	बंगाल
गंग वंश	1077 से 1434 ई.	अनन्त वर्मन	उड़ीसा
गहड़वाल वंश	1090 से 1199 ई.	चन्द्रदेव	कन्नौज
होयसल वंश	1110 से 1342 ई.	विष्णुवर्द्धन	द्वार समुद्र

प्राचीन भारत के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल

अहिच्छत्र

वर्तमान में अहिच्छत्र उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में अवस्थित रामनगर को माना गया है. महाजनपद-कालीन भारत में अहिच्छत्र उत्तरी पांचाल की राजधानी थी. इसका विशद् वर्णन महाभारत में मिलता है. कालान्तर में अहिच्छत्र को द्रोणाचार्य द्वारा लिया गया था. इस स्थल से चित्रित धूसर मृदुभाण्ड संस्कृति एवं लाल मृदुभाण्ड संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं. मौर्यकालीन भारत में यह मूर्तिकला का प्रसिद्ध केन्द्र है.

उज्जयिनी

प्राचीनकालीन इतिहास का महत्वपूर्ण स्थल उज्जयिनी वर्तमान में उज्जैन के नाम से जाना जाता है. यह मालवा

प्रान्त की एक महत्वपूर्ण नगरी के रूप में प्रसिद्ध रही है. महाजनपदकालीन भारत में उज्जयिनी उत्तरी अवन्ति राज्य की राजधानी थी. छठी शताब्दी ई. पू. में उज्जयिनी का अत्यधिक महत्व था, क्योंकि उत्तर से दक्षिण को जाने वाला व्यापारिक मार्ग उज्जैन के पास से ही गुजरता था. यह नगर शिप्रा नदी के तट पर अवस्थित है. पाँचवीं शताब्दी में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उज्जयिनी को अपनी राजधानी बनायी थी. यहाँ पर महाकालेश्वर मन्दिर, मंगलनाथ का मन्दिर कृष्णमंदिर, गोपालजी का मंदिर एवं अन्य दर्शनीय स्थल विद्यमान है.

इन्द्रप्रस्थ

महाजनपदकालीन भारत में कुछ महाजनपदों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी, जो दिल्ली के पास स्थित थी. प्रारम्भ



में यहाँ पर राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली थी, जो कालान्तर में गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली हो गई थी. इन्द्रप्रस्थ के सम्बन्ध में महाभारत में विशद् वर्णन मिलता है. पाण्डवों ने इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाई थी.

वाराणसी

प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल वाराणसी महाजनपद काशी की राजधानी थी. गुप्तिल जातक के अनुसार उस दौरान वाराणसी बारह योजन क्षेत्र में फैली हुई थी. यह वरुणा और अस्सी नदियों के संगम तट पर अवस्थित थी एवं इसका नामकरण वहाँ के राजा बानर के नाम पर किया गया था. सातवीं शताब्दी पूर्व यहाँ पर जनजीवन स्थापित होने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.

वाराणसी को हिन्दुओं की सात पवित्र नगरियों में से एक माना जाता है. यह बौद्ध एवं जैन धर्म का भी केन्द्र रही है. यहाँ का विश्वनाथ (शिव) मंदिर प्रसिद्ध तीर्थ के रूप में माना जाता है. तीसरी शताब्दी ई. पू. में वाराणसी सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध एवं शिक्षा संस्थान के रूप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की ख्याति हर जगह फैली हुई है. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 21वाँ अधिवेशन गोपालकृष्ण गोखले की अध्यक्षता में वाराणसी में ही सम्पन्न हुआ था. इस तरह धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं अन्य गतिविधियों में वाराणसी प्रारम्भकाल से सक्रिय रहा है.

मथुरा

श्रीकृष्ण की लीला-स्थली के रूप में ख्यात मथुरा शूरसेन महाजनपद की राजधानी थी. मथुरा प्राचीनकाल में धार्मिक एवं व्यापारिक केन्द्र के रूप में जानी जाती रही है. यह यमुना नदी के तट पर अवस्थित एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था. पुराणों एवं महाभारत में इस राज्य का वर्णन मिलता है. यहाँ पर यदुवंशीय शासकों का राज्य था. गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली से राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली मथुरा में बाद में हुई थी. चीनी यात्री फाह्यान ने मथुरा में भ्रमण कर बौद्ध विहारों का निरीक्षण किया था. अठारहवीं शताब्दी में जाट सरदार सूरजभान ने इसे अपनी राजधानी बनाया था.

कोशल

पूर्वी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में महाजनपद कोशल अवस्थित था. पूर्वी क्षेत्र गण्डक नदी तक, पश्चिम क्षेत्र पांचाल, दक्षिण क्षेत्र सर्पिरा तथा उत्तर क्षेत्र नेपाल की तराई तक फैला हुआ था. सरयू कोशल को उत्तरी कोशल एवं दक्षिणी कोशल में विभाजित करती थी. उत्तरी कोशल की राजधानी श्रावस्ती एवं अयोध्या तथा दक्षिणी कोशल की राजधानी कुशावती थी. कालान्तर में अजातशत्रु ने कौशल को मगध साम्राज्य में मिला लिया था. कोशल के राज्य स्वयं को इक्ष्वाकुवंशीय मानते थे. कोशल का पहला ऐतिहासिक शासक प्रसेनजित था, जो बिम्बिसार का समकालीन था.

ताम्रलिप्ति

प्राचीन भारतीय स्थल ताम्रलिप्ति वर्तमान में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले का 'तामलुक' नगर है. पाँचवीं शताब्दी में यह प्रसिद्ध बन्दरगाह था. चीनी यात्री फाह्यान बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए ताम्रलिप्ति आया था. फाह्यान ने अपने यात्रा विवरण में ताम्रलिप्ति के 24 संघाराम विहारों का उल्लेख किया था. इस स्थल पर उत्खनन के दौरान उत्तरी ओपदार मृद्भाण्ड संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं. पहले यह स्थल समुद्र के निकट था, लेकिन गंगा के मार्ग परिवर्तित होने के साथ ही इसका महत्त्व कम होता गया.

चम्पा

प्राचीनकालीन भारत का सबसे प्रमुख महाजनपद अंग था, जिसकी राजधानी चम्पा थी. चम्पा छठी शताब्दी ई. पू. में प्रमुख व्यापारिक नगरी के रूप में जानी जाती थी. यह गंगा और मालिनी नदियों के संगमपर अवस्थित थी. यहाँ पर उत्खनन के दौरान छठी शताब्दी ई. पू. में जनजीवन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं. चम्पा की पहचान वर्तमान विहार के भागलपुर क्षेत्र से की गई है. जैन धर्मन के तीर्थंकर वसुपूज्य की जन्म स्थल चम्पानगरी ही थी. चम्पा शिल्प नगरी के रूप में ख्याति प्राप्त थी.

काम्पिल्य

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अवस्थित पांचाल महाजनपद के दो भाग थे–उत्तरी पांचाल एवं दक्षिणी पांचाल. उनमें से दक्षिणी पांचाल की राजधानी काम्पिल्य थी. काम्पिल्य की पहचान वर्तमान फर्रुखावाद (उ. प्र.) से की गई है. द्रौपदी पांचाल की कन्या थी, इसी के फलस्वरूप उसे पांचाली कहा जाता था. महाभारत, वौद्ध जातक एवं जैन धर्म ग्रन्थों में काम्पिल्य का वर्णन किया गया है.

कौशाम्बी

प्राचीनकालीन भारत में कोसम या कौशाम्बी वत्स महाजनपद की राजधानी थी. यह इलाहावाद (उत्तर प्रदेश) के समीप अवस्थित थी. महाभारत के अनुसार कौशाम्बी को चेदियों ने वसाया था. 'निचक्षु' नामक शासक ने वाढ़ आ जाने के कारण कौशाम्बी को अपनी राजधानी वनाई थी. यहाँ का विश्वविद्यालय भी प्रमुख शिक्षा केन्द्र माना जाता रहा है. कौशाम्बी का महत्व धार्मिक एवं आर्थिक कारकों से अक्षुण्ण वना रहा है.

कपिलवस्तु

प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण स्थलों में कपिलवस्तु का नाम उल्लेखनीय है. कपिलवस्तु उत्तर प्रदेश के वस्ती जनपद के उत्तर में नेपाल की तराई में अवस्थित है, वर्तमान में इसे बुद्ध के नाम पर सिद्धार्थ नगर कहा जाता है. वौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध का जन्म 566 ई. पू. (कुछ विद्वानों के अनुसार 563 ई. पू.) कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी में हुआ था. कपिल वस्तु शब्द का शाब्दिक अर्थ–'कपिल का स्थान' है और इसी के फलस्वरूप विभिन्न विद्वानों ने सांख्य दर्शन के प्रवर्तक कपिल मुनि का सम्बन्ध कपिलवस्तु से वतलाया है. आधुनिक अनुसंधानों एवं उत्खनन से ज्ञात हुआ है कि पिपरहवा नामक स्थल ही कपिलवस्तु था. बुद्धकाल में कपिलवस्तु शाक्य गणराज्य की राजधानी थी. इसके अतिरिक्त मौर्यकालीन शासक अशोक की यात्रा का वर्णन भी यहाँ के सन्दर्भ में मिलता है. दस गणराज्यों में सम्मिलित कपिलवस्तु पर बुद्ध के जन्म के समय इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रियों का शासन था. गौतम बुद्ध के पिता शुद्धोदन शाक्यों के गण के प्रधान थे. कपिलवस्तु के पूर्व में रामग्राम के कोलियों का राज्य था. शाक्यों और कोलियों के राज्यों के मध्य रोहिणी नदी थी, जो विभाजक का कार्य करती थी. रोहिणी नदी के जल के वँटवारे पर शाक्यों एवं कोलिपों में परस्पर संघर्ष होता रहता था. एक बार बुद्ध ने स्वयं कपिलवस्तु जाकर इस विवाद को शान्त कराया था.

ऋपिपत्तन

उत्तर प्रदेश में वाराणसी के समीप स्थित सारनाथ को प्राचीनकाल में 'ऋषिपत्तन' कहा जाता था. यह वौद्ध धर्म का प्राचीनकाल से ही विश्वविख्यात केन्द्र रहा है. महात्मा वुद्ध ने 'सम्वोधि' (सच्चे ज्ञान की प्राप्ति) के पश्चात् सर्वप्रथम ऋपिपत्तन (सारनाथ) में ही प्रथम उपदेश अपने पाँच साथियों को दिया था, जिसे धर्मचक्र-प्रवर्तन (Turning of the Wheel) कहा गया था. इसी स्थल पर महात्मा वुद्ध ने 'संघ' की स्थापना कर अपने पाँच साथियों एवं वनारस के श्रेष्ठियश को संघ के सदस्य वनाये थे. मौर्यकालीन शासक अशोक ने एक विशाल स्तम्भ 'सारनाथ-स्तम्भ' का निर्माण स्मारक के रूप में किया था जिसे स्वतन्त्र भारत के राजचिह्न के रूप में स्वीकारा गया है.

राजगृह

राजगृह को राजगीर या गिरिव्रज के नाम से भी जाना जाता था. सोलर महाजनपदों में प्रसिद्ध महाजनपद 'मगध' की प्राचीन राजधानी राजगृह थी. वाद में राजगृह के स्थान पर पाटलिपुत्र हो गई थी. राजगृह के सम्वन्ध में पालि साहित्य में विशद् वर्णन मिलता है. विम्विसार, अजातशत्रु हर्यक वंश के शासकों, नन्दवंश एवं शिशुनाग वंश के शासकों ने राजगृह की उननति के लिए निरन्तर कार्य किये थे. वनारस से महात्मा वुद्ध ने धर्म प्रचार के लिए राजगृह में प्रवेश किया था, जहाँ पर प्रारम्भ में उन्हें प्रवल विरोध का सामना करना पड़ा था. कालान्तर में विम्विसार, अजातशत्रु जैसे शासकों में वौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था. वर्तमान में यह एक छोटा नगर राजगीर है जो पटना जिले में अवस्थित है. ई. पू. छठी शताब्दी में विम्विसार द्वारा इसका निर्माण कराया गया था. वर्तमान में इसे गर्म जल स्रोतों के कारण जाना जाता है. महात्मा वुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् 483 ई. में अजातशत्रु के काल में राजगृह की शापर्णि नामक गुफा में ही प्रथम वौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था. प्रथम वौद्ध संगीति की अध्यक्षता वौद्ध भिक्षु 'महाकश्यप' ने की थी.

कुशीनगर

कुशीनगर वर्तमान में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में अवस्थित है. 'कसिया' कहा जाता है. यहाँ पर महात्मा वुद्ध का परिनिर्वाण चुन्द नामक सुनार के घर भोजन करने से हो

गया था. महात्मा बुद्ध की मृत्यु को परिनिर्वाण कहा गया है. गणतान्त्रिक राज्य मल्ल के एक भाग की राजधानी कुशीनगर था. यहाँ के मल्लों की वीरता की प्रशंसा साहित्यिक स्रोतों में मिलती है. अशोक के आठवें वृहद् शिलालेख, दीर्घनिकाय, दिव्यावदान, फाह्यान एवं ह्वेनसांग के विवरणों में कुशीनगर का उल्लेख किया गया है. कनिष्क के विहार एवं अशोक के स्तूपों का यहाँ पर निर्माण कराया गया था. परिनिर्वाण चैत्य में गुप्तकालीन 20 फुट की महात्मा बुद्ध की मूर्ति उत्कृष्टतम कला का नमूना है.

वैशाली

सोलह महाजनपदों में प्रसिद्ध गणतान्त्रिक राज्य वज्जि या वृज्जि संघ के लिच्छवि कुल की राजधानी वैशाली थी. वज्जि आठ गणराज्यों का समूह था, जो मगध के उत्तर में अवस्थित था. जैन धर्म के स्वामी महावीर का जन्म वैशाली के समीप कुण्डग्राम में ही हुआ था. उनके पिता सिद्धार्थ वज्जि महाजनपद के ज्ञातृंक कुल के गणराज्य थे. प्राचीनकालीन प्रख्यात नृत्यांगना आम्रपाली वैशाली में रहती थी, जिसे महात्मा बुद्ध ने स्वयं वैशाली जाकर बौद्ध धर्म की दीक्षा प्रदान की थी. शिशुनाग के शासन काल में 383 ई. पू. द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था. इसी दौरान वैशाली में मतभेदों के कारण स्थविर और महासांधिक नामक दो वर्गों का अविर्भाव हुआ था. गुप्तशासक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के राज्यपाल का कार्यालय वैशाली में ही अवस्थित था. कालान्तर में अजातशत्रु ने इस पर आक्रमण कर मगध साम्राज्य में मिला लिया था.

पाटलिपुत्र

पाटलिपुत्र आधुनिक पटना है, जो विहार की राजधानी है. पाँचवीं शताब्दी ई. पू. उदयिन ने इसे बसाया था. शेरशाह सूरी ने सोलहवीं शताब्दी में इसका पुनर्निर्माण कर 'पटना' नामकरण किया था. गंगा और सोन के संगम पर पाटलिपुत्र अवस्थित था. मेगास्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र $9\frac{1}{2}$ मील (15·2 किमी) लम्बा एवं) $\frac{1}{2}$ मील (0·8 किमी) चौड़ा था. नगर की सुरक्षा के लिए लकड़ी की चहारदीवारी बनाई गई थी, जिसमें छोटे-छोटे छिद्र थे. चारों ओर एक गहरी खाई (600 फुट चौड़ी एवं 60 फुट गहरी) बनी हुई थी. दीवारों पर 570 बुर्ज बने हुए थे एवं नगर में प्रवेश के लिए 64 द्वार बने हुए थे. इस नगर की प्रशंसा अनेक यूनानी लेखकों ने की है. फाह्यान इस महल को देवताओं द्वारा बनाया हुआ मानता था. पाटलिपुत्र में अशोक के शासनकाल में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था जिसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की थी. भारतीय यवन शासक मिनाण्डर एवं उड़ीसा के एक खारवेल ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया था. यह शुंग और कण्व वंश के शासकों की भी राजधानी रही थी.

पावापुरी

महाजनपदों में प्रसिद्ध गणतान्त्रिक राज्य मल्ल के दूसरे भाग की राजधानी पावापुरी थी. कुछ विद्वानों के अनुसार



पावापुरी वर्तमान बिहार के नालंदा में अवस्थित है, जबकि कुछ इसे गोरखपुर के दास स्थित पावै या पडरौल नामक स्थल मानते हैं. 469 ई. पू. 72 वर्ष की अवस्था में धर्म प्रचार करते समय महावीर स्वामी का निर्वाण पावापुरी में ही हुआ था.

तक्षशिला

वर्तमान में तक्षशिला पाकिस्तान के रावलपिण्डी जिले में अवस्थित है. प्राचीनकाल में यह आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र के रूप में ख्याति प्राप्त था. सिकन्दर के आक्रमण काल के समय पर राजा आम्भि की राजधानी थी. राजा विम्बिसार के प्रसिद्ध चिकित्सक जीवक के यहाँ पर चिकित्सा का प्रशिक्षण लिया था. 43-44 ई. में अपोलोनियस नामक यूनानी यात्री ने तक्षशिला का भ्रमण कर विस्तृत वृत्तान्त लिखा था. अशोक के काल में तक्षशिला अमरापथ प्रान्त की राजधानी थी. सातवीं शताब्दी के दौरान तक्षशिला कश्मीर का हिस्सा बन गया था. प्राचीन शिक्षा केन्द्र के रूप में 'तक्षशिला विश्व-विद्यालय' की ख्याति सम्पूर्ण विश्व में थी. जहाँ पर पाणिनी, कौटिल्य, पतंजलि आदि महान् विद्वानों ने शिक्षा ग्रहण की थी. ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सुल्तान महमूद द्वारा पंजाब विजय के पश्चात् तक्षशिला का महत्व अधिक कम हो गया था.

श्रावस्ती

प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल श्रावस्ती राप्ती नदी के तट पर अवस्थित था. वर्तमान में यह गोंडा और बहराइच जिलों की सीमा पर उत्तर प्रदेश सहेतमहेत के नाम से पहचाना जाता है. श्रावस्ती उत्तरी कोशल की आरम्भिक राजधानी थी जो

बाद में साकेत या अयोध्या में स्थानान्तरित कर दी गई थी. साहित्यिक स्रोतों में श्रावस्ती का उल्लेख व्यापारिक सन्दर्भ में मिलता है. यह एक धार्मिक नगरी भी थी. यहाँ पर आजीवक सम्प्रदाय के प्रवर्तक मक्खलि गोशाल का जन्म हुआ था तथा जैन धर्म के तीर्थंकर सम्भवनाथ एवं चन्द्रप्रभु का भी यहाँ से हुड़ाव था. श्रावस्ती के साहुकार अनाथपिण्डक ने एक विशाल जेतवन महाविहार बौद्ध संघ को दान में दिया था. बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध ने श्रावस्ती की यात्रा की थी.

नालन्दा

वर्तमान में नालन्दा बिहार का एक जिला है. नालन्दा बौद्ध धर्म का पाँचवीं-छठी शताब्दी में विश्व प्रसिद्ध शिक्षा का केन्द्र रहा है. चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नालन्दा में भ्रमण कर उसकी प्रशंसा की थी. ह्वेनसांग के अनुसार गुप्त सम्राट् नरसिंह गुप्त बालादित्य ने नालन्दा में एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण कराया था जिसमें 20 फीट ऊँचे ताँबे की बुद्ध की प्रतिमा की स्थापना की थी. नालन्दा में शिक्षा ग्रहण करने के लिए चीन, जावा, श्रीलंका एवं तिब्बत के विद्यार्थी आते थे. यहाँ पर बौद्ध धर्म की महायान शाखा का अध्ययन विशेष रूप से होता था. नालन्दा विश्वविद्यालय का भवन नौ मंजिल का था. सुमात्रा के शासक ने यहाँ पर एक विहार का निर्माण कराया था.

मगध

प्राचीनकाल में मगध वर्तमान दक्षिण बिहार के पटना एवं गया जिलों का एक जनपद था. महाजनपद काल में अंगुत्तर निकाय में वर्णित 16 महाजनपदों में से अधिकतर मगध साम्राज्यवाद के अधीन हो गये थे. प्राचीन भारत में मगध उत्तरी भारतीय राजनीति का एक प्रमुख केन्द्र था. हर्यंक वंश नन्दवंश, शिशुनाग वंश के शासकों ने मगध की उन्नति में महती भूमिका का निर्वहन किया था. मगध की दो राजधानियाँ थीं–राजगृह एवं पाटलिपुत्र. महाभारत एवं पुराणों में मगध के इतिहास का वर्णन किया गया है. महावीर एवं बौद्ध धर्म प्रवर्तक गौतम बुद्ध के समय बिम्बिसार मगध का शासक था. चतुर्थ शताब्दी ई. पू. मगध साम्राज्य का विस्तार पश्चिम में हिन्दुकुश से लेकर पूर्व में कलिंग तक हो गया था.

महिष्मती

महाजनपदकालीन भारत में दक्षिण अवन्ति की राजधानी महिष्मती थी. छठी शताब्दी ई. पू. यहाँ पर जनजीवन बस चुका था. बुद्धकाल में अवन्ति में चण्डप्रद्योत का शासन था. उज्जयिनी के अस्तित्व में आते ही इसका महत्व कम होने लाग था. इसके नगर प्रशासन में व्यापारिक निगमों की महत्वपूर्ण भूमिका थी.

प्रतिष्ठान

प्राचीनकालीन प्रतिष्ठान की पहचान वर्तमान में औरंगाबाद जिले के पैठन के रूप में की गई है. यह उत्तरी गोदावरी घाटी में अवस्थित था. महाजनपदकालीन भारत में



प्रतिष्ठान अश्मक महाजनपद की राजधानी थी. यह दक्षिण से उत्तर की ओर जाने वाले व्यापारिक मार्ग दक्षिणापथ पर अवस्थित था. अतः मौर्योत्तरकाल में इसका अत्यधिक व्यापारिक महत्व था. यह प्रारम्भ में सातवाहनों की राजधानी थी.

नागार्जुनकोण्ड

प्राचीनकालीन नागार्जुनकोण्ड वर्तमान में आन्ध्र प्रदेश के गुण्टूर जिले में अवस्थित है. यह धार्मिक एवं व्यापारिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण नगर था. सातवाहन शासक हाल ने नागार्जुनकोण्ड में प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् नागार्जुन के लिए एक बौद्ध विहार का निर्माण कराया था. यह बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रमुख केन्द्र था. यहाँ पर शंख की कटाई का उद्योग विस्तृत पैमाने पर होता था.

अपरान्त

प्रसिद्ध धार्मिक स्थल अपरान्त को महाराष्ट्र के उत्तरी कोंकणी क्षेत्र से पहचाना गया है. यह अपरान्तक या अपरान्तिक के नाम से जाना जाता है. गौतमीपुत्रशातकर्णी ने अपरान्त पर विजय प्राप्त की थी. महावंश के अनुसार मौर्य शासक अशोक ने अपरान्त में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए धर्मरक्षित को भेजा था.

कलिंग

पूर्वी समुद्रतटीय क्षेत्र पर महानदी एवं गोदावरी नदियों का मध्यवर्ती क्षेत्र कलिंग था. वर्तमान उड़ीसा की कलिंग के रूप में पहचान की गई है. अशोक ने अपने राज्याभिषेक के

आठवें वर्ष इस पर भयंकर युद्ध के फलस्वरूप आक्रमण कर लिया था. कलिंग युद्ध के बाद ही अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ था और तभी से उसने धम्म के स्वरूप को स्थापित किया था. कालिदास के रघुवंश एवं महाभारत में कलिंग का विवरण मिलता है. कलिंग पर महाभारत काल में चित्रांगद का शासन था.

ओदन्तीपुरी

प्राचीन शिक्षा का केन्द्र एवं बौद्ध धर्म की प्रख्यात स्थली ओदन्तीपुरी बिहार में गया के समीप अवस्थित थी. पाल शासकों ने ओदन्तपुरी की उन्नति में महती भूमिका का निर्वहन किया था. यहाँ पर एक विशाल पुस्तकालय था जिसमें बौद्ध एवं ब्राह्मण धर्म की पुस्तकें विद्यमान थीं. ओदन्तीपुरी को उड्यन्तपुर भी कहा जाता था. आठवीं शताब्दी के मध्य में बंगाल और बिहार में पालवंश के संस्थापक गोपाल ने यहाँ पर एक महाविहार की स्थापना की थी.

मुंगेर

यह बिहार राज्य में अवस्थित प्राचीन स्थल था. मुंगेर अंग महाजनपद का प्रमुख केन्द्र प्राचीनकाल में रहा था. मुंगेर को चन्द्रगुप्त ने स्थापित किया था. यह धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से भी उत्कृष्टतम केन्द्र रहा है. कलहगाँव का मन्दिर, मन्दार पहाड़ी एवं नारी गुफा यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल थे.

साँची

प्राचीनकालीन बौद्ध तीर्थस्थली के रूप में ख्यात साँची वर्तमान में मध्य प्रदेश के रायसिन जिले में अवस्थित है. यहाँ पर बौद्धकालीन शिल्पकला के प्राचीनकालीन सभी साक्ष्य विद्यमान हैं. यहाँ पर प्राचीनकालीन तीन स्तूप हैं. एक बड़े स्तूप की ऊँचाई 16·4 मीटर है तथा 36·5 मीटर घास का है. इस स्तूप के तोरणद्वार पर बुद्ध के जीवन की झलकियाँ उत्कीर्ण की गई हैं. अन्य दो स्तूपों का निर्माण मौर्य शासक अशोक ने कराया था.

महाबलीपुरम्

धर्म, स्थापत्य एवं पर्यटन की दृष्टि से मशहूर महाबलीपुरम् तमिलनाडु के कोरोमण्डल तट पर अवस्थित है. इस नगर का प्राचीन नाम 'मामल्लपुरम्' था जिसे राजा नरसिंह वर्मा ने 625-45 ई. में स्थापित किया था. यह नगर सप्तपैगोडा के लिए प्रसिद्ध था, जो चट्टानों को काटकर बनाये गये हैं. शोर-मन्दिर यहाँ का प्रसिद्ध मन्दिर है.

काँची

प्राचीनकालीन हिन्दुओं की सात पवित्र नगरियों में से एक काँची भी थी. समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भ लेख में इसका पहला ऐतिहासिक उल्लेख मिलता है. काँची को वर्तमान में कांजीवरम् कहा जाता था, जो प्राचीनकाल में पल्लवों की राजधानी थी. 640 ई. में ह्वेनसांग ने काँची के लिए भ्रमण किया था. ह्वेनसांग के यात्रा विवरण के अनुसार प्राचीनकाल में काँची 5-6 मील के घेरे में बसी एक विशाल नगरी थी. प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य धर्मपाल की जन्मस्थली काँची ही थी. शिक्षा एवं निवास की दृष्टि से वैष्णव धर्म के आचार्य रामानुज का काँची से गहरा सम्बन्ध रहा था. यहाँ का 'कैलाशनाथ का मन्दिर' सर्वाधिक प्रसिद्ध रहा है.

मदुरा

प्राचीन भारत के दक्षिणी प्रदेश का मदुरा नगर प्रथम शताब्दी में पाण्डव राज्य की राजधानी था. कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में मदुरा के सुन्दर सूती वस्त्रों एवं मोतियों का वर्णन किया है. इसमें अनेक भव्य देव मन्दिर हैं जिनमें सुन्देश्वर तथा मीनाक्षी का मन्दिर प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है.

हस्तिनापुर

महाभारतकालीन भारत में हस्तिनापुर को प्रसिद्ध नगरों में गिना जाता था. उस काल में हस्तिनापुर पाण्डवों की राजधानी थी. वर्तमान में हस्तिनापुर के अवशेष मेरठ (उ. प्रदेश) के मवाना क्षेत्र के आसपास मिलते हैं. हस्तिनापुर में चित्रित धूसर मृदुभाण्ड एवं लाल मृदुभाण्ड संस्कृति के अवशेष उत्खनन के दौरान प्राप्त हुए हैं.

कावेरीपत्तनम्

इस प्राचीन स्थल को प्रहार नाम से भी जाना जाता था. यह वर्तमान में तमिलनाडु के सियासी तासुधा में कावेरी नदी तट पर अवस्थित है. कावेरीपत्तनम् संगम युग में चोल राजाओं की राजधानी थी. 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' में कावेरीपत्तनम् का उल्लेख मिलता है. तृतीय शताब्दी ई. तक कावेरीपत्तनम् एक प्रमुख व्यापारिक बन्दरगाह था.



कामरूप

वर्तमान असम जिसे महाभारत में प्राग्ज्योतिषपुर एवं पुराणों में कामरूप कहा गया है. ऋग्वैदिककाल से ही कामरूप का अस्तित्व रहा है. पौराणिक काल में असम पर अधर्म एवं असुरों का शासन था. गुप्त सम्राट् समुद्रगुप्त ने अपने इलाहाबाद स्तम्भ में कामरूप का उल्लेख किया था. 13वीं शताब्दी में अहोम जाति के लोगों ने इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की एवं यहाँ पर 600 वर्षों तक शासन किया. पौराणिककाल में कामरूप या प्राग्ज्योतिषपुर का प्रसिद्ध राजा नरकासुर था. ईसा की चतुर्थ शताब्दी में कामरूप पर पुष्यवर्मा का शासक था. उसी दौरान समुद्रगुप्त ने कामरूप पर आक्रमण किया था. इलाहाबाद स्तम्भलेख के अनुसार उस आक्रमण में पुष्यवर्मा ने समुद्रगुप्त के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था. ब्रह्मपाल ने कामरूप में तीसरे हिन्दू राजवंश की स्थापना की थी.

प्रयाग

गंगा और यमुना के संगम पर अवस्थित प्रयाग वर्तमान में इलाहाबाद के नाम से जाना जाता है. इसे तीर्थराज भी कहा जाता है. गुप्तकालीन शासकों की प्रयाग राजधानी रहा है. सम्राट् हर्षवर्द्धन यहाँ पर पाँच वर्ष के अन्तराल से एक सत्र का आयोजन करता था. चीनी यात्री ह्वेनसांग भी 643 ई. में एक बार प्रयाग हर्षवर्द्धन के सत्र में भाग लेने आया था. यहाँ पर अशोक के स्तम्भ लेख विद्यमान हैं, जो सबसे प्राचीन ऐतिहासिक स्मारक के रूप में प्रयाग में प्राप्त हुए हैं. प्रयाग का नाम इलाहाबाद 1583 ई में अकबर द्वारा गंगा-यमुना के संगम पर किला बनवाने के उपरान्त रखा गया था.

कन्नौज

मूल नाम कान्यकुब्ज के नाम से भी पहचाने जाने वाला उत्तरी भारत का प्राचीनतम् स्थल कन्नौज बौद्ध धर्म के केन्द्र के रूप में ख्याति प्राप्त स्थल रहा है. पतंजलि के महाभाष्य में कन्नौज का वर्णन मिलता है. महाभारत में भी इसका उल्लेख किया गया है. चीनी यात्री फाह्यान 405 ई. में कन्नौज में आया था तथा वहाँ के दो बौद्ध विहारों का निरीक्षण किया था. ह्वेनसांग कन्नौज में सात वर्षों तक ठहरा था. सम्राट् हर्षवर्द्धन ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया था. समृद्धि एवं ऐश्वर्य के फलस्वरूप इस नगर को 'महोदयश्री' कहा जाता था. 816–1090 ई. में प्रतिहार शासकों ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया था. उस दौरान कन्नौज उत्तरी भारत का प्रमुख नगर बन गया था. यहाँ का अन्तिम प्रतिहार शासक राजपाल था जिसे चंदेल राजा गण्ड ने अपदस्थ कर दिया था. कन्नौज का अन्तिम राठौड़ शासक जयचन्द था जो मुहम्मद गौरी के हाथों मारा गया था.

गिरनार

काठियावाड़ (गुजरात) में जूनागढ़ के निकट स्थित गिरनार ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल है. यह पर्वतीय स्थल है. गिरनार में मौर्य सम्राट् अशोक ने चट्टानों पर चतुर्दश शिलालेख उत्कीर्ण कराया था. अशोक के चतुर्दश शिलालेख के दूसरी तरफ शक शासक रुद्रदामन का अभिलेख है जिसमें वहाँ पर सुदर्शन झील का निर्माण सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वारा कराये जाने का उल्लेख है. गिरनार में चालुक्य राजाओं द्वारा निर्मित कई मंदिर विद्यमान हैं.

विदर्भ

प्राचीनकालीन विदर्भ का वर्तमान नाम बरार है. यह वर्धा नदी की घाटी में अवस्थित है. यह प्राचीनकाल में मौर्य साम्राज्य का एक अंग था, जो कालान्तर में चालुक्यों के अधीन हो गया. चालुक्यों से विदर्भ को अलाउद्दीन खिलजी ने जीत लिया था. 1574 ई. के बाद विदर्भ (बरार) अहमदनगर में समाहित हो गया था. 1596 ई. में यह अकबर के हाथों आ गया था जिसने इसे अलग सूबा बना दिया था. सन् 1902 ई. में हैदराबाद के निजाम ने बरार को स्थायी पट्टे पर भारत सरकार को सौंप दिया था.

महोबा

प्राचीनकालीन स्थल महोबा उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में अवस्थित है. प्रारम्भ में यह चंदेल वंश के शासकों की राजधानी थी, जिन्होंने महोबा पर नवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक राज्य किया था. महोबा को प्राचीनकाल में जेजाकभुक्ति या जुझौती भी कहा जाता था. चन्देल शासकों ने महोबा में कई सुन्दर मन्दिरों का निर्माण कराया था.

गढ़मुक्तेश्वर

प्राचीन धार्मिक स्थल गढ़मुक्तेश्वर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में गंगा नदी के तट पर अवस्थित है. प्राचीनकालीन भारत में गढ़मुक्तेश्वर हस्तिनापुर का एक भाग था. यहाँ पर मुक्तेश्वर शिव का मन्दिर एवं प्राचीन-शिवलिंग कारखण्डेश्वर अवस्थित है. गढ़मुक्तेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है.

गौड़

प्रसिद्ध भारतीय प्राचीन स्थल गौड़ का उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी, कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं पुराणों में मिलता है. अनुसंधानों के आधार पर गौड़ को पश्चिमी एवं पश्चिमोत्तर बंगाल का भाग माना है. गुप्त शासकों के पतन के पश्चात् गौड़ शासकों का अस्तित्व सिद्ध हुआ था. गौड़ के शासकों में समाचार देव एवं गोपचन्द्र का नाम उल्लेखनीय है. इन दोनों शासकों ने गौड़ की सैनिक शक्ति का विस्तार किया था. सातवीं शताब्दी में गौड़ नरेश शशांक ने थानेश्वर के पूज्य मूर्तियाँ शासकों से युद्ध लम्बे अन्तराल तक युद्ध किया था. द्वितीय पाल नरेश धर्मपाल के समय गौड़ उत्तरी भारत की प्रमुख शक्ति के रूप में उभरकर सामने आया था.

थानेश्वर

प्रख्यात प्राचीन नगर थानेश्वर वर्तमान में दिल्ली के उत्तर में अम्बाला एवं करनाल के मध्य अवस्थित है. संस्कृत साहित्य में थानेश्वर का वृहद् उल्लेख मिलता है. इसे ब्रह्मावर्त



क्षेत्र का केन्द्र बिन्दु माना जाता था. विद्वानों के अनुसार यहाँ पर भारतीय आर्यों का सबसे पहले विस्तार हुआ था. इस स्थल को थानेश्वर भी कहा जाता था. छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में थानेश्वर पुष्यभूति वंश के शासकों की राजधानी बना था. पुष्यभूति शासक प्रभाकरवर्धन ने थानेश्वर को मालवा, उत्तर-पश्चिमी पंजाब, राजपूताना का केन्द्रीय नगर बनाया था. तृतीय मराठा युद्ध के पश्चात् यह ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया था.

नासिक

प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थस्थल एवं प्राचीन नगर महाराष्ट्र में गोदावरी के तट पर अवस्थित था. शक क्षत्रप नहपान की नासिक राजधानी रहा था. यहाँ पर बौद्ध जैन एवं हिन्दू धर्म के अवशेष मिले हैं. चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय एवं प्रारम्भिक राष्ट्रकूटों के काल में नासिक उत्कर्ष पर रहा था. राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष ने नासिक के स्थान पर मान्यखेट को अपनी राजधानी बनाया था, उसी समय से इसका महत्व कम होने लगा था.

मान्यखेट

प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल एवं प्राचीन नगर मान्यखेट को वर्तमान में मालखेड़ के नाम से जाना जाता है. यहाँ पर कई जैन मंदिर हैं. राष्ट्रकूट अमोघवर्ष ने मान्यखेट को अपनी राजधानी बनाया था.

मास्की

प्राचीनकालीन भारत का प्रमुख ऐतिहासिक नगर आन्ध्र प्रदेश के रायचूर जिले में अवस्थित है. मास्की में प्राप्त अभिलेख के द्वारा ही मौर्य सम्राट् अशोक की पहचान की गई है. मास्की से प्राप्त अभिलेख में 'देवानाम् पियदस्सी' के साथ अशोक भी लिखा हुआ मिला है, जो मात्र इसी स्थल से प्राप्त हुआ है.

कूच बिहार

तोरसा नदी के किनारे पर अवस्थित यह स्थल बंगाल प्रान्त के अन्तर्गत एक जिला नगर है. तिस्ता एवं संकोश नदियाँ ब्रह्मपुत्र में मिलने से पूर्व कूच बिहार में होकर प्रवाहित होती हैं. कोच नामक कबायलियों के आधार पर इसका नामकरण हुआ था. कालान्तर में कूच बिहार के शासकों को क्षत्रिय समझा जाने लगा था. यह स्थल प्रारम्भ में कामरूप के प्राचीन हिन्दू शासकों के राज्य का एक हिस्सा था. भास्कर वर्मा के काल में यह राज्य करतीया तक विस्तृत था. 1950 में कूच बिहार का विलय भारतीय गणतन्त्र में हो गया जो पश्चिम बंगाल का एक जिला नगर है.

एलोरा

प्रसिद्ध धार्मिक एवं स्थापत्य कला के उत्कृष्टतम् केन्द्र के रूप में ख्याति प्राप्त एलोरा वर्तमान में महाराष्ट्र के औरंगाबाद में अवस्थित है. यह शैलकृत गुफाओं के लिए प्रसिद्ध रहा है. एलोरा में लगभग 34 शैलकृत गुफाएँ हैं. इन गुफाओं में 16 गुफाएँ हिन्दू धर्म से, 12 गुफाएँ बौद्ध धर्म से एवं 6 गुफाएँ जैन धर्म से सम्बन्धित शैलकृत गुफाएँ हैं. चालुक्य एवं राष्ट्रकूट शासकों ने इन गुफाओं का निर्माण कराया था. एलोरा गुफा का कैलाश नामक मन्दिर जिसे राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने बनाया था, जो स्थापत्य कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना है.

एहोल

प्राचीनकालीन ऐतिहासिक स्थल एहोल कर्नाटक में बीजापुर के बादामी क्षेत्र के समीप अवस्थित है. एहोल को 'मन्दिरों का नगर' कहा जाता है. इस ऐतिहासिक स्थल में लगभग 70 मन्दिरों के अवशेष मिले हैं. यहाँ पर पुलकेशिन द्वितीय का एक प्रशस्ति अभिलेख प्राप्त हुआ है जिसमें उसकी विजय का वर्णन मिलता है.

अजन्ता

महाराष्ट्र के औरंगाबाद में पर्वतीय क्षेत्र में अजन्ता अवस्थित है. अजन्ता में 29 गुफाएँ निर्मित हैं. अजन्ता की गुफाओं में मानव जीवन, प्राकृतिक चित्रण, पशु पक्षियों के बहुरंगी चित्रण उकेरे गये हैं. इन चित्रों की रचनाएँ पाँचवीं से सातवीं शताब्दी के मध्य हुईं. अजन्ता के चित्रों में अलंकरण कला का प्रदर्शन है जो तत्कालीन यूरोपियन एवं इतालवी कला से भी श्रेष्ठ है.

बोधगया

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल बिहार में गया के समीप अवस्थित है. बोधगया में भगवान् बुद्ध की ज्ञान की प्राप्ति हुई थी. यहाँ पर एक पीपल का वृक्ष था, जिसे बोधि वृक्ष कहा जाता था. बोध गया में बुद्ध एक विशाल कलात्मक मंदिर है एवं इसके पीछे एक पत्थर का चबूतरा है जिसे बौद्ध सिंहासन कहा जाता है. इसी

स्थल पर गौतम बुद्ध ने अपने पाँच कौण्डिन्यादि साथियों के साथ बैठकर तपस्या की थी. मौर्य सम्राट् अशोक अपने राज्याभिषेक के दसवें वर्ष में बोधगया गया था. इस आशय का साक्ष्य अशोक के आठवें स्तम्भ लेख में मिलता है. समुद्र गुप्त के शासनकाल में सिंहलद्वीप के राज्य मेघवर्णन ने समुद्र गुप्त की अनुमति से बोधगया में एक विहार का निर्माण कराया था. चीनी यात्री फाह्यान के समय यह स्थल जंगलों से घिरा हुआ था, यह वर्णन फाह्यान ने अपने यात्रा विवरण में किया था. गौड़ के शासक शशांक ने बोधगया के बोधिवृक्ष को काटकर जला दिया था. ह्वेनसांग के अनुसार मगध के स्थानीय शासक पूर्ण वर्मा द्वारा यहाँ पर दूसरा वृक्ष लगवाया था. वर्तमान में बोधि वृक्ष के स्थान पर एक सुन्दर विश्रामालय बना दिया गया है.

बैराठ

प्रसिद्ध प्राचीनकालीन भारतीय स्थल बैराठ वर्तमान में राजस्थान में शाहपुरा के पास अवस्थित है. इसे बैराठ के नाम से ही जाना जाता है. यह राजा विराट की राजधानी थी. इसी शासक के नाम पर दूसरा नामकरण बैराठ किया गया था. यह मत्स्य महाजनपद के अन्तर्गत आता था. विभिन्न अनुमानों के अनुसार यहाँ पर चेदियों का नियन्त्रण था. कालान्तर में यह मगध साम्राज्य का अंग बन गया था. इसका उल्लेख महाभारत



में मिलता है. ई. पू. 300 के बौद्ध चैत्य के 26 अष्टपार्श्वीय स्तम्भ भग्नावशेष में यहाँ पर उपलब्ध है. यह ऐतिहासिक स्थल शिल्पकला का उत्कृष्टतम उदाहरण है.

खजुराहो

कलात्मक, स्थापत्यपूर्ण धार्मिक स्थल खजुराहो वर्तमान में मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में अवस्थित है. यहाँ पर अनेक मन्दिर विद्यमान हैं जिनमें कन्दरिया महादेव का मन्दिर, चतुर्भुज मन्दिर, चौंसठ योगिनी मंदिर, पार्श्वनाथ का मन्दिर, जगदम्बा मन्दिर, चित्रगुप्त सूर्य मन्दिर, वामन मन्दिर, ब्रह्मा मन्दिर एवं घंटई मन्दिर विश्व में ख्याति प्राप्त मन्दिर हैं. शृंगारिक चित्रण से युक्त यहाँ की मूर्तियाँ विश्व प्रसिद्ध हैं. खजुराहो चंदेलों की धार्मिक राजधानी थी.

ब्रह्मगिरि

प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक स्थल ब्रह्मगिरि वर्तमान में कर्नाटक राज्य के चित्रदुर्ग जिले में अवस्थित है. ब्रह्मगिरि से नव-पाषाणकालीन ऐतिहासिक साक्ष्य उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. प्राप्त ऐतिहासिक साक्ष्यों में शंख, सीसा, सोना, चूड़ियाँ एवं काँसे की अँगूठियाँ प्राप्त हुई हैं. ब्रह्मगिरि से मौर्योत्तरकालीन पोटीन के सिक्के भी प्रापत हुए हैं.

अमरावती

प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्राचीन भारतीय स्थल अमरावती आन्ध्र प्रदेश के गुंटुर जिले में अवस्थित है. प्रारम्भिककाल में यह प्रसिद्ध बौद्ध धर्म स्थल रहा है. सातवाहन शासकों के काल में अमरावती में मूर्तिकला एवं चित्रकला का सर्वाधिक विकास हुआ था. अमरावती से प्राप्त मूर्तियों एवं कला चित्रों में पेड़-पौधों एवं फूलों को बड़े विशिष्ट ढंग से चित्रित किया गया है. अमरावती शैली को मथुरा एवं गांधार शैली से पूर्व की शैली माना गया है. अमरावती की चित्राकृतियों पर यूनानी प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता.

भड़ौंच

प्राचीनकालीन विदेशी व्यापारिक केन्द्र भड़ौंच नर्मदा एवं ताप्ती नदियों के मध्य अवस्थित था. हिन्दू धर्म ग्रन्थों में इसे भृगुकच्छ के रूप में प्रकाशित किया है, जबकि 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' में इसका नाम 'बैरीगाल' रखा गया है. यह प्राचीन भारत का प्रवेश द्वार भी कहा जाता था. अनुश्रुतियों के अनुसार भृगु ऋषि ने भड़ौंच में अपनी तपस्या पूरी की थी. चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इस स्थल की यात्रा की थी. उत्खनन के दौरान भड़ौंच से काँच की वस्तुएँ, रोमन मुद्राएँ एवं टेरावोरा की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं.

श्रवणबेलगोला

यह ऐतिहासिक स्थल कर्नाटक राज्य के हासन जिले में अवस्थित है. चन्द्रबेत एवं इन्द्रदेव नामक पहाड़ियों के मध्य श्रवणबेलगोला स्थित है. गंग शासक रचमल्ल के शासनकाल में चामुण्डराय नामक मंत्री श्रवणबेलगोला में 983 ई. में बाहुबली गोमतेश्वर की विशालकाय मूर्ति का निर्माण कराया था. यह प्रतिमा 56 फीट से भी अधिक ऊँची है. वर्तमान में भी इस स्थल को जैन धर्म का तीर्थस्थल माना जाता है.

अंतरजीखेड़ा

प्रागैतिहासिक स्थल अंतरजीखेड़ा उत्तर प्रदेश के एटा जिले में गंगा की सहायक नदी काली के तट पर अवस्थित है. अलेक्जेण्डर कनिंघम ने 1961-62 ई. में इस स्थल को खोजा था. यहाँ पर चित्रित धूसर मृद्भाण्ड, काले-लाल मृद्भाण्ड एवं उत्तरी ओपदार काले मृद्भाण्डों को अवशेष के रूप में प्राप्त किया गया है. इसका उल्लेख ह्वेनसांग के यात्रा विवरण में मिलता है.

कन्याकुमारी

प्रख्यात प्राचीन ऐतिहासिक स्थल कन्या-कुमारी सुदूर दक्षिण में समुद्र तट पर अवस्थित है. यह स्थल भारतीय अन्तरीप का अन्तिम छोर है. तमिल में कन्याकुमारी को कन्निकुमारी कहा जाता है. पद्मपुराण में कन्याकुमारी को कन्यातीर्थ कहा गया है. इसके पास कुमारी नामक एक नदी प्रवाहित होती है. चोल शासक कुलोत्तुंग का कन्याकुमारी से एक अभिलेख भी प्राप्त हुआ है. यहाँ का कुमार देवी का मन्दिर विश्व प्रसिद्ध स्थापत्य का नमूना है.

कजंगल

महाजनपदकालीन ऐतिहासिक स्थल कजंगल वर्तमान बिहार के राजमहल जिले में स्थित कपंगल गाँव है. इसका आविर्भाव अंग महाजनपद के विकास के दौरान हुआ था. मिलिन्दपञ्हो के अनुसार बौद्ध दार्शनिक नागसेन का कजंगल में ही हुआ था. हर्षवर्द्धन ने कजंगल में जयस्कन्धावार का निर्माण कराया था. ह्वेनसांग ने इस स्थल का उल्लेख का-चु-वेन-की-लो के रूप में किया है.

धौली

प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्राचीन भारतीय स्थल धौली वर्तमान में उड़ीसा राज्य में पुरी जिले में अवस्थित है. तौशाली इसी स्थल का नाम था. यहाँ से पकाई गई ईंटें, काले चमकदार मृद्भाण्ड एवं मौर्यकालीन उपकरण अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं. मौर्य सम्राट् अशोक का वृहद् शिलालेख यहाँ से प्राप्त हुआ है. अशोक के इस वृहद् शिलालेख में 14 अभिलेख लिखे गए हैं.

द्वारसमुद्र

दक्षिणी कर्नाटक में प्राचीन स्थल द्वारसमुद्र अवस्थित है. प्राचीन भारत में द्वारसमुद्र होयसल शासकों की राजधानी थी. यहाँ की कला शैली प्राचीनकाल से प्रसिद्ध रही है. द्वार समुद्र की वास्तुकला एवं स्थापत्य 'वेसर शैली' से सम्बन्धित था. 'होयसलेश्वर मंदिर' इस शैली का प्रसिद्ध स्थापत्य है. द्वार समुद्र का होयलेश्वर मन्दिर भगवान् शिव को समर्पित है जिसकी बाहरी दीवारों पर पौराणिक गाथाओं का चित्रांकन किया गया है.

एरण

प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक स्थल एरण मध्य प्रदेश के सागर जिले में अवस्थित है. महाजनपदकालीन भारत में एरण चेदि महाजनपद का एक अंग था. यहाँ पर



तीसरी शताब्दी में जनजीवन होने के प्रमाण मिले हैं. एरण से 510 ई. का भानुगुप्त का अभिलेख प्राप्त हुआ है जिसमें प्रथम बार सती प्रथा के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं.

कल्याण

प्राचीनकालीन भारत का एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप में पहचाना जाने वाला कल्याण वर्तमान में महाराष्ट्र के पश्चिमी तट पर मुम्बई के निकट थाना जिले में अवस्थित है. सातवाहनकाल में कल्याण विदेशी व्यापार का एक प्रमुख बन्दरगाह था. अज्ञात नाविक द्वारा लिखित 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' में कल्याण का उल्लेख 'कैसियाना' नाम से किया गया है. कल्याण से काँसा, लकड़ी एवं वस्त्र का व्यापार होता था. 14वीं शताब्दी में मुस्लिम शासकों ने इसका नाम बदलकर इस्लामाबाद रख दिया था. छठी शताब्दी में कल्याण की गिनती छह प्रमुख व्यापारिक नगरों में होती थी.

नवदाटोली

ई. पू. 1600 की सभ्यता का प्राचीन स्थल नवदाटोली वर्तमान में मध्य प्रदेश की नर्मदा घाटी में अवस्थित है. इसकी खोज उत्खनन से 1957–59 में की गई थी. C-14 वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार इस क्षेत्र का काल 1600-1300 ई. पू. निर्धारित किया गया है. यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्डों को 'मालवा मृद्भाण्ड' भी कहा जाता है.

अर्बुद

राजस्थान के सिरोही जिले में अवस्थित आबू प्राचीनकालीन अर्बुद था, जो अरावली पर्वतमाला के मध्य अवस्थित था. जैनों के प्रसिद्ध पाँच तीर्थों में इसकी गणना की जाती है. महाभारत के वनपर्व के अनुसार अर्बुद नामक इस स्थल पर वशिष्ठ ऋषि का आश्रम था. मत्स्य, नारद, अग्नि एवं पद्मपुराण में अर्बुद का उल्लेख मिलता है. पद्मपुराण के अनुसार अर्बुद से ही सरस्वती नदी का आविर्भाव हुआ था. यहाँ का दिलवाड़ा का जैन मन्दिर स्थापत्य की दृष्टि से अत्यधिक ख्याति प्राप्त है.

द्वारिका

महाभारतकालीन ऐतिहासिक स्थल द्वारिका वर्तमान में गुजरात के पश्चिमी तट पर अवस्थित है. लगभग सभी धर्मग्रन्थों में दूसरा उल्लेख मिलता है. वृष्णि यादवों के प्रमुख कृष्ण ने द्वारिका को अपनी राजधानी बनाई थी. महाभारत के अनुसार प्राचीनकाल में द्वारिका 96 योजन तक फैली हुई थी. समुद्री जल सतह के बढ़ जाने के कारण द्वारिका जलमग्न हो गई थी. द्वारिका आज भी हिन्दुओं का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है.

तंजौर

तंजावुर एवं तंजौर के नाम से ख्यात यह नगर वर्तमान में चेन्नई से 218 किमी दूर दक्षिण-पश्चिम में कावेरी नदी के तट पर अवस्थित है. यह चोल साम्राज्य की राजधानी के रूप में ख्याति प्राप्त थी. तंजौर में लगभग 75 मंदिर हैं. चोल शासक राजराजे द्वारा बनवाया गया वृहदेश्वर मंदिर 100 फीट ऊँचा है और उसके शिखर तक जाने के लिए 14 मंजिलें हैं. यह मंदिर विश्वविख्यात मंदिरों में गिना जाता है. वृहदेश्वर मंदिर को 'राजराजेश्वर मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है. इस स्थल से होयसल शासक सोमेश्वर एवं रामनाथ के अभिलेख प्राप्त हुए हैं.

उदयगिरि

प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक स्थल उदयगिरि मध्य प्रदेश के रायसीन जिले में अवस्थित है. यह बेतवा एवं बेश नदियों के मध्य स्थित है. प्राचीनकाल में उदयगिरि विदिशा का एक उपनगर था. यहाँ पर जैन एवं हिन्दू प्रतिमाओं से युक्त लगभग बीस गुफाएँ हैं. चन्द्रगुप्त द्वितीय का उदयगिरि गुहालेख में इस पहाड़ी का विशिष्ट शैली में वर्णन किया गया है.

कर्णसुवर्ण

वर्तमान में कर्णसुवर्ण बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में गंगा नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है. चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने कर्णसुवर्ण का विस्तृत विवरण अपने यात्रा-वृत्तान्त में किया है. गौड़ नरेश शशांक यहाँ का शासक था. कालान्तर में कामरूप के भास्करवर्मन ने कर्णसुवर्ण पर अधिकार कर लिया था. निधानपुर ताम्रपत्र लेखों में भी कर्णसुवर्ण का उल्लेख किया गया है. सेन वंश के शासकों ने कर्णसुवर्ण को बंगाल की राजधानी बनाया था. यहाँ से दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से व्यापार किया जाता था.

कलिंग

प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक स्थल कलिंग वर्तमान में उड़ीसा के गंजाम जिले में अवस्थित कलिंग नगर है. मौर्य सम्राट् अशोक ने 261 ई. पू. में इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की थी. कलिंग विजय के पश्चात् अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया था और बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था. इस नगर का उल्लेख खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में मिलता है.

नोह

पुरातनकालिक सभ्यता का केन्द्र नोह राजस्थान के भरतपुर जिले में आगरा रोड पर अवस्थित है. नोह नामक इस स्थल से चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं. इस स्थल से मिट्टी की मूर्तियाँ, ताँबे के ढलवाँ सिक्के, मिट्टी एवं पत्थर के मनके तथा मौर्यकालीन मूर्तियाँ उत्खनन से प्राप्त हुई हैं. नोह में लोहे के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं जिससे ज्ञात होता है कि नोह के लोग लोहे से परिचित थे एवं उसका प्रयोग हथियार, उपकरण तथा आभूषण बनाने में करते थे. इस स्थल से कुषाण शासक हुविष्क एवं वासुदेव के सिक्के तथा शुंगवंशीय यक्ष-यक्षणियों की मूर्तियाँ उत्खनन से प्राप्त हुई हैं. यहाँ पर ताँबे के उपकरण भी खोजे गए हैं.

गया

प्रख्यात प्राचीनकालीन ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल गया बिहार राज्य में अवस्थित है. जनश्रुतियों एवं प्रारम्भिक ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार गया एक राक्षस गयासुर का निवास



स्थल था, जिसे भगवान् विष्णु ने गया से बाहर निकाल दिया था. बोधगया नामक प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थस्थल गया के समीप ही अवस्थित है. गया में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान एवं ह्वेनसांग ने यात्रा कर सम्बन्धित अनुभूतियों को अपने यात्रा-वृत्तान्त में लिखा था. अपने शासन के दसवें वर्ष में मौर्य सम्राट् अशोक ने गया की यात्रा की थी. यहाँ पर अशोक का एक पाषाण स्तूप भी ह्वेनसांग के द्वारा देखा गया था. हिन्दुओं के अनुसार यहाँ पर भगवान् विष्णु के चरण चिह्न पड़े थे. अतः श्राद्ध पक्ष में अपने पूर्वजों के पिण्डदान करने के लिए यहाँ मेला लगता है. गया के निकटस्थ फाल्गु नदी के जल एवं बालू के पिण्ड बनाकर लोग अपने पूर्वजों के चढ़ाते हैं. इसके पीछे उनका मानना है कि मृतक परिजन को मोक्ष की प्राप्ति होती है.

नगर

प्राचीन सभ्यता का ऐतिहासिक स्थल नगर वर्तमान में राजस्थान के टोंक जिले में अवस्थित है. इस स्थल के उत्खनन से एक प्राचीन विकसित सभ्यता की जानकारी प्राप्त हुई है. विभिन्न तथ्यों के आधार पर महाभारत में वर्णित मालवों की राजधानी कार्कोट की तुलना एवं साम्यता नगर से की गई है. यहाँ पर ईसा की प्रथम से तृतीय शताब्दी के मध्य के पुरावशेष–लौह उपकरण, आभूषण, मुद्राएँ, मिट्टी के बर्तन एवं अन्य कई वस्तुएँ उत्खनन से प्राप्त हुई है. नगर में कई आहत सिक्के एवं एक 'मालवा नाम जपः' के नाम से अंकित लेख प्राप्त हुआ है.

विक्रमशिला

प्राचीन 'महाविहार' विक्रमशिला वर्तमान में बिहार के भागलपुर जिले में अवस्थित है. यह गंगा नदी के किनारे पर स्थित है. पाल शासक धर्मपाल ने विक्रमशिला महाविहार की स्थापना की थी, जो कालान्तर में एक विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया था. विक्रमशिला में लगभग 160 विहार थे. **'आतिश दीपंकर'** प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् इसी महाविहार से सम्बन्धित थे. तेरहवीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला के इस महाविहार को पूर्णतः नष्ट कर दिया था.

गढ़वा

प्राचीन भारत का प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्रोत एवं महत्वपूर्ण स्थल गढ़वा वर्तमान में उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद के करछना नगर के समीप अवस्थित है. गढ़वा से गुप्तकालीन शासकों के कई अभिलेख प्राप्त हुए हैं. दो कुमारगुप्त, एक स्कन्दगुप्त तथा एक चन्द्रगुप्त का लेख गढ़वा में खोजा गया है. इसमें से एक अभिलेख में 'अनन्तस्वामित्व' नामक मूर्ति की स्थापना का उल्लेख किया गया है.

जुनार

प्राचीन ऐतिहासिक स्थल जुनार वर्तमान में महाराष्ट्र में पुणे से 48 किमी उत्तर में अवस्थित है. यहाँ पर 150 शैलकृत गुफाएँ खोजी गई हैं. जुनार की एक शैलकृत गुफा में शकवंशीय शासक नहपान के मंत्री अयम का अभिलेख प्राप्त हुआ है. इस अभिलेख में नहपान के लिए महाक्षत्रप शब्द का प्रयोग किया गया है. जुनार में खोजी गई शैलकृत गुफाओं में 10 चैत्य एवं 140 विहार हैं. इस क्षेत्र का काल ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी माना गया है. शैलकृत गुफाएँ समूहों में बनी हुई हैं जिनमें तलुजा एवं गणेश पंक्ति को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है. जुनार में प्राप्त चैत्यगृह आयताकार हैं जिनकी छत समतल एवं मण्डप स्तम्भों से रहित है. ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अनुसार यह बौद्ध धर्म के हीनयान एसम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र था.

आलमगीरपुर

प्राचीन सभ्यता का ऐतिहासिक स्थल आलमगीरपुर वर्तमान में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हिण्डन नदी के किनारे पर अवस्थित है. आलमगीरपुर में हड़प्पा संस्कृति के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं. आलमगीरपुर के प्रथम उत्खनन से पतनोन्मुख हड़प्पा संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं. दूसरे उत्खनन के दौरान इस स्थल से चित्रित धूसर मृद्‌भाण्ड, काले-लाल मृद्‌भाण्ड प्राप्त हुए हैं. इस स्थल से अस्थियों के तीर, चाक से बनाई हुई पक्की मिट्टी की वस्तुएँ, फलक, काँच के मनके आदि प्राप्त हुए हैं.

वल्लभी

प्राचीनकालीन शैक्षणिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गति-विधियों का केन्द्र वल्लभी वर्तमान में गुजरात राज्य में अवस्थित है. यह जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था. वल्लभी में 'द्वितीय जैन संगीति' का आयोजन किया गया था. गुप्तोत्तर-काल में वल्लभी शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था. ह्वेनसांग ने सी-यु-की (शीयुकी) में वल्लभी का वर्णन किया है. यहाँ पर गुप्तोत्तरकाल में 'मैत्रक वंश' का शासन था. प्राचीनकाल में धर्म, शिक्षा के अतिरिक्त यह एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र भी था.

चिराँद

नवपाषाणकालीन सभ्यता का एक प्रमुख स्थल चिराँद वर्तमान में बिहार में पटना के उत्तर-पश्चिम में अवस्थित है. यहाँ से नवपाषाणकालीन सभ्यता के साक्ष्य उत्खनन से प्राप्त हुए हैं. गोलाकार कुल्हाड़ियाँ, हथौड़े, अस्थियों से निर्मित उपकरण इत्यादि यहाँ पर अवशेष के रूप में प्राप्त हुए हैं. यहाँ से पशु पालने के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं.





उपकार

सामान्य अध्ययन

प्राचीन भारत का इतिहास





YOUR SUCCESS
IS
OUR AIM
SURE SUCCESS
WITH
OUR NAME
THAT IS
UPKAR

उपकार प्रकाशन, आगरा-2

ISBN 978-93-5013-616-4

